विज्ञापन—

जैनाचार्यों के बनाये हुए ज्योतिष गणित सामुद्रिक वैद्यक और काव्य आदि विज्ञान विषयों के प्राचीन ग्रंथरत्न लु प्त हो रहे हैं। जो महाशय इनका स्थायी-ग्राहक बनना चाहें वे रुपिया भेजकर स्थायी ग्राहक श्रेणी में अपना नाम लिखें उनको मेरी तरफसे प्रकाशित होनेवाली हरएक पुस्तकें पौनी किंमतसे दी जायगी।

शीघ्र ही प्रकाशित होंगे—

गणितसारसंग्रह— श्रीमहावीराचार्य विरचित, इसका उदाहरण-समेत खुलासा वार किया गया है।

भुवनदीपक सटीक— श्रीपद्मप्रभसूरिविरचित मूल सिंहतिलकसूरिकृत टीका के साथ हिन्दी अनुवाद समेत। यह प्रश्न से अनेक प्रकारके शुभाशुभ फल जाननेका सर्वोत्तम ग्रंथ है।

वास्तुसार (शिल्पशास्त्र)— परमजैन श्रीठक्कुर फेरू प्राकृतगाथा बद्ध और हिन्दी अनुवाद समेत इसमें मकान मंदिर आदि बनानेका अधिकार विवेचन पूर्वक किया गया है।

त्रैलोक्यप्रकाश— श्रीहेमप्रभसूरि प्रणीत यह आद्य समस्त, वृष्कास्य आदि जानने का बहुत



श्रीमान् दानवीर सेठ भैरोंदानजी सेठिया बीकानेर

जन्म वि सं० १९२३ } { फारा वि सं १८९

आश्विन शुक्ला ८ } { प्रथम [illegible] वदी ५



बीकानेर-निवासी श्रीमान् दानवीर उदारहृदय साहित्यप्रेमी-

सेठ भैरोदानजी जेठमलजी सेठिया की सेवामें :

माननीय महोदय !

आपने अपनी उदारता से धर्म और समाज के अभ्युदय के लिये ग्रन्थालय (लायब्रेरी) विद्यालय और कन्यापाठशाला आदि पारमार्थिक जन संस्थाओं की स्थापना करके श्रीमानों के सामने सुंदर आदर्श खड़ा कर दिया है। इतना ही नहीं किन्तु धर्म और समाज की सेवाके लिये आपने अपने आपको अर्पित कर दिया है।

इत्यादि प्रशंसनीय कार्यों से आकर्षित होकर यह छोटीसी भेंट आपके कर कमलोंमें सादर समर्पित करता हूं।

भवदीय—

भगवानदास जैन

प्रस्तावना

हरएक मनुष्य को प्रायः यह वर्ष कैसा होगा? वर्षा कम और कितनी बरसेगी? सुकाल होगा या दुकाल? अन्न सस्ता होगा या महँगा? इत्यादि जानने की बहुत उत्कंठा रहा करती है अतः इनके भावी शुभाशुभ को जानने के लिये प्राचीन आचार्यों ने ज्योतिष फलादेश के अनेक ग्रंथों का निर्माण किया है, उनमेंसे अनेक प्राचीन ग्रंथों का साररूप संग्रह कर के रचा हुआ यह ग्रंथ सुभिक्ष दुर्भिक्ष वृष्टि आदि जानने का सर्वोत्तम साधन है।

प्रस्तुतग्रंथ के रचयिता प्रखरपंडित महामहोपाध्याय-श्री मेघविजयगणि हैं। ये अठारहवीं शताब्दीमें तपागच्छनायक जगद्गुरु श्री हीरविजय सूरीश्वरजी के पट्टपरंपरा आये हुए जैनाचार्य श्रीविजयप्रभसूरि और जैनाचार्य श्रीविजयरत्नसूरि के शासनमें विद्यमान थे। इन्होंने अपनी गुरुपरंपरा स्वरचित बनाये हुए शान्तिनाथचरित्र-महाकाव्य के अंतमें इस प्रकार लिखी है—

जयतु गच्छपयोधिपूर्वदिग्भानुमाली
विजयपदमपूर्वं हीरपूर्वं दधानः ॥१६॥
कनकविजयशर्माऽस्याभिवत् शीलधर्मा
शुचितरचरणश्रीः शिष्यमाला तदीयः।
कमलविजयधीरः सिद्धिसंसिद्धिधीरः
तदनु स च रेजे वाचकश्रीकवीरः ॥१७॥
चारित्ररत्नाद् विजयाभिधान
रूपी सगर्भं च सुधीसधर्मा।
यथा विनयाः कमयः कृपाद्याः
पद्यास्वरूपाः समयास्तुपाद्यौ ॥१८॥
तत्पादाम्बुजभृङ्गमेघविजयः प्रासाद्युक्तादक-
स्याद्भिः श्रीविजयप्रभाप्यमगच्छावृत्तपरायणत्वात्।
गुणाऽयं निजमेरुपूर्वविजयप्राक्तादिशिष्यैरिमां
चक्रे निर्मलनैषधीयचरितैः श्रीशान्तिचक्रिस्तुतिम् ॥१९॥

ग्रंथकर्त्ता का वंशवृक्ष—

हीरविजय
|
कनकविजय
|
शीलविजय
|
कमलविजय सिद्धिविजय चारित्रविजय
|
कृपाविजय
|
मेघविजय

मेघमहोदय (वर्षप्रबोध) आदि ज्योतिषग्रंथोंके अतिरिक्त न्याय व्याकरण काव्य आदि विषयों के भी अनेक ग्रंथ रचे हैं—

१ देवानन्दाभ्युदय-महाकाव्यं[1] २ शान्तिनाथचरित्र-महाकाव्यं[2]

---

१ यह माघकाव्य की पादपूर्त्तिरूप सप्तसर्गीय महाकाव्य संवत् १७६० में रचा हुआ है। इसमें जैनाचार्य श्रीविजयदेवसूरीश्वरजीका आदर्श जीवनचरित्र वर्णित है। यह यशोविजयजैनग्रंथमाला में प्रकाशित हो गया है।

२ इसमें श्रीहर्षकवि विरचित नैषधीय महाकाव्य का पादपूर्त्तिरूप श्रीशान्तिनाथजिन चरित्र बड़ा मनोहर लालित्य श्लोकोंसे वर्णित है। इसका कुछ श्लोक पाठकों के सामने उद्धृत करता हूँ—

" श्रियामभिव्यक्तमनाऽनुरक्तता विशालसालत्रितयश्रिया स्फुटा ।
तया बभासे स जगत्त्रयीविभु-र्ज्वलत्प्रतापावलिकीर्त्तिमण्डल ॥१॥
निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथा मुराः सुराज्यादिसुखं बहिर्मुखम् ।
प्रपेदिरेऽन्तः स्थिरतन्मयाशया सदा सदानन्दभृतः प्रशमया ॥२॥
यथाश्रुतस्येह निपीतत्कथा-स्तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि ।
सुधाभुजां जन्म न तन्मनःप्रियं भवेद् भवे यत्र न तत्कथा प्रथा ॥३॥
यदीयपादाम्बुजभक्तिनिर्भरात् प्रभावतस्तुल्यतया प्रभावतः ।
नलः सितच्छत्रितकीर्त्तिमण्डलः क्षमापतिः प्राप यशः-प्रशस्यताम् ॥४॥
द्विधापि धर्मानुगतिर्महीपति-र्दयावधे शैशव एष शेवधिः ।
क्रमेण चक्री विजये दिशां जिनः स राशिराशीन्महसां महोज्ज्वलः ॥५॥"

यह जैन विविध साहित्य शास्त्रमाला का ७ वां पुष्प रूपमें मुद्रित है।

१ दिग्विजयमहाकाव्य	४ मेघदूतसमस्यालेख
२ चन्द्रप्रभा	६ मातृकाप्रसाद
३ युक्तिप्रबोधनाटक	८ विजयदेवमाहात्म्यविवरण
५ सप्तसंधानमहाकाव्य	१० हस्तसंजीवन

---

१ यह मनोहर [illegible] महाकाव्य में जैनाचार्य श्री विजयप्रभसूरि का आदर्श जीवन विस्तार पूर्वक वर्णित है।

२ ग्रन्थकर्ता दक्षिण देश में औरंगाबाद नाम के नगर में चातुर्मास रहे थे वहाँ से [illegible] देश में [illegible] नामके नगर में चातुर्मास रहे हुए गच्छाधीश श्री विजयप्रभसूरिजी के पास विज्ञप्तिस्वरूप भेजा हुआ श्री कालीदास विरचित मेघदूत महाकाव्य की पाद पूर्तिरूप [illegible] यथार्थ नामवाला यह [illegible] का [illegible] उत्तम सुंदर श्लोकों से वर्णित है। यह [illegible] ग्रन्थमाला का [illegible] वाँ रत्न रूप से प्रकाशित हो गया है।

३ यह व्याकरणविषय का [illegible] श्रीहेमचन्द्राचार्य विरचित सिद्धहेमशब्दानुशासन के सूत्रों को [illegible] [illegible] [illegible] की पद्धति पर [illegible] है। इस लिये [illegible] व्याकरण की कौमुदी की तरह इसका भी सिद्धहेमशब्दानुशासन की हैम कौमुदी का [illegible] है। [illegible] [illegible] है और [illegible] में [illegible] है।

५ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है।
[illegible]

यह भी [illegible] है।

[illegible] श्री[illegible] [illegible] इसमें [illegible] [illegible]

६ इसमें [illegible] [illegible] श्री [illegible] श्री [illegible] श्री

११ प्रश्नबोधे[११] १२ लघुत्रिषष्टि चरित्रे[१२]
१३ भक्तामरस्तोत्र टीका[१३]

इत्यादि उपलब्ध ग्रन्थरत्नों से आपके न्याय व्याकरण साहित्य विषयक प्रखर पाण्डित्य का पता लगता है। इसके अतिरिक्त गुजराती भाषामें भी कईएक रासा आदि जोडकर गुजराती भाषा साहित्य की वृद्धि की है इससे साफ मालूम होता है कि आप का ज्ञान परिमित नहीं-अत्यन्त विशाल था।

प्रस्तुत ग्रंथ तेरह अधिकारोंमें अनेक विषयोंसे पूर्ण हुआ है। जैसे-उत्पात प्रकरण, कर्पूरचक्र, पद्मिनीचक्र, मण्डल प्रकरण, सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहण फल, प्रत्येक मासमें वायुका विचार, वर्षा को बरसानेका और बंध करनेका मंत्र यंत्र साठ संवत्सरोंका मतमतान्तर-पूर्वक विस्तार से फल, ग्रहों का राशियों पर उदय अस्त या वक्री हो उनका फल, अयन मास पक्ष और दिन का विचार, संक्रांति फल, वर्षके राजा मंत्री आदि का विचार, वर्षा के गर्भ का विचार विश्वाविचार आय और व्ययका विचार, सर्वतोभद्रचक्र और वर्षा जानने का शकुन इत्यादि उपयोगी विषयोंका अनेक मतमतान्तरोंसे विस्तार पूर्वक विवेचन किया गया है। इसका प्रतिदिन अनुशीलन किया जाय तो अगले वर्ष में दुष्काल होगा या सुकाल, वर्षा कब और कितनी कितने दिन बरसेगी, धान्य, सोना चांदी आदि धातु, कपास, सूत और क्रयाणक वस्तु, इन सब का तेजी होना या मंदी ये अच्छी तरह जान सकते हैं। सारांश यही है कि भावी वर्ष का शुभाशुभ जानने के लिए कोई भी विषय इसमें नहीं छोड़ा है।

वर्षप्रबोध के नाम से हिन्दी भाषा के साथ दो संस्करण और हो गये हैं। एक मुरादाबाद निवासी पं ज्वालाप्रसादजी मिश्र अनुवादित ज्ञानसागरप्रेस बम्बईमें और दूसरा जयपुर निवासी पं हनूमानजी शर्मा अनुवादित श्री वेङ्कटेश्वरप्रेस बम्बई से प्रकट हुआ है। पहले अनु-

---

शुभ फलादेश जानने के लिये अत्युत्तम है। यह 'मेघमाल' नाम से भी प्रसिद्ध है।

११ आध्यात्मिक विषय का ग्रंथ है।

१२ चोवीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्ती, नव वासुदेव नव प्रतिवासुदेव और नव बलदेव ये तेसठ महान् उत्तम पुरुषों का चरित्र ५००० श्लोक प्रमाण है और विस्तारसे कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य ने ३६००० श्लोक प्रमाण रचा है।

१३ श्रीमान् मानतुङ्गसूरि विरचित भक्तामर स्तोत्रकी विस्तार पूर्वक टीका

पाठ के विषय में दूसरे अनुवादक पं हनूमानजी शर्मा लिखते हैं कि— "(यह ग्रंथ) अनुपलब्ध रूपमें अब कहीं मिलता भी नहीं है यद्यपि भाषा टीका सहित एक मिलता है किन्तु वह ऐसा है मानों खुले पन्नोंकी पुस्तक आंधीमें उड़ गई हो और उसीको ढूंढ ढांढ कर बिना नम्बर देखे ही ज्यों की त्यों छाप दी हो क्योंकि उस में एक ही विषय के दश दश श्लोकोंमेंसे आठ २ अंग आते रहे हैं। और कोई एक विषय इधर उधर छिन्न भिन्न होकर खंडित हो रहे हैं"। यह दशा तो पहले संस्करण की है। परंतु दूसरा संस्करण और भी एकदम विचित्र है। समस्त ग्रंथ का प्रमाण ३५०० श्लोक है, पर दूसरे में भी लगभग २ ०० श्लोक नदारद हैं। इसमें भी हम अत्यन्त आश्चर्य तो तब होता है जब यह देखते हैं कि पं हनुमानजी शर्माने अपनी ओर से कईएक जहां तहां के श्लोक घुसेड़ कर प्रथम मंगलाचरण से ही पूर्व ग्रंथ का बिलकुल परिवर्तन कर दिया है। अतः मुझे दुःख पूर्वक कहना पड़ता है कि अच्छा होता यदि पं महाशयने इतिहास और प्राचीन साहित्य में क्षति पहुंचाने के लिये कलम ही न उठाई होती अथवा अन्त में ग्रंथकर्त्ता श्री मेघविजयजी की प्रशस्ति न देकर अपने नाम से ही प्रकट किया होता। इस पर भी अनुवादक तुर्रा यह लिखते हैं कि " इसे अन्य कोई छापनेका दुस्साहस न करें अन्य महाशय न छापें जिस हेतु से आपके संस्करण में ग्रंथ का सारा स्वरूप बदला गया है, और उसे असली हालत में जनता के उपकारार्थ प्रगट करनेवाले का साहस दुस्साहस होगा" अस्तु।

ऐसे अनुवादकों को मेरी प्रार्थना है कि प्राचीन साहित्य का इस तरह दुरुपयोग न कीजिये। यों ही संस्कृत साहित्य कहीं भण्डारों में पड़ा हुआ दीमक या चूहों का आहार बन रहे हैं। जो कुछ प्राप्त हो सकता है उसे इस तरह विकृत कर डालना बड़ी अफसोस की बात है।

उक्त दोनों अनुवादकों और प्रकाशकोंने यदि उदारता से इस ग्रंथ की पूरी खोज की होती तो शायद मुझे इस नवीन अनुवाद को लेकर न उपस्थित होना पड़ता। परंतु हमारे दुर्भाग्य से ऐसा नहीं हुआ। इसलिए इसका प्रकाशित होना न होना लगभग बराबर ही था। इसी कारण मैंने इस ग्रंथको व्यवस्थित ढंगसे पूरे पाठकी खोज करके और नवीन टिप्पणियोंसे युक्त करके पाठकोंके समक्ष रखनेका दुस्साहस(?)

किया है। नि संदेह इसमें बहुतसी त्रुटिया अब भी मौजूद होंगी। इस के कई कारण हैं— प्रथम तो मेरी मातृभाषा हिन्दी नहीं, गुजराती है। दूसरा कारण वश इसे बहुत शीघ्रतासे प्रकाशित किया है फिर भी यह कहनेमें कोई हर्ज नहीं है कि मैंने ग्रंथको अधूरा नहीं रखा है।

इस ग्रंथ की प्रेस्कोपी जयपुर निवासी राज्यज्योतिषी प गोकुलचन्द्रजी भावन द्वारा ज्योतिषशास्त्री प श्यामसुन्दरलालजी भावन ने पूर्ण परिश्रम लेकर सुधार की है। तथा मुद्रितफॉर्म पाली (मारवाड) निवासी दैवज्ञभूषण ज्योतिषरत्न प मीठालालजी व्यास ने सुधार दिये है। इस लिये उन सबका आभार मानता हूँ।

इसको शुद्ध करनेके लिए निम्न लिखित सज्जनो ने मेघमहोदय की हस्त लिखित प्रतिये भेजने की कृपा की है इसलिये मै उनका भी पूर्ण उपकार मानता हूँ।

१ श्रीमान् पूज्यपाद शास्त्रविशारद जैनाचार्य श्रीविजयधर्मसूरीश्वरजी के शास्त्रभंडार भावनगर से श्रीयुत अभयचन्द भगवानदास गांधी द्वारा प्राप्त।

२ श्रीमान् महोपाध्याय श्री वीरविजयजी शास्त्रसंग्रह वडोदा से श्रीयुत प लालचन्द भगवानदास गांधी द्वारा प्राप्त।

३ श्रीमान् मुनि महाराज श्री अमरविजयजी से प्राप्त।

४ जयपुर निवासी राज्यज्योतिषी प मुकुन्दलालजी शर्मा से प्राप्त।

५ पाली निवासी दैवज्ञभूषण ज्योतिषरत्न प मीठालालजी व्यास से प्राप्त।

उक्त पांच प्रति प्राय इसी शताब्दीमें लीखी हुई अशुद्ध थी, इनमें जयपुरवाले पंडितजी की प्रति में कहीं २ प्राचीन टिप्पणी भी थी वह मैंने यथा स्थान लगा दी है। किंतु यही प्रति प श्यामसुन्दरलालजी भावनके पास प्रेसकोपी सुधारने के लिये रह जाने से विलम्बसे मिली जिस से जो बाकी रही गई टिप्पणियें मैंने ग्रंथ के अंतमें लीख दी है, आशा है— पाठक गण वहा से देख लेंगे।

विद्वान् जनो से सविनय प्रार्थना है कि मेरी मातृभाषा गुजराती होने से हिन्दी अनुवाद में भाषा की तो बहुतसी त्रुटिया अवश्य होंगी परंतु कहीं श्लोकों का गूढ आशय में भूल देखने में आवे तो उसे सुधार कर पढ़ने की कृपा करें और मेरेको सूचित करेंगे तो दूसरी आवृत्ति में सुधार दी जायगी। जैसे—

याद के विषय में दूसरे अनुवादक पं हनूमानजी शर्मा लिखते हैं कि—
(यह ग्रंथ) सम्पूर्णतया कहीं भी नहीं मिलता भी नहीं है यद्यपि भाषा टीका सहित एक मिलता है किन्तु वह ऐसा है मानों खुले पत्रोंकी पुस्तक आंधीमें उड़ गई हो और उसीको ढूंढ ढांढ कर बिना नम्बर देखे ही ज्यों की त्यों रूप दी हो क्योंकि उस में एक ही विषय के दस दस श्लोकोंमेंसे आठ २ अंग जाते रहे हैं। और कईएक विषय इधर उधर छिन्न भिन्न होकर खंडित हो रहे हैं "। यह दशा तो पहले संस्करण की है। परंतु दूसरा संस्करण और भी एकदम विचित्र है। समस्त ग्रंथ का प्रमाण ३५० श्लोक है, पर दूसरे में भी लगभग २००० श्लोक नदारद हैं। इसमें भी हमें अत्यन्त आश्चर्य तो तब होता है जब यह देखते हैं कि पं हनूमानजी शर्माने अपनी ओर से कईएक जहां तहां के श्लोक जुमला कर प्रथम मंगलाचरण से ही पूर्व ग्रंथ का बिलकुल परिवर्तन कर दिया है। अतः मुझे दुःख पूर्वक कहना पड़ता है कि अच्छा होता यदि पं महाशयने इतिहास और प्राचीन साहित्य में क्षति पहुंचाने के लिये कलम ही न चलाई होती अथवा अन्त में ग्रंथकर्ता श्री मेघविजयजी की प्रशस्ति न देकर अपने नाम से ही प्रकट किया होता। इस पर भी अनुवादक हुरा यह लिखते हैं कि "
इसे अन्य कोई छापनेका दुस्साहस न करें" अन्य महाशय न जाने किस हेतु से आपके संस्करण में ग्रंथ का सारा स्वरूप बदला गया है, और उसे असली हालत में जनता के कल्याणार्थ प्रगट करनेवाले का साहस दुःस्साहस होगा? अस्तु।

मेरी अनुवादकों का मेरी प्रार्थना है कि प्राचीन साहित्य का इस तरह दुरुपयोग न कीजिये। यो ही संस्कृत साहित्य कहीं भंडारों में पड़ा हुआ दीमक या चूहा का आहार बन रहे हैं। ऐसे कुछ प्राप्त हो सकता है उसे इस तरह विकृत कर डालना बड़ी अप्रशंसा की बात है।

उक्त दोनों अनुवादकों और प्रकाशकोंने यदि उदारता से इस ग्रंथ की पूरी खोज की होती तो शायद मुझे इस नवीन अनुवाद को लेकर न उपस्थित होना पड़ता। परंतु हमारे दुर्भाग्य से ऐसा नहीं हुआ। इसलिए इसका प्रकाशित होना न होना अनावश्यक बराबर ही था। इसी से मैंने इस ग्रंथको व्यवस्थित ढंगसे पूरे पाठकी खोज करके और टिप्पणियोंसे युक्त करके पाठकोंके समक्ष रखनेका दुस्साहस(?)

किया है। नि सदेह इसमें बहुतसी त्रुटिया अब भी मोजूद होगी। इस के कई कारण है— प्रथम तो मेरी मातृभाषा हिन्दी नहीं, गुजराती है। दूसरा कारण वश इसे बहुत शीघ्रतासे प्रकाशित किया है फिर भी यह कहनेमें कोई हर्ज नहीं है कि मैंने ग्रथको अधूरा नहीं रखखा है।

इस ग्रथ की पूर्ण प्रेसकोपी जयपुर निवासी राज्यज्योतिषी प गोकुलचन्द्रजी भावन द्वारा ज्योतिषशास्त्री प श्यामसुन्दरलालजी भावन ने पूर्ण परिश्रम लेकर सुधार दी है। तथा मुद्रितफॉर्म पाली (मारवाड) निवासी दैवज्ञभूषण ज्योतिषरत्न प मीठालालजी व्यास ने सुधार दिये है। इस लिये उन सबका आभार मानता हूँ।

इसको शुद्ध करनेके लिए निम्न लिखित सज्जनो ने मेघमहोदय की हस्त लिखित प्रतियें भेजने की कृपा की है इसलिये मै उनका भी पूर्ण उपकार मानता हूँ।

१ श्रीमान् पूज्यपाद शास्त्रविशारद जैनाचार्य श्रीविजयधर्मसूरीश्वरजी के शास्त्रभडार भावनगर से श्रीयुत अभयचन्द भगवानदास गाधी द्वारा प्राप्त।

२ श्रीमान् महोपाध्याय श्री वीरविजयजी शास्त्रसग्रह वडोदा से श्रीयुत प लालचन्द भगवानदास गाधी द्वारा प्राप्त।

३ श्रीमान् मुनि महाराज श्री अमरविजयजी से प्राप्त।

४ जयपुर निवासी राज्यज्योतिषी प. मुकुन्दलालजी शर्मा से प्राप्त।

५ पाली निवासी दैवज्ञभूषण ज्योतिषरत्न प मीठालालजी व्यास से प्राप्त।

उक्त पाच प्रति प्राय इसी शताब्दीमें लीखी हुई अशुद्ध थी, इनमें जयपुरवाले पडितजी की प्रति में कहीं २ प्राचीन टिप्पणी भी थीं वह मैंने यथा स्थान लगा दी है। किंतु यही प्रति प श्यामसुन्दरलालजी भावनके पास प्रेसकोपी सुधारने के लिये रह जाने से विलबसे मिली जिस से जो बाकी रही गई टिप्पणियें मैंने ग्रथ के अतमें लीख दी है, आशा है— पाठक गण वहा से देख लेंगे।

विद्वान् जनो से सविनय प्रार्थना है कि मेरी मातृभाषा गुजराती होने से हिन्दी अनुवाद में भाषा की तो बहुतसी त्रुटिया अवश्य होगी परंतु कहीं श्लोको का गूढ आशय में भूल देखने मे आवे तो उसे सुधार कर पढने की कृपा करें और मेरेको सूचित करेंगे तो दूसरी आवृत्ति में सुधार दी जायगी। जैसे—

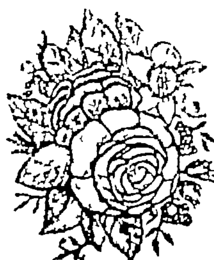
पृष्ठ ३६६ श्लोक ३११ 'नवम्यां स्वातिसंयोगे भाद्रमासे सिते यदा" इत्यादि श्लोकोंका मैंने प्रथम 'भाद्रपद शुक्ल नवमी के दिन स्वातिनक्षत्र हो" ऐसा अर्थ किया था किन्तु पीछेसे प्राचीन (रत्नपरा?) टिप्पणी युक्त प्रति मिलनेसे इनका गूढ़ आशय 'भाद्रपद शुक्ल नवमी या स्वातिनक्षत्र के दिन शुक्रवार हो" ऐसा समझनेमें आनेसे सुधार दिया है। पूर्ण आशा है कि पाठक गण इससे विशेष लाभ उठाकर मेरा परिश्रम को सफल करेंगे। इत्यलं सुज्ञेषु

स १९८२ द्वितीय चैत्र
शुक्ल ११ रविवार
(श्री महावीरजिन जयन्ती)

आपका कृपापात्र—
भगवानदास जैन

विषयानुक्रमणिका।





पार्जा (मारवाड़) निवासी श्रीमान् ज्योतिषरत्न पं- [illegible] महोदय ने नीचे लिखे हुए श्लोकों का अर्थ सुधार कर भेजा ॥

पृ- ११ श्लोक ८६ ४७- ८८ — ज्येष्ठशुक्ल प्रतमी आदि चार ति[illegible] (सुवर्णमें)वायु शुभ(पूर्व उत्तर वा ईशान का) वायु [illegible] तथा बिजली और [illegible] गरजे हो तो भाद्रवा शुभ होवै ॥ इसमें [illegible] भाग [illegible] है ॥८६॥ [illegible] स्वाति आदि चार नक्षत्रमें वर्षा हो [illegible] तो [illegible] परिपूर्ण हो जाती है [illegible] इससे श्रावणादि चार महिनोंमें वर्षा न हो ॥८७॥ [illegible] आदि [illegible] श्लोक ४६ के अनुसार इनमें (नक्षत्रों) [illegible] तो सुभिक्ष तथा [illegible] यदि नक्षत्र न मिले तो [illegible] न हो [illegible] तथा [illegible] का [illegible]

पृ- १२६ श्लोक- २६— [illegible] [illegible] [illegible] पर गुरु हो तो सुभिक्ष और [illegible] [illegible] तथा [illegible] के [illegible] पर हो तो [illegible] ।

पृ- १४२ श्लोक १११— [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] वायु न चले ।

पृ१०८— श्लोक ११७—मेष प्रवेश [illegible] तथा [illegible] [illegible] [illegible] हो तो [illegible] [illegible] हो ॥११७॥

पृ- ८६ श्लोक २ ८— [illegible] के [illegible] में [illegible] हो तो श्रावणादि चार महिनोंमें [illegible] से वर्षा का [illegible] हो । इसी प्रकार [illegible] और [illegible] के [illegible] वर्षा न हो तो [illegible] भाद्रपदादि चार मासमें [illegible] [illegible] हो ॥८९ ८०॥

पृ- ११६ श्लोक २— [illegible] प्रतिपदाको [illegible] [illegible] हो तो [illegible] की प्राप्ति हो ।

पृ- ११४ श्लोक १६१— [illegible] रोहिणी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] न होय [illegible] [illegible] [illegible] को रोहिणी और पौष [illegible] को [illegible] न हो तो

पृ- १७१ श्लोक १६८— [illegible] [illegible] के [illegible] पर [illegible] भी [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible]

पृ- १७६ श्लोक ११६— मार्गशीर्ष एकादशी को [illegible] [illegible] हो तो [illegible] [illegible] आदि का [illegible] करने में [illegible] [illegible] होगा ॥११६॥

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

॥ श्रीमेघमहोदयो-वर्षप्रबोधः ॥

(भाषाटीकासमेतः)

ग्रन्थकर्तुरस्य मंगलाचरणम् ।

श्री तीर्थनाथवृषभं प्रभुमाश्वसेनिं,
शङ्खेश्वरं नतसुरेन्द्रनरेन्द्रचन्द्रम् ।
ध्यायन् समेघविजयं सुखमावबुद्ध्यै,
शास्त्रं करोमि किल मेघमहोदयार्थम् ॥ १ ॥
येनायं प्रभुपार्श्वमाप्तवृषभं विश्वैकवीरं हृदि
स्मारंस्मारमहर्निशं पटुधिया ग्रन्थः समभ्यस्यते ।
त्रेधा तस्य सुवर्णसिद्धिकमला मेधाबलात् प्रैधते,
राजद्राजसभासु भासुरतया कीर्तिर्नरीनृत्यते ॥ २ ॥

नत्वा जिनेन्द्रं प्रभुपार्श्वनाथं, देवासुरैरर्चितपादपद्मम् ।
वर्षप्रबोधस्य करोमि टीकां, बालावबोधाय सुभाषयाहम् ॥ १ ॥

भावार्थ—देवेन्द्र नरेन्द्र और चन्द्र आदि जिन को नमस्कार करते है, ऐसे धरणेन्द्र पद्मावती सहित तीर्थंकर श्री शंखेश्वरपार्श्वनाथ प्रभु का ध्यान करता हुआ, मेघ के उदय के अर्थ को सुखपूर्वक जानने के लिये मैं (महामहोपाध्याय श्रीमेघविजयगणि) मेघमहोदय है जिस का ऐसे मेघमहोदय नाम के ग्रन्थ को बनाता हूं ॥ १ ॥

श्रेष्ठों में श्रेष्ठ और जगत् में एक वीर ऐसे श्रीपार्श्वनाथप्रभु को हृदय में निरंतर स्मरण करके जो बुद्धिमान् इस ग्रन्थ का अभ्यास करता है, उसको तीन प्रकार की विद्या, सिद्धि और लक्ष्मी बुद्धिबल से प्राप्त होती है, और बड़ी २ शोभायमान राजसभाओं में विशेष प्रकाश रूप से उसकी कीर्त्ति भी अत्यन्त नाचती है यान फैलती है ॥ २ ॥

पाली (मारवाड़) निवासी श्रीमान् ज्योतिषरत्न प० श्रीदामोदरजी व्यास ने नीचे लिखे हुए श्लोकों का अर्थ सुधार कर भेजा है—

पृ० ६३ श्लोक ४६ ४७-४८ — ज्येष्ठशुक्ल अष्टमी आदि चार दिन तक मृदु (सुखस्पर्शी)वायु शुभ(पूर्व उत्तर या ईशान का) वायु चले तथा स्निग्ध और स्थिर बादलों से आकाश ढका हो तो वर्षा शुभ होती है इसमें संशय नहीं है ॥४८॥ इन्हीं दिनों में स्वाति आदि चार नक्षत्रों में वर्षा हो जाय तो आषाढ़ा परिपूर्ण हो जाती है इस-लिये इनमें भरण्यादि चार महीनों में वर्षा न हो ॥४९॥ स्वात्यादि चारों दिन जल से श्लोक ४१ के अनुसार एकम (समान) मिश्र वा सुभिक्ष तथा सुकालसूचक जानना। यदि यथार्थ न मिलता तो वर्ष मध्यम न हो मार और तथा भूमि का ममतासूचक हो ॥५०॥

पृ०-१६६ श्लोक- २६— उत्पत्तिको मार्ग मासादिकमें अधिकमास मानते हुए कार्य चले पर युग हो तो सुभिक्ष और कल्याण कारक व तथा मध्यमार्ग के मार्ग में पद हो तो मध्यम फल कहना।

पृ०- १८२ श्लोक १११— विशाखा चन्द्र न बादल बांध सूर्य के भ्रमित तब वर्षा वायु न चले।

पृ०२८४— श्लोक १२४— मघा मेघमें तथा नवम्बर मासमें यदि भ्रमण स्था-नमें पापग्रह हो तो अकस्मात् विनाश हो ॥१२५॥

पृ० १६५ श्लोक- १ ८— मूलनक्षत्र के चरणों में प्रथम वर्षा हो तो आषाढ़ादि चार महीनों में क्रम से वर्षा का संयोग हो। इसी प्रकार ज्येष्ठ मास अष्टमी के चरणोंमें वर्षा न हो तो इनसे आषाढ़ादि चार मासमें वर्षाका अभाव हो ॥९८॥

पृ० ११६ श्लोक १— मार्गशीर्ष प्रतिपदाको पूर्वभद्र नक्षत्र हो तो धान्य की प्राप्ति हो।

पृ० २१४ श्लोक ११२— आषाढ़ रोहिणी यदि मिथुन योनी युक्त न होय और आषाढ़ तृतीया को रोहिणी और पौष अमावस का मूल न हो तो—

पृ० १४१ श्लोक १६८— माघिम अमावस के स्थान पर कोई भी मास की अमा जानना

पृ० १७१ श्लोक २२६— कार्तिक एकादशी को उत्तरभद्र नक्षत्र हो तो कपास बई अन्न आदि का संग्रह करने से चैत्रमासमें लाभदायक होगा ॥२२६॥

वृष्टिहेतोः शुभं वर्षं तेन तावत् स उच्यते ।
देशो वातश्च देवादिर्वृष्टिहेतुस्त्रिधामतः ॥ ७ ॥

यदागमः—तिहिं ठाणेहिं महावुट्ठीकाए सिया, तंजहा—तंसिं च णं देसंसि वा पएसंसि वा बहवे उदगजोणिया जीवा य पोग्गला य उदगत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति ॥१॥ देवा नागा जक्खा भूता सम्ममाराहिता भवंति, अन्नत्थ समुट्ठितं उदगपोग्गलं परिणयं वासिउकामं तं देसं साहरंति ॥ २ ॥ अब्भवद्दलगं च णं समुट्ठितं परिणयं वासिउकामं णो वाउआओ विहुणंति ॥ ३ ॥

टीका—वर्षणं वृष्टिरधःपतनं वृष्टिप्रधानः कायो—जीवनिकायो व्योमनि पतदप्काय इत्यर्थः । वर्षणधर्मयुक्तं वोदकं वृष्टिस्तस्याः कायो राशिर्वृष्टिकायः । महांश्चासौ वृष्टिकायश्च महावृष्टिकायः स 'स्याद्' भवेत् । तस्मिंस्तत्र मालवकुङ्कणादौ । च शब्दो महावृष्टिकारणान्तरसमुच्चयार्थः । णमित्यलंकारे । देशे जनपदे प्रदेशे तस्यैव एकदेश-

---

को वाचने मे विद्वानों को निःशंक रहना चाहिये ॥६॥ वर्षा होने से वर्ष अच्छा होता है, इसलिये प्रथम वर्षा के हेतु कहते हैं— देश वायु और देव ये तीन वर्षा के कारण माने हैं ॥७॥

तीसरे स्थानांग में वर्षा होने का कारण तीन प्रकार से कहा है, जिस देश में जलयोनि के जीवों के पुद्गलों का विनाश और उत्पत्ति हो उस समय वहाँ बहुत वर्षा होती है ॥१॥ जहाँ नागकुमार यक्ष और भूत आदि देवों की अच्छी तरह पूजा की जाती हो वहाँ दूसरे देश में मेघ बरसने लगे वहाँ से लेआकर वे देव बरसावें ॥२॥ वर्षा के बादल उदय होकर बरसने लगें उस समय वायु नाश न करें ॥३॥ इन तीन स्थानों मे वर्षा अच्छी होती है ।

न्ग्रन्थः प्रारभ्यते मया।
आ... ।। ... मूयाद् वाक्सिद्धिसन्निधि ॥३॥
स्थानाङ्ग दशमस्थान न्यवदि सुषमाक्य ।
श्रीमहावीरजिनेन्द्रेण सर्वलोकहितैषिणा ॥ ४ ॥
पृष्ठे कालाकालस्वरूप-स्थानाद्यर्थनिरूपणात् ।
मोऽत्र विवरणं स्पष्ट, ग्रन्थेऽस्मिन्नभिधीयते ॥ ५ ॥

यदागमः— दसहिं ठाणेहिं ओगाढं सुसमं जाणिज्जा, तंजहा–अकाले न वरिसइ १, काले वरिसइ २, असाहू न पुइज्जंति ३, साहू पुइज्जंति ४, गुरुहिं जणो सम्मं पडिवन्नो ५, मणुण्णा सद्दा ६, मणुण्णा रूवा ७, मणुण्णा रसा ८, मणुण्णा गंधा ९, मणुण्णा फासा १०, इति ॥

ग्रन्थस्यास्याभ्यसनादस्य सिद्धान्तप्रतिपादनम् ।
तथाथनेऽस्य तत्वज्ञै निःशङ्कत्वं विधीयताम् ॥ ६ ॥

...मी के दिन प्रातःकाल के समय मैंने इस ग्रन्थ का प्रारम्भ किया। इस जगत् में जगद्गुरु (श्री हीरविजयसूरि) की भक्ति से मेरी वचनसिद्धि का विस्तार हो ॥३॥ स्थानाङ्गसूत्र के दशवें स्थान में सर्वलोक के हितेच्छु श्रीमहावीर जिनवर ने सुषम नाम के भाग (युग) का वर्णन किया है ॥४॥ वर्षा का काल अकाल रूप और स्थान आदि के अर्थ को जानने के लिये इस ग्रन्थ में सूत्रों का विवेचन स्पष्ट रूप से कहा जाता है ॥५॥

स्थानाङ्गसूत्र के दशवें स्थान में उत्कृष्ट सुषमकाल का वर्णन इस प्रकार है—अकाल में वर्षा न बरसे १, काल में बरसे २, असाधु को न पूजे ३, साधु को पूजे ४, गुरु का भाव से मान से विनय करें ५, मनोज्ञ (मनोहर) शब्द ६, मनुष्य रूप ७, मनुष्य रस ८, मनुष्य गंध ९ और मनुष्य स्पर्श १० ये दश सुषमकाल में होते हैं ॥ इस ग्रन्थ के अभ्यास करने से सिद्धान्त प्रतिपादन किया जा सकता है, उस

तदा दुष्ट ग्रहादीनां योगे दुर्भिक्षता नहि
किन्तु विग्रह-मार्यादिस्तत्कृतं वैकृतं भवेत् ॥ १० ॥
एवं मरुस्थलादौ स्याद् यदा शुभो ग्रहोदयः ।
तथाप्यवग्रहो वृष्टे-र्वाच्यः स्वल्पोऽपि धीमता ॥ ११ ॥
ज्ञेयं वाताभ्रयोगेन देशे वर्षशुभाशुभम् ।
तेनायं वलवान् सर्व-जलयोगेभ्य इष्यते ॥ १२ ॥
देशे स्वभावादुत्पातः कदाचिद् तत्त्वतो वली ।
तस्माद् वर्षावबोधाय लक्षयेत् तं विचक्षणः ॥ १३ ॥

यदुक्तं विवेकविलासे उत्पातप्रकरणम्—

स्ववासदेशक्षेमाय निमित्तान्यवलोकयेत् ।
तस्योत्पातादिकं वीक्ष्य त्यजेत् तं पुनरुद्यमी ॥ १४ ॥

होतीहै, क्योंकि काल की अपेक्षा क्षेत्र (देश) मे वलिष्ठता है ॥९॥ इसलिये वहा ग्रहों का दुष्टयोग होने पर भी दुष्काल नहीं होता, किंतु संग्राम प्लेग आदि उपद्रवों के कारण से विपरीत भी हो जाता है ॥१०॥ उसके अनुसार मारवाड़ आदि जागल देशों म अधिक वर्षा करने वाले शुभ ग्रहों का उदय होने पर भी वरसात का अभाव होता हैं, क्योंकि इस देश मे वुद्धिमानो ने कम वृष्टि का योग वतलाया है ॥११॥ देश में वायु और वादल के योग से वर्ष का शुभाशुभ जानना । यह योग सब वृष्टियोगों से वलवान् कहा है ॥१२॥ देश मे कभी स्वाभाविक उत्पात हो तो वास्तविक वलवान् होता है । इसलिये विद्वान् लोग वर्षफल जानने के लिये उस उत्पात को जाने ॥१३॥

अपने रहने के स्थान के और समग्र देश के कल्याण के लिये निमित्त (शकुन) आदि देखना चाहिये, उन म उत्पात आदि को देख कर अपने स्थान का और देशका उद्यमी पुरुष त्याग कर दें ॥१४॥ पदार्थ जिस स्वरूप में सर्वदा रहता है, उस मे कुछ फेरफार मालूम

न्ते। धाराधर्! विशन्त्यापौ, उदकस्य पतनं परिपक्वसकारगमस्य उदकयानपतन गम्भादकयानिका उदकजननस्वभावा । च्युत्वा म शि उत्तपन्ते, अपगच्छन्ति गच्छन्ते, गतस्य पर्यायस्य पर्यायेण आगत्य अयन्त उत्पद्यन्ते, वार वार क्षेत्रस्वभाव- वित्येकम् ॥ १ ॥ तथा देवा वैमानिका ज्योतिष्का नागा नाग- कुमारा भवनपत्युपलक्षणमेतत्, यक्षा भूता इति व्यन्तरो- पलक्षणम्, अथवा देवा इति सामान्यं, नागादयस्तु विशेषः । एतद् ग्रहणं च प्राय एषामेवंविधं कर्मेति । वृष्टिरिति शाप- नाय विधिप्रत्ययाद् वा सुभगतेरिति सम्यगाराधिता भवन्ति । विनयकरणाभावादिति गम्यते तथाऽन्यत्र भवस्थलादौ देशे मगधे वा तत्रैव समुत्थितमुत्पन्नं, उदकप्रधानं, पौद्गलं पुद्गलसमूहं मेघमित्यर्थः । उदकपौद्गलं तथा परिणतं उदक- दायकत्वस्य भवनं घन एव विद्युदादिकरणाद् वर्षितुकाम सन् तं देशं मगधादिकं संहरन्ति नयन्तीति द्वितीयम् ॥ २ ॥ अभ्रादि मेघादिवर्द्धलक-दुर्दिनसञ्चयलक्षणं तस्मिन् देशे स मुत्थितमनुत्पन्नं वायुकायः प्रचण्डवातो वा विधुनाति न वि ध्वंसयतीति तृतीयमिति वृष्टिः ॥ ३ ॥ इति स्थानाङ्गसूत्र ॥

मरुधा' जालन्धरो' मिथ'-स्त्रिधा देशा सुभिक्षक
तस्मात् स्वभावं विज्ञाय जलवृष्टिर्निवेद्यते ॥ ८ ॥
तस्मान् मासवर्षेशादौ समानेऽपि महोदये ।
वृष्टिः स्यान्नैव नियता कदाचित् क्षेत्रे कचित्तदा ॥ ९ ॥

जालन्धरदेश मारवाड़देश और मिथिला, ये तीन प्रकार के देश सुभिक्षवाले माने हैं, उनके स्वभाव को पहिचानने से वर्षा कही जाती है ॥८॥ इसी कारण से मासेश आदि ग्रहस्वामी में समानरूप एक प्रकार वर्षा हुए भी के उदय होने पर भी वर्षा नियम से

तदा दुष्टे ग्रहादीनां योगे दुर्भिक्षता नहि ।
किन्तु विग्रह-मार्यादिस्तत्कृतं वैकृतं भवेत् ॥ १० ॥
एवं मरुस्थलादौ स्याद् यदा शुभो ग्रहोदयः ।
तथाप्यवग्रहो वृष्टे-र्वाच्यः स्वल्पोऽपि धीमता ॥ ११ ॥
ज्ञेयं वाताभ्रयोगेन देशे वर्षशुभाशुभम् ।
तेनायं बलवान् सर्व-जलयोगेभ्य इष्यते ॥ १२ ॥
देशे स्वभावादुत्पातः कदाचिद् तत्त्वतो बली ।
तस्माद् वर्षावबोधाय लक्षयेत् त विचक्षणः ॥ १३ ॥

यदुक्तं विवेकविलासे उत्पातप्रकरणम्—

स्ववासदेशक्षेमाय निमित्तान्यवलोकयेत् ।
तस्योत्पातादिकं वीक्ष्य त्यजेत् तं पुनरुद्यमी ॥ १४ ॥

होती है, क्योंकि काल की अपेक्षा क्षेत्र (देश) में बलिष्ठता है ॥९॥ इसलिये वहां ग्रहों का दुष्टयोग होने पर भी दुष्काल नहीं होता, किंतु संग्राम प्लेग आदि उपद्रवों के कारण से विपरीत भी हो जाता है ॥१०॥ उसके अनुसार मारवाड़ आदि जांगल देशों में अधिक वर्षा करने वाले शुभ ग्रहों का उदय होने पर भी वरसात का अभाव होता है, क्योंकि इस देश में बुद्धिमानों ने कम वृष्टि का योग बतलाया है ॥११॥ देश में वायु और बादल के योग से वर्षा का शुभाशुभ जानना । यह योग सब वृष्टियोगों से बलवान् कहा है ॥१२॥ देश में कभी स्वाभाविक उत्पात हो तो वास्तविक बलवान् होता है । इसलिये विद्वान् लोग वर्षफल जानने के लिये उस उत्पात को जानें ॥१३॥

अपने रहने के स्थान के और समग्र देश के कल्याण के लिये निमित्त (शकुन) आदि देखना चाहिये, उन में उत्पात आदि को देख कर अपने स्थान का और देशका उद्यमी पुरुष त्याग कर दे ॥१४॥ जो पदार्थ जिस स्वरूप में सर्वदा रहता है, उस में कुछ फेरफार भाल

प्रकृतेरन्यथा भावे उत्पातः स त्वनेकधा ।
स यत्र तत्र दुर्भिक्षं देशराज्यप्रजाक्षयः ॥ १५ ॥
देवानां विकृतं भङ्गं विशेषमायतनेषु च ।
ध्वजादयोर्ध्वमुखो यत्र तत्र राष्ट्राद्युपद्रवः ॥ १६ ॥
आदिः कृषिजीवीव विषमी पशुपालकः ।
देवप्रतिमाभङ्गो लिङ्गिविप्रक्षयस्तथा ॥ १७ ॥
ऋतौ विपर्यया यत्र तत्र देशभयं भवेत् ।
देवध्वंसः प्रजापीडा दुर्भिक्षं विप्रघातकः ॥ १८ ॥
जलस्थलपुरारण्य-जीवान्यस्थानदर्शनम् ।
शिवाकाकादिकाक्रन्दः पुरमध्ये पुरच्छिदे ॥ १९ ॥
छत्रप्राकारसेनादि-दाहाद्यैर्नृपमीः पुनः ।
भस्मायां ज्वलनं काष्ठाग्निगमः स्वयमाहुः ॥ २० ॥

हो तब उसको उत्पात कहते हैं, वह अनेक प्रकार के हैं। उत्पात जहाँ होता है वहाँ दुष्काल पड़ता है, तथा देश राज्य और प्रजा का नाश होता है ॥१५॥ जहाँ देवमि सम्बन्धी में और देव मंदिरों में देवों की मूर्तियों के स्वरूप मे फेरफार या भंग हो और ध्वजा ऊंची उड़ती देखाई दे तो राष्ट्र (देश) आदि में उपद्रव होते हैं ॥१६॥ राजा आदि खेती करने लगें विधर्मी लोग पशु पालने लगें, देव की प्रतिमा का भंग हो, तब लिंगी (सन्यासी) और ब्राह्मण का नाश होता है ॥१७॥ जहां ऋतु में फेरफार हो वहां देशमें भय देवालय का नाश प्रजा को दुःख दुष्काल और ब्राह्मण का नाश होता है ॥१८॥ जिस नगर में जलचर जीव भूमि पर और भूचर जीव जल में मरघटके जीव जंगल मे, और जंगल के जीव नगर में स्वाभाविक रीति से दिखने में आवें गीदड़ (सियाल) और कौवे बहुत शब्द करते देखाई दें तो उस नगर का नाश होता है ॥१९॥ छत्र किला और सेना

अन्यायकुसुमाचारो पाखण्डाधिकता जने ।
सर्वमाकस्मिकं जातं वैकृतं देशनाशनम् ॥ २१ ॥
प्रावृष्येन्द्रं धनुर्दृष्टं नाह्नि सूर्यस्य सन्मुखम् ।
रात्रौ दुष्टं सदा दोष-काले वर्णव्यवस्थया ॥ २२ ॥
सित-रक्त-पीत-कृष्णं सुरेन्द्रस्य शरासनम् ।
भवेद् विप्रादिवर्णानां चतुर्णां नाशनं क्रमात् ॥ २३ ॥
घ्यकाले पुष्पिता वृक्षाः फलिताश्चान्य भूभुजे ।
अल्पेऽल्पं महति प्राज्यं दुर्निमित्तैः फलं वदेत् ॥ २४ ॥
अश्वत्थोदुम्बरवट-प्लक्षाः पुनरकालतः ।
विप्रक्षत्रियविट्शूद्र-वर्णानां क्रमतो भिये ॥ २५ ॥

आदि में अग्नि का उपद्रव हो तो राजा को भय उत्पन्न होता है, और शस्त्र ज्वलायमान देखपडे या स्वयं म्यान में से बाहर निकल पडे तो संग्राम होता है ॥२०॥ जब लोगों मे अन्याय दुराचार और धूर्तता अधिक देखपडे और अकस्मात् सब रीति रिवाज विपरीत होजाय, तब देश का नाश होता है ॥२१॥ वर्षाकाल में इन्द्रधनुष दिन मे सूर्यके सन्मुख देखपडे तो दोष नहीं है, मगर वह रात्रि मे देखपडे तो अशुभ जानना, और बाकी के समय देखपडे तो रंग के अनुसार शुभाशुभ जानना ॥२२॥ वह इन्द्र-धनुष सफेद, लाल, पीला और कृष्ण रंग के समान देखपडे तब क्रम से ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र इन का विनाश होता है ॥२३॥ यदि अकाल मे [बिना ऋतु] वृक्षों में फल फूल आजाय तो राज्य परिवर्त्तन होता है । दुष्ट निमित्त अल्प हो तो अल्प और अधिक हो तो अधिक फल कहना ॥२४॥ पीपल, गूलर, बरगद (वड), प्लक्ष ये चार वृक्ष अकाल में फल फूल दे तो क्रमसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, इन चार वर्गों को भय होता है ॥२५॥ वृक्ष के उपर वृक्ष, पत्र के उपर पत्र, फल के उपर फल और फूल के उपर फूल लगा हुआ देख

प्रकृतेरन्यथा भाव उत्पात' स त्वनेकधा ।
स यत्र तत्र दुर्भिक्षं देशराज्यप्रजाक्षय' ॥ १५ ॥
देवानां वैकृतं भङ्गः चित्रेष्वायतनेषु च ।
ध्वजश्चार्धमुखो यत्र तत्र राष्ट्रोपप्लव ॥ १६ ॥
राजादि कृषिजीवीषेषु विधर्मी पशुपालकः ।
देवनाप्रतिमाभङ्गः क्षितिविप्रक्षयस्तथा ॥ १७ ॥
ऋतौ विपर्ययो यत्र तत्र देशभयं भवेत् ।
देवध्वंस प्रजापीडा दुर्भिक्षं विप्रघातक. ॥ १८ ॥
जलस्थलपुरारण्य-जीवान्यस्थानदर्शनम् ।
शिवाकाकादिकाक्रन्द' पुरमध्ये पुरच्छिदे ॥ १९ ॥
छत्रप्राकारसेनादि-दाहाद्यैर्नृपमी' पुन' ।
अस्त्रायाँ ज्वलनं भवेद्राज्ञिगम' स्वयमाहवे ॥ २० ॥

हो तब उसको उत्पात कहते हैं , वह अनेक प्रकार के हैं । उत्पात जहाँ होता है वहाँ दुष्काल पड़ता है, तथा देश राज्य और प्रजा का नाश होता है ॥१५॥ जहाँ रंगीन तसबीरों में और देव मन्दिरों में देवों की मूर्तियों के स्वरूप में फेरफार या भंग हो और ध्वजा ऊंची उन्ती दिखावे तो राष्ट्र (देश) आदि में उपद्रव होते हैं ॥१६॥ राजा आदि खेती करने लगें विधर्मी लोग पशु पालने लगें देव की प्रतिमा का भंग हो तब क्षिती (सन्यासी) और ब्राह्मण का नाश होता है ॥१७॥ जहां ऋतु में फेरफार हो वहां देशमें भय देवालय का नाश, प्रजा को दुःख दुष्काल और ब्राह्मण का नाश होता है ॥१८॥ जिस नगर में जलचर जीव भूमि पर और भूचर जीव जल में मालूम होवे और जंगल में और जंगल के जीव नगर में स्वाभाविक रीति से देखने में आवे गीदड़ (शियाल) और कौवे बहुत शब्द करते देखपड़े तो उस नगर का नाश होता है ॥१९॥ छत्र किला और सेना

अन्तःपुरपुरानीक–कोशयानपुरोधसाम् ।
राजपुत्रप्रकृत्यादे-रपि रिष्टफलं भवेत् ॥ ३२ ॥
पक्षमासर्त्तुषण्मास-वर्षमध्ये न चेत् फलम् ।
रिष्टं तद् व्यर्थमेव स्यादुत्पन्ने शान्तिरिष्यते ॥ ३३ ॥
दौःस्थ्ये भाविनि देशस्य निमित्तं शकुनाः सुराः ।
देव्यो ज्योतिषमन्त्रादिः सर्वं व्यभिचरेच्छुभम् ॥ ३४ ॥
प्रवासयन्ति प्रथमं स्वदेवान् परदेवताः ।
दर्शयन्ति निमित्तानि भङ्गे भाविनि नान्यथा ॥ ३५ ॥
एवमुत्पातसंयोगान् ज्ञात्वा शास्त्रान्तरादपि ।
वर्षे शुभाशुभं देशे ज्ञेयं वृष्टिपरीक्षकैः ॥ ३६ ॥
सुषमाज्ञापकं सूत्रं स्थानाङ्गे वीरभाषितम् ।
तदुत्पातपरिज्ञानात् सुज्ञानं सुधिया स्वयम् ॥ ३७ ॥

में अन्यजाति के बच्चे का प्रसव हो और गदही बच्चा प्रसववर्ती देखपडे तो भय उत्पन्न होता है ॥३१॥ अन्तःपुर, नगर, सेना, भंडार, वाहन, [हाथी, घोडा, पालखी आदि] राजगुरु, राजा, राजपुत्र, और मंत्री आदि को उत्पात का फल होता है ॥३२॥ एक पक्ष, एक मास, दो मास, छ मास या एक वर्ष इन में उत्पात का फल न मिले तो वह उत्पात व्यर्थ समझना । उत्पात होने पर शान्ति कराना अच्छा है ॥३३॥ जब देश की खराब दशा होने वाली होती है तब, निमित्त, शकुन, देवता, देवी, ज्योतिष और मंत्र आदि शुभ हो तो भी विपरीत फल देते हैं ॥३४॥ जब भविष्य में देश आदि का नाश होने वाला हो तब ही दूसरे देवता अपने देश के देवता को निकाल देते हैं और दुष्ट उत्पात दिखलाते हैं । जब नाश न होने वाला हो तब ऐसे उत्पात नहीं होते हैं ॥३५॥ इसी तरह दूसरे शास्त्रों से भी उत्पात योगों को जानकर देश मे वर्ष का शुभाशुभ ज्योतिषियों को जानना चाहिये ॥३६॥ स्थानांग सूत्र में सुषमाज्ञापक सूत्र

वृक्षे पत्रे फले पुष्पे वृक्षं पुष्पं फले दलम् ।
जायते चेत् तदा लोके दुर्भिक्षादिमहाभयं ॥ २६ ॥
ग्रामे निर्निशि सर्वत्र कलिता दर्दुरः शिखी ।
श्वेतकाकश्च गृध्रादिभ्रमणं देशनाशनम् ॥ २७ ॥
अपूज्यपूजा पूज्याना-मपूजा करिणीमदः ।
शृगालोऽह्नि लपन् रात्रौ तित्तिरश्च जगद्भिये ॥ २८ ॥
खरस्य रसनञ्चापि समकाले यदा रसेत् ।
ज्ञात्वा वा मत्सरी जीवो दुर्भिक्षादिस्तदा भवेत् ॥ २९
मांसाशनं स्वजातेश्च विभीतून भुजगोऽलिमीन ।
काकादेरपि भक्षस्य गोपनं सस्यहानये ॥ ३० ॥
अन्यजातेरन्यजाते मापयं प्रसवः शिशोः ।
मैथुनं च खरीसृष्टि-दर्शनं चापि भीतिदम् ॥ ३१ ॥

पड़े तो जगत में बड़ा भय देनेवाले दुष्काल आदि उपद्रव होते हैं ॥२६॥ सब जगह रात्रि में गीदड़ों का शब्द सुनने में आवे, ज्यों वहां कलह हो, शिखा वाले मेण्डक देखने में आवे सफेद कौवा कुत्ता और गीध पक्षी इन का घूमना अधिक देखने में आवे तो देश का नाश होता है ॥२७॥ जहाँ पूजनीय पुरुषों की पूजा न हो अपूजनीय पुरुषों की पूजा हो हस्तिनी के गंडस्थल मेंसे मद झरने लगे शियाल [गीदड़] दिन में शब्द करे और रात्रि में तीतरपक्षी बोले तो जगत् में भय उत्पन्न होता है ॥२८॥ जिस समय गदहा [गधा] रेंकता हो उस समय उसके साथ कोई भी नगरवासी जीव भोंकने लगे तो दुष्काल आदि उपद्रव होते हैं ॥२९॥ किसी सर्प और मच्छी ये दो जीवों का भक्षण करने के और अपनी अपनी जाति के जीवों का मांस भक्षण करे और कौवा आदि अपना भक्ष [खुराक] छुपा दे तो धान्य का नाश होता है ॥३०॥ अन्य जाति के जीव अन्य जाति के जीवों के साथ मायथ या मैथुन करें असमानजाति

अन्तःपुरपुरानीक–कोशयानपुरोधसाम् ।
राजपुत्रप्रकृत्यादे-रपि रिष्टफलं भवेत् ॥ ३२ ॥
पक्षमासर्त्तुषण्मास-वर्षमध्ये न चेत् फलम् ।
रिष्ट तद् व्यर्थमेव स्यादुत्पन्ने शान्तिरिष्यते ॥ ३३ ॥
दौःस्थ्ये भाविनि देशस्य निमित्त शकुनाः सुराः ।
देव्यो ज्योतिषमन्त्रादिः सर्वं व्यभिचरेच्छुभम् ॥ ३४ ॥
प्रवासयन्ति प्रथमं स्वदेवान् परदेवताः ।
दर्शयन्ति निमित्तानि भङ्गे भाविनि नान्यथा ॥ ३५ ॥
एवमुत्पातसंयोगान् ज्ञात्वा शास्त्रान्तरादपि ।
वर्षे शुभाशुभ देशे ज्ञेय वृष्टिपरीक्षकैः ॥ ३६ ॥
सुगमाज्ञापकं सूत्रं स्थानाङ्गे वीरभाषितम ।
तदुत्पातपरिज्ञानात् सुज्ञानं सुधिया स्वयम् ॥ ३७ ॥

में अन्यजाति के बच्चे का प्रसव हो और गदही बच्चा प्रसवती देखपडे तो भय उत्पन्न होता है ॥३१॥ अन्त पुर, नगर, सेना, भडार, वाहन, [हाथी, घोडा, पालखी आदि] राजगुरु, राजा, राजपुत्र, और मत्री आदि को उत्पात का फल होता है ॥३२॥ एक पक्ष, एक मास, दो मास, छ मास या एक वर्ष इन में उत्पात का फल न मिले तो वह उत्पात व्यर्थ समझना । उत्पात होने पर शान्ति कराना अच्छा है ॥३३॥ जब देश की खराब दशा होने वाली होती है तब , निमित्त, शकुन, देवता, देवी, ज्योतिष और मत्र आदि शुभ हो तो भी विपरीत फल देते हैं ॥३४॥ जब भविष्य में देश आदि का नाश होने वाला हो तब ही दूसरे देवता अपने देश के देवता को निकाल देते हैं और दुष्ट उत्पात दिखलाते हैं । जब नाश न होने वाला हो तब ऐसे उत्पात नहीं होते हैं ॥३५॥ इसी तरह दूसरे शास्त्रों से भी उत्पात योगों को जानकर देश मे वर्ष का शुभाशुभ ज्योतिषियों को जानना चाहिये ॥३६॥ स्थानाग सूत्र मे सुगमाज्ञापक सूत्र

मरुस्थले स्वभावेन देशे स्युर्जलयोनिकाः ।
बहवः पुद्गला जीवा महावृष्टिस्तदा भवेत् ॥ ३८ ॥
एवं च जाङ्गलेऽपि स्युर्भूयांसो जलयोनिकाः ।
शुभग्रहप्रसङ्गेन महावृष्टिविधायिनः ॥ ३९ ॥
अनूपेऽपि यदा क्रूर-ग्रहवेधो हि सम्भवेत् ।
तदा जीवाः पुद्गलाश्च स्वल्पाः स्युर्जलयोनिकाः ॥ ४० ॥
अनावृष्टिस्तदावेद्या स्वभावस्य विपर्ययात् ।
ततो यथोचितं वीक्ष्य सर्वदेशेषु वार्षिकम् ॥ ४१ ॥

यदाह मेघमालाकारः—

मेषसंक्रान्तिकालात्तु नवस्वपि दिनेष्वथ ।
यत्राभ्रं वातो विद्युद् वाप्यगर्जादी तत्र वर्षति ॥ ४२ ॥
यत्रात्र नवगर्भेषु वाताभ्रादिविनिश्चयः ।
यस्यां दिशि यत्र यामे दिग्धिष्ण्ये तत्र वर्षति ॥ ४३ ॥

को भी योगविद ने कहा है कि उन उत्पात को जानने से बुद्धिमान् स्वयं अच्छे ज्ञान को प्राप्त कर सकते हैं ॥३७॥

जब देश में बहुत से जलयोनि के पौद्गलिक जीव स्वभाव से ही उत्पन्न होते हैं तब बड़ी वर्षा होती है उसको उत्पात नहीं कहना चाहिये ॥३८॥ इसी तरह जांगल देश में भी बहुत से जलयोनि के जीव हैं वे शुभग्रह के प्रसंग से बड़ी वर्षा करने वाले हैं। ॥३९॥ जलमय प्रदेश में भी जब क्रूरग्रह का वेध हो तब जलयोनि के जीव और पुद्गल थोड़े होते हैं ॥४०॥ स्वभाव में जब कुछ फेरफार देख पड़े तब अनावृष्टि कहना, इसलिये सब देश में बरस को देखकर ही यथायोग्य कहना ॥४१॥ मेषसंक्रान्ति के समय से नव दिनों में जब बादल, वायु और बिजली हो तब उससे गर्जादि नव महीनों में वर्षा होती है ॥४२॥ जैसे नव गर्भ में भी वायु-बादल आदि का [illegible]

किंवा नवसु यामेषु वाताभ्रादिशुभं भवेत् ।
यस्यां दिशि च सम्पूर्णं तद्देशे विपुल जलम् ॥ ४४ ॥

लौकिकमपि—

आर्द्रा थका नक्षत्र नव, जो वरसे मेह अनंत ।
भड्डली सुणे भरडो भणे, रहिजे होइ निचिंत ॥ ४५ ॥
जिण दिसि आभो अधिक हुई, सा दिसि साची जाण ।
सा धण धान्न रसाउली, भड्डली भली वखाण ॥ ४६ ॥

अथ पद्मिनीचक्र कूर्मचक्र वा—

अथ तस्मात् प्रवक्ष्यामि ग्रहयोः क्रूरसौम्ययोः ।
वेधज्ञानाय देशानां चक्रं पद्माह्वयं यथा ॥ ४७ ॥
अष्टपत्र लिखेच्चक्रं पद्माकारं मनोहरम् ।
कर्णिका नवमीमध्ये तत्र देशांश्च विन्यस्येत् ॥ ४८ ॥
कृत्तिकादीनि भानीह त्रीणि त्रीणि यथाक्रमम् ।
संस्थाप्य वीक्ष्यते चक्रं तत्कूर्मापरनामकम् ॥ ४९ ॥
यत्र ऋक्षे स्थितः सौरि-स्तद्दिशो देशमण्डले ।
दुर्भिक्षं यदि वा युद्धं व्याधिर्दुःखं प्रजायते ॥ ५० ॥

जिस दिशा में और जिस प्रहर में हो, उस दिशा और उसी ही नक्षत्र में वर्षा होती है ॥४३॥ यदि नव प्रहर में वायु-बद्दल आदि होतो अच्छा है जिस दिशा में सपूर्ण हो उस देश में बहुत वर्षा होती है ॥४४॥ लोक भाषा में विशेष कहा है कि आर्द्रा से नव नक्षत्रों में वर्षा होतो निश्चित रहना ऐसा ब्राह्मण कहता है और भडली सुनती है ॥४५॥ जिस दिशा में बाद्दल अधिक हो वह दिशा सच्ची जानना, वह धन धान्य से पूर्ण करें।४६।

देशों में शुभाशुभ ग्रहों का वेध जानने के लिये पद्म नामके चक्र को मैं कहता हू, जैसे—मनोहर आठ पाखडी वाला कमल का आकार सदृश चक्र बनाकर इसमें देशों के नाम और कृत्तिकादि तीन२ नक्षत्र अनुक्रम

अनुत्पातं स्वभावेन देशो स्युर्जलयोनिकाः ।
यत्र पुद्गला जीवा महावृष्टिस्तदा भवेत् ॥ ३८ ॥
एवं च जाङ्गलेऽपि स्युर्भूयांसो जलयोनिकाः ।
शुभग्रहप्रसङ्गेन महावृष्टिविधायिनः ॥ ३९ ॥
मरुदेशेऽपि यदा क्रूर-ग्रहवेधो हि सम्भवेत् ।
तदा जीवाः पुद्गलाश्च स्वल्पाः स्युर्जलयोनिकाः ॥ ४० ॥
अनावृष्टिस्तदादेश्या स्वभावस्य विपर्ययात् ।
ततो यथोचितं वीक्ष्य सर्वदेशेषु वर्षणम् ॥ ४१ ॥

यदाह मेघमालाकारः—

मेषसंक्रान्तिकालात्तु नवस्वपि दिनेष्वथ ।
यत्राभ्र वातो विद्युद् धाम्यत्रार्द्री तत्र वर्षति ॥ ४२ ॥
यथाभ्र नक्षत्रेषु वाताभ्रादिविनिर्णयः ।
यस्यां दिशि यत्र ग्रामे दिग्धिष्ण्ये तत्र वर्षति ॥ ४३ ॥

को भी श्रीजिन ने कहा है कि इन उत्पात को जानने से बुद्धिमान् स्वयं अच्छे ज्ञान को प्राप्त कर सकते हैं ॥३७॥

जब देश में बहुत से जलयोनि के पौद्गलिक जीव स्वभाव से ही उत्पन्न होते हैं तब बड़ी वर्षा होती है, उसको उत्पात नहीं कहना चाहिये ॥३८॥ इसी तरह जांगल देश में भी बहुत से जलयोनि के जीव हैं वे शुभग्रह के प्रसंग से बड़ी वर्षा करने वाले हैं। ॥३९॥ जलमय प्रदेश में भी जब क्रूरग्रह का वेध हो तब जलयोनि के जीव और पुद्गल थोड़े होते हैं ॥४०॥ स्वभाव में जब कुछ फेरफार हो पड़े तब अनावृष्टि कहना इसलिये सब देश में बरस को देखकर ही यथायोग्य कहना ॥४१॥ मेषसंक्रान्ति के समय से नव दिनमें जब बादल, वायु और बिजली हो तब क्रमसे आर्द्रादि नव नक्षत्रों में वर्षा होती है ॥४२॥ वैसे नव नक्षत्रों में भी वायु-बादल आदि का निर्णय करना,

किंवा नवसु यामेषु वाताभ्रादिशुभं भवेत् ।
यस्यां दिशि च सम्पूर्णं तद्देशे विपुल जलम् ॥ ४४ ॥

लौकिकमपि—

आर्द्रा थका नक्षत्र नव, जो वरसे मेह अनंत ।
भड्डली सुणे भरडो भणे, रहिजे होइ निचिंत ॥ ४५ ॥
जिण दिसि आभो अधिक हुई, सा दिसि साची जाण ।
सा घण धान्न रसाउली, भड्डली भली वखाण ॥ ४६ ॥

अथ पद्मिनीचक्र कूर्मचक्र वा—

अथ तस्मात् प्रवक्ष्यामि ग्रहयोः क्रूरसौम्ययोः ।
वेधज्ञानाय देशानां चक्रं पद्माह्वयं यथा ॥ ४७ ॥
अष्टपत्र लिखेच्चक्रं पद्माकारं मनोहरम् ।
कर्णिका नवमीमध्ये तत्र देशांश्च विन्यस्येत् ॥ ४८ ॥
कृत्तिकादीनि भानीह त्रीणि त्रीणि यथाक्रमम् ।
संस्थाप्य वीक्ष्यते चक्रं तत्कूर्मापरनामकम् ॥ ४९ ॥
यत्र ऋक्षे स्थितः सौरि-स्तद्दिशो देशमण्डले ।
दुर्भिक्षं यदि वा युद्धं व्याधिर्दुःखं प्रजायते ॥ ५० ॥

जिस दिशा में और जिस प्रहर में हो, उस दिशा और उसी ही नक्षत्र में वर्षा होती है ॥४३॥ यदि नव प्रहर में वायु-बद्दल आदि होतो अच्छा है जिस दिशा में सपूर्ण हो उस देश में बहुत वर्षा होती है ॥४४॥ लोक भाषा में विशेष कहा है कि आर्द्रा से नव नक्षत्रों में वर्षा होतो निश्चित रहना ऐसा ब्राह्मण कहता है और भडली सुनती है ॥४५॥ जिस दिशा में बाद्दल अधिक हो वह दिशा सच्ची जानना, वह धन धान्य से पूर्ण करें।४६।

देशों में शुभाशुभ ग्रहों का वेध जानने के लिये पद्म नामके चक्र को मैं कहता हू, जैसे—मनोहर आठ पाखडी वाला कमल का आकार सदृश चक्र बनाकर इसमें देशों के नाम और कृत्तिकादि तीन२ नक्षत्र अनुक्रम

पद्मिनीचक्रस्थापना यथा—

मयशनिचक्रम्—

मेषादित्रितये प्राच्यामपाच्यां कर्कटत्रये ।
तुलात्रये पश्चिमायामुदीच्यां मकरत्रये ॥ ५१ ॥
शनैश्चरः सम्मात् पश्यन् तत्तद्देशान् प्रपीडयेत् ।
दुर्भिक्षदेशभङ्गार्थ-विग्रहो राजविड्वरे ॥ ५२ ॥

अथ सर्वतोभद्रचक्रे नियुग्विचारः—

याम्यां भगाग्निविष्ण्ये पुष्यं मैत्र्यं विदैवतम् ।
पूर्वभाद्रपदं याम्यं मासानष्टौ प्रपीडयेत् ॥५३॥
ब्राह्मेन्द्रराधाश्रवणो-त्तराषाढाश्च वासवम् ।
पूर्वस्यां सप्तदिवसान् यावच्छ्नुमकर्नं भवेत् ॥५४॥
मृगादित्याश्विनीहस्तास्वात्युत्तरफाल्गुनी ।
उत्तरस्यां च पीडाकृद् यावन्मासत्रयं भवेत् ॥५५॥

से लिख कर चक्र को देखना चाहिये । इस पद्म नाम के चक्र को कूर्मचक्र भी कहते हैं । जिस नक्षत्र पर शनिश्चर रहा हो उसी दिशा के देशमंडल में दुष्काल, युद्ध, रोग और दुःख आदि उपद्रव होते हैं ॥४७ से ५ ॥

मेष वृष और मिथुन राशिका शनिश्चर पूर्वदिशा को, कर्क सिंह और कन्या राशि का दक्षिणदिशा को तुला वृश्चिक और धन राशि का पश्चिमदिशा को मकर कुम्भ और मीन राशिका उत्तरदिशा को देखता है । तो उन उन दिशा के देशों में दुष्काल देशभंग विग्रह और परचक्र आदि उपद्रवों से दुःखी करता है ॥५१॥५२॥

दक्षिणदिशा में पूर्वाफाल्गुनी, कृत्तिका, पुष्य, मघा, विशाखा, पूर्वाभाद्रपदा और भरणी ये नक्षत्र आठ मास दुःख कारक हैं । पूर्वदिशा में रोहिणी, ज्येष्ठा, अनुराधा, श्रवण, उत्तराषाढा और धनिष्ठा ये सात दिन शुभकारक हैं । उत्तरदिशा में मृगशीर्ष, पुनर्वसु,

आर्द्राश्लेषामूलपौष्णा-वारुणोत्तरभाद्रपात् ।
मासं यावत् पश्चिमायां शुभाय कथितं बुधैः ॥५६॥
चक्रे श्रीसर्वतोभद्रे शुभवेधे शुभं मतम् ।
क्रूरवेधे भवेत् पीडा तत्तद्देशेषु निश्चयात् ॥५७॥

अथ कर्पूरचक्रेण देशान्तरेषु वर्षे शुभाशुभज्ञान यथा तत्र प्रथम चक्रन्यासप्रकारः—

गाथा-पणमिय पयारविंदं, तिलुक्कनाहस्स जगपरिवुदस्स ।
वुच्छामि लोगविजयं, जंतं जंतूण सिद्धिकए ॥५८॥
सिरिरिसहेसरसामिय, पारणप्पगारम्भ (?) गणिय धुवं ।
दस उयरेहि ठवियं, जं तं देवाण सारमिणं ॥५९॥
नवकोएण सुद्धं, इगसय पणयाल १४५ अंक गणियपयं ।
इक्किक्क होई वुड्ढी, तिपन्नसयं चियाणाहि ॥६०॥

अश्विनी हस्त चित्रा और उत्तराफाल्गुनी ये दो मास दुःख कारक हैं । पश्चिमदिशा में आर्द्रा, आश्लेषा, मूल, रेवती, शतभिषा और उत्तराभाद्रपदा ये एक मास शुभकारक हैं । इस सर्वतोभद्रचक्र मे जिस देश मे शुभग्रह का वेध हो तो शुभ और क्रूरग्रह का वेध होतो दुःख निश्चय कर के होता है ॥५३ से ५७॥

त्रिलोक के नाथ और जगत् के स्वामी के चरणकमल को नमस्कार करके प्राणीमात्र की सिद्धि के लिये लोकविजय को कहता हूं ॥ ५८ ॥ श्री-ऋषभदेवस्वामी का पारणा के दिन याने अक्षय तृतीया को बादल का निश्चय करें । [जो देवों के साररूप दश अंक हैं वे बिच में रखें] ॥५९॥ नवकोण वाला चक्र बनाकर बीच में १४५ अंक लिखें, पीछे उसमें एक एक अक १५३ तक बढाकर उत्तर ईशान पूर्व इत्यादि क्रम से आठों ही दिशा में लिखें ॥६०॥ देश के ध्रुवांक, दिशा के ध्रुवांक और अश्विन्यादि से जिस नक्षत्र पर शनि हो उतना अंक, ये तीनों मिला

निद्दिभत्ते जं सेसं, तमंकसारेण गणिय जो देसी ।
संवच्छररायाओ, आरब्भ दसाक्कमे भणिया ॥५१॥
जा अंका जं देसे, पायव्वो देसगामनगरस्स ।
आइच्चाइगहाण, फलं च पभणंति गीयत्था ॥५२॥
जं जम्मि देसनयरे, गामे ठाणे वि नत्थि मूल धुवो ।
त नामेण य रिक्खं, [illegible] करिय तम्मिस्सं ॥५३॥
निद्दिभत्ते अ सेसं, धुवगणियं देसनयरगामाणं ।
मूलदसाक्कमगणियं, पुव्वुत्तकम्मे विपाएणाहि ॥५४॥
मेहवुट्ठी अण्णवुट्ठी, सपरचक्कं च रोगभयं ।
अन्नसुपत्ती नासो, रायकट्ठं सेणुवद्दवं च ॥५५॥
संवच्छररायाओ, गणियव्वं देसी [स ?] कमेण फलं ।
आइच्चाइग्गहाणं, सुहासुहं जाणए कुसले ॥५६॥

कर नवका भाग देना, जो शेष बचे वह वर्तमान संवत्सर के राजा से त्रिशोकोदशा क्रम से गिनकर फल कहना ॥५१॥ जो जो अंक जिस जिस देश में हैं वे देश गांव नगर के अंक जानना। इनसे विद्वानोंने रवि आदि ग्रहों का फल कहा है ॥५२॥ जो जो देश नगर गांव या स्थान का मूल ध्रुवांक न हो तो उनके दिशा के १४५ आदि मूल अंक, वर्ष के राजा का त्रिशोकोदशा का मूल ध्रुवांक, यानि जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र से गांव के नक्षत्र तक के अंक और दिशा के अंक ये सब इकट्ठे कर आपस से गुणा करना, पीछे उसमें नवका भाग देना शेष रहे उस अंक के अनुसार देश नगर गांव का मूल ध्रुवांक से फल कहना ॥५३ ५४॥ मेघवृष्टि, अन्नवृष्टि, स्वचक्र और परचक्र का भय, रोगभय, अन्नभाव की उत्पत्ति तथा विनाश, राजकष्ट, सेना में उपद्रव ये सब संवत्सर के राजा से त्रैराशिक से सूर्य आदि ग्रहों का शुभाशुभ फल को कुशल पुरुष जानें ॥ ५५, ५६ ॥

आइच्चे आरोगी लोयाणं हवइ समप्पत्ती ।
रायासुतेजसुओ अ सवित्तीयं किंचिवि भयं ॥६७॥
चंदेहि नरवराणं आरुग्गा सुहं च धणावुड्ढी ।
थोयजला अन्ननिप्पत्ती अमियरसो होइ पुढवीए ॥६८॥
दुब्भिक्खं रायदुक्खं हयहाणपलीवणा महाघोरा ।
जुज्झंति रायपुरिसा भूमे अरिभयं गणियं ॥६९॥
राहू रिद्धिविणासो ठाणब्भंसं च रायपज्जाणं ।
महदुक्ख पुरेहि भंगो नयरदेसस्स संहारो ॥७०॥
बहुदुद्धा गोमहिसी सस्सनिप्पत्ती च बहुमेहा ।
रायसुहं नत्थि भयं उत्तमवणियासु जीवेण ॥७१॥
मंदे नरवरमरण उवद्दवं सयललोयमज्झम्मि ।
दिय दूसणाय लोया घरि घरि भमंति कुलवहूआ ॥७२॥
बालत्थीसिसुमरणं धणनासं च रोगसंभवो ।
ठाणे ठाणे रायाणं संहारं च बुद्दे नर ॥७३॥

सूर्यफल—लोक सुखी, धान्य की समान प्राप्ति, राजाओं में पराक्रमता और ब्राह्मणों को कुछ भय हो ॥ ६७ ॥ चन्द्रफल—राजा प्रजा सुखी और आरोग्य हो, धन की वृद्धि हो, जल थोड़ा, अनाज की प्राप्ति और पृथ्वी अमृत रसवाली हो ॥६८॥ मंगलफल—दुर्भिक्ष, राजा को कष्ट, हाथी घोड़ा का विनाश कारक बड़ा भयकर राजपुरुषों का युद्ध हो, और शत्रु का भय हो ॥६९॥ राहुफल—ऋद्धि का विनाश, राजा प्रजा के स्थान का विनाश और उसको महादुःख, पुर का भंग और देश नगर का विनाश हो ॥७०॥ गुरुफल—गौ भैंस बहुत दूध दें, धान्य की उत्पत्ति हो, वर्षा बहुत हो, राजाओं को सुख हो और भय न हो ॥७१॥ शनिफल—राजा का मरण, समस्त लोक में उपद्रव, लोकों में दुषण तथा घर घर कुलवधूएँ भटकती फिरे ॥७२॥ बुधफल—बालक स्त्री का मरण, धन का

रायाण ठाणभंसो पयासुहं च पहुयगाबुद्धी ।
संवच्छरपरयाओ वासापुन्ना हवइ देसो ॥७४॥
सुसे मिच्छाण जसं पहुयस्स मेहसंकलियं ।
उत्तम जाई पीडा धणधन्न समाउला पुहवी ॥७५॥
पुनः—पुव्वाइ दिसा चउरो जत्था विचरंति चउसु विदिसासु ।
अंगारयतमसणिणो सा परचक्कं भयं घोरा ॥७६॥
कूरा कुणंति दुक्ख सेसा सव्वे सुहंकरा नेया ।
संमुह दाहिणवामा दिट्ठीए सुहयरा हुंति ॥७७॥
सूरो वि हरइ तेयं सम्मुहा हवइ रायलोयाणं ।
सोमो करइ साम भोमो अग्गी आइसारो ॥७८॥
बुद्धिकरो बुद्धिकरा पहुम लोयाण पहुय केकइरो ।
कोसं कोट्ठागारं पूरेई सुरगुरू अइरा ॥७९॥

नाश रोग का संभव और स्थान स्थान पर राजाओं का संहार हो ॥७३॥ चतुर्थ—राजाओं का स्थान भ्रष्ट हो प्रजा सुखी, बहुत मेघवर्षा, और देश संवत्सर तक वर्षा से पूर्ण हो ॥७४॥ [illegible]—म्लेच्छों का यश हो, मेघों से आच्छादित बहुत वर्षा हो उत्तम जन की पीड़ा और धन धान्य से समाकुल (पूर्ण) पृथ्वी हो ॥ ७५॥ फिर भी—पूर्वादि चार दिशा और चार विदिशा में जो ग्रह विचरते हैं, उनमें मंगल राहु और शनि ये क्रूरग्रह परचक्र का भयकारक हैं ॥७६॥ क्रूरग्रह दुःख कारक हैं तथा बाकी के सब ग्रह सुखकारक हैं और ये संमुख दक्षिण और बाँयी दृष्टि से सुखदायक हैं ॥७७॥ सूर्य संमुख हो तो राजलोगों के तेज का नाश करता है । चन्द्रमा—शांतिदायक है । मंगल—अग्नि और रोग करता है ॥७८॥ बुध—बहुत वर्षाकारक तथा केकयदेश के लोगों का बहुत विनाश कारक है । गुरु—खजाना और कोठार को समस्त प्रकार से पूर्ण करे ॥७९॥ शुक्र—राजा प्रजा की वृद्धि याने उत्पत्तिकारक और

सुक्को रायपयाणं वुड्ढिकरो जणियजणमाणंदो ।
मंदो नरवइकट्ठं दुब्भिक्खभयंकरो घोरो ॥ ८० ॥
राहू खप्पर रज्ज वृद्ध विणासेइ उत्तमवहूणं ।
दुप्पयपसुसंहारो अइअरित्तनासकरो केऊ ॥ ८१ ॥
अक्कजराहू मिलिया कत्तरिजोगेण एगए ससिट्ठिया ।
ज जं नक्खत्तं वेधइ तत्थेव करोय (करेइ) मंहारं ॥ ८२ ॥
अंगारो अग्गिकरो अन्नविसलाखे जंतुपिट्ठिचरो ।
तत्थ विदिसाविभागो दुक्खं वणियाणं निवमरणं ॥ ८३ ॥
तिहिआविमी सियपक्खे भद्दवयपोसमाहमासाणं ।
निवमरणं दुब्भिक्खं विहिकुलहाणा च मासेसु ॥ ८४ ॥
मासक्खओ पुन्निमहीणा तुल्लिआ अहिआ अहियत्तरी ।
दुब्भिक्ख होइ महग्घ समग्घं होइ सुब्भिक्खं ॥ ८५ ॥

मनुष्यों को आनन्ददायक है। शनि—राजा को कष्ट और भयकर दुर्भिक्षकारक है ॥ ८० ॥ राहु–खर्प्पर राज्य का और उत्तम वधूओं का विनाशकारक है। केतु–मनुष्य और पशुओं का विनाशकारक है ॥ ८१ ॥ कर्त्तरीयोग-से शनि राहु मिल जाय और साथ चद्रमा होकर जो जो नक्षत्र को वेधे उनका नाश करे ॥ ८२ ॥ मगल अग्निकारक है, रवि अन्ननाशक है, इसी तरह विदिशा विभाग में व्यापारी को दु ख और राजा का मरण हो ॥ ८३ ॥ भाद्रपद पौष और माघ महीने के शुक्लपक्ष की तिथि का क्षय हो तो राजा का मरण, दुर्भिक्ष, विधिकुल (ब्रह्मकुल) की हानी हो ॥८४ ॥ क्षयमास हो या पूर्णिमा का क्षय हो तो दुर्भिक्ष हो, पूर्णिमा समान हो तो समान भाव और अधिक या विशेष अधिक हो तो सुभिक्ष हो ॥ ८५ ॥

पुनः प्रकारान्तरेण कर्पूरचक्रस्य द्वितीयपाठः—

दिशश्चतस्रो विदिशश्चमे न्यस्य तदन्तरे ।
पुरी उज्जयिनी स्थाप्या मालवस्था पुरातनी ॥ ८६ ॥
भूमध्यरेखाविश्रान्ता लङ्कातो मेरुगामिनी ।
तेन श्रीऋषभेणेव पुरीमध्ये निवेशिता ॥ ८७ ॥
अन्येद्युरस्या भूपेन विक्रमार्केण चिन्तितम् ।
ज्ञायते सुखदुःखानि कथञ्चित् पार्श्ववासिनाम् ॥ ८८ ॥
परं न दूरदेशानां सुखदुःखादि वेद्यते ।
अत्रान्तरे मनोऽभिज्ञः कर्पूरः प्राह भूपतिम् ॥ ८९ ॥
कर्पूरचक्रं मम वर्तते पुरा तस्य प्रमाणेन समस्तभूतले ।
ज्ञेयानि धान्याम्बुदराजविग्रह-प्रजासुखावृष्टिभयाभयानि च ॥ ९० ॥
विक्रम उवाच—किं नाम चक्रं कृतं केन कथं तस्माद्विज्ञेयते ।
सुखदुःखे अवृष्टिर्वा वृष्टिर्लोके शुभाशुभम् ॥ ९१ ॥

चक्र में चार दिशा और चार विदिशा रखकर बीच में मालवा देश में आई हुई प्राचीन उज्जयिनी नगरी को स्थापन करना ॥ ८६ ॥ वह नगरी लंकासे मेरु तक गई हुई भूमध्यरेखा के प्रदेश में है तथा श्रीऋषभदेव का निवास (मंदिर) से युक्त है ॥ ८७ ॥ एक दिन विक्रमादित्य राजा ने विचार किया कि समीप रहे हुए देशों का शुभाशुभ सुख दुःख कुछ जान सकते हैं ॥ ८८ ॥ परंतु दूर रहे हुए देशों का सुख दुःख नहीं जान सकते इस अवसर पर मन के अभिप्राय को जाननेवाला कर्पूर नाम का देव राजा को कहने लगा ॥ ८९ ॥ कि मेरे पास कर्पूर चक्र है उसके प्रभाव से समस्त भूतल पर धान्य वर्षा राजविग्रह प्रजाओं का सुख दुःख अवृष्टि भय और निर्भय इत्यादि सब जान सकते हैं ॥ ९० ॥ राजा बोला— यह चक्र क्या है ? किसने बनाया ? और उससे जगत में सुख दुःख अवृष्टि वृष्टि और सब शुभाशुभ कैसे जाने जाते हैं ? ॥ ९१ ॥

कर्पूर उवाच—एतच्चक्रं नृपश्रेष्ठ ! गर्गाचार्येण भाषितम् ।
सर्वज्ञशासनादेशाद् ज्ञानं यन्त्रे प्रकाशितम् ॥ ९२ ॥
पुरग्रामाकरस्था वा नदीपर्वतवासिनः ।
तेषां शुभाशुभं सर्वं ग्रहयोगेन बुध्यते ॥ ९३ ॥
अवन्त्यादौ मण्डलान्ते योजनानां शतद्वये ।
लोके दुःख सुख सर्वं ज्ञायते चक्रचिन्तनात् ॥ ९४ ॥
अवन्तीतः समारभ्य सृष्टिमार्गे निरूपयेत् ।
अङ्कानां च लिपिर्लेख्या नवभिर्भाज्यतेऽथ सा ॥ ९५ ॥
शेषाङ्के वर्षराजाङ्क योजयित्वा दशाक्रमात् ।
शुभाशुभं च विज्ञेयं ग्रहन्यासेन मण्डले ॥ ९६ ॥
क्वचित्तु तद्दिशस्त्वङ्के योज्यते ग्रामतो ध्रुवः ।
समील्य शनिनक्षत्र नवभिर्भागमाहरेत् ॥ ९७ ॥
शेषाङ्कसंख्यया वर्ष-राजतो गणने कृते ।
विंशोत्तरीदशारीत्या ग्रहाणां फलमूचिरे ॥ ९८ ॥

कर्पूर बोला—हे नृपश्रेष्ठ ! यह चक्र गर्गाचार्य ने कहा, इसने सर्वज्ञ प्रणीत आगमों का ज्ञान इस यन्त्र द्वारा प्रकाशित किया ॥ ९२ ॥ पुर गाव किला नदी पर्वत आदि स्थानों मे रहने वालों का शुभाशुभ सब ग्रह योग से इस चक्र द्वारा जाना जाता है ॥ ९३ ॥ इस चक्र को जानने से उज्जयिनी से चारों तरफ के देशों में दो सौ योजन तक सुख दु ख सब जान सकते है ॥ ९४ ॥ उज्जयिनी से प्रारम्भ कर सृष्टिमार्ग द्वारा निरूपण किए हुए १४५ आदि अकों की लिपि लिखना, उसमे नव का भाग देना ॥ ९५ ॥ शेष बचे उसमे वर्ष के राजा का अक जोड कर विंशोतरी दशाक्रमसे ग्रहों का देशों मे शुभाशुभ फल जानना ॥ ९६ ॥ कोई इस तरह भी कहते हैं — उस दिशा के अक में गॉव का ध्रुवाक मिलाकर, फिर उसमें शनि नक्षत्र का मिला दें और पीछे उसमे नव का भाग दें ॥ ९७ ॥

पुनः प्रकारान्तरेण कर्पूरचक्रस्य द्वितीयपाठः—

दिशाश्चतस्रो विदिशश्चमे न्यस्य तदन्तरं ।
पुरी उज्जयिनी स्थाप्या मालवस्था पुरातनी ॥ ८६ ॥
भूमध्यरेखाविभान्ता लङ्कातो मेरुगामिनी ।
तत्र श्रीऋषभेणेय पुरीमध्ये निवेशिता ॥ ८७ ॥
अन्येद्युरस्या भूपेन विक्रमार्केण चिन्तितम् ।
ज्ञायते सुखदुःखानि कथञ्चित् पार्श्ववासिनाम् ॥ ८८ ॥
परं न दूरदेशानां सुखदुःखादि बुध्यते ।
अत्रान्तरे मनोऽभिज्ञः कर्पूरः प्राह भूपतिम् ॥ ८९ ॥
कर्पूरचक्रं मम चास्ते पुरा, तस्य प्रमाणेन समस्तभूतले ।
ज्ञेयानि चात्राम्बुदराजविग्रह प्रजासुखावृष्टिभयामयानि च॥९०॥
विक्रमः प्राह–किं तच्चक्रं कृतं केन कथं तस्माद्विबुध्यते ।
सुखदुःखे अतिवृष्टिश्च वृष्टिर्लोके शुभाशुभम् ॥ ९१ ॥

चक्र में चार दिशा और चार विदिशा स्थापन कर बीच में मालवा देश में आई हुई प्राचीन उज्जयिनी नगरी को स्थापन करना ॥८६॥ यह नगरी लङ्का से मेरु तक गई हुई भूमध्यरेखा के प्रदेश में है, तथा श्रीऋषभदेव का निवास (मंदिर) से युक्त है ॥ ८७ ॥ एक दिन विक्रमादित्य राजा ने विचार किया कि समीप रहे हुए देशों का शुभाशुभ सुख दुःख कुछ जान सकता है ॥ ८८ ॥ परंतु दूर रहे हुए देशों का सुख दुःख नहीं जान सकता इस अवसर पर मन के अभिप्राय का जाननेवाला कर्पूर नाम का देव राजा को कहने लगा ॥ ८९ ॥ कि मेरे पास कर्पूर चक्र है उसके प्रभाव से समस्त भूतल पर बादल वर्षा राजविग्रह, प्रजाओं का सुख दुःख अवृष्टि, भय और निरुपद्रवादि सब जान सकते हैं ॥ ९० ॥ राजा बोला– यह चक्र क्या है ? किसने बनाया ? और उससे जगत में सुख दुःख अवृष्टि वृष्टि और सब शुभाशुभ कैसे जान सकते हैं ? ॥ ९१ ॥

कर्पूर उवाच–एतच्चक्रं नृपश्रेष्ठ! गर्गाचार्येण भाषितम्।
सर्वज्ञशासनादेशाद् ज्ञानं यन्त्रे प्रकाशितम्॥ ९२ ॥
पुरग्रामाकरस्था वा नदीपर्वतवासिनः।
तेषां शुभाशुभं सर्वं ग्रहयोगेन बुध्यते ॥ ९३ ॥
अवन्त्यादौ मण्डलान्ते योजनानां शतद्वये।
लोके दुःख सुख सर्वं ज्ञायते चक्रचिन्तनात ॥ ९४ ॥
अवन्तीतः समारभ्य सृष्टिमार्गे निरूपयेत्।
अङ्कानां च लिपिर्लेख्या नवभिर्भाज्यतेऽथ सा ॥ ९५ ॥
शेषाङ्के वर्षराजाङ्क योजयित्वा दशाक्रमात्।
शुभाशुभं च विज्ञेयं ग्रहन्यासेन मण्डले ॥ ९६ ॥
क्वचित्तु तद्दिशस्त्वङ्के योज्यते ग्रामतो ध्रुवः।
समील्य शनिनक्षत्र नवभिर्भागमाहरेत्॥ ९७ ॥
शेषाङ्कसख्यया वर्ष-राजतो गणने कृते।
विंशोत्तरीदशारीत्या ग्रहाणां फलमूचिरे ॥ ९८ ॥

कर्पूर बोला—हे नृपश्रेष्ठ! यह चक्र गर्गाचार्य ने कहा, इसने सर्वज्ञ प्रणीत आगमों का ज्ञान इस यन्त्र द्वारा प्रकाशित किया॥ ९२ ॥ पुर गाव किला नदी पर्वत आदि स्थानों मे रहने वालों का शुभाशुभ सब ग्रह योग मे इस चक्र द्वारा जाना जाता है ॥ ९३ ॥ इस चक्र को जानने से उज्जयिनी से चारों तरफ के देशों में दो सौ योजन तक सुख दु ख सब जान सकते हैं ॥ ९४ ॥ उज्जयिनी से प्रारम्भ कर सृष्टिमार्ग द्वारा निरूपण किए हुए १४५ आदि अकों की लिपि लिखना, उसमें नव का भाग देना॥ ९५॥ शेष बचे उसमें वर्ष के राजा का अक जोड़ कर विंशोत्तरी दशाक्रमसे ग्रहों का देशों में शुभाशुभ फल जानना ॥ ९६ ॥ कोई इस तरह भी कहते हैं — उस दिशा के अक में गाँव का ध्रुवाक मिलाकर, फिर उसमे शनि नक्षत्र को मिला दें और पीछे उसमें नव का भाग दे ॥ ९७ ॥

पुनः प्रकारान्तरेण कर्पूरचक्रस्य द्वितीयपाठः—

दिशश्चतस्रो विदिशश्चक न्यस्य तदन्तरे ।
पुरी उज्जयिनी स्थाप्या मालवस्था पुरातनी ॥ ८६ ॥
भूमध्यरेखाविभान्ता लङ्कातो मेरुगामिनी ।
तेन श्रीऋषभेणेयं पुरीमध्ये निवेशिता ॥ ८७ ॥
अन्येद्युरस्या भूपेन विक्रमार्केण चिन्तितम् ।
ज्ञायते सुखदुःखानि कथश्चित् पार्श्ववासिनाम् ॥ ८८ ॥
परं न दूरदेशानां सुखदुःखादि बुध्यते ।
अत्रान्तरे मनोऽभिज्ञः कर्पूरः प्राह भूपतिम् ॥ ८९ ॥
कर्पूरचक्रं मम वर्तते पुरा, तस्य प्रमाणेन समस्तभूतले ।
ज्ञेयानि वातास्बुदराजविग्रह-प्रजासुखावृष्टिभयाभयानि च ॥९०॥
विक्रम उवाच—किं चक्रं कृतं केन कथं तस्माद्विवेच्यते ।
सुखदुःखे अवृष्टिर्वा वृष्टिर्लोके शुभाशुभम् ॥ ९१ ॥

चक्र में चार दिशा और चार विदिशा रखकर बीच में मालवा देश में आई हुई प्राचीन उज्जयिनी नगरी को स्थापन करना ॥८६॥ यह नगरी लंकासे मेरु तक गई हुई भूमध्यरेखा के प्रदेश में है तथा श्रीऋषभदेव का निवास (मंदिर) से युक्त है ॥ ८७ ॥ एक दिन विक्रमादित्य राजा ने विचार किया कि समीप रहे हुए देशों का शुभाशुभ सुख दुःख कुछ जान सकते हैं ॥ ८८ ॥ परंतु दूर रहे हुए देशों का सुख दुःख नहीं जान सकते इस अवसर पर मन के अभिप्राय को जाननेवाला कर्पूर नाम का देवज्ञ राजा को कहने लगा ॥ ८९ ॥ कि मेरे पास कर्पूर चक्र है उसके प्रमाण से समस्त भूतल पर वायु वर्षा राजविग्रह प्रजाओं का सुख दुःख अवृष्टि भय और निर्भय इत्यादि सब जान सकते हैं ॥ ९० ॥ राजा बोला—यह चक्र क्या है ? किसने बनाया ? और उससे जगत में सुख दुःख अवृष्टि वृष्टि, और सब शुभाशुभ कैसे जान जाते हैं ? ॥ ९१ ॥

जीववासे बहुक्षीरा धेनवो मेघसम्भवः ।
प्रजानां भूपतेः सौख्यं सस्योत्पत्तिस्तु भूयसी ॥ १०५ ॥
शुक्रवासे सुखी राजा धर्मी लोको धनागमः ।
प्रजारोग्यं महालाभः पुत्रोत्पत्तिर्जयो नृणाम् ॥ १०६ ॥
सौरिवासे नृपध्वंस उपलिङ्गाज्जनक्षयः ।
दुर्भिक्ष सभया विप्रा धर्महानिः कुतः सुखम् ॥ १०७ ॥
राहुवासे प्रजापीडा भूपयुद्ध महाभयम् ।
वह्निचौरभयं दुःख राज्ञां मृत्युः प्रजायते ॥ १०८ ॥
केतुवासे सर्वनाशः स्थानभ्रष्टा जनाः किल ।
गृहे गृहे महद्वैर देशभङ्गः क्रमाद् भवेत् ॥ १०९ ॥
चतुर्दिक्षु स्थिताः खेटास्तत्र ज्ञेयं शुभाशुभम् ।
पूर्वादिक्रमतो ज्ञेया वर्षराजादयः किल ॥ ११० ॥
सौरिर्भौमस्तथा राहुर्बुधः केतुश्च यद्दिशि ।
तत्र भङ्गो भवेद्धानिः सौम्येषु सुखसम्पदः ॥ १११ ॥

धान्य प्राप्ति हो ॥ १०५ ॥ शुक्रफल राजा सुखी, लोक धर्मी, धन प्राप्ति, प्रजा आरोग्य, महान् लाभ, पुत्रोत्पत्ति अधिक, और राजाओं का जय हो ॥ १०६ ॥ शनिफल- राजा का विनाश, पाखण्डियों से मनुष्यों का विनाश, दुर्भिक्ष, ब्राह्मणों को भय, धर्म की हानि होनेसे सुख भी नहीं ॥ १०७ ॥ राहुफल—प्रजा को पीडा, राजा का युद्ध, महान भय, अग्नि और चोरका भय, दुःख और राजाओं का मरण हो ॥ १०८ ॥ केतुफल—समस्त विनाश, लोग स्थान भ्रष्ट, घर घर अधिक द्वेश और क्रमसे देशभग हो ॥ १०९ ॥ पूर्वादिक्रमसे चारों ही दिशा मे रहे हुए वर्ष के राजा के जो रवि आदि ग्रह हैं, उनसे शुभाशुभ जानना ॥ ११० ॥ शनि मगल राहु बुध और केतु जिस दिशा में हो वहा हानि हो, और सौम्यग्रह हो तो सुख सपत्ति हो ॥ १११ ॥ सम्मुख दक्षिण पीछाड़ी और बाँयी तरफ रहे हुए ग्रहों के पृथक् २

यत्र ग्रामे ध्रुवा न स्यात् संदिग्धा वा लिपर्यवशात् ।
तस्य ग्रामस्य नक्षत्र दिशाङ्कान् मीलयेद् बुधः ॥९९॥
तथा रुद्राङ्कयोगेन क्षिप्तेऽथ यथा ध्रुवः ।
प्राग्वत् सर्वं ततः कृत्वा ग्रहाणां फलमिष्यते ॥१००॥
रवौ गावो बहुक्षीरा बहुवर्षाः प्रजासुखम् ।
निधाने नृपतेः सौख्यं ब्राह्मणानां महाफलम् ॥१०१॥
चन्द्रवासे प्रजासौख्यं बहुपुण्यं धनागमः ।
राजाऽऽरोग्यं तृणोत्पत्तिः स्वल्पमेघाः सुखी जनः ॥१०२॥
भौमवासे च दुर्भिक्षं राज्ञः कष्टं महद्भयम् ।
वह्निभीतिः प्रजापीडा सस्यनाशो न संशयः ॥१०३॥
बुधवासेऽनलभ्रान्तिर्बालरोगस्य सम्भवः ।
राज्ञो दुःखं पुरे भङ्गः उपद्रवपरम्परा ॥१०४॥

का शेष बचे उसमें वर्तमान राजा से गिन कर विंशोत्तरी दशाक्रम से ग्रहों का फल कहें ॥९८॥ जिस गाम का ध्रुवांक न हो या लिपिदोष से संशय (शंकाशील) हो तो उस गाँव का नक्षत्रांक में उसी दिशा के अंक मिलाना ॥९९॥ पीछे रुद्राङ्कयोग से पूर्व पहिले (गाथा-९३ ९४) की तरह करके नवीन ध्रुवांक बनाना, इससे ग्रहों का फल कहना ॥१००॥ रविफल—गौ बहुत दूध दें, बहुत वर्षा, प्रजा सुखी, राजा का भय और ब्राह्मणों का बहुत सुख हो ॥१०१॥ चन्द्रफल—प्रजा सुखी, बहुत आनन्द, धन की प्राप्ति, राजा आरोग्य, तृण की उत्पत्ति, वर्षा थोड़ी और मनुष्य सुखी हो ॥१०२॥ मंगलफल—दुर्भिक्ष, राजा को कष्ट, बड़ा भय, अग्नि का भय, प्रजा को पीड़ा और धान्य का विनाश हो ॥१०३॥ बुधफल—अग्नि का उपद्रव, बालकों का रोग की उत्पत्ति, राजा को दुःख, पुर का भंग आदि बहुत उपद्रव हो ॥१०४॥ गुरुफल—गौ बहुत दूध दें, वर्षा अच्छी हो, राजा और प्रजा को सुख और बहुत

जालन्धरेऽपि दुर्भिक्ष विग्रहो ग्रामसम्भवः ।
मनुष्यगणभे शुक्रो-दये सौराष्ट्रविग्रहः ॥११८॥
कलिङ्गदेशे स्त्रीराज्ये मध्यम वर्षमुच्यते ।
मरुस्थले च दुर्भिक्षं घृतधान्यमहर्घता ॥११९॥
स्वर्णं रूप्य महर्घं स्यात पीडा गोमहिषीव्रजे ।
कार्पासतूलसूत्रादेर्महर्घत्व प्रजायते ॥१२०॥
नक्षत्रे राक्षसगणे शुक्रस्याभ्युदये सति ।
गुर्जरे पुद्गलभय दुर्भिक्षं द्रव्यहीनता ॥१२१
पञ्चवर्णं पट्टसूत्र मूल्येनापि च दुर्लभम् ।
श्रीफल दुर्लभ मृत्युः श्रेष्ठपुसश्च कस्यचित ॥१२२॥
उत्पातश्चीनदेशे स्यात सिन्धुदेशेऽतिविग्रहः ।
दिनत्रयमवाणिज्य विग्रहो मालवादिके ॥१२३॥

विग्रह और लडाई हो । यदि शुक्र उदय [1]मानवगण के नक्षत्र में हो तो सौराष्ट्र देशमें विग्रह हो ॥११८॥ कलिंग देश और स्त्रीराज्यमे यह वर्ष मध्यम रहे, मारवाड देश मे दुर्भिक्ष, घी और धान्य महँगे हो ॥११९॥ सोना चादी की तेजी हो, गौ भैंस की जाती में पीड़ा हो, कपास रुई सूत आदि महँगे हों ॥१२०॥ यदि शुक्र का उदय [2]राक्षसगण के नक्षत्र में हो तो गुर्जर (गुजरात) देश मे पुद्गल भय, दुर्भिक्ष और द्रव्य-हीन हों ॥१२१॥ पचवर्ण के पट्टसूत्र (रेशमी वस्त्र) मोल से भी मिले नहीं अथात् बहुत तेज हों, श्रीफल का अभाव हो और कोई श्रेष्ठ-उत्तम पुरुष की मृत्यु हो ॥१२२॥ चीन देश मे उत्पात, सिन्धु देश में विग्रह, तीन दिन व्यापार बंद रहे और मालवा आदि देशमें विग्रह हो ॥१२३॥

१ मानवगण नक्षत्र—तीनो पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी आर्द्रा और भरणी ।

२ राक्षसगण नक्षत्र—कृत्तिका, मघा, आश्लेषा, विशाखा, शतभिषा, चित्रा, ज्येष्ठा धनिष्ठा और मूल ।

सम्मुखे दक्षिणे पृष्ठे वामपार्श्वे यदा ग्रहाः ।
तदा तदा पृथग् भावा ज्ञातव्यास्तु मनीषिभिः ॥११२॥
सम्मुखे च रवौ हानिः सोमे राज्ञां सुखं भवेत् ।
भौमे नृपस्य संग्रामो वह्निजातं भयं भवेत् ॥११३॥
बुधे धर्मरतो राजा प्रजादुःखं महाभयम् ।
गुरुणा वर्द्धते कोशः प्रजा सस्यप्रपूरिता ॥११४॥
शुक्रे नृपप्रजावृद्धिस्तत्र लोकः सुखी भवेत् ।
शनौ चतुष्पदे पीडा प्रजा दुर्भिक्षपीडिता ॥११५॥
राहौ च म्रियते राजा प्रजा च क्षयपीडिता ।
केतौ शरीरदुःखं च प्रजा देशान्तरगामिनी ॥११६॥ इति ॥

अथ भृगुसुतास्तोदयफलमाह यथा —

भृगुसुत कुम्भेऽभ्युदय यदा, सुरगणर्क्षगमः खलु स्निग्धेषु ।
सकलगुर्जरकर्पटमण्डले, भवति सस्यविनाशमहारुज ॥११७॥

और ग्रहोंका फल जानना चाहिये ॥११२॥ सम्मुख रवि हो तो हानि, सोम हो तो राजा को सुख, भौम हो तो राजा तथा प्रजा को अग्नि का भय हो ॥११३॥ बुध हो तो राजा धर्म में तत्पर हो और प्रजा को दुःख तथा महान् भय हो। गुरु हो तो खजाना की वृद्धि हो और प्रजा समस्त धान्यसे पूर्ण हो ॥११४॥ शुक्र हो तो राजा और प्रजा की वृद्धि तथा समस्त लोक सुखी हो। शनि हो तो पशुओं को पीड़ा और प्रजा दुर्भिक्ष से दुःखी हो ॥११५॥ राहु हो तो राजा का मरण, प्रजा दुःखी। केतु हो तो शरीर को दुःख और प्रजा अपने देश से प्रवास कर अन्य परदेश जाय ॥११६॥

यदि शुक्रका उदय देवगणके[1] नक्षत्रमें हो तो स्निग्ध गुजरात कर्पट देशोंमें धान्य का नाश और महारोग हो ॥११७॥ जालन्धरमें दुर्भिक्ष

[1] देवगण — अश्विनी मृगशिर रेवती हस्त पुष्य पुनर्वसु, अनुराधा श्रवण और स्वाति ।

जालन्धरेऽपि दुर्भिक्ष विग्रहो रणासम्भवः ।
मनुष्यगणभे शुक्रो-दये सौराष्ट्रविग्रहः ॥११८॥
कलिङ्गदेशे स्त्रीराज्ये मध्यमं वर्षमुच्यते ।
मरुस्थले च दुर्भिक्षं घृतधान्यमहर्घता ॥११९॥
स्वर्णं रूप्य महर्घं स्यात पीडा गोमहिषीव्रजे ।
कार्पासतूलसूत्रादेर्महर्घत्व प्रजायते ॥१२०॥
नक्षत्रे राक्षसगणे शुक्रस्याभ्युदये सति ।
गुर्जरे पुद्गलभय दुर्भिक्षं द्रव्यहीनता ॥१२१
पञ्चवर्णं पट्टसूत्रं मूल्येनापि च दुर्लभम् ।
श्रीफल दुर्लभ मृत्युः श्रेष्ठपुमश्च कस्यचित् ॥१२२॥
उत्पातश्चीनदेशे स्यात् सिन्धुदेशेऽनिविग्रहः ।
दिनत्रयमवाणिज्यं विग्रहो मालवादिके ॥१२३॥

विग्रह और लडाई हो । यदि शुक्र उदय [1]मानवगण के नक्षत्र में हो तो सौराष्ट्र देशमें विग्रह हो ॥११८॥ कलिग देश और स्त्रीराज्यमें यह वर्ष मध्यम रहे, मारवाड देश में दुर्भिक्ष, घी और धान्य महँगे हो ॥११९॥ सोना चादी की तेजी हो, गौ भैंस की जाती में पीडा हो, कपास रुई सूत आदि महँगे हों ॥१२०॥ यदि शुक्र का उदय [2]राक्षसगण के नक्षत्र में हो तो गुर्जर (गुजरात) देश में पुद्गल भय दुर्भिक्ष और द्रव्य-हीन हों ॥१२१॥ पचवर्ण के पट्टसूत्र (रेशमी वस्त्र) मोल से भी मिले नहीं अर्थात् बहुत तेज हों, श्रीफल का अभाव हो और कोई श्रेष्ठ-उत्तम पुरुष की मृत्यु हो ॥१२२॥ चीन देश मे उत्पात, सिन्धु देश में विग्रह, तीन दिन व्यापार बद रहे और मालवा आदि देशमे विग्रह हो ॥१२३॥

---

१ मानवगण नक्षत्र—तीनो पूर्वा, तीनो उत्तरा, रोहिणी आर्द्रा और भरणी ।

२ राक्षसगण नक्षत्र—कृत्तिका, मघा, आश्लेषा, विशाखा, शतभिषा, चित्रा, ज्येष्ठा धनिष्ठा और मूल ।

सम्मुखे दक्षिणे पृष्ठ वामपार्श्वे यथा ग्रहा ।
तदा तदा पृथग् भावा ज्ञातव्याश्च मनीषिभिः ॥११२॥
सम्मुखे च रवौ हानिः वामे राज्ञां सुखं भवत्।
भौमे नृपस्य सायलनां वह्निजात भय भवेत् ॥११३॥
बुधे धर्मरता राजा प्रजादुःख महाभयम् ।
गुरुणा वर्द्धते काशः प्रजा सर्वाभपूरिता ॥११४॥
शुक्रे नृपप्रजावृद्धिर्जिलाकः सुखी भवेत ।
शनौ चतुष्पदे पीडा प्रजा दुर्भिक्षपीडिता ॥११५॥
राहौ च म्रियते राजा प्रजा च क्रमपीडिता ।
केतौ शरीरदुःख च प्रजा देशात प्रयाम्यिता ॥११६॥ इति ॥

अथ भृगुसुतस्यास्ता स्थोपु वपस्थानं यथा —

भृगुसुतः कृत्स्नेऽभ्युदयं यदा, सुरगणर्क्षगतः खलु सिन्धुपु।
सकलगुर्जरकर्मरमण्डले, भवति सस्यविनाशमहारुज ॥११७

भाव ग्रहों को जानना चाहिए ॥११३॥ सम्मुख रवि हो तो हानि, साम हो तो राजा को सुख प्राप्त हो तो राजा तथा प्रजा को अग्नि का भय हो ॥११३॥ बुध हो तो राजा धर्म में तत्पर हो और प्रजा को दुःख तथा महान् भय हो। गुरु हो तो समाना की वृद्धि हो और प्रजा समस्त धनसे पूर्ण हो ॥११४॥ शुक्र हो तो राजा और प्रजा की वृद्धि तथा सकल लोक सुखी हो। शनि हो तो पशुओं को पीड़ा और प्रजा दुर्भिक्ष से दुःखी हो ॥११५॥ राहु हो तो राजा का मरण प्रजा दुःखी। केतु हो तो शरीर का दुःख और प्रजा अपने स्थान से प्रवास कर अन्य परदेश जाय ॥११६॥

यदि शुक्रका उदय देवगणके नक्षत्रमें हो तो सिंधु गुजरात कर्क देशोंमें सतों का नाश और महारोग हो ॥११७॥ आश्लेषामें दुर्भिक्ष

१ स्वाति – अश्विनी मृगशिर पुनर्वसु पुष्य हस्त अनुराधा श्रवण और स्वाति ।

मनुष्यगणशुक्रास्ते वह्निभी रोमपत्तने।
देशत्रासः कोङ्कणे च लाटे सिन्धौ तु शून्यता ॥१३०॥
दुर्भिक्षमुत्तरे देशे विग्रहो द्रविडाश्रये।
गुर्जरे च सुभिक्षं स्याद्वनस्पतिफलोदयः ॥१३१॥
मासमेक महर्घं स्यात् ततो धान्ये समर्घता।
घृततैलान्ननिष्पत्तिः पट्टसूत्राणि सर्वतः ॥१३२॥
राजानः सुखिनः सर्वाः प्रजा रोगविवर्जिताः।
सर्वत्र वसतिर्देशे दुर्गेष्वानन्दनन्दिताः ॥१३३॥
शुक्रास्ते राक्षसगणे हिन्दूदेशेषु विग्रहः।
खर्प्परे राजयुद्धानि मिश्रदेशेऽन्नविग्रहः ॥१३४॥
मरुस्थले सिन्धुदेशे दुर्भिक्षं मध्यमं भवेत्।
असिया उडभङ्गः स्याद् गुर्जरे मुद्गलाद् भयम् ॥१३५॥
यानपात्रविनाशोऽब्धौ फिरङ्गाणां च विग्रहः।

यदि मनुष्यगण के नक्षत्र में शुक्रका अस्त होतो रोमदेश में अग्नि का भय हो, कोंकण देशमें भय, तथा लाट और सिंधु देशमें शून्यता हो ॥ १३० ॥ उत्तर देशमें दुर्भिक्ष, द्रविड देशमें विग्रह, गुर्जरदेशमें सुभिक्ष हो, और वनस्पतियों में फलफूल आवें ॥ १३१ ॥ एक महीना अनाज तेज रहें और पीछे समभाव रहें, घी, तेल, अन्न और पट्टसूत्र इन की विशेष उत्पत्ति हो ॥ १३२ ॥ सब राजा सुखी रहें, प्रजा रोग रहित हो, वसति (वास) देश और किला आदि सब जगह आनन्द रहें ॥ १३३ ॥

यदि शुक्र का अस्त राक्षसगण नक्षत्र में होतो हिन्दू देशमें विग्रह हो, खर्पर देशमे राजयुद्ध हो और मिश्रदेशमें अन्न की तंगी रहे ॥ १३४ ॥ मरुस्थल और सिंधुदेशमें सामान्य दुर्भिक्ष हो, असिया और उडदेश का भंग हो, गुर्जरदेशमें जनु आदि के उपद्रव का भय हो ॥ १३५ ॥ समुद्र में जहाजों का विनाश और फिरंगियों का विग्रह हो, विराट, द्रुद , पाचाल

मृगर ॥ [illegible]

सुरगण मृगुजाम्नामिपदा, स्यमगुजरमाम्यमण्डले ।
भवति दशभगमूलविप्र',प्रथमना पिण्याम्यमहर्घता॥१२४॥

पश्चात ममघना शिशिन्मासमेव प्रथनम ।
खुरसान मराम्याना ह्रस्वनानां निरूपणम' ॥ १२५ ॥

प्रयाग जलवृष्टिश्च मासषट्कान्त परं भवन ।
हेमरूप्यमहार्घ्यम्च निश्चामु मनुजा जन' ॥ १२६ ॥

मरुस्थलेषु दुर्भिक्ष दिल्ल्यां राज्यविपर्ययम ।
गोपालगिरिदेशे स्यान्मरको महारोगम ॥ १२७ ॥

सर्वत्र देशमध्येऽपि व्यापार क्वापि ना भवत् ।
मृगुकच्छे च मण्डल्यां पुलिंगामश्च शून्यता ॥ १२८ ॥

रोगबाहुल्यमथवा परचक्रपराभव' ।
व्यापारे बहुला लक्ष्मी सुभिक्षमुत्तराश्च ॥ १२९ ॥

यदि भ्रमण के अन्त में शुक्र का अस्त हो तो ... गुर्जर मालवा इन देशों में मघ और विघ्न हो फिर न धान्य महँगा हो ॥१२४॥ पीछे एक मास तक सम्भी [illegible] । खुरासान में उत्पात, अन्न का नाश और रोग बहुल हो ॥ १२५ ॥ छ मास पीछे बहुत जलवर्षा हो, सोना चांदी तेज हो और मनुष्यों में आलस्य अधिक हो ॥ १२६ ॥ मरुस्थल (मारवाड) देश में दुर्भिक्ष दिल्ली में राज्यपरिवर्तन गोपालगिरिदेश में महामारी(प्लेग)हो ॥१२७॥ सर्व देश में कोई व्यापार भी नहीं हो मृगुकच्छ (भरुच) और मंडलनगरी में सुख की [illegible] और शून्यता हो ॥ १२८ ॥ उत्तर दिशा में बहुत रोग हो या शत्रु का पराभव हो व्यापार में बहुत लक्ष्मी की प्राप्ति हो और सुभिक्ष सुकाल हो ॥ १२९ ॥

नेत्ररोगमतीसारं देशेऽग्निप्रपलोदयम् ॥१४२॥
गवां दुग्धघृताल्पत्वं द्रुमे पुष्पफलाल्पताम् ।
अर्थनाशं च चौरेभ्यः स्वल्पां वृष्टिं समादिशेत् ॥१४३॥
क्षुधया पीडिता लोका भिक्षाखर्प्परधारिणः ।
सैन्धवा यमुनातीर-घृताटकोजवाल्हिकाः ॥१४४॥
जालन्धराश्च काश्मीराः समस्तश्चोतरापथः ।
एते देशा विनश्यन्ति तस्मिन्नुत्पातदर्शने ॥१४५॥

वायुमण्डलम्—

मृगादित्याश्विनीहस्ता-श्चित्रास्वातिसमन्विताः ।
उत्तराफाल्गुनी वायो-रिदं मण्डलमुच्यते ॥१४६॥
यद्येषु जायते किञ्चित् पूर्वोक्तोत्पातलक्षणम् ।
महावातास्तदा वान्ति महद्भयमुपस्थितम् ॥१४७॥
उन्नीता अपि पर्जन्या न मुञ्चन्ति तदा जलम् ।
विनाशो देवविप्राणां नृपाणां विन्ध्यवासिनाम् ॥१४८॥

अतीसार, देशमें अग्नि का विशेष लगना ॥ १४२ ॥ गायों के दूध घी की अल्पता, वृक्षों मे फल फूल थोड़े, चोरों से अर्थ का नाश और थोड़ी वर्षा जाननी ॥ १४३ ॥ लोग क्षुधा से दुःखी होकर भिक्षा और खर्प्पर (खप्पड़) धारण करने वाले हों। सिंधुदेश, यमुनाके तट के देश, घृताटकोज वाल्हिक ॥ १४४ ॥ जालधर, काश्मीर और समस्त उत्तर प्रदेश, इन देशों में यदि उत्पात देखन में आवे तो उनका विनाश होता है ॥ १४५ ॥

मृगशीर्ष पुनर्वसु अश्विनी हस्त चित्रा स्वाती और उत्तराफाल्गुनी ये वायु मण्डल के नक्षत्र हैं ॥ १४६ ॥ यदि इन नक्षत्रों में पूर्वोक्त कोई उत्पात हो तो महावायु चले, वडा भय उपस्थित हो ॥ १४७ ॥ उदय हुए भरे बादल भी जल न छोड़, देव ब्राह्मणों का विनाश हो, विन्ध्यवासी राजाओंमें कलह हो ॥ १४८ ॥ परकोट क़िला पर्वतों के शिखर और तोरण के स्थान की

विराटकुरुपाञ्चालसौराष्ट्रेषु च रौरवम् ॥१३६॥
तथा राज्यपरावर्त्तो मालवेषु जनक्षयः ।
जीर्णदुर्गे भयं भङ्गः पत्तनेऽन्नमहर्घता ॥१३७॥
मध्यसुभिक्षकारी स्याद् दक्षिणे सुखसम्पदः ।
द्रव्यक्षेत्रकालभावा-न्यायादेवं विनिश्चयः ॥१३८॥

॥इति शुक्रास्तगणेन वर्षापरिज्ञानम् ॥

अथ मण्डलविचारकथा उत्पातस्य देशेषु वर्णनम् । तत्र प्रथमाग्नेयमण्डलं यथा—

कृत्तिका भरणी पुष्यं द्विदैवं पूर्वफाल्गुनी ।
पूर्वाभाद्रपदं पैत्र्यं स्मृतमाग्नेयमण्डलम् ॥१३९॥
यद्यस्मिन् भूमिकम्पादेर्विकारः कोऽपि जायते ।
भूमिकम्पोऽशने पात उल्कापातोऽन्धकारिता ॥१४०॥
दर्शनं धूमकेतोश्च ग्रहणं चन्द्रसूर्ययोः ।
रक्तवृष्टिर्जलवृष्टिरन्यथा किञ्चिदद्भुतम् ॥१४१॥
तदाग्निमण्डलात् ज्ञाता आग्नेयाद् भावि लक्षणम् ।

और सौराष्ट्र इन देशों में महाकष्ट हो ॥ १३६ ॥ तथा मालवा देश में राज्य परिवर्तन हो और मनुष्यों का विनाश हो। जीर्ण किले को दुश्मन का भय तथा पाटन में धान्य महँगा हो ॥ १३७ ॥ मध्यम सुभिक्ष चले और दक्षिण में सुख संपदा हो। इसी तरह शुक्र का विचार द्रव्य क्षेत्र काल और भाव के अनुकूल करना चाहिये ॥ १३८ ॥

कृत्तिका भरणी पुष्य विशाखा पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाभाद्रपद और मघा ये आग्नेयमण्डल के नक्षत्र हैं ॥ १३९ ॥ यदि इनमें पृथ्वीकम्पादिका कोई विकार हो भूमिकंप, वज्रपात उल्कापात अन्धकार ॥ १४० ॥ धूमकेतु का दर्शन चन्द्र सूर्य का ग्रहण रक्तवृष्टि अतिवृष्टि अथवा कोई अद्भुत बात हो ॥ १४१ ॥ तो इस अग्निमण्डल से दुर्भिक्ष भावी होगा ऐसा जानें—मेघों का नाश,

नेत्ररोगमतीसारं देशेऽग्निप्रबलोदयम् ॥१४२॥
गवां दुग्धघृताल्पत्वं द्रुमे पुष्पफलाल्पताम् ।
अर्थनाशं च चौरेभ्यः स्वल्पां वृष्टिं समादिशेत् ॥१४३॥
क्षुधया पीडिता लोका भिक्षाखर्प्परधारिणः ।
सैन्धवा यमुनातीर-घृताटंकोजबाल्हिकाः ॥१४४॥
जालन्धराश्च काश्मीराः समस्तश्चोत्तरापथः ।
एते देशा विनश्यन्ति तस्मिन्नुत्पातदर्शने ॥१४५॥

वायुमण्डलम्—

मृगादित्याश्विनीहस्ता-श्चित्रास्वातिसमन्विताः ।
उत्तराफाल्गुनी वायो-रिदं मण्डलमुच्यते ॥१४६॥
यद्येषु जायते किञ्चित् पूर्वोक्तोत्पातलक्षणम् ।
महावातास्तदा वान्ति महद्भयमुपस्थितम् ॥१४७॥
उन्नीता अपि पर्जन्या न मुञ्चन्ति तदा जलम् ।
विनाशो देवविप्राणां नृपाणां विन्ध्यवासिनाम् ॥१४८॥

अतीसार, देशमे अग्नि का विशेष लगना ॥ १४२ ॥ गायों के दूध घी की अल्पता, वृक्षों मे फल फूल थोड़े, चोरों से अर्थ का नाश और थोड़ी वर्षा जाननी ॥ १४३ ॥ लोग क्षुधा से दुःखी होकर भिक्षा और खर्प्पर (खप्पड) धारण करने वाले हों । सिंधुदेश, यमुनाके तट के देश, घृताटकोज बाल्हिक ॥ १४४ ॥ जालंधर, काश्मीर और समस्त उत्तर प्रदेश, इन देशों में यदि उत्पात देखने में आवे तो उनका विनाश होता है ॥ १४५ ॥

मृगशीर्ष पुनर्वसु अश्विनी हस्त चित्रा स्वाती और उत्तराफाल्गुनी ये वायु मण्डल के नक्षत्र हैं ॥ १४६ ॥ यदि इन नक्षत्रों में पूर्वोक्त कोई उत्पात हो तो महावायु चले, बड़ा भय उपस्थित हो ॥ १४७ ॥ उदय हुए भरे बादल भी जल न छोड़े, देव ब्राह्मणों का विनाश हो, विन्ध्यवासी राजाओंमे कलह हो ॥ १४८ ॥ परकोट किला पर्वतों के शिखर और तोरण के स्थान की

प्राकारगिरिशृङ्गाणि तोरणस्थलभूमिकाः ।
वायुवेगविधूतानि वनानि निपतन्ति हि ॥१४६॥

वारुणमण्डलम्—

आर्द्राश्लेषोत्तराभाद्र पर्व पौष्णं च वारुणम् ।
पूर्वाषाढा मूलमेतत् वारुणं मण्डलं स्मृतम् ॥१५०॥
एषूत्पातोदये पूर्वे गदिते स्यात् प्रजासुखम् ।
बहुक्षीरयुता गावो बहुपुष्पफला द्रुमाः ॥१५१॥
बहुधान्या मही लोके नैरुज्यं बहु मङ्गलम् ।
धान्यानि च समर्घाणि सुभिक्षं प्रबलं भवेत् ॥१५२॥
कीटका मूषकाः सर्पाः शलभा मृगकुक्कुटाः ।
मारिः पिपीलिकाश्चैव स्वस्वदेशे प्रजायते ॥१५३॥

माहेन्द्रमण्डलम्—

ज्येष्ठानुराधारोहिण्यो धनिष्ठा श्रवणास्तथा ।
अभिजिच्चोत्तराषाढा शुभं माहेन्द्रमण्डलम् ॥१५४॥
एषूत्पातोदये लोकाः सर्वे मुदितमानसाः ।

भूमि ये सब वायु वेग से भंग हो जाय और वन के वृक्ष गिर पड़े ॥१४६॥

आर्द्रा आश्लेषा उत्तराभाद्रपद रेवती शतभिषा पूर्वाषाढ़ा और मूल ये वारुणमण्डल के नक्षत्र हैं ॥ १५ ॥ यदि इनमें पूर्वोक्त कोई उत्पात हो तो प्रजा को सुख हो गायों में दूध बहुत हो वृक्षों में फलफूल बहुत हों ॥ १५१ ॥ पृथ्वी पर बहुत धान्य उत्पन्न हो निरोगता और मंगल हो धान्य सस्ते और सर्वत्र सुभिक्ष हो ॥ १५२ ॥ कीड़े मूसे सर्प शलभ मृग कुक्कुट मारी (प्लेग) और चींटी ये स्वदेश प्रजा में अधिक हो ॥ १५३ ॥

ज्येष्ठा अनुराधा रोहिणी धनिष्ठा श्रवण अभिजित् और उत्तराषाढ़ा ये माहेन्द्रमण्डल के नक्षत्र हैं ॥ १५४ ॥ इनमें पूर्वोक्त कोई उत्पात हो

सन्धि कुर्वन्ति भूमीगाः सुभिक्षं मङ्गलोदयः ॥ १५५ ॥

अस्मिन् समये नव उत्पात फलदायकानि :-

उल्कापातादयः सर्वेऽमीषु स्वस्वफलप्रदाः ।
वर्षाकालं विना ज्ञेया वर्षाकाले तु वृष्टिदाः ॥ १५६ ॥
माहेन्द्रं सप्तरात्रेण सद्यो वारुणमण्डलम् ।
आग्नेयमर्धमासेन फलं मासेन वायवम् ॥ १५७ ॥
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं राज्ञां सन्धिः परस्परम् ।
अन्त्यमण्डलयोर्ज्ञेयं तद्विपर्ययमाद्ययोः ॥ १५८ ॥
माहेन्द्रे वारुणे चैव हृष्टा भवन्ति धेनवः ।
उत्पाताः प्रलयं यान्ति धरणी वर्द्धते शिवैः ॥ १५९ ॥

अर्घकाण्डे तु—

त्रिमासिकं तु चाग्नेयं वायव्यं च द्विमासिकम् ।

तो सब लोग आनन्दित रहे, राजा परस्पर सन्धि करें, सुभिक्ष और मङ्गल हों ॥ १५५ ॥

उल्कापातादिक जो उत्पात हैं वे इन मण्डलों में अपने २ फल को वर्षाकाल के विना दूसरे समय में देते हैं और वर्षाकाल में तो वृष्टि करने वाले होते है ॥ १५६ ॥ माहेन्द्रमण्डल का फल सात दिन में, वारुणमण्डल का फल शीघ्रही, अग्निमण्डल का फल आधे मास मे और वायुमण्डल का फल एक मास मे होता है ॥ १५७ ॥ सुभिक्ष क्षेम (कल्याण) आरोग्य और राजाओं की परस्पर सन्धि ये सब अन्त्य के दो मण्डलों मे जानना, और आदि के दो मण्डलों में इससे विपरीत जानना ॥ १५८ ॥ माहेन्द्र और वारुणमण्डल मे गौ प्रसन्न होती हैं, उत्पात नष्ट हो जाते हैं, और पृथ्वी पर मांगलिक होते हैं ॥ १५९ ॥ अर्घकाण्ड में कहा है कि— तीन महीने में आग्नेय, दो महीने में वायव्य, एक महीने में वारुण और सात

मासमर्धं च वारुणं माहेन्द्रं समराग्निकम् ॥ १६० ॥
पुनः विवेकविलास—
मण्डलेऽग्नेयमासं द्वाभ्यां वायव्यं पुनः ।
मासेन वारुणं सप्तरात्राम्माहेन्द्रस्य फलम् ॥ १६१ ॥
स्पष्टश्च प्राह—वायव्यं मासयुग्मेन माहेन्द्रं समराग्निकम् ।
मासार्धमर्धमासेन वारुणं तोयधारिदम् ॥ १६२ ॥
वारुणाग्नेयवायव्यमाहेन्द्रा फलमन्यथा ।
अन्योऽन्यमभिघातेन सम्मिश्रस्य वदेत् फलम् ॥ १६३ ॥
भूमिकम्पस्तथा वर्षा दिग्दाहोल्कापातनम् ।
इत्याद्यास्मिन् समभुत्पात इति कीर्तितः ॥ १६४ ॥
ईत्यनीतिभयारोगस्याद्युत्पातजं फलम् ।
मण्डलाभ्यासमं प्रायो वह्निवाय्वादिकं तथा ॥ १६ ॥

गर्भ में माहेन्द्रमण्डल का फल कहा है ॥ १६ ॥ विवेकविलास में लिखा है कि अग्निमण्डल का महीने वायु का दो महीने वरुण का एक महीना और महेन्द्र का सात दिन उतने समय में इनों का फल होता है ॥ १६१ ॥ स्पष्टचन्द कहा है कि—वायु का दो महीने महेन्द्र का सात दिन अग्नि का आधा महीना वरुण पंद्रह दिन और पश्चिममण्डल शीघ्र ही जल देता है ॥ १६२ ॥ वरुण और अग्निमण्डल के मिलने में तथा माहेन्द्र और वायुमण्डल के मिलने में फल की अन्यथा होती है । एवं परस्पर मण्डल के मिल जाने में विचार पूर्वक इन का फल कहना ॥ १६३ ॥ भूमिकम्प भूमि की वर्षा दिग्दाह उल्कापात में यदि इत्यादि उपद्रव यक स्मात हो तो उनको उत्पात कहते हैं ॥ १६४ ॥ ईति मूर्छ आदि के उपद्रव, अनीति प्रजा का रोग और लड़ाई ये सब उत्पात के फल जानने चाहिये । प्रायः करके मण्डल के नाम सदृश अग्नि वायु आदि के उत्पात होते हैं ॥ १६५ ॥ अग्निमण्डल में पश्चिम दिशा वायुमण्डल में

आग्नेये पीड्यते याम्या वायव्ये पुनरुत्तरा।
वारुणे पश्चिमा चात्र पूर्वा माहेन्द्रमण्डले॥ १६६॥

॥ इति मण्डलोपरि उत्पातेन देशो वर्षज्ञानम्॥

अथ प्रसगत उत्पातभेदा यथा--

भूमिकम्पे प्रजापीडा निर्घाते तु नृपक्षयः।
अनावृष्टिस्तु दिग्दाहे दुर्भिक्ष पांशुवर्षणे॥१६७॥
क्षयकृत्पांशुवृष्टिश्च नीहारश्च भयङ्करः।
दिग्दाहोऽग्निभय कुर्यान्निर्घातो नृपभीतिदः॥१६८॥
झञ्झावायुश्चण्डशब्दश्चौरभीतिप्रदायकः।
भूकम्पो दुःखदायी च परिवेषश्च रोगकृत्॥१६९॥
ग्रहयुद्धे राजयुद्ध केतौ दृष्टे तथैव च।
ग्रहणान्ते महावृष्टिः सर्वदोषविनाशिनी॥१७०॥
उल्कापाते श्रेष्ठनाशो द्रुमच्छिन्ने धनक्षयः।

उत्तर दिशा, वारुणमण्डल मे पश्चिम दिशा और माहेन्द्रमण्डल में पूर्व दिशा पीडित होती है॥ १६६॥

भूमिकपसे प्रजा को पीडा, वज्र गिरने से राजा का नाश, दिग्दाह से अनावृष्टि, धूल की वर्षा होने से दुर्भिक्ष होता है॥ १६७॥ धूल की वर्षा क्षय करती है, कुहर (बरफ) गिरे तो भयदायक है, दिग्दाह हो तो अग्नि का भय करता है और वज्र गिरने से राजा को भय होता है॥१६८॥ झञ्झावायु और तीक्ष्णशब्द ये दोनों चोरों का भय करता है, भूकम्प होना दुःखदायक है, चन्द्रसूर्य का परिवेष (घेरा) रोग करता है॥ १६९॥ ग्रहों के युद्ध मे, तथा केतु के दर्शन से राजाओं में युद्ध होता है। यदि ग्रहण के अंत में अधिक वर्षा हो तो सब दोषों का विनाश हो जाता है॥१७०॥ उल्कापातसे श्रेष्ठ पुरुष का नाश, वृक्ष के टूटने से धन का नाश और प-

मासमेकं च वारुण्य माहेन्द्रे सप्तरात्रिकम् ॥ १५० ॥

पुनः विवेकविलासे—

मण्डलेऽग्नेरष्टमासैः वाम्यां वायव्यके पुनः ।
मासेन वारुणे सप्त-रात्रात्माहेन्द्रके फलम् ॥ १५१ ॥
क्वचिदेव प्राहु-वायव्ये मासयुग्मेन माहेन्द्रे सप्तरात्रिकम् ।
आग्नेयमर्द्धमासेन वारुणे ऽग्निवासरम् ॥ १५२ ॥
वारुणाग्नेययामैन्द्रानिलयो फलमन्वृता ।
अन्योऽन्यमभिघातेन गविमुख्य वदेत् फलम् ॥ १५३ ॥
भूमिकम्परजोवर्षदिग्दाहाकालवर्षणम् ।
इत्याद्या यस्मिन् सर्वमुत्पात इति कीर्त्यते ॥ १५४ ॥
ईत्यनीतिप्रजारोगरयाद्युत्पातजं फलम् ।
मण्डलान्यासमं मासा पक्षिकाप्यादिक तथा ॥ १५५ ॥

रात्रि में माहेन्द्रमण्डल का फल रहता है ॥ १५० ॥ विवेकविलास में लिखा है कि अग्निमण्डल आठ महीने वायु का चार महीने वरुण का एक महीना और महेन्द्र का सात दिन इतने समय मंडलों का फल रहता है ॥ १५१ ॥ रत्नचंद्र कहता है कि—वायु का दो महीने महेन्द्र का सात दिन अग्नि का आधा महीना याने पंद्रह दिन और वरुणमण्डल शीघ्र ही फल देने वाला है ॥ १५२ ॥ वरुण और अग्निमण्डल के मिलन से तथा माहेन्द्र और वायुमण्डल के मिलन से फल की न्यूनता होती है। ऐसे परस्पर मण्डल के मिल जाने से विचार पूर्वक इन का फल कहना ॥ १५३ ॥ भूमिकंप धूलि की वर्षा दिग्दाह अकाल में वर्षा इत्यादि उपद्रव अकस्मात् हों तो उनको उत्पात कहते हैं ॥ १५४ ॥ गीडी मूसें आदि के उपद्रव अनीति प्रजा का रोग और लड़ाई ये सब उत्पात के फल जानना चाहिये। प्रायः करके मण्डल के नाम माफिक अग्नि वायु आदि के उत्पात होते हैं ॥ १५५ ॥ अग्निमण्डल में दक्षिण दिशा वायुमण्डल में

स्वल्पे स्वल्पफलं मर्घं बहूनां तु फलं महत् ॥१७७॥
जलार्द्रत्वे महावृष्टिर्बिम्बनाशे नृपक्षयः ।
अकाले फलपुष्पाणि सस्यनाशकराणि च ॥१७८॥
यस्य राज्ये च राष्ट्रे च देवध्वंसः प्रजायते ।
सपरिवारभूपस्य तस्य ध्वंसः प्रजायते ॥१७९॥
सूर्येन्द्वो सर्वथा ग्रासे सर्वस्यापि महर्घता ।
भौमादिग्रहवर्गस्य वक्रे च प्राक्तन फलम् ॥१८०॥

अथ गन्धर्वनगरम्—

कपिलं सस्यघाताय माञ्जिष्ठं हरणं गवाम् ।
अव्यक्तवर्णं कुरुते बलक्षोभं न संशयः ॥१८१॥
गन्धर्वनगरं स्निग्धं सप्राकारं सतोरणम् ।
सौम्यां दिशं समाश्रित्य राज्ञस्तद्विजयङ्करम् ॥१८२॥

---

१७७ ॥ मण्डल में से जल के कणों का स्राव हो या मण्डल जल से भीगा हुआ मालूम पड़े तो अत्यन्त वर्षा होती है। बिम्ब के नाश से राजा की मृत्यु होती है। अकाल में फल पुष्पों का होना खेती का विनाश कारक है ॥ १७८ ॥ जिस के राज्य या देश में देवता का विनाश हो उस देश के राजा का परिवार सहित नाश होता है ॥ १७९ ॥ सूर्य चन्द्रमा का पूर्ण ग्रास हो तो सब चीजों का भाव तेज हो। मङ्गलादि ग्रह वक्री हो तो उनका पूर्वोक्त ही फल कहना ॥ १८० ॥

गन्धर्वनगर कपिल वर्ण यान भूरा दीखे तो खेती का विनाश हो, मजीठ रंग का दीखे तो गायों को पीडा कारक है, अप्रकट रंग का देख पड़े तो बल का क्षोभ करता है ॥ १८१ ॥ यदि गन्धर्व नगर स्निग्ध परिकोट (किला) और ध्वजा सहित पूर्व दिशा में देख पड़े तो राजा का विजय होता है ॥ १८२ ॥

पापायार्घपणे ज्ञेया सर्वधान्यमहर्घता ॥१७१॥
विद्युत्पाते जलाभाव प्रजानाशोऽन्धकारिते ।
ऋतूनां व्यत्यये रोगः सर्वजन्तुषु जायते ॥१७२॥
जन्तूनां विकृतोत्पत्ती राजविघ्नकरी मता ।
विग्रहो जायते घोरश्चन्द्रसूर्यविपर्यये ॥१७३॥
ग्रहयुद्धे भवेद् युद्धं युतौ चैव महर्घता ।
सूर्येन्दुपरिवेषाणां फलं वक्ष्ये स्वरूपतः ॥१७४॥
दृग्स्ये मण्डलेऽन्यत्र स्वदेशे मध्यवर्तिनि ।
प्रत्यासन्ने फलं ज्ञेयं मण्डलाधिपतेर्महत् ॥१७५॥
श्वेतवर्णे भवेद् भव्यं पीतवर्णे रुजाकरः ।
रक्तवर्णे भवेद् युद्धं कृष्णवर्णे नृपक्षयः ॥१७६॥
नीलवर्णे महावृष्टि-धूम्रवर्णे च धूमरी ।

त्थर की वर्षा होनेसे सब धान्य महँगे होते हैं ॥ १७१ ॥ विद्युत् के उत्पात में जल का अभाव, अंधकार से प्रजा का नाश, ऋतुओं की विपरीतता से सब प्राणियों में रोग होता है ॥ १७२ ॥ जन्तुओं की विकृत (विरूप) उत्पत्ति राजा को विघ्नकारी होती है, चन्द्रसूर्य की विपरीतता से बड़ा संग्राम होता है ॥ १७३ ॥ ग्रहों के युद्ध से युद्ध और ग्रहयुति से धान्य की महर्घता होती है । सूर्यचन्द्रमा के मण्डल का फल आगम रूप से कहना चाहिये ॥ १७४ ॥ दृग्गोचर स्वदेश और मध्यदेश इन में जहाँ मण्डल का अधिपतित्व हो वहाँ विशेष फल जानना ॥ १७५ ॥ श्वेत वर्ण का मण्डल हो तो कल्याण कारक, पीत वर्ण का रोग कारक, रक्त वर्ण का युद्ध करानेवाला, कृष्ण वर्ण का राजा का क्षय कारक ॥ १७६ ॥ नील वर्ण का हो तो महावर्षा, धूम्र वर्ण होनेसे धूमस थोड़ा वर्ष होने से थोड़ा और अधिक होने से अधिक फल दायक होता है ॥

स्वल्पे स्वल्पफलं सर्वं बह्वनां तु फलं महत् ॥१७७॥
जलार्द्रत्वे महावृष्टिर्बिम्बनाशे नृपक्षयः ।
अकाले फलपुष्पाणि सस्यनाशकराणि च ॥१७८॥
यस्य राज्ये च राष्ट्रे च देवध्वंसः प्रजायते ।
सपरिवारभूपस्य तस्य ध्वंसः प्रजायते ॥१७९॥
सूर्येन्द्वो. सर्वथा ग्रासे सर्वस्यापि महर्घता ।
भौमादिग्रहवर्गस्य वक्रे च प्राक्तन फलम् ॥१८०॥

अथ गन्धर्वनगरम्—

कपिल सस्यघाताय माञ्जिष्ठ हरण गवाम् ।
अव्यक्तवर्णं कुरुते बलक्षोभ न संशयः ॥१८१॥
गन्धर्वनगरं स्निग्ध सप्राकार सतोरणम् ।
सौम्यां दिशं समाश्रित्य राज्ञस्तद्विजयङ्करम् ॥१८२॥

---

१७७ ॥ मण्डल मे से जल के कण का स्राव हो, या मण्डल जल से भीगा हुआ मालुम पड़ तो अत्यन्त वर्षा होती है। बिम्ब के नाश से राजा की मृत्यु होती है। अकाल मे फल पुष्पों का होना खेती का विनाश कारक है ॥ १७८ ॥ जिस के राज्य या देश में देवता का विनाश हो उस देश के राजा का परिवार सहित नाश होता है ॥ १७९ ॥ सूर्य चन्द्रमा का पूर्ण ग्रास हो तो सब चीजों का भाव तेज हो। मङ्गलादि ग्रह वक्री हो तो उनका पूर्वोक्त ही फल कहना ॥ १८० ॥

गन्धर्वनगर कपिल वर्ण याने भूरा दीखे तो खेती का विनाश हो, मजीठ रग का दीखे तो गायों को पीडा कारक है, अप्रकट रग का देख पड़े तो बल का क्षोभ करता है ॥ १८१ ॥ यदि गधर्व नगर स्निग्ध परिकोट (किला) और ध्वजा सहित पूर्व दिशा मे देख पड़े तो राजा का विजय होता है ॥ १८२ ॥

विद्युल्लक्षणम्—

कपिलाविद्युदनिलं कुर्यात् पीता तु वृष्टये ।
लोहिता आतपाय स्यात् सिता दुर्भिक्षहेतवे ॥१८३॥

केतुफलम्

श्रावणे भाद्रमासे च केतवो वारुणा दश ।
अतिवृष्टिकरा लोके तदा धान्यसमर्घता ॥१८४॥
आश्विने कार्तिके ते स्युः सूर्यपुत्राश्चतुर्दश ।
कुर्युश्चतुष्पद मृत्युं दुर्भिक्षं देशनाशनम् ॥१८५॥
वह्निपुत्राश्चतुर्विंशत् केतवो मार्गपौषयोः ।
अग्निदाहं चौरभयमनावृष्टिं दिशन्त्यमी ॥१८६॥
केतवो यमपुत्रा स्युर्माघफाल्गुनयोर्नव ।
धान्यं महर्घं दुर्भिक्षं कुर्युर्नृपमहारणम् ॥१८७॥
केतवोऽष्टादश सुता धनदस्य वसन्तके ।

कपिल वर्ण की (भूरी) बिजली चमके तो पवन चले पीले रंग की चमके तो बहुत वर्षा हो लाल रंग की चमके तो गरमी अधिक पड़े और श्वेत वर्ण की चमके तो दुर्भिक्ष पड़े ॥ १८३ ॥

श्रावण और भादों महीने में दश केतु वरुण के पुत्र हैं, ये लोक में उदय होनेसे जल की वृष्टि और अनाज सस्ता करते हैं ॥ १८४ ॥ आसोज और कार्तिक में चौदह केतु सूर्य के पुत्र हैं ये पशुओं का विनाश, दुर्भिक्ष और देश का नाश करते हैं ॥ १८५ ॥ मार्गशिर और पोष मास में चोवीस केतु अग्निके पुत्र हैं ये अग्निदाह चौरभय और अनावृष्टि करते हैं ॥ १८६ ॥ माघ और फाल्गुन मास में नव केतु यम के पुत्र हैं ये धान्य की महंगाई दुष्काल और राजाओं में विग्रह करते हैं ॥ १८७ ॥ चैत्र और वैशाखमें अठारह केतु कुबेर के पुत्र हैं ये लोक में उदय होनेसे शुभ कोश को सुभिक्ष करते हैं

लोके सुखं मङ्गलानि सुभिक्षं कुर्युरुद्गताः ॥१८८॥
ज्येष्ठाषाढोदिता वायोः पुत्रा विंशतिकेतवः ।
सवातजलवर्षाय्यै तरुप्रासादभङ्गदाः ॥१८९॥
एवं पञ्चोत्तरशतं क्वचिदष्टोत्तरं शतम् ।
केचिदेकोत्तरशतं केतूनां स्यान्मतत्रयात् ॥१९०॥
दशैव रविजा गण्याः शतमेकोत्तरं ततः ।
त्रयोविंशा वायुजाताः शतमष्टोत्तरं तदा ॥१९१॥

अथ १०५ केतूदयफलम्—

एषां कदा फलमिति ज्ञेयमृक्षं विलोकयेत् ।
महोत्पातहते ऋक्षे देशेऽनावृष्टिसम्भवः ॥१९२॥
यदुक्तम्—उल्कापातो दिशां दाहो भूकम्पो ब्रह्मवर्चसम् ।
दृष्ट्वा ऋक्षे भवेद् यत्र तादृक्षं पीडितं भवेत् ॥१९३॥
लौकिकमपि—भूकंपणा तारापडणा रगतपाहाणवुट्ठि ।

॥ १८८ ॥ जेठ और अषाढमें वीस केतु वायु के पुत्र है, ये उदय होने से वायु और जल वर्षा करते है, तथा वृक्ष और महल का विनाश करते है ॥ १८९ ॥ इस प्रकार एकसो पाच केतु है, कोई एकसौ आठ और कोई एकसौ एक, ऐसे तीन मत मे केतुओं की सख्या मानते है ॥ १९० ॥ जो सूर्य के पुत्र दश केतु माने तो एक सो एक और वायु के पुत्र तेईस केतु माने तो एकसौ आठ सख्या होती है ॥ १९१ ॥

इनका फल देखने के लिये नक्षत्र को देखे, यदि नक्षत्र का महोत्पातसे आघात हो तो देशमें अनावृष्टि होती है ॥ १९२ ॥ उल्कापात, दिग्दाह भूकप और ब्रह्मतेज आदि को देख कर विद्वान् विचार करे, जो नक्षत्र उस दिन हो वही नक्षत्र पीडित होता है ॥ १९३ ॥ भूकप, तारे का गिरना, रक्त और पाषाण की वृष्टि, केतु का उदय, सूर्य और चन्द्रमा का ग्रहण, इनमेंसे

विद्युल्लक्षणम्—

कपिलाविद्युदनिलं कुर्यात् पीता तु वृष्टये ।
लोहिता आतपाय स्यात् सिता दुर्भिक्षहेतवे ॥१८३॥

अनुष्टुप्

श्रावणे भाद्रमासे च केतवो वारुणा दश ।
जलवृष्टिकरा लोके तदा धान्यसमर्घता ॥१८४॥
आश्विने कार्तिके ते स्युः सूर्यपुत्राश्चतुर्दश ।
पशुक्षयकरा मृत्युं दुर्भिक्षं देशनाशनम् ॥१८५॥
वह्निपुत्राश्चतुर्विंशत् केतवो मार्गपौषयोः ।
अग्निदाहं चौरभयमनावृष्टिं दिशन्त्यमी ॥१८६॥
केतवो यमपुत्राः स्युर्माघफाल्गुनयोस्तथा ।
धान्यं महर्घं दुर्भिक्षं कुर्युर्नृपमहारणम् ॥१८७॥
केतवोऽष्टादश सुता धनदस्य वसन्तके ।

कपिल वर्ण की (भूरी) बिजली चमके तो पवन चले, पीले रंग की चमके तो बहुत वर्षा हो, लाल रंग की चमके तो गरमी अधिक पड़े और श्वेत वर्ण की चमके तो दुर्भिक्ष पड़े ॥ १८३ ॥

श्रावण और भाद्रो महीने में दश केतु वरुण के पुत्र हैं, वे लोक में उदय होनेसे जल की वृद्धि और अनाज सस्ता करते हैं ॥ १८४ ॥ आसोज और कार्तिक में चौदह केतु सूर्य के पुत्र हैं वे पशुओं का विनाश, दुर्भिक्ष और देश का नाश करते हैं ॥ १८५ ॥ मार्गशिर और पोष मास में चौवीस केतु अग्निके पुत्र हैं वे अग्निभय चोरभय और अनावृष्टि करते हैं ॥ १८६ ॥ माघ और फाल्गुन मास में जो केतु यम के पुत्र हैं वे धान्य की महँगाई दुष्काल और राजाओं में विग्रह करते हैं ॥ १८७ ॥ चैत्र और वैशाखमें अठारह केतु कुबेर के पुत्र हैं वे लोक में उदय होनेसे सुख संपदा और सुभिक्ष करते हैं

गर्भाः आश्वयुजेऽश्वगर्दभमगास्तृणां पतन्त्युल्वणम्,
स्त्रीगर्भान् विनिहन्ति आद्रपदके सौख्यं सुभिक्षं जने ।
कुर्यादाश्विनकेऽथ सूर्यशशिनोरेकत्र मासे ग्रह-
द्वन्द्वं चेन्नरनायका बहुबला युद्धयन्ति कोपात्कटाः ॥१९८॥
कदाचिदधिके मासे ग्रहणं चन्द्रसूर्ययोः ।
सर्वराष्ट्रभय भङ्गः क्षयं यान्ति महीभुजः ॥ १९९ ॥
रवेर्ग्रहाच्च पक्षान्ते यदि चन्द्रग्रहो भवेत् ।
तदा दर्शनिनां पूजा धर्मवृद्धिर्महोदयः ॥ २०० ॥
क्रूरसंयुक्तसूर्येन्द्वोर्ग्रहणे नृपतिक्षयः ।
राष्ट्रभङ्ग इति प्राहुर्भद्रबाहुमुनीश्वराः ॥ २०१ ॥
रविवारे ग्रहे वर्षं मध्यमं धान्यसङ्ग्रहः ।
राजयुद्धं च दुर्भिक्षं घृतायस्तैलविक्रयः ॥ २०२ ॥
सोमेऽर्द्धग्रहणे राजविग्रहोऽन्नमहर्घता ।

ऊँटनियों के गर्भ पतित हों, बिजली वा कम गिरे पड़े। भाद्रपद मे हो तो स्त्रियों के गर्भ पतित हों आसोज मास मे हो तो लोग मे सुख और सुभिक्ष हो। यदि एक ही मास में सूर्य और चन्द्रमा दोनों का ग्रहण हो तो राजा लोग परस्पर महा क्रोध करके युद्ध करने तत्पर हो ॥ १९८ ॥

कभी अधिक मास मे चन्द्र सूर्य का ग्रहण हो तो राष्ट्र भग और राजाओं का क्षय हो ॥ १९९ ॥ सूर्य के ग्रहण बाद एक ही पक्षान्त मे यदि चन्द्रग्रहण हो तो साधु जनों की पूजा, धर्म की वृद्धि और बड़े पों का उदय हो ॥ २०० ॥ क्रूर ग्रह से युक्त सूर्य चन्द्रमा का ग्रहण तो राजाओं का नाश और राज्य भग हो, ऐसे भद्रबाहु मुनीश्वर कहते ॥ २०१ ॥ रविवार को ग्रहण हो तो वर्ष मध्यम रहे, धान्य का सग्रह ना उचित है, राजयुद्ध दुर्भिक्ष घृत लोहा और तैल इनका विक्रय करना २०२ ॥ सोमवार को ग्रहण हो तो राजविग्रह, अनाज के भाव तेज,

केतुगमणे रविमसिगहणे उप्पत्ति हाइ बक्किटि ॥१६४॥
जिण नक्खत्तम्मि मडूर्सा काइ हाइ अनिट्ठ ।
तिण मंथि धरसे सयुधर जाण गब्भणिणडु ॥१६५॥

यथ प्रमाणानुसारकरणचतुर्मासफलम—

सूर्याचन्द्रमसोग्रहः शुभकरा मार्गे तथा कार्तिके,
पौषे धान्यमहर्घता जनभयं वर्षं पुरा मध्यमम् ।
माघे धान्यमसृष्टिरप्यधिगमः स्यात् फाल्गुने दुःखकृत्
चैत्रे चित्रकरादिलेखकमहापीडा समा मध्यमा ॥१६६॥
वैशाखे तिलतैलमुद्गकलम कार्पासकं नाशयेत्,
ज्येष्ठेऽवर्षणधान्यनाशनकरः स्याद् मासियर्षं शुभम् ।
आषाढे क्वचिदम्ब वर्षति घना रागा प्रलाभः क्वचिद्,
वृक्षे मूलफलानि हन्ति सहसा वर्षं शुभं सम्भवेत् ॥१६७॥

एक भी हो तो कष्ट देने वाला होता है ॥ १६ ॥ मनुष्यों का कहना है कि जिस नक्षत्र पर अनिष्ट । उत्पन्न हो उस नक्षत्र में अन्न नहीं बरसता है और गर्भ का विनाश होता है ॥ १६५ ॥

सूर्य चन्द्रमा का ग्रहण कार्तिक और मार्गशिर मास में हो तो शुभ करता है । पौष मास में हो तो अन्न महंगा और तब मनुष्यों को भय और अगला वर्ष मध्यम करता है । माघ मास में हो तो स्वल्पानुसार वृष्टि और अन्न की प्राप्ति विशेष होती है । फाल्गुन मास में हो तो दुःख दायक है । चैत मास में हो तो चित्रकार और लेखक आदि को महा पीडा तथा वर्ष मध्यम हो ॥ १६६ ॥ वैशाख मास में हो तो तिल तैल मूंग चावल और कपास का नाश हो । ज्येष्ठ मास में हो तो वृष्टि न हो और धान्य का नाश और अगला वर्ष शुभ हो । आषाढ में ग्रहण हो तो कहीं जल बरसे कहीं रोग और कहीं अन्न का लाभ हो वृक्षों के मूल फल टूट पड़ें और वर्ष शुभ रहे ॥ १६७ ॥ श्रावण मास में हो तो प्राणियों के और

गर्भाः श्रावणकेऽश्वगर्दभखराम्नृणां पतन्त्युल्बणम्,
स्त्रीगर्भान् विनिहन्ति भाद्रपदके सौख्यं सुभिक्षं जने ।
कुर्यादाश्विनकेऽथ सूर्यशशिनोरेकत्र मासे ग्रह-
द्वन्द्वं चेन्नरनायका बहुबला युद्ध्यन्ति कोपोत्कटाः ॥१९८॥
कदाचिदधिके मासे ग्रहणं चन्द्रसूर्ययोः ।
सर्वराष्ट्रस्य भङ्गः क्षयं यान्ति महीभुजः ॥ १९९ ॥
रवेर्ग्रहाच्च पक्षान्ते यदि चन्द्रग्रहो भवेत् ।
तदा दर्शनिनां पूजा धर्मवृद्धिर्महोदयः ॥ २०० ॥
क्रूरसंयुक्तसूर्येन्द्वोर्ग्रहणे नृपतिक्षयः ।
राष्ट्रभङ्ग इति प्राहुर्भद्रबाहुमुनीश्वराः ॥ २०१ ॥
रविवारे ग्रहे वर्षं मध्यमं धान्यसङ्ग्रहः ।
राजयुद्धं च दुर्भिक्षं घृतायस्तैलविक्रयः ॥ २०२ ॥
सोमेऽर्कग्रहणे राजविग्रहोऽन्नमहर्घता ।

गदहियों के गर्भ पतित हों, बिजली वा करकादिक पडे। भाद्रपद में हो तो स्त्रियों के गर्भ पतित हों आसोज मास में हो तो लोगों में सुख और सुभिक्ष हो। यदि एक ही मास में सूर्य और चन्द्रमा दोनों का ग्रहण हो तो राजा लोग परस्पर महा क्रोध करके युद्ध करने तत्पर हों ॥ १९८ ॥

कभी अधिक मास में चन्द्र सूर्य का ग्रहण हो तो राष्ट्र भंग और राजाओं का क्षय हो ॥ १९९ ॥ सूर्य के ग्रहण बाद एक ही पक्षान्त में यदि चन्द्रग्रहण हो तो साधु जनों की पूजा, धर्म की वृद्धि और बड़े पुरुषों का उदय हो ॥ २०० ॥ क्रूर ग्रह से युक्त सूर्य चन्द्रमा का ग्रहण हो तो राजाओं का नाश और देश भंग हो, ऐसे भद्रबाहु मुनीश्वर कहते हैं ॥ २०१ ॥ रविवार को ग्रहण हो तो वर्ष मध्यम रहे, धान्य का संग्रह करना उचित है, राजयुद्ध दुर्भिक्ष घृत लोहा और तैल इनका विक्रय करना ॥ २०२ ॥ सोमवार को ग्रहण हो तो राजविग्रह, अनाज के भाव तेज,

लाभस्तैलघृतादिभ्यो भौमे वह्निभयं भवेत् ॥ २०३ ॥
भौमवारे ग्रहे नानारम्भाऽन्यं नृपतिक्षयः ।
ग्रस्तोर्मेहे च कर्पासस्तूलसूत्रमहर्घता ॥ २०४ ॥
बुधे पूगीरक्तवस्त्रसङ्ग्रहो लाभदायकः ।
गुरौ पीतरक्तवस्तुतैलगन्धादिलाभदः ॥ २०५ ॥
शुक्रे सुभिक्षं माङ्गल्यं सर्वलोकशुभंकरम् ।
शनौ युगन्धरीलाभः श्यामवस्तुमहर्घता ॥२०६॥
पीतरक्तवस्त्रनानावृषभादिकसङ्ग्रह ।
मासद्वये तस्य लाभ इत्युक्तं ज्ञानिभिः पुरा ॥२०७॥
सर्वोऽर्धमासिके लाभस्त्रिभागश्च त्रिमासिके ।
चतुर्भागश्चतुर्मासेऽन्यमिते वर्षमध्यतः ॥२०८॥
ग्रहणाद्ये च सर्वस्मिन्नुत्पातः प्रकटो यदा ।

और तैल घी आदि से लाभ हो । मंगलवार को ग्रहण हो तो अग्निभय हो ॥ २०३ ॥ मंगलवार को सूर्य ग्रहण हो तो राजाओं में अन्योऽन्य विग्रह हो । चन्द्र ग्रहण हो तो कपास रूई और सूत महंगे हों ॥ २०४ ॥ बुधवार को ग्रहण हो तो सुपारी तथा लाल वस्तु का संग्रह करना लाभदायक है । गुरुवार को ग्रहण हो तो पीली और लाल वस्तु तथा तैल गंधादिक संग्रह करना लाभदायक है ॥ २०५ ॥ शुक्र के दिन ग्रहण हो तो सब लोग में शुभकारक सुभिक्ष और मांगलिक होता है । शनिवार को ग्रहण हो तो युगंधरी (जुवार) से लाभ और काली वस्तु महँगी हो ॥ २०६ ॥ पीले तथा रक्त वस्त्र नाना वृषभादिक का संग्रह करने से दो महीने पीछे उनसे लाभ होगा ऐसा ज्ञानियों ने कहा है ॥ २०७ ॥ अर्द्ध मास से आधे मास में लाभ, तीन मास से तीन मास में लाभ, चतुर्थ मास से चौथे मास में लाभ और अन्य में ग्रहण हो तो एक वर्ष में लाभ होगा ॥ २०८ ॥ सब (चंद्र या सूर्य) ग्रहण की आदि में उत्पात प्रकट हो किन्तु ग्रहण के

पश्चात् संजायते मेघोऽरिष्टभङ्गं तदादिशेत् ॥२०९॥
एवमुत्पातरहिते यस्मिन्नुदकयोनिकाः ।
जीवा वा पुद्गला दृश्यास्तद्देशे वृष्टिरुत्तमा ॥२१०॥
एतेन गर्भाः सर्वेऽपि सूचिता वातवर्जिताः ।
स्थानाङ्गसूत्रकारेण तेषां नीरात् समुद्भवात् ॥२११॥

यदागमः- चत्तारि दगगब्भा पण्णत्ता तंजहा--उस्सा महिया सीया उसिणा । चत्तारि दगगब्भा पण्णत्ता तंजहा-हेमगा अब्भसंथडा सीओसिणा पंचरूविया-

माहे उ हेमगा गब्भा फग्गुणे अब्भसंथडा ।
सीओसिणाओ य चित्ते वइसाहे पंचरूविया ॥२१२॥
सत्तमे सत्तमे मासे गब्भतः सत्तमेऽहनि ।

बाद ही वर्षा हो जाय तो सब उत्पात के फल का नाश हो जाता है ॥२०९॥ इसी तरह जिस देश में उत्पात रहित जल योनि के जीव या पुद्गल देखने में आवे, उस देश में अच्छी वर्षा होती है ॥ २१० ॥ ये सब वर्षा के गर्भ जल से उत्पन्न होने के कारण स्थानांग सूत्रकार ने वायु रहित सूचित किया ॥ २११ ॥

ओस (धूमस) महिका शीत और उष्ण ये चार प्रकार के उदक गर्भ हैं। मतान्तर से- हिम मेघाडंबर (बादल का समूह) शीत और गरमी ऐसे भी चार प्रकार के हैं। इन प्रत्येक के गर्जना विजली जल वायु और बद्दल, इस तरह पांच पांच प्रकार है। माघ मास में हिम का गिरना, फाल्गुन मास में बादल से आकाश आच्छादित रहना. चैत्र मास में शीत और गरमी, तथा वैशाख मास में मेघ गर्जना, बिजली, वर्षा, वायु और बादल ये पांच प्रकार के गर्भ का लक्षण होता है ॥२१२॥ गर्भ सात मास और सात दिन में परिपक्व होता है, जैसा गर्भ हो वैसा फल जानना ॥

लाभस्तैलघृतादिभ्यो भौमे वह्निभयं भवेत् ॥ २०३ ॥
भौमवारे ग्रहे भानोरन्योऽन्यं नृपतिक्षयः ।
इन्दोर्ग्रहे च कर्पाससूत्रमहर्घता ॥ २०४ ॥
बुधे पूगीफलवस्त्रसङ्ग्रहो लाभदायकः ।
गुरौ पीतरक्तवस्त्रतैलगन्धादिलाभदः ॥ २०५ ॥
शुक्रे सुभिक्षं माङ्गल्यं सर्वलोकशुभंकरम् ।
शनौ सुगन्धरीलाभः श्यामवस्तुमहर्घता ॥ २०६ ॥
पीतरक्तवस्त्रताम्रधूपमादिकसङ्ग्रहः ।
मासषट्के तस्य लाभ इत्युक्तं ज्ञानिभिः पुरा ॥ २०७ ॥
षष्ठेऽर्द्धमासिके लाभस्त्रिभागश्च त्रिमासिके ।
चतुर्भागश्चतुर्मासेऽस्तमिते वर्षमध्यतः ॥ २०८ ॥
ग्रहणाद्यं च सर्वस्मिन्नुत्पातं प्रबलं यदा ।

और तैल घी आदि से लाभ हो । भौमवार को ग्रहण हो तो अग्निभय हो ॥ २०३ ॥ मंगलवार को सूर्य ग्रहण हो तो राजाओं में अन्योऽन्य विग्रह हो । चन्द्र ग्रहण हो तो कपास रूई और सूत महँगे हों ॥ २०४ ॥ बुधवार को ग्रहण हो तो सुपारी तथा लाल वस्तु का संग्रह करना लाभदायक है । गुरुवार को ग्रहण हो तो पीली लाल वस्तु तथा तैल गन्धादिक संग्रह करना लाभ दायक है ॥ २०५ ॥ शुक्र के दिन ग्रहण हो तो सब लोग में शुभकारक सुभिक्ष और मांगलिक होता है । शनिवार को ग्रहण हो तो सुगंधी (सुवास) से लाभ और काली वस्तु महँगी हो ॥ २०६ ॥ पीत तथा रक्त वस्त्र ताम्बा धूपआदिक का संग्रह करने से छः महीने पीछे उससे लाभ होगा ऐसा ज्ञानियों ने कहा है ॥ २०७ ॥ अर्द्ध मास से आधे मास में लाभ तीन मास से तीन मास में लाभ चतुर्थ भाग से चौथे मास में लाभ और अस्त में ग्रहण हो तो एक वर्ष में लाभ होगा ॥ २०८ ॥ सब (चंद्र या सूर्य) ग्रहण की आदि में उत्पात प्रबल हो किंतु ग्रहण के

पश्चात् संजायते मेघोऽरिष्टभङ्गं तदादिशेत् ॥२०९॥

एवमुत्पातरहिते यस्मिन्नुदकयोनिकाः ।

जीवा वा पुद्गला दृश्यास्तद्देशे वृष्टिरुत्तमा ॥२१०॥

एतेन गर्भाः सर्वेऽपि सूचिता वातवर्जिताः ।

स्थानाङ्गसूत्रकारेण तेषां नीरात् समुद्भवात् ॥२११॥

यदागमः–चत्तारि दगगब्भा पण्णत्ता तंजहा--उस्सा महिया सीया उसिणा । चत्तारि दगगब्भा पण्णत्ता तंजहा– हेमगा अब्भसंथडा सीओसिणा पंचरूविया–

माहे उ हेमगा गब्भा फग्गुणे अब्भसंथडा ।

सीओसिणाओ य चित्ते वइसाहे पंचरूविया ॥२१२॥

सप्तमे सप्तमे मासे गर्भान्तः सप्तमेऽहनि ।

बाद ही वर्षा हो जाय तो सब उत्पात के फल का नाश हो जाता है ॥२०९॥ इसी तरह जिस देश में उत्पात रहित जल योनि के जीव या पुद्गल देखने में आवे, उस देश में अच्छी वर्षा होती है ॥ २१० ॥ ये सब वर्षा के गर्भ जल से उत्पन्न होने के कारण स्थानाग सूत्रकार ने वायु रहित सूचित किया ॥ २११ ॥

ओस (धूमस) महिका शीत और उष्ण ये चार प्रकार के उदक गर्भ है । मतान्तर से– हिम मेघाडवर (बादल का समूह) शीत और गरमी ऐसे भी चार प्रकार के हैं । इन प्रत्येक के गर्जना विजली जल वायु और बद्दल, इस तरह पाच पाच प्रकार है । माघ मास में हिम का गिरना, फाल्गुन मास में बादल से आकाश आच्छादित रहना चैत्र मास में शीत और गरमी, तथा वैशाख मास में मेघ गर्जना, विजली, वर्षा, वायु और बादल ये पाच प्रकार के गर्भ का लक्षण होता है ॥२१२॥ गर्भ सात मास और सात दिन में परिपक्क होता है, जैसा गर्भ हो वैसा फल जानना ॥

गमा' पाम नियच्छन्ति याहाास्मादगं फल्म ॥२१३॥

हिमं तुहिनं तद्य हिमह मस्येत हिमकृत हिमपातरूपा इत्यर्थः। 'अभ्रमथश' ति अभ्रमपि बहूनि मेघैराकाशाच्छ्रा दनानीत्यर्थः। नातपन्ति शीतार्णे पश्चाना रूपाणां गर्जि मविद्युज्जलवातमाभ्रलक्षणाना ममाहार' पश्चरूप मदृश्चि येषां ते पश्चरूपिका उदकगर्भा इति। इह मतान्तरमव—

पौष समार्गशीर्ष मन्ध्यारागाऽम्बुदा' सपरिवेषा'।
नात्यर्थं मार्गशीर्षं शीतं पौषेऽतिहिमपात' ॥२१४॥
माघे प्रमला वायुस्तुषारकलुषद्युती रविशशाङ्कौ।
अतिशीत मघनस्य च भानोरस्तोदयौ धन्यौ॥२१५॥
फाल्गुनमासे रूक्षश्चण्ड' पवनाऽभ्रसम्प्लवा' स्निग्धा'।
परिवेषाश्च सकला' कपिलस्ताम्रो रविश्च शुभ ॥२१६॥
पवनघनवृष्टियुक्ताश्चैत्रे गर्भा' शुभा सपरिवेषा'।
घनपवनसलिलविद्युत्स्तनितैश्च हिताय वैशाखे ॥२१७॥

२१३॥ मतान्तर से— मार्गशिर और पौष मास में सन्ध्या रंगवाली हो और जल के परिमण्डल देख पड़े मार्गशिर मे विशेष शीत ठंड) और पौष में विशेष हिम न पड़े ॥ १४॥ माघ मास मे प्रबल वायु वाय, सूर्य चन्द्रमा तुषार से स्वच्छ रंग न पड़े विशेष ठंड पड़ और सूर्य का उदय अस्त में बादल देखने मे माघ मा शुभ है॥ २१५ फाल्गुन मास में रूखा और तेज पवन चले बहुत स्निग्ध बादल आकाश में चलते देख पड़े परिमण्डल भी हो सूर्य कपिल (भूरा) और रक्त वर्ण का हो तो शुभ है॥२१६॥ चैत्र मास मे पवन बादल और वृष्टि के साथ परिमण्डल वाला गर्भ हो तो शुभ है। वैशाख मास में बादल वायु वर्षा बिजली और गर्जना वाले गर्भ श्रेय है॥ १७॥ ऐसा स्थानांगसूत्र के चतुर्थ स्थानक में लिखा है॥

तानेव मासभेदेन दर्शयति माहेत्यादिरिति ॥ इति स्थानाङ्गसूत्रवृत्तिः ॥

हीरमेघमालायामपि—

परिवेष वाय वद्दल सञ्झारागं च इंद्धणु होइ ।
हिम करह् गज्ज विज्जु छंदा गब्भो भणिएहिं ॥ २१८ ॥
जीवेभ्यः पुद्गलाः सूत्रे पृथगेव समीरिताः ।
तेन केचिदजीवाः स्युर्महावृष्टेश्च हेतवः ॥ २१९ ॥
जलयोनिकजीवादेः सद्भूतिः प्रच्युतिर्यथा ।
विचार्यते देशतस्ते तथा ग्रामे च मण्डले ॥ २२० ॥
यद्दिनेऽभ्रादिसम्भूतिर्मेघशास्त्रे निरूपिता ।
यथा सा वृष्टिहेतु स्यात् तथाभ्रादेः परिच्युतिः ॥ २२१ ॥

यदुक्तम्—

आर्द्रादौ दश ऋक्षाणि ज्येष्ठे शुक्ले निरीक्षयेत् ।
साभ्रेषु हन्यते वृष्टिर्निरभ्रे वृष्टिरुत्तमा ॥ २२२ ॥

हीरमेघमाला में कहा है कि परिमंडल, वायु, बादल, सन्ध्याराग, इन्द्रधनुष, करह (ओला), गर्जना, बिजली और जल के छींटे ये दश गर्भ के लक्षण जानना ॥ २१८ ॥ आगम में जीवों से पुद्गल पृथक् ही माने हैं, इस लिये कितनेक पुद्गल महावृष्टि के कारण हैं ॥ २१९ ॥ जैसे जलयोनि के जीवों की उत्पत्ति और विनाश का विचार करते हैं, वैसे समग्र देश गाँव (नगर) और देश का भी विचार करना चाहिये ॥ २२० ॥ जिस दिन बादल की उत्पत्ति मेघशास्त्र में कही है, वह जैसे वृष्टि के हेतु है वैसे बद्दल के नाशक भी है ॥ २२१ ॥ कहा है कि आर्द्रा आदि दश नक्षत्र ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष में देखना चाहिये, यदि वे बद्दल सहित देखने पड़े तो वृष्टि के नाशक हैं और बादल रहित निर्मल देखने पड़े तो उत्तम वृष्टि जानना ॥ २२२ ॥

एवं देशनिवेशपुद्गलजलप्राण्यादिसंमूर्छनाद्,
हेतून् प्रागवगम्य सम्यगुदकासारस्य सारस्यदीन् ।
भूतं मेघमहोदयं सविजयं तस्य श्रिया पश्यता-
मुत्कर्षादिव काञ्चनरूप्यकलनैर्वर्षन्ति सिद्धिप्रदाः ॥२२३॥

इति श्रीमेघमहोदये वर्षप्रबोधापरनाम्नि महोपाध्याय श्रीमेघविजयगणिकृते देशाधिकारः ॥

इस प्रकार देश गाँव आदि में पुद्गल जल और प्राणी आदि का संमूर्छन से (स्वाभाविक उत्पत्ति और परिवर्तन से) प्रथम जल की अच्छी वर्षा के हेतुओं का अच्छी तरह ज्ञान करके सफलीभूत मेघ के उदय को जो कहता है उस को लक्ष्मी स्वाधीन होती है और सुंदर चांदी सोने से सिद्धि कारक वर्षा होती है ॥ २३ ॥

श्रीसौराष्ट्रराष्ट्रान्तर्गत पादलिप्तपुरनिवासिना पण्डितभगवानदासाख्य
जैनेन विरचितया मेघमहोदये बालावबोधिन्याऽऽर्यभाषया टीकितः
प्रथमो देशाधिकारः ।



अथ वाताधिकारः ।

अथ मरुदभिगम्यः सम्यगाभोगरम्यः,
कृतभुवनविनोदः प्रौढपाथोदमोदः ।
प्रमुदितमरुद्देवः श्रीप्रभुः पार्श्वदेवः,
सृजति सरसवर्षं भोगिनां दत्तहर्षः ॥ १ ॥
वातस्त्रिलोक्या आधारः सर्वार्थेभ्यो महाबलः ।
व्याप्तः सर्वत्र लोकेऽपि बादरः शाश्वतः स्वतः ॥ २ ॥
प्राच्योदीच्यादिभेदेन बहुधा वसुधातले ।
वर्षणेऽवर्षणे हेतुः केतुर्वैक्रियरूपभाक् ॥ ३ ॥

यदागमः—रायगिहे णगरे जाव एव वयासी, अत्थि णं भंते ! ईसिंपुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायन्ति ? हंता, अत्थि । अत्थि णं भन्ते ! पुरत्थिमे णं ईसिंपुरेवाया

देवताओं के वंदनीय, अच्छे अच्छे चौतीस अतिशयादि विभूतियों मे पूर्ण, जगत् को आनन्द देनवाले और जिनसे मेघमाली इन्द्र वायुकुमार-देव और नागकुमार देव ये हर्षित हुए हैं, ऐसे श्रीपार्श्वनाथ प्रभु रसवाले वर्षको उत्पन्न करते है ॥ १ ॥

वायु तीन लोक का आधार है, सब पदार्थों से महाबला है, सर्वत्र लोकमें व्याप्त है तथा बादर और शाश्वत है ॥ २ ॥ पूर्व पश्चिमादि भेदों मे बहुत प्रकार के वायु पृथ्वी पर है, ये वृष्टि और अनावृष्टि के कारणभूत हैं और ये वायु वैक्रियशरीर वाले और ध्वजाकार के सदृशरूप वाले है ॥ ३ ॥

राजगृहनगर में गौतम स्वामी श्री सर्वज्ञ महावीरप्रभु को इस प्रकार बोले—हे भगवन् ! ईषत्पुरोवायु (धीना चलने वाला चिकना वायु) वनस्पति आदि को हितकर पथ्यवायु, मन्द चलने वाला मन्द वायु और

पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति ? हंता, अत्थि । एव पच्चत्थिमेण दाहिणे ण उत्तर ण उत्तरपुरत्थिमे णं, दाहिणपुरत्थिमे णं दाहिणपच्चत्थिमे ण उत्तरपच्चत्थिमे ण, जयाण भन्ते ! पुरत्थिमे णं ईसिं० जाव वायंति । तयाण पच्चत्थिमे णं वि ईसिंपुरवाया जयाण पच्चत्थिमे णं ईसिंपुरवाया० जाव वायन्ति । तयाणं पुरत्थिमे णं वि ईसिं तयाण पच्चत्थिमेण वि ईसिं । एवं दिसासु विदिसासु ॥ इति श्रीभगवत्यां पञ्चमशतके द्वितीयोद्देशके ॥

अस्त्ययमर्थो यदुत वाता वान्तीति याग' कीदृशा (श ?) इत्याह 'ईसिंपुरवाय'त्ति मनाक् सस्नेहवाता' । 'पच्छावाय त्ति वनस्पत्यादिहिता वायव । 'मन्दावाय' त्ति शनै' सचारिणा न महावाता इत्यर्थ' । 'महावाय' त्ति उद्दण्डवाता अनल्पा इत्यथ' । 'पुरत्थिमेणं' ति सुमेरो' पूर्वस्यां दिशीत्यर्थ'। ननु सूत्राक्तरीत्यैवं द्वीपे वायुक्यमापतत् ।

तब चलने वाला महावायु चलते हैं ? ह गौतम ! हा यह वायु चलते हैं । हे भगवन् ! पूर्व दिशा मे ईषत्पुरोवायु पथ्यवायु मन्दवायु और महावायु चलते हैं ? हे गौतम हा चलते हैं । इस प्रकार पश्चिम में दक्षिण में,उत्तर में ईशानकोण मे आग्निकोण में नैऋत्यकोण मे और वायव्यकोण मे जानना हे भगवन् ! जब पूर्व मे ईषत्पुरोवायु पथ्यवायु मन्दवायु और महावायु चलते हैं तब पश्चिम में भी ईषत्पुरोवायु आदिवायु चलते हैं ? और जब पश्चिम में ये वायु चलते हैं तब ये पूर्व में भी चलते हैं ? हे गौतम ! जब पूर्व में ईषत्पुरोवायु आदि वायु चलते हैं तब ये पश्चिम मे भी चलते हैं । और जब पश्चिम में ईषत्पुरोवायु आदि वायु चलते हैं तब ये पूर्व में भी चलते हैं । इसी तरह सब दिशा और विदिशा मे भी समझना ।

यह सूत्रोक्त रीति से द्वीप (स्थल) में रहे हुए वायु के सम्बन्ध का

तदैक्याद् वर्षणोऽप्येकं तेन सर्वसमाः समाः ॥ ४ ॥
नदध्यत्नविरोधोऽयं वानभेदात् प्रतिस्थलम् ।
नैतच्छक्यं यतो वातो वाते भेदत्रयस्मृते ॥ ५ ॥

यतस्तत्रैव—कया ण भन्ते ! ईसिंपुरे वाया० जाव वायन्ति ? गोयमा ! जया णं वाउकाए आहारियं रियन्ति, तया णं ईसिंपुरेवाया० जाव वायन्ति ॥ १ ॥ कया ण भन्ते ! ईसिं० जाव वायन्ति ? गोयमा ! जयाणं वाउकाए उत्तरकिरियं करेति तया णं ईसिं० जाव वायन्ति ॥ २ ॥ कयाणं भन्ते ! ईसिंपुरे वाया पच्छावाया ? गोयमा ! जया णं वायुकुमारा वायुकुमारीओ वा, अप्पणो वा, परस्सा वा, तदुभयस्स वा, अट्ठाए वाउकायं उदीरेंति, तया ण ईसिंपुरे वाया० जाव महावाया वायन्ति ॥ ३ ॥

इति 'अहारियं रियन्ति' त्ति रीत रीतिः स्वभाव इत्यर्थः । तस्यानतिक्रमेण यथारीत रीयते गच्छति, यथा स्वाभाविक्या

वर्णन किया, उनमें से एक एक भी वर्षादि के निमित्त है यदि सब अनुकूल हों तो वर्षा अनुकूल होती है ॥ ४ ॥ वायु के भेद से प्रत्येक स्थल का बड़ा विरोध है, ये जानना सुगम नहीं है। इस लिये वायु को जाननेका अभ्यास करना चाहिये। वायु चलन के तीन कारण आगममें कहे है ॥ ५ ॥

हे भगवन् ! ईषत्पुरो वायु आदि वायु कब चलते हैं ? हे गौतम ! जब वायुकाय अपना स्वभाव पूर्वक गति करे तब ये वायु चलते हैं ॥ १ ॥ हे भगवन् ! ये वायु कब चलते हैं ? हे गौतम ! जब वायुकाय उत्तर क्रिया पूर्वक वैक्रिय शरीर बनाकर गति करे तब ये वायु चलते हैं ॥ २ ॥ हे भगवन् ? ये वायु कब चलते हैं ? हे गौतम ! जब वायुकुमार और वायुकुमारियां अपने या दूसरों के लिये या दोनों के लिये वायुकाय को उदीरे (गति-कराते) है तब ये वायु चलते हैं ॥ ३ ॥

गत्या गच्छतीत्यर्थ'। 'उत्तरकिरिय' त्ति वायुकायस्य हि मू लशरीरमौदारिकं, उत्तरं तु वैक्रियम्। अत उत्तरा उत्तरश रीराश्रया क्रिया गति लक्षणा, यत्र गमने तदुत्तरक्रियं तथ या मयमीत्येव रीयते गच्छति। वायमान्तरं स्वाद्य कारणं महावातवर्जितानां, द्वितीयं तु महावातवर्जितानां, तृतीयं तु यतुणामप्युक्तमिति तद्वत्ति'।

एवं वातविशेषेण यथाऽयथाविशेषणात्।
शुभाशुभादियोगेन वातवृन्दे विचित्रता ॥६॥
वातस्तु त्रिविधः प्रोक्ता वापक-स्थापकाऽपर'।
तृतीया ज्ञापका वृष्टे' स्थानाङ्गे मध्यमङ्गुलात् ॥७॥
तुलादण्डस्य नीत्यात्र प्राद्याद्यान्त्यमारुतौ।
आद्यस्तूत्पादकाऽन्त्यस्त' परा न विनाशकृत् ॥८॥
तृतीयो भाविनीं वृष्टिं पूर्वमेव निवेदयेत्।
तत्फलं वृष्टिकृत्कालान्तर वाद्याऽपि च द्विधा ॥९॥

इस तरह वर्ग में वायुविशेष से वृष्टि या अवृष्टि की विशेषता और शुभाशुभ योगों से वायु की विशेषता में विचित्रता है ॥ ६ ॥ स्थानांग सूत्रमें वायु तीन प्रकार के कहे है—वापक स्थापक और तीसरा वृष्टि कारक ज्ञापक है ॥ ७ ॥ तुलादण्डनीति के अनुसार यहां आद्य और अन्त्य वायु ग्रहण करना चाहिये आद्य वायु वर्षा का उत्पादक है। दूसरा वायु विनाश कारक नहीं है ॥ ८ ॥ तीसरा होने वाली वृष्टि का प्रथम से तत्काल जाता है और तत्काल वृष्टि करने वाला या कालान्तर में वृष्टि करने वाला है। इसी प्रकार वर्षा को उत्पन्न करने वाला पहला वापक वायु के भी दो भेद है—प्रथम वर्षाकाल में बादलों को उत्पन्न करके तत्काल वर्षा करता है और दूसरा शीत —में बादलों को उत्पन्न करके बहुत काल पीछे वर्षा करता है ॥ ९ ॥

वातचक्र सामान्यत —

पूर्वस्या अथवोदीच्याः पवनः शीघ्रवृष्टये ।
दक्षिणस्या वृष्टिनाशी पश्चिमाया विलम्बकः ॥ १०
आग्नेय्या विग्रहं वह्नि-र्भयं वृष्टिविबाधनम् ।
नैऋर्तः पवनो यावत् तावत् कुर्यान्महातपम् ॥ ११ ॥
वायव्यवायुः कुरुते वृष्टिं पवनसंयुताम् ।
ततः पीडा मत्कुणाद्या ईतयो जीववर्षणम् ॥ १२ ॥
ऐशानः पवनो विश्व-हिताय जलवृष्टये ।
आनन्दं नन्दयेल्लोके वायुचक्रमिदं मतम् ॥ १३ ॥

रुद्रोऽपि स्वकृतमेघमालायामाह—

"वायुधारणमेवेद शृणु तत्त्वेन सुन्दरि ! ।
सुभिक्षं पूर्ववातेन जायते नात्र संशयः ॥ १४ ॥
आग्नेय्यां खण्डवृष्टिश्च जायते गिरिजात्मजे ।

पूर्व और उत्तर दिशा के वायु से शीघ्र वर्षा होती है, दक्षिण का वायु वृष्टि विनाशक है, पश्चिम का वायु विलम्ब से वृष्टि करता है ॥ १० ॥ आग्नेयी दिशा का वायु अग्नि का भयकारक और वर्षा का बाधक है, नैर्ऋत दिशा का पवन जबतक चले तबतक महा ताप-अधिक गरमी पड़े ॥ ११ ॥ वायव्यदिशा का वायु पवन के साथ वृष्टि करता है, खटमल आदि छोटे छोटे जीवों की उत्पत्ति और ईति— (शलभ मूसा टिड्डी आदि) की अधिकता होती है ॥ १२ ॥ ईशान का वायु से जगत का कल्याण होता है, जल की वृष्टि होती है और लोक मे आनन्द होता है । यह वायुचक्र है ॥ १३ ॥

रुद्रदेव ने स्वकृत मेघमाला मे कहा है कि—हे सुन्दरि ! वायु का धारण तत्व विचार से श्रवण कर—पूर्व के वायु से निश्चय से सुकाल होता है ॥ १४ ॥ आग्नेय कोण का वायु खण्डवृष्टि करता है, दक्षिण का वायु

दक्षिणे ईतिर्विज्ञेया नैर्ऋत्यां कुलवृद्धिकारके ॥१५॥
वारुणे दिव्यधान्यं च वायव्यां तापसम्भव ।
उत्तरायां शुभं श्रेय-मीशान्यां सर्वसम्पद ,, ॥१६॥
हेमन्ते दक्षिणो वायु शिशिरे नैर्ऋत शुभ ।
वसन्ते वारुणः श्रेष्ठः फलदायी शरत्सु च ॥१७॥
शरत्काले तु पूर्वस्या समीर फलनाशन ।
वसन्ते चोत्तरावायु फलपुष्पाणि नाशयेत् ॥१८॥
आग्नेय्या न कदापीष्ट ऐशान सर्वदा शुभ ।
नैर्ऋता विग्रहं रोगं दुर्भिक्षं कुरुते भयम् ॥१९॥
भ्रम्भावात विना कश्चिद् यदा प्राच्यादिकोऽनिल ।
स्पष्टमात्रेन नो वाति तदा वृष्टिः स्थिरा भवेत् ॥२०॥

ईति कारक है, नैर्ऋत्य कोण का वायु कुलवृद्धि कारक है ॥ १५ ॥ पश्चिम का वायु दिव्य धान्य उत्पन्न करता है वायव्य कोण का वायु ताप उत्पन्न करता है उत्तर दिशा का वायु शुभ आनन्द और ईशान कोण का वायु सब सम्पत्ति करता है ॥ १६ ॥

हेमन्त ऋतु में दक्षिण दिशा का वायु और शिशिर ऋतु में नैर्ऋत कोण का वायु चले तो शुभ है। वसन्त तथा शरद ऋतु में पश्चिम दिशा का पवन चले तो फलदायक होता है ॥ १७ ॥ शरद ऋतु में पूर्व दिशा का वायु चले तो फल का विनाश करता है। वसंत में उत्तर दिशा का वायु चले तो फल और पुष्पों का नाश करता है ॥ १८ ॥ आग्नेय कोण का वायु कभी भी शुभ दायक नहीं होता। ईशान कोण का वायु सर्वदा शुभ रहता है। नैर्ऋत कोण का वायु विग्रह रोग दुर्भिक्ष और भय करता है ॥ १९ ॥

झंझावायु को छोड़कर यदि कोई पूर्वादि का वायु स्पष्टतया न चले तो वर्षा स्थिर होती है ॥ ॥ आरम्भ में मुख्य करके पूर्व दिशा

श्रावणे मुख्यतः प्राच्यो नभस्ये चोत्तरोऽनिलः ।
वृष्टिं दृढतरां कुर्याच्छेषमासेषु वारुणः ॥२१॥

चैत्रमास वायुविचार —

चैत्राऽसितद्वितीयायां सर्वदिग्भ्रामकोऽनिलः ।
विना मेघं तदा भाद्रपदे वृष्टिस्तु भूयसी ॥२२॥
पूर्वस्या उत्तरस्याश्च वायुश्चैत्रे सितेतरे ।
तृतीयायां तदा लोके सुभिक्षं प्रचुरं जलम् ॥२३॥
चतुर्थ्यां वृष्टियुग्वानस्तदा दुर्भिक्षमादिशेत् ।
चैत्रेऽसितेऽपि पञ्चम्यां तादृगेव फलं भवेत् ॥२४॥
चैत्रद्वितीयादिचतुर्दिनेषु, कृष्णेऽथ पक्षे यदि पूर्ववातः ।
वर्षायुतो नैव शुभः सिते तु, पूर्वोत्तरोवायुरतीवशस्तः ॥२५॥
चैत्रस्य शुक्लपञ्चम्यां वायुर्दक्षिणपूर्वयोः ।

का, भाद्रपद में उत्तर दिशा का और बाकी महीने में पश्चिम दिशा का वायु चले तो बहुत अच्छी वर्षा होती है ॥ २१ ॥

चैत मास में कृष्ण पक्ष की द्वितीया के दिन यदि सब दिशा का वायु चले किन्तु वर्षा न हो तो भाद्रपद में बहुत वर्षा होती है ॥ २२ ॥ चैत कृष्ण पक्ष में तृतीया के दिन पूर्व और उत्तर का वायु चले तो लोक में सुभिक्ष हो और जल वर्षा अधिक हो ॥ २३ ॥ चतुर्थी के दिन यदि वर्षा युक्त वायु चले तो दुर्भिक्ष होता है। इसी तरह शुक्ल (कृष्ण) पचमी का भी यही फल जानना ॥ २४ ॥ चैत कृष्ण पक्ष में यदि द्वितीया आदि चार दिन वर्षा युक्त पूर्व दिशा का वायु चले तो शुभ नहीं होता, किन्तु शुक्ल पक्ष में पूर्व और उत्तर का वायु चले तो बहुत शुभ होता है ॥२५॥ चैत्र शुक्ल पचमी के दिन दक्षिण और पूर्व का वायु चले और साथ वर्षा भी हो तो उस वर्ष भादों में धान्य के त्रिगुणित मूल्य हो याने धान्य बहुत

वृष्ट्या सह सदा सर्व (मास) धान्ये त्रिगुणमुत्तमा ॥२६॥
चैत्रे-मासेऽत्र बहुरूपस्तु दक्षिणानिलसंयुत: ।
गर्भो विद्युत्समा युक्ता वृष्टेर्गर्भहितावह: ॥२७॥
मूलमारभ्य याम्यान्तं समीरमत्र विलोकयेत् ।
यावद्दक्षिणतो वायुस्तावद्वृष्टिप्रदायक: ॥२८॥

वैशाखमास वायुविचार:—

शुक्ला कृष्णापि वैशाखेऽष्टमी यदा चतुर्दशी ।
तासु चेद्दक्षिणावातस्तदा मेघमहोदय: ॥२९॥
राधे शुक्लतृतीयायां चिह्नैर्निर्णीयतेऽनिल: ।
पूर्वस्या यदि वोदीच्या घनाघनस्तदा घन: ॥३०॥
दक्षिणो नैर्ऋतो वा वायुर्वृष्टे: स्यात् प्रतिघातक: ।
वारुणाद् वृष्टिरधिका परधान्यस्य राधनम् ॥३१॥
वैशाखशुक्लतुर्येऽह्नि सन्ध्यायामुत्तरानिल: ।

मांगे हो ॥ २६ ॥ चैत्र मास में अनेक प्रकार के दक्षिण दिशा का पवन चले और बिजली चमके तो वर्षा के गर्भ को हितकारक है ॥२७॥ चैत्र मास में मूल नक्षत्र से भरणी नक्षत्र तक पवन देखें जब तक दक्षिण दिशा का वायु चले तब तक चौमासे में उतनी वर्षा होती है ॥ २८ ॥

वैशाख मास में शुक्ल या कृष्ण पक्ष की अष्टमी या चतुर्दशी के दिन दक्षिण दिशा का वायु चले तो मेघ का उदय जानना ॥ २९ ॥ वैशाख शुक्ल तृतीया के दिन चिह्नों से वायु का निश्चय करें यदि पूर्व या उत्तर दिशा का प्रचुर वायु चले तो वर्षा हो ॥ ३० ॥ दक्षिण या नैर्ऋत्य दिशा का वायु चले तो वर्षा की रुकावट हो पश्चिम का वायु चले तो वर्षा अधिक और धान्य का रोध हो ॥ ३१ ॥ वैशाख शुक्ल चतुर्थी के दिन सन्ध्या के समय उत्तर दिशा का वायु चले तो सुभिक्ष करता है। पंचमी के दिन पूर्व

सुभिक्षायाथ पञ्चम्यामैन्द्रो धान्यमहर्घकृत ॥३२॥
उदयास्तगतो यावत् पूर्वोवायुर्यदा भवेत ।
सङ्ग्रहीयाञ्च धान्यानि प्रचुराणि सुलब्धये ॥३३॥
एव शुक्लदशम्यां चेत्तदापि धान्यसङ्ग्रहः ।
तथा देशेषु पूर्णायां वायुं सम्यग्विचारयेत् ॥३४॥
प्रातश्चतुर्घटीमध्ये पूर्वो वायुर्यदा भवेत ।
सूर्यार्द्रासङ्गमे चाद्यदिने मेघमहोदयः ॥३५॥
वृष्टिर्द्वितीयेऽपि वायुर्घटिके पूर्ववायुतः ।
ज्ञेया द्वितीये दिवसे आर्द्रातपनसङ्गमे ॥३६॥
आर्द्राया वासरा एव चातुर्घटिकसंख्यया।
ज्ञेयाः सर्वेऽपि सजला निर्जलास्तु विपर्यये ॥३७॥
पूर्णिमातः समारभ्य यावज्ज्येष्ठासिताष्टमी ।
एवमार्द्रादिसूर्यर्क्षनवके वृष्टिरुच्यते ॥३८॥

दिशा का वायु चले तो धान्य महँगा करता है ॥ ३२ ॥ सूर्य के उदय और अस्त के समय यदि पूर्व दिशा का वायु चले तो धान्य का सग्रह करना चाहिये, जिस से बहुत लाभ हो ॥ ३३ ॥ इसी तरह शुक्ल दशमी के दिन वायु चले तो भी धान्य का सग्रह करना । तथा वैशाख पूर्णिमा के दिन देशों मे वायु का अच्छी तरह से विचार करें ॥ ३४ ॥ यदि प्रात काल चार घड़ी मे प्रथम पूर्व का वायु चले तो सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र के साथ योग हो तब प्रथम दिन मेघ का उदय जानना याने वर्षा हो ॥ ३५ ॥ दूसरी चार घड़ी मे पूर्व का वायु चले तो आर्द्रा और सूर्य के योग के दूसरे दिन वर्षा हो ॥ ३६ ॥ इसी प्रकार चार चार घडी से आर्द्रा का प्रत्येक दिन जानना चाहिये । इस क्रम से वैशाख पूर्णिमा से लेकर ज्येष्ठ कृष्णा अष्टमी तक के नव दिन पूर्व का वायु चले तो सूर्य के आर्द्रा आदि नव नक्षत्रों में वर्षा होती है और विपरीत यान पूर्व के वायु से अतिरिक्त

सूर्यसौम्यसमायोगे वायुर्वारुणदिग्भवः ।
यदा शरत्सु विज्ञेया वायुर्धान्यमहाफलम् ॥३९॥
नवमासान् यदा पूर्वो वायुश्चरति भूतले ।
स्वातौ मौक्तिकतुल्यानि बहुधान्यादिमङ्गलम् ॥४०॥

ज्येष्ठमास वायुविचार –

ज्येष्ठमासे रविकरास्तपन्ति प्रचुरोऽनिलः ।
लुक्रसमन्विता वाति घनगर्भस्तदा शुभः ॥४१॥
ज्येष्ठमासेऽष्टमी कृष्णा तथा कृष्णचतुर्दशी ।
दक्षिणानिलसंयुक्ता परतो वृष्टिहेतवे ॥४२॥
ज्येष्ठस्य यदि पञ्चम्यां दक्षिणः पवनश्चरेत् ।
तदा तिलास्तथा तैलं घृतं क्रय्यं तदाश्विने ॥४३॥

यदुक्तं मेघमालायाम्—

ज्येष्ठस्य शुक्लपञ्चम्यां गर्जितं श्रूयते यदि ।

वायु चले तो नव नक्षत्रों में वर्षा नहीं होती है ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ सूर्य चन्द्रमा का योग के समय पश्चिम दिशा का वायु चले तो शरदऋतु में धान्य अधिक हो ॥ ३९ ॥ यदि नव महीने तक पूर्व का वायु चले तो स्वाति नक्षत्र में मोती से बहुत पानी हो धान्य भी बहुत और साक में मंगल हो ॥ ४० ॥

ज्येष्ठमास में सूर्य के किरण बहुत गरम और बहुत गरम वायु चले तो मेघ के गर्भ अच्छा होता है ॥ ४१ ॥ ज्येष्ठ मास में कृष्ण अष्टमी और चतुर्दशी के दिन दक्षिण दिशा का वायु चले तो आगे वर्षा अच्छी होती है ॥४२॥ ज्येष्ठ [illegible] पंचमी के दिन दक्षिण दिशा का वायु चले तो तिल तेल और घी सस्ता आश्विन महीने में भाव होता है ॥ ४३ ॥ मेघमाला में कहा है कि ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी

दक्षिणास्या भवेद्वायुरभ्रच्छन्नं यदा नभः ॥४४॥
धान्यानां तिलतैलानां सङ्ग्रहः क्रियते तदा ।
द्विगुणास्त्रिगुणा लाभः क्रमान्मासचतुष्टये ॥४५॥
सिताष्टम्यां ज्येष्ठमासे चतस्रो वायुधारणाः ।
मृदुवायुः शुभोवातः स्निग्धाभ्रः स्थगिताभ्रकः ॥४६॥
तत्रैव स्वात्याद्ये वृष्टे भचतुष्टये क्रमान्मासाः ।
श्रावणपूर्वा ज्ञेयाः परिश्रुता धारणास्ताः स्युः ॥४७॥
यदि ता एकरूपाः स्युः सुभिक्षं सुखकारिकाः ।
सान्तरा न शिवायैतास्तस्कराग्निभयप्रदाः ॥४८॥
ज्येष्ठस्य शुक्लैकादश्यां पूजां कृत्वा सुशोभनाम् ।
शुभं मण्डलकं कृत्वा पुष्पधूपैरलङ्कृतम् ॥ ४९ ॥
उच्चस्थाने प्रतिष्ठाप्य दीर्घदण्डे महाध्वजः ।

के दिन मेघ गर्जना हो, दक्षिण का वायु चले और आकाश बादलों से आच्छादित हो तो ॥ ४४ ॥ धान्य तिल तेल इनका संग्रह करना, चार महीने पीछे द्विगुणा त्रिगुणा लाभ होता है ॥४५ ॥ ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी के दिन चार प्रकार के वायु माने हैं—मृदुवायु, शुभवायु, स्निग्धाभ्र और स्थगिताभ्रक ॥४६ ॥ इनमें आदि और अन्त्य वायु से वृष्टि हो तो संसार को आनंद देने वाली है । ये चार प्रकार के वायु क्रमसे चले तो श्रावण आदि चार महीनों में क्रमसे वर्षा होती है ॥४७॥ यदि ये वायु सब मिले हुए चले तो सुभिक्ष और सुखकारक होते हैं, यदि पृथक पृथक चले तो अच्छा नहीं, चोर अग्नि का भय देने वाले होते है ॥ ४८ ॥ ज्येष्ठ महीने की शुक्ल एकादशी के दिन अच्छी तरह पूजा करके धुप दीप आदि से सुशोभित अच्छा मंडल करके ॥ ४९ ॥ एक बड़े लंबे दंड से बड़ी ध्वजा लगा कर उसको ऊँचे स्थान में रक्खें । इसी प्रकार यत्नपूर्वक

एवं कृत्वा प्रयत्नेन ज्ञापयेत् कालनिर्णयम् ॥ ५० ॥
एका वाता यदा वाति चतुर्दिनामानि चान्तर ।
तदा त्रिचतुरा मासान ध्रुव वर्षति वारिद ॥ ५१ ॥
विपरीतं यदा वाति यानि चिह्नानि वा पुन ।
तथास्य प्रावृषेण्य पयामूमर्षति क्षितौ ॥ ५२ ॥
प्रथम पश्चिमा वातश्चतुर्दिनानि वाति चेत् ।
अनावृष्टि विजानीयाद् दुर्भिक्ष रौरव तदा ॥ ५३ ॥
उत्तरा ह्ययमार्गेण चतस्रो हन्ति वा दिश ।
चत्वारो वार्षिका मासा मेघा वर्षन्ति भूतले ॥ ५४ ॥
विपरीता यदा वातश्चतस्रो हन्ति वा दिश ।
रविमार्गे परिभ्रष्टो जानीयात्तस्य लक्षणम् ॥ ५५ ॥
शीतकाले तदा वृष्टिस्तपाकाले न विद्यते ।
समयावैपरीत्ये च वृष्टि वर्षासु निर्दिशेत ॥ ५६ ॥
वायव्यां पश्चिमायां च नैर्ऋत्यां वाति च क्रमात् ।

काल के समय का निर्णय करें ॥ ५ ॥ यदि एकही उत्तर दिशा का वायु चार दिन तक चले तो तीन चार महिने मेघ अवश्य बरसें ॥ ५१ ॥ जो जो चिह्न है उनसे विपरीत वायु चले तो पृथ्वी पर चौमासे में उसी प्रकार वर्षा हो ॥ ५२ ॥ प्रथम चार दिन पश्चिम का वायु चले तो अनावृष्टि दुर्भिक्ष और महा दुःख जानना ॥ ५३ ॥ यदि उत्तर दिशा का वायु चारों ओर चले तो चौमासा के चार महीने पृथ्वी पर वर्षा बरसे ॥५४॥ इस में यदि विपरीत सब ओर का वायु चले तो उसका लक्षण रविमार्ग से परिभ्रष्ट जानना ॥५५॥ शीतकाल में वर्षा हो और वर्षाकाल में वर्षा न हो और इससे विपरीत हो तो वर्षाकाल में वर्षा हो ॥ ५६ ॥ वायव्य पश्चिम और नैर्ऋत्य दिशा का पवन क्रम से चले तो भादवा और आसोज

आषाढे श्रावणे क्षिप्रं द्वौ मासौ वृष्टिरुत्तमा ॥ ५७॥
पूर्वस्यां च तथेशान्यामाग्नेय्यां वाति च क्रमात् ।
भाद्रपदाश्विनौ च्छिद्रादाद्यन्ते वृष्टिरुत्तमा ॥ ५८॥
अमावास्यां च पूर्णायां ज्येष्ठमासे दिवानिशम् ।
मेघैराच्छादिते व्योम्नि वातो वहति वारुणः ॥ ५९॥
अनावृष्टिस्तदादेश्या क्वचिद्वृष्टिस्तु भाग्यतः ।
मासौ द्वौ श्रावणाषाढौ पूर्णौ भाद्रपदाश्विनौ ॥ ६०॥

आषाढमासे वायुविचार —

आषाढशुक्लपञ्चम्यां पश्चिमो यदि मारुतः ।
वर्षागर्जितसंयुक्तः शक्रचापेन भूषितः ॥ ६१॥
तदा संगृह्यते धान्यं कार्त्तिके तन्महर्घता ।
लाभाय जायते नूनं नान्यथा ऋषिभाषितम् ॥ ६२॥
आषाढशुक्लपक्षस्य द्वितीयायां न वर्षति ।

ये दो महिने में वर्षा उत्तम हो ॥ ५७ ॥ पूर्व ईशान और आग्नेय दिशा का क्रम से वायु चले तो भाद्रपद और आश्विन मास की आदि अंत में उत्तम वर्षा हो ॥ ५८ ॥ यदि ज्येष्ठ महिने की अमावास्या और पूर्णिमा के दिनरात आकाश बादलों से आच्छादित रहें और पश्चिम दिशा का वायु चले ॥ ५९ ॥ तो अनावृष्टि कहना, क्वचित ही भाग्ययोग से वर्षा हो श्रावण आषाढ भाद्रपद और आश्विन ये विना वर्से पूर्ण हो ॥ ६० ॥

आषाढ शुक्ल पंचमी के दिन पश्चिम दिशा का वायु चले, मेघ गर्जना के साथ वर्षा हो और इन्द्रधनुष का उदय हो ॥ ६१ ॥ तो धान्य का संग्रह करना अच्छा है, कारण कि कार्त्तिक मास में महँगा हो जाने से लाभ होगा, यह ऋषिभाषित कथन अन्यथा नहीं होता ॥ ६२ ॥ आषाढ शुक्ल द्वितीया के दिन वर्षा न हो और बादल हो तो श्रावण में निश्चय कर

यदि मेघस्तदा वृष्टिः श्रावणे जायते ध्रुवम् ॥ ६३ ॥
तृतीयायां पूर्ववायुः पूर्वगामी च वारिदः ।
घना मेघास्तदा भाद्रे वर्षन्ति विपुलं जलम् ॥ ६४॥
चतुर्थ्यां दक्षिणो वायुर्मेघः पूर्वे च गच्छति ।
आश्विने च तदा मासे वृष्टिर्भवति निश्चितम् ॥ ६५ ॥
वृष्टे दिनचतुष्केऽस्मिन् वात पूर्वोत्तरागत ।
अतिवृष्टिः सुभिक्षं च दुर्भिक्षं च तदन्यथा ॥ ६६ ॥
द्वादशीप्रतिपत्पूर्णामावास्यां मेन्महानिलः ।
वृष्टिर्व्योमाभ्रसंछन्नं तदा मेघमहोदयः ॥ ६७॥

आषाढपूर्णिमायां वायुविचार —

आषाढ्यां घटिकां षष्ट्या मासद्वादशनिर्णयः ।
पूर्णायां पञ्चकः पञ्चिमादद्योति विभाजनात् ॥ ६८ ॥
पञ्चनाडी भवेन्मास षष्ट्या वर्षस्य निर्णयः ।
सर्वरात्रं यदाभ्राणि वाता पूर्वोत्तरौ यदि ॥ ६९ ॥

के वर्षा होती है ॥ ६३ ॥ तृतीया के दिन पूर्व का वायु चले और पूर्व में ही बादल जाते हो तो भाद्रपद में बहुत वर्षा हो ॥ ६४ ॥ चतुर्थी के दिन दक्षिण का वायु चले और बादल पूर्व में जाते हो तो आश्विन मास में निश्चय कर के वर्षा होती है ॥ ६५ ॥ इस वर्षा के चार दिन पूर्व तथा उत्तर का वायु चले तो बहुत वर्षा और सुभिक्ष हो अन्यथा दुर्भिक्ष हो ॥ ६६ ॥ द्वादशी प्रतिपदा पूर्णिमा और अमावास्या के दिन बड़ा पवन चले वर्षा हो और आकाश बादलों से आच्छादित हो तो मेघ का उदय जानना ॥ ६७ ॥ आषाढ पूर्णिमा की साठ घड़ी पर से बारह महीने का निर्णय करें। पूर्णिमा की साठ घड़ी को बारह से भाग दें तो प्रत्येक पांच घड़ी आवे ॥ ६८ ॥ इस पांच घड़ी का एक मास इसी तरह वर्ष का निर्णय करें। सारी रात बादल रहें और पूर्व तथा उत्तर का वायु चले ॥६९॥ तो उस

तस्मिन् वर्षे कणाः पुष्टा भवन्ति भुवि मङ्गलम् ।
यदि वाताभ्रलेशः स्याद् वातौ पूर्वोत्तरौ नहि ॥७०॥
न वर्षति यदा देवो दुष्टकालं तदादिशेत् ।
यत्राभ्रे स्वल्पके जाते मध्ये वातेऽल्पवर्षणम् ॥७१॥
यत्र मासविभागे च निर्मलं दृश्यते नभः ।
तत्र हानिश्च वृष्टेश्च विज्ञेयं गर्भपातनम् ॥७२॥
यत्राभ्र पञ्चनाडीषु वातौ पूर्वोत्तरौ यदि ।
तत्र मासे भवेद्वृष्टिरित्येवं सर्वनिर्णय ॥७३॥
आषाढ्यां रात्रिकालेऽपि पवनः सर्वदिग्गतः ।
अभ्रैरवृष्टैरपि च पूर्णिमा सुखदायिनी ॥७४॥
आद्ये यामे यदाभ्राणि वातौ पूर्वोत्तरौ यदि ।
आद्ये मासे तदा वृष्टिर्वाञ्छितादधिका क्षितौ ॥७५॥
आषाढ्यां च विनष्टायां नूनं भवति निष्कणम् ।

वर्ष में धान्य बहुत पुष्ट हों और जगत में मंगल हो । यदि लेशमात्र भी पूर्व और उत्तर का वायु न चले ॥ ७० ॥ तो मेघ बरसे नहीं जिससे दुष्काल हो । जहा थोड़े बादल हो और मध्यम प्रकार से वायु चले तो थोड़ी वर्षा हो ॥ ७१ ॥ जिस मास विभाग में आकाश निर्मल दीखे, उस मास मे वर्षा की हानि और गर्भपात जानना ॥ ७२ ॥ जिस महीने की पाच घड़ी में बादल हो तथा पूर्व और उत्तर का वायु चले तो उस महीने में वर्षा हो । इसी तरह सब का निर्णय करें ॥ ७३ ॥ आषाढ पूर्णिमा को रात्री के समय सब दिशा का वायु चले और बादल भी हो किंतु वर्षा न हो तो सुखदायक है ॥ ७४ ॥ यदि पूर्णिमा को प्रथम प्रहर में बादल हो तथा पूर्व और उत्तर का वायु चले तो प्रथम मास मे पृथ्वी पर इच्छा से भी अधिक वर्षा हो ॥ ७५ ॥ यदि पूर्णिमा का क्षय हो तो धान्य की प्राप्ति न हो । ग्रहण भूकम्पादि आदि के उपद्रवों से पूर्णिमा का

प्रवण शुभपापार्थ्यं मत्यं नश्यति पूर्णिमा ॥७६॥
प्रथमा घटिका पञ्च आषाढ़ पञ्च श्रावण ।
पञ्च भाद्रपदा मासस्तथा पञ्चाश्विन पुन ॥७७॥
यत्राभ्राकुलनाडीषु वार्ता पूर्वोत्तरा स्फुटम् ।
तत्र मासे भवद्वृष्टिर्वायैरपि शुभै शुभा ॥७८॥
येषु मासेषु ये वृथा गर्भा पौषादिसम्भवा ।
तन्मासे पञ्चनाडीषु रात्रौ चन्द्राऽसितनिर्मल ॥७९॥
पौषादिसम्भवे गर्भे ध्रुवमुत्पातसम्भव ।
तदाषाढीदिवारात्री प्रेक्ष्या वृष्टिहेतवे ॥८०॥
यद्याषाढ्यामहाराभ्रमविषाणै शुभैयुतम् ।
तदा गर्भा शुभा ज्ञेया शीतकालेऽपि धीमता ॥८१॥
एकमेव दिनं प्रेक्ष्य वपञ्जानाय धीधनै ।

क्षय होता है ॥ ७६ ॥ पूर्णिमा की प्रथम पाच घड़ी आषाढ़ दूसरी पाच घड़ी श्रावण तीसरी पाच घड़ी भाद्रपद और चौथी पाच घड़ी आश्विन महीना समझना ॥ ७७ ॥ इन में जो घड़ी में बादल हो तथा पूर्व और उत्तर का वायु स्पष्टपना चले तो उस महीने में वर्षा होती है शुभ वायु चले तो शुभ जानना ॥ ७८ ॥ पौष आदि महीनों में उत्पन्न हुए गर्भ जिन महीनों में नष्ट हो उस महीने की पाच घड़ी में चन्द्रमा बहुत निर्मल रहे ॥ ७९ ॥ तो पौषादि मास में उत्पन्न हुए गर्भ में निश्चय कर के उत्पात होता है । इस लिये आषाढ़पूर्णिमा को वर्षा के लिये दिनरात देखना चाहिये ॥ ८० ॥ यदि आषाढ़ पूर्णिमा दिनरात बादल और अच्छे वायु से युक्त हो तो विद्वानों का शीत ऋतु में भी वर्षा के गर्भ शुभ जानना ॥ ८१ ॥ यह एक ही दिन वर्षा जानने के लिये बुद्धिमानों को देखना चाहिये । इस दिन आठों ही प्रहर बादल और शुभ वायु हो तो शुभ होता

अष्टयाम्यामशुभ-वातैर्वर्षं भवेच्छुभम् ॥८२॥
आषाढ्यां निर्मलश्चन्द्रः परिवेषयुतोऽथवा ।
तदा जगत्समुद्धर्त्तुं शक्रेणापि न शक्यते ॥८३॥
क्षुद्रतः षोडशे चाह्नि लक्षणं चिन्तयेदिदम् ।
अस्तं गच्छति तिग्मांशौ तस्माद्वर्षं शुभाशुभम् ॥८४॥
आषाढ्यां पूर्ववाते च सर्वधान्या मही भवेत् ।
आग्नेयवाते लोकाः स्युरस्थिशेषास्तु रोगतः ॥८५॥
दक्षिणे पवने राज्ञां महायुद्धं परस्परम् ।
नैर्ऋते निर्जला भूमिर्धान्यसङ्ग्रहकारणम् ॥८६॥
वारुणे प्रबला वृष्टिर्धान्यनिष्पत्तिहेतवे ।
वायव्ये मत्कुणास्तीडा मशकाद्यास्तथेतयः ॥८७॥
उत्तरे पवने लोका गीतमङ्गलपूरिताः ।

है ॥ ८२ ॥ आषाढ पूर्णिमा को चन्द्रमा निर्मल हो अथवा मंडल सहित हो तो जगत् का उद्धार करने के लिये इन्द्र भी शक्तिमान् नहीं होता ॥८३॥ आषाढ पूर्णिमा के दिन सूर्यास्त समय इन लक्षणों का विचार करें, जिस से शुभाशुभ वर्ष जान सकें ॥ ८४ ॥ सूर्यास्त समय पूर्व दिशा का वायु चले तो पृथ्वी सब प्रकार के धान्य वाली हो । आग्नेय कोण का वायु चले तो लोक रोग से अस्थिशेष हो जाय याने रोग अधिक चले ॥ ८५ ॥ दक्षिण का पवन चले तो राजाओं का परस्पर बड़ा युद्ध हो । नैर्ऋत्य कोण का वायु चले तो पृथ्वी जल रहित हो, इस लिये धान्य का संग्रह करना उचित है ॥ ८६ ॥ पश्चिम दिशा का वायु चले तो धान्य की प्राप्ति के लिये बहुत वर्षा हो । वायव्य कोण का वायु चले तो खटमल टीडी मच्छर आदि ईति का उपद्रव हो ॥ ८७ ॥ उत्तर दिशा का वायु चले तो लोगों में गीत मंगल अधिक हो और ईशान कोण का वायु चले तो सब

धान्यं घनं तथैशाने सुखं धान्यसमर्घता ॥८८॥
आषाढ़े घनशिखरे गर्जति यदि वाति वासरं पवनः ।
दशमे मासि तद्वार्नी भुवि मेघमहोदयं कुर्यात् ॥८९॥
सर्वे विनाषाढपूर्णा वार्ता पूर्वोत्तरा यदि ।
यत्र यामार्द्धके तत्र मासे वृष्टिरुठाक्रमेत् ॥९०॥
न चेत्पूर्वोत्तरा वाता न वाभ्रं नापि वर्षणम् ।
आषाढ्यां तर्हि विज्ञेयं दुर्भिक्षं लोकदुःखदम् ॥९१॥

मार्गशीर्षमास वायुविचारः—

मार्गमासे सिताष्टम्यां पूर्वो वातः सुभिक्षकृत् ।
अन्यदिक्पवनः कुर्याद् दुर्भिक्षं भावि वत्सरे ॥९२॥

पौषमास वायुविचार —

एकादश्यां पौषकृष्णे दक्षिणः पवनो यदा ।
विद्युदार्दलसंयुक्तस्तदा दुर्भिक्षकारकः ॥९३॥
पौषस्य शुक्लपञ्चम्यां तुषारः पवनो यदि ।

धान्य और सुखप्राप्ति हो तथा धान्य सस्ते हों ॥ ८८ ॥ आषाढ़ महीने में मेघगर्जना हो और उत्तर दिशा का वायु चले तो दशवें दिन पृथ्वी पर मेघ का उदय जानना ॥ ८९ ॥ आषाढ़ पूर्णिमा को जिस पहरार्द्ध में समस्त न हो किन्तु पूर्व और उत्तर का वायु चले तो उस महीना में वर्षा कथित होती है ॥ ९० ॥ यदि पूर्णिमा को बादल न हो और पूर्व उत्तर का वायु भी न हो तो लोकको दुःखदायक ऐसा दुर्भिक्ष होता है ॥९१॥

मार्गशिर शुक्ल अष्टमी के दिन पूर्व दिशा का वायु चले तो सुभिक्ष करता है और दूसरी दिशा का वायु चले तो आगामी वर्ष में दुर्भिक्ष करता है ॥ ९२ ॥

पौष कृष्ण एकादशी को दक्षिण दिशा का वायु चले और बिजली बादल हो तो दुर्भिक्ष कारक जानना ॥ ९३ ॥ पौष शुक्ल पञ्चमी को

तदा गर्भस्य पिण्डः स्याद्वाचिवर्षहितावहः ॥ ९४ ॥
पञ्चम्यां व्योमखण्डेऽपि यदाभ्रं शीतलोऽनिलः ।
विद्युन्मेघसमायुक्तस्तदा गर्भोदयो ध्रुवम् ॥ ९५ ॥

माघमासे वायुविचार —

माघे शुक्लप्रतिपदि वायुर्वार्दलसंयुतः ।
तैलादिसर्वसुरभि महर्घं जायते भुवि ॥ ९६ ॥
माघस्य शुक्लपञ्चम्यां वृष्टियुक्तोत्तरानिलः ।
अनावृष्टिर्भाद्रपदे कुर्याद्धान्यमहर्घता ॥ ९७ ॥
शुक्ले माघस्य सप्तम्यां वारुण्यां विद्युदभ्रयुक् ।
ऐन्द्रो वातोऽथ कौबेरो दिवानिशं सुभिक्षकृत् ॥ ९८ ॥
माघस्य नवमी कृष्णा दशम्येकादशी तथा ।
सवाता विद्युता युक्ताः कथयन्ति जलं बहु ॥ ९९ ॥
अमावास्यामहोरात्रं हिमो वातस्तु वृष्टियुक् ।
पौर्णमास्यां भाद्रपदे कुर्यान्मेघमहोदयम् ॥ १०० ॥

तुषार युक्त वायु चले तो गर्भ का पिंड अगला वर्ष को हित कारक होता है ॥ ९४ ॥ पचमी क दिन आकाश में बादल हो, शीत वायु चले, बिजली चमके और वर्षा हो तो निश्चय से गर्भ का उदय जानना ॥ ९५ ॥

माघ शुक्ल प्रतिपदा के दिन वायु और बादल हो तो तैल आदि सुगंधित वस्तु पृथ्वी पर महँगी हो ॥ ९६ ॥ माघ शुक्ल पचमी को वर्षा युक्त उत्तर दिशा का वायु चले तो भाद्रपद में वर्षा न हो और धान्य महँगे हों ॥ ९७ ॥ माघ शुक्ल सप्तमी को पश्चिम दिशा में बिजली चमके और बादल हो तथा पूर्व और उत्तर दिशा का वायु दिन रात चले तो सुभिक्ष कारक होता है ॥ ९८ ॥ माघ कृष्णा नवमी दशमी तथा एकादशी के दिन वायु चले और बिजली चमके तो बहुत वर्षा हो ॥ ९९ ॥ अमावास्या को दिनरात वर्षा युक्त शीतल वायु चले तो भाद्रपद की पूर्णिमा के दिन महा वर्षा होती है ॥ १०० ॥

फाल्गुनमासे वायुविचारः—

फाल्गुनेऽतिस्वरा वायुर्याति पत्राणि पातयन् ।
दक्षिणाऽतिमृदुश्चैत्रे मेघगर्भहिताय सः ॥१०१॥
हुताशान्या दीप्तिकाले पूर्वः स्यादतिवृष्टये ।
औदीच्या धान्यनिष्पत्त्यै दुर्भिक्षं दक्षिणाऽनिलः ॥१०२॥
वारुणा मध्यमं वर्षमूर्ध्वाना भयङ्करः ।
चतुर्दिक्षु महावाते राज्ञां युद्धं प्रजाक्षयः ॥१०३॥

श्रीहीरविजयसूरिकृतमेघमालायां प्राकृतम्—

रजउच्छववम्मि धाणा उत्तरा वहइ धन्ननिप्फत्ती ।
पुव्वाई नीरबहुला पच्छिमवाएण करवरय ॥१०४॥
दक्खिणया वाय दुकाला अहवा वज्जेइ चाउ चउदिसा ।
तह लोय उवद्दवणं जुज्झइ राया खओ लोए ॥१०५॥

यदि फाल्गुन मास में बहुत तीक्ष्ण वायु चल कर वृक्षों के पत्र गिरावें और चैत्र मास में दक्षिण दिशा का बहुत मृदु वायु चले तो मेघ के गर्भ का हित कारक है ॥ १०१ ॥ फाल्गुन पूर्णिमा को होली जलाने के समय पूर्व का वायु चले तो बहुत वर्षा हो । उत्तर का वायु चले तो धान्य की प्राप्ति और दक्षिण का वायु चले तो दुर्भिक्ष हो ॥ १०२ ॥ पश्चिम दिशा का वायु चले तो वर्ष मध्यम रहे ऊर्ध्व वायु चले तो भय नायक और चारों ही दिशा का महावायु चले तो राजाओं का युद्ध और प्रजा का विनाश हो ॥ १०३ ॥ श्रीहीरविजयसूरिकृत मेघमाला में कहा है कि— रज उत्सव (होली) के दिन उत्तर दिशा का वायु चले तो धान्य प्राप्ति अच्छी हो। पूर्व दिशा का वायु चले तो बहुत वर्षा हो पश्चिम का वायु चले तो करबरा (कहीं थोड़ी वर्षा कहीं वर्षा नहीं) करे ॥ १०४ ॥ दक्षिण का वायु चले तो दुष्काल हो यदि चारों ही दिशा का वायु चले तो लोक में उपद्रव राजाओं का युद्ध और प्रजा का क्षय हो ॥ १०५ ॥ कोई ऐसा भी कहते

कश्चित्तु-पूर्ववाते नीडशुका मत्कुणा मूषकादयः ।
वारुणे तु युगन्धर्या निष्पत्तिर्बहुला भुवि ॥१०६॥

चैत्रमासे वायुविचार —

चैत्रस्य शुक्लपक्षे चेच्चतुर्थी पञ्चमीदिने ।
वर्षेण प्राक्शुभं किञ्चित् क्रमादुत्तरतोऽनिलः ॥१०७॥
बार्दलाच्छादितं व्योम एतल्लक्षणदर्शने ।
गोधूमैः श्रावणे मासे त्रिगुणं लाभमादिशेत् ॥१०८॥
इत्येवं ज्ञापको वातः संक्षेपेण समीरितः ।
ग्रन्थान्तराद्विशेषोऽपि विज्ञेयः प्राज्ञपुङ्गवैः ॥१०९॥
ज्ञापकोऽपि स्थापकः स्याद् वृष्टेरुत्पादकोऽपि स ।
कश्चिज्जघन्यगर्भेण सद्यो वृष्टिविधानतः ॥११०॥

यदुक्तं श्रीभगवत्यङ्गे २शतके ५उद्देशके—"उदगगब्भे णं भंते ! उदगगब्भेत्ति कालओ केयच्चिरं होई ? गोयमा !

है कि पूर्व का वायु से नीडा शुक खटमल और चूहे आदि का उपद्रव हो और पश्चिम दिशा का वायु से युगन्धरी (ज्वार) की प्राप्ति पृथ्वी पर बहुत हो ॥ १०६ ॥

चैत्र शुक्ल चतुर्थी और पंचमी के दिन कुछ वर्षा हो और क्रम से उत्तर दिशा का वायु चले ॥ १०७ ॥ तथा आकाश बादलों से आच्छादित हो, ऐसे लक्षण देख पड़े तो गेहूँ से श्रावण महीने में त्रिगुणा लाभ हो ॥ १०८ ॥

इस प्रकार ज्ञापक वायु का सक्षेप में वर्णन किया, और विशेष जानना हो तो दूसरे ग्रन्थों से विद्वान् लोग जान सकते हैं ॥१०९॥ ज्ञापक वायु वृष्टि का उत्पादक होने पर भी स्थापक वायु हो जाता है वह कहीं कहीं जघन्य गर्भ से शीघ्र ही वर्षा का कारण हो जाता है ॥ ११० ॥

भगवती सूत्र शतक दूसरा उद्देशा पाचवा में कहा है कि— ह

जघन्येनं गर्भं समयं उत्कृष्टेनं षण्मासा'' इति। उदकगर्भं कालान्तरेण जलप्रवर्षणहेतुं पुद्गलपरिणामं तस्य चावस्थानं जघन्यतः समयं समयान्तरमेव प्रवर्षणात्, उत्कृष्टतस्तु षण्मासाः, षण्मासानामुपरि वर्षणात्। एतेन प्रागुक्ता मस्ते हवाता' पथ्या वनस्पत्यादिहिता वायव इति सविस्तरं व्याख्यातम्।

इति कतिपयवातजातगर्भसम्भवान्-
जलधरजलवर्षा रम्यवर्षासिहेतु।
प्रथित इह जिनानामागमेषु द्वितीय',
कथित उचितवृत्त्या मेघमालाव्यय॥ १११॥

इति श्रीमेघमहोदये वर्षप्रबोधापरनाम्नि महोपाध्याय
श्रीमेघविजयगणिविरचिते द्वितीयो वाताधिकारः।

भगवन्! उदक गर्भ की स्थिति कितने समय की है? उत्तर—हे गौतम! जघन्य से एक समय और उत्कृष्ट से छः महीने की स्थिति है॥

इसी तरह गर्भ को उत्पन्न करने वाले अच्छे २ कितनेक वायुओं से मेघ का पानी बरसना अच्छा वर्ष होने के हेतु हैं। जिनेश्वरों के आगमों में प्रसिद्ध ऐसा दूसरा अधिकार इस ग्रंथ में मेघमाला का उदय के लिये उचित वृत्ति से कहा गया है॥ १११॥

श्रीसौराष्ट्रराष्ट्रान्तर्गत-पादलिप्तपुरनिवासिना पण्डितभगवानदासाख्य
जैनेन विरचितया मेघमहोदय बालावबोधिन्याऽऽर्यभाषया टीकितो
द्वितीयो वाताधिकारः।



अथ देवाधिकारः ।

देवः सदाभ्युदयतां रसमम्पदेव,
श्रीमान्महेन्द्रमहितप्रभुमारुदेवः ।
पुन्नागराजदितिजैः कृतसन्निधानाद्
वामेय एव भगवान् विलसन् महोभिः ॥ १ ॥
परिणामोऽम्बुदादीनां प्रयोगाद् वा स्वभावतः ।
द्विविधश्चागमे प्रोक्तः श्रीवीरेणार्हता स्वयम् ॥ २ ॥
आद्यो मेघकुमारादेरिवान्यः स्वीयकारणात् ।
तथापि प्रतिबोद्धारस्तत्र देवा विराधिताः ॥ ३ ॥
तेन वर्षा विना सर्वेऽप्याराध्यास्त्रिदिवौकसः ।
विशेषाद् वज्रभृत्पाशी नागा भूताश्च गुह्यकाः ॥ ४ ॥
यदुक्तं श्रीभगवत्यङ्गे तृतीयशतके सप्तमोद्देशके—

जैसे मेघ रससम्पत्ति से उदय को प्राप्त होता है, वैसे महेन्द्रों से पूजित श्री आदिनाथप्रभु तथा नरेन्द्र नागेन्द्र और असुरों ने जिनका सनिधान किया है ऐसे और महान् तेज से शोभायमान है ऐसे पार्श्वनाथ प्रभु सर्वदा अभ्युदय को प्राप्त हों ॥१॥ वर्षा आदि का परिणाम (भाव) प्रयोग से या स्वभाव से ये दो प्रकार के हैं, ऐसा श्री महावीर जिनने स्वय आगम में कहा है ॥२॥ वर्षा का पहला कारण मेघकुमार आदि देवताओं के प्रयोग से होता है और दूसरा स्वाभाविक है । दूसरा स्वाभाविक है तो भी उसको विराधित देव रोकने वाले हैं ॥ ३ ॥ इस लिये यदि वर्षा न हो तो सब देवों का पूजन करना श्रेय है । विशेष करके वज्र को धारन करने वाले इन्द्र, पाश को धारन करने वाले वरुण, नागकुमार भूत और यक्ष आदि देवों का पूजन करना चाहिये ॥ ४ ॥

मक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णा वरुणस्स महारण्णा इमे देवा आणावयणनिद्देसे चिट्ठन्ति, तं जहा–वरुणकाइआइ वा, वरुणदेवकाइआइ वा, नागकुमारा, नागकुमारीओ, उदहिकुमारा उदहिकुमारीओ, थणिअकुमारा थणिअकुमारीओ, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिआ, तप्पक्खिया, तब्भारिया, सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णा वरुणस्स महारण्णा आणा उववाय-वयण निद्देसे चिट्ठन्ति जम्बुद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति, तं जहा अइवासाइ वा, मंदवासाइ वा, सुवुट्ठीइ वा, दुवुट्ठीइ वा, उदब्भेइ वा, उदप्पीलाइ वा, उव्वाहाइ वा, पव्वाहाइ वा, गामवाहाइ वा जावसन्निवेसवाहाइ वा, पाणक्खया, जणक्खया, धणक्खया कुलक्खया, वसणब्भूया अणारिया जे यावण्णे तहप्पगारा या ते सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो, वरुणस्स महारण्णो,

शक्र देवेन्द्र देवराज वरुण महाराज की आज्ञा में ये देव रहने वाले हैं वरुणकायिक वरुणदेवकायिक, नागकुमार नागकुमारियाँ उदधि कुमार उदधिकुमारियाँ स्तनितकुमार स्तनितकुमारियाँ और दूसर भी उस प्रकार के देव ये सब उस वरुणदेवेन्द्र की भक्तिवाले उन के पक्ष वाले और उन के ताबे में रहने वाले हैं। ये सब देव वरुण की आज्ञा में उपपात से वचन से और निर्देश में रहते हैं। जम्बुद्वीप नाम के द्वीप में मेरु पर्वत की दक्षिण तरफ उत्पन्न होने वाले अतिवृष्टि मन्दवृष्टि सु वृष्टि, दुर्वृष्टि, उदकोद्भव (पहाड आदि में से पानी की उत्पत्ति) उदकोत्पील (तलाव आदि में पानी का समूह) अपवाह (पानी का थोडा चलना) पानी का प्रवाह ग्राम विनाश यावत् सन्निवेश का विनाश प्राणक्षय जनक्षय धनक्षय कुलक्षय व्यसनभूत अनार्य (पाप रूप) और इस प्रकार के दूसरे सब भी शक्र देवेन्द्र देवराज वरुण महाराज से अनजान नहीं

अन्नाया अदिट्ठा असुया अविण्णाया तेसिं वा वरुणाकाइयाणं देवाणं इति।

नन्वेवमेतेषां देवानां वृष्टिज्ञातृत्वमेव न तु तत्कर्त्तृत्वमिति. किमेषामाराधनेनेति चेद् देवासुरनागानां तु कर्त्तृत्वं साक्षादागमे श्रूयते यदुक्तं तत्रैव षष्ठे शतके पञ्चमोद्देशके—

"अत्थि णं भंते! किं देवो पकरेइ, असुरो पकरेइ, णागो पकरेइ? गोयमा! देवो वि पकरेइ असुरो वि पकरेइ, णागो वि पकरेइ" इति। एवं जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यां मेघप्रमुखनागकुमारकृता वृष्टिः। ज्ञाताङ्गे सौधर्मदेवकृता वृष्टिः। राजप्रश्नीयोपाङ्गे समवसरणरचनार्थं देवकृता वृष्टिरप्युदाहर्त्तव्या। भगवतः श्रीवर्द्धमानस्य तिलस्तम्बो निष्पत्स्यतीति वचःसिद्ध्यर्थं, यथा सन्निहितव्यन्तरैः कृता वृष्टिः पञ्चमाङ्गेऽपि सूत्रे पठिता। उत्तराध्ययनेऽपि हरिकेशीये—"तहियं गन्धोदयपुप्फवासं,

---

है, नहीं देखे हुए नहीं है, नहीं सुने हुए नहीं है, और अविज्ञात नहीं हैं अर्थात् ये सब वरुणकाइक देवों से अज्ञात नहीं है॥

इस तरह इन देवों को तो वृष्टि जानने वाले बतलाये, किन्तु वृष्टि करने वाले नहीं बतलाये तो उनकी आराधना करने से क्या? साक्षात आगम में कहा है कि देव असुर और नागकुमार ये वृष्टि करने वाले हैं। भगवतीसूत्र का छठा शतक का पांचवा उद्देशा में कहा है कि — हे भगवन्! तमस्काय में उदार-बडा-मेघ सम्वेद पाते हैं। समूर्च्छे हैं? और वर्षण वर्षे हैं? हे गौतम! हां ऐसा है। हे भगवन्! क्या उसको देव करते हैं? असुर करते हैं? या नागकुमार करते हैं? हे गौतम! देव भी करते हैं, असुर भी करते हैं और नागकुमार भी करते हैं। इस तरह जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति सूत्र में मेघकुमार आदि नागकुमारदेवों से की हुई वृष्टि का वर्णन है। ज्ञाताधर्मकथासूत्र में सौधर्मदेवसे की हुई

दिव्वा तहिं वसुहारा य वुट्ठा । पहयाओ दुन्दुहीओ सुरेहिं, आगासे अहो दाणं च घुट्ठं" । अत्र देवाद्युपलक्षणाद् याग लब्धिमहातपःकृतापि वृष्टिः प्रयोगजन्या मन्तव्या, प्रतीयते चामी श्रीमद्भागवते पञ्चमस्कन्धे तुर्याध्याये 'यस्य हीन्द्रः स्पर्द्धमानो भगवद्वर्षे न ववर्ष, तदवधार्य भगवान् ऋषभदेव योगेश्वरः प्रहस्यात्मयोगमायया स्ववर्षमजनाभं नामाभ्यवर्षीत्' तस्य वर्षे मण्डले इत्यर्थः । एवं च लौकिकलोकोत्तर शास्त्राविरुद्धं वृथा किं कुर्वन्ति ? यागमन्त्रादिप्रभावात् किं स्यात् ? सर्वं स्वकर्मकृत्यमित्यादि मूढवचो न प्रमाणीकार्यमित्यलं विस्तरेण ।

वृष्टि का वर्णन है । राजप्रश्नीयसूत्र में समवसरण की रचना के लिये देवों द्वारा की हुई वृष्टि का वर्णन है । एक समय भगवान् श्री महावीर स्वामी विहार कर रहे थे तब रास्ता में एक तिल का पौधा (झाड़) देख कर गोशाला ने पूछा कि यह उगेगा या नहीं ? तब भगवान् की सेवा में रहा हुआ सिद्धार्थ व्यन्तर बोला कि यह उत्पन्न होगा और इसमें तिल भी उत्पन्न होंगे उसका यह वचन मिथ्या करने के लिये गोशाला ने उस पौधे को उखाड़ डाला उस समय व्यन्तरों ने वहां जल वृष्टि की जिस से उसकी जड़ कीचड़ में घुस जाने से तिल उत्पन्न हुआ। इत्यादि वर्णन पञ्चमांगसूत्र में है । उत्तराध्ययनसूत्र के हरिकेशीय अध्ययन में कहा है कि —देवों ने सुगंधी जल पुष्प और वसुधारा की वृष्टि की और आकाश में दुंदुभी का नाद करके अहोदानं ! अहोदानं ! ऐसी उद्घोषणा की । यहां देवादि उपलक्षण से योगक लब्धिके और महान् तपके प्रभाव से भी वृष्टि होती है इसलिये वृष्टि प्रयोगजन्य मानना प्रतीत होता है। भागवत के पंचम स्कंध के चौथे अध्ययन में कहा है कि —भगवान् ऋषभदेव से स्पर्द्धा करके इन्द्र ने वर्षा न बरसाई तब ऋषभदेव भगवान् ने

नस्मान्नास्तिकमतं त्यक्त्वा प्रतिपद्याऽऽस्तिकागमम् ।
देवताराधने यत्न: कार्य: सम्यग्दृशां त्वरां ! ॥ ५ ॥
रेवतीगर्भसंयोगे वसन्ते समुदोत्सवे ।
महोत्सवाज्जिनस्नात्र पुण्यपात्र विधीयते ॥ ६ ॥
प्रकारै: सप्तदशभिर्वाद्यनिर्घोषपूर्वकै: ।
गौरीणां गाननृत्याद्यैर्विधेयं जिनपूजनम् ॥ ७ ॥
दशदिक्पालपूजा च तथा नवग्रहार्चनम् ।
जलयात्रा जनै: कार्या रात्रिजागरण तथा ॥ ८ ॥
यावत्तोष्णांशुना भोगे पौष्णस्य क्रियते दिवि ।
तावद्दिनेषु जिनार्चा स्याद् वृष्टे: पुष्टये भुवि ॥ ९ ॥
अवग्रहेऽप्यसौ रीति: कर्त्तव्या देवतुष्टये ।

नपन आत्मयोग वश से वर्षा का अपना मननाम नाम यथार्थ किया । इस तरह लौकिक लाकात्त शास्त्र विरुद्ध वच क्या करते है ? याग-मत्र आदि के प्रभाव से क्या होता है ? सब अपने कर्म से होता है इत्यादि मूढ़ जनो का वचन प्रामाणिक नहीं मानना चाहिये । इत्यादि विशेष विस्तार करने से क्या ? ।

हे सम्यग्दृष्टि जनो ! उस नास्तिकमत को छोड़कर और आस्तिक मत को स्वीकार कर देवता के आराधन मे यत्न करना चाहिये ॥ ५ ॥ रेवती नक्षत्र पर सूर्य आने से वसन्तऋतु मे बड़े महोत्सव के साथ पुण्य पात्र ऐसा जिनस्नात्र करना चाहिये ॥ ६ ॥ सत्रहभेदी पूजा गाजे वाजे के साथ और सन्नारियों के गीत नृत्यादि से जिनेश्वर का पूजन करना चाहिये ॥ ७ ॥ साथ मे दश दिक्पालों की और नव ग्रहों की भी पूजा करना और जलयात्रा तथा रात्रिजागरण भी करना चाहिये ॥ ८ ॥ जितने दिन आकाश में रेवती नक्षत्र का भोग सूर्य के साथ हो उतने दिन जिनार्चन करना ये जगत मे वृष्टि की पुष्टि के लिये है ॥ ९ ॥ वृष्टि रुक गई हो तो—

नैवेद्यपूजा भूतानां बलिः कार्योऽन्त्यवासर ॥ १० ॥
जिनेन्द्रे पूजिते सर्वे देवाः स्युस्तु वि पूजिताः ।
यस्माद् भागवती शक्तिः सर्वदेवव्यवस्थिता ॥ ११ ॥
विष्णुपनभिया केचिद् वैष्णवः शाङ्कराऽथवा ।
न करोति जिनार्चां चेत् तेन पूज्याः स्वदेवताः ॥ १२ ॥
वैष्णवा जलगण्डूषां मूर्ति पूजयत हर ।
शाङ्करा गङ्गया युक्तां हरमूर्ति घटान्विताम् ॥ १३ ॥
यवनाऽपि महोशार्मि पराऽपि स्वस्वदेवताम् ।
पश्चिमायां जलस्थाने पूजयेत् तुष्टिपुष्टये ॥ १४ ॥
सम्पूज्य भाग निमाय जपः सूर्यस्य सन्मुखे ।
विधेयध्यानपे स्थित्वा शनैः स्वस्वगुरूदित ॥ १५ ॥
क्षुद्रैः कृता औषधिमा क्षुद्रदेवस्य तुष्टये ।

औ नैवेद्य पूजा भादि यही गीति त्यों का संग्रह करने के लिए करना और अन्तिम दिन भूतों का बाकुल देना ॥ १० ॥ एक जिनन्द्रदेव का पूजने से समस्त देव जगत् में पूजित हो जाते हैं क्योंकि भागवती शक्ति सब देवों में रही हुई है ॥ ११ ॥ पक्षपातबुद्धि से कोई विष्णुमत वाले या शिवमत वाले जिन पूजा न करें तो उन्हें अपने २ देवों को पूजना चाहिये ॥ १२ ॥ वैष्णव जलगण्डूषा वाली विष्णु की मूर्ति को पूजें और शिवमत वाले गंगा युक्त पानी के घड़ा वाली शिवमूर्ति को पूजें ॥ १३ ॥ यवन लोग मसजिद को पूजें और दूसरे लोग अपने २ देवताओं को पश्चिमदिशा में जल स्थान पर तुष्टि के लिये पूजें ॥ १४ ॥ अच्छी तरह भक्ति से पूजन कर नैवेद्य चढ़ा कर सूर्य के संमुख ध्यान में रह कर अपने २ गुरु से कही हुई विधिपूर्वक जाप जपे ॥ १५ ॥ क्षुद्र जन क्षुद्र देवता की तुष्टि के लिये जीवहिंसा करते हैं उनसे कथंचित् देवताओं की प्रसन्नता से ही तुष्टि होती है ॥

नथापि क्रियते वृष्टिः क्वचिद्दैवानुकूल्यतः ॥ १६ ॥
शिष्टैर्न साऽनुमन्तव्या पन्था नाद्रियतेऽपि सः ।
यतः पवित्रा देवेन्द्र-प्रमुखा वृष्टिनायकाः ॥ १७ ॥
हिंसया ते न तुष्यन्ति प्रीयन्ते ते हि पूजया ।
नैवेद्यैर्विविधैर्धूप-गन्धैः स्तोत्रैर्जपैस्तथा ॥ १८ ॥
येऽनभिज्ञा जपार्चासु कृषिकर्मादितत्पराः ।
तैरप्यातपसंस्थानैः कार्यं त्रैरात्रिकं व्रतम् ॥ १९ ॥
चतुर्विद्युत्कुमारीणां माघाऽसिताद्यवासरे ।
द्विसाहस्री जपः कार्य-स्तासां सन्तुष्टये बुधैः ॥ २० ॥
माघशुक्लचतुर्थ्यां तु नागा उदधयस्तथा ।
स्तनिता भवनाधीशा आराध्या जपकर्मभिः ॥ २१ ॥
प्रत्येकं तु द्विसाहस्री गणन प्रतिवत्सरम् ।
विधेयं प्रीतये तेषां तद्देवीनां तथैव च ॥ २२ ॥

१६॥ यह जीवहिंसादि की विधि सज्जनों को माननीय नहीं है कारण यह राक्षसी मार्ग है, जिस से अनादरणीय है। वृष्टि के नायक तो पवित्र देवेन्द्र आदि देव ही हैं ॥१७॥ ये हिंसा से संतुष्ट नहीं होते हैं मगर पूजन से अनेक प्रकार के नैवेद्य से, धूप से, सुगंधित द्रव्यों से, स्तुति करने से और उन का ध्यान करने से ही संतुष्ट होते हैं ॥१८॥ जो खेती कार (किसान) आदि लोग ध्यान-पूजन में अनजान हैं, वे सूर्यसमुख बैठ कर त्रैरात्रिक व्रत (तीन उपवास) करें ॥१९॥ सुज्ञ जन चतुर्विध विद्युत्कुमारियों को संतुष्ट करने के लिये माघ कृष्णा प्रति पदा के दिन दो हजार जाप करें ॥ २०॥ माघ शुक्ल चतुर्थी के दिन नागकुमार, उदधि कुमार स्तनितकुमार, और भुवनपति देवों की आराधना जप कर्म से करें ॥२१॥ प्रत्येक वर्ष उन प्रत्येक देवों का दो हजार जाप उन को संतुष्ट करने के लिये जपे। इसी तरह उन की देवियों का भी जाप करना ॥२२॥ ऊपर मूल में लिखा हुआ

ॐ ह्रीं नमो भूर्त्तये मेघकुमाराणां ॐ ह्रीं श्री नमो दुर्त्तये मेघकुमारिकाणां वृष्टिं कुरु कुरु सर्वापद् स्वाहा । ॐ ह्रीं मेघकुमार आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।

एवं नामानि सर्वेषां जप्यानि वृष्टिहेतवे ।
जपात् सन्तर्पिताः सर्वे देवा वृष्टिविधायिनः ॥ २३ ॥
ये ग्रामदेवता दिव्या नागा भूताश्च गुह्यकाः ।
ये चान्ये भगवत्याद्या-स्तान् नैवाशातयेद् बुधः ॥ २४ ॥
जिनार्चान्ते क्षेत्रदेवी कायोत्सर्गोऽविधानतः ।
सम्यग्दृशामपि स्मार्या एवं भुवनदेवता ॥ २५ ॥

अथ देवाधिकार मेघमंत्रोद्धार —

प्रथम नवकाष्टकयन्त्र मालिककार्य कृत्वा तत्र मध्यकाष्टके बाणपीठे ब्रह्मरूपं 'ऐं' विन्यस्य परितः 'नमो अरिहंताय' इति लेख्यम । ततः दक्षिणकोष्टके 'ह्रीं' इति शिवशः शिरपीठे महेश्वररूपं तद्धाऽपि 'अमला' इतिइन्द्राणीनाम लेख्यम्। ततो नैर्ऋतकाष्टके 'अप्सरा' इति, पश्चिमकोष्टके 'शुचिमेघा' इति, वायव्ये 'नवमिका' इति, उत्तरकाष्टके 'ह्रीं' इति विष्णुपीठे तद्धा 'रोहिणी' इति, ऐशानकाष्टके 'शिवा' इति, पूर्वस्यां 'पद्मा' इति, आग्नेयकाष्टके 'अंजू'

बाद विधि पूर्वक मंत्र। उसी तरह मत्र देवों के नाम का जाप वृष्टि के लिये जप। उनका ध्यान करने से सब देवता संतुष्ट हो कर वृष्टि के करने वाले होते हैं ॥२३॥ बुद्धिमान जन ग्रामदेवता दिव्य देवता नागदेवता भूत देवता और यक्ष आदि देवों की और भगवती आदि देवियों की आशातना नहीं करें ॥२४॥ सम्यग्दृष्टि जना को भी जिनपूजा के पूजन के बाद कायोत्सर्ग से रही हुई क्षेत्रदेवी का और भुवन देवी का विधिपूर्वक स्मरण करना चाहिए ॥२५॥

इति, एता अष्टौ इन्द्राग्रमहिष्यः । ततः स्वस्तिके पूर्वभागे 'नमो सिद्धाणं' दक्षिणस्यां 'नमो आयरियाण' पश्चिमायां 'नमो उवज्झायाणं' उत्तरस्यां 'नमो लो॰ सव्वसाहूणं' इति पञ्चपदानि लेख्यानि । स्वस्तिकान्तराले अग्निकोणे 'आवर्त्तः' १, नैर्ऋतौ 'व्यावर्त्तः' २, वायव्ये 'नन्दावर्त्तः' ३, ईशाने 'महानन्दावर्त्तः' ४, तदुपरि अग्नौ 'चित्रकनकायै नमः' १, नैर्ऋते 'शतहृदायै नमः' २, वायव्ये 'सौदामिन्यै नमः' ३, ईशाने 'चित्रायै नमः' ४ इति चतस्रो विद्युत्कुमारिका महत्तराः । ततः स्वस्तिकपूर्ववलनकोष्ठके 'सोमाय नमः' तदग्रे 'अ आ अं अः' ततो द्वितीयवलनकोष्ठके 'द्रोण' तदुपरितनकोष्ठके 'ओँ' इति । ततो दक्षिणवलने 'यमाय नमः' तदग्रे 'इ ई उ ऊ' ततो द्वितीयवलनकोष्ठके 'आवर्त्तः' तदुपरितनकोष्ठके 'क्रों' इति । ततः पश्चिमवलने 'वरुणाय नमः' तदग्रे 'ऋ ॠ ऌ ॡ' ततो द्वितीयवलनके 'पुष्करावर्त्तः' तदुपरितनकोष्ठके 'ह्रीँ' इति । तत उत्तरवलनके 'धनदाय नमः' तदग्रे 'ए ऐ ओ औ' ततो द्वितीयवलनके 'सवर्त्तः' इति तदुपरितनकोष्ठके 'व्लौं' इति । ततः प्राग्दिशि "ॐ ह्रीँ नमो भगवओ पासनाहस्स धरणिंदपूइयस्स तस्स भत्तीए ॐ ह्रीं मेघकुमार आगच्छ २ स्वाहा" स्वस्तिकाधो "ॐ ह्रीं नमो वासुदेवाय क्षीरसागरशायिने शेषनागासनाय इन्द्रानुजाय अत्र आगच्छ २ जलवृष्टिं कुरु २ स्वाहाः" एवं स्वस्तिकमापूर्य रेखान्तरे "ॐ ह्रींनमो म्ल्व्र्यूँ मेघकुमाराणां ॐ ह्रीं श्रीं नमो म्ल्व्र्यूँ मेघकुमारिकाणां महावृष्टिं कुरु २ सवौषट् सव्वे णागकुमारा सव्वेणागकुमारीओ उदहिकुमारा उदहिकुमारीओ थणियकुमारा थणियकुमारीओ महा-

वृष्टिकरा सन्तु" । ततो द्वितीयवलये पूर्वादिचतुर्दिक्षु 'गा थुम १ शिव २ शख ३ मनशिल ४ नामानश्चत्वारो मा गराजा' स्थाप्या' । चतुर्विदिक्षु 'कर्कोटकः २, कर्दमकः २, कैला स' ३, अरुणप्रभाक्रमश्च ईशानाग्निरक्षोऽनिलक्रमेण स्थाप्या'। जलबीजमातृका चतुर्दिक्षु देया । तृतीयवलये "ॐ ह्रीं श्रीं नमो भगवते महेन्द्राय मेघवाहनाय ऐरावणस्वामिने वज्रायु धाय अत्रागच्छ वृष्टिं कुरु २ स्वाहा" इति पूर्वदिशि लिख नीयम्। दक्षिणस्यां "ॐ नमो भगवते श्रीसहस्रकिरणाय वरुणदेवाय मकरवाहनाय गभस्ति अर्यमस्वरूपेण अत्रागच्छ वृष्टिं कुरु २ स्वाहा" । पश्चिमायां "ॐ ह्रीं नमो भगवते वरुणदेवाय जलस्वामिने मकरासनाय रोहिणीमघमाचित्रा श्यामासहिताय मेघनादाय अत्रागच्छ महाजलवृष्टिं कुरु २ स्वाहा' । उत्तरस्यां "ॐ ह्रीं नमो भगवते चन्द्राय अ मृतवर्षिणे सर्वौषधिनाथाय कलाधारिणे इहागच्छ २ महारस वृष्टिं कुरु २ स्वाहा' इति लेख्यम्। चतुर्थवलये याम्यदिशा' प्रारभ्य "ॐ ह्रीं नमो धरणिंदस्स कालवाल-कोलवाल-सेल वाल-सखवालप्पमुहा सव्वे णागकुमारा णागकुमारीओ इह आगच्छंतु महाजलवुट्ठिं कुणंतु" इति पश्चिम दिक् पर्यन्तं लेख्यम। तत उत्तरदिशा' प्रारभ्य "ॐ ह्रीं नमो भूयाणं- दस्स कालवाल-कालवाल-संखवाल-सेलवालप्पमुहा सव्वे णागकुमारा णागकुमारीओ इह आगच्छंतु महाजलवुट्ठिं कुणंतु" इति पूर्वदिक्पर्यन्तं लिखनीयम । पञ्चमवलये द क्षिणादिशा प्रारभ्य "ॐ ह्रीं नमो जलकंत लसमिंदस्स जल जलप्पह जलकान्त जलप्पहाईया उदहिकुमारा उदहिकुमा रीओ य इह आगच्छन्तु" इत्यादि प्राग्वत् पश्चिमदिक्

पर्यन्तं लिखनीयम्। तत उत्तरदिशः प्रारभ्य "ॐ ह्रीं नमो जलप्पहिंदस्स जल जलतर जलप्पह जलकन्ताइया उद-हिकुमारा उदहिकुमारीओ य" इत्यादि प्राग्वत् पूर्वदिक्पर्यन्त लेख्यम्। षष्ठे वलये दक्षिणदिशः प्रारभ्य "ॐ ह्रीं नमो घोसमहिंदस्स आवत्त वियावत्त नंदियावत्त महानंदियावत्त-प्पमुहा सव्वे थणियकुमारा थणियकुमारीओ य इहागच्छन्तु महामेहवुट्ठिं कुणंतु" इति पश्चिमदिक्पर्यन्तम्। तथा उत्तर-दिशः प्रारभ्य "ॐ ह्रीं नमो महाघोसमहिन्दस्स आवत्त वियावत्त महानंदियावत्त नंदियावत्तप्पमुहा थणियकुमारा थणियकुमारीओ य इहागच्छंतु महामेहवुट्ठिं कुणंतु स्वाहा" इति पूर्वदिक्पर्यन्तं यावल्लिखनीयम्। अत्र चतुर्थपञ्चमषष्ठेषु त्रिषु वलयेषु सत्यवकाशे 'अल्ला सक्का सतेरा सोदामणी इंदा थणविज्जुयाइया णागकुमारीओ उदहिकुमारीओ थणियकु-मारीओ वा' इति यथास्थानं लिखनीयम्। ततः सप्तमव-लये पूर्वदिशः समारभ्य "ॐ ह्रीं मेघकरा मेघवती सुमेघा मेघमालिनी तोयधारा विचित्रा च वारिषेणा बलाहिका इहागच्छन्तु"। दक्षिणस्यां "ॐ ह्रीं अलीता सोल्का मनह्रदा सौदामिनी ऐन्द्री घनविद्युत्प्रमुखा विद्युतकुमार्य इहागच्छन्तु"। पश्चिमायां "ॐ ह्रीं अब्भिंतरपरिसाए सट्ठिं सहस्सा मज्झिमपरिसाए सत्तरिं सहस्सा बाहिरपरि साए असीइं सहस्सा नागकुमारा इहागच्छन्तु"। उत्तर-स्यां "ॐ ह्रीं सव्वे णागोदहिथणियकुमारा सक्कस्स देविं-दस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो आणाए महावु-ट्ठिकरा भवन्तु"। एवं सप्तमवलय यन्त्र कृत्वा दिक्षु ह्रींकारयुक्तं, विदिक्षु लॉकिनं, सर्वत्र वज्राकारवेष्टि-

नम् । 'ॐ ह्रीं सर्वयक्षेभ्यो नमः' १ । 'ॐ ह्रीं सर्वभू तेभ्यो नमः' २ । 'ॐ ह्रीं पूर्णादिसर्वयक्षदेवीभ्यो नमः' ३ । 'ॐ ह्रीं रूपावत्यादिसर्वभूतदेवीभ्यो नमः' ४ । इति पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरदिक्षु न्याससुयन्त्रं कार्यम् । एतद्यन्त्रं स्थाल्यां भूर्जे वा लिखित्वा आकाशे आतपे धार्यं, धूपः कार्यः, तदग्रे " चउक्कसायपडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जयमयणबाणमुसुमूरणु । सरसपियंगुवण्णु गयगामिउ, जयउ पासु सुवण सयसामिउ ॥१॥ जसु तणुकंतिकडप्पसिणिद्धउ, सोहइ फणिमणिकिरणालिद्धउ । न नवजलहरतडिल्लयलंछिउ, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ " ॥२॥ ततः " भित्त्वा पाताल मूलं चलचलचलिते व्यालजीलाकराले, विद्युद्दण्डप्रचण्ड प्रहरणसहिते सद्भुजैस्तर्जयन्ती । दैत्येन्द्र क्रूरदंष्ट्रा कटकट घटिते स्पष्टभीमाट्टहासे, माया जीमूतमाला कुहरितगगने रक्ष मां देवि पद्मे " ॥३॥ इतिवृत्तत्रयं प्रतिमणिकं गुणयेत् यावदष्टोत्तरशतं जापः कार्यः धूपाक्षेपपूर्वकः मेघकुमा राध्ययनं स्वाध्याय व्याख्यानयोर्वाचनीयम् । इति श्रीमेघाकर्षणयन्त्रस्थापना ।

मधुयन्त्रस्थापना यथा —

पञ्चकोणकपन्नं कृत्वा तत्र कोणेषु 'मह्णा मह्णा मतेरा सातामणी ईदा धणविज्जुया एताभ्यो नमः' इति प्रतिकोणं लिखनीयम् । मध्ये तु 'ॐ मह्णामह्णा मिह्मीह्णमम्हास सुद्धरसुह्णा आमगज्जइ विज्जउ पूरउ गामघणा धण्णअसनि णरसहाम " १ । 'ॐ क्रों वरुणाय जलपतये नमः' अय मन्त्रो लिखनीयम् । पञ्चकोणोपरि 'ॐ ह्रीं मेघकुमार आ गच्छ २ स्वाहा' पञ्चकोणस्य चतुर्दिक्षु 'रोहिणीमदनाचित्रा

श्यामाभ्यो नमः ' इति, तदुपरि मायाबीजं प्राकारत्रयवेष्टितम्। प्रान्ते क्रोंकारयुक्तं लेख्यम्। इद यंत्र कुंकुमाद्यष्टगन्धेन लिखित्वा आतपे धार्यम्। तदग्रे-" तुह ममरणजलवरिससित्त माणवमइमेइणि, अवरावरसुहुमत्थवोहकंदलदलरेहणि। जायइ फलभरभरिय हरिय दुहदाहअणोवम, इय मइमेइणिवारिवाह दिम पाम मइं मम " ॥१॥ गाथेयम् 'अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र-' इत्यादिक श्रीभक्तामरस्तोत्रकाव्यं वा गणनीयम्। तेनाचाम्लादितपसा सूर्याभिमुखाष्टोत्तरशतजापेन मेघाकर्षणम्।

एवं पुंसां कलामध्ये या मेघाकृष्टिरर्हता।
ऋषभेण समाज्ञायि सा बोध्यागमशास्त्रतः ॥२६॥

अथ प्रसगान्मेघस्थैर्यमपि—

ॐ ह्रीं वायुकुमार आगच्छ २ स्वाहा। स्थापना यथा—
एतज्जापविधानेन मेघस्तम्भो विधीयते।
यन्त्र तथेष्टिकायुग्मे लिखित्वा न्यस्यते भुवि ॥ २७ ॥
मेघाकर्षणवर्षणादिकरणी विद्यानवद्याशया,
देया मेघमहोदये रतिभृते छात्राय पात्राय सा।

इस तरह पुरुषों की कलाओं में जो मेघाकृष्टि कला है वह ऋषभदेव ने बतलाई, ऐसा आगम शास्त्र मे जानना ॥ २६ ॥

इस का जाप करने से या यंत्र को दो ईंट पर लिखकर भूमि पर स्थापन करने से वृष्टि स्तम्भित हो जाती है ॥ २७ ॥

मेघ के आकर्षण तथा वर्षण आदि करने वाली यह विद्या मेघमहोदय मे प्रीति रखने वाले योग्य विद्यार्थी को देनी चाहिये। देवों की श्रद्धापूर्वक जपादि शक्ति से उत्पन्न हुआ यही तीनरा हेतु सिद्धिरूप है और शास्त्रविप्र

इत्थं सत्कजपादिनाशिजनिता हेतुस्तृतीयोऽध्यायः,
सिद्धः शुद्धधियां प्रसिद्धिभवनं शास्त्रं मदाय स्फुटं ॥२८॥
इति श्री मेघमहोदये वर्षप्रबोधापरनाम्नि महोपाध्याय
श्रीमेघविजयगणिविरचिते दृष्टाधिकारस्तृतीयः ॥

एक प्रसिद्धि का भवन (स्थान) रूप यह शास्त्र शुद्ध बुद्धि वाले पुरुषों के आनन्द के लिए है ॥ २८ ॥

इतिश्रीसौराष्ट्रराष्ट्रान्तर्गत पादलिप्तपुरनिवासिना पण्डितभगवानदासाख्य
जैनेन विरचितया मेघमहोदये बालावबोधिन्याऽऽर्यभाषया
टीकया तृतीयो देवाधिकारः ।

अथ चतुर्थः संवत्सराधिकारः ।

संवत्सरः सरसधान्यविधिं विधेयाद्
धाराधरस्य चरणस्मरणेन सद्यः ।
गन्धद्विपेन्द्र इव पुष्करपद्मशाली,
श्रीनाभिसम्भवजिनेश्वरसन्निधानात् ॥१॥
ग्रहणं दोहला भावात् त्रिधैव वृष्टिकारणम् ।
संवत्सरस्याथ कालोऽपि तुर्यो हेतुर्विचिन्त्यते ॥२॥

मदोन्मत्त हाथी के जैसे कमल के सदृश कान्ति वाले श्रीऋषभदेव जिनेश्वर की कृपा से संवत्सर शीघ्र ही पृथ्वी का पालन करने वाले व मेघ से अच्छे रसवाले धान्य को उत्पन्न करें ॥ १ ॥ ग्रहण गर्भ और दोहला ये तीन प्रकार वृष्टि के कारण हैं गणना में काल को भी चौथा कारण कहा है ॥ २ ॥ शालिवाहन शक विक्रम संवत्सर एवं मकरादि अयन का आद

अथ वर्षद्वाराणि—

शाकं वत्सरमायनाद्यदिवसं मासं सपक्षं दिनं,
पौताङ्घ्रिं नृपमन्त्रिधान्यपरमादीशाः परे पूर्वगाः ।
अब्दस्यापि च जन्मलग्नमनिलं विद्युद्युताभ्रोदयं,
गर्भं वारिमुचां तिथिं ग्रहगणं वारं सनक्षत्रकम् ॥३॥
कर्पूरसर्वतोभद्रचक्रे योगान् जलोदयान् ।
शकुनांश्च विमृश्यैव ज्ञेयं वर्षशुभाशुभम् ॥४॥
शाकस्त्रिघ्नो युतो द्वाभ्यां चतुर्भागेऽवशेषितः ।
समेऽङ्के स्यादल्पवृष्टिः प्रचुरा विषमे पुनः ॥५॥
राशीश्वरोर्षपयुक् त्रिगुणो, लाभः शराढ्यस्तिथिभक्तशेषः ।
लब्धे त्रिगुणे शरयोजितेऽस्य, बाणेन्दुभागे व्यय एव शिष्टः ।६

राशिस्वामी वर्षराजस्य दशावर्षध्रुवयुक्तः क्रियते, तत-स्त्रिगुणीकार्यः, तत्र पञ्चभिर्युक्तः कार्यस्तस्य पञ्चदशभिर्भागे शेषाङ्कतः आयः स्यात् । पश्चाल्लब्धाङ्के त्रिगुणीकृते पञ्चभि-

---

दिन, मास, पक्ष, दिन, अगस्त्यतारा वर्ष का राजा और मन्त्री, धान्येश, रसेश, वर्ष का जन्मलग्न, वायु, बीजली के साथ बद्दल का होना, मेघ का गर्भ, तिथि, ग्रहसमूह, वार, नक्षत्र, कर्पूरचक्र, सर्वतोभद्रचक्र, जल के उदय (वर्षा) का योग और शकुन इत्यादिक का विचार करके ही वर्ष का शुभाशुभ जानना ॥ ३-४ ॥

शालिवाहन शक को त्रिगुणा करके दो मिलाना, उसमें चार का भाग देना, जो समशेष बचे तो अल्पवृष्टि और विषम शेष बचे तो बहुत वृष्टि हो ॥५॥ राशि के स्वामी और वर्ष के स्वामी के अष्टोत्तरी दशा के ये दोनों ध्रुवाङ्क मिलाकर त्रिगुणा करना, इसमें पाच मिलाकर पन्द्रह से भाग देना, जो शेष बचे, वह लाभ-आय है और लब्धाङ्क को त्रिगुणा करके पाच मिलाना इसमें पन्द्रह से भाग देने से जो शेष बचे वह 'व्यय' है यह वर्ष का आयव्यय है ॥ ६ ॥ कोई बारह राशियों के आय और व्यय का मिलान करते हैं,

युक्तस्तस्य पञ्चदशभिर्भागे शेषाङ्का व्यय स्यादित्यर्थः ।
राशिनाद्शकस्याया व्ययाङ्कोऽपि च याप्यते ।
आयेऽधिके सुभिक्षं स्याद् दुर्भिक्षमधिके व्यये ॥७॥
चतुर्गुणीकृत्य मलरूपमायं मासैकदत्त स्यादिह मासिकाय ।
एवं हि मयाऽत्र दिनं विदध्याद् आयव्ययं स्यादिति संक्रमादेः ॥८॥
विक्रमाङ्कः शकस्याङ्कयुक्ता त्रिघ्ना विभाज्य च ।
सप्तभिस्तत्र यच्छेषं तस्मात् फलमुदीर्यते ॥९॥
एके षट्के च दुर्भिक्षं सुभिक्षं युगवेदयोः ।
समता रामशरयोः शून्ये रौरवमादिशेत् ॥१०॥
कश्चित्संवत्सरं शाकं मीलयेत् त्रिगुणोऽधम ।
पञ्चमासयुतं सप्तविभक्तोऽस्य फलं क्रमात् ॥११॥
सुभिक्षं युगवेदाभ्यां दुर्भिक्षं तु त्रिपञ्चके ।
शून्ये षट्के रौरवं स्याद् एकेन समता मता ॥१२॥

आय अधिक हो तो सुकाल और व्यय अधिक होवे तो दुष्काल जानना ॥ ७ ॥ जो वर्ष की आय है उसको और सम्वत् को मिलाकर चार गुणा करना इसमें बारह से भाग देने से जो शेष रहे वह मासिक आय है । इस तरह मासिक आय को तीस से भाग देने से दिन की आय हो आती है । यह संक्रान्ति के दिन से आय व्यय का विचार करना ॥ ८ ॥ विक्रमसंवत्सर और शालिवाहन का शकसंवत्सर ये दोनों मिलाकर त्रिगुणा करना इसमें सात का भाग देना जो शेष बचे उसका फल कहना ॥ ९ ॥ एक या छः बचे तो दुष्काल दो या चार बचे तो सुकाल तीन या पांच बचे तो समान (मध्यम) और शून्य शेष बचे तो रौरव (भयंकरदुःख) हो ॥ १० ॥ दूसरा प्रकार—संवत्सर और शक को मिलाकर त्रिगुणा करना उसमें पांच मास मिलाकर सात से भाग देना जो शेष बचे उसका फल कहना ॥ ११ ॥ शेष दो या चार हो तो सुकाल तीन या पांच हो तो दुष्काल, शून्य या छः होवे तो रौरव

पाठान्तरे–संवत्सरसमायुक्ता-स्त्रिगुणाः पञ्चभिर्युताः
सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषं वर्षफलं मतम् ॥१३॥

अत्रापि संवत्सरशब्देन शाकसंवत्सर एव ग्राह्यः स चाषाढादिरेव, य आषाढे संवत्सरो लगति स शाकसंवत्सरो गण्यते इत्यर्थः । उदाहरणं यथा–संवत् १६८७ वर्षे आषाढादि शकसंवत्सरः १५५२ ततः पञ्चदशत्रिगुणीकरणे जातं पञ्चचत्वारिंशद् ४५, द्विपञ्चाशतस्त्रिगुणीकरणे जातं षट्पञ्चाशदुत्तरं शतं १५६, तस्मिन् पञ्चचत्वारिंशद् योगे जातं २०१ तत्र पञ्चमीलने २०६ सप्तभिर्भागे शेषं त्रयम् । ततो 'दुर्भिक्षं तु त्रिपञ्चके' इतिवचनात् सप्ताशीतिके दुष्काल इति ।

अत्र पाठान्तराणि बहूनि यथा—

शाकं च त्रिगुणं कृत्वा सप्तभिर्भागमाहरेत् ।
शेषं च द्विगुणीकृत्य पञ्च तत्र नियोजयेत् ॥१४॥

और एक शेष हो तो समान फल हो ॥ १२ ॥ पाठान्तर—शकसंवत्सर के (शताब्दी) का और वर्ष को त्रिगुणा कर इकट्ठा करना, उसमें पांच मिलाकर सात से भाग देना, शेष बचै उसका फल कहना ॥ १३ ॥ यहां भी संवत्सर शब्द से शकसंवत्सर ही जानना । आषाढ मास से जो वर्ष प्रारंभ होता है उसको शकसंवत्सर कहते हैं । उदाहरण—विक्रम संवत् १६८७ वर्ष में आषाढादिक शकसंवत् १५५२ है, उसमें सौका (शताब्दी) १५ को तीन गुणा किया तो ४५ हुआ और वर्ष ५२ का त्रिगुणा किया तो १५६ हुआ ये दोनों को मिलाया तो २०१ हुआ इसमें ५ मिलाया तो २०६ हुआ इसमें ७ से भाग देने से शेष३ बचे, इसलिये विक्रमसंवत्सर १६८७में दुष्काल कहना ।

शक संवत्सर को त्रिगुणा कर के सात से भाग देना, जो शेष रहे, उसको द्विगुणा कर पांच मिला देना ॥ १४ ॥ अन्यत्—संवत्सर को द्विगुणा

कश्चित्— वत्सरं त्रिगुणीकृत्य त्रिभिन्यूनं तु कारयेत् ।
सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषे संवत्सरं फलम् ॥ १५ ॥
एकचतुष्के दुर्भिक्षं सुभिक्षं च द्विपञ्चके ।
त्रिषट्के मध्यमे काले शून्ये शून्यं विनिर्दिशेत् ॥ १६ ॥

केचित्तु एतत्करणेन उत्पन्नकालिकधान्यपरिज्ञानं वदन्ति । पुनरप्यस्यैव पाठान्तरं यथा—

वत्सरं त्रिगुणीकृत्य त्रिभिन्यूनं कृते सति ।
सप्तभिर्भाज्यते शेषे संवत्सरशुभाशुभम् ॥ १७ ॥
शेषे द्वित्रिचतुष्के च सुभिक्षं वर्षमुच्यते ।
एकशून्ये मध्यमं स्यात् हीनं पञ्चाष्टसप्तसु ॥ १८ ॥
कश्चित्— संवत्सराङ्कं त्रिगुणं सप्तभक्तावशेषितम् ।
कृत्वा पञ्चगुणं भागं त्रिभिस्तेन फलं मतम् ॥ १९ ॥
एकशेषे सुभिक्षं स्यात् द्विशेषे मध्यमा समा ।
शून्ये दुर्भिक्षमादेश्यं वर्षे तत्र शुभाशुभम् ॥ २० ॥

कर तीन घटा देना इसमें सातका भाग देना जो शेष बचे उससे वर्ष फल कहना ॥ १५ ॥ शेष एक या चार हो तो दुष्काल दो या पांच हो तो सुकाल तीन या छ हो तो मध्यम समय और शून्य हो तो शून्यकाल कहना ॥ १६ ॥ कितनेक आचार्य तो इस रीति से उत्पन्न धान्य के भाव्य के परिज्ञान को कहते हैं। इस का पाठान्तर— संवत्सर को त्रिगुणा कर तीन घटा देना उस में सात से भाग देकर शेष से वर्ष का शुभाशुभ फल कहना ॥ १७ ॥ शेष दो तीन या चार हो तो सुकाल एक या शून्य हो तो मध्यम पांच आठ और सात हो तो हीनकाल कहना ॥ १८ ॥ कश्चित्— संवत्सर के अंको को त्रिगुणा कर सात का भाग देना जो शेष बचे उस को पांच गुणा कर तीन का भाग देना और शेष से फल कहना ॥ १९ ॥ शेष एक बचे तो सुकाल दो बचे तो मध्यम और शून्य बचे तो दुष्काल जानना ॥ २० ॥ रुद्रदेव ने कहा है कि—

रुद्रदेवस्तु— संवत्सरस्य ये अङ्का अधोऽधो लिखिताः क्रमात् ।
वेदाङ्कसहिता ये तु मुनिभिर्भागमाहरेत् ॥ २१ ॥
आद्ये चतुष्के दुर्भिक्षं सुभिक्षं द्विकपञ्चके ।
त्रिषष्ठे मध्यमः कालः शून्ये शून्यं विनिर्दिशेत् ॥ २२ ॥

तथा— कालो विक्रमभूपतेः प्रथमतस्त्रिस्थानडेयते मीलनात्,
पश्चात्पञ्चयुते तुरङ्गमहृते शेषाङ्कमालोचयेत् ।
द्वाभ्यां वह्निभिरिन्द्रियै रसयुतैः कालोत्तमत्वं वदेत्,
शून्येनाधमता चतुःशशधरे स्यान्मध्यमत्वं सदा ॥ २३ ॥

अत्र यदि पञ्चैव योज्यन्ते तदा सप्तवर्षानन्तरमवश्यं शून्यं समायाति, न च तत्र दुष्कालनियमः, तेन पञ्च योगकरणमिति कोऽर्थः? पञ्च मनुष्योक्ता अङ्काः क्षेप्या इति इष्ट वचनम् ।

संवत्सर के अङ्क और शताब्दी के अङ्क ये दोनों नीचे नीचे लिख कर मिला देना, इस में पांच और मिला कर सात का भाग देना, जो शेष बचे उस का फल कहना ॥ २१ ॥ जो शेष एक या चार हो तो दुष्काल, दो या पांच हो तो सुकाल, तीन या छः हो तो मध्यम और शून्य हो तो शून्य फल कहना ॥ २२ ॥ विक्रम संवत्सर की शताब्दी को और वर्ष को त्रिगुणा कर इकट्ठा करना, इस में पांच और मिलाकर सात से भाग देना, जो शेष बचे उस का फल विचारना— शेष दो तीन पांच या छः बचे तो उत्तम समय कहना, एक या चार बचे तो मध्यम समय कहना और शून्य शेष बचे तो अधम समय कहना ॥ २३ ॥ यहां यदि पांच मिलावें तो सात वर्ष पर्यंत क्रमशः अवश्य शून्य आती है, इससे यहां दुष्काल का नियम नहीं रहा, इसलिये पंच योग का अर्थ पांच मनुष्योक्त अंको को मिलाना यही इष्ट है ॥ फिर भी— संवत्सर के अंकों को द्विगुणा कर एक मिला देना, इसमें सातसे भाग देकर शेषसे वर्ष

कश्चित् पुनः–संवत्सराङ्कं त्रिगुणीकृत्यैकं मीलयेत्ततः ।
सप्तभिर्भागदानेन प्राप्यं वर्षशुभाशुभम् ॥२४॥

यथोदाहरणम्– संवत् १९८७ त्रिगुणीकरणे १७४ एक-
योगे १७५ सप्तभिर्भागे शून्यं तेन दुर्भिक्षम् ।

संवत्सरे त्रिगुणिते त्रिभिरन्वितेऽथ,
नन्दैर्विभाजनमनुष्यफलं तु शेषे ।
युग्मे२ त्रिके३ जलनिधौ४ च सुभिक्षमेकं,
पक्षे१ नन्दया९ च समतापर ५-७-८ ताऽतिवृष्ट्य ॥२५॥

अत्र संवत्सरशब्देन केचित् विक्रमराजसंवत्सरं गणयन्ति तन्न
युक्तं, सर्वत्र ज्योतिःशास्त्रे शाकस्यैव गणनात्, तेन विक्रमकाल
इति कश्चिदपि न भ्रमितव्यं, विक्रमकालस्य कालो विनाश इति।
अथोत् शाकं त्रिगुणं मुनिभाजितं च, शेषं द्विनिघ्नं शरसंयुतं च।
वर्षा च धान्यं तृणशीततेजो-वायुश्च वृद्धिः क्षयविग्रहौ च॥२६॥

का शुभाशुभ कहना ॥ २४ ॥ उदाहरण— संवत् १९८७ है उसको त्रि
गुणा किया तो १७४ हुए इसमें एक और मिलाया तो १७५ हुए, उसको ७
से भाग दिया तो शून्य शेष रहा। इसलिए उस वर्ष दुष्काल जानना॥ फिर
भी— संवत्सरको त्रिगुणा कर तीन मिला देना उसमें नवसे भाग देकर शेष
का फल कहना। जो शेष एक दो तीन या चार बचे तो सुकाल व या नव
बचेतो समान और पांच सात या आठ बचेतो अधम समय जानना॥ २५॥
यहां संवत्सर शब्दसे कोई विक्रम संवत्सर गिनते हैं यह योग्य नहीं है स
र्वत्र ज्योतिषियों को शालिवाहन का शाक संवत्सर ही जानना चाहिए। इस
लिए कहीं विक्रम काल का भ्रम नहीं करना चाहिये। शाक संवत्सर को त्रि-
गुणा कर सातसे भाग देना और शेषको द्विगुणा कर इसमें पांच मिला देना
तो वर्षा धान्य तृण शीत तेज वायु वृद्धि क्षय और विग्रह होते हैं ॥ २६ ॥
इसका फल — वर्षके विक्रमको त्रिगुणा कर इसमें तीन मिला देना उसको

अस्य फलम्- वर्षाविंशोपकाः सर्वे त्रिगुणास्त्रिभिरूनिताः ।
सप्तभिस्तद्विभागेन शेषं संवत्सरे फलम् ॥२७॥
चन्द्रे वेदे च दुर्भिक्षं सुभिक्षं युग्मबाणयोः ।
त्रिषष्ठे मध्यमः कालः शून्ये रौरवमादिशेत् ॥२८॥

अथ षष्टिसंवत्सराः—

संवद्विक्रमराजस्य न्यूनः शरगुणेन्दुभिः ।
शाकोऽयं शालिवाहस्य भूद्वियुक् षष्टिभिर्भजेत् ॥२९॥
शेषेषु प्रभवादीनां वर्षादौ नाम जायते ।
प्रवृत्तिः षष्टिवर्षाणां गुरोर्मध्यमभोगतः ॥३०॥

अत्र स्थूलमतेन संवत्सरप्रवृत्तिर्यथा -

वारे वेदा ४ स्तिथौ शैला ७ घटीषु द्वितयं क्षिपेत् ।
पूर्वसंवत्सराद् भावि-वत्सरागमनिर्णयः ॥३१॥
प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः ।
अङ्गिराः श्रीमुखो भावो युवा धाता तथैव च ॥३२॥
ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथी विक्रमो वृषः ।

सातसे भाग देकर शेषमे वर्षका फल कहना ॥ २७ ॥ शेष एक या चारहो तो दुष्काल, दो या पाच हो तो सुकाल, तीन या छ हो तो मध्यम काल और शून्य हो तो रौरव (भयानक) हो ॥ २८ ॥ इति शाक ॥

विक्रमसंवत्सर में से १३५ घटादेन स शालिवाहन का शक संवत्सर होता है। इसमे बारह मिलाकर साठ का भाग देना ॥ २९ ॥जो शेष बचै वह प्रभव आदि वर्ष का नाम जानना। बृहस्पति के मध्यम भोग से साठ वर्षों की प्रवृत्ति होती है ॥ ३० ॥ अथवा वार में चार, तिथि में सात और घडी में दो मिलाने स भावी वर्ष का निर्णय होता है ॥ ३१ ॥ साठ संवत्सरों के नाम-प्रभव, विभव, शुक्ल, प्रमोद, प्रजापति, अंगिरा, श्रीमुख, भाव, युवा, धाता, ईश्वर, बहुधान्य, प्रमाथी, विक्रम, वृष, चित्रभानु, सुभानु

चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवो व्ययः ॥३३॥
सर्वजित् सर्वधारी च विरोधी विकृतिः खरः ।
नन्दनो विजयश्चैव जयो मन्मथदुर्मुखौ ॥३४॥
हेमलम्बो विलम्बश्च विकारी शर्वरी प्लवः ।
शुभकृच्छोभनः क्रोधी विश्वावसुपराभवौ ॥३५॥
प्लवङ्गः कीलकः सौम्यः साधारणो विरोधकृत् ।
परिधावी प्रमादी च नन्दाख्यो राक्षसो नलः ॥३६॥
पिङ्गलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थो रौद्रदुर्मती ।
दुन्दुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्षः क्रोधनः क्षयः ॥३७॥
स्वनामसदृशं ज्ञेयं फलमत्र शुभाशुभम् ।
माघे गुरुर्धनिष्ठादौ प्रथमे प्रभवाह्वयः ॥३८॥

यदुक्तं रत्नमालायाम्—

तपसि खलु यदामावुद्गमं याति मासि
प्रथमलवगतः सन् वासवे वासवेज्यः ।
निखिलजनहितार्थे वर्षवृन्दे गरिष्ठः,
प्रभव इति स नाम्ना जायतेऽब्दस्तदानीम् ॥३९॥

तारण पार्थिव व्यय सर्वजित् सर्वधारी विरोधी विकृति खर नन्दन विजय जय मन्मथ दुर्मुख हेमलम्ब विलम्ब विकारी शर्वरी प्लव शुभकृत् शोभन क्रोधी विश्वावसु पराभव प्लवंग कीलक सौम्य साधारण विरोधकृत् परिधावी प्रमादी नन्द राक्षस नल पिङ्गल कालयुक्त सिद्धार्थ रौद्र दुर्मति दुन्दुभि रुधिरोद्गारी रक्ताक्ष क्रोधन और क्षय ॥ ३२–३७ ॥ ये साठ संवत्सरों के नाम हैं उनके नामसदृश शुभाशुभ फल जानना । माघमासमें धनिष्ठा के प्रथम अंश पर बृहस्पति आनेसे प्रभव नामका वर्ष प्रारम्भ होता है ॥३८॥ रत्नमालामें भी कहा है कि माघमासमें धनिष्ठा के

सिद्धान्ते तु– कति णं भंते ! संवच्छरा पण्णत्ता? गोयमा ! पच सवच्छरा पण्णत्ता तजहा- णक्खत्तसंवच्छरे, जुगसंवच्छरे पमाणसंवच्छरे लक्खणसंवच्छरे; सणिचरसंवच्छरे ।णक्खत्तसंवच्छरे कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुवालसविहे- सावणे भद्दवए आसोए कत्तिए मगसिरे पोसे माहे फग्गुणे चित्ते वइसाहे जिट्ठे आसाढे; ज वा- बुहप्फइ महग्गहे दुवालस संवच्छरेहि णक्खत्तमंडले समाणेो इसेण णक्खत्तसंवच्छरे। जुगसवच्छरे णं कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते. तजहा- चदे चदे अभिवड्ढिए चंदे अभिवड्ढिएचेव से त्तं जुगसंवच्छरे। पमाण सवच्छरे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा! पंचविहे पण्णत्ते. तंजहा णक्खत्ते चंदे उऊ आइच्चे अभिवड्ढिए सेत्त पमाणसवच्छरे। लक्खणसंवच्छरे कइविहे पण्णत्ते ?

प्रथम अश पर वृहस्पति का उदय हो तब समस्त मनुष्यों के हित के लिये साठ वर्षोंमें प्रथम प्रभव नाम का वर्ष प्रारभ होता है-॥ ३६ ॥

हे भगवन् ! सवत्सर कितने हैं? गौतम ! संवत्सर पाच है—नक्षत्र सवत्सर १ युगसवत्सर २, प्रमाणसवत्सर ३, लक्षणसवत्सर ४, और शनैश्चरसवत्सर ५ । चन्द्रमा को पूर्ण नक्षत्र मण्डल भोगनेमें जितना समय व्यतीत हो उसको नक्षत्रमास कहते हैं, यह बारह हैं—श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्त्तिक, मार्गशिर, पौष, माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, और आषाढ, इन बारह मासों का एक नक्षत्रसवत्सर होता है, उसकी दिन सख्या ३२७$\frac{५१}{६७}$ है॥ १॥युगसवत्सर पाच प्रकारकाहै-चद्र, चन्द्र, अभिवर्द्धित, चन्द्र और अभिवर्द्धितसवत्सर । कृष्ण प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक २९$\frac{३२}{६२}$ इतने दिन के प्रमाण वाला एक चन्द्रमास होता है, ऐसे बारह मासों का एक चद्रसवत्सर होता है, उसकी दिनसख्या ३५४$\frac{१२}{६२}$ है । इस तरह ३१$\frac{१२१}{१२४}$ दिन के प्रमाण वाला एक अभिवर्द्धित मास होता है, ऐसे बारह मासों का एक अभिवर्द्धितसवत्सर

गोयमा ! पञ्चविहे तंजहा— समगं णक्खत्ता जोगं जोयंति समगं उऊ परिणमन्ति । णच्चुण्हं णाइसीओ बहूदओ होइ णक्खत्ता ॥१॥ ससिसगलपुण्णमासी जोयति विसमचारिणक्खत्ता । कडुओ बहूदओ मा तमाहु संवच्छरं चंदं ॥२॥ विसमपवालियो परिणमंति अणउऊसु देंति पुप्फफलम् । वासं ण सम्म वासइ तमाहु संवच्छरं कम्मं ॥३॥ पुढविदगाणं तु रसं पुप्फफलाणं च देइ आइच्चा । अप्पेण वियासेण सम्मं निप्फ

होता है । इन पांच संवत्सरों के समूह का युग कहते हैं और अभिवर्द्धित संवत्सरमें एक अधिक मास होता है ॥ २ ॥ प्रमाणसंवत्सर पांच प्रकार का है —नक्षत्र चन्द्र ऋतु आदित्य और अभिवर्द्धित । नक्षत्र चन्द्र और अभिवर्द्धितसंवत्सर का स्वरूप पहले कह दिया है । ऋतु—तीस अहोरात्र का एक ऋतुमास ऐसे बारह मास का एक ऋतुसंवत्सर होता है, उसकी दिन संख्या ३६० पूरी है । आदित्य—३० ½ दिन का एक आदित्य (सूर्य) मास । ऐसे बारह मास का एक आदित्य(सूर्य)संवत्सर होता है उसकी दिन संख्या ३६६ है ॥ ३ ॥ लक्षणसंवत्सर—संवत्सर के नक्षत्रादि लक्षण प्रधान को लक्षणसंवत्सर कहते हैं वह पांच प्रकार का है— जिस जिस तिथि में जो जो नक्षत्र आने को कहा है उन उन तिथियों में वह आजाय जैसे कार्तिक की पूर्णिमा को कृत्तिका माघ की पूर्णिमा को मघा चैत्री पूर्णिमा को चित्रा इत्यादि । किन्तु जेट्ठामूलं मूलेण सावणी घणिट्ठाहिं । अद्दासु य मग्गसिरी सेसा नक्खत्तनामिया मासा ॥१॥ अर्थ —ज्येष्ठ पूर्णिमा को मूल श्रावण पूर्णिमा को धनिष्ठा और मार्गशीर्ष पूर्णिमा को आर्द्रा नक्षत्र होता है और बाकी नक्षत्र के नाम सदृश मास की पूर्णिमा होती है । समकालीन अनुक्रम से ऋतु परिवर्तन हो, कार्तिकपूर्णिमा पीछे हेमंत ऋतु पौषपूर्णिमा पीछे शिशिरऋतु माघपूर्णिमा पीछे बसन्त ऋतु इत्यादि समकालसे रहें । जिस वर्ष में अधिक उष्णता न हो

उम्भए सस्सं ॥४॥ आइच्चतेयतविया खणलवदिवसा उऊ परिणमंति । पूरेइ रेणुथलताइं तमाहु अभिवड्ढियं नाम ॥५॥ सणिच्छरसंवच्छरे कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! अट्ठावीसइविहे पएणत्ते. तंजहा-- अभिई सवण धणिट्ठा सयभिसया दो अ हुंति भद्दवया रेवइ अस्सिणी भरणी कत्तिया तह रोहिणी चेव जाव उत्तरासाढाओ जं वा सणिच्छरे महग्गहे तीसाहिं संवच्छरेहिं सव्वं णक्खत्तमएडलं समाणेइ सेत्तं सणिच्छरसंवच्छरे ॥ इति जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्रे स्थानाङ्गे च ॥

एवं गुरोः पञ्चकृत्वः शनेर्द्विर्भगणभ्रमात् ।

अधिक शीत न हो और वृष्टि अधिक हो उसको नक्षत्रसवत्सर कहते हैं ? । जिस वर्ष मे पूर्णिमा को चन्द्रमा पूर्ण कलायुक्त हो तथा नक्षत्र विषमचारी याने मासकी पूर्णिमा के नाम सदृश न हो और अधिक शीत, अधिक उष्णता अधिक वृष्टि हो उसको चन्द्रसवत्सर कहते है ॥ २ ॥ जिस वर्ष में वृक्ष में फल फूल नवीन पत्ते विना ऋतु के आजाय, वृष्टि अच्छी तरह न हो उस को कर्मसवत्सर, ऋतुसवत्सर और सावनसवत्सर कहते हैं ॥ ३ ॥ जिस वर्षमें पृथ्वी और पानीका रस मधुर तथा स्निग्ध हो, समयानुकूल वृक्षमें फलफूल आवें, थोडी वृष्टि होनेपर भी धान्य अच्छी तरह उत्पन्न हों इत्यादि लक्षणयुक्त सवत्सर को आदित्यसवत्सर कहते हैं ॥ ४ ॥ जिस वर्षमें सूर्य के तेजसे क्षण मुहूर्त्त श्वासोच्छ्वास प्रमाण का दिवस, दोमास का ऋतु ये सब यथास्थित रहे और पवन रेती(रज) से खड्डा पूर दे, उसको अभिवर्द्धित सवत्सर कहते है ५ ॥ ४ ॥ जितने समयमे शनैश्चर पूर्ण नक्षत्रमएडल को याने बारह राशियों को तीस वर्षमें भोग करले उसको शनैश्चर सवत्सर कहते हैं, वह श्रवणादि अट्ठाईस नक्षत्र से अट्ठाईस प्रकार का है ॥५॥

इस तरह गुरु पाच वार, शनैश्चर दो वार और राहु तृतीयांश सहित तीन ($2\frac{1}{3}$) वार भगण (पूर्ण नक्षत्र मण्डल) मे भ्रमण करे इतने समय में

वत्सराणां भवेत् षष्ठी राहाग्निरस्त्यंशयुगुभ्रमात् ॥ ४० ॥
न समर्थं तेन शतं समानां, ज्योतिर्विदां क्वापि च शास्त्ररीत्या ।
सम्वत्सराख्या द्विपर्यिशकार्ध-प्रहमचारैः फलमत्र चिन्त्यम् ॥४१॥
संवत्सरे स्याद्विषमे प्रायो दुर्भिक्षसम्भवः ।
राजविग्रहमारीणां सम्भवः समवत्सरे ॥४२॥
वर्षेशाः सर्वतोभद्रे जीवार्किशिखिराहवः ।
तेषां चारानुसारेण भवेत् सांवत्सरं फलम् ॥४३॥
सांवत्सरफलमन्यान् प्राच्यानव्यानानेकशः ।
विलोकयेत् सुधीस्तेन ज्ञेयो मेघमहोदयः ॥४४॥

अत्र च वचनप्रामाण्याय रामविनोदग्रन्थ एवम्—

यो निर्गुणो गुणमयं विनमाति विश्वं,
तापत्रयं हरति यस्तपनोऽप्यजस्रम् ।
कालात्मको जगति जीवयते च जन्तून्,
ब्रह्माण्डसम्पुटमणिं द्युमणिं तमीडे ॥४५॥

साठ वर्ष पूर्ण होते हैं ॥ ४० ॥ 'कचित्' ऐसा कहा है इस लिए शास्त्र रीति से किसी भी जगह विद्वानोंका सैकडे (सौ वर्ष) का मत नहीं है । संवत्सर के नाम की द्विपर्विशतिका का फलादेश ग्रहों के चलन से जानना ॥ ४१ ॥ विषम संवत्सर में प्रायः दुर्भिक्ष का सम्भव रहता है और सम वर्ष में राज्य में विग्रह या महामारी आदि रोग का संभव रहता है ॥४२॥ सर्वतोभद्रचक्र में वर्षाधिपति – गुरु शनि राहु और केतु कहे हैं उनकी गति के अनुसार संवत्सर का फल होता है ॥ ४३ ॥ संवत्सरफल सम्बन्धी प्राचीन और नवीन अनेक ग्रन्थों को देखकर उनसे विद्वान लोग मेघ महोदय को जानें ॥ ४४ ॥

जो स्वयं गुणरहित होकर भी गुणवाला जगतको रचता है स्वयं निरंतर तपनशाला होकर भी तीन प्रकारके तापोंका नाश करता है काल

श्रीरामदासरुचिदे गणितप्रबन्धे ,
दैवज्ञरामकृतरामविनोदनाम्नि ।
श्रीसूर्यभक्तिमदकब्बरशाहिशाके ,
सौरागमानुभजतस्तिथिपत्रमेतत् ॥४६॥
+यातान्दा यम२वर्जिता नग७गुणाः शून्याम्बराङ्गा६०० हृता ,
भाज्य लब्धमिताऽब्दनेत्रदहना३२ढ्यंशाब्दशाकेन्दुतः ।
दिग्१०भागासकलायुतं प्रभवतोऽब्दाः षष्टिशेषाः स्मृताः ,
शेषांशा रविभिर्हता दिनमुख मेषार्कतः प्राग्भवेत् ॥४७॥

अत्र दाक्षिणात्याः सौरमानेन संवत्सरप्रवृत्तिमाहुः । उक्त च ' शाके सार्के हृते खाङ्गै शेषे स्युः प्रभवादयः ' । तेषां च फलानि--

स्वरूप होकर भी जगत्के प्राणियोंको जीवन देता है, और जो ब्रह्माण्ड रूपी सपुटका मणिरूप है, ऐसे श्री सूर्यनारायणको प्रणाम करता हूँ ॥ ४५॥ श्री रामदास को आनन्ददायक गणितप्रबन्धमें याने रामदैवज्ञविरचित राम-विनोद नामक गणितग्रथमें सूर्य नारायणके भक्त अकबर बादशाहके शाकमे यह तिथिपत्र सूर्यसिद्धान्तके अनुसार है ॥ ४६ ॥

दक्षिणदेश के रहने वाले सौरमान से सवत्सर की प्रवृत्ति मानते है । कहा है कि– शक सवत्सर में बारह मिला कर साठ का भाग देना, जो

+ यह श्लोक बराबर समझने मे नहीं आनेसे उसके स्थान पर निम्न लिखित प्रचलित श्लोक लिख देता हूँ—

शकेन्द्रकालः पृथगाकृतिघ्नः, शशाङ्कनन्दाश्वियुगैः समेतः ।
शराद्रिवस्विन्दुहृतः सलब्धः, षष्ट्याप्तशेषे प्रभवादयोऽब्दाः ॥ १ ॥

इष्ट शालिवाहन शक को दो जगह लिख कर एक जगह २२ से गुणे, इस गुणनफल में ४२९१ जोड कर १८७५ का भाग दें, जो लब्धि मिले उसको दूसरे स्थान पर लिखा हुआ शकवर्षमें जोड, इसमें ६० का भाग दे जो शेष रहे वही प्रभव आदि वर्ष जानें। प्रथम जो शेष बचा है उसको १२ से गुणा कर १८७५ से भाग दे तो महीना और इस की शेषमें ३० से भाग दे कर १८७५ से भाग दें तो दिन मिल जाता है ॥

निरीतिः सकला वशः सस्यनिष्पत्तिसम्पन्नः ।
सुस्थिता भूभुजः सर्वे प्रभवे सुखिनो जनाः ॥४८॥
दण्डनीतिपरा भूपा बहुसस्यार्घवृष्टयः ।
विभवाद्ऽखिला लोकाः सुखिनः स्युर्विवैरिणः ॥४९॥
शुक्लाब्दे निखिला लोकाः सुखिनः स्वजनैः सह ।
राजानो युद्धनिरताः परस्परजयैषिणः ॥५०॥
प्रमादाब्दे प्रमादन्तो राजानो निखिला जनाः ।
पीतरागा भीतमया इतिवैरिविनाकृताः ॥५१॥
न चलन्त्यखिला लोकाः स्वस्थमागात् कथञ्चन ।
अब्दे प्रजापतौ नूनं बहुसस्यार्घवृष्टयः ॥५२॥
प्रजाश्च सुखपूताः बान्धवजनैरतिथिभिः सह ।
प्रह्लिराब्दे ऽखिला लोका भूपाश्च फलदास्सुखा ॥ ५३॥
श्रीमुखाब्दे ऽखिला धात्री बहुसस्यार्घसयुता ।

राय बने या प्रभव चारि वो माननी । उनका फल—

प्रभवसंवत्सर में समस्त देश ईति रहित हो धनी (धान्य) भी उ त्पत्ति अच्छी हो राजा प्रसन्न रहें और प्रजा सुखी हो ॥ ४८ ॥ विभव संवत्सर में राजा दण्डनीति में तत्पर हो बहुत धान्य हो तथा अच्छी वर्षा सब लोग सुखी और वैर रहित हो ॥ ४९ ॥ शुक्लसंवत् में स्व जनों के साथ सब लोग सुखी हो राजा परस्पर जीतने की इच्छा से युद्ध करें ॥ ५० ॥ प्रमादसंवत में सब राजा और प्रजा प्रमत्त हो राग रहित भी भय रहित हो ईति और शत्रु का नाश हो ॥ ५१ ॥ प्रजा पति में मनुष्य अपना [illegible] मार्ग को भी न त्यागें, धनी भी ॥ ५२ ॥ [illegible] में [illegible] अतिथियों के [illegible] प्रजा [illegible] राजा [illegible] में [illegible] ॥ ५३ ॥ श्रीमुख में [illegible] भूमि [illegible]

अध्वरे निरता विप्रा वीतरोगा विवैरिणः ॥५४॥
भावाब्दे प्रचुरा रोगा मध्याः सस्यार्घवृष्टय. ।
राजानो युद्धनिरता-स्तथापि सुखिनो जनाः ॥५५॥
प्रभूतपयसो गावः सुखिनः सर्वजन्तवः ।
सर्वकामक्रियासक्ता युवाब्दे युवतीजनाः ॥५६॥
धातृवर्षेऽखिलाः क्ष्मेशाः सदा युद्धपरायणाः ।
सम्पूर्णा धरणी भाति बहुसस्यार्घवृष्टिभिः ॥५७॥
ईश्वराब्देऽखिलान् जन्तून् धात्री धात्रीव सर्वदा ।
पोपयत्यतुल चान्न फलमापेक्षुव्रीहिभिः ॥५८॥
अनीतिरतुला वृष्टि-र्बहुधान्याख्यवत्सरे ।
विविधैर्धान्यनिचयैः सम्पूर्णा चाखिला धरा ॥५९॥
न मुञ्चति पयोवाहः कुत्रचित्कुत्रचिज्जलम् ।
मध्यमा वृष्टिरर्घश्च नूनमब्दे प्रमाथिनि ॥ ६० ॥
विक्रमाब्दे धराधीशा विक्रमाक्रान्तभूमयः ।
सर्वत्र सर्वदा मेघा मुञ्चन्ति प्रचुरं जलम् ॥ ६१ ॥

ब्राह्मण यज्ञकर्म मे प्रवृत्त हों रोग और शत्रुता रहित हों ॥ ५४ ॥ भाव-वर्ष मे बहुत रोग हों, धान्य और वर्षा मध्यम हो, राजा युद्ध करें तो भी लोग सुखी हों ॥ ५५ ॥ युवावर्ष में गौ बहुत दूध दें, सब प्राणी सुखी हों और स्त्रीजन कामक्रिया म आसक्त हों ॥ ५६ ॥ धातावर्ष में सब राजा युद्ध के लिये तत्पर हों समस्त पृथ्वी वर्षा द्वारा धन धान्यसे पूर्ण हो ॥ ५७ ॥ ईश्वरवर्ष मे पृथ्वी सब प्राणियों को माता की समान फल, माप (उडद), ऊग (इक्षु), चावल (व्रीहि) आदि अनाज से पालन करे ॥ ५८ ॥ बहुधान्यवर्ष मे ईति रहित बहुत वर्षा हो, पृथ्वी अनेक प्रकार के अन्न से पूर्ण हो ॥ ५९ ॥ प्रमाथीवर्ष म वर्षा न वरस, कहीं कहीं मध्यम वर्षा और धान्य पैदा हो ॥ ६० ॥ विक्रमवर्ष में राजा पराक्रम

वृषभाऽखिला धर्मेशा युद्ध्यन्ते वृषभा इव ।
मत्ता प्रमत्ता विक्रान्ता ममन्ते यजतां सुरान ॥ ६२ ॥
चित्रभानौ वृष्टिमस्याद्धि विचित्रा निखिला धरा ।
निराकुलाखिला लोका भिन्नमानाश्च सत्सर ॥ ६३ ॥
सुभानुवत्सर भूमौ भूमिपानां च विग्रह ।
भाति भूरुग्मिमस्याश्च भुजङ्गमसमाकृति ॥ ६४ ॥
तपत्रिसिन्निखिला लोका-स्तरन्ति प्रतिपत्तनम् ।
नृपाहवे क्षणाद् रागाद् मयऽर्थ लारणेऽम्बके ॥ ६५ ॥
पार्थिवाब्दे च राजान सुखिन स्युभृशं जना ।
बहुभि फलपुष्पाद्यै विविधैश्च पयोधरै ॥ ६६ ॥
व्ययाब्दे निखिला लोका बहुव्ययपरा भृशम् ।
वीरमत्तेभतुरग-रथैर्भीतिश्च सर्वदा ॥ ६७ ॥
सर्वजित्वत्सर सर्वे जनास्त्रिदशसन्निभा ।
राजानो विलय यान्ति भीमसंग्रामभूमिषु ॥ ६८ ॥

से भूमिका भीतल नाश हो और सब जगह सर्वत्र बहुत वर्षा बरसे ॥ ६१ ॥ वृषभाब्दमें सब राजा मत्त वृषभकी समान युद्ध करें और मात्सर्य निरन्तर भक्ति युक्त होकर देव पूजन करें ॥ ६२ ॥ चित्रभानुवर्ष में अनेक प्रकारकी वृष्टि और धान्यसे समस्त पृथ्वी विचित्र वर्ण वाली हो और सब लोग प्रसन्न हों ॥ ६३ ॥ सुभानुवर्ष में पृथ्वी पर राजाओंमें विग्रह हो भूमि बहुत धान्यसे पूर्ण हो तो भी कालें नागकी जैसी भयंकर लगे ॥ ६४ ॥ तारणसंवत्सर में सब लोक राजाओंके युद्धमें घबरा कर हुए रागसे मुक्त होकर शहर तरफ जावें ॥ ६५ ॥ पार्थिववर्ष में राजा और प्रजा बहुत फल फूल धान्यसे और वर्षासे बहुत सुखी हों ॥ ६६ ॥ व्ययसंवत्सर में सब लोक बहुत खर्च करें और सर्वत्र सुभट मदोन्मत्त हाथी घोडे और रथों से पृथ्वी पर भय हो ॥ ६७ ॥ सर्वजित्संवत्सरमें देवों के समान मनुष्य हो और राजाओंका भयंकर संग्राम भूमिमें प्राय

सर्वधार्यब्देके भूपाः प्रजापालनतत्पराः ।
प्रशान्तवैराः सर्वत्र बहुसस्यार्घवृष्टयः ॥ ६९॥
शीतलादिविकारः स्याद् बालानां तस्करा जनाः ।
अल्पक्षीरास्तथा गावो विरोधश्च विरोधिनि ॥७०॥
मुष्णन्ति तस्करा लोकान् तीडाः स्युः शलभाः शुकाः ।
विकारकृद्जलवृष्टि-र्विकृतेऽब्दे प्रजारुजः ॥७१॥
स्वल्पा वृष्टिः स्वल्पधान्यं खण्डवृष्टिर्नृपक्षयः ।
छत्रभङ्गः प्रजापीडा खरेऽब्दे खरता जने ॥७२॥
सुभिक्षं सुखिनो लोका व्याधिशोकविवर्जिताः ।
नन्दनं च धनैर्धान्यै-र्नन्दने वत्सरे भवेत् ॥७३॥
युध्यन्ते भूभृतोऽन्योऽन्यं लोकानां च धनक्षयः ।
दुर्भिक्षं च क्वचित् स्वस्थं बहुसस्यार्घवृष्टयः ॥७४॥
जयमङ्गलघोषाद्यै-र्धरणी भाति सर्वदा ।
जयाब्दे धरणीनाथाः संग्रामे जयकाङ्क्षिणः ॥७५॥

त्यागें ॥ ६८ ॥ सर्वधारीवर्ष में वैररहित होकर राजा प्रजा के पालन में तत्पर हों, बहुत धन धान्य और जलवर्षा हों ॥ ६९ ॥ विरोधीवर्ष में बालकों को शीतलादि का रोग हो, लोक चोरी करें, गौए थोड़ा दूध दें ॥ ७० ॥ विकृतवर्ष में लोगों को चोर दुःख दे, टीड्डी शलभ शुक आदि विशेष हो, विकार करने वाली जलवर्षा हो और प्रजा को रोग हो ॥७१॥ खरसंवत्सरमें थोडी वर्षा, थोडा ही धान्य, खण्डवृष्टि, राजाका विनाश, छत्र-भंग, प्रजाको दुःख और मनुष्योंमें क्रूरता हो ॥ ७२ ॥ नन्दनवर्षमे सुभिक्ष, लोक सुखी, व्याधि और शोकसे रहित और धन धान्यमे सुखी हों ॥७३॥ विजयसंवत्सरमें राजा परस्पर युद्ध करें, लोगोंका धन क्षय हो, दुष्काल पडे, कहीं शान्तता और धन धान्य हो, वर्षा हो ॥ ७४ ॥ जयसंवत्सरमें जय मंगल के शब्दों से पृथ्वी सर्वदा शोभायमान हो, राजा संग्राम मे जय की

मन्मथाब्दे जना: सर्वे तस्करा अतिलालुपा: ।
मार्गशुश्रवगाधूमे नैपनाभिमवा धरा ॥७६॥
दुर्मुखाब्दे मध्यवृष्टि-रीतिचौराकुला धरा ।
महावीरा महीनाथा वीरवारणघातकैः ॥७७॥
हेमलम्बे त्वीतिभीति-र्मध्यमस्यार्घवृष्टय: ।
भाति भूर्भूपतिभाम: खड्गविद्युल्लताविभि: ॥७८॥
विलम्बिवत्सरे भूपा: परस्परविरोधिन: ।
प्रजापीडा त्वनर्थस्त्व तथापि सुखिनो जना: ॥७९॥
विकारिवर्षेऽखिला लोका: सरागा वृष्टिपीडिता: ।
पूर्वसस्यफलं स्वल्पं बहुलं चापरं फलम् ॥८०॥
शार्वरीवत्सरे पूर्णा धरा सस्यार्घवृष्टिभि: ।
जनाश्च सुखिन: सर्वे राजान: स्युर्निर्वैरिण: ॥८१॥
प्लवाब्दे निखिला धात्री वृष्टिभि: प्लवसन्निभा ।

कष्ट वाले हों ॥७५॥ मन्मथवर्षमें सब लोक बहुत लोभी और चोर हों धान्य ईख अन्न गेहूं मारिस नशोंको भाव दन वाली पृथ्वी हो ॥ ७६ ॥ दुर्मुखवर्ष में मध्यम वर्षा हो ईति और चोरोंसे पृथ्वी व्याकुल हो राजा वीर (सुभट) हाथी घोड़ों से महावैर करें ॥ ७७ ॥ हेमलम्बिवर्षमें ईतिका भय हो मध्यम वर्षा और थोड़ा धान्य हो पृथ्वी शोभित हो और राजा तलवाररूपी लता भारिसे युक्त हों ॥ ७८ ॥ विलम्बीवर्षमें राजा परस्पर विरोध करे प्रजा में पीड़ा और अनर्थ हो तो भी लोग सुखी हों ॥७९ ॥ विकारीवर्ष में समस्त लोग रोगी और वर्षासे दुःखी हों पहले धान्य फल फूल थोड़े हों और पीछे बहुत हों ॥ ८० ॥ शार्वरीवर्ष में पृथ्वी धन धान्य से पूर्ण हो सब मनुष्य सुखी हों और राजा वैररहित हों ॥८१ ॥ प्लववर्ष में समस्त पृथ्वी वर्षा से प्लव (पुर्गन्धितजलविशेष) सदृश हो सम्पूर्ण वर्षमें ईतिभय और रोग रहे ॥ ८२ ॥ शुभकृत्वर्ष में पृथ्वी

रोगाकुला त्वीतिभीतिः सम्पूर्णे वत्सरे फलम् ॥८२॥
शुभकृद्वत्सरे पृथ्वी राजते विविधोत्सवैः ।
आतङ्कचौरा भयदा राजानः समरोत्सुकाः ॥८३॥
शोभने वत्सरे धात्री प्रजानां रोगशोकदा ।
तथापि सुखिनो लोका बहुसस्यार्घवृष्टयः ॥८४॥
क्रोध्यब्दे त्वखिला लोकाः क्रोधलोभपरायणाः ।
ईतिदोषेण सततं मध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥८५॥
अब्दे विश्वावसौ शश्वद् घोररोगाकुला धरा ।
सस्यार्घवृष्टयो मध्या भूपाला नातिभूतयः ॥८६॥
पराभवाब्दे राज्ञां स्यात् समरः सह शत्रुभिः ।
आमयक्षुद्रसस्यानि प्रभूतान्यल्पवृष्टयः ॥८७॥
प्लवङ्गाब्दे मध्यवृष्टी रोगचौराकुला धरा ।
अन्योऽन्यं समरे भूपाः शत्रुभिर्हृतभूमयः ॥८८॥
कीलकाब्दे त्वीतिभीतिः प्रजाक्षोभो नृपाहवैः ।

अनेक उत्सवोंसे सुशोभित हो, भयदायक रोग और चोर हो, राजा युद्ध में उत्सुक हों ॥८३॥ शोभनवर्ष में पृथ्वी प्रजा को रोग शोक देने वाली हो तो भी लोक सुखी हो, बहुत धन धान्य और वर्षा हो ॥८४॥ क्रोधीवर्ष मे समस्त लोग क्रोध और लोभ परायण हों, ईति दोष से निरन्तर दुःख हो, मध्यम धान्य और वर्षा हो ॥८५॥ विश्वावसुवर्षमें पृथ्वी निरन्तर घोररोग से व्याकुल हो, मध्यम खेती और वर्षा हो और राजा सम्पत्ति वाले न हों ॥ ८६ ॥ पराभववर्ष में राजाओं का शत्रु के साथ युद्ध हों, रोग और क्षुद्र धान्य अधिक हो, वर्षा थोडी हो ॥ ८७ ॥ प्लवङ्गवर्ष में थोडी वर्षा हो, पृथ्वी रोग तथा चोरोंसे व्याकुल हो, राजा शत्रुके साथ युद्धमें प्रवृत्त हों ॥ ८८ ॥ कीलकवर्ष में ईतिका भय, प्रजामें क्षोभ, राजा में युद्ध हो तो भी लोक धन धान्य से बढे और वर्षा अच्छी हो ॥८९॥

तथापि भद्रसंज्ञः स्यात् सर्वधान्यसमृद्धिभिः ॥८९॥
सौम्याब्दे निखिला लोका बहुसस्यार्घवृद्धिभिः ।
विराजिता धराधीशा विप्राश्चान्यजनास्तथा ॥९०॥
साधारणाब्दे पृथ्वीशे भयं साधारणं स्मृतम् ।
विराजिता धराधीशाः प्रजाः सुस्वस्थमानसाः ॥९१॥
विरोधिकृद्वत्सरे तु परस्परविरोधिनः ।
सर्वे जना नृपाश्चैव मध्यमसस्यवृष्टयः ॥९२॥
मृधाद्या महारोगा मध्यमसस्यवृष्टयः ।
दुःखिता जन्तवः सर्वे वत्सरे परिधाविनि ॥९३॥
प्रमादिवत्सरे तत्र मध्यमसस्यवृष्टयः ।
प्रजाः दुःखिता जायन्ति समत्सराः क्षितीश्वराः ॥९४॥
आनन्दाब्देऽखिला लोकाः सदानन्दमानसाः ।
राजानः सुखिनः सर्वे बहुसस्यार्घवृष्टयः ॥९५॥
स्वस्वकार्ये रताः सर्वे मध्यमसस्यवृष्टयः ।
राक्षसाब्देऽखिला लोका राक्षसा इव निर्दयाः ॥९६॥

सौम्यवर्ष में समस्त संसार बहु धन धान्य से सुखी हो राजा वैर रहित हों और ब्राह्मण सत्कर्म में रत हों ॥ ९० ॥ साधारणवर्ष में राजा के लिये साधारण भय कहना और राजा वैररहित हों और प्रजा प्रसन्न मनवाली हों ॥ ९१ ॥ विरोधीवर्ष में सब राजा और प्रजा परस्पर विरोधी हों और मध्यम वर्षा हो ॥ ९२ ॥ परिधावीवर्ष में राजाओं में युद्ध बड़ा रोग मध्यम वर्षा और अन्न हो तथा सब प्राणी दुःखी हों ॥९३॥ प्रमादीवर्षमें मध्यम वर्षा प्रजा को दुःख और राजाओं में परस्पर वैर हो ॥ ९४ ॥ आनन्दवर्ष में सब लोक प्रसन्न चित्त रहें राजा सुखी हों और बहुत धान्य हो वर्षा अच्छी हो ॥ ९५ ॥ राक्षसवर्ष में सब अपने २ कार्यों में तल्लीन हों मध्यम वर्षा हो और सब लोक राक्षसकी जैसे दयारहित हों

नलाब्दे मध्यसस्यार्घं वृष्टिभिः प्रवरा धरा ।
नृपसंक्षोभसजाता भूरितस्करभीतयः ॥९७॥
पिङ्गलाब्दे त्वीतिभीति-मध्यसस्यार्घवृष्टयः ।
राजानो विक्रमाक्रान्ता भुञ्जन्ते शत्रुमेदिनीम् ॥९८॥
वत्सरे कालयुक्ताख्ये सुखिनः सर्वजन्तवः ।
सन्तीतयोऽपि सस्यानि प्रचुराणि तथाऽगदाः ॥९९॥
सिद्धार्थवत्सरे भूपाः शान्तवैरास्तथा प्रजाः
सकला वसुधा भाति बहुसस्यार्घवृष्टिभिः ॥१००॥
रौद्रेऽब्दे नृपसम्भूत-क्षोभक्लेशसमन्विते ।
सतत त्वखिला लोका मध्यमसस्यार्घवृष्टयः ॥१०१॥
दुर्मत्यब्देऽखिला लोका भूपा दुर्मतयः सदा ।
तथापि सुखिनः सर्वे सग्रामाः सन्ति चेदपि ॥१०२॥
सर्वसस्ययुता धात्री पालिता धरणीधरैः ।
पूर्वदेशविनाशः स्यात् तत्र दुन्दुभिवत्सरे ॥१०३॥

॥ ९६ ॥ नलसवत्सर मे मध्यम धान्य हो, वर्षासे पृथ्वी श्रेष्ठ हो, राजाओं मे क्षोभ पैदा हो और चोरों का बहुत भय हो ॥९७॥ पिङ्गलवर्ष मे ईति का भय हो, मध्यम वर्षा धर्म, राजा पराक्रमसे पूर्ण होकर शत्रु की पृथ्वी का भोग करें ॥ ९८ ॥ कालयुक्तवर्ष मे सब प्राणी सुखी हों, ईति का उपद्रव हो तो भी धान्य बहुत हों और रोग अधिक हों ॥ ९९ ॥ सिद्धार्थवर्ष में राजा और प्रजा शान्तवैर हों, सब पृथ्वी बहुत धन धान्य की वृद्धि और वर्षा से शोभायमान हो ॥ १०० ॥ रौद्रवर्ष में सब राजा क्षोभित और क्लेश वाले हों, सब प्राणियोंको भी क्लेश हो, मध्यम धान्य और वर्षा हो ॥ १०१ ॥ दुर्मतिवर्ष मे सब लोक और राजा दुष्ट बुद्धि वाले हों तो भी सब सुखी हों और सग्राम भी हो ॥ १०२ ॥ दुन्दुभिसवत्सर मे पृथ्वी धान्य से पूर्ण हो, राजा अच्छी तरह पृथ्वीका पालन करें और

रुधिरोद्गारिणि स्याधि प्रभूता स्युस्तथाऽऽमया ।
नृपसंग्रामसम्भूतम्पापदस्त्वखिला जनाः ॥१०४॥
रक्ताक्षवत्सरे भूपा अन्योऽन्यं हन्तुमुद्यताः ।
ईतिरोगाकुला धात्री स्वल्पसस्यार्घवृष्टयः ॥१०५॥
क्रोधनाब्दे मध्यवृष्टिः पूर्वसस्यविनाशनम् ।
सम्पूर्णमपरं सस्यं भूपाः क्रोधपराः सदा ॥१०६॥
क्षयाब्दे सर्वसस्यार्घ-वृष्टयः स्युः क्षयंगताः ।
तथापि लोका जीवन्ति कथञ्चिद् येन केनचित् ॥ १०७ ॥
एवं प्राचां वत्सराख्यानुसारि, वाच्यं प्राज्ञैस्तत्फलं भावयित्वा ।
तत्राऽप्यब्दे जीवराहुर्शिकेतु-चारं वारंवारमन्तर्विमृश्य ॥१०८॥

अथ रुद्रदेवब्राह्मणेन पार्वतीमुद्दिश्य ईश्वरवाक्येन कृता मेघमाला तस्यां विशेषः—

प्रथमा विंशतिर्ब्राह्मी द्वितीया वैष्णवी स्मृता ।

पूर्वदेश का विनाश हो ॥ १०३ ॥ रुधिरोद्गारीवर्ष में राजा युद्ध करें सब लोक दुःखी हों और बहुत आधि व्याधि फैलें ॥ १०४ ॥ रक्ताक्षि वर्ष में राजा परस्पर युद्ध के लिये तत्पर हों ईति और रोगों से पृथ्वी व्याकुल हो थोड़ी खेती और वर्षा हो ॥ १०५ ॥ क्रोधनवर्ष में मध्यम वर्षा हो पहले धान्यका विनाश हो परन्तु पीछे सम्पूर्ण धान्य पैदा हों राजा क्रोध में तत्पर हों ॥ १०६ ॥ क्षयसंवत्सर में समस्त धान्य और वर्षा का नाश हो तो भी किसी तरह से लोक प्राण धारण करें ॥ १०७ ॥ इस तरह प्राचीन विद्वानों के कहे हुए फलादेश का विचार कर और वर्ष में बृहस्पति राहु शनि और केतु के चालन का बारंबार हृदय से विचार कर वर्षों के नामसदृश फल कहना ॥ १०८ ॥

इति रामविनोदे षष्ठिसंवत्सरफलम् ।

रुद्रदेवब्राह्मण ने अपनी मेघमाला में साठ संवत्सर का फल विशेष करके

रौद्री तृतीया ह्यधमा स्वरूपानुसरत्फला ॥ १ ॥
बहुतोया महामेघा बहुसस्या च मेदिनी ।
बहुक्षीरघृता गावः प्रभवेऽब्दे वरानने ! ॥ २ ॥
प्रभवविभवप्रमोद-प्रजापति-अंगिराः ।
श्रीमुख-भाव-युवाख्य-धातृनामानो वत्सराः शुभाः ॥ ३ ॥
देवैश्च विविधाकारै-र्मानुषा वाजिकुञ्जराः ।
पीड्यन्ते नात्र सन्देहः शुक्ले संवत्सरे प्रिये ! ॥ ४ ॥

इतिवचनात शुक्लोऽशुभः । ईश्वरसंवत्सरे—

सुभिक्षं सर्वदेशेषु कर्पासस्य महर्घता ।
घृतं तैल मधु मद्य महर्घं स्यान्महेश्वरि ! ॥ ५ ॥

इयान् विशेषः—बहुधान्यसंवत्सरे सुभिक्षं निरुपद्रवम् । प्रमाथिनि दुर्भिक्षं, राष्ट्रभङ्गः, तस्करपीडा, विग्रहः । विक्रमे शुभं, सर्वधान्यनिष्पत्तिः, लवणं मधु मद्यं च समर्घं । वृषभना-

---

कहा है—प्रथमा ब्राह्मी, दूसरी वैष्णवी और तीसरी रौद्री। ये तीन साठ संवत्सर की विंशतिका (वीसी) हैं, वे अपने नामसदृश फलदायक हैं ॥ १ ॥ हे श्रेष्ठमुखवाली! प्रभववर्ष में पृथ्वी बहुत जलवाली, बहुत वर्षावाली और बहुत धान्यवाली हो। गौए बहुत घी दूध देनेवाली हों ॥ २ ॥ प्रभव, विभव, प्रमोद, प्रजापति, अंगिरा श्रीमुख, भाव, युवा और धातृ ये नव वर्ष शुभ हैं ॥ ३ ॥ हे प्रिये! शुक्लवर्ष में विविध आकार वाले देवों से हाथी और घोड़े वाले मनुष्य पीडित होते हैं, इसमें सन्देह नहीं ॥ ४ ॥ हे महेश्वरि! शुक्लवर्ष में अशुभ। ईश्वरवर्ष में सब देश में सुकाल हो और कपास घी तैल मधु और मद्य महँगे हों ॥ ५ ॥ बहुधान्यवर्ष में सुकाल हो और जगत् उपद्रव रहित हो। प्रमाथी वर्ष में दुष्काल, देशभङ्ग, चोरों से दुःख और विग्रह हो। विक्रमवर्ष में शुभ हो, सब तरह के धान्य पैदा हों, लूण (नमक) मधु और मद्य सस्ते हों। हे सुलोचने! वृषभवर्ष में कोद्रवा (कोदों)

संवत्सरे—"कङ्गा शालयो मुद्गा कगुलाश्चास्तथैव च ।
परिधानं सुभिक्षं स्यात् सुवृष्टं च सुलोचने" ! ॥ १ ॥
चणकं मुद्गमाषाश्च यवाश्च विदलं प्रिये ! ।
विचित्रा जायते वृष्टि श्चित्रभानौ न संशयः ॥ २ ॥ इति चित्रभानु
चित्रभानुसुभानू श्रेष्ठौ, तारणोऽशुभः, पार्थिवः शुभः ।
व्ययसंवत्सरे स्वल्पवृष्टी रोगपीडा धान्यसमता विग्रहः ।
इति प्रथमा ब्राह्मी विंशतिका ॥
नानापुष्पा भवेत् क्षोणी बहुसस्यसमन्विता ।
सुभिक्षं सुस्थिरं सर्वं सर्वजित्संवत्सरे प्रिये ! ॥ १ ॥
जलैश्च प्रबला भूमि—धान्यौषधिविनाशनम् ।
जायते मानुषे कष्टं सर्वधारिणि शोभने ॥ २ ॥
प्रजा च विकृता, धारा पीडिता व्याधितस्करैः ।
अल्पक्षीरघृता गावो विरोधिवत्सरे प्रिये ! ॥ ३ ॥
उपद्रुतं जगत्सर्वं तस्करैः शलभैस्तथा ।

शालि अर्थात् चावल मूंग कङ्गु आदि पैदा हों और सुकाल हो ॥ १ ॥ हे प्रिये ! चित्रभानुवर्ष में चना मूंग उड़द यव आदि धान्य पैदा हों और विचित्र वर्षा हो ॥ २ ॥ चित्रभानु और सुभानु ये दोनों वर्ष श्रेष्ठ हैं । तारणवर्ष अशुभ है । पार्थिववर्ष शुभ है । व्ययवर्ष में थोड़ी वर्षा रोग पीड़ा धान्य भाव समान रहे और विग्रह हो ॥ १ ॥ इति प्रथमा ब्राह्मीविंशतिका ॥

हे प्रिये ! सर्वजित्वर्ष में पृथ्वी जलसे और बहुत धान्य से पूर्ण हो सब यथास्थित सुकाल है ॥ १ ॥ हे शोभने ! सर्वधारीवर्ष में जल से पृथ्वी प्रबल हो धान्य और औषधियों का विनाश हो मनुष्यों को कष्ट हो ॥ २ ॥ हे प्रिये ! विरोधीवर्ष में व्याधि और चोरों से प्रजा अस्वस्थ दुःखी हो और गौएं थोड़ा घी दूध दें ॥ ३ ॥ हे पार्वति ! विकृतिवर्ष में समस्त जगत् चोर और शलभादि जन्तुओं से उपद्रवित हो और विकराल

विकृता जलवृष्टिः स्याद् विकृते हिमवत्सुते ! ॥४॥
अल्पोदकाः पयोवाहा वर्षन्ति खण्डमण्डले।
निष्पत्तिः स्वल्पधान्यानां खरे सवत्सरे प्रिये ! ॥५॥
सुभिक्षं जायते लोके व्याधिशोकविवर्जितम्।
धनधान्येषु सम्पूर्णा नन्दने नन्दति प्रजा ॥६॥
क्षत्रियाश्च तथा वैश्याः शूद्रा वा नटनायकाः।
पीडयन्ते च वरारोहे! जये दुर्भिक्षसम्भवः ॥७॥
मानुषाः सर्वदुःखार्त्ता ज्वररोगसमाकुलाः।
दुर्भिक्ष वा क्वचित्सुस्थं विजये वरवर्णिनि ! ॥८॥
तुषधान्यक्षयो देवि ! कोद्रवान्नमहर्घता।
व्यवहारप्रवृत्त्या तु मन्मथे सुखिनो जनाः ॥९॥
पीडयन्ते सर्वधान्यानि वर्षणेन यथेप्सितम्।
दुर्मुखे चैव दुर्भिक्षं समाख्यातं सुलोचने ! ॥१०॥
तस्करैः पार्थिवैर्देवि! अभिभूतमिदं जगत्।
सस्य भवति सामान्यं हेमलम्बे नगाङ्गजे ! ॥११॥

जलवर्षा हो ॥ ४ ॥ हे प्रिये ! खरवर्ष में कोई २ जगह ही वर्षा थोडी हो और धान्य भी थोडा पैदा हो ॥ ५ ॥ नन्दनवर्ष में सुकाल हो, प्रजा व्याधि शोक से रहित हो और धन धान्यसे आनन्दित हो ॥ ६ ॥ हे वरानने ! जयवर्ष में दुष्काल का सभव हो, क्षत्रिय वैश्य शूद्र और नट नायक आदि लोक दुखी हों ॥ ७ ॥ हे पार्वति ! विजयवर्ष मे सब लोक ज्वर आदि रोगों से दुखी हों और दुष्काल हो, कचितही यथास्थित रहै ॥ ८ ॥ हे देवि ! मन्मथवर्ष में धान्य और धान्य का विनाश हो, कोदों आदि धान्य महँगे हों और लोग व्यवहार में प्रवृत्त हों ॥ ९ ॥ हे सुलोचने ! दुर्मुखवर्ष में इच्छित वर्षा न होनेसे सब धान्य का विनाश हो इसलिये दुष्काल हो ॥ १० ॥ हे पार्वतीदेवि ! हेमलम्बिवर्ष में चोर और राजाओंसे जगत् पराभूत हो और

विषमस्थं जगत्सर्वं विविधापद्रवान्वितम् ।
मूषकैश्च शुकैर्देवि ! विलम्बे पीड्यते जनः ॥१२॥
स्वल्पादका जने मेघा धान्यमौषधपीडनम् ।
दुर्भिक्षं जायते सत्यं विकारिवत्सरे प्रिये ! ॥१३॥
पृथिव्यां असत्य शाखा भवे धान्ये च पीडनम् ।
मेघो न वर्षति प्रायः पीडा स्यान्मानुषी भुवि ॥१४॥
क्वचिच्च धान्यनिष्पत्ति-र्मण्डल निरुपद्रवम् ।
मेघाश्च चपला लोके प्लवे संवत्सरे प्रिये ! ॥१५॥
सुभिक्षं सर्वदेशेषु तृप्ता गौर्ब्राह्मणास्तथा ।
नन्दति च प्रजा सौख्ये शुभकृद्वत्सरे प्रिये ! ॥१६॥
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं विग्रहश्च महद्भयम् ।
क्रूरैर्वक्रगतैर्देवि ! शोभने वत्सरे प्रिये ! ॥१७॥
विषमस्थं जगत्सर्वं व्याधिरोगसमाकुलम् ।

धान्य सामान्य हो ॥ ११ ॥ हे देवि ! विलम्बवर्ष में सब जगत् अनेक प्रकार के उपद्रवोंसे अव्यवस्थित हो और चूहा तिड़ी आदि से लोक दुःखी हों ॥ १२ ॥ हे प्रिये ! विकारीवर्ष में दुष्काल हो वर्षा थोड़ी हो, धान्य और औषधि का नाश हो और धास पैदा हो ॥ १३ ॥ शार्वरीवर्ष में पृथ्वी में रस सूख जावे । अन धान्य का विनाश हो प्रायः मेघ न बरसे और जगत् में मनुष्यकृत दुःख हो ॥ १४ ॥ हे प्रिये ! प्लववर्षमें क्वचित् धान्य पैदा हो देश उपद्रव रहित हो और पृथ्वी पर प्रबल वर्षा बरसे ॥ १५ ॥ हे प्रिये ! शुभकृत्वर्ष में समस्त देश में सुकाल हो गौ ब्राह्मण तृप्त हों और सुख में प्रजा आनन्द करे ॥ १६ ॥ हे देवि ! शोभनवर्ष में सुकाल हो, कल्याण हो आरम्भ हो, यदि क्रूरग्रह वक्रगतिवाले हों तो विग्रह और बड़ा भय हो ॥१७॥ क्रोधिवर्ष में समस्त जगत् आधि व्याधि से व्याकुल हो कर अव्यवस्थ रहे और थोड़ी वर्षा हो ॥ १८ ॥ विश्वावसु वर्ष में समत्र कल्याण हो सब धा-

अल्पवृष्टिश्च विज्ञेया क्रोधः क्रोधिनि वत्सरे ॥१८॥
सर्वत्र जायते क्षेमं सर्वसस्यमहर्घता ।
निष्पत्तिः सर्वसस्यानां वृष्टिश्च प्रबला पुनः ॥१९॥
विश्वावसौ सुवृष्टिश्च काष्ठलोहमहर्घता ।
पार्थिवाश्च माण्डलिका सामन्ता दण्डनायकाः ॥२०॥
पीडिताश्च प्रजाः सर्वाः क्षुधार्त्ताः स्युः पराभवे ।
धान्यौषधानि पीड्यन्ते ग्रीष्मे वर्षति माधवः ॥२१॥
। इति द्वितीया वैष्णावीविंशतिका ।
प्लवङ्गे पीडिता लोकाः सर्वे देशाश्च मण्डलाः ।
जायन्ते सर्वसस्यानि कुत्रापि निरुपद्रवः ॥१॥
सौम्यदृष्टिर्भवेद् राजा कीलके च शुभं भवेत् ।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं सर्वोपद्रववर्जितम् ॥२॥
सौम्ये राजा प्रजा सौम्या भुवि सौम्यं प्रवर्त्तते ।
तोयपूर्णा मही मेघै-र्महावर्षा दिने दिने ॥३॥

न्य तेज हों, प्रबल वर्षा बरसे और सब धान्य पैदा हों ॥ १९ ॥ पराभववर्ष में अच्छी वर्षा हो, काष्ट और लोहा तेज हो, देशका राजा माण्डलिकराजा, सामन्त और दण्डनायक आदि दुःखी हों, सब प्रजा क्षुधा से दुःख पावे, धान्य और औषधि का नाश हो और ग्रीष्मऋतु मे वर्षा बरसे ॥ २०-२१ ॥ इति द्वितीया वैष्णवी विंशतिका ।

प्लवङ्गवर्ष में सब देशके और प्रान्तके लोग दुःखी हों कोई जगह उपद्रव रहित भी हो और सब धान्य पैदा हों ॥ १ ॥ कीलकवर्ष में शुभ हो, राजा अच्छी नीतिवाले हों सुकाल हो, लोग कल्याणवाले आरोग्यवाले और उपद्रवरहित हों ॥ २ ॥ सौम्यवर्षमें राजा और प्रजा सुखी हों, पृथ्वी पर सुख फैलें, पृथ्वी वर्षा से पूर्ण हो और प्रत्येक दिन बडी वर्षा हो ॥ ३ ॥ साधारण वर्ष में राजा उपद्रव रहित हो, देश और प्रान्त मे जल वर्षा हो और

निरुपद्रवा भूपाला सर्व सस्य प्रजायते ।
साधारणे मेघवधा देशे स्यात् खण्डमण्डले ॥४॥
परस्पर विरोध' स्या-न्नजनानां भूभुजां तथा ।
कान्यकुब्जे स्वहिच्छत्र कृपिनाशो विरोधिनि ॥५॥
अभिभूतं जगत्सर्वं क्लेशैश्च विविधै प्रिये ॥
मारुता बहुदाहश्च परिधाविनि सुव्रते ! ॥६॥
निष्पत्ति सर्वसस्यानां सुभिक्षं जायते तथा ।
प्रमाथिवर्षे वर्षा स्यात् देशे वा खण्डमण्डले ॥७॥
नश्यन्ति सर्वधान्यानि सर्वसस्यमहर्घता ।
घृतं तैल समर्घत्या-दानन्दे नन्दिता प्रजा ॥८॥९००॥
कद्रवा' शालयो मुद्गा' पीडयन्ते ते वरानने ! ।
सर्वौषधीनां धान्यानि राक्षसे निष्ठुरा जना' ॥९॥
दुर्भिक्षं जायते देशे धान्यौषधिप्रपीडनम् ।
नश्यन्ति धनधान्यानि देवि ! क्वापि मलाम्बिध ॥१०॥
गोमहिष्या विनश्यन्ति ये धान्ये नटनर्तका ।

सब धान्य उत्पन्न हो ॥४॥ विरोधिवर्षमें प्रजाका और राजाका परस्पर विरोध हो कान्यकुब्ज और अहिच्छत्र देशमें खेतीका नाश हो ॥ ५ ॥ हे सुशीले प्रिये परिधावीवर्षमें सब जगत् अनेक प्रकारके क्लेशोंसे व्याप्त हो वायु चले और बहुत दाह हो अर्थात् जगहँ जगहँ आग लगे ॥६॥ प्रमाथिवर्ष में सब प्रकारके धान्य पैदा हों सुकाल हो देश या प्रान्तमें वर्षा हो ॥ ७ ॥ आनन्दवर्षमें सब धान्य विनाश हो और तेज भी हो घी तेलका भाव समान रहे प्रजा आनन्दित रहे ॥ ८ ॥ हे वरानने! राक्षसवर्षमें कोदव चावल मूंग सब प्रकारके औषध और धान्यका विनाश हो मनुष्य क्रूर स्वभाव के हों ॥ ॥ ९ ॥ हे देवि! नलवर्षमें देश में दुष्काल हो धन धान्य और औषधियों का विनाश हो ॥ १ ॥ पिङ्गलवर्ष मे गौ भैंस और नाच करने वाले नट

माधवो नैव वर्षेच्च पिङ्गले नात्र संशय ॥११॥
गोमहिष्यो हिरण्य च रौप्य नाम्रं·विशेषतः ।
सर्वस्वमपि विक्रीय कर्त्तव्यो धान्यसंग्रहः ॥१२॥
तेन सजायते देवि ! दुर्भिक्ष क्रमतो जने।
पश्चाद् वर्षति मेघोऽपि सर्वधान्य प्रजायते ॥१३॥
जायन्ते बहुला रोगाः कालसवत्सरे प्रिये ! ।
अल्पोदकास्तथा मेघा अल्पसस्या च मेदिनी ॥१४॥
तोयपूर्णो भवेद् मेघो बहुसस्या वसुन्धरा ।
निष्ठुरा पार्थिवा देवि! रौद्रे रौद्र प्रवर्त्तते ॥१५॥
सुभिक्ष समता धान्ये व्यवहारो न वर्त्तते ।
जायते मध्यमा वृष्टिर्दुर्मतौ वत्सरे सति ॥१६॥
सुभिक्षं जायते स्वस्थ-देशाश्च निरुपद्रवाः ।
प्रजानां सुखितारोग्यं जाते दुन्दुभिवत्सरे ॥१७॥
सर्वस्वमपि विक्रीय कर्त्तव्यो धान्यसंग्रहः ।
रुधिरोद्गारिवर्षे च दुर्भिक्षं भविता महत् ॥१८॥

आदिका विनाश हो, वर्षा न बरसे इस में संशय नहीं ॥ ११ ॥ गौ भैंस सोना चादी और तांबा आदि वेच कर भी धान्य का सग्रह करना चाहिए ॥ १२ ॥ हे देवि! इस से क्रमश दुष्काल होगा मगर पीछे से वर्षा भी बरसेगी और सब धान्य भी पैदा होगा ॥ १३ ॥ हे प्रिये! कालवर्ष में बहुत प्रकार के रोग फैलें, वर्षा थोडी हो और पृथ्वी पर धान्य भी थोडा हो ॥ १४ ॥ हे देवि! रौद्रवर्ष में जलसे पूर्ण मेघ हो, पृथ्वी बहुत धान्य वाली हो, राजा निष्ठुर हों और घोर उपद्रव हो ॥ १५ ॥ दुर्मतिवर्षमें सुकाल हो, धान भाव समान रहै, व्यापार ठीक न चलै और मध्यम वर्षा हो ॥ १६ ॥ दुन्दुभीवर्ष में सुकाल हो, देश उपद्रव रहित स्वस्थ हो, प्रजा सुखी और आरोग्यवाली रहै ॥ १७ ॥ रुधिरोद्गारीवर्षमें बड़ा दुष्काल हो,

धान्यनाशः स्वल्पवर्षा नृपाणां दारुणो रणः ।
तस्करा बहुला रोगा रुधिरोद्गारिवत्सरे ॥१९॥
रोगान्मृत्युश्च दुर्भिक्षं धान्यौषधक्षयीकरम् ।
पापबुद्धिरता लोका रक्ताक्षिवत्सरे प्रिये ! ॥२०॥
ननु रोगाश्च दुर्भिक्षं विविधापद्रवास्तथा।
कोपश्च लोके नृपेषु सञ्जाते क्रोधने प्रिये ! ॥२१॥
मेदिनीचलनं देवि ! व्याकुलाश्च चराचराः ।
देशभङ्गश्च दुर्भिक्षं क्षयाख्ये क्षीयते प्रजा ॥२२॥
सौराष्ट्रे मध्यदेशे च दक्षिणस्यां च कौङ्कणे।
दुर्भिक्षं जायते घोरं क्षये संवत्सरे प्रिये ! ॥२३॥
इति रौद्रीयमेघमाला शिवकृता ।
अथ जैनमते दुर्गदेवः स्वकृतषष्टिसंवत्सरग्रन्थे पुनराह—
ॐ नमः परमात्मानं वन्दित्वा श्रीजिनेश्वरम् ।

जो कुछ भी हो वह सब का धान्य का संग्रह करना अच्छा है ॥ १८ ॥ धान्य का नाश हो थोड़ी वर्षा हो राजाओं का बड़ा घोर युद्ध हो बहुत चोर और रोग हो ॥ १९ ॥ हे प्रिये ! रक्ताक्षिवर्ष में रोगसे बहुत प्राणी मरें दुष्काल हो धान्य और औषधियों का नाश हो और लोग पापबुद्धि वाले हों ॥ २० ॥ हे प्रिये ! क्रोधनवर्ष में निश्चयसे रोग और दुष्काल हो अनेक प्रकारके उपद्रव हों लोगोंमें बहुत क्रोध हो ॥२१॥ हे देवि ! क्षयसंवत्सरमें भूकम्प हो पृथ्वी चराचर व्याकुल हो देशभङ्ग हो दुष्काल हो और प्रजा का नाश हो ॥ २२ ॥ सौराष्ट्र मध्यदेश और दक्षिण में कोङ्कणदेश आदि में बड़ा दुष्काल हो ॥ २३ ॥ इति रौद्रीयमेघमाला पूर्णाया शिवलिखित ॥

पञ्च परमेष्ठी के वाचक ॐकार को नमस्कार करके, तथा परमात्मा जिनेश्वर देव को वन्दन करके और केवलज्ञान का आश्रय लेकर दुर्गदेवमुनि

केवलज्ञानमास्थाय दुर्गदेवेन भाष्यते ॥ १ ॥
पार्थ उवाच–भगवन् दुर्गदेवेश! देवानामधिप! प्रभो ! ।
भगवन् कथ्यतां सत्यं संवत्सरफलाफलम् ॥ २॥
दुर्गदेव उवाच–शृणु पार्थ ! यथावृत्त भविष्यन्ति तथाद्भुतम् ।
दुर्भिक्ष च सुभिक्षं च राजपीडा भयानि च ॥ ३ ॥
एतद् योऽत्र न जानाति तस्य जन्म निरर्थकम् ।
तेन सर्वं प्रवक्ष्यामि विस्तरेण शुभाशुभम् ॥ ४ ॥

प्रभवविभवौ शुभौ, शुक्लोऽशुभः, प्रमोदप्रजापती शुभौ, अङ्गिरा अशुभः, श्रीमुखभावौ शुभौ, युवा विरुद्धः, धाता समः, ईश्वरबहुधान्यौ शुभौ, प्रमाथी विरुद्धः, विक्रमवृषभौ शुभौ, चित्रभानुर्विरुद्धः, सुभानुतारणौ शुभौ, पार्थिवो विरुद्धः, व्ययः समः ॥ इति प्रथमा विंशतिका ॥

भणियं दुग्गदेवेण जो जाणइ वियक्खणो ।
सो सव्वत्थ वि पुज्जो णिच्छयओ लद्धलच्छी य ॥ १ ॥

कहते हैं ॥ १ ॥ पार्थ उवाच–हे परमपूज्यवर्य्य भगवन् दुर्गदेवेश ! संवत्सर का फलाफल सत्यतापूर्वक कहो ॥ २ ॥ दुर्गदेव उवाच–हे पार्थ ! दुष्काल सुकाल राजपीडा भय अभय आदि होंगे उनका यथार्थ अद्भुत वर्णन सुन ॥ ३ ॥ उसको जो नहीं जानता है उसका जन्म व्यर्थ है, इसलिये मैं सब शुभाशुभ को विस्तार पूर्वक कहता हूँ ॥ ४ ॥ प्रभव और विभववर्ष शुभ हैं, शुक्लवर्ष अशुभ है, प्रमोद और प्रजापति वर्ष शुभ हैं अङ्गिरा अशुभ है, श्रीमुख और भाववर्ष शुभ है, युवावर्ष विरुद्ध है, धाता समान है, ईश्वर और बहुधान्यवर्ष शुभ हैं, प्रमाथी विरुद्ध है, व्यय समान है, ॥ इति प्रथमा विंशतिका ॥

दुर्गदेव मुनि ने जो कहा है, उसको यदि विचक्षण पुरुष जाने तो वह सर्वत्र माननीय होता है और निश्चय से लक्ष्मी को प्राप्त करता है ॥ १ ॥

सर्वजित्सर्वधारिणौ शुभौ, विरोधिविकृतखरा विरुद्धा, नन्दनविजयजयमन्मथा शुभा, दुर्मुखा विरुद्ध, हेमलम्बिविलम्बी शुभौ, विकारी विरुद्ध, शर्वरीप्लवशुभकृच्छोभनाख्या शुभा, क्रोधनो विरुद्ध विश्वावसु शुभ, पराभवो विमध्यो ॥ इति द्वितीयविंशतिका ॥

प्लवङ्गकीलको शुभौ, सौम्य सम, साधारणविरोधिनौ शुभौ, परिधावी विरुद्ध, प्रमाथी आनन्दश्च शुभ, रुधिरोद्गारीरक्ताक्षिक्रोधनक्षयाख्या विरुद्धा ॥ इति तृतीयविंशतिका ॥

अत्र श्लोका अपि—प्रभवाद्यवरा मेघा प्रभूतसस्या च मेदिनी।
प्रशान्ता पार्थिवा लोका प्रभवे वत्सरं ध्रुवम् ॥१॥
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं सर्वव्याधिविवर्जितम्।
दृष्टतुष्टा जना सर्वे विभवे च न संशय ॥२॥

सर्वजित् और सर्वधारी वर्ष शुभ हैं विरोधी विकृत और खरवर्ष विरुद्ध है नन्दन विजय जय और मन्मथ शुभ है दुर्मुख विरुद्ध है हेमलम्बि और विलम्ब शुभ है विकारी विरुद्ध है शर्वरी प्लव शुभकृत् और शोभन य शुभ है क्रोधन विरुद्ध है विश्वावसु शुभ है पराभव विमध्य कारक है ॥ इति दूसरी विंशतिका ॥

प्लवङ्ग और कीलक शुभ है सौम्य समान है साधारण और विरोधी शुभ है परिधावी विरुद्ध है प्रमाथी और आनन्द शुभ है रुधिरोद्गारी रक्ताक्षि क्रोधन और क्षय य वर्ष विरुद्ध है ॥ इति तीसरी विंशतिका ॥

प्रभववर्ष में वर्षा अधिक कम निश्चयसे पृथ्वी पर धान्यविशेष हो राजा और प्रजा प्रसन्न रहे ॥ १ ॥ विभववर्ष में सुकाल हो कल्याण तथा आरोग्य हो सब व्याधियों से रहित हों और सब लोग प्रसन्न हैं इसमें संशय नहीं ॥ २ ॥ शुक्लवर्ष में मनुष्य घोड़ा और हाथी इनको अनेक

संवत्सराधिकार. (१११)

रोगाश्च विविधाश्चैव नराणां वाजिदन्तिनाम् ।
पृथ्वीपत्तिविनाशश्च ध्रुवं शुक्ले प्रजायते ॥३॥
उत्तमं च जगत्सर्वं धनधान्यसमाकुलम् ।
नित्योत्सवः प्रजावृद्धिः प्रमोदे नात्र संशयः ॥४॥
नीरोगाश्च निराबाधाः सर्वदुःखविवर्जिताः ।
बहुक्षीरघृता गावः प्रजासुखं प्रजापतौ ॥५॥
हर्षितं च जगत्सर्वं नरा निर्धनधान्यकाः ।
प्रजाविवाहमाङ्गल्य-मङ्गिरायां तु निश्चितम् ॥६॥
सुभिक्षं कुशलं लोके वर्षाकालेऽतिशोभनम् ।
वृद्धिश्च सर्वसस्यानां श्रीमुखे सति निर्णयात् ॥७॥
बहुक्षीरघृता गावो धान्यं च प्रचुरं स्मृतम् ।
समर्घं च भवेत् सर्वं भावे भावेषु सुस्थता ॥८॥
महर्घं जायते धान्यं घृतं तैलं तथैव च ।
प्रजानां जायते वृद्धिर्युवा युवतिनन्दनः ॥९॥

प्रकार के रोग हों और राजा का विनाश हो ॥ ३ ॥ प्रमोदवर्ष में समस्त जगत् उत्तम धन धान्य से पूर्ण हो, सर्वदा शुभोत्सव हो और प्रजा की वृद्धि हो इसमें संशय नहीं ॥ ४ ॥ प्रजापति वर्ष में सब लोग रोग रहित बाधा रहित और सब प्रकार के दुःख रहित हों, गौए बहुत घी दूध दें और प्रजा सुखी हो ॥ ५ ॥ अङ्गिरावर्षमें समस्त जगत् आनन्दित हों, मनुष्य धन धान्य से रहित हों और प्रजामें विवाह मङ्गल वर्तें ॥ ६ ॥ श्रीमुखवर्षमें जगत्में सुकाल और कल्याण हों, वर्षाऋतुमें बडी मनोहरता हो और सब प्रकारके धान्यकी वृद्धि हो ॥ ७ ॥ भाववर्षमें गौए बहुत दुध घी दे, बहुत धान्य पैदा हों और सब वस्तुके भाव सस्ते हों ॥ ८ ॥ युवावर्षमे धान्य तेज हो तथा घी तेल भी तेज हों प्रजाकी वृद्धि और युवा स्त्री पुरुष प्रसन्न रहे ॥ ९ ॥ धातृसंवत्सरमे गेहूँ चावल आदि सब धान्य...

आयन्ते सर्वसस्यानि गावूमा व्रीहिरण्यका ।
इक्षुखण्डगुडा रागा मातृमयस्सर कचित् ॥१०॥
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं कपासस्य महर्घता ।
लवण मधुमद्य च महर्घमीश्वर भवेत् ॥११॥
सुभिक्षं क्षेमता मार्गे प्रशान्ता पार्थिवा यत ।
तस्करोपद्रवा ग्रामे बहुधान्ये न संशय ॥१२॥
राष्ट्रभङ्गश्च दुर्भिक्षं तस्करप्रहपीडनम् ।
डामरं विग्रहो मार्गे प्रमाथी जनमन्थन ॥१३॥
आयन्ते सर्वसस्यानि मेदिनी निरुपद्रवा ।
लवणंमधुमद्याज्यं समर्घं विक्रमे भवेत्॥१४॥महर्घमितिक्वचित्
कोद्रवा शालयो मुद्गा कङ्गुमाषास्तिलादय
सुलभं च भवेत् सर्वं वृषभे वृषभा प्रिया ॥१५॥
चणका मुद्गमाषाद्या-स्तधान्यवृद्धिदल ध्रुवम् ।
महर्घं जायते सर्वं चित्रभानौ न संशय ॥१६॥

पैदा हों इक्षु और गुड पैदा हो और कचित् रोगका संभव रहे ॥ १० ॥ ईश्वरवर्षमें सुकाल हो मांगलिक कार्य और आरोग्य हो कपास का भाव तेज हो तथा लूण मधु और मद्यका भाव भी तेज हो ॥ ११ ॥ बहुधान्यवर्षमें सुकाल हो मार्गमें कल्याण हो राजा शान्त रहें गाँवमें चोरों-का उपद्रव हो इसमें संशय नहीं ॥ १२ ॥ प्रमाथीवर्षमें राष्ट्रभङ्ग और दुष्काल हो चोरों का उपद्रव हो घोर विग्रह हो और मार्गमें लोग कष्ट पावें ॥ १३ ॥ विक्रमवर्षमें सब प्रकार के धान्य उत्पन्न हों पृथ्वी उपद्रव रहित हो लूण मधु, मद्य और घी सस्ता हों ॥ १४ ॥ वृषभवर्षमें वृषभ (बैल) प्रिय हो कोद्रवा चावल मूंग कंगु उडद और तिल आदि सस्ते हों ॥ १५ ॥ चित्रभानुवर्षमें चणा मूंग उडद आदि सब द्विदलधान्य निश्चय से मंहगे हों इसमें संशय नहीं ॥ १६ ॥ सुभानुवर्षमें सुकाल हो बहुत धा–

सुभिक्षं बहुधान्यानि स्वस्था देशा नृपाः प्रजाः ।
सर्वेऽपि सुखिनो हर्षो-ज्जाते सुभानुवत्सरे ॥१७॥
अतिवृष्टिः प्रजासौख्यं धान्यौषध्यः प्रपीडिताः ।
सत्यं भवति सामान्यं धान्यं किञ्चित्तु तारणे ॥१८॥
बहुसस्यानि जायन्ते सौराष्ट्रे गौडमण्डले ।
लाटदेशे तथा धान्यं पार्थिवे पार्थिवक्षयः ॥१९॥
दुर्भिक्षं जायते घोरं विविधोपद्रवो जने ।
अल्पवृष्टिः समाख्याता व्यये संवत्सरोदये ॥२०॥

इति प्रथमा विंशतिका ।

वर्षन्ति सोद्यमा मेघाः सर्वसस्य प्रजायते ।
समर्घं च भवेत् सर्वं सर्वजिद्वत्सरे स्मृतम् ॥२१॥
कोद्रवाः शालयो मुद्गाः कङ्गुमाषादयो घनाः ।
सुभिक्ष सर्वदेशेषु सर्वधारिणि वत्सरे ॥२२॥
ज्वालाग्निप्रबलात्तापाद् धान्यौषध्यः प्रपीडिताः ।

न्य हो, देशमे शान्ति रहै, राजा और प्रजा सब सुखी तथा प्रसन्न हों ॥ १७ ॥ तारणवर्षमें बहुत वर्षा हो, प्रजासुखी धान्य और औषधका नाश तथा धान्य सामान्य हो ॥ १८ ॥ पार्थिववर्षमे सोरठदेश, गोडदेश और लाटदेशमें बहुत धान्य पैदा हों, तथा राजाका विनाश हो ॥ १९ ॥ व्ययसंवत्सरमे घोर दुष्काल हो, मनुष्योंमें अनेक प्रकारके उपद्रव हों ओर थोडी वर्षा हो ॥ २० ॥ इति प्रथमा विंशतिका ॥

सर्वजित्वर्षमे फलीभूत वर्षा बरसे, सब धान्य पैदा हों और सब चीज वस्तु सस्ती हों ॥२१॥ सर्वधारीवर्षमें कोद्रव, चावल, मूंग, कङ्गु, उडद आदि बहुत धान्य पैदा हों और सर्वत्र सुकाल हो ॥२२॥ विरोधी-वर्षमें अग्निकी ज्वालाका प्रबर तापसे धान्य और ओषधियोंका विनाश हो

जायत च मृगां कष्टं विरोधा वा विरोधिनि ॥२३॥
सर्वत्र जनपीडा स्यात् ज्वराद्यान्यमहर्घता ।
गिरार्तिश्चसुरागादि विकृतिर्वैकृत मयत ॥२४॥
उपप्लुत जगत् सर्व तस्करैः शलभैः शुकैः ।
प्रपीडिता प्रजा भूपा स्वरऽतिस्वरता भुवि ॥२५॥
स्वस्थता जायत भूशे व्याधिः सर्वोऽपि शाम्यति ।
धनधान्यवती भूमि नन्दन नन्दति प्रजा ॥२६॥
अल्पतायधरा मेघा वर्षन्ति खण्डमण्डले ।
मद्यन्ति सवसस्यानि विजये विजया रणे ॥२७॥
क्षत्रियाश्च तथा वैश्या शूद्रा ये नटनायकाः ।
पीडयन्त नीडसङ्ग्रामो जये न्यायपरिक्षय ॥२८॥
मराग जायते विश्वं दायश्मरादिरागत ।
पीडयन्ते च जगत् सर्व मन्मथ मन्मथक्रिया ॥२९॥
तुषधान्यक्षयश्चैव सवधान्यमहर्घता ।

और मनुष्योंमें दुःख तथा विरोध हो ॥ २३ ॥ विकृतिवर्षमें सब जगह मनुष्योंको दुःख ज्वरादिरोग हो धान्य महँग हों मयमें तथा आँख में राग का विकार हो ॥ २४ ॥ खरवर्षमें समस्त जगत् चोर शलभ और शुक करके उपद्रवित हो राजा तथा प्रजा दुःखी हो और भूमि स्वरसरहित हो ॥ २५ ॥ नन्दनवर्षमें देश प्रसन्न हो सब प्रकारके रोगोंकी शान्ति हो पृथ्वी धन धान्यसे पूर्ण हो और प्रजा आनन्दित रहे ॥ २६ ॥ विजयवर्ष में खण्डमण्डलमें थोडी वर्षा हो सब धान्यका विनाश हो और युद्धमें विजय हो ॥ २७ ॥ जयवर्षमें क्षत्रिय वैश्य शूद्र भी नट नायक आदिक दुःखी हों नीतिका प्रचार और न्याय नीतिका विनाश हो ॥ २८ ॥ मन्मथवर्षमें जगत् रोग रहित हो दाह ज्वरादिसे सब जगत् दुःखी हो तथा काम क्रीडा में व्यग्र रहे ॥ २९ ॥ दुर्मुखवर्षमें धान्य तथा धान्यका विनाश,

व्यवहारविनाशश्च दुर्मुखे न सुखं क्वचित् ॥३०॥
क्षीयन्ते सर्वसस्यानि देशेषु च न सुस्थता ।
हेमलम्बे प्रजाहानि-र्दुर्भिक्षं राजपीडनम् ॥३१॥
तस्करैः पार्थिवैर्देवैः पराभूतमिदं जगत् ।
अर्घो भवति सामान्यो विलम्बे तु महद्भयम् ॥३२॥
दुःखितं च जगत् सर्वं बहुधा स्युरुपद्रवाः ।
विकारिवत्सरे सापाः वर्षा वर्षेऽत्र पश्चिमा ॥३३॥
पर्वते पर्वते वृष्टि-र्देशेऽपि खण्डमण्डले ।
व्यापारस्य विनाशश्च दुर्भिक्षं शर्वरीकृतम् ॥३४॥
सुभिक्षं जायते लोके मेदिनी तुष्यति ध्रुवम् ।
प्लाव्यन्ते सर्वतो नीरैः पण्डिता अपि मानवाः ॥३५॥
शोभनानि च धान्यानि सुखं लोके चराचरे ।
ब्राह्मणा अपि सन्तुष्टाः शुभकृद्वत्सरे सति ॥३६॥
सुभिक्षं सुखसोत्साह-महीगोब्राह्मणादयः ।

सब प्रकारके धान्य तेज, व्यवहार (व्यापार) का विनाश और सुख क्वचित ही हो ॥ ३० ॥ हेमलम्बिवर्षमें सब धान्य विनाश हो, देशमें शान्ति न रहे, प्रजाका विनाश हो, दुष्काल पड़े और राजाको कष्ट हो ॥ ३१ ॥ विलम्बिवर्षमें चोर, राजा और देवोंसे यह जगत् पराभूत हो, धान्य सामान्य और बड़ा भय हो ॥ ३२ ॥ विकारीवर्षमें सब जगत दुःखी हो, अनेकप्रकारके सापादि उपद्रव हो और पश्चिममें वर्षा हो ॥ ३३ ॥ शर्वरीवर्षमें पर्वत पर्वत पर और देश तथा खण्डमें वर्षा हो, व्यापार ठीक न चले और दुष्काल हो ॥ ३४ ॥ प्लववर्षमें जगत्में सुकाल हो पृथ्वी सब तरह जलसे पुष्ट हो, बुद्धिमान् लोग भी प्रसन्न रहे ॥ ३५ ॥ शुभकृतवर्षमें चराचर जगत्में सुख और अच्छे २ धान्य पैदा हो और ब्राह्मण सन्तुष्ट रहे ॥ ३६ ॥ शोभनवर्षमें सुकाल, पृथ्वी सुखमय, गौ ब्राह्मण आदि सुखी, देशमें शान्ति----

देशाः सुस्थाः प्रजाहृष्टा सर्वे स्याच्छोभनं जने ॥३७॥
विक्रमवर्षे जगत् सर्वं व्याकुलं दारुणाद् रणात् ।
दशे शान्ती कुटुम्बे च माथी क्रोधपरं परम् ॥३८॥
सर्वत्र जायते क्षेमं सर्वरसमहर्घता ।
विश्वावसौ सस्यवृद्धिः काष्ठलोहमहर्घता ॥३९॥
पार्थिवे मण्डले सुखं सामन्ते खण्डमण्डले ।
पीडिताश्च प्रजाः सर्वाः भयभीताः पराभवे ॥४०॥

इति द्वितीया विंशतिका ।

तृणधान्यक्षयश्चैव ग्रीष्मे धान्यमहर्घता ।
प्लवङ्गे पीड्यते भूपैः स्वसंग परमण्डलम् ॥४१॥
जायन्ते सर्वसस्यानि सुस्थता नास्त्युपद्रवः ।
शाम्यन्ते च राजानः कीलके केलिविभ्रमम् ॥४२॥
मेरवा सौम्यवृष्टिश्च सुभिक्षं निरुपद्रवम् ।
सौम्यदृष्टिर्भवेद् राजा साम्ये सौम्यप्रवर्तते ॥४३॥

और प्रजा हर्षित हो ॥ ३७ ॥ विक्रमवर्षमें सब जगत् अव्यवस्थित और घोर युद्धसे व्याकुल हो, दश शांति और कुटुम्बमें परस्पर क्रोध हो ॥ ३८ ॥ विश्वावसुवर्षमें सब जगह कल्याण हो, सब रसनाम फलाव महँगे हों, धान्यकी वृद्धि और काष्ठ तथा लोहकी मंदी हो ॥ ३९ ॥ पराभववर्षमें देशमें तथा प्रान्तमें मुख्य अधिकारियोंमें सब प्रजा दुःखी और भयभीत हो ॥ ४० ॥ इति दूसरी विंशतिका ।

प्लवङ्गवर्षमें घास और धान्यका विनाश होनेसे ग्रीष्मऋतुमें सब भाव हो, राजाओंमें स्वप्नसा और परस्पर दुःखी हो ॥ ४१ ॥ कीलकवर्षमें सब धान्य पैदा हों, उपद्रव सब शान्त हो, राजा शान्त दृष्टिवाले हों और कुछ क्रीडा करनेवाले हो ॥ ४२ ॥ सौम्यवर्षमें बहुत अच्छी वर्षा हो, उपद्रव रहित सुकाल हो, राजा शान्त दृष्टिवाले हों और सर्वत्र सुख चैन

तोयपूर्णा भुवि मेघा वर्षन्ति च निरन्तरम्।
साधारणे लोकहर्षः सर्वसस्यं प्रजायते ॥४४॥
माधवो वर्षति जने देशेषु खण्डशः क्वचित्।
छत्रभङ्गः कान्यकुब्जे विरोधी स्याद् विरोधिनि ॥४५॥
सन्तुष्टं च जगत्सर्वं क्षेमाणि विविधान्यपि।
मरुतोऽपि वान्ति सौम्याः परिधाविनि वत्सरे ॥४६॥
निष्पत्तिः सर्वसस्यानां सर्वरसमहर्घता।
तैलं घृतं समं याति आनन्दे नन्दिताः प्रजाः ॥४७॥
कोद्रवा शालयो मुद्गाः पीडयन्ते धान्यरोगतः।
विप्रपीडा राजयुद्धं राक्षसे निष्ठुराः प्रजाः ॥४८॥
दुर्भिक्षं जायते किञ्चिद् धान्यौषधविनाशनः।
आश्विने मरणं वैरं नले तापोल्बलात् क्षयः ॥४९॥
सुभिक्ष देशभोगश्च रसवस्त्रमहर्घता।

॥ ४३ ॥ साधारणवर्षमें पृथ्वीपर निरन्तर जलसे पूर्ण वर्षा हो, लोक प्रसन्न रहें और सब धान्य पैदा हो ॥ ४४ ॥ विरोधीवर्षमें विरोध हो, देशमें या खण्डमें क्वचित् ही वर्षा हो और कान्यकुब्जमें छत्रभग हो ॥ ४५ ॥ परिधावीवर्षमें समस्त जगत् प्रसन्न हो, अनेक प्रकारके कल्याण हो, और सुखदायक वायु चले ॥ ४६ ॥ आनन्दवर्षमें प्रजा आनन्दित रहे, सब तरहके धान्य पैदा हों, सब रसवाले पदार्थ महँगे हों, तथा तेल और घी का समान भाव रहे ॥ ४७ ॥ राक्षसवर्षमें कोद्रव, चावल, मूंग, आदि धान्यका विनाश हो, ब्राह्मणोंको दुःख और राजाओंमें युद्ध हो तथा प्रजा निष्ठुर (क्रूर) हो ॥ ४८ ॥ नलवर्षमें धान्य और औषधियोंका विनाश होनेसे कुछ दुष्काल हो आश्विनमें मरण तथा द्वेष हो और तापकी ज्वालासे विनाश हो ॥ ४९ ॥ पिङ्गलवर्षमें बहुत मङ्गल तथा सुकाल हो, रसवाले पदार्थ और वस्त्र महँगे हो और कभी शोक तथा कभी हर्ष हो ॥

कश्चिच्छोकः कश्चिन्मोद' पिङ्गले मङ्गल यद्दु ॥ ५०॥
दुर्भिक्ष जायते लोके सवरममहर्घता ।
मूर्च्छा नृपकपीडा च कालयुक्त कलिमहान ॥५१॥
तोयपूर्णा' शुभा मेघा बहुसस्या च मेदिनी ।
सिद्धुरा पार्थिवा देशो सिद्धार्थ वत्सर मति ॥५२॥
उपद्रवो रणात् क्षेत्रे नृपकैः शालभैः शुकैः ।
दुर्भिक्ष स्वल्पर्क रौद्रे क्रमार्ताऽत्र प्रवर्तते ॥५३॥
सुभिक्ष भवति प्राया व्यवहारो न वर्तते ।
दुर्मती मध्यमा वृष्टिः पश्चात् सौम्य सुख जन ॥५४॥
सुभिक्ष स्यान्महास्माहाव दुन्दुभिनदति ध्रुवम् ।
त्रिमार्गा च गवां वृद्धि-दुन्दुभी भवति शुभम् ॥५५॥
स्वल्पवृष्टिर्भवेद देशाम पूररूपाश्च मानवा' ।
संग्रामा दारुणा भूपे रुधिरोद्गारिवत्सर ॥५६॥
मेदिनी पुष्पिता मेघै' सस्या धान्यसम्भवात् ।

५० ॥ कालयुक्तमें अन्नका दुष्काल हो सब रसवाले पदार्थ तेज भाव हों पृथ्वी पर चूहोंका उपद्रव हो और राजा कलह हो ॥ ५१ ॥ सिद्धार्थवर्षमें जलसे पूर्ण मेघ और पृथ्वी बहुत धान्यवाली हो और देशमें राजा निष्ठुर हों ॥ ५२ ॥ रौद्रवत्सरमें देशमें युद्धसे चूहोंसे मेघमालासे और शुकोंसे उपद्रव हो थोड़ा दुष्काल पड़े बड़ा भयानक हो ॥ ५३ ॥ दुर्मतिवर्षमें प्रायः सुकाल हो, व्यापार बन्ध रहे मध्यम वर्षा हो और पीछेसे लोक में सुखशान्ति हो ॥ ५४ ॥ दुन्दुभिवर्षमें सब जगह शुभतथा सुकाल हो, बड़े उत्सवसे दुंदुभीका नाद हो और गौ आदिकोंकी वृद्धि हो ॥ ५५ ॥ रुधिरोद्गारिवर्षमें दैवयोगसे थोड़ी वर्षा हो। मनुष्य क्रूर स्वभावके हों और राजा भारी घोर संग्राम हो ॥ ५६ ॥ रक्ताक्षिवर्षमें पृथ्वी हो प्रायः लोक रोगसे व्याकुल हों और मेघोंसे वर्षा होनेसे तथा धान्य उत्पन्न होनेसे पृथ्वी

प्रायो रोगातुरा लोका रक्ताक्षे भूमिकम्पनम् ॥५७॥
राजडम्बरदुर्भिक्षं विरोधोपद्रवाकुलम् ।
क्रोधने विषमं सर्वं मरको म्लेच्छराजता ॥५८॥
मेदिनी कम्पते सैन्यात् कम्पन्ते च महीधराः ।
देशभङ्गाश्च दुर्भिक्षात् क्षयाब्दे क्षीयते प्रजा ॥५९॥

इति तृतीया विंशतिका ।

क्वचिज्जडविलेखनाद् वचसि विभ्रमाद् वा क्वचिद्,
भ्रमादपि मतेस्तथा भवति पाठभेदो भुवि ।
तथाप्यवितथा कथा स्फुरतु वार्षिके निर्णये,
विशेषविदुषां मिथः कथनमेकमुत्पश्यतात् ॥ १ ॥
अथ विस्तरतः षष्टिवर्षाणां स्पष्टता फले ।
प्राचीनवचनैरेव गद्यरीत्या निगद्यते ॥ २ ॥
श्रीशङ्खेश्वरपार्श्वार्हद्-रूपभं प्रणमन् स्तुवन् ।
सांवत्सरफलं वच्मि प्रभवादिसमुद्भवम् ॥ ३ ॥

रसवाली और प्रफुल्लित हो ॥ ५७ ॥ क्रोधनवर्षमें राजाओंका आडम्बर और दुष्काल हो, विरोध आदि उपद्रवोंसे व्याकुल ऐसा मरणतुल्य म्लेच्छ राज्य हो और सब विपरीत हो ॥ ५८ ॥ क्षयसंवत्सरमें सैन्यके भारसे पृथ्वी और पर्वत कांपने लगे, दुष्कालसे देशका नाश और प्रजाका विनाश हो ॥ ५९ ॥ इति तीसरी विंशतिका ।

कभी जडबुद्धिवालेके लिखनेसे, कभी वचनमें भ्रम हो जानेसे और कभी बुद्धिका भ्रम हो जानेसे बहुतसे पाठभेद हो जाते हैं, तो भी वर्षसंबंधी निर्णयमें विशेष जाननेवाले विद्वानोंका यथार्थ कथन स्फुरायमान हो और एक ही कथन देखो ॥ १ ॥ अब साठ वर्षोंके स्पष्ट फलको विस्तारसे प्राचीन विद्वानोंके वचनानुसार गद्यरीतिसे कहा जाता है ॥ २ ॥ श्री शङ्खेश्वरपार्श्वनाथ जिनेश्वरको वन्दन और स्तुति करके प्रभव आदि साठ संवत्सरोंके फल-

प्रमथनाममिथुनाग प्रव्यात्मामा, धेत्रा धिनागम्म मन्द गमागपम्पुममगना पगय गगमाद्गा मागाग्यगमत्रधा गमर्येना, गावृमपुर्ग गंगुपदीनां मर्यना, माद्रगदा त्रिपु मः, व्याश्विनभ्राप गंनिम्महगमानि गगर्गादा मर्मा गभन गागाप मर्यम ॥७॥ विमप विप्पु स्वामी गागम्यामि पूर्धिर्गा नागपुंगिरगिगिपूगमनू निमपूनगपर्गामदेशे मरुपना, उप मुग्मनानगग मगाविषर, धगपत्र गममना धेत्रादिमागपरव्रगा मरागा भागदादिम्रप मेगपूष्टि, माश्विन मर्वगममरुपना, म गा मपपाहम्र्नं पानिमहरपामामा पम मपु मगगम्तुमरुप गा गानुमगमना ॥८॥ नुपत मद्र स्वामी, छत्रमद्रा स्मैरुप रहोपु मन्त्रिगा गगधे, धेत्रादिमगमत्रगं ममर्यम भापन्नादि मागमत्रप मरामेण श्राश्विन जनगाग, प्रगपूर्ग ममपम म

धाःम वत्तनां ॥ ३ ॥

मनानम गोग्माना मास बद है मेर धगगमें मम्मम दमुथो का मार बंग गद गपणदि गीनमास मन्दरी मर्वना गई धेग नुपाम सदिरी मदग ॥ मजगपमें भी मर्वंग मौर गुम हा, मत्रिमर्थं चली ज मपमा मगिदु गर्दि हा मौर मप मपगमगम्नुभीषा मार नष्ट हा ॥ ७ ॥ दिनगगादा स्वामी मिपु है पूर्ग्य गर गाग प्याति माम्मगु ग्पानिगिमें दृगमग हा मिनपु मान मौर धीरादिमें धान्य मरेगि हो, उप मुधरनमें नगदिम दा मन्यप भाग गममगह धजादि गैन मगम महेगा हा म गर्ग भीरमगम मे रागा हा, मश्विनमें सतन्म ग्मात मार नष्ट हा, मेर बहुन प्रम पार्गित मगिगम मम मम सम्पुर मार तेज हा मौर गहूंस मार ममान रहेगा ॥८॥ गुपगा दा स्वामी मत है स्मपद्रगमें एपभेग हा मौर मश्विन बोरा गागर हा नेगदि ना मम्म मगम मात रहे भापादादि गीन मम महीगा हा श्राश्विनम मनुष्पाना गेग, सम तथा धी ममान मौर दूमगी

न्यत् सर्वं महार्घम्, कार्त्तिकादिमासचतुष्टये सर्वं धान्यं समर्घम्, फाल्गुनमासे विड्वरम्, सर्वत्र विग्रहः, लोकग्रामपीडा, देशेषु आकुलता, शून्यत्वं ग्रामेषु ॥३॥ प्रमोदे रविः स्वामी, मध्यम वर्षम्, अल्पवृष्टिः खण्डमण्डले, मेदपाटपीडा, देश उद्वसः, म्लेच्छवर्गक्षयः, छत्रभङ्गः, पर्वते तटे स्वल्पा वसतिः, तिलङ्गे राजविड्वरम्, चैत्रे वैशाखे च महर्घता, ज्येष्ठे रोगपीडा, आषाढादिमासत्रयेऽल्पमेघः, आश्विनमासे किञ्चिद्वर्षा, धान्यस्य कलशिका त्रयोदशफदियानाणकैः, कार्त्तिकादिमास पञ्चके महर्घम्, अतिवायुर्वाति, व्यापारिलोकपीडा, खण्डवृष्टिः, पट्टकूलादिमहर्घता, कार्त्तिकादिमासचतुष्टये सर्वरसमहर्घता, फाल्गुने मध्यमः ॥४॥ प्रजापतिवत्सरे चन्द्रः स्वामी, द्वादशापि मासाः शुभाः अल्पमेघवर्षा, आश्विने रोगबाहुल्यम्, धान्यस्य कलशिका पञ्चत्रिंशत्फदियानाणकैः, कार्त्तिकादिमासद्वय मन्द, पौषादिमासत्रये-

सब वस्तु महँगी हो, कार्तिकादि चार मास सब धान्य समान, फाल्गुनमास में विग्रह, ग्रामीण लोकोंको दुःख, देशमें आकुलता और गावोंमें शून्यता हो ॥ ३ ॥ प्रमोदवर्षका स्वामी रवि है, वर्ष मध्यम, खण्डदेशमें थोडीवर्षा मेदपाट मे दुःख, देशमें उद्वेग, म्लेच्छवर्गका क्षय, छत्रभंग, पर्वतके तटमें थोडी वसति, तैलङ्गमे राजविग्रह, चैत्र वैशाखमें तेजी, ज्येष्ठमें रोगपीडा आषाढादि तीन मासमें अल्पवर्षा, आश्विनमासमें कुछ वर्षा, तेरह फदियाका कलशी धान्य बिकें, कार्तिकादि पाच मास तेजी, बहुत वायु चले, व्यापारी लोगोंको दुःख, खण्डवृष्टि, पट्टकूल (रेशमीवस्त्र आदि) तेज बिकें, कार्तिकादि चार मास सब रसवाली वस्तु तेज और फाल्गुनमास में समान भाव रहे ॥ ४ ॥ प्रजापतिवर्षका स्वामी चन्द्र है, बारह महिने श्रेष्ठ रहे, थोडी वर्षा, आश्विनमें रोगकी अधिकता, पंतीस फदियाका कलशी धान्य बिके

ऽभिष्टम्, कश्चिदुत्पात, दर्शनिम्नकस्य पीडा ॥ ४ ॥ अङ्गिरायां मङ्गल स्वामी, चैत्र वैशाखश्च मन्दं, ज्येष्ठे वायु प्रबल, आषाढे मेघमान्द्यम्, श्रावणादिमासत्रये रोगपीडा, कार्तिके सर्वान्ननिष्पत्ति, पौषादिमासत्रये स्वल्पान्न मेघवर्षा भवेत् ॥५॥ श्रीमुखे बुध स्वामी, चैत्रे सर्वधान्य महर्घम्, आषाढे कृष्णपक्षेऽल्पान्न मेघवर्षा, श्रावणे गोधूमा महर्घा, घृत भाद्रपदे च त्रिगुणा लाभ, वणिक्लोकपीडा, पश्चिमायां गोरस पूर्वस्यां परचक्रभयम् उत्तमकुलमानस्थले प्रजापीडा, भाद्रपदे आश्विने च सर्वधान्यं सुभिक्षम्, कार्तिकादिमासत्रये पञ्चके वा सपादमानां सर्वधान्यानां महर्घता ॥७॥ भावसंवत्सर गुरु स्वामी बहुक्षीरा गावो घना बहुला, विंशोपका पञ्च दश सर्ववस्तुसमर्घता, उत्तमकुलमानानां व्याधयस्तु राजविग्रहः, लोकपीडा घृतगुडादिफलपूगीमञ्जिष्ठामरिचदन्तवस्तु महर्घम्

कार्तिक वदि पर्यन्त मास । पौषादि तीन मास मलिन कभी उत्पात और स नीचि भागपर पीडा हो ॥४॥ अंगिरासंवत्का स्वामी मंगल है चैत्र और वैशाख में मंद, ज्येष्ठमें प्रबल वायु चले आषाढमें वर्षा कम, श्रावणादि तीन मासमें रोगपीडा कार्तिकमें सब धान्यकी निष्पत्ति और पौषादि तीन मासमें वर्षा अल्प हो ॥ ५ ॥ श्रीमुखसंवत्का स्वामी बुध है चैत्रमें सब धान्य महँगा होय, आषाढ कृष्णपक्षमें वर्षा अल्प, श्रावणमें गेहूँ तेज हो और भाद्रपदमें त्रिगुणा लाभ वणिकों का पीडा पश्चिममें गोरस नाश पूर्वमें परचक्रका भय उत्तमकुलमानस्थान प्रजापीडा भाद्रपद और आश्विनमें सब धान्य सस्ता कार्तिकादि तीन मासमें या पांच मासमें सब धान्य और रस तेज हो ॥ ७ ॥ भावसंवत्का स्वामी गुरु है, गाय अधिक दूध दे, वर्षा अधिक पन्द्रह विंशोपका सब वस्तु समान भाव उत्तमकुलमान और व्याधियोंसे राजविग्रह, लोकपीडा, घी गुड, फल, सुपारी मंजीठ मिरच और हाथीदांत

चैत्रे समता, वैशाखे महर्घं सर्वधान्यं द्विगुणो लाभः, आषाढे श्रावणे किञ्चिद्वर्षा, भाद्रे वर्षा, आश्विने रोगबाहुल्यं, कार्तिक उत्तमः मार्गशीर्षादिमासचतुष्टय मन्दम, राजविड्वरं महाजनपीडा ॥८॥ युवावत्सरे शुक्रः स्वामी, भूकम्पजलभयं बहुल, चैत्रद्वये उत्पातः, ज्येष्ठे रोगः, आषाढे शुक्लपक्षे महान्मेघः, श्रावणे वायुर्वाति, अन्नं महर्घम, भाद्रपदे दिन १४ महावृष्टिः, व्याकुलता, राजविग्रहः, उत्तरार्द्धदेशे दुर्भिक्षं रौरवं, पूर्वस्यां निष्फला कृषिः, दक्षिणस्यां वैरविरोधो मार्गे विषमता, पश्चिमायां लोकपीडा पश्चाद् दुर्भिक्ष, सर्वरसेषु समता, कार्तिकादिमासद्वयमुत्तमम, पौषो माघश्च मध्यमः, फाल्गुनमासे किञ्चित् क्लेशः, माघादौ मार्गे विग्रहः ॥९॥ धातृवत्सरे शनिः स्वामी, चैत्रे वैशाखे च सर्वधान्यमहर्घता, ज्येष्ठमासे समता, आषाढेऽल्पमेघः तृणतैलगुडगन्धर्वकर्पासमञ्जिष्ठामरिचपर्णामहर्घता, श्रावणे सर्वधान्यसमर्घता, भा-

वस्तु य सब तेज भाव हो, चैत्रमे समान, वैशाखमे सब धान्य महँगा होने से दूना लाभ, आषाढ श्रावणमे कुछ वर्षा, भाद्रपदमे अधिक वर्षा, आश्विनमे रोग अधिक, कार्तिकमे उत्तम, मार्गशीर्षादि चार मास मन्द हो, राजाओमे युद्ध तथा महाजनोको पीडा हो ॥ ८ ॥ युवावर्षका स्वामी शुक्र है, भूकम्प आर जलका भय अधिक हो, चैत्र वैशाखमे उत्पात, ज्येष्ठमे रोग आषाढशुक्लपक्षमे महामेघ, श्रावणमे पवन चले, अन्नका भाव तेज, भाद्रमे दिन १४ बडी वर्षा, व्याकुलता, राजविग्रह, उत्तरार्द्ध देशमे दुष्काल और दुःख पूर्वमे खेती निष्फल, दक्षिणमे वैर विरोध, मार्गमे विषमता, पश्चिममे लोकपीडा पीछे दुष्काल, सब रसके भाव समान, कार्तिकादि दो मास उत्तम, पौष और माघ मध्यम फाल्गुनमे कुछ क्लेश, माघकी आदिमे मार्ग मे विग्रह हो ॥ ९ ॥ धातृवर्षका स्वामी शनि है, चैत्र वैशाखमे सब धान्यके भाव तेज, ज्येष्ठमे समान, आषाढमे थोडी

प्रगम पुरुषा नपुंसकानि, पश्चिमायां महती मेघघटा, सर्वधान्य समर्घम्, उत्तरदक्षिणयामध्ये महामेघ पर लोक पीडा, आश्विने रसकसधातुमहर्घता धान्यसमता कार्त्तिकादया मासाश्चत्वारस्तत्र सर्ववस्तु अर्घ महर्घम् ॥ १० ॥ ईश्वर गान्धु स्वामी, उत्तरस्या दुर्भिक्षं, पूर्वस्यां सुभिक्षं, पश्चिमायां परस्परं विरोध, चैत्रे वैशाखेऽसमहर्घता, ज्येष्ठाषाढयोरल्पवृष्टिः पर सर्वधान्यमहर्घता, कार्त्तिके रौरवं दुर्भिक्षं, मञ्जिष्ठामरिचसुवर्णगन्धादिपूगी फलवस्तु महर्घता, मार्गशीर्षादिमासचतुष्टयेऽतिदुर्भिक्षं, धान्य महर्घं, मनुष्याणां स्वहस्तगुणदानि भूमिकाया स्खलन्ति ॥११॥ बहुधान्ये केतु स्वामी, पूर्व्यां निर्बीया, पश्चिमायां सुभिक्ष पर साम्यम सर्वदेशमध्ये, दक्षिणस्यां विग्रह पर महाभय, उत्तरापथे म सर्वदेशेषु पीडा, पूर्वस्यां दुर्भिक्ष अन्नसंग्रह कार्य, चैत्रवैशा

खमें घी तेल गुड़ आदि रस तेज होंगे मजीठ मिरच और सुपारी महंगे होंगे श्रावणमें सब धान्य तेज, भाद्रपदमें पूर्वमें समता, पश्चिममें वर्षा होगी, सब धान्य सस्ता, उत्तर दक्षिणमें रस महंगा होगा परन्तु लोकपीडा, आश्विनमें रसकस और धातु तेज धान्य समान कार्त्तिकादि चार मास सब वस्तु सब महंगे होंगे ॥ १० ॥ ईश्वरसंवत्सरका स्वामी राहु है उत्तरमें दुष्काल पूर्वमें सुकाल पश्चिममें अन्योन्य विरोध, चैत्र मास वैशाखमें समभाव रहे, ज्येष्ठ और आषाढमें थोड़ी वर्षा पीछे सब धान्य तेज, कार्त्तिकमें बड़ा दुष्काल, मजीठ मिरच लौंग इलायची सुपारी ये वस्तु तेज होंगे मार्गशीर्षादि चार मासमें बड़ा दुष्काल धान्य भाव तेज पृथ्वी पर चार पुड़ हो जिससे मनुष्योंके रुण्ड पृथ्वी पर रहें ॥ ११ ॥ बहुधान्य संवत्सरका स्वामी केतु है पूर्व में निर्बीज होगी पश्चिममें सुकाल और सब देशमें सुभिक्ष, दक्षिणमें विग्रह पीछे महाभय उत्तरके सब देशमें पीडा पूर्वमें दुष्काल अन्न संग्रह करना चाहिए,

खयोरन्ने किञ्चिन्महर्घता, ज्येष्ठमासे चतुर्गुणो लाभः, श्रा-
वणाषाढयोर्मेघः, अन्नं सर्वत्र महर्घं, षड्गुणो लाभः, भा-
द्रपदेऽत्यन्तमेघः, सर्वधान्यसमर्घता, आश्विने मेघः कनक-
धाराभिः, कार्त्तिकादिमासचतुष्टये समता ॥१२॥ प्रमाथिनि
रविः स्वामी, आषाढे श्रावणे चाल्पमेघः, भाद्रपदे पञ्चम्यां
किञ्चिन्मेघः, चैत्रे गोधूमयुगंधरीमहर्घता, वैशाखे ज्येष्ठे सर्व-
त्र धान्यमहर्घता पर कृष्णसप्तम्यमावस्ययोर्महामेघः, परमती-
वारिष्टकार्त्तिकादिमासपञ्चसु सर्वरसमहर्घता, मञ्जिष्ठापूगी-
हिङ्गुलकाश्मीरजागरूपट्टसूत्रनालिकेर एतद्वस्तुमहर्घता॥१३॥
विक्रमसंवत्सरे चन्द्रः स्वामी, राजा प्रजा सुखी, अतिमेघः,
चैत्रे वैशाखे महर्घम्, अन्ने द्विगुणो लाभः,परं वैशाखे म्ले-
च्छभयाद् नगर उद्वसत्वम्, अरण्ये वासः, वैशाखे
दिनदश महान् वायुर्भूमिकम्पः प्रजापीडा, ज्येष्ठमासे दु-

चैत्र और वैशाखमें अन्न कुछ तेज, ज्येष्ठमें चौगुना लाभ, आषाढ श्रावण में वर्षा, अन्न सर्वत्र महँगे व्यापारियोंको छगुना लाभ, भाद्रपदमें अत्यन्त वर्षा सब धान मंदा, आश्विनमें मेघ, कार्त्तिकादि चार मास समभाव हो ॥ १२ ॥ प्रमाथीवर्षका स्वामी रवि है, आषाढ और श्रावणमें थोडी वर्षा, भाद्रपद पञ्चमीको कुछ वर्षा, चैत्रमें गेहूँ जुआर तेज, वैशाख ज्येष्ठमें सब जगह धान्य तेज, पीछे कृष्ण सप्तमी और अमावास्याको महामेघ, परन्तु आगे बहुत अरिष्ट, कार्त्तिकादि पांच मास सब रस महँगे, मँजीठ सुपारी हिंगलु केसर अगर वस्त्र और श्रीफल ये वस्तु तेज हो ॥ १३ ॥ विक्रम वर्षका स्वामी चन्द्र है राजा प्रजा सुखी अतिवर्षा, चैत्र और वैशाखमें तेजी होनेसे अन्नमें द्विगुना लाभ, वैशाखमें म्लेच्छोंके भयसे नगरका विनाश, जंगलमें निवास, वैशाखमें दश दिन महावायु, भूमिकम्प और प्रजापीडा, ज्येष्ठमास[illegible] [illegible]

मिश्रं, आपाढ श्रम्य , श्रावणे भाद्रपद महामेघ', प्रनासुगं मघधान्यसमर्घ, मधयन्नुममघमा, आश्विन गग , मधग्म ममना कार्त्तिकादिमासत्रय मधान्नसमना ।। १४।। वृषभे भौम' शमा यदा वहुला पर मृ गर्णा पीडा, छत्र भङ्ग उत्पन्न वै नागउसममथना, धा य त्रिगुणा लाभ , आपाढ समर्घं मा, श्रावण भाद्रपद महामेघ , आश्विन मधधान्यसममना, वृन महार्घता पश्चिम प्र महार्घ वना उदयमा पश्चिमायां विधि स्मुभिक्ष आश्विन मघ मधयन्नुममर्घना, कार्त्तिक विजिद् गिप्र मागनिरमिर्द्धा न पारादिमासत्रय महार्घ पर मग्गम ममग ॥१७॥ मिथ्रमानी पुष्प स्वामा माग मुर्गी वृषभ न्नमघः, रभा मना पश्ना मध गा ग्रमनसमना वै नाग पसम मागन उत्पन्न त्रिप्रग मानम र महर्घा गममगमा भाद्रादिमा मघग गणालि.. कार्त्तिक मार्गे णग मागनिरादय गिप्र माग

[illegible]

द्ये सरोगा प्रजा परं सर्वान्नरसममर्घता, क्रयाणकजातिसर्ववस्तुमहर्घता ॥१६॥ सुभानौ गुरुः स्वामी, पूर्वस्यां दुर्भिक्षं लोकाः सुखी चैत्रे महर्घता, वैशाखज्येष्ठयो रोगपीडा, आषाढेऽन्नमहर्घं, श्रावणे मेघोऽन्नसमता, भाद्रे महामेघः, आश्विने रोगपीडा गोधूमसमता युगन्धरीमुद्गादिसर्गं प्रति फदियानाणकानि, धातुसर्ववस्तु महर्घं घृतसमता कार्त्तिकादिमासद्वयं मध्यम राजपीडिता लोकाः, पौषादिमासत्रये रोगपीडा क्षयंकरः परस्परं विरोधः ॥१७॥ तारणे शुक्रः स्वामी, अतिवायुः परस्परं युद्धं बहुलं चैत्रः सरोगः, वैशाखे सर्ववस्तु महर्घं, ज्येष्ठे महान् वायुः, आषाढेऽल्पवृष्टिः, श्रावणे सप्तमीतो नवमीतो वा वर्षा, भाद्रपदे एकादश्यामत्यन्तमेघः, आश्विनेऽन्नमहर्घता, एव सर्वरससंग्रहः कार्यः, कार्त्तिके महर्घता, मार्गे विग्रहो धान्यमहर्घम्. योगिनीपुरे महाभय राज्ञां विरोध , म्लेच्छभयं, पौ-

अधिष्ट, माघ फाल्गुन में प्रजा में रोग, सब अन्न रस समान और क्रयाणक जातिके सब वस्तुके भाव तेज हो ॥ १६ ॥ सुभानुवर्षका स्वामी गुरु है, पूरब दुष्काल, लोक सुखी, चैत्रमें महँगाई, वैशाख और ज्येष्ठमें रोग पीडा आषाढ में अन्नभाव तेज, श्रावण में वर्षा और अन्नभाव सम, भादोंमें महावर्षा, आश्विन में रोगपीडा, गेहूँ का भाव सम, जुआर मूंग आदि प्रति फदियाका एक सम, धातु भाव तेज, घी समान, कार्त्तिकादि दो मास मध्यम, प्रजा को राजसे दुःख, पौषादि तीन मास विनाशकारक रोगपीडा और परस्पर विरोध हो ॥ १७ ॥ तारणवर्षका स्वामी शुक्र है, महा वायु चले और परस्पर युद्धकी अधिकता हो, चैत्रमें रोग, वैशाखमें सब वस्तु तेज, ज्येष्ठमें महान् वायु, आषाढमें थोडा वर्षा श्रावणकी सप्तमी से या नवमीसे वर्षा, भादोंमें एकादशीको बहुत वर्षा, आसोजमें अन्न भाव तेज, सब रस का संग्रह करना कार्त्तिकमें तेज हो, मार्गशीर्षमें विग्रह, धा-

पैशुन्यं पश्चिमायां धान्य महर्घम् उत्तरापथ महादुर्भिक्षं फाल्गुनमासा मध्यम, तस्करपाशिकभय, प्रजा महर्घम्, विग्रहो राजविरोधाश्च महत्पातकम्, पूर्वस्यां दक्षिणस्यां वा घन घास, पश्चिमायां महायुद्धं परं धान्यवस्तु समर्घम्॥१८॥ पार्थिवे शनि स्वामी, उत्पातबहुल, अल्पसमर्घ काय, चैत्र वैशाखे महार्घता समता विग्रह ज्येष्ठे रोगपीडा यवनृपयुद्ध आषाढेऽल्पमेघः, धान्य महार्घं महावायु, श्रावणे खण्डवृष्टिः, भाद्रपदे नैऋत्य वायु, अल्पमहार्घता, आश्विने वृष्टिः, गोधूमयुगन्धरीमुद्गादि महर्घं परं धातुवस्तु घृतमहर्घता, कार्तिकमार्गशीर्षे रोगपीडा, पौषमाघयोर्महार्घता, फाल्गुन समता ॥२०॥ व्ययसम्वत्सरे राहु स्वामी, अनावृष्टिर्दुर्भिक्षं रौरवं, चैत्रे मध्यम, वैशाखमध्ये महार्घता दशविग्रह, आषाढेऽल्पमेघ परं म

नर भय पाणिनीपुत्र बड़ा भय राजाभाका विरोध म्लेच्छका भय, पौषमें युद्ध पश्चिममें अन्न तेज उत्तरापथमें बड़ा दुष्काल फाल्गुन मासमें मध्यम तस्कर तथा पाशपालका भय समभाव तेज विग्रह राजाओंके विरोध बड़ा पाप हो पूर्व और दक्षिण मारू यनघासी हो पश्चिममें बड़ा युद्ध हो परंतु अन्न और वस्तु सस्ती हो ॥ १८ ॥ पार्थिवसंवत्सरका स्वामी शनि है बहुत उत्पात हो सबका मध्य परना चैत्र वैशाखमें तेज सब भाग्य विग्रह ज्येष्ठमें रोग पीड़ा अथवा नृपयुद्ध, आषाढ़में थोड़ी वर्षा धान्य महँगा वायु अधिक श्रावणमें खण्ड वर्षा भादोंमें नैऋत्यका पवन समभाव तेज आश्विनमें वर्षा गेहूं जुआर मूंग आदि तेज धातु और घी तेज कार्तिक मार्गशीर्षमें रोग पीड़ा पौष माघमें तेज भाव फाल्गुनमें समान भाव रहे ॥ १९ ॥ व्ययसंवत्सरका स्वामी राहु है अनावृष्टि दुर्भिक्ष और दुःख हो चैत्र मध्यम वैशाखमें भाव ज्येष्ठमें भाव तेज, देशमें विग्रह आषाढ़में थोड़ी वर्षा और तेजी, श्रावणमें दुर्भिक्ष मध्य दशमें वि-

हार्घता, श्रावणे दुर्भिक्षं मध्यदेशे विग्रहः, दक्षिणस्यां प्रजापीडा, भाद्रपदे खण्डवृष्टिरन्नमहार्घता, आश्विने रोगपीडा, पूर्वस्यां विग्रहः गोधूममहार्घता चतुर्गुणो लाभः सर्वरसमहार्घता मध्यमः समयः, कार्तिके रोगपीडा यद्वा विग्रहोपशमः, मार्गमासेऽन्नमहार्घता नवरं युद्धं किञ्चित्, पौषादिमासद्वयेऽतिमहार्घता, फाल्गुने समता परं मार्गस्य वैषम्यमन्नं महार्घम् ॥२०॥ इति उत्तमविंशतिका पूर्णा ।

सर्वजिति वत्सरे ब्रह्मा स्वामी, चैत्रादिमासत्रय महर्घम्, आषाढेऽल्पमेघः, श्रावणे महामेघः, सर्वधान्यरसवस्तुसमर्घता, नवीनमुद्रोदयः, राजविग्रहः, परस्परमन्नमहर्घता भाद्रपदे दिनपञ्च पश्चान्महती वृष्टिः, आश्विने रोगार्त्तिः सर्वधान्यसमर्घता. कार्त्तिके राजा राज्यं करोति, प्रजासुखमन्नसमर्घता, मार्गशिरपौषौ उत्तमौ सर्वलोकसुखं, माघमासे

ग्रह, दक्षिणमें प्रजापीडा भाद्रपद मे खण्डवर्षा और अन्न तेज, आश्विन मे रोगपीडा, पूर्वमें विग्रह, गेहूं तेज, व्यापारियों का चोगुना लाभ , सब रसके भाव तेज, मध्यम समय, कार्त्तिकमे रोग पीडा अथवा विग्रहकी शान्ति मार्गशीर्षमें अन्नभाव तेज, कुछ युद्ध का समय, पोष माघमे अधिक तेज, फाल्गुनमें समान परन्तु मार्गकी विषमता और अन्न भाव तेज ॥ २० ॥ इति उत्तम विंशतिका ।

सर्वजितवर्षका स्वामी ब्रह्मा है चैत्रादि तीन मास तेज आषाढमें थोडी वर्षा, श्रावणमे महामेघ, सर्व धान्य और रसकी वस्तु सस्ती नवीन मुद्रा (सिक्का) चले, परस्पर राज विग्रह, अन्न महंगा, भाद्रपदमें पांच दिन पीछे बडी वर्षा आश्विनमें रोग सब धान्य सस्ता, कार्त्तिकमें राजा राज्य करें , प्रजा सुखी, अन्न सस्ता, मार्गशीर्ष और पौष उत्तम, सब लोकसुखी, माघमासम द्विन तीन वर्षा हो मॅजीठ, सुहग, मिरच, सोंठ पि-

मेघा विनश्य मञ्जिष्ठाप्रवालमरिचसुंठीपिप्पलीपूगीप्रमुख महर्घता फाल्गुने सर्ववस्तुरससमता उत्तमसमय ॥२१॥ सर्वधारिणि विष्णु स्वामी राजा राज्यसुस्थ प्रजासुखमस मनघम् मार्गशीर्षे पौषश्च उत्तम, सर्वलोकसुखं पशूधन नमहत्व पूजा, सपनगरदेशासुस्थानयास । चैत्रे सर्वधान्यसमता, उत्तरापथे दुष्काल, वैशाखज्येष्ठयोर्महर्घता ज्येष्ठे महाभयमरिष्टं आषाढे मेघ, श्रावणेऽल्पवर्षा, पश्च महर्घ, भाद्रपदे दुर्भिक्ष । आश्विने रोग अन्नसमता, राज्ञां परस्परं विरोधाऽन्नमहर्घता ॥२२॥ विरोधिनि रुद्र स्वामी, चैत्रादि मासत्रये धान्यमहर्घता आषाढ श्रावणेऽतिवर्षा, भाद्रपद खण्डवृष्टिः, मासत्रयेऽतिभय किञ्चित्स्यात् राजा सुखी प्रजा सुखी क्वचिद्राजयुद्धं सर्वधान्यमहार्घता, आश्विन सर्वधान्यसमघता कार्तिके मारीरोगप्रचुरता मार्गशीर्षा दिमासचतुष्टय गुर्जर मरुदेशे मं महार्घम् ॥२३॥ विकृते र

नरकी सुख । माघ तक फाल्गुनमें सब रस और वस्तु समान तथा उत्तम समय हो ॥ २१ ॥ सर्व धारीका स्वामी विष्णु है राजा प्रजा सुखी, अन्न सस्ता मार्गशीर्ष और पौष उत्तम सबलोक सुखी पशु धनका नाश पूजा नगर वा सब देश में सुस्थान। चैत्र में सब धान्य समान, उत्तरमें दुष्काल, वैशाख ज्येष्ठमें महंगा ज्येष्ठ में बड़ा भय आषाढ़में वर्षा, श्रावणमें थोड़ी वर्षा, अन्न तेज भाद्रपदमें दुष्काल आश्विनमें रोग, अन्न भाव समान, राजाओंका परस्पर विरोध और अनाज तेज हो ॥ २२ ॥ विरोधी वर्षका स्वामी रुद्र है चैत्रादि तीन मास धान्य महंगा आषाढ़ और श्रावणमें अतिवर्षा भाद्रमें खण्डवृष्टि तीन मास अधिक भय, कुछ उत्पात, राजा तथा प्रजा सुखी कहीं राजाओं में युद्ध सब धान्य तेज, आश्विनमें सब धान्य सस्ता कार्तिक में महामारी रोग अधिक हो, मार्गशीर्ष आदि चार मास गुजरात और मारवाड़

विः स्वामी, अकाले वर्षा राजविरोधः,देश उद्वसः; मरु-
धरायां दुर्भिक्षं, चैत्रादिमासचतुष्टय महार्घता, कणाकलशिकां
प्रतिफदियानाणकैरेकशतेन लाभः श्रावणमासद्वये मेघवृ-
ष्टिर्नास्ति रौरव दुर्भिक्षं, आश्विने उत्पातभूमिकम्पाः, का-
र्त्तिके छत्रभङ्गः, सुवर्णरूप्यताम्रकांस्यसर्वधातुसमर्घता
कणाकलशिकाटकाः२०फदियानाणकानामेकशत लभ्यते।२४।
खरसंवत्सरे चन्द्रः स्वामी, चैत्रादिमासपञ्चके महती वर्षा, सु-
भिक्षं प्रजासुखं सर्वलोके गुरूणां महत्त्वं, पश्चिमायां सुभि-
क्षं। आश्विनेऽन्नसमता रसमहर्घता, मञ्जिष्ठासुहागावस्तुतो
मरुधरायां त्रिगुणो लाभः म्लेच्छक्षयः परं रोगपीडा
सर्वधान्यनिष्पत्तिः प्रजासुखं कार्त्तिकादि मासपञ्चकं मध्यम
सर्वधातुसमर्घता ॥२५॥

नन्दने भौमः स्वामी, प्रजासुख सर्वधान्यसमता, चैत्र-
मध्ये करकाः पतन्ति। वैशाखे धान्यं महर्घं प्रचण्डवायुः। ज्ये-

में अन्नभाव तेज ॥ २३ ॥ विकृतिवर्षका स्वामी रवि है, अकालमे वर्षा, राजाओंमें विरोध, देशका उजाड, मरुधरमे दुष्काल, चैत्र दि चार मास तेज, धान्य एक सौ फदियाका कलशी, श्रावण भादोमे मेघ वर्षा न हो और बड़ा दुष्काल हो, आश्विनमे उत्पात भूमिकंप, कार्तिकमे छत्रभग, सोना चांदी तांबा काशा आदि सब धातु सस्ते हो ॥ २४ ॥ खरवर्षका स्वामी चन्द्र है, चैत्रादि पाच मासमे बडी वर्षा, सुकाल प्रजाको सुख, सब लोगोंमे गुरु जनो का सन्मान, पश्चिममे सुकाल। आश्विनमे अनाज समान, रस महँगा, मंजीठ सुहागा मे मारवाडमे तीगुना लाभ, म्लेच्छका विनाश परन्तु रोग पीडा, सब धान्य की निपत्ति, प्रजा को सुख, कार्तिकादि पाच मास मध्यम और सब धातु सस्ती हो ॥ २५ ॥

नन्दनवर्ष का स्वामी मंगल है, प्रजामे सुख, सब धान्यसमान तथा चैत्रमे

छऽपि तथैव महर्घ। आषाढ महामेघ'। श्रावणेऽल्पवषा, भा द्रपद महावृष्टिः। आश्विन सुभिक्ष राजा राज्यसुख' प्रजा सुख। कार्त्तिके सुभिक्षमसमर्घता, मार्गशीर्षादिमासचतुष्टय महर्घता, मञ्जिष्ठालवङ्गमरिचमहर्घता॥२६॥ विजयसंवत्सरे बुध' स्वामी, सर्वदेशेपु महापीडा, राज्ञां परस्पर विरोध', अन्नं महर्घ तुच्छजल मही लोहितपायिनी विप्रपीडा, ग्रामहिंपाश्व हस्तिपीडा, चैत्रमध्ये राजारचवर्षा, वैशाखे ज्येष्ठऽसमर्घता, आषाढ श्रावणेऽल्पमेघ' कणकलशिका प्रतिफदिया ४०, भा द्रपद वर्षा न वर्षति कणकलशिका प्रतिफदिया ९४, आश्विन वणिग्जनपीडा, अन्न महर्घ फाल्गुने समता पर विग्रहा धा न्ये षड्गुणा लाभ ॥२७॥ जयसंवत्सर गुरुः स्वामी। महासु भिक्षं, चैत्र महाघता, वैशाखज्येष्ठयो समर्घता, आषाढ मेघवर्षा धान्य महर्घ। श्रावण दिन २८ महामेघ'। भाद्रपद दिन

करका (मध्य) गिर वैशाखमें धान्य महँगा बड़ा तज वायु चले, आषाढ़ म भी वस ही महँगा आषाढम अच्छी वर्षा श्रावणम थोड़ी वर्षा, भाद्रपद मे महावर्षा आश्विनम सुकाल राज्य में सम्पत्ता प्रजा में सुख कार्त्तिक में सुभिक्ष अनाज भाव सम मार्गशीर्षादि मास ४ महँगा मंजिठ लोग मीरच ये महँगे हा ॥ २६ ॥ विजयसंवत्सरका स्वामी बुध है सब देश म महापीडा राजाओं का परस्पर विरोध अनाज महँगा जल थोड़ा पृथ्वी लोहीकी प्यासी ब्राह्मण गो भैंस घोड़ा हाथी आदिको पीडा चैत्र में राजाके साथ वर्षा वैशाख तथा ज्येष्ठमें अनाजभाव सम। आषाढ़ श्रा वण म थोडी वर्षा। भाद्रपद में वर्षा न वर्षे फदिया ९ का कलशी धान्य आश्विन में वणिक्जन को पीडा अनाज तेज फाल्गुन में समान और विग्रह तथा धान्यमें छगुना लाभ हो ॥ २७ ॥ जयसंवत्सरका स्वामी गुरु है, बड़ा सुकाल, चैत्रमें तेज, वैशाख और ज्येष्ठम सस्ता आषाढ़में

७ मेघः। आश्विनेऽन्नं समर्घं कणानां मणां प्रतिद्रम्मा ३५ लभ्याः स्वर्णादिधातुसमता। कार्त्तिकादिमासपञ्चकमुत्तममन्नसमता। अन्यवस्तुनि महार्घता भवन्ति। परं मौक्तिकादिप्रवालकं च महर्घं। मार्गशीर्षे रोगबहुलता वणिक्पीडा. उच्चमुलतानदेशे रोगपीडा छत्रभङ्गो लोका दुःखिताः॥२८॥ मन्मथे शुक्रः स्वामी, राजविरोधः, पूर्वदेशे लोकपीडा पर अतिवृष्टिः; रोगबाहुल्य, धान्य संग्रहः। चैत्रे वर्षा भूमिकम्पः। वैशाखे समर्घता; ज्येष्ठाषाढयोर्महर्घता धान्ये षड्गुणो लाभः। श्रावणेऽल्पमेघः। भाद्रे महामेघो वृष्टिर्दिन १४। आश्विने रोगपीडा, अन्नं महर्घं; धान्य मण प्रतिद्रम्मा ६० लभ्यन्ते; सर्वधातुसमर्घता। कार्त्तिके सुभिक्ष, गुर्जरदेशापेक्षयान्नसमता। मार्गशीर्षादिमासत्रयेऽन्न समर्घं लोकसुख राजा सुस्थः सर्वधातुसमर्घः वस्त्रमहर्घता॥२९॥ दुर्मुखे शनिः स्वामी; अत्रा-

जल वर्षा और अनाजके भाव तेज श्रावणमे दिन २४ अधिक वर्षा, भाद्रपदमे दिन ७ वर्षा आश्विनमे अनाज सस्ता, सुवर्णादि धातुके भाव सम, कार्त्तिकादि पांच मास उत्तम अनाज समान भाव, दूसरी वस्तु तेज हो, परन्तु मोती प्रवाल (मूगा) आदि तेज हो, मार्गशीर्षमे रोग अधिक, वणिकजनको पीडा, उच्च मुलतान देश मे रोगपीडा छत्रभग और लोक दुःखी हो॥ २८॥ मन्मथवर्षका स्वामी शुक्र है, राजाओंमे विरोध पूर्व देशमे लोक पीडा परन्तु वर्षा अधिक, रोग अधिक, धान्यका संग्रह करना उचित है, चैत्रमे वर्षा भूमिकंप, वैशाखमे सस्ता, ज्येष्ठ आषाढमे तेज होने से धान्यसे छ गुना लाभ श्रावणमे थोडी वर्षा, भादोंमे दिन १४ बड़ी वर्षा, आश्विनमें रोग पीडा, अनाज महँगा, सब धातु सस्ती, कार्त्तिकमे सुभिक्ष, गुर्जर देशकी अपेक्षा अनाज भाव सम, मार्गशीर्षादि तीन मास अनाज सस्ता, लोक सुखी, सब धातु सस्ती और वस्त्र तेज हो॥ २९॥ दुर्मुख-

शुभ, अल्पमेघो मन्त्री लोकाना पीडा; मरागा लोका उत्तरापथे दुष्काल, पश्चिमायां महापीडा, पूर्वदेशे सुभिक्ष; अन्न महर्घ वैर नकुलसपाम्यां विष गृह्यते; चैत्रादिमासत्रये समघ (४००) ता; आषाढेऽल्पमेघ। श्रावणे प्रथमवायु सर्व धान्यमहर्घता भाद्रपदे कणानां मणां १ प्रतिद्रम्मा ८८ लभ्यन्ते, खण्डवृष्टि, आश्विने रोगपीडा सर्वे मानव मम घा कार्तिकादिमासा ४ रौरव दुर्भिक्ष गोब्राह्मणपीडा जीजी यादया कृता प्रयत्नन्त माता पुत्र विक्रया पिता पुत्रस्नेहमुक्त फाल्गुन रोगपीडा; राज्ञां परस्परं विरोध लोकपीडा ॥१०॥ हेमलम्बे राहु स्वामी अतिरौरव मरागा लोका भूकम्पाद्य उत्पाता वणिक पीडा। चैत्र वैशाखमासयोर्धान्यादिमन्दभाव परचक्रागम ज्येष्ठादिमासत्रये धान्य महर्घ चतुर्गुणो ला भ भाद्रपद महामेघ अन्नसमना मञ्जिष्ठामरिचलवंगचन्दन यवकुसुमहर्घता अन्नसमना कार्तिके छत्रभङ्ग लोकपीडा

वर्षका स्वामी शनि अशुभ है थोडी वर्षा बहु लोगोंको पीडा रोगप्रसि उत्तरमें दुष्काल पश्चिम में महापीडा पूर्व देशमें सुकाल, अनाज महँगा हुआ मार वैशादि तीन मास सस्ता आषाढमें थोडी वर्षा श्रावणमें प्रचण्ड वायु सब धान्य तेज भाद्रपदमें धान्य मण एकका दाम ८८ हो खण्ड वृष्टि रोगपीडा मब धातु सस्ती कार्तिकादि चार मास घोर दुर्भिक्ष गौ ब्राह्मणको पीडा माता पुत्रको बेचे पिता पुत्रस्नेहसे रहित फाल्गुन में रोगपीडा राजाओं का परस्पर विरोध और लोकको पीडा हो ॥ १० ॥ हेमलम्बसंवत्सरका स्वामी राहु है महादुख लोगोंमें रोग भूकम्पादि उत्पात व्यापारियोंको पीडा चैत्र तथा वैशाखमें धान्यादिका भाव मंदा शत्रुका आगमन ज्येष्ठादि तीन मासमें धान्य तेज होनेसे चतुर्गुणा लाभ, भाद्रपदमें महावर्षा, अन्नभाव सम मंजीठ मिरच लौंग और चंदन की वस्तु व म

अन्नकलशिकां प्रतिफदिया१०२, सर्वधातुसमघः चतुष्पदपीडा। मार्गशीर्षादिमास४ राजा सुस्थः, लोकाः सुखिनः॥३१॥ विलम्बे, वत्सरे रविः स्वामी, चैत्रवैशाखयोर्धान्यमहर्घता आषाढे श्रावणे धान्यकलशिकां प्रतिटंका ५ फदिया २५ लभ्यन्ते, आषाढे मेघोऽल्पः। श्रावणे महामेघः सुभिक्षं। भाद्रपदे दिन ११ वर्षा बहुला परं गोधूमाश्चणकाश्च महर्घाः पश्चिमायां सुभिक्षं राजविग्रहः पूर्वदेशेऽन्नं दुष्प्रापं, दक्षिणदेशे राज्ञामन्योऽन्यं विरोधः, आश्विनेऽन्नमहर्घता रोगपीडा सर्वक्रयाणकवस्तुमहर्घता, कार्त्तिकादिमासपञ्चके धान्यकलशिकां प्रति फदिया १० लभ्यन्ते ॥३२॥ विकारिवत्सरे चन्द्रः स्वामी, सर्वान्नवस्तुमहर्घता द्विजाः सुखिनः। चैत्रादिमासत्रये धान्यमहर्घता, आषाढे श्रावणे च महान्मेघः सुभिक्षं, भाद्रपदे स्वल्पमेघः, आश्विने सर्पभय केतूदयः, अन्नकलशिकां १

हुंगे हो, अन्नभाव सम, कार्तिकमें छत्रभग लोकपीडा, दश फदियाका धान्य एक कलशी विके, सब धातु सस्ती, पशुओंमें पीडा, मार्गशीर्षादि चार मास राजा शान्त रहे और लोक सुखी हो ॥ ३१ ॥ विलम्बीवर्षका स्वामी रवि, चैत्र वैशाखमें धान्य तेज, आषाढ श्रावणमें २५ फदिया का कलशी धान्य विके। आषाढमें वर्षा थोडी, श्रावणमें महावर्षा और सुकाल, भाद्रपदमें दिन ११ वर्षा अधिक परंतु गेहूँ चणा तेज, पश्चिममे सुकाल राजविग्रह, पूर्वदेशमें अन्न दुष्प्राप्त, दक्षिणदेशमे राजाओंमे परस्पर विरोध, आश्विनमें अनाजभाव तेज रोगपीडा, सब क्रयाणकवस्तु तेज, कार्तिकादि पाच मासमें दश फदिया का कलशी धान्य विके ॥ ३२ ॥ विकारीवर्षका स्वामी चन्द्र, सब प्रकारके धान्य और वस्तु महँगी हो ब्राह्मणोंको सुख, चैत्रादि तीन मास धान्य तेज, आषाढ श्रावणमे महामेघ और सुकाल, भादोंमे थोडीवर्षा, आश्विनमे सर्पका भय, केतुका उदय, फदिया १० का कलशी धान्य विके, सब व-

प्रतिपदिवा १० सम्पन्न मासस्तुसमर्घता, कार्त्तिकादिमास त्रये धान्य समर्घं पौषे रोगपीडा, लोकः सुखी फाल्गुने धान्यमहर्घता ॥३३॥ शर्वरीवत्सरभाम स्वामी, वर्षा स्वल्पा, प्रजाप्रलय, राजविरोध, चैत्रादिमासत्रयेऽल्पमहर्घता, आषाढ त्रये महान मेघः परं खण्डवृष्टिः, अल्पमहर्घता। भाद्रपदे वर्षा नास्ति राजपीडा लोकेषु आश्विने रोगपीडा अर्क कलशिका रक्ता कदियानाणकैः लभ्यते दशभिः पश्चिमायां दुर्भिक्ष पूर्वस्यां सुभिक्षं कार्त्तिकादिमासत्रयेऽन्न महर्घं पौषादिमासत्रये धान्य समर्घम् ॥३४॥ प्लव बुधः स्वामी, वर्षाकाले वर्षा बहुला उत्तम समयः, चैत्र धान्यमन्दता, वैशाखे भूमि भयङ्करी, ज्येष्ठे समसमर्घता, गिलाह पूर्वदेशे पीडा आषाढे महावायु उत्पाताः, लोकाः सरोगाः श्रावणे महान मेघः दिन १७ वर्षा भाद्रपदे घना घनाघनः, धान्यं समर्घं, कलश लशिका रक्ता कदियानाणैरष्टभिर्लभ्यम, आश्विने मर्घयस्तु

सु मर्घ। कार्तिक मार्गशीर्ष मन्द महँगा पौषमें रोगपीडा लोक सुखी फाल्गुनमें धान्य महँगा ॥ ३३ ॥ शर्वरी संवत् स्वामी भौम वर्षा थोडी प्रजाका विनाश राज [illegible] चैत्रादि तीन मास [illegible] आषाढ श्रावणमें [illegible] भाद्रपदमें वर्षा नहीं [illegible] राजपीडा आश्विनमें रोगपीडा [illegible] पश्चिममें दुर्भिक्ष पूर्वमें सुभिक्ष कार्तिक मार्गशीर्ष में धनाज तेज और पौषादि तीन मास में [illegible] ॥ ३४ ॥ प्लव संवत् स्वामी बुध [illegible] उत्तम [illegible] धान्य [illegible] वैशाख भूमि [illegible] पूर्वदेशमें पीडा आषाढ में महावायु [illegible] श्रावणमें [illegible] दिन १७ वर्षा [illegible] धान्य [illegible]

सर्वधातुसमर्घता, गोधूमानां महार्घता, कार्त्तिकेऽन्नं समर्घं, लोकः सुखी, मण्डपाचले विग्रहः, पौषादिमासत्रयेऽतिसुभिक्षं राजा राज्यसुस्थः ॥३५॥

शुभकृद्वत्सरे गुरुः स्वामी, अतिवर्षा, राजा प्रजा सुखी न वर्त्तते, उत्तरापथे वह्निभयं, चैत्रे वैशाखे समर्घता, धातुसमर्घता, श्रावणे नवमीतिथितो वर्षा, अन्नसमर्घता, भाद्रपदे महामेघः, अन्नकलशिका एका फदियानाणकैरष्टभिः, घृतं तैलं समर्घं, कार्त्तिकादिमासत्रये युगंधरीगोधूमचणकतिलमुद्गचवला इत्याद्यन्नं समर्घं, राज्ञां परस्परं विरोधः, ज्येष्ठादित्रिमासेषु सर्ववस्तु समर्घं, फाल्गुने किञ्चिदुत्पातः, मरुदेशे रोगः परं सुभिक्षम् ॥ ३६ ॥ शोभने त्विदं फलं शुक्रः स्वामी, राज्ञां प्रजानां च सुखं, अतिवर्षा, चैत्रादिमासत्रये धान्यं समर्घं, राजविग्रहः, किञ्चिदुत्पातः, आषाढेऽल्पमेघः, श्रावणेऽतिवर्षा, परं लोकपीडा, भाद्रपदे महान्मेघः,

---

श्विनमें सब वस्तु सस्ती, गेहुँ तेज, कार्तिकमे अनाज सस्ता, लोक सुखी, मंडपाचलमे विग्रह, पौषादि तीन मास सुभिक्ष; राजा प्रजा सुखी ॥ ३५ ॥ शुभकृद् वर्षका स्वामी गुरु, वर्षा अधिक, राजा तथा प्रजा सुखी नहीं, उत्तरमार्गमें अग्निका भय, चैत्र वैशाखमे अन्नभाव सस्ता, धातुभाव सस्ता, श्रावणकी नवमी से वर्षा, अन्नभाव सस्ता, भाद्रपद में बड़ी वर्षा, आठ फदिया का कलशी धान्य, घी तेल सस्ता, कार्त्तिकादि तीन मास मे युगधरी गेहूँ चणा तिल मग चवला आदि अन्न सस्ते, राजाओं में परस्पर विरोध, ज्येष्ठादि तीन मास सब वस्तु सस्ती, फाल्गुन में कुछ उत्पात, मरुदेश में रोग परंतु सुभिक्ष हो ॥ ३६ ॥ शोभनवर्ष का स्वामी शुक्र, राजा प्रजा को सुख, वर्षा अधिक, चैत्रादि तीन मास धान्य सस्ता, राजविग्रह, किञ्चित् उत्पात, आषाढमें थोड़ी वर्षा, श्रावण में वर्षा अधिक परंतु लोकपीडा, भादों मे महामेघ, आश्विन में

आश्विने सुभिक्ष ततोऽपि किञ्चिद्विग्रह ॥ १७ ॥ कोधिनि वत्सर शनि स्वामी, द्वादशमासेषु अन्न महर्घं, मध्यम स मय, राज्ञां परस्परं विरोध, प्रजा पापरता, लोका निर्धर्मा व्यापारहीना, चैत्र वा वैशाखे करकापात, रोगो मारिभय, ज्येष्ठे धान्यं महर्घं, आषाढे समता, अल्पो मेघः, श्रावणे रौरव, भाद्रपदे खण्डवृष्टिः, अन्नं महर्घं, आश्विने मेघवर्षा, सर्वत्र रसकससमता, अन्न वस्तु सर्वं समर्घं, कार्तिके समता ॥ १८ ॥ विश्वावसुवत्सरे राहु स्वामी वर्षासमता पर अन्न महर्घता, चैत्रे राज्ञां विरोधः, धान्यं महर्घं, वैशाखे मण्डप-दुर्गे विग्रह, मरुदेशे दुर्भिक्षं, पश्चिमायां अन्न महर्घं, ज्येष्ठे विग्रहोऽल्प ४४ फदियानाणकैरेका कलशिका, आषाढेऽल्प मेघ, श्रावणे भाद्रपदे दुर्भिक्षं ५५ फदियानाणकैरेका कलश कलशिका, अन्यत्र देशे सुभिक्ष, आश्विने लोकपीडा, रोग बाहुल्य, गोमहिषघाटकाजामहर्घता, सुवर्णादिधातुमह

सुभिक्ष पीछे कुछ विग्रह हो ॥ १७ ॥ क्रोधीवर्ष का स्वामी शनि बारह मास अन्नभाव तेज मध्यम समय राजाओं में परस्पर विरोध, प्रजा पाप कार्य में तत्पर लोक धर्म रहित तथा व्यापार रहित चैत्र वैशाखमें करकापात रोग और महामारीका भय ज्येष्ठमें धान्य मँहगा। आषाढ में समभाव, थोड़ी वर्षा श्रावणमें दु ख भादोंमें खण्डवृष्टि अनाजभाव तेज, आश्विनमें बरसवर्षा रस कसका भाव समान और कार्तिकमें अनाजका भाव समान ॥ १८ ॥ विश्वावसुवर्ष का स्वामी राहु, समान वर्षा पीछे अनाज तेज चैत्रमें राजाओंमें विरोध, धान्य तेज, वैशाखमें मण्डपदुर्गमें विग्रह, मरुदेशमें दुर्भिक्ष, पश्चिममें अनाज भाव तेज, ज्येष्ठमें विग्रह, फदिया ४४ का कलशी धान्य, आषाढमें थोड़ी वर्षा श्रावण भाद्रपदमें दुष्काल, फदिया ५५ का कलशी धान्य, अन्य देशे सुभिक्ष, आश्विनमें लोकपीडा, रोग अधिक, गौ भैंस घोड़ा और बकरी

र्घता, कार्त्तिकादिमासत्रये समर्घता, कणकलशिका ११ फदियानाणकैः ॥ ३९ ॥ पराभवसंवत्सरे केतुः स्वामी, द्वादशमासवर्षा, मध्यमवृष्टिः, चैत्रे वैशाखे चान्नं महर्घं, मेघगर्जितविद्युद्वायवः, ज्येष्ठे धान्यसंग्रहः, उद्दण्डवायुः, आषाढेऽल्पमेघः, अन्ने द्विगुणो लाभः, श्रावणे महती वर्षा, अन्नसमता, भाद्रपदे खण्डवृष्टिः परं दुर्भिक्षं, आश्विने किञ्चिद् लोकसुखं परं धान्यरसवस्तु महर्घमेव धातुसमर्घता, कार्त्तिकादिमासपञ्चके समता, पश्चिमायामन्नसमता, सिन्धुदेशाद् धान्यागमः ॥ ४० ॥ इति मध्यमविंशतिका पूर्णा ॥

प्लवङ्गनामसंवत्सरे ब्रह्मा स्वामी, चैत्रे वैशाखे महर्घता, ज्येष्ठमध्ये राजपीडा, आषाढेऽल्पमेघः, भूमिकम्पः, हस्तिपीडा, तुरङ्गमहर्घता, श्रावणे महामेघो भाद्रपदाष्टमीतो महामेघः, आश्विने रोगचालकः, रसमहर्घता, फाल्गुने कण

का भाव तेज, सोना आदि धातु तेज। कार्त्तिकादि तीन मास अनाज के भाव सस्ता, ११ फदिया का कलशी धान्य ॥ ३९ ॥ पराभववर्षका केतु स्वामी, बारह मास में मध्यम वर्षा। चैत्र वैशाखमे अनाज तेज, मेघकी गर्जना, बिजली कड़के, वायु चले। ज्येष्ठमें धान्य का संग्रह करना चाहिए। आषाढमें वर्षा थोड़ी अनाज मे दूना लाभ। श्रावणमे बडी वर्षा, अनाज भाव सम। भाद्रपद में खण्डवृष्टि पीछे से दुर्भिक्ष। आश्विनमे कुछ सुख पीछे धान्य और रस की वस्तु महँगी, धातु सम। कार्त्तिकादि पाच मास सम, पश्चिम में अनाज भाव सम सिन्धु देश से धान्य का आगमन ॥ ४० ॥ इति मध्यम विंशतिका पूर्णा ॥

प्लवगवर्षका स्वामी ब्रह्मा, चैत्र वैशाखमे अन्न तेज, ज्येष्ठमे राजपीड़ा, आषाढमे थोड़ी वर्षा, भूमिकम्प, हाथीको पीडा, घोडे तेज, श्रावणमें महामेघ, भाद्रपद अष्टमीमे महामेघ, आश्विनमें रोग, रस महँगे, फाल्गुन म दश फदियाका कलशी धान्य हो, घोड़ा और भैंसको पीडा, लोक पीड़ा

कार्त्तिके एका फदिया १० प्रमाणे, अश्वमहिषीपीडा लोकपीडा ॥४१॥ कीलकसंवत्सरे विष्णु स्वामी, वर्षा मध्यमा, चैत्रे धान्यं महर्घं, वैशाखे रोग, मार्गशीर्षे दुर्भिक्ष, पश्चिमायां सम र्घता, ज्येष्ठे धान्यसंग्रह, आषाढे श्रावणेऽल्पमेघ, अन्नम हर्घं, धान्ये त्रिगुणो लाभ, भाद्रपदेऽष्टमीतिथेर्मेघः, आश्वि ने वर्षा अन्न महर्घं, राजधानीनगरे उपद्रवस, न रोगा बहु ला गोधूमा महर्घाः, सर्वधान्यं समर्घं, रसा समर्घा, घृत एकस्मिन् प्रति फदिया१८ नाणकैः कार्त्तिकादिमासत्रये स मर्घता, माघमासेऽन्नमहर्घता रोगपीडा महती, फाल्गुनम ध्ये राजा राज्यसुख प्रजासुख अन्नसमता॥४२॥ सौम्यसं वत्सरे रुद्र स्वामी, अल्पमेघ, गावाऽल्पक्षीरा, वृक्षा अल्प फला, चैत्र महर्घता, वैशाखे प्रचण्डवायु, ज्येष्ठे विग्रह, प्र जापीडा, आषाढेऽल्पमेघोऽन्न महर्घं, श्रावणे महामेघ,धा

॥ ४१ ॥ कीलकसंवत्सरका स्वामी विष्णु मध्यम वर्षा चैत्रमें धान्य तेज, वैशाखमें रोग, मार्गशीर्षमें दुर्भिक्ष पश्चिममें सस्ता, ज्येष्ठमें धान्य संग्रह क- रना आषाढ श्रावण में थोड़ी वर्षा अनाज महंगा धान्यसे त्रिगुना लाभ भाद्रपदमें अष्टमी तिथि म वर्षा आश्विन में वर्षा अनाज भाव तेज, राजधानी नगरमें विनाश रोग अधिक न हो, गेहूँ तेज, सब धान्य सस्ता, रस तेज, फदिया १८ का एक मण घी कार्तिकादि तीन मास सस्ता, माघ मासमें अनाज तेज, रोग पीडा अधिक फाल्गुनमें राजा राज्य प्र- जाको सुख और अनाज भाव सम हो ॥ ४२ ॥ सौम्यवर्षका स्वामी रुद्र, अल्पवर्षा गायें थोडा दूध दें, वृक्षोंमें फल थोडे चैत्रमें अनाज भाव तेज वैशाखमें प्रचंड पवन; ज्येष्ठमें विग्रह, प्रजा पीडा आषाढमें थोडी वर्षा अनाज तेज श्रावणमें वर्षा अधिक अन्नसे दूना लाभ गेहूँ, फदिया का चौथाई बिके, सब धान्य सम, रस तेज, भाद्रपद में अपराह्नि अनाज

न्ये द्विगुणो लाभः, गोधूमानां कलशिका एका फदिया ५० प्रमाणैर्लभ्यते, सर्वधान्यसमता, रसमहर्घता, भाद्रे खण्ड-वृष्टिरन्नदुर्भिक्षं, आश्विने राजविरोधो लोकपीडा मार्गविषमता अन्नसंग्रहः, धान्ये द्विगुणो लाभः, सर्वरसधातुसमर्घताः कार्त्तिकादिमासा४ तेषु समता परं राजविड्वर रोगचालकः, देशा उद्ध्वंसाः, देशान्तरे लोकपीडा, फाल्गुने उद्दण्डवायुः, पश्चिमायां सुभिक्षं, सिन्धुदेशे राजविरोधः, अन्नसमता ॥४३॥ साधारणे रविः स्वामी, चैत्र धान्यमन्दा, वैशाखे ज्येष्ठे च उत्पातो, भूमिकम्पो रोगवृद्धी राजविरोधो धान्यमहर्घतादिः, आषाढे वायुरुद्दण्डो रौरवं क्वचिदल्पमेघः, श्रावणे महती वर्षा, अन्नसमता, भाद्रपदेऽल्पमेघः, आश्विनेऽल्पधान्यनिष्पत्तिः, कार्त्तिकादिमासद्वयं मध्यमरिष्ट भूमिकम्पः, अकस्माद् राजविग्रहः, अन्नमहर्घता, फाल्गुने चतुष्पदः सरोगभाव., भूम्यामल्पफला वृक्षाः संगृहीतधान्ये त्रिगुणो लाभः सर्वधातुमहर्घता सर्वरससंग्रहः पर राजा दुः-

---

का दुर्भिक्ष, आश्विनमें राजविरोध, लोकपीडा, मार्गमें विषमता, धान्यका संग्रह से दूना लाभ, सब रस और धातु सस्ती, कार्त्तिकादि चार मास सम, पीछे राजविप्लव, रोग चाले, देश विनाश, देशान्तर में लोकपीडा, फाल्गुनमें प्रचण्ड वायु, पश्चिममे सुभिक्ष, सिंधुदेश में राजविरोध और अन्नभाव सम ॥ ४३ ॥ साधारणवर्षका स्वामी रवि, चैत्रमें धान्य मन्दा, वैशाख ज्येष्ठमे उत्पात, भूमिकम्प, रोगवृद्धि, राजाओंमे विरोध, धान्यकी तेजी, आषाढमे प्रचंड पवन, कभी थोडी वर्षा, श्रावणमे बडी वर्षा अन्नभाव सम, भाद्रपदमे थोडी वर्षा, आश्विन मे थोड़ी अन्नप्राप्ति, कार्त्तिक मार्गशीर्षमे मध्यम दुःख, भूमिकम्प, अकस्मात् राजविग्रह, अन्नभाव तेज, फाल्गुनमें पशुओंको रोग, वृक्षोंमे थोडे फल, संग्रह किया हुआ धान्यमे ती-

र्घा ॥४४॥ विराधकृत्वत्सर चन्द्र स्वामी, मणहपाथलदुर्गे विग्रह, कुकुणदेशे मेदपाटमण्डले मध्यदेशे महारौरवं, परस्पर राजविग्रह, मार्गा विषमा, चैत्रादिमासत्रयेऽसमता, आषाढेऽल्पमेघ, श्रावणे महावर्षा, अन्नसमर्घता, भाद्रपदे मेघ अन्नसमता मयधातुमहर्घता, फाल्गुने देशविरोध, मार्गवैषम्यं, मंजिष्ठासोपारिकापटसूत्रदन्तमयवस्तुगुग्गुलादिमहर्घता ॥४५॥ परिधाविनि वत्सर भौम स्वामी, दुर्भिक्षं, नागपुर मेदपाट आलन्धरदेशे च राज्ञा विरोध चैत्रादिमासचतुष्टयेऽन्नसमता, तत्र संग्रह कार्य, लोके रोगपीडा, मरुदेशे मनुष्येषु मारिभय, चतुष्पदमहिषीतुरगहस्तिनां पीडा श्रावणे भाद्रपदेऽल्प मेघ, खण्डवृष्टिरन्नसमता सकलरससमर्घता सर्वं धातव सम घा कार्त्तिकादिमासपञ्चके धान्यसमता राजविड्वर सिन्धुदेशाद् धान्यागम ॥४६॥प्रमाथिनि वत्सर बुध स्वामी, कुंकुर्ण

गुना लाभ सब धातु तेल सब रसका संग्रह करना उचित है, राजा दुःखी ॥ ४४ ॥ विरोधकृतवर्षका स्वामी चन्द्र मंडपाचलदुर्गमें विग्रह, कुंकण देशमें मेदपाटमें और मध्यदेश में महाघोर परस्पर राजविग्रह, मार्ग विषम चैत्रादि तीन मास अन्नभाव सम आषाढमें थोड़ी वर्षा श्रावण में वर्षा अधिक, अन्न सस्ता भाद्रपद में मेघ अन्नभाव सम सब धातु तेज फाल्गुन में देशमें विरोध मार्ग में विषमता मंजीठ सोपारी वस्त्र सूत दान्त की वस्तु और गुग्गल आदि तेज हो ॥ ४५ ॥ परिधावीवर्षका स्वामी मंगल दुर्भिक्ष नागपुर मेदपाट और जालंधर देशमें राजाओंमें विरोध, चैत्रादि चार मास अनाजका भाव सम; उसमें अनाजका संग्रह करना लोकमें रोगपीडा, मरुदेशमें महामारीका भय मनुष्य भैंस घोड़ा और हाथीका पीडा। श्रावण मासमें थोड़ी वर्षा खंडवर्षा, अनाजका भाव सम, सब रस सस्ते, सब धातु सस्ती कार्तिकादि पांच मास धान्य सम

दुर्भिक्षं विग्रहः, चैत्रे धान्यमन्दता, वैशाखज्येष्ठयोर्धान्यसंग्रहः, आपाढे नवीनमुद्रा परमल्पमेघः, श्रावणस्यार्द्धे मेघवर्षा, अन्नं महर्घं धान्ये त्रिगुणो लाभः, भाद्रपदे महामेघः, अन्न समर्घं,आश्विनादिमासाः६ सुभिक्षं, सर्वरसकससमर्घता, लोकसुखी, गुरूणां पूजा महिमवृद्धिः,राजा धर्मी ॥४७॥ आनन्दे गुरुः स्वामी, वर्षा बहुला सुभिक्षं, चैत्रे वैशाखे चान्नं समर्घं, ज्येष्ठाषाढयोर्महावृष्टिः परं नवीनमुद्रा जायते, श्रावणे महान् मेघः, भाद्रपदे खण्डवृष्टिः, गोधूमा महर्घाः, आश्विने समर्घाः रसान्नवस्तुसमता धातुमहर्घता, कार्त्तिकेऽकस्माद् भय लोकपीडा मार्गशीर्षे लोकानां दक्षिणदिशि गमनम्, पौषे माघे च मेघवर्षा, अन्नं समर्घं, फाल्गुने धान्यं महर्घं ॥४८॥ राक्षसे शुक्रः स्वामी, धान्यसंग्रहः कार्यः, चैत्रे करकाः पत-

---

भाव, राजविप्लव , सिंधुदेशसे धान्यकी प्राप्ति ॥ ४६ ॥ प्रमाथीवर्षका स्वामी बुध; कुकणदेशमें दुर्भिक्ष, विग्रह , चैत्रमे धान्य भाव मदा, वैशाख ज्येष्ठमें धान्य सग्रह करना, आपाटमे नवीन मुद्रा, थोडी वर्षा, आधा श्रावणमें वर्षा, अनाज तेज, धान्यसे तीगुना लाभ, भादोंमे महामेव, अनाज सस्ता, आश्विनादि छमास सुभिक्ष, सब रसकस सस्ता, लोकसुखी, गुरु जनोंकी पूजा, महिमाकी वृद्धि और राजा धर्मी हो ॥ ४७ ॥ आनन्दवर्षे स्वामी गुरु, वर्षा अधिक , सुभिक्ष, चैत्र वैशाखमें अनाज सस्ता, ज्येष्ठ आषाढमें वडी वर्षा, नवीनमुद्रा , श्रावणमे महावर्षा, भाद्रपदमें खण्डवृष्टि, गेहूँ तेज, आश्विनमें सस्ता, रस अन्न और वस्तु समभाव, धातु तेज, कार्तिकमें अकस्मात् भय, लोकपीडा, मार्गशीर्षमें लोगोंका दक्षिणदिशामे गमन, पौषमें और माघमें वर्षा, अनाजका भाव सस्ता,फाल्गुनमें धान्य तेज ॥ ४८ ॥ राक्षसवर्षका स्वामी शुक्र, धान्य सग्रह करना उचित है, चैत्र में करा (ओले) गिरे, वैशाख ज्येष्ठमें तेल महँगे, ज्येष्ठ आषाढमें गुड

न्ति, वैशाखे ज्येष्ठ तैलं महर्घं, ज्येष्ठे आषाढे गुडखण्डाद्यर्घ्य महर्घं, आषाढेऽल्पमेघ, अन्नमहर्घता, भाद्रपदे महामेघ, म समर्घता, आश्विने समता, कार्तिके रोगार्ति, मार्गशीर्षा दिषश्चारो मासाधान्यसमर्घता, राजा सुखी, प्रजा राजमान्या, फाल्गुने समर्घता, वृक्षा नवपल्लवा, मार्गे सुख सुभिक्षम् ॥४९॥ नलसंवत्सर शनि स्वामी, अल्पमेघ परं समर्घता, चैत्रे रा गपीडा, वादल बहुल, वायु प्रबल, वैशाखेऽरिष्टमन्नसंग्रह कार्य, ज्येष्ठे राज्ञां परस्पर विग्रहः लोकसुखी, मार्गवैषम्य क्वचिदाषाढे श्रावणे चाल्पमेघः, धान्ये त्रिगुणचतुर्गुणो लाभ, भाद्रपदे खण्डवृष्टिदुर्भिक्षं धान्यसंग्रहः भाद्रपदे कार्यं, आश्वि ने विक्रियः, मार्गशीर्षादिमासत्रयेऽन्नसमता, फाल्गुने रोगचा लकः, तस्करभयः, उत्तरदेशे दुष्काल, पूर्वस्यां सुभिक्षम्॥५०॥ पिङ्गले राहु स्वामी, उच्चमुलतान नागपुरमरुदेशे दिल्ली मण्डलेषु मथुरायां पूर्वदेशेषु दुर्भिक्षमन्न महर्घं सर्वधातुसमर्घता

शक्कर तेल घावशमें धाड़ी वर्षा अनाजका भाव तेज, भाद्रपदमें महामेघ, अनाज सस्ता आश्विनमें सम कार्तिकमें रोगपीडा, मार्गशीर्षादि चार मास धान्य सस्ता राजासुखी प्रजा राजाका सन्मान करें, फाल्गुनमें सस्ता, वृक्षोंमें नये पत्ते मार्गमें सुख और सुभिक्ष ॥ ४९ ॥ नलसंवत्सरका स्वामी शनि थाड़ी वर्षा अनाजभाव सम चैत्रमें रोगपीडा बहुत बादल और प्रबल वायु वैशाखमें अरिष्ट अनाज संग्रह करना ज्येष्ठमें राजाओंमें परस्पर विग्रह लोकसुखी मार्गमें विषमता, कभी आषाढ श्रावणमें थाड़ीवर्षा धान्यमें तीगुना चागुना लाभ भाद्रमें खण्डवृष्टि दुर्भिक्ष, भाद्रमें धान्य संग्रह करना और आश्विनमें बचना मार्गशीर्षादि तीन मास अनाजका भाव सम, फाल्गुनमें रोग और चोरका भय उत्तरदेशमें दुष्काल और पूर्वमें सुभिक्ष हो ॥ ५० ॥ पिङ्गलवर्ष का स्वामी राहु उच्चमुलतान नागपुर मरुदेश देहलीदेश मथुरा

परं सर्वत्र विग्रहः, नगरे वासः, ग्रामभुद्वसनं रोगपीडा राजा सुस्थः प्रजासुखमन्नसमता गुर्जरदेशे समर्घता, सिन्धुदेशाद् धान्यागमनं, चैत्रे धान्यमहर्घता प्रजापीडा, वैशाखादिमासत्रयेऽन्नमहर्घता प्रजाक्षयोऽश्वपीडा, आषाढे श्रावणेऽल्पमेघः, धान्ये चतुर्गुणो लाभः, भाद्रे खण्डवृष्टिः, आश्विने समता, कार्त्तिकादिमासपञ्चके विग्रहपीडा, अन्नमहर्घेना चतुष्पदरोगः ॥ ५१ ॥ कालवत्सरे केतुः स्वामी, अल्पमेघो देश उद्वसनम्, अल्पव्यापारः राजविग्रहः, चैत्रे वैशाखे चात्यरिष्टमुत्तरापथे देशभंग., ज्येष्ठे धान्यसंग्रहः, धान्ये षड्गुणो लाभः, आषाढेऽल्पमेघः, लोके दुःख, मार्गविषमाः, श्रावणे महान् मेघोऽन्नसमता, भाद्रपदे खण्डवृष्टिः, धान्यदुर्भिक्षमुत्पातः, आश्विने रोगशीतलादिविकारः, धान्य ऋदिना ७५ नाणकैः कणकलशिका एका लभ्यते, सर्वरसमहर्घता सर्वथा-

और पूर्वदेशमें दुर्भिक्ष, अन्नभाव तेज, सब धातु सस्ती, सब जगह विग्रह, नगरमें निवास, गांवका विनाश, रोगपीडा, राजा सुखी, प्रजा सुखी, अन्नभाव सम, गुजरात देशमें सस्ता, सिंधु देशमे धान्यका आगमन, चैत्रमें धान्य तेज, प्रजापीडा, वैशाखादि तीन मास अन्न तेज, प्रजाका क्षय, घोडाको पीडा, आषाढ श्रावणमें थोड़ी वर्षा, धान्यमे चोगुना लाभ, भाद्रपद में खण्डवृष्टि आश्विन में सम, कार्त्तिकादि पाच मास विग्रह और पीडा, अन्न तेज, पशुओंमे रोग ॥ ५१ ॥ कालवर्षका स्वामी केतु, थोडी वर्षा देशका उजाड़ थोड़ा व्यापार, राजविग्रह, चैत्र वैशाखमे अधिक दुःख, उत्तरमें देशभग, ज्येष्ठमें धान्यका संग्रह करनेसे छगुना लाभ, आषाढमे थोड़ी वर्षा, लोगोंमें दुःख, मार्ग विषम, श्रावणमे महामेघ, अन्नभाव सम भादोंमे खण्डवृष्टि, धान्यकी दुर्भिक्षता, उत्पात, आश्विन मे रोग शीतलादिका विकार, अन्न ७५ रुपियाका एक कलशी बिके, सब रस तेज,

सुसमर्घता,कार्त्तिकादिमासपञ्चक यावत् परं राजविड्वर, मध्य चतुष्पदपीडा वृक्षा सफला ॥५२॥ सिद्धार्थे रवि' स्वामी, सुभिक्ष सर्वदेशे वसतिर्बहुला धान्यविक्रय', चैत्रे वैशाखे लोकपीडा, ज्येष्ठाषाढयोरुदण्डवायु', श्रावणे दिनत्रये महावर्षा सर्वासमर्घता, भाद्रपदे खण्डवृष्टिः, आश्विनेऽन्नसमता, कार्त्तिके धान्यनिष्पत्तिर्बहुला अन्नसमर्घता, मार्गादिमासचतुष्टयमर्घ सार सर्वत्र माहकला उत्पात' क्वचित् राजविरोधो लोकसुखमन्नमूल्यमहर्घता॥५३॥ रौद्रे चन्द्र' स्वामी, पृथिवी रोगबहुला, चतुष्पदनाश', छत्रभङ्गाऽल्पमेघश्चैत्रादिमासत्रये महर्घता, आषाढ श्रावणेऽल्पमेघ' खण्डवृष्टि', भाद्रपदे महान् मेघोऽन्नसमर्घता, अन्यवस्तुमहर्घा सौपारिकाः लविंगसमर्घता लोकसुखी, चतुष्पदसमर्घता हस्तिपीडा ॥ ५४॥ दुर्मतौ भौम' स्वामी, चैत्र वैशाखे च धान्य समर्घं,

---

सब धातु सस्ती कार्त्तिकादि पाच मास तक राजविरोध, पाडा आदि पशुओंमें पीडा वृक्षोंमें फल ॥ ५२ ॥ सिद्धार्थसंवत्सर स्वामी रवि, सुभिक्ष सब देशमें बहुत वसति धनकी बिक्री, चैत्र वैशाख में लोकपीडा, ज्येष्ठ आषाढमें उदण्ड (प्रचण्ड) वायु श्रावण में तीन दिन महावर्षा, सब अन्न तेज भादोंमें खण्डवृष्टि, आश्विन में अन्नभाव सम, कार्त्तिकमें धान्य प्राप्ति अनाज सस्ता मार्गशीर्षादि चार मास सब स्थानमें अनाजकी प्राप्ति कहीं राजविरोध लोक सुखी और अनाजका भाव तेज हो ॥ ५३ ॥ रौद्रसंवत्सरका स्वामी चन्द्र पृथ्वीमें रोग अधिक पशुका विनाश छत्रभंग, थोडी वर्षा चैत्रादि तीन मास तेजी आषाढ श्रावणमें थोडी वर्षा, खण्ड वृष्टि भादोंमें अधिक वर्षा अनाज भाव सस्ता दूसरी वस्तु मँहगी सोपारी लौंग महँगी सस्ता लोक सुखी पशु सस्ते और हाथियोंको पीडा ॥५४॥ दुर्मतिसंवत्सरका स्वामी भौम, चैत्र वैशाखमें धान्य सस्ते, ज्येष्ठमें अनाज भाव

ज्येष्ठेऽन्नसमता, आषाढे उद्दण्डवायुः, श्रावणेऽल्पमेघोऽन्न-समर्घता, भाद्रपदे मेघानां महोदयः, गोधूमाः समर्घाः कण-कलशिका एका फदिया ३५ प्रमाणेन लभ्यते, सर्वधातवः समर्घताः, आश्विने सर्वरससमर्घता धान्यसमता, कार्त्ति-कादिमासद्वयं यावत् सर्ववस्तुसमता राजस्वस्थः ग्रामे ग्रामे नवीना वसतिः सर्वलोकसुखी, अश्वमहर्घता चतुष्पदमह-र्घता, पौषादिमासत्रये समता परं धातुसमर्घता ॥ ५५ ॥

दुन्दुभीवत्सरे बुधः स्वामी, वर्षा बहुला, अन्नसमर्घता र-सकसवस्तुसमता, चैत्रादिमासत्रयेऽन्नसमर्घता. आषाढे द्वि-गुणो लाभोऽल्पमेघः, श्रावणे दिन ११ महावृष्टिः. भाद्रपदे मेघा दिन ९ अन्नं समर्घं, देशा नवीना वसन्ति, आश्विने-ऽन्नं समर्घं, रोगा बहुला मंजिष्ठामरिचानां समर्घता, सर्वर-ससर्वधातुसमर्घता, कार्त्तिके धान्य समर्घं मेदपाटे लोकपीडा अन्नदुर्भिक्षं, पश्चिमायां शुभं, मार्गशीर्षे समर्घता राज्ञां प-

---

सम, आषाढमे प्रचंड पवन, श्रावणमे थोड़ी वर्षा, अनाज सस्ता, भाद्रपद-मे जलवर्षा, गेहूँ सस्ता, ३५ फदियाका कलशी धान्य, सब धातु सस्ती, आश्विन मे सब रस सस्ते, धान्यभाव सम, कार्त्तिक मार्गशीर्ष तक स-ब वस्तु का समभाव, राजा स्वस्थ. गाव गाव मे नवीन वसति अर्थात् नये नये गाव वसे, सब लोक सुखी, घोडे का भाव तेज, पशु का भाव तेज, पौषादि तीन मास समान परतु धातु सस्ती ॥ ५५ ॥

दुन्दुभीवर्षका स्वामी बुध, वर्षा अधिक, अनाजका भाव सस्ता, रसकस वस्तुका समान भाव, चैत्रादि तीन मास अनाज सस्ता, आषाढमे दुगुना लाभ, थोडी वर्षा, श्रावणमें दिन ग्यारह महावर्षा, भाद्रपदमे दिन नव वर्षा अनाज सस्ता, नवीन गाव वसे, आश्विनमे अनाज सस्ता, रोग अधिक, मँजीठ मिरच सस्ता, सब रस वस्तु धान सस्ती, कार्तिकमे धान्य सस्ता.

रस्परं विरोधः, पौषादिमासत्रये समता अन्नमहर्घता मं
जिष्ठा महर्घा ॥५६॥ रुधिरोद्गारिणि वत्सरे गुरुः स्वामी, रा
ज्ञामन्योऽन्य विरोधः, लोका देशान्तरं यान्ति दुर्भिक्षं द्विज
पीडा जीजीयादिकर प्रवर्त्तते, म्लेच्छराज्ये परदेशाद् धान्य
मायाति, माघे शुक्लपक्षे महामेघः, श्रावणे दिन १५ म
हावर्षा, चैत्रादिमासत्रये समर्घता धातवः समर्घाः, उत्तरा
पथे उच्चमुलताननिलंगगौडमोटादिदेशेषु दुर्भिक्षं पश्चिमायां
सुभिक्षं सिन्धुदेशे धान्यनिष्पत्तिः, भाद्रपदे खण्डवृष्टिः, धा
न्ये त्रिगुणो लाभः, आश्विने समता रोगपीडकः, कार्त्ति
कादिमासपञ्चकेऽन्नं समर्घं, मेदपाटे लोकपीडा ॥५७॥ रक्ताक्षे
शुक्रः स्वामी, अन्नं समर्घं, मेदपाटे पर्वते वासः, चैत्रादिमास
त्रये महर्घता अन्नस्य, सर्वे धातवः समर्घाः, फाल्गुनेऽन्नसं
ग्रहः, ज्येष्ठेऽन्नमहर्घता शुक्लपक्षे महामेघः । आषाढे महती

मेदपाटदेशमें मारवाड अनाजकी दुर्भिक्षता पश्चिममें शुभ, मार्गशीर्षमें सस्ता राजाओंका परस्पर विरोध पौषादि तीन मास सम, बाद सब चीज मेंहगी रहे ॥ ५६ ॥ रुधिरोद्गारी नामका स्वामी गुरु, राजाओं का परस्पर विग्रह लोग देशांतर गमन करें दुष्काल ब्राह्मणोंको पीडा, म्लेच्छदेशमें जीजीया आदि कर (महसुल) की प्रवृत्ति परदेशसे धान्यका आगमन आषाढ शुक्लपक्षमें बड़ी वर्षा श्रावणमें दिन पन्द्रह वर्षा अधिक, चैत्रादि तीन मास सस्ता धातु सस्ती उत्तरमें उच्चमुलतान तैलंग गौड भोट आदि देशोंमें दुर्भिक्ष पश्चिममें सुभिक्ष सिन्धुदेशमें धान्य निष्पत्ति, भाद्रपदमें खंड वर्षा धान्यमें तीगुना लाभ आश्विनमें सम रोगप्राप्ति, कार्तिकादि पांच मासमें अनाज सस्ता मेदपाटदेशमें लोकपीडा ॥ ५७ ॥ रक्ताक्ष नामका स्वामी शुक्र, अनाज सस्ता मेदपाटदेशमें पर्वत पर वास, चैत्रादि तीन मास में अनाजकी तेजी सब धातु सस्ती फाल्गुनमें अनाज संग्रह करना ज्येष्ठ

जलवृष्टिः सौराष्ट्रे ग्रामप्रवाहः, अन्नं समर्घं, श्रावणेऽल्पमेघः, किञ्चिद्विग्रहः, भाद्रपदेऽल्पवर्षा रोगपीडा, आश्विनेऽन्नं समर्घं रसकसवस्तु समर्घं, कार्त्तिकादिमासपञ्चके धान्यं महर्घं विवाहादिकं नास्ति, अश्वपीडा पश्चिमायां सुभिक्षम् ॥५८॥ क्रोधने शनिः स्वामी, रोगा बहुलाः, मन्दवृष्टिः प्रजापीडा, उत्तरापथे दुर्भिक्षं लोका निर्धनाः, चैत्रे वैशाखेऽल्पमेघोऽन्नसमर्घता, ज्येष्ठे मन्दता रोगपीडा अन्नसमता, आषाढे श्रावणेऽल्पवर्षा, धान्ये द्विगुणलाभः, भाद्रपदे मेघोऽन्नसमर्घं, आश्विने रोगपीडा, कार्त्तिके विग्रहः धान्य समर्घं, मार्गशीर्षे धान्य समता अकस्माद् उत्पातः, पौषे समर्घता वणिक्पीडा अन्नवस्तु च महर्घम् ॥५९॥ क्षयसंवत्सरे राहुः स्वामी, चैत्रे करकापातः, वैशाखे उत्पातः भूमिकम्पः, ज्येष्ठाषाढयो रोगचालकः नवीनमुद्रा उदयोऽल्पमेघोऽन्नं समर्घं, भाद्रपदे ख

में अनाजकी तेजी, शुक्ल पक्षमे महातपा, आषाढमें बडी जलवृष्टि, सोरठदेशमें गावोंका प्रवाहा (पानीमें खिचाई जाना) अनाज सस्ता, श्रावणमे थोड़ा वर्षा, कुछ विग्रह, भाद्रपदमे थोडा वर्षा, रोगपीडा, आश्विनमे अनाज सस्ता, रसकस वस्तु सस्ता, कार्तिकादि पाच मास धान्य तेज, वीवाहादिका अभाव, घोडेओ पीडा, पश्चिममे सुभिक्ष ॥ ५८ ॥ क्रोधनवर्षका स्वामी शनि रोग अधिक, मन्द वृष्टि प्रजाको पीड़ा, उत्तरमे दूर्भिक्ष, लोक धन रहित, चैत्र वैशाखमे थोडी वर्षा, अनाज सस्ता, ज्येष्ठमे मदा, रोगपीडा, अन्न भाव सम, आषाढमें और श्रावणमे थोड़ी वर्षा, धान्यमे दूना लाभ, भाद्रपदमें वर्षा, अनाज सस्ता, आश्विनमे रोग पीडा, कार्तिकमे विग्रह, धान्य सस्ता मार्गशीर्षमे धान्य सम अकस्माद उत्पात, पौषमे सस्ता, व्यापारियोंको पीडा अनाज वस्तु तेज ॥ ५९ ॥ क्षयसंवत्सरका स्वामी राहु, चैत्रमे ओलेका गिरना वैशाखमें उत्पात, भूमिकंप, ज्येष्ठ आषाढमे रोग, नवीन मुद्रा, थोड़ी

पद्वृष्टिः, चतुष्पदहानिः, फदिया ८८ नागकैर्धान्यकलशिका पका, आश्विने रोग परमसममना सर्वधातुसमना मध्यमस मथ राजविग्रह पश्चिमायां सुभिक्षमन्न समर्घ सिन्धुदेशात् स्थलदेशाद् वा अन्नागम पूर्वस्यां विड्वरमसममना ॥६०॥ इत्यवमा विंशतिका पूर्णा

॥ इति संक्षेपेण षष्टिसंवत्सरफलानि ॥

अथ गुरुचारः ।

इय चाख्या प्राच्यादधिगमगलाद् वत्सरफलं,
तृतीयायां राधे जिनवरगवि शुक्लसमये ।
यदा स्याद्वास्यादेश्च भवति क्वचिद् विघ्नता,
तदा ज्ञेयं ज्ञेयं सकललिखितमाचालचरितम् ॥ १ ॥
आद्यप्रमामगवतञ्चिजगम्ममाक्षा,
दीक्षा बभूव मधुमासमिमामाह ।
जातं तपस्तदनुसापिकमार्थिकेन्द्र—

मर्घा धनाज सस्ता महान ज्याया पशुओंकी हानि ८८फदिया का कलशी धान्य आश्विनम ग प नु मनाज सस्ता मन धातु समान, मध्यम समय राजाओंमें वि ग्र पश्चिममें सुकाल मनमाज सस्ता सिंधुका अथवा स्थलदेशसे अनाज आगमन पूर्व उपद्रव और मममाव मम हो ॥६ ॥ इत्य बर्षाविंशतिका पूर्ण । इति संक्षेप पष्टिसंवत्सर फलानि ।

वैशाख शुद तृतीयाके दिन यह सवत्सर सम्बन्धी फलादेश प्राचीन शास्त्रके अनुसार कहना चाहिये यदि इस सम्बन्धमें किन्हींके वचनोंमें फर्क दिखाई मालूम पड़ता सम्भव । ग हिं न दि पर उत्तम पुरुषोंसे लिखा हुआ मानना चाहिये ॥ १ ॥ चैत्र शुद धर्मके दिन भ दिनाथ भग वान्की दीक्षा जगतके स्वरूपको देखनेवाली दीक्षा हुई तथा वार्षिक तप

श्रीमारुदेवविहित प्रथमं पृथिव्याम् ॥ २॥
तत्पारणादायककारणासे-र आवत. साधिकवत्सरान्ते ।
राधे तृतीयादिवसे चलन्ते, बभूव भूवल्लभवन्दनीया ॥ ३॥
तद्वत्सरस्यापि शुभाशुभाख्य, फलं च तस्मिन् दिवसे विचार्यम्
दानं च कार्यं पुरुषैः सभार्यैः, सत्कार्य साधौ तदुपासके वा ।४।
संवत्सराख्या द्विपविंशिकार्थ-ग्रहप्रचाराद्यविगम्य सम्यक् ।
यदीक्ष्यतेऽसौ सफला तदोक्तिर्भवेद्विसंवादिकथाऽन्यथाऽस्याः
प्राचां तु वाचां विभवानुदीक्ष्य, चलाचलत्वं च बलाबलत्वम्।
सर्वग्रहाणां बहुसंग्रहेण, विचार्य चार्यं प्रवदेत् फलानि ॥ ६॥
व्यक्तोऽतिभक्तः स्वगुरौ च देवे, सक्तः स्वधर्मे हृदये दयालुः ।
यः शास्त्ररीत्या फलमब्दजन्यं, ब्रूते स मेघाद्विजयश्रियाढ्यः॥
वर्षाधिनाथा गुरुरार्किकेतुः स्वभौणवस्तेषु गुरुप्रचारात ।
संवत्सरा द्वादश सम्भवन्ति,प्राच्यास्तेणामभिधाविधानैः।८।

प्रारम्भ हुआ, जगत्में यह प्रथमबार ही श्री ऋषभदेवने किया॥ २ ॥ उस व्रतका पारणाके लाभकी प्राप्तिका अभावसे एक वर्षमें कुछ अधिक वैशाख शुक्ल तीजको हुआ इसलिये यह तीज जगत्को प्रिय और वदनीय है ॥ ३ ॥ इस दिन वर्षके शुभ शुभ फलका विचार करना चाहिये और स्त्री तथा पुरुष साधुओंको या उनके उपासकोंको सत्कार पूर्वक दान दें ॥ ४ ॥ यदि संवत्सरकी विंशतिकाका अर्थ ग्रहप्रचार आदिका अच्छी तरह विचार कर कहा जाय तो उसका वचन सफल होता है अन्यथा विसंवाद (असत्य) होता है ॥ ५ ॥ प्राचीन वचनोंका प्रभावको स्वीकार कर और सब ग्रहोंका चलाचल बलाबलका अच्छी तरह विचार कर फल कहना चाहिये ॥ ६ ॥ जो अपने गुरु और देव पर बहुत भक्तिवाला, अपने धर्ममें श्रद्धावान् और हृदयमें दयावान् हो वह शास्त्ररीतिसे वर्षफल कहे तो मेघसे विजय लक्ष्मीको प्राप्त करता है ॥७॥ वर्षका स्वामी गुरु शनि, केतु,

अथ गुरुमध्यसंवत्सरनामकं नक्षत्रं राशिं चाह—

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि गुरुचारमनुत्तमम् ।
अनेन गुरुचारेण प्रभवाद्यब्दसम्भवः ॥९॥
स्वातीज्येष्ठादिमाग्नेषु वह्निमादित्रयं त्रयम् ।
उपान्त्यपञ्चमान्त्येषु नक्षत्राणां त्रयं त्रयम् ॥१०॥
यस्मिन्नभ्युदिता जीवस्तन्नक्षत्राख्यवत्सरः ।
कश्चिद् गुरारस्तमेऽपि सूर्यसिद्धान्तसम्मते ॥११॥
प्रवासान्ते गृहर्क्षेण सहितोऽभ्युदयेद् गुरुः ।
तस्मात् कलाख्यपूर्वो गुरोरब्दः प्रवर्तते ॥१२॥

अथ गुरुवर्षविचार —

स्यात् पीडा कार्तिके वर्षे वह्नि गावापजीविनाम् ।
शस्त्राग्निद्युत् भयं वृद्धिः पुष्पकौसुम्भजीविनाम् ॥१३॥
सौम्यवर्षे स्वल्पवृष्टिः सस्यहानिरनेकधा ।

और सूर्यादि हैं उनमेंसे बृहस्पतिका चारवशसे बारह संवत्सर होते हैं ॥८॥

अब यहांसे बृहस्पतिका उत्तम चार (चलन)का कहता हूँ क्योंकि इस गुरुचारसे प्रभव आदि संवत्सर होते हैं ॥९॥ गुरुके पर्यायरूपि महीनोंमें कृत्तिका आदि दो और पांचवां तथा अन्त्यके दो ये तीन महीनोंमें तीन २ नक्षत्र हैं ॥१०॥ जिस नक्षत्र पर बृहस्पतिका उदय हो उसका नक्षत्रसंवत्सर कहते हैं। कहीं सूर्यसिद्धान्तके मतसे बृहस्पति जिस नक्षत्र पर अस्त हो उसका नक्षत्रसंवत्सर कहते हैं ॥११॥ प्रवासके अन्तमें जिस राशि के साथ बृहस्पति का उदय हो उस क्रमसे बृहस्पति का वर्ष होता है ॥१२॥

बृहस्पतिके कार्तिक वर्षमें अग्नि और गौएं से आजीविका करनेवालो को पीडा शस्त्र और अग्नि का भय तथा कौसुंभ (केसुटा) के फूलों के आजीविकोंकी वृद्धि हो ॥ १३ ॥ मार्गशीर्षवर्ष में थोड़ी वर्षा, अनेक प्रकारसे अन्नकी हानि, राजा लोग एक दूसरेको मारनेकी इच्छासे युद्धमें

राजानो युद्धनिरताश्चान्योऽन्य वधकांक्षिणः ॥१४॥
पौषेऽब्दे सुखिनः सर्वे गुरुपूजारता जनाः ।
क्षेमं सुभिक्षमारोग्यं वृष्टि कार्षकसम्मता ॥१५॥
माघः सम्पत्करोऽब्दः स्यात सर्वभूतहितोदयः ।
सम्यक् वर्षति पर्जन्यः सुभिक्षं च प्रजायते ॥१६॥
फाल्गुनाब्दे चौरभीतिः स्त्रीणां दुर्भगता भृशम् ।
क्वचिद् वृष्टिः क्वचित्सस्य क्वचिद् भीरीतयः क्वचित् ॥१७॥
चैत्राब्दे भूभुजः स्वस्थाः स्त्रीषु चाल्पप्रजा भवेत् ।
अल्पवृष्टिः सस्यसम्पत् प्रजानां व्याधितो भयम् ॥१८॥
वैशाखेऽब्दे तु राजानो धर्ममार्गरताः क्षितौ ।
क्षेम सुभिक्षमारोग्य द्विजाश्चाध्वरतत्पराः ॥१९॥
ज्येष्ठाब्दे धर्ममार्गस्थाः पीड्यन्ते सत्क्रियापराः ।
न च वर्षेत्तदा देवो भवेत् सस्यविनाशनम् ॥२०॥
आषाढाब्दे तु राजानः सर्वदा कलहोत्सुकाः ।

तत्पर हों ॥ १४ ॥ पौषवर्षमें सब सुखी, मनुष्य गुरुजनोंकी पूजा करें, क्षेम सुभिक्ष तथा आरोग्य हों और किसानोंके अनुकूल वर्षा हो ॥१५॥ माघवर्ष सब सम्पत्ति दायक है, इसमें अच्छी वर्षा और सुकाल होता है ॥ १६ ॥ फाल्गुनवर्षमें चोरोंका भय, स्त्रियोंकी दुर्भाग्यता, कहीं वर्षा, कहीं खेती, कहीं भय और कहीं ईतिका उपद्रव होता है ॥ १७ ॥ चैत्रवर्षमें राजा शान्त हो, स्त्री थोडी सन्तानवाली हों, थोड़ी वर्षा, धान्यकी प्राप्ति और प्रजाको रोगसे भय हो ॥ १८ ॥ वैशाखवर्षमें राजाओं पृथ्वीपर धर्म राज्य करें, क्षेम सुभिक्ष और आरोग्य हों, तथा ब्राह्मण यज्ञकर्म मे तत्पर हों ॥ १९ ॥ ज्येष्ठवर्षमें धर्ममार्ग और सत्क्रिया करनेवाले दुःखी हों, वर्षा नहीं होनेसे धान्यका विनाश हो ॥ २० ॥ आषाढवर्षमें राजा सर्वदा लड़ाई करनेमें उद्यत हो, कहीं ईति, कहीं भय, कहीं वृद्धि और कहीं फल हो ॥

क्वचिद्वीति क्वचिद् भीतिः क्वचिद् वृष्टिर्जलं क्वचित् ॥२१॥
श्रावणाब्दे धरा भाति त्रिदशैरपि मानवैः ।
धरा पुष्पफलैर्युक्ता परिपूर्णा धराधिपैः ॥२२॥
अब्दे भाद्रपदे वृष्टिः क्षेमारोग्यं क्वचित् क्वचित् ।
सर्वसस्यसमृद्धिः स्याद् नाशमेत्यपरं फलम् ॥२३॥
अब्दे स्यादाश्वयुजेऽत्यर्थं सुखिनः सर्वजन्तवः ।
मध्यमं पूर्वसस्यं स्यात् परं पूर्णं विपच्यते ॥२४॥

पाठान्तरं चौर्यमन्येषु । मकरराशिस्थगुरुफलम्—

मेषराशौ यदा जीवश्चैत्रसंवत्सरस्तदा ।
प्रमुद्रनामा जलदो वर्षा च सर्वतोमुखी ॥२५॥
सुभिक्षं विग्रहो राज्ञां समर्घं वस्त्रकर्पटम् ।
हेमरूप्यं तथा ताम्रं कर्पासं च प्रवालकम् ॥२६॥
मञ्जिष्ठानारिकेलं च पट्टसूत्रे समर्घता ।
कांस्यं लोहं तथैवेक्षु पूगादीनां च संग्रहः ॥२७॥
धान्यपीडा महारोगा द्विजानां कष्टसम्भवः ।

२१॥ श्रावणवर्षमें पृथ्वी शोभित हो देवता और मनुष्योंसे सुशोभित हो, तथा फल फूल और राजाओंसे पूर्ण हो ॥ २२ ॥ भाद्रपदवर्षमें वर्षा हो, कहीं कहीं क्षेम और आरोग्य हो, सब धान्यकी वृद्धि हो परन्तु फलकी हानि हो ॥२३॥ आश्विनवर्षमें सब प्राणी बहुत सुखी हों, प्रथम मध्यम खेती हो और पीछे से पूर्ण खेती हो ॥ २४ ॥

मकरराशिमें जब बृहस्पति हो तब चैत्रसंवत्सर कहा जाता है। इसमें प्रमुद्र नामका मेघ सब प्रकार वर्षा करता है ॥ २५ ॥ सुभिक्ष, राजाओंमें विग्रह, वस्त्र कपड़ा सोना चांदी तांबा कपास और मूंगे ये सस्ते हों ॥ २६ ॥ मंजीठ नारियल और रेशमी सूत ये सस्ते हों, कांसा लोहा ईख और सुपारी आदिका संग्रह करना ॥ २७ ॥ धान्योंको पीड़ा, रोग अधिक, ब्राह्मणोंको कष्ट

मासत्रये फलमिदं पश्चाद् भाद्रपदे पुनः ॥ २८ ॥
गोधूमशालिमाषाना-माज्यस्याग्रे समर्घता ।
दक्षिणस्यामुत्तरस्यां खण्डवृष्टिः प्रजायते ॥ २९ ॥
दक्षिणोत्तरयोर्देशे छत्रभङ्गोऽपि कुत्रचित् ।
दुर्भिक्षमपि षण्मासा आश्विने फाल्गुने तथा ॥३०॥
पश्चात् सुभिक्ष द्वौ मासौ नाम्ना मेघो जलेन्द्रकः ।
कार्त्तिके मार्गशीर्षे च कर्पासान्नमहर्घता ॥३१॥
मेदपाटे राजपीडा देशभङ्गोऽल्पवर्षणम् ।
लोकाः सरोगा दुर्भिक्ष पौषे रसमहर्घता ॥३२॥
वाणिज्ये संशयो लाभे वैशाखे गुर्जरे रणः ।
छत्रभङ्गस्तथाषाढे श्रावणे वा भय पथि ॥३३॥
नवीनो जायते राजा क्वचिन्मेघोऽपि कार्त्तिके ।
धान्यानि संग्रहे लाभ-स्त्रिगुणो मासि पञ्चमे ॥३४॥
अब्दमध्ये यदा जीवः क्रमाद् राशित्रयं स्पृशेत् ।

यह तीन मास के फल है, पीछे भाद्रपदमें ॥ २८ ॥ गेहूँ चावल उर्द और घी सस्ते हों, दक्षिण तथा उत्तरमें खण्डवृष्टि हो ॥ २९ ॥ दक्षिण तथा उत्तरदेशमें कहीं छत्रभंग और आश्विनसे फाल्गुन तक छ महीने दुर्भिक्ष रहे ॥ ३० ॥ पीछे दो मास सुभिक्ष तथा जलेन्द्र नामका मेघ बरसे। कार्तिक और मार्गशीर्ष मासमें कपास तथा अनाजकी तेजी हो ॥ ३१ ॥ मेदपाटमें राज्यपीडा, देशभंग तथा थोडी वर्षा हो, लोगमें रोग और दुर्भिक्ष हो। पौषमें रस तेज ॥ ३२ ॥ व्यापारियोंको लाभमें सन्देह, वैशाखमें गुजरात देशमें युद्ध, आषाढ या श्रावणमें छत्रभंग और मार्गमें भय हो ॥ ३३ ॥ नवीन राजा हो, कहीं कार्तिकमें भी वर्षा हो, धान्यका संग्रह करे तो पांचवें मासमें तीगुना लाभ हो ॥ ३४ ॥ एक वर्षमें यदि गुरु क्रम से तीन राशि को स्पर्श करे तो पृथ्वी करोडों मस्तकों से रुण्डमुण्ड हो ॥ ३५ ॥ जलचर

सदा सुभगकारीणि प्रेमपूर्णा वसुन्धरा ॥३५॥
उदगवीथीं चरन् जीव सुभिक्षक्षेमकारकः ।
मध्यमे मध्यम चाय मेवमन्येऽपि खेचराः ॥३६॥
एष एव किल मेषयिशेष, शेषमत्र गुरुगाम्यमशेषम् ।
दोषमत्र गुरुवारविचार-स्तद्विदे मनागु जातु न कश्चित् ॥३७॥
वृषराशिस्थगुरुफलम् —
वृषराशौ यदा जीवो वैशाखा वत्सरस्तदा ।
नन्दशाला भवेन्मेघ स्सधान्यसमर्घता ॥३८॥
वैशाखे चाश्विने मासे क्वचिद् रोगाश्च दन्तिनाम् ।
चाश्वानां च महापीडा गृहे वैरं परस्परम् ॥३९॥
उत्तरस्यामनावृष्टि-र्दुर्भिक्षं मगधे क्वचित् ।
पूर्वस्यां च महासौख्य राजवृद्धिविपर्यय ॥४०॥
घृतं तैलं च मञ्जिष्ठा मौक्तिकं च प्रवालकम् ।
लवणं रक्तवस्त्रं च नारिकेलं समर्घकम् ॥४१॥

राशि पर गुरु हो तब सुभिक्ष और क्षेम (कल्याण) हो मध्यम में मध्यम फल करता इसी तरह सब ग्रहोंका जानना ॥ ३६ ॥ इसतरह मेषराशिका फल कहा और विशेष गुरुगमसे जानना। दूसरा कोई पुरुष गुरुवार के विचारसेभी इसमें कभी शंका नहीं करे ॥ ३७ ॥ इति मेषराशिस्थगुरु का फल ॥

अब वृषराशिमें गुरु हो तब वैशाखवर्ष कहा जाता है। इसमें नन्द शाला नामका मेघ है और सब धान्य सस्ते हों ॥ ३८ ॥ वैशाख और आश्विनमें कहीं हाथियोंको रोग घोड़ाको महापीडा और घरों में परस्पर द्वेष हो ॥ ३९ ॥ उत्तरमें अनावृष्टि और देशमें कहीं दुर्भिक्ष हो पूर्व में बड़ा सुख और राजाकी वृद्धिमें विपर्यय हो ॥ ४० ॥ घी तैल मंजिठ मोती मूंगा लूण लालवस्त्र और श्रीफल ये सस्ते हों ॥ ४१ ॥ आषाढ़ में गेहूं चावल चना मूंग उड़द और तिल ये महंगे हों तथा ज्येष्ठमें वर्षासे अधिक

गोधूमशालिचणका मुद्गा माषास्तथा तिलाः ।
महर्घाः श्रावणे ज्येष्ठे मेघानां च महाजलम् ॥४२॥
शृगालके मालवे च उत्पातो राजविग्रहः ।
देशभंगाद् भयं शून्यं घृतधान्यमहर्घता ॥४३॥
मेदपाटे ग्रीष्मऋतौ समर्घं धान्यमीरितम् ।
मरौ धान्यं घृत तैल महर्घं धातवोऽन्यथा ॥४४॥
सिन्धुदेशे नागपुरे श्रीविक्रमपुरे स्थले ।
धान्यं महर्घं समर्घं मेदपाटे तदा भवेत् ॥४५॥
मासद्वयं संग्रहः स्याद् धान्यानां च ततः शुभम् ।
दुर्भिक्षं मासदशके मार्गरोधः प्रजाक्षयः ॥४६॥
आषाढे श्रावणे वर्षा न वर्षा भाद्रपादके ।
अश्वरोगश्चतुष्पाद-नाशस्तीडागमः क्वचित् ॥४७॥
मुनिवृषभैर्वृषभगते गुरौ फल सकलमेवमादिष्टम् ।
जिनवृषभध्यानबलादचला सर्वत्र सरसा स्यात् ॥४८॥

पानी वरसे ॥४२॥ शृगालक और मालवा देशमें उत्पात और राजविग्रह हो, देशभंगमें भय, शून्यता तथा घी और धान्य की तेजी हो ॥ ४३ ॥ मेदपाटमें ग्रीष्मऋतुमें सब धान्य सस्ते हों, मारवाड मे धान्य घी तेल तेज हो और धातु सस्ती हों ॥ ४४ ॥ सिन्धुदेश नागपुर विक्रमपुर (उज्जयनी) इन स्थानोंमें धान्य भाव तेज और मेदपाटमे धान्य भाव सस्ते हो ॥४५॥ धान्यका दो मास संग्रह करनेसे अच्छा लाभ होगा, दश मास दुर्भिक्ष रहेगा, मार्गरोध (मार्गका बन्द) और प्रजाका विनाश हो ॥ ४६ ॥ आषाढ श्रावण में वर्षा हो, भाद्रपदमें वर्षा न हो, घोडेको रोग, पशुओं का विनाश और कहीं टीडीका आगमन हो ॥ ४७ ॥ इस प्रकार श्रेष्ठ मुनियों ने वृषभराशि पर गया हुआ बृहस्पतिका फल कहा है। जिनेश्वरदेवका ध्यानके प्रभावसे पृथ्वी सब जगह रसवाली हो ॥ ४८ ॥ इति वृषराशिस्थगुरु का फल-

मिथुनराशिस्थगुरुफलम्—

मिथुने सङ्गते जीव ज्येष्ठाख्यवत्सरो भवेत् ।
पाखानां दोषमश्वानां स्वल्पवृष्टिस्तदा वदेत् ॥ ४९ ॥
कर्कोटकस्तदा मेघा गण्डूपदो मतान्तरे ।
तस्करैः पीड्यते लोकः पापोपहतमानसैः ॥ ५० ॥
पश्चिमायां सिन्धुदेशे यायव्ये चोत्तरादिशि ।
चित्रा विचित्रा जायन्ते रोगाः पीडोत्तरापथे ॥ ५१ ॥
श्वेतवस्त्रं तथा कांस्यं कर्पूरं चन्दनादिकम् ।
मञ्जिष्ठ नारिकेलं च पूगी स्वर्णं च रूप्यकम् ॥ ५२ ॥
मासानां पञ्चक यावत् समर्घं चैत्रतो भवेत् ।
पश्चान्महर्घं पूर्वोक्तं धान्यानां च समर्घता ॥ ५३ ॥
पूर्वाग्नियाम्यनैर्ऋत्या-मीशाने च सुभिक्षता ।
श्रावणे तु महत्कष्टं महिषीणां च हस्तिनाम् ॥ ५४ ॥
राजा स्वस्थः प्रजावृद्धिः सुभिक्षं मङ्गलं सुखि ।
समर्घं तैलखण्डादिशर्कराधान्यमपि च ॥ ५५ ॥

जब मिथुन राशि पर बृहस्पति हो तब ज्येष्ठसंवत्सर कहा जाता है इसमें बालकोंको और घोड़ेका रोग और स्वल्पवर्षा हो ॥ ४९ ॥ कर्कोटक मामका या गंडूपद नामका वर्षा करे और लोक पापी मनवाले चोरोंसे पीड़ित हो ॥ ५० ॥ पश्चिममें सिन्धुदेशमें वायव्य और उत्तर दिशाके देशमें चित्र विचित्र रोग और उत्तर प्रदेशमें पीड़ा हो ॥ ५१ ॥ श्वेत वस्त्र कांसी कर्पूर चन्दन मंजिठ श्रीफल सुपारी सोना और चांदी आदि ॥ ५२ ॥ चैत्रसे पांच महीने तक सस्ते हो पीछे पूर्वोक्त धान्यकी तेजी या समानता रहे ॥ ५३ ॥ पूर्व अग्नि दक्षिण नैऋत्य और ईशानमें सुभिक्ष हो श्रावणमें भैंस और हाथियोंको बड़ा कष्ट हो ॥ ५४ ॥ राजा स्वस्थ, प्रजामें वृद्धि और पृथ्वी पर सुभिक्ष तथा मंगल हो, तैल खांड

शृंगालदेशे चोत्पाताः क्रयाणकेषु मन्दता ।
महावर्षा घृतं धान्यं समर्घं च गुडस्तथा ॥ ५६ ॥
शुंठीमरिचपिप्पल्यो मञ्जिष्ठा जातिकोशलः ।
महर्घमेतद्वस्तु स्यात् फाल्गुने धान्यसङ्ग्रहः ॥ ५७ ॥
कर्पास लवण गुडतिलगोधूमयुगन्धरीचणकमुद्गान् ।
सगृह्य विक्रयकितस्त्रिगुणो लाभस्त्रिमासान्ते ॥ ५८ ॥
गुरुरपि मिथुनानिलीनसारस्समवश्यतः करोति जने ।
व्यभिचारं चारचर्चाबलात् क्वचिद् देशभङ्गभयम् ॥ ५९ ॥

कर्कराशिस्थगुरुफलम्—

कर्के गुरुस्तदाषाढो वत्सरस्तत्र जायते ।
पूर्वदक्षिणयोर्मेघो मध्यमः कम्बलाभिधः ॥ ६० ॥
महर्घं सर्वधान्यानां कार्त्तिके फाल्गुने तथा ।
पश्चिमायां सिन्धुदेशे वायव्ये चोत्तरादिशि ॥ ६१ ॥

सक्कर और धातु भी सस्ते हों ॥ ५५ ॥ शृगालदशमें उत्पात और क-रियाणामे मंदता हो, महावर्षा हो, घी धान्य और गुड सस्ते हों ॥५६॥ सोंठ मिर्च पीपल मँजीठ जायफल कोशल (ककोल) ये वस्तु महँगी हों, फाल्गुनमें धान्यका सग्रह करना उचित है ॥ ५७ । कपास लूण गुड तिल गेहूँ जुआर चणा और मूग आदि खरीद कर सग्रह करना तीन मास के पीछे वेचनेसे तीगुना लाभ हो ॥ ५८ ॥ लोकमे मिथुनराशिका गुरु भी व्यभिचार करता है और कभी उसका चार प्रभावसे देशभगका भय होता है ॥ ५९ ॥ इति मिथुनराशिस्थगुरुका फल ॥

जब कर्कराशिमें बृहस्पति हो तब आषाढसवत्सर कहा जाता है. इस में पूर्व और दक्षिणका कम्बल नामका मध्यम मेघ बरसे ॥ ६० ॥ का-र्त्तिक और फाल्गुनमें सब धान्यकी तेजी हो, पश्चिममें सिन्धदेशमें वायव्य में और उत्तर दिशामें ॥ ६१ ॥ पशुओंका विनाश हो, मृगों को दुःख,

क्षयश्चतुष्पदानां स्याद् दुर्भिक्षं मृगसैन्यकम् ।
हेमरूप्यं तथा ताम्रं पट्टसूत्रं प्रवालकम् ॥ ६२ ॥
मौक्तिकं द्रव्यमप्यादि लोकोत्यन्तं लाभविक्रयः ।
मञ्जिष्ठाश्वेतवस्त्राणां समर्घं सुभटक्षयः ॥ ६३ ॥
गोधूमशालितैलान्नं लवणं शर्करा पुनः ।
माषा महर्घा जायन्ते पापकर्मरता जनाः ॥ ६४ ॥
कार्त्तिकद्वितये धान्य-घृततैलमहर्घता ।
पट्टसूत्रं च वस्त्राणि जातीफललवङ्गकम् ॥ ६५ ॥
मरिचं शीतकालेऽपि संग्राह्याणि वणिग्जनैः ।
वैशाखज्येष्ठयोर्लाभो द्विगुणस्तस्य विक्रयात् ॥ ६६ ॥
वर्षाकाले महावर्षा सर्वधान्यसमर्घता ।
सुभिक्षं तिलकर्पास-चणकानां गुडस्य च ॥ ६७ ॥
गोधूममाषतुवरी-युगन्धरीमुद्गकाद्रवादीनाम् ।
आषाढे संग्रहता लाभः पुनरुष्णागा द्विगुणः ॥ ६८ ॥

इति कर्कराशिस्थगुरुफलम्

दुर्भिक्षता सोना चांदी तांबा सूत मूंगा ॥ ६२ ॥ मोती द्रव्य और धन धान्यादि चतुर्गुणे भी बाजारोंसे बिकें, मजीठ और श्वेतवस्त्र सस्ते हों और सुभटोंका नाश हो ॥ ६३ ॥ गेहूं चावल तेल घी लूण शक्कर और उर्द ये महंगे हों और मनुष्य पापकर्मोंमें लीन हों ॥ ६४ ॥ कार्त्तिक मार्गशीर्षमें धान्य घी तेलकी तेजी रेशम वस्त्र जायफल लौंग ॥ ६५ ॥ मिरच ये व्यापारियोंको शीतकालमें संग्रह करना उचित है उसका वैशाख ज्येष्ठमें बेचनेसे दूना लाभ होगा ॥ ६६ ॥ वर्षाऋतुमें बड़ी वर्षा हो, सब धान्य सस्ते हों सुभिक्ष हो तिल कपास चणा गुड गेहूं उर्द तुवरी जुवार मूंग और कोद्रवा आदि आषाढमें संग्रह करनेसे ग्रीष्मऋतुमें दूना लाभ होगा ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ इति कर्कराशिस्थगुरुका फल ॥

सिंहे जीवे श्रावणाख्यवत्सरे वासुकिर्घनः ।
बहुक्षीरभृता गावो जलपूर्णा च मेदिनी ॥६९॥
देवब्राह्मणपूजा स्यान्नराणां मान्यता सताम् ।
रोगा विवादश्चान्योऽन्यं चतुष्पदमहर्घता ॥७०॥
म्लेच्छदेशे महायुद्ध छत्रभङ्गश्च विद्रवम् ।
उद्वसः क्रियते लोकाः पश्चिमोत्तरवायुषु ॥७१॥
गोधूमतिलमाषाज्य-शालीनां च महर्घता ।
सुवर्णरूप्यताम्रादेः प्रवालानां समर्घता ॥७२॥
सुभिक्षं सर्पदंशश्च मेघोऽप्याषाढभाद्रयोः ।
श्रावणे वृष्टिरल्पैव सुकाल' कार्त्तिके स्मृतः ॥७३॥
सोपारीटोपरा डोडा-मजीठसुंठिखारिका ।
पट्टकुलं जातिफलं कर्पूरं सुमहर्घकम् ॥७४॥
उष्णकाले गुडः खण्डा हिंगुमीश्री च शर्करा ।
महर्घमेतद् वस्तु स्याद् धान्यस्यातिसमर्घता ॥७५॥

जब सिंहका बृहस्पति हो तब श्रावणसंवत्सर कहा जाता है। इसमें वासुकी नामका मेघ वर्षता है, गौ बहुत दूध वाली हों, और पृथ्वी जलसे पूर्ण हो ॥ ६९ ॥ देवब्राह्मणोंकी पूजा और सत्पुरुषोंका सत्कार हो, रोग परस्पर कलह और पशुओंकी तेजी हो ॥ ७० ॥ म्लेच्छदेशमें महायुद्ध छत्रभग और विप्लव हो, पश्चिमोत्तरवायु चलने से लोगोंका विनाश हो ॥ ७१ ॥ गेहूँ तिल उर्द घी और चावल ये महँगे हों तथा सोना रूपा तांबा मूगा आदि सस्ते हों ॥ ७२ ॥ सुभिक्ष हो, सर्पदंशका भय, आषाढ और भाद्रपदमें वर्षा, श्रावणमें थोड़ी वर्षा, कार्तिकमें सुकाल ॥ ७३ ॥ सुपारी खोपरा मकड मँजीठ सोंठ खारिक रेशमीवस्त्र जायफल और कपूर आदि सस्ते हों ॥ ७४ ॥ ग्रीष्मऋतुमें गुड खांड हींग मीश्री सक्कर ये वस्तु तेज हों, और धान्य सस्ता हो ॥ ७५ ॥ ज्येष्ठमें आठ स्कन्दोंसे एक-

ज्येष्ठेऽष्टस्कन्दकैर्धान्यं लभ्यते मणमानतः ।
स्कन्दकैः पञ्चविंशत्या घृतं तैलं तु विंशतेः ॥७६॥
स्कन्दकैर्दशभिर्लभ्या गोधूमा मणसंमिता ।
धान्यकर्पासतैलादि-रससंग्रहणं शुभम् ॥७७॥
फाल्गुनेऽथ ततो ज्येष्ठाद् लाभो द्विगुणतः परम् ।
गुरौ सूर्यगृहमासे सर्वत्र धार्मिकोदयः ॥७८॥

कन्याराशिस्थगुरुफलम् —

कन्यामोगे गुरोर्जाते मेघनामतमस्तम ।
माद्रसंवत्सरस्तत्र सप्तमासाश्च रौरवम् ॥७९॥
ततः परं सुभिक्षं स्यात् कार्त्तिकान्माघवावधि ।
भाद्रपदसंग्रहणाद् लाभो द्विगुणो माद्रमासजः ॥८०॥
चतुष्पदानां पीडापि गोधूमाः शालिशर्कराः ।
तिल माषा महर्घाणि गुडादीक्षुरसस्तथा ॥८१॥
शूद्राणामन्त्यजानां च कष्टं सौराष्ट्रमण्डले ।

मण धान्य मिले घी पचीस स्कन्दोंमें और तेल बीस स्कन्दोंसे मिले ॥७६॥ दश स्कंदोंसे एक मण गेहूं मिले धान्य कपास और तेल आदि रस का फाल्गुन में संग्रह करना अच्छा है ॥७७॥ इससे ज्येष्ठमें द्विगुना लाभ हो, सिंह राशिपर बृहस्पति आनेसे सब जगह धार्मिक कार्य हो ॥७८॥ इति सिंहराशिस्थगुरुका फल ॥

अब कन्याराशिका बृहस्पति हो तब माद्रपदसंवत्सर कहा जाता है इसमें तमस्तम नामका मेघ बरसता है और सात मास दुःख रहता है ॥७९॥ इसके पीछे कार्त्तिकसे वैशाख तक सुभिक्ष हो। इस समय भाद्रपदमें संग्रह किया हुआ घी से दूना लाभ हो ॥ ८० ॥ पशुओंको पीडा गेहूं चावल शक्कर तिल उर्द गन्ना (ईख) गुड आदि महँगे हों ॥ ८१ ॥ शूद्र और अन्त्यजों का सोरठदेशमें कष्ट हो, दक्षिणमें नृपभय और म्लेच्छदेशों उत्पात हो

खण्डवृष्टिर्दक्षिणस्या-मुत्पातो म्लेच्छमण्डले ॥ ८२ ॥
मेदपाटे शृंगाले च परचक्रभयं रणः ।
सर्पदंशो वह्निभयं मेघोऽल्पश्च रसेऽल्पता ॥ ८३ ॥
मरुदेशे छत्रभङ्ग-श्चैत्रे वा माधवे भवेत् ।
गोधूमा घृततैलानि महर्घाणि समादिशेत् ॥ ८४ ॥
वस्त्रकम्बलधातूनां रत्नादेश्च समर्घता ।
धान्यसंग्रह आषाढे भाद्रे लाभश्चतुर्गुणः ॥ ८५ ॥

तुलाराशिस्थगुरुफलम्—

गुरोस्तुलायां मेघाख्यः तक्षको वत्सरोऽश्विनः ।
तदातिवृष्टिर्मञ्जिष्ठा नालिकेरसमर्घता: ॥ ८६ ॥
अन्योऽन्यं राजयुद्धानि समर्घं त्वाज्यतैलयोः ।
मार्गशीर्षे तथा पौषे क्रये धान्यस्य सङ्ग्रहः ॥ ८७ ॥
लाभः स्यात् पञ्चमे मासे मार्गात् प्रारभ्य चैत्रतः ।
छत्रभङ्गस्ततो राज-विग्रहः क्वापि मण्डले ॥ ८८ ॥

॥ ८२ ॥ मेदपाट और शृगालदेशमें शत्रुका भय और युद्ध हो, सर्पदंशका भय, अग्निका भय, थोड़ी वर्षा और रस थोडा हो ॥ ८३ ॥ चैत्र वैशाखमें मरुदेशमें छत्रभंग हो, गेहूँ घी और तेल आदि तेज हो ॥ ८४ ॥ वस्त्र कम्बल धातु और रत्न आदि सस्ते हो, आषाढमें धान्यका संग्रह करने से भाद्रपदमें चौगुना लाभ हो ॥ ८५ ॥ इति कन्याराशिस्थगुरुका फल ॥

जब तुलाराशिका बृहस्पति हो तब आश्विनसंवत्सर कहा जाता है, इसमें तक्षक नामका मेघ बरसता है, वर्षा अधिक और मंजीठ तथा नारियलका भाव सस्ता हो ॥ ८६ ॥ राजाओंमें परस्पर युद्ध, घी और तेल सस्ता, मार्गशीर्ष तथा पौषमें धान्यका संग्रह करना अच्छा है ॥ ८७ ॥ इसका मार्गशीर्षसे लेकर चैत्र तक पांचवें मासमें लाभ होता है, छत्रभंग और कहीं देशमें राजविग्रह हो ॥ ८८ ॥ मरुदेशमें उत्पात तथा मार्गमें चोरोंका भय

उत्पातो मरुदेशे स्यान्मार्गे चौरभयं तथा ।
कोटजेसलमेवादौ परचक्रागमो मतः ॥ ८९ ॥
स्कन्दकैर्दशभिश्चैक मणधान्य च लभ्यते । -
कार्त्तिके मार्गशीर्षे वा मेघस्वापाढके महान् ॥ ९० ॥
त्रयोदशस्कन्दकैस्तु खण्डामणमवाप्यते ।
पञ्चाशत्स्कन्दकैर्मिश्री शर्करामणविक्रयः ॥ ९१ ॥
रसकयाणकादीनां संग्रहेण चतुर्गुणः ।
लाभश्चतुर्थमासे स्याद् धातूनां च समर्घता ॥ ९२ ॥

वृश्चिकराशिस्थगुरुफलम्—

वृश्चिकस्थे गुरौ साम मेघ कार्त्तिकमासतः ।
संवत्सरः खण्डवृष्टिर्धान्यमल्पं भयं महत् ॥९४॥
गृहे परस्परं वैरं मष्टौ मासा न संशयः ।
माघाश्विनकार्त्तिकाख्या-स्त्रयो मासा महर्घता ॥९५॥
ततः सुभिक्षं जायेत मन्दवृष्टिश्च मण्डले ।

हो कोट जेसलमेर आदिमें शत्रुसैन्य का आगमन हो ॥ ८९ ॥ दश स्कंदोंसे एक मन धान्य बिके। कार्तिक और मार्गशीर्षमें अथवा माघ और आषाढमें ॥ ९० ॥ तेरह स्कंदोंसे मन खांड बिके और पचास स्कन्दोंसे एक मन मीश्री और शक्कर बिके ॥ ९१ ॥ रस और कयाणा आदिका संग्रह करने वालेको चौथे मासमें चौगुना लाभ हो और धातु सस्ती हो ॥ ९२ ॥ इति तुलाराशिस्थगुरुका फल ॥

अब वृश्चिकराशिका बृहस्पति हो तब कार्त्तिकसे वर्ष का फल कहा जाता है, इसमें साम नामका मेघ बरसे खण्डवर्षा धान्य थोडा और भय अधिक हो ॥ ९३ ॥ घरोंमें परस्पर द्वेष आठ मास तक हो इसमें संशय नहीं, अतएव आश्विन और कार्त्तिक ये तीन मास तेजी रहे ॥ ९४ ॥ पीछे सुभिक्ष हो इसमें थोडी वर्षा पश्चिमप्रान्तमें अच्छी वर्षा और मध्यप्रा-

पश्चिमायां जीववृष्टि-र्दुर्भिक्षं वायुमण्डले ॥९५॥
हेमरूप्यकांश्यताम्र-तिलाज्यश्रीफलादिषु ।
महर्घं गुडकर्पास-लवणश्वेतवस्त्रकम् ॥९६॥
महिषी वृषभा ह्यश्वाः समर्घा मध्यमण्डले ।
तीडानां म्लेच्छलोकानां महोत्पातश्च सम्भवेत् ॥९७॥
शृंगालदेशे कटक रोगोऽश्वमहिषीषु च ।
एतानि च महर्घाणि हिंगुखारिकटोपरा ॥९८॥
देशभङ्गोऽप्यल्पवृष्टिः स्त्रीणामपि च दुःखिता ।
मरौ तथा नागपुरे देशे क्लेशाकुलाः प्रजाः ॥९९॥
गोधूमचणकतुवरी युगंधरीमाषमुद्गकंगुतिलाः ।
सग्राह्यास्ते मासान् पञ्च परं विक्रयाद् द्विगुणो लाभः ॥१००

धनराशिस्थगुरुफलम्—

धने गुरौ हेममाली मेघ, संवत्सरस्तथा ।

न्तमें दुर्भिक्ष हो ॥ ९५ ॥ सोना चादी कासी ताम्रा तिल घी नारियल गुड कपास लूण और श्वेतवस्त्र ये तेज हों ॥ ९६ ॥ भैस बैल घोडा ये मध्यदेशमें सस्ते हो, टीड्डी और म्लेच्छलोकोंका बड़ा उत्पात हो ॥ ९७ ॥ शृगालदेशमें कटक (सैना) का आगमन, घोड़ाओं को और भैसोंको रोग हो, हिंग खारिक टोपरा ये तेज भाव हों ॥ ९८ ॥ देशका भंग, थोडी वर्षा, स्त्रियोंको दु ख, मारवाड तथा नागपुरदेशमें प्रजा क्लेश से व्याकुल हो ॥ ९९ ॥ गेहूँ चणा तुवरी जुआर उर्द मूँग कगु तिल इनका सग्रह करना उनको पाच मास पीछे वेचनमें दुगुना लाभ होगे ॥ १०० ॥
॥इति वृश्चिकराशिस्थगुरु का फल ॥

जब धनराशिका बृहस्पति हो तब मार्गशीर्षवर्ष कहा जाता है इसमें हेममाली नामका मेघ वरसता है दिव्यवर्षा और घर घरमें स्त्रियोंको पीडा हो ॥ १०१ ॥ पूर्वकालमे धान्य गेहूँ चावल और मकर अधिक हो, क-

मार्गशीर्षे दिव्यदृष्टिः स्याणा पीडा गृहे गृहे ॥१०१॥
पूर्वकाले भवेद् धान्यं गावृमनालिशकरा ।
करासमश्च मयानि कोद्रवलाभ घृतं मधु ॥१०२॥
इमस्त्र्ये मरघाणि गिलाम्लम गुडस्तथा ।
पूर्णाफल्गे श्वमपक्ष्म समर्घं च भविष्यद् भवम् ॥१०३॥
मार्गशीर्षात् पुनर्ज्येष्ठ यावद् घृममहाघता ।
महिषीवाजिदन्ताना मञ्जिष्ठाया महर्घता ॥१०४॥
दशमद्भूश दुर्भिक्षं फगिन्मरकसम्भव ।
ससाते शीतकालस्य ग्रीष्मे म्लेच्छजमक्षय ॥१०५॥
श्रावणे धान्यकलशी त्रिशता स्कन्दकैर्भवेत् ।
पश्चात् स्कन्दकराज्यमण भाद्रमृदा महान ॥१०६॥
आश्विने नागिना मघ-दणा धान्यमणं पुन ।
दशभि स्कन्दकैराज्यमणा तावदुक्तिरथ च ॥१०७॥
स्वणद्दा लब्धा दोरमिता गवेन स्कन्दकेन च ।
गुड सितापलार्धा च महर्घम्य कथित भवत् ॥१०८॥

पास मूँग कामी ग्वाला घी लावा ॥ १ २ ॥ सोना चाँदी तिल तल और गुड पे तेज हा तथा सुपाडी और अनाज ये सभी चाड सस्ते हों ॥ १ ३ ॥ मार्गशीर्ष ज्येष्ठ तक घी तेज हा और भैंस घोडा गौ तथा मैं जीठ भी तेज हो ॥ १ ४ ॥ दशमस और दुष्काल हा, फणी शीतकालमें महामारीका भेजय हा ग्रीष्मकालम म्लेच्छोंका क्षय हो ॥ १ ५ ॥ भाद्रपदमें तीस स्कंदोंम कलशी धान्य बिके, पश्चात स्कन्दोमें मय भर घी बिके, भाद्रपदमें बडी वर्षा हा ॥ १ ६ ॥ आश्विनमें गाग अधिक सर्प बहुत भय, दस स्कन्दोंमें मण भर धान्य और इतना ही घी बिके ॥ १ ७ ॥ एक स्कंदसे ढाग भर खाड बिके गुड सक्कर महँगे हो ॥ १ ८ ॥ कुभमें मार्गि मनाव मसलाम्य गहूँ और जव प तेज हा और

कुलत्थकामसूराशं रक्तवस्त्रं महर्घकम् ।
तथैव गोधूमयवाश्छत्रभङ्गश्च गौर्जरे ॥१०९॥
मार्गशीर्षे तथा पौषे मञ्जिष्ठाहिंगुमौक्तिकम् ।
जाती पूगीफलं चैव प्रवालानां महर्घता ॥११०॥
चतुष्पदादिकर्पास-संग्रहो रसमाषकान् ।
तल्लाभः सप्तमे मासे प्रोक्तो व्यक्तैश्चतुर्गुणः ॥१११॥

मकरराशिस्थगुरुफलम्—

गुरौ मकरगे मेघो जलेन्द्रः पौषवत्सरः ।
चतुष्पदक्षयो भूम्यां दुर्भिक्षं निर्जलो जनः ॥११२॥
मार्गशीर्षाद् धान्यवस्तु-संग्रहः क्रियते तदा ।
विग्रहश्च महाघोरो राज्ञां बुद्धिविपर्ययः ॥११३॥
उत्तरापश्चिमे देशे खण्डवृष्टिः कदापि च ।
पूर्वस्यां दक्षिणे चैव दुर्भिक्षं राजविग्रहः ॥११४॥
पापबुद्धिरतालोका हाहाभूता च मेदिनी ।

गुजरातमें छत्रभंग हो ॥ १०९ ॥ मार्गशीर्षमें तथा पौषमें मँजीठ हिंग मोती जायफल सुपारी और मूंगे तेज हों ॥ ११० ॥ पशु कपास रस उर्द आदिका संग्रह करनेसे सातवें मासमें चौगुना लाभ हो ॥ १११ ॥ इति धनराशिस्थगुरुका फल ॥

जब मकरराशिका बृहस्पति हो तब पौष संवत्सर कहा जाता है इस में जलेन्द्र नामका मेघ बरसता है, पृथ्वीपर पशुओंका विनाश, दुर्भिक्ष और देश निर्जल हो ॥ ११२ ॥ मार्गशीर्षसे धान्य वस्तुका संग्रह करना श्रेष्ठ है, बड़ा घोर विग्रह हो, और राजाओंकी बुद्धि विपरीत हो ॥ ११३ ॥ उत्तर पश्चिमके देशमें कभी खण्डवर्षा हो, पूर्व दक्षिणके देशमें दुर्भिक्ष और राजविग्रह हो ॥ ११४ ॥ लोग पाप बुद्धिवाले हों पृथ्वीपर हाहाकार हो, जल तेल घी दूध अन्न और लालवस्त्र महँगे हों ॥ ११५ ॥ उत्तम

जलतैलाज्यगुडक्षार-रसान्नमहर्घता ॥११५॥
उत्तमा मध्यमाः सर्वे सर्वभक्षणतत्पराः ।
क्षत्रियाणां छत्रभङ्गो म्लेच्छानां च ततः क्षयः ॥११६॥
चैत्राश्विनाषाढमासा-स्त्रयो महर्घहेतवः ।
पश्चाद् धान्यसुभिक्षं स्यात् प्रजाः पीडन्ति तस्कराः ॥११७॥
हेमरूप्यताम्रलोह-कर्पूरं चन्दनादिकम् ।
महर्घं नर्मदातीरे महीतीरे शुभं भवेत् ॥ ११८ ॥
माघे मालवके देशभंगो वर्षा न भूयसी ।
व्याधयो बहुला रूप्य धातूनां च महर्घता ॥ ११९ ॥
मेदपाटे च कटकं मार्गशीर्षेऽपि पौषके ।
महाजनानां पीडापि छत्रभङ्गो महाभयम् ॥ १२० ॥
देशग्रामपुरादीनां लुण्ठनं युद्धसम्भवः ।
शालयो यवगोधूमा महर्घाः स्युस्तथा रसाः ॥१२१॥
खण्डधान्यगुडानां मञ्जिष्ठायाः सितोपलादीनाम् ।

और मध्यम सब लोग सर्व प्रकारके भक्षणमें तत्पर हों क्षत्रियोंका छत्रभंग और म्लेच्छोंका विनाश हो ॥ ११६ ॥ चैत्र आश्विन और आषाढ ये तीन महीने महँगाव करें पीछे सुभिक्ष प्रजा को चोर अधिक दुःख दें ॥ ११७ ॥ सोना चाँदी ताँबा लोहा कपूर चन्दन आदि नर्मदानदीके तट पर महँगे हों और महीनदीके तट पर सस्ते हों ॥ ११८ ॥ माघ मासमें मालवक (मालवा) में देशभंग वर्षा अधिक न हो, व्याधि अधिक और चाँदी आदि धातु तेज हो ॥ ११९ ॥ मेदपाट में कटक (सैना) चाले मार्गशीर्ष और पौष इन दो मास महाजन को पीडा, छत्रभंग और महाभय हो ॥ १२ ॥ देश गाँव पुरमें लूट और युद्ध हो चावल जव गेहूँ तथा रस ये तेज हों ॥ १२१ ॥ खांड धान्य गुड मंजीठ और सक्कर ये पांच फाल्गुन और चैत्रमें तेज हो ॥ १२२ ॥ घी तेल रसमिश्रित [illegible] और

सर्वत्र महर्घत्वं चैत्रेऽपि च पञ्च फाल्गुने मासे ॥ १२२॥
घृततैलपट्टसूत्र-कम्बलवस्त्राणि चेक्षुरसवस्तु ।
आषाढे तु महर्घं मेघेऽल्पेऽपि च सुभिक्षं स्यात् ॥ १२३॥
दशभिः स्कन्दकैर्धान्य-मणं षोडशभिर्घृतम् ।
तैः पञ्चदशभिस्तैल-माश्विने कार्त्तिके स्मृतम् ॥ १२४॥
अष्टभिः स्कन्दकैर्लभ्या गोधूमामणिमानयम् ।
तैः सप्तदशभिस्तैलं चतुर्भिः शेषधान्यकम् ॥ १२५॥

कुम्भराशिस्थगुरुफलम्—

कुम्भे गुरौ वज्रदण्डो मेघो माघादिवत्सरः ।
सुभिक्षं जायते तत्र ऋषिदेवद्विजार्चनम् ॥१२५॥
कांस्यं च पित्तलं लोहं मञ्जिष्ठा त्रपुकाञ्चनम् ।
एषां मासत्रय यावत् समर्घत्वं प्रजायते ॥१२६॥
मौक्तिकं च प्रवालानि मञ्जिष्ठापट्टकूलकम् ।
पूगी रूप्यं नारिकेल श्वेतवस्त्रं महर्घकम् ॥१२७॥
माघफाल्गुनचैत्रेषु रोगामासत्रये मताः ।

गुड आदि ये आषाढ मासमें तेज हो, थोड़ी वर्षा होने पर भी सुभिक्ष हो ॥ १२३ ॥ आश्विन और कार्तिक मासमे दश स्कंदोंसे एक मणभर धान्य, सोलह स्कंदोंसे मणभर घी और पन्द्रह स्कंदोंसे मणभर तेल बिके ॥ १२४॥ आठ स्कंदोंसे मणभर गेहूँ, सत्रह स्कंदोंसे मणभर तेल और चार स्कंदोंसे मणभर सब धान्य बिके ॥ १२५ ॥ इति मकरराशिस्थगुरुका फल ॥

जब कुंभराशिका बृहस्पति हो तब माघसंवत्सर कहा जाता है। इसमे वज्रदण्ड नामका मेघ वर्षता हैं, सुभिक्ष और देव मुनियोंका पूजन हो ॥१२५॥ कांसी पित्तल लोहा मँजीठ त्रपु (सीसा) और सोना ये तीन मास तक सस्ता हों ॥ १२६ ॥ मोती मूंगे मँजीठ रेशम सुपारी चांदी श्रीफल और श्वेतवस्त्र ये तेज भाव हो ॥ १२७ ॥ माघ फाल्गुन और चैत्र ये तीन महीने रोग हो,

महर्घं लवणं लाक्षा मरी धान्य महर्घकम् ॥१२८॥
मैत्रबैशाखया' सिन्धु-दशे कन्टकपालकः ।
वस्त्रकम्बलहिंगूनां महर्घत्वं प्रजायते ॥१२९॥
कार्तिक आश्विन रागा-च्छत्रभङ्गो महद्भयम् ।
रसकपासवस्त्राणा सर्वत्र स्या महर्घता ॥१३०॥
आपाढे मणगाधूमाअसुर्भि' स्कन्दकैर्मता' ।
अष्टावशमिराज्य च तैल तैर्मनुसमितै ॥१३१॥
भाद्रयो या भाद्रपदे धान्य संगृह्यते सदा ।
पौषे स्याद् द्विगुणा लाभा युगन्धपान्य विक्रयात ॥१३२॥

मीनराशिस्थगुरुफलम्

मीने गुरौ फाल्गुन स्याद् वत्सर' संभवा घन ।
स्वण्डवृष्टिर्महघाणि सर्वधान्यानि भूतले ॥१३३॥
वायुरागस्य पीडा च देशान्तर मजेज्जन' ।
मासानां पञ्चक यावद् भय राजविराधत' ॥१३४॥

मूंग (नमक) तेज तथा मारवाडमें धान्य भाव तेज हो ॥ १२८ ॥ चैत्र वैशाखमें सिन्धु देशमे कटक चाल वस्त्र कंबल हिंग ये तेज हो ॥ १२९ ॥ कार्तिक आश्विनमे रोग तथा छत्रभंग आदिका बडा भय हो, रस कपास और वस्त्र तेज हो ॥ १३ ॥ आषाढमें चार स्कंदोंसे मन भर गेहूँ अठारह स्कंदोंसे मन भर घी और चौदह स्कंदोंसे तेल बिके ॥ १३१ ॥ भादवा मासमें धान्यका संग्रह करे तो पौषमें उसका और शुभागको बेचनेसे दूना लाभ हो ॥ १३२ ॥ इति कुंभराशिस्थगुरुका फल ॥

अब मीनराशिका बृहस्पति हो तब फाल्गुनसंवत्सर कहा जाता है। इसमें संभव नाम का मेघ बरसता है पृथ्वी पर खंडवृष्टि और सब धान्य तेज हो ॥ १३३ ॥ वायुरोग की पीडा और लोग देशान्तरमें जावे, पांच मास तक राजविरोध होनेसे भय हो ॥ १३४ ॥ पीछे सुख और सुभिक्ष

पश्चात् सुखं सुभिक्षं च शालिगोधूमशर्कराः ।
तिलतैलगुडानां च महर्घत्वं समीरितम् ॥१३५॥
मञ्जिष्ठानारिकेलाणां श्वेतवस्त्र च दन्तकाः ।
कर्पूरलवणाज्यानां महर्घत्वं प्रजायते ॥१३६॥
पौषे क्लेशसमुत्पत्ति-स्तथा फाल्गुनचैत्रयोः ।
मरुदेशे महापीडा दुर्भिक्षं तत्र जायते ॥१३७॥
चतुष्पदानां मरणं वैशाखज्येष्ठयोर्भवेत् ।
आषाढे श्रावणे धान्यं घृततैलमहर्घता ॥१३८॥
श्रावणस्योत्तरे पक्षे महावर्षा प्रजायते ।
घृतं समर्घं भाद्रपदे शुभावाश्विनकार्त्तिकौ ॥१३९॥
समर्घास्तिलकर्पासा-श्छत्रभङ्गस्ततोऽर्बुदे ।
मार्गशीर्षे तथा पौषे उत्पातो मरुमण्डले ॥१४०॥
ग्रीष्मे कटकसंग्राम-श्चतुष्पदमहर्घता ।
स्यान्नागपुरे दुर्भिक्ष वर्षाकाले सुभिक्षता ॥१४१॥
इति कतिपय शास्त्रावीक्षणाद् गौरवेण,

हो, चावल गेहूँ सक्कर तिल तेल गुड आदि महँगे हों ॥ १३५ ॥ मँजीठ नारियल श्वेतवस्त्र दांत कपूर नमक घी ये महँगे हों ॥ १३६ ॥ पौष फाल्गुन और चैत्रमें क्लेश हो, मारवाडमें महापीडा और दुर्भिक्ष हो ॥१३७॥ वैशाख ज्येष्ठमे पशुओंका मरण हो, आषाढ श्रावणमें धान्य घी तेल महँगे हों ॥ १३८ ॥ श्रावणका उत्तरपक्ष (शुक्लपक्ष) में वर्षा अधिक हो, भादों में घी सस्ता, आश्विन कात्तिक ये दोनों मास शुभ ॥ १३९ ॥ तिल कपास सस्ते हों अर्बुद देशमें छत्रभंग हो, मार्गशीर्ष तथा पौषमें मरुदेशमें उत्पात हो ॥ १४० ॥ ग्रीष्मऋतुमें संग्राम हो पशुओंकी तेजी, नागपुरमें दुष्काल और वर्षाऋतु में सुभिक्ष हो ॥ १४१ ॥ इस तरह कइएक शास्त्रों को गौरवसे अन्वेषण ... गुरुचार का विचार स्पष्ट बोधके लिये ...

गुरुचरितविचार: स्फारयाभाय दम्य ।
इह मतिरनिशाधिन्येव युक्ता प्रयुक्त-
दखिलफलसलाभा वाक्पतोऽयं यत: स्यात ॥१४२॥
इति नक्षत्रसंवत्सरलाभाय गुरुचारविचार: ।

अथ गुरुवक्रविचार ।

रौद्रीसमयमाभावो पुनर्विशाः । मेषराशिस्थगुरुवक्रफलम्—

अर्धकाण्डं प्रवक्ष्यामि येन धान्ये शुभाशुभम् ।
वर्षाधिपसमायोगो यदा तिष्ठेद् बृहस्पति: ॥१४३॥
मेषराशिगतो जीवो यदा स्यान्मीनसङ्गत ।
तदाषाढश्रावणयोर्गोमहिष्य: खरोष्ट्रका ॥१४४॥
एते महर्घतां यान्ति मासत्रये न संशय: ।
पश्चाद् भाद्रपदे मासे आश्विने हे महेश्वरि! ॥१४५॥
चन्दनं कुसुमं चापि ये चान्येऽपि सुगन्धप ।
तैलपण्यानि सर्वाणि मासत्रय महर्घता ॥१४६॥

किया यह भतिशायिनी बुद्धिपूर्वक करते हुए वर्षभरमें समस्तफलका लाभ होता है ॥१४२॥ इति मीनराशिस्थगुरुका फल ।

जिससे धान्यका लाभालाभ जाना जाता है ऐसे अर्धकाण्डको मैं कहता हूँ। जब बृहस्पति वर्षेश हो या उसका योग हो तब शुभाशुभ फलका विशेष विचार करना ॥ १४३ ॥ जब मेषराशिका बृहस्पति वक्री होकर मीनराशि पर हो जाय तब आषाढ श्रावणमें गौ भैंस गधे और ऊँट ॥ १४४ ॥ ये निःसंदेह ३ मास महँगे हों। पीछे हे पार्वति! भाद्रपद और आश्विनमें ॥ १४५ ॥ चन्दन पुष्प तथा दूसरा जो सुगन्धित द्रव्य और तेलवाली वस्तु ये सब ३ मास तेज रहें ॥ १४६ ॥ इति मेष राशिस्थगुरुवक्री फल ॥

वृषराशिस्थगुरुवक्रफलम्—

वृषराशिगते जीवे वक्री स्यान्मासपञ्चके ।
वृषभादिचतुष्पादे तुलाभाण्डे महर्घता ॥१४७॥
संग्रहः सर्वधान्यानां मासाष्टके महर्घता ।
श्रीः श्रावणे भाद्रपदे आश्विने कार्त्तिके तथा ॥१४८॥
तत्परं सर्वधान्यानां चतुष्पदान् विशेषतः ।
विक्रयाद् द्विगुणो लाभस्त्रिगुणस्तु चतुष्पदे ॥१४९॥

मिथुनराशिस्थगुरुवक्रफलम्—

मिथुनस्थः सुरगुरु-र्विकारं कुरुते यदा ।
अष्टमासी भवेत् क्रूरा चतुष्पदमहर्घता ॥१५०॥
मार्गशीर्षादयो मासाः सुभिक्ष वसनं भुवि ।
लोकः सर्वो भवेत् स्वस्थो दुर्भिक्षं क्वचिदादिशेत् ॥१५१॥

कर्कराशिस्थगुरुवक्रफलम्—

कर्कराशिगतो जीवो यदा वक्री भवेत् तदा ।
दुर्भिक्षं जायते घोरं राजानो युद्धतत्पराः ॥१५२॥

यदि वृषराशिका बृहस्पति पाच मासमें वक्री हो जाय तो वृषभादि पशु और तुला (मानद्रव्य वर्त्तन) तेज हो ॥१४७॥ सब धान्योंका संग्रह करना आठवें मास तेजी रहे। श्रावण भाद्रपद आश्विन और कार्त्तिक इन चारों मासके ॥ १४८ ॥ उपरान्त सब धान्य और विशेष कर पशुओंको बेचनेसे दूना और तीगुना लाभ हो॥१४९॥ इति वृषराशिस्थगुरुवक्रफल ॥

यदि मिथुनराशिका बृहस्पति वक्री हो जाय तो पशुओंका भाव तेज हो ॥१५०॥ मार्गशीर्षादि महीनोंमे भूमी पर सुभिक्ष हो, सब लोक सुखी और कमी कहीं दुर्भिक्ष हो ॥ १५१ ॥ इति मिथुनराशिस्थगुरुवक्रफल ॥

जब कर्कराशिका बृहस्पति वक्री हो तब घोर दुर्भिक्ष हो राजा लोग युद्ध करनेके लिये तत्पर हों ॥ १५२ ॥ राष्ट्रभंग तथा वैर आदिका उ-

राष्ट्रभङ्ग विजानीयाद् वैरोपद्रवसङ्कुलम् ।
रसादिसर्वसंयोगो घृततैलादिभाण्डकम् ॥१५३॥
कपासादीनि वस्तूनि लाभ दद्युन संशयः ।
मार्गादिमासा सवैव सर्वधान्यमहर्घता ॥१५४॥

सिंहराशिस्थगुरुफलम्—

सिंहराशिगतो जीवो विकारं कुरुते यदा ।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं सर्वलोकाः प्रहर्षिताः ॥१५५॥
सर्वधान्यानि संगृह्य तुलाभाण्डानि यानि च ।
गतेषु नव मासेषु पश्चाद् विक्रयमादिशेत् ॥१५६॥

कन्याराशिस्थगुरुफलम्—

कन्याराशिगतो जीवो विकारं कुरुते यदा ।
अलाभ चैव लाभ च पुण्यकर्मवशात् पुनः ॥१५७॥

तुलाराशिस्थगुरुफलम्—

तुलाराशिगतो जीवो विकारं कुरुते यदा ।

फल हो । रसादि सब वस्तु – घी तेल कपास आदि से निःसंदेह लाभ हो और मार्गशीर्षादि सात मास सब धान्य मास तेज रहे ॥ १५३, ४ ॥ इति कर्कराशिस्थगुरुफल फल ॥

जब सिंहराशिस्थ बृहस्पति वक्री हो तब सुभिक्ष क्षेम आरोग्य और सब लोक प्रसन्न हो ॥ १५५ ॥ सब धान्योंका और तुलाभाण्ड का संग्रह करना, उसको नव महीने पीछे बेचनेसे लाभ होगा ॥ १५६ ॥ इति सिंहराशिस्थगुरुफल फल ॥

कन्याराशिस्थ बृहस्पति जब वक्री हो तब अपने पुण्यकर्मानुसार लाभालाभ होता है ॥ १५७ ॥ इति कन्याराशिस्थगुरु वक्र फल ॥

जब तुलाराशिस्थ बृहस्पति वक्री हो तब तुलासर्पिन सुगंधि वस्तु कपास और नमक ये सस्ते हों तथा मार्गशीर्ष बीतने बाद दश मास के उप

तुलाभाण्डसुगन्धीनि कर्पासलवणानि च ॥ १५८ ॥
समर्घाणि भवन्त्येव मार्गशीर्षव्यतिक्रमे ।
दशमासात्यये लाभो द्विगुणस्तत्र सम्भवेत् ॥ १५९ ॥

वृश्चिकराशिस्थगुरुफलम्—

वृश्चिकं यदि सम्प्राप्य वक्रं याति बृहस्पतिः ।
अन्नस्य संग्रहस्तत्र धान्यादेस्तु विशेषतः ॥ १६० ॥
कर्पासस्य घृतादेर्वा मार्गशीर्षे च विक्रये ।
द्विगुणो जायते लाभ-स्तदा संग्रहकारिणः ॥ १६१ ॥

धनराशिस्थगुरुवक्रफलम्—

धनराशिगतो जीवः करोति वक्रतां यदा ।
अचिरेणैव कालेन सर्वधान्यसमर्घता ॥ १६२ ॥
गोधूमचणकादीनि धान्यानि च क्रयाणकम् ।
समर्घाण्यन्यवस्तूनि गुडश्च लवणादिकम् ॥ १६३ ॥
चैत्रादिसंग्रहस्तेषां मार्गशीर्षादिविक्रयः ।
सर्वाणि लाभं लभते मासैकादशकात्यये ॥ १६४ ॥

रान्त दूना लाभ हो ॥ १५८-९ ॥ इति तुलाराशिस्थगुरु वक्र फल ।

जब वृश्चिकराशिका बृहस्पति वक्री हो तब अन्नका और विशेष कर धान्यका संग्रह करना, उसको तथा कपास और घी को मार्गशीर्षमें वेचने से दूना लाभ हो ॥ १६०-१ ॥ इति वृश्चिकराशिस्थगुरु वक्र फल ।

जब धनराशिका बृहस्पति वक्री हो तब थोड़े ही दिनोंमे सब धान्य सस्ते हों ॥ १६२ ॥ गेहूँ चणा आदि धान्य और करियाना, गुड लवण आदि दूसरी वस्तुओंका भाव सस्ता हो ॥ १६३ ॥ चैत्रके आदिमे उसका संग्रह करना और मार्गशीर्षके आदिमें उसको वेचना, ग्याहरह मास जाने वाद सब वस्तु लाभदायक होगी ॥ १६४ ॥ इति धनराशिस्थगुरुवक्र फल ।

जब मकरराशिका बृहस्पति वक्री हो तब आरोग्य हो और धान्य

मकरराशिस्थगुरुफलम्—

मकरस्थो यदा जीवः करोति वक्रगामिता ।
आरम्भं कुरुते पापं समर्घं नात्र संशयः ॥ १६५ ॥
मुद्गमाषादि धान्यानि सर्वाणि परिरक्षयेत् ।
षण्मासान्ते च सम्प्राप्त विक्रये लाभमाप्नुयात् ॥ १६६ ॥

कुम्भराशिस्थगुरुफलम्—

कुम्भराशिगतो जीवः करोति यदि वक्रताम् ।
आरोग्यं सर्वसस्यस्य राज्ञां श्रीर्जयमङ्गलम् ॥ १६७ ॥
सर्वधान्येषु निष्पत्तिः सर्वधान्यस्य विक्रयः ।
घृतं तैलं तुलामाषद मासान्ते च समर्घः ॥ १६८ ॥
पश्चाद् विग्रहता लाभः सुभिक्षं निर्भया जनाः ।
प्रजा गोद्विजस्थाना पुष्टिप्राय विनिर्मला ॥ १६९ ॥

मीनराशिस्थगुरुफलम्—

मीनराशिगतो जीवो वक्रतामुपयाति चेत् ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

धनक्षयस्तदा लोके चौराद् राजापि रोषितः ॥ १७० ॥
निराधारा प्रजापीडा ग्रहभूतादिदोषतः ।
तुलाभाण्डं गुडः खण्डा अर्घं ददति वाञ्छितम् ॥१७१॥
लवणं घृततैलादि-सर्वधान्यमहर्घता ।
कर्पासस्यार्घसम्प्राप्ति-र्लाभस्तेषां चतुर्गुणः ॥ १७२॥
वक्रे शक्रेज्ये पूज्ये जगति गतिरियं वास्तवी प्रास्तवीर्या,
तत्वं मत्वा तदेतद् वदतजनहितं धीधनाः सावधानाः ।
मूलं लोकेऽनुकूलं सुकृतविकृतयः सूर्यमुख्या ग्रहाः स्युः,
तेऽपिप्रायोऽनुसारं दधति ननु गुरोः सत्फले वाऽफलेऽपि।१७३।

अथ गुरुनक्षत्रभोगविचार —

अथ नक्षत्रभोगेन गुरोर्यादृक्फलं भवेत् ।
तदुच्यते वर्षबोधे निर्णयाय महीस्पृशाम् ॥१७४॥
कृत्तिकारोहिणीऋक्षे यदा तिष्ठेद् बृहस्पतिः ।
मध्यमात्र भवेद् वृष्टिः सस्यं भवति मध्यमम् ॥१७५॥

भूत आदिके दोषोंसे दुःख हो, तुलाभाट गुड खाट ये इच्छित लाभ दे ॥१७१॥ नमक घी तेल और सब धान्य तेज हों, कपाससे चौगुना लाभ हो ॥१७२॥ जगत्मे बृहस्पति वक्री होने पर वास्तविक प्रबल गति होती है। हे सावधान बुद्धिमानों! इस तत्वोंको मान कर मनुष्योंका हितको कहो। लोकमे शुभाशुभको बतलानेवाले अनुकूल मूलरूप सूर्यादि ग्रह हैं वे बृहस्पतिका सफल या निष्फलमें भी ग्रहानुसार फलदायक है ॥१७३॥ इति मीनराशि स्थगुरु वक्रफल ।

बृहस्पतिका नक्षत्रके संयोगसे जैसा फल हो वैसा वर्षाका निर्णय करनेके लिये वर्षबोध ग्रन्थमे कहा जाता है ॥१७४॥ जिस समय बृहस्पति कृतिका तथा रोहिणी नक्षत्र पर हो उस समय मध्यम वर्षा हो और मध्यम धान्य पैदा हो ॥ १७५ ॥ मृगशीर्ष और आर्द्रा नक्षत्र पर बृहस्पति हो तो

मृगशीर्षे तथार्द्रायां यदि तिष्ठेद् बृहस्पतिः ।
सुभिक्षं लभते सौख्यं वृष्टिजातं सदा जने ॥१७६॥
आदित्यपुष्याश्लेषासु गुरुभोगे प्रसङ्गिनी ।
अनावृष्टिर्भयं घोरं दुर्भिक्षं सर्वमण्डले ॥१७७॥
मघायां पूर्वाफाल्गुन्यां यदा तिष्ठेद् बृहस्पतिः ।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं देशयोग्यं पयोदकम् ॥१७८॥
उत्तराफाल्गुनीहस्ते गुरौ वर्षा सुखं जने ।
चित्रायां च तथा स्वातौ विचित्रा धान्यसम्पदः ॥१७९॥
विशाखायां च राधायां सस्यं भवति मध्यमम् ।
मध्यमे च भवेद् वर्षा वर्षा सापि च मध्यमा ॥१८०॥
गुरोर्ज्येष्ठामूलचारे मासद्वये न वर्षणम् ।
परतः खण्डवृष्टिः स्यात् नृपाणां दारुणा रणाः ॥१८१॥
जीवे पूर्वोत्तराषाढा-युक्ते लोकसुखं मतम् ।
त्रिमासान् वर्षति घना मासमेकं न वर्षति ॥१८२॥

सुभिक्ष सुख और अच्छी वर्षा हो ॥१७६॥ पुनर्वसु पुष्य और आश्लेषा नक्षत्र पर बृहस्पति हो तब अनावृष्टि घोरभय और सब देशमें दुष्काल हो ॥१७७॥ मघा और पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र पर बृहस्पति हो तब सुभिक्ष क्षेम आरोग्य और देशके अनुकूल वर्षा हो ॥ १७८ ॥ उत्तराफाल्गुनी और हस्त नक्षत्र पर बृहस्पति हो तो वर्षा अच्छी तथा मनुष्यों को सुख हो चित्रा और स्वाति नक्षत्र पर बृहस्पति हो तब विचित्र धान्यकी प्राप्ति हो ॥१७९॥ विशाखा और अनुराधा नक्षत्र पर बृहस्पति हो तो मध्यम धान्यकी प्राप्ति और चामासेमें मध्यमें मध्यम ही वर्षा हो ॥ १८० ॥ ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र पर बृहस्पति हो तो दो मास वर्षा न हो पीछेसे खंड वृष्टि हो और राजाओंमें घोर युद्ध हो ॥ १८१ ॥ पूर्वाषाढा और उत्तराषाढा नक्षत्र पर बृहस्पति हो तो लोक सुखी तीन महिना वर्षा और

श्रवणे वा धनिष्ठायां वारुणे गुरुसङ्गमे ।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं बहुसस्या च मेदिनी ॥१८३॥
पूर्वोत्तराभाद्रपद-योरनावृष्टिभयादिकम् ।
पौष्णाश्विनी भरणीषु सुभिक्षं धान्यसम्पदा ॥१८४॥
मृगादिपञ्चकं चित्राद् वायमेवाष्टकं तथा ।
नक्षत्रेष्वशुभं जीवे शेषेषु शुभमादिशेत् ॥१८५॥

अथ गुरोश्चतुष्कानि । अर्घकाण्डे पुनस्त्रैलोक्यदीपकग्रन्थ—

सौम्यादौ पञ्चके स्यात् सुरगुरुरभितो दौस्थ्यदौर्गत्यकर्त्ता,
पौष्यादौ वा चतुष्के भवति समुदितः सौस्थ्यसद्भिक्षदाता ।
चित्राद्येवाष्टधिष्ण्येऽप्यकरणमतिभय सन्ततं संविधत्ते,
कर्णादौ धिष्ण्यपङ्क्तिं जगति वितनुते सौख्यसम्पत्तिसौस्थ्यम् ।८६।

सारसंग्रहे पुनः—

दशकं पञ्चकं चैव चतुष्काष्टकमेव च ।

एक मास वर्षा न हो ॥ १८२ ॥ श्रवण धनिष्ठा और शतभिषा नक्षत्र पर बृहस्पति हो तो सुभिक्ष क्षेम आरोग्य हो और पृथ्वी बहुत धान्यवाली हो ॥ १८३ ॥ पूर्वाभाद्रपदा या उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र पर बृहस्पति हो तो अनावृष्टि और भय हो। रेवती अश्विनी और भरणी नक्षत्र पर बृहस्पति हो तो सुभिक्ष और धान्य सम्पदा अधिक हो ॥१८४॥ मृगशीर्ष आदि लेकर पाच और चित्रादि आठ नक्षत्र इनमे बृहस्पति हो तो अशुभ और बाकीके नक्षत्र पर बृहस्पति हो तो शुभ होता है ॥ १८५ ॥

मृगशीर्षादि पाच नक्षत्र पर बृहस्पति हो तो दुःख और दुर्भिक्षकारक है, मघादि चार नक्षत्र पर बृहस्पति हो तो सुख और सुभिक्ष कारक है, चित्रादि आठ नक्षत्र पर बृहस्पति हो तो धान्य प्राप्ति न हो, भय अधिक तथा दुःख हो और बाकीके श्रवणादि नक्षत्र पर बृहस्पति हो तो जगतमें सुख संपत्ति दायक होता है ॥ १८६ ॥ श्रवणादि नक्षत्र-मे क्रमसे दश

यदाश्विना देवगुरुः श्रवणादिक्रमादिदम् ॥१८७॥
सुभिक्षं दशके ज्ञेय पञ्चके रौरवं तथा ।
चतुष्के च सुभिक्षं स्यादष्टके युद्धरौरवम् ॥१८८॥
स्वातिमुख्याष्टकं जीवे त्वश्विन्यादित्रिकेऽपि च ।
शनिराहुकुजैश्चैव प्रत्येकं सहितो भवेत् ॥१८९॥
सञ्चरते यदा काले सुभिक्षं जायते तदा ।
मृगादिपञ्चके जीवे धनिष्ठापञ्चकेऽथवा ॥१९०॥
भौमादिसहितो गच्छेद् दुर्भिक्षं तत्र जायते ।
एकराशिगते चैव एकर्क्षे तु महाभयम् ॥१९१॥
मीनेऽपि कन्यामनुयायदा याति बृहस्पतिः ।
त्रिभागशेषां पृथिवीं कुर्वते नात्र संशयः ॥१९२॥
अतिचारगते जीवे वक्रान्ते शनैश्चरे ।
हाहाभूतं जगत्सर्वं रुण्डमाला महीतले ॥१९३॥

पाँच चार और आठ नक्षत्र पर बृहस्पति हो उसका फल— श्रवणादि दश नक्षत्र पर बृहस्पति हो तो सुभिक्ष, मृगशीर्षादि पाँच नक्षत्र पर हो तो दुःख, मघादि चार नक्षत्र पर हो तो सुभिक्ष और चित्रादि आठ नक्षत्र पर हो तो युद्ध और दुःख करता है ॥ १८७ ॥ १८८ ॥

स्वातिसे आदि लेकर आठ नक्षत्र और अश्विनी आदि तीन नक्षत्र पर यदि शनि राहु या मंगल हो तथा इन प्रत्येक ग्रह के साथ बृहस्पति हो ॥१८९॥ और इसके सहित गमन करे तो सुभिक्ष होता है। मृगशीर्षादि पाँच धनिष्ठादि पाँच नक्षत्र पर ॥१९०॥ भौमके साथ बृहस्पति हो तो दुर्भिक्ष हो। यदि एक ही राशि पर और एक ही नक्षत्रों पर हो तो महाभय हो ॥१९१॥ मीन कन्या का अनुयायी राशि पर बृहस्पति हो तो समस्त पृथ्वी का तृतीय भाग करदे इसमें संशय नहीं ॥१९२॥ बृहस्पति अतिचारी हो और शनि वक्रगामी हो तो समस्त जगत हाहाभूत हो और पृथ्वी पर रुण्डमय

एकस्मिन्नपि वर्षे चेज्जीवो राशित्रयं स्पृशेत् ।
तदा भवति दुर्भिक्षं व्रतपूर्णा वसुन्धरा ॥१९४॥
गुरौ महति नक्षत्रे राशिस्वामिनि सहले ।
मासांस्त्रयोदश तदा समर्घं धान्यमुच्यते ॥१९५॥

बालबोधे तु सप्तविंशतिनक्षत्रभोगे गुरुफलमेवम्—

"अश्विन्यां गुरौ सुवृष्टिः सुभिक्षं शीतपीडा ॥ १ ॥ भरण्यां दुर्भिक्षं विफलं वर्षं राजभयम् ॥ २ ॥ कृत्तिकायां न वर्षा विप्रपीडा ॥ ३ ॥ रोहिण्यां न वृष्टिश्चतुष्पदविनाशः ॥ ४ ॥ मृगशीर्षे जने रोगो धान्यमहर्घता ॥ ५ ॥ आर्द्रायां प्रचुरं जलं कर्पासतिलविनाशः ॥ ६ ॥ पुनर्वसौ आरोग्यं सुभिक्षं सुवृष्टिः सर्वधान्यनिष्पत्तिः ॥७॥ पुष्ये लोके नेत्ररोगो वस्त्रमहर्घता रोगा बलीवर्दा महर्घाः ॥८॥ आश्लेषायां सुभिक्षं ॥९॥ मघायां न वर्षा, तृणजातं धान्यमपि दुर्लभं, श्रावणद्वये न जलवर्षा चतुष्पदमहर्घम् ॥ १० ॥ पूर्वाफाल्गुन्यां श्रावणे भाद्रपदे

हो ॥ १९३ ॥ यदि बृहस्पति एक ही वर्षमें तीन राशिको स्पर्श करे तो दुर्भिक्ष हो और पृथ्वी व्रतमें पूर्ण हो ॥१९४॥ यदि बृहस्पति बृहत्संज्ञक नक्षत्र पर हो तथा राशिका स्वामी और बलवान् हो तो तेरह मास धान्य सस्ता हो ॥ १९५ ॥

अश्विनीमें बृहस्पति आनेसे वर्षा अच्छी, सुभिक्ष और शीत पीडा हो। भरणीमें दुर्भिक्ष, वर्ष फलरहित और राजभय हो। कृत्तिकामें वर्षा न बरसे तथा ब्राह्मणको दुःख। रोहिणीमें वर्षा नहीं और पशुओंका विनाश। मृगशीर्षमें मनुष्योंको रोग और धान्य भाव तेज। आर्द्रामें बहुत वर्षा, कपास तिलका नाश। पुनर्वसुमें आरोग्य सुभिक्ष वर्षा अच्छी और सब धान्य पैदा हो। पुष्यमें लोगोंको नेत्र रोग वस्त्रकी तेजी, रोग प्राप्ती और बैल महँगे हो। आश्लेषामें सुभिक्ष। मघामें वर्षा नहीं, घास धान्य भी दुर्लभ,

या न वर्षा ॥११॥ उत्तराफाल्गुन्यां गावो बहुक्षीरा आरोग्य सर्वधान्यनिष्पत्ति ॥१२॥ हस्ते सुभिक्षं ॥१३॥ चित्रायां तिलकपासचणकमहर्घता ॥१४॥ स्वातौ सर्वत्र धान्यनिष्पत्तिः ॥१५॥ विशाखायां सर्वधान्यमहर्घता लोकेऽग्निपीडा ॥१६॥ अनुराधायां सुभिक्षं लोकास्वस्थ ॥१७॥ ज्येष्ठायां न वृष्टिर्जनपीडा ॥१८॥ मूले सुभिक्षमारोग्यम् ॥१९॥ पूर्वाषाढायां चणकगोधूमतिलविनाशः ॥२०॥ उत्तराषाढायां न वर्षा गुडघृतलवणमहर्घता ॥२१॥ श्रवणे गवां तथा वृद्धानां पीडा ॥२२॥ धनिष्ठायां रोगबहुला अल्पवृष्टिः प्रजाविरोधः ॥२३॥ शतभिषाभिजिद् वर्षा महर्घा ॥२४॥ पूर्वभाद्रपदायामलसीतिलमाषादिविनाशो निगीतम् ॥२५॥ उत्तराभाद्रपदायां घना न वर्षन्ति उत्तमलोकपीडा ॥२६॥ रेवत्यां न वर्षा धान्यदोषः ॥२७॥

आर्द्रा भरणीमें वर्षा न हो और पशु मरेंगे हो। पूर्वाफाल्गुनीमें भाद्रपद मासमें वर्षा न हो। उत्तराफाल्गुनीमें गौ बहुत दूध दें आरोग्य और सब धान्यका प्राप्ति हो। हस्तमें सुभिक्ष। चित्रामें तिल कपास और चणा ये सब भाव हो। स्वातिमें सब जगह धान्यकी प्राप्ति। विशाखामें सब धान्य महंगे और लोकमें अग्निका उपद्रव हो। अनुराधामें सुभिक्ष और लोक में उत्सव हो। ज्येष्ठामें वर्षा न बरसे और मनुष्योंको दुःख हो। मूलमें सुभिक्ष और आरोग्य हो पूर्वाषाढामें चणा गेहूँ तिलका विनाश हो। उत्तराषाढामें वर्षा थोड़ी गुड़ घी और नमक ये महँगे हो। श्रवणमें गौवें का और वृद्ध जनको पीड़ा। धनिष्ठामें रोग अधिक वर्षा थोड़ी और प्रजामें विरोध। शतभिषा और अभिजित्में वर्षा अधिक। पूर्वाभाद्रपदमें अलसी तिल उर्द आदिका विनाश हो अधिक ठंडी। उत्तराभाद्रपदमें वर्षा न बरसे और उत्तम लोगोंको पीड़ा। रेवतीमें बृहस्पति हो तो वर्षा न हो और धान्यकी प्राप्ती न हो ॥इति॥

अथ गुरूदयद्वादशराशिफलम्—

मेषे गुरोदयतस्त्वतिवृष्टिरेव,
दुर्भिक्षमुत्तममृतिर्वृषभे सुभिक्षम्।
पाषाणशालिमणिरत्नमहर्घभावः,
स्वावस्थया मिथुनके गणिकासु पीडा ॥१॥
स्यात् कर्कटे जनमृतिर्जलवृष्टिरल्पा,
सिंहे तथैव नवरं वहुधान्यलाभः।
कन्यास्थितस्य च गुरोरुदये शिशूनां,
पीडा तथैव गणिकासु च वृद्धलोके ॥२॥
काश्मीरचन्दनफलादिमहर्घता स्या-
ल्लाभो महान् व्यवहृतौ च तुलावलम्बे।
दुर्भिक्षतालिनि धनुष्यपि चाल्पवर्षा,
लोके रुजो मकरके वहुधान्यवृष्टिः ॥३॥
कुम्भे गुरोरुदयतः सकलेऽपि देशे,
वृष्टिर्घनेऽपि च घनेऽतिमहर्घमन्नम्।

मेषराशिमें गुरु का उदय हो तो अतिवृष्टि दुर्भिक्ष और उत्तमजनका मरण हो। वृषराशिमें उदय हो तो सुभिक्ष हो तथा पाषाण चावल मणि और रत्न का भाव तेज हो। मिथुनराशिमें उदय हो तो अपनी अवस्थासे वेश्याओंमें पीडा हो ॥ १ ॥ कर्कराशिमें उदय हो तो मनुष्योंका मरण और थोड़ी वर्षा हो। सिंहराशिमें उदय हो तो धान्यका वहुत लाभ हो। कन्याराशिमें उदय हो तो वालकों को वेश्या को तथा वृद्धों को पीड़ा हो ॥ २ ॥ तुलाराशिमें उदय हो तो काश्मीर चंदन फल आदि का भाव तेज हो, तथा व्यवहारमें वड़ा लाभ हो। वृश्चिकमें उदय हो तो दुर्भिक्ष हो। धनुराशिमें उदय हो तो थोडी वर्षा। मकराशिमें उदय हो तो लोकमें रोग धान्य अधिक और वर्षा श्रेष्ठ हो ॥ ३ ॥ कुम्भराशिमें उदय हो तो समस्त दे-

मीनेऽस्त्यवृष्टिरवनीश्वरयुद्धयोगः,
पीडा जनस्य मकराकरकानुरूपा ॥४॥ इति ॥

अथ गुरूदयमासफलम्—

जीवोऽभ्युदेति यदि कार्त्तिकमासि वह्नि-
र्लोके न वृष्टिरपि रोगनिपीडनं च ।
मार्गेऽपि धान्यविगमः सुखमेव पौषे,
नीरोगता सकलधान्यसमुद्भवश्च ॥५॥
माघे तथैव परतो भुवि खण्डवृष्टि-
श्चैत्रे विचित्रजलवृष्टिरतोऽपि राधे ।
सर्वं सुखं जलनिरोधनमेव शुक्रे
ऽप्याषाढके नृपरणाः समर्घता च ॥६॥
आरोग्यं श्रावणे वर्षा बहुला सुखिता जनाः ।
भाद्रे चौरा धान्यनाशा आश्विने सुखदं स्मृतम् ॥७॥ इति ॥

रामें वृष्टि अधिक और समर्घ क्षेम हो । मीनराशिमें बृहस्पति का उदय हो तो थोड़ी वर्षा राजाओंमें युद्ध का योग और मनुष्यों को मगर से नरक-के समान पीडा हो ॥ ४ ॥ इति ।

कार्त्तिकमासमें बृहस्पति का उदय हो तो जगत्में गरमी पड़े वर्षा न हो और रोगपीडा हो । मार्गशीर्षमें उदय हो तो धान्य का विनाश हो । पौषमें उदय हो तो सुख नीरोगता और सब धान्य पैदा हो ॥ ५ ॥ माघ और फाल्गुनमें उदय हो तो पृथ्वीपर खंडवर्षा हो । चैत्रमें उदय हो तो विचित्र जलवृष्टि हो । वैशाखमें उदय हो तो सब प्रकारके सुख । ज्येष्ठमें उदय हो तो जलका निरोध । आषाढ में उदय हो तो राजाओंमें युद्ध और समभाव क्षेम हो ॥ ६ ॥ श्रावणमें उदय हो तो आरोग्य वर्षा अधिक और सब लोग सुखी हों । भाद्रमें उदय हो तो चोर का उपद्रव और धान्यका नाश हो । आश्विनमें उदय हो तो सुखप्रद हो ॥ ७ ॥

अथ द्वादशराशिषु गुरोरस्तफलम् —

यद्यस्तमेत्य जगतो गुरुरल्पवृष्टि,
दुर्भिक्षमेव कुरुते वृषभे गुडस्य ।
तैलं घृतं च लवणं प्रभवेन्महर्घम्,
मृत्युर्जनेऽल्पजलदो मिथुनेऽस्तमासो ॥ ८॥
कर्केऽस्ततो नृपभयं कुशलं सुभिक्षं,
सिंहे नृनाथरणलोकधनादिनाशः ।
कन्यास्ततः सकलधान्यसमर्घता स्यात्,
क्षेमं सुभिक्षमतुलं जनरोगनाशः ॥९॥
पीडा द्विजेषु बहुधान्यसमर्घता च,
जाते तुलास्तमयने नयनेषु रोगः ।
राज्ञां भयान्यलिनि तस्करलुण्टनानि,
माषास्तिलाश्च बहवो धनुषास्तमासो ॥१०॥
कुम्भे गुरोरस्तमायात् प्रजायाः,
पीडापरं गर्भवती च जाया ।

यदि मेषराशिमें बृहस्पति अस्त हो तो थोडी वर्षा और दुर्भिक्ष हो। वृषराशिमें अस्त हो तो गुड तेल घी और लवण ये तेज हों। मिथुनराशिमें अस्त हो तो मनुष्यों में मरण और थोडी वर्षा हो॥८॥ कर्कराशिमें अस्त हो तो राजभय, कुशल और सुभिक्ष हो। सिंहराशिमें अस्त हो तो राजाओंमें युद्ध तथा लोगों के धनका नाश हो। कन्याराशिमें अस्त हो तो सब धान्य सस्ते हों, क्षेम, सुभिक्ष अधिक और मनुष्योंके रोगका नाश हो ॥ ९ ॥ तुलाराशिमें अस्त हो तो ब्राह्मणोंको पीडा और धान्य बहुत सस्ते हो। वृश्चिकराशिमें अस्त हो तो नेत्रों में रोग और राजाओं का भय हो, धनराशिमें अस्त हो तो चोरों लूट करें और उर्द तिल अधिक हो ॥ १० ॥ कुम्भराशिमें अस्त हो तो प्रजा को तथा गर्भवती स्त्रीको पीडा। मीनराशिमें अ-

मीने सुभिक्ष कुशल समर्घं,
धान्य घमस्याम्पतयापि वृष्ट्या ॥११॥
मागसिरे गुरु अथमे सगि तेणे पक्खि ।
ईति पडे अप्पकालीइ जा रासे तो रक्खि ॥१२॥
कलह घसेण सुंदरि' कत्तियमासम्मि किण्णपक्खम्मि ।
गरुविउअविधिओ गुरु अथमे जाणिज्जइ छत्तमगो वि॥१३॥
मार्गशीर्षे गुरोरस्त सुगुपुत्रस्य चोदय' ।
तदा जगस्थिति' सर्वा विपरीता प्रजायते ॥१४॥इति॥

अथ मेघविचारः —

मेघा इह द्वादशधा मयुद्रा-
द्य' किलोक्ता गुरुचारशास्त्रे ।
मागा' पुनस्ते ह्यभिधानरागा-
दुदाहृता रामविनोदनाम्नि ॥१॥

तथा च तद्ग्रन्थे द्वादशधा नागा —

गताम्दा मिथुना' सूर्ये मत्तास्तत्र विशेषतः ।
सुबुद्धो नन्दिसारी च कर्कोटकः पृथुश्रवा ॥२॥

स्त हो तो सुभिक्ष तथा कुशल हो और थोड़ी वर्षा होने पर भी धान्य सस्ते हो ॥ ११ ॥ मार्गशीर्षमें गुरुका अस्त हो और उसी ही पक्षमें उदय हो तो थिम्मथकुर्मे ईति का उपद्रव हो ॥ १२ ॥ कार्तिक कृष्णपक्षमें गुरु का अस्त हो और अगस्ति का उदय हो तो छत्रभंग हो ॥ १३ ॥ मार्गशीर्षमें गुरु का अस्त हो और भृगुसुत (अगस्ति) का उदय हो तो सब जगत् की स्थिति विपरीत हो ॥ १४ ॥ इति ॥

गुरुचारके शास्त्रमें मयुद्रादि बारह प्रकारके मेघ कहे हैं और रामविनोद नामके शास्त्रमें भी मेघका अधिकार कहा है ॥ १ ॥ रामविनोद ग्रंथमें —गतवर्षमें हो मिथुन का बारहवा भाग देना, जो शेष बचे सद

वासुकिस्तक्षकश्चैव कम्बलाश्वतुरावुभौ ।
हेममाली जलेन्द्रश्च वज्रदंष्ट्रो वृषस्तथा ॥३॥
सुबुद्धो बुद्धिकर्त्ता च कष्टवृष्टिः शुभावहः ।
नन्दिसारी महावृष्टि-र्नन्दन्ति च महाजनाः ॥४॥
कर्कोटके जलं नास्ति मरणं च महीपतेः ।
पृथुश्रवा जलं स्वल्पं सस्यहानिः प्रजायते ॥५॥
वासुकिः सस्यकर्त्ता च बहुवृष्टिकरः शुभः ।
तक्षके मध्यमा वृष्टि-र्विग्रहो मरणं ध्रुवम् ॥६॥
कम्बले मध्यमा वृष्टिः सस्यं भवति शोभनम् ।
जायतेऽश्वतरे स्वल्पं जलं सस्यं विनश्यति ॥७॥
हेममाली महावृष्टि-र्जलेद्रः प्लावयेन्महीम् ।
वज्रदंष्ट्रे त्वनावृष्टि र्वृषे स्यादीतितो भयम् ॥८॥ इति ॥
गताब्दा नवभिस्तष्टाः शेषं हराद् विशोधयेत् ।
ततश्चावर्त्तसंवर्त्त-पुष्करद्रोणकालकाः ॥९॥

क्रमसे मेघका नाम जानना । सुबुद्धि, नदिसारी, कर्कोटक, पृथुश्रवा ॥२॥ वासुकी, तक्षक, कम्बल, अश्वतुर, हेममाली, जलेन्द्र, वज्रदष्ट्र और वृष ये बारह मेघके नाम हैं ॥ ३ ॥ सुबुद्ध बुद्धिका कारक है, कष्टसे वर्षा और शुभकारक है । नदिसारीमे महावर्षा, और महाजन प्रसन्न हों ॥ ४ ॥ कर्कोटकमें जल न बरसे और राजाका मरण हो । पृथुश्रवामे थोडी वर्षा और धान्यका विनाश हो ॥ ५ ॥ वासुकिमें धान्य प्राप्ति, वर्षा अधिक और शुभ हो । तक्षकमें मध्यम वर्षा, विग्रह और मरण हो ॥ ६ ॥ कम्बलमें मध्यम वर्षा और धान्य अच्छे हों । अश्वतुरमें थोड़ी वर्षा और धान्यका विनाश हो ॥ ७ ॥ हेममालिमें बड़ी वर्षा हो । जलेन्द्र मेघ पृथ्वीको जलसे तृप्त करे । वज्रदष्टमें अनावृष्टि हो और वृषमेघमे ईतिका भय हो ॥८॥ इति ॥
गत वर्षको नवसे भाग देना, जो शेष बचे वह क्रमसे मेघका नाम

नीलश्च वरुणो वायुस्तमश्चैव समातम ।
आवर्ते मन्दतोय स्यात् संवर्ते वायुपीडनम् ॥१०॥
पुष्करे बहुलं तोयं द्रोणे वृष्टिः सुखं भवेत् ।
अल्पवृष्टिः कालमेघे नीलः क्षिप्रं प्रवर्षति ॥११॥
वारुणे स्वर्णधाराभिर्वायुर्वर्षाविनाशकः ।
तमोमेघे न वृष्टिः स्यान्मेघानां फलमीदृशम् ॥१२॥
मतान्तरेपु —
त्रिभिर्गताब्दैः सहिताश्चतुर्भिः,
शेषं भवेदम्बुपतिः क्रमेण ।
आवर्तसंवर्तकपुष्कराश्च,
द्रोणश्चतुर्थो मुनिभिः प्रदिष्टः ॥१३॥
आवर्तेऽच्छिन्नवृष्टिः स्यात् संवर्ते जलपूर्णता ।
पुष्करमन्दवृष्टिस्तु द्रोणो वर्षति सर्वदा ॥१४॥
सारसंग्रहे तु—
शाकं संयोज्य त्र्यं शाके चतुर्भिर्भाज्यते तत ।

कालना आवर्त संवर्त पुष्कर द्रोण पामक ॥ ६ ॥ नील, वरुण वायु और तम ये नव प्राचीन मेघ हैं । आवर्तमें मन्दवर्षा संवर्त में वायुपीड़ा पुष्करमें बहुत जल द्रोणमें वर्षा और सुख कालमेघमें थोड़ी वर्षा नीलमेघ शीघ्र ही बरसता है वारुणमेघमें समुद्रके सदृश वर्षा हो । वायु मेघ वर्षाका नाश करता है और तमोमेघमें वर्षा न हो । ये मेघोंका फल कहा ॥ १ ॥ ११ ॥ १२ ॥

गत वर्षोंमें तीन मिलाकर बाकीमें भाग देना जो शेष बचे वह क्रमसे मेघोंके साथ जानना आवर्त संवर्त पुष्कर और द्रोण ये चार मेघ मुनि कहते हैं ॥ १३ ॥ आवर्तमें निरन्तर वर्षा । संवर्तमें जल पूर्ण हो पुष्कर में मन्दवृष्टि हो और द्रोण सर्वदा बरसता है ॥ १४ ॥

मेघा आवर्त्तसवर्त्त-पुष्करद्रोणकाः क्रमात् ॥१५॥
अल्पवृष्टिः खण्डवृष्टि-र्महावृष्टिश्च वायवः ।
एषां चतुर्णां क्रमतः फलमेवं सतां मतम् ॥१६॥
पुनः—मेघश्चतुर्विधा प्रोक्ता द्रोणाख्यः प्रथमो मतः ।
आवर्त्तः पुष्करावर्त्त-स्तुर्यः संवर्त्तकाभिधः ॥१७॥
बहुवृष्टिः खण्डवृष्टि-र्मध्यवृष्टिश्च वायवः ।
एषां चतुर्णां क्रमतः फलानि चतुरा जगुः ॥१८॥
सिद्धान्तेऽपि स्थानाङ्गे—

चत्तारि मेहा पण्णत्ता तंजहा-पुक्खलसंवट्टते पज्जुन्ने जीमूते जिम्हे । पुक्खलसंवट्टएणं महामेहेणं एगेणं वासेणं दसवाससहस्साइं भावेइ । पज्जुन्नेण महामेहेणं एगेणं वासेणं दसवाससयाइं भावेइ । जीमूतेण महामेहेणं एगेणं दसवासाइं भावेइ । जिम्हेण महामेहे बहूहिं वासेहिं एगं वासं भावेइ

शक संवत्सरमे तीन मिलाकर चार का देना, शेष बचे, वह क्रमसे मेघके नाम—आवर्त्त सवर्त्त पुष्कर और द्रोण हैं ॥१५॥ इन चारों का अनुक्रमसे अल्पवर्षा, खण्डवर्षा, महावर्षा और वायु का चलन, ऐसा फल महर्षियोंने कहा है ॥१६॥ पुन —मेघ चार प्रकार के हैं—द्रोण, आवर्त्त, पुष्कर और चौथा सवर्त्तक नामका है ॥१७॥ इन चारों का अनुक्रमे वर्षा बहुत, खडवर्षा, मध्यवर्षा और वायु का चलन, इस प्रकार के फल विद्वानों ने कहा है ॥१८॥

स्थानागसूत्रमें चार प्रकारके मेघ कहे है—पुष्करसवर्त्तक १, प्रद्युम्न २, जीमूत ३, और जिम्ह ४ । पुष्करसवर्त्तक नामका महामेघ एक वार बरसे तो दश हजार वर्ष तक पृथ्वी को रसवाली करता है । प्रद्युम्न नामका महामेघ एक बार बरसे तो एक हजार वर्ष तक पृथ्वीको रसवाली करता है । जीमूत नामका महामेघ एकबार बरसे तो दश वर्ष तक पृथ्वी को रसवाली करता

वा ण भावेह् ।

रुद्रदेवयामलयगकृते मेघमालायां पुनः—

मेघास्तु कीदृशा देव! कथं वदन्ति ते भुवि ।
कति संख्या भवत् तेषां येन मे प्रत्यया भवेत् ॥१॥

ईश्वर उवाच—शृणु देवि! यथा तथ्यं यथास्वरूपं तु यादृशम् ।
मन्दरोपरि मेघास्ते राजानो दश कीर्तिताः ॥२॥
कैलाशे दश विज्ञेयाः प्राकारे कोटजे दश ।
उत्तरे दश राजानः शृंगवेर तथा दश ॥३॥
पर्यन्ते दशराजानो दशैव हिमवद्गगे ।
गन्धमादनशैले च राजानो दश वारिदाः ॥४॥
अशीतिर्मेघा विख्याताः कथितास्तव पार्वति! ।
अन्यत् किं पृच्छसि पुनर्लोकानां हितकारिणि! ॥५॥
अशीतिमेघमध्ये तु स राजा पद्मनंदनः ।
गुरुणा राशिसंयोगाद् यः पुरस्क्रियते जनः ॥६॥

है और जिनके मासका महामेघ बहुत वार बरस कर एक वर्ष तक पृथ्वीको रसवाली कर या न भी कर।

हे देव! मेघ कैसे हैं? पृथ्वी पर व कैसे बरसते हैं? उनकी कितनी संख्या है? इनका वर्णन आपके श्रीमुखसे सुननेका विश्वास हो ॥१॥ ईश्वर बोले— हे पार्वति! मैं इनका वर्णन और रूप जैसा है वैसा यथार्थ कहता हूँ— मंदर (मेरु) पर्वत पर मेघके दश राजाओं निवास करते हैं ॥ २ ॥ कैलास पर दस, प्राकार कोटज पर दश, उत्तरमें दश और शृंगवेरपुरमें दश मेघाधिपति हैं ॥ ३ ॥ पर्यन्तमें दश, हिमवत्पर्वतमें दश और गंधमादन पर्वत पर दश मेघाधिपति हैं ॥ ४ ॥ हे पार्वति! सब अस्सी मेघ प्रख्यात हैं ये तेरे सिरे कहा। हे लोगोंके हित करनेवाली! और दूसरा क्या पूछती है? ॥ ५ ॥ ये अस्सी मेघके मध्यमें वह पद्म राजा है जो बृहस्पतिके

दिग्भागे च विदिग्भागे प्रत्येकं दश नीरदाः ।
उद्गमय्य प्लावयन्ति मर्त्यलोके जलैर्महीम् ॥७॥
कमलेऽष्टदले वृष्ट्यै प्रतिष्ठाप्य पयोधरान् ।
धूपदीपैश्च कुसुमै-र्नैवेद्यैः परिपूजयेत् ॥८॥
सिंहको विजयश्चैव कम्बलोऽथ जयद्रथः ।
धूम्रः सुस्वामिभद्रौ च मातङ्गो वरुणस्तथा ॥९॥
त्रिलोचनपतिश्चैव मेघाः प्राच्याममी दश ।
आनन्दः कालदंष्ट्रश्च शूकरो वृषभुक् तथा ॥१०॥
मृगो नीलो भवः कुम्भो निकुम्भो महिषस्तथा ।
दश मेघा दक्षिणस्यां प्रायोऽमी वृष्टिकारिणः ॥११॥
कुञ्जरः कालमेघश्च यामुनः कालकान्तकौ ।
दुन्दुभिर्मेखलः सिन्धुर्मकरश्छत्रकस्तथा ॥१२॥
पश्चिमायाममी मेघा दश वर्षाविधायिनः ।
मेघनादोऽथ नृपति-स्त्रिलोचनसुधाकरौ ॥१३॥
दण्डिनश्च सितालश्च त्रैकालिकजलस्तथा ।

साथ राशिसयोगसे आगे किया जाता है ॥ ६ ॥ प्रत्येक दिशा और विदिशामें दश दश मेघाधिपति हैं वे मर्त्यलोकमें उदय होकर जलसे पृथ्वीको तृप्त कर देते हैं ॥ ७ ॥ वर्षाके निमित्त मेघाधिपतिको अष्टदल कमलके बीच स्थापन कर धूप दीप फूल और नैवेद्यसे पूजा करे ॥ ८ ॥ सिंह विजय कंबल जयद्रथ धूम्र सुस्वामी भद्र मातग वरुण ॥९॥ और त्रिलोचनपति ये दश मेघ पूर्व दिशामे रहते हैं, आनन्द कालदंष्ट्र शूकर वृषभुक् ॥ १० ॥ मृग नील भव कुंभ निकुंभ और महिष ये दश मेघ दक्षिण दिशामें रहकर वर्षा करते हैं ॥ ११ ॥ कुंजर कालमेघ यामुन कालक अन्तक दुंदुभि मेखल सिंधु मकर और छत्रक ये दश मेघ पश्चिममें रहकर वर्षा करते हैं । मेघनाद त्रिलोचन सुधाकर ॥ १३ ॥ दंडी सिताल त्रैकालिक-

वृषभाऽपि च गन्धर्वा विद्युमासिकथ परः ॥१४॥
गह्वरो दशमेघाः स्युरुत्तरस्यां प्रवर्षिणः ।
दिक्मेघानां ब्राह्मणाद्या जातयः क्रमतो मताः ॥१५॥
चत्वारिंशद्विदिग्जाता मेघा अन्येऽपि कीर्त्तिताः ।
नामानि तेषां बाच्यानि ग्रन्थान्तरनिरीक्षणात् ॥१६॥
ॐकारा नाभि मूर्त्तिश्च मयूरः कन्दिकस्तथा ।
बिन्दुकान्तिश्च करणा हेमकान्तिश्च पर्वत ॥१७॥
गैरिकश्चाह्वया मेघा स्वर्गलोके व्यवस्थिताः ।
दिव्यमेघाश्च सप्तैते सर्वाङ्गसुखदायिन ॥१८॥
दशमेघाः श्वेतवर्णा दशैव लोहितास्तथा ।
दश पीता स्वर्णवर्णा दश धूम्रा प्रकीर्त्तिताः ॥१९॥
अथ मन्त्रं प्रवक्ष्यामि येन मन्त्रेण आहिता ।
आगच्छन्ति धरां मेघा कुर्वन्त्येकार्णवां महीम् ॥२०॥

ॐ ह्रीं मेघपूर्त्यै नम आगच्छ २ स्वाहा । ॐ मेघदूती कमलाभरणाय मम आगच्छ २ स्वाहा । ॐ ह्रीं महानीलरा जाय हिमवभिषासिने आगच्छ २ स्वाहा । ॐ ह्रीं मन्दिकेश्वराय

अस वृपभ गन्धर्व विद्युमासिकथ ॥१४॥ और गह्वर ये दश मेघ उत्तर में रहकर वर्षा करते हैं । इन दिशाओंके मेघकी ब्राह्मण आदि क्रमसे जाति जानना ॥१५॥ विदिशा के भी चालिस मेघ हैं उनके नाम दूसरे ग्रन्थोंमे समझलेना ॥ १६ ॥ ॐकार युक्त मूर्त्ति मयूरकंदिक बिन्दुकान्ति करण हेमकान्ति पर्वत ॥ १७ ॥ और गैरिक ये मेघ स्वर्गमें रहते हैं ये सात मेघ दिव्य होनेसे सबको सुख देते हैं ॥ १८ ॥ दश मेघ श्वेतवर्णवाले, दश लालवर्णवाले दश पीतवर्णवाले और दश धूम्रवर्णवाले हैं ॥ १९ ॥

अब वह मंत्र कहता हूँ जिनके प्रभाव से मेघ आकर पृथ्वी को जलसे पूर्ण करें ॥ ॥ उपर लिखे हुए मंत्रों का दश हजार जाप करें और पीछे

जठरनिवासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा । ॐ ह्रीं कुबेरराजाय श्रृंगवेरनिवासिने आगच्छ २ स्वाहा ।

जापोऽस्य दश साहस्रो दशांशो होम एव च ।
पुष्पैश्च धवलै रक्तैः करवीरसमुद्भवैः ॥ २१ ॥
ततः पुष्पैः सुगन्धाढ्यै-रर्चयेन्मेघसप्तकम् ।
नद्यां चैव वने गत्वा मेघानावाहयेद् बुधः ॥२२॥
शिवालये तडागे वा पुनर्मेघान् विसर्जयेत् ।
दिव्यमेघाश्च सप्तैते कुलपर्वतवासिनः ॥ २३ ॥
सर्वेष्वमीषु मेघेषु राजानो द्वादश स्मृताः ।
प्रबुद्धा नन्दशालाद्या गुरुणैव प्रयोजिताः ॥ २४ ॥
एवं गुरोश्चारवसेन नागा, अधिष्ठितास्तैर्यदि चोद्वाहाः ।
कुर्वन्ति वर्षां प्रतिवर्षमत्र, संवत्सराख्या परिवर्त्तनेन ॥२५॥

इति श्रीमेघमहोदये वर्षप्रबोधापरनाम्नि महोपाध्याय
श्रीमेघविजयगणिविरचिते संवत्सराधिकारश्चतुर्थः ।

या लाल कनेर के फूलों के साथ दशांश हवन करे ॥ २१ ॥ फिर सुगंन्धित पुष्पों से सात मेघों का पूजन करे । नदी या वनमें जाकर विद्वान् लोग मेघों का आह्वान करे ॥ २२ ॥ फिर शिवालय या तलाव पर जाकर मेघों को विसर्जन करे । ये सात दिव्य मेघ कुलपर्वत के निवासी है ॥२३॥ इन सब प्रकार के मेघों में बारह राजा हैं, वे प्रबुद्ध नन्दशाल आदि नामवाले है ॥ २४ ॥ इस तरह बृहस्पति के चलनवशसे मेघाधिपति है वह संवत्सर का परिवर्त्तन से प्रतिवर्ष वर्षा करता हैं ॥ २५ ॥

इति श्रीसौराष्ट्रराष्ट्रान्तर्गत-पादलिप्तपुरनिवासिना पण्डितभगवानदासाख्य
जैनेन विरचितया मेघमहोदये बालावबोधिन्याऽऽर्यभाषया टीकित
चतुर्थ संवत्सराधिकार ।



अथ पञ्चमं शनैश्चरवत्सरनिरूपणाधिकारः ।

संवत्सरशरीरम्

रोहिण्यानलभं च वत्सरतनुर्नाभिस्त्वषाढाद्वयं,
सार्पं हृत् पितृदैवतं च कुसुमं शुद्धैः शुभं तैः फलम् ।
देहे क्रूरनिपीडितेऽग्न्यनिलजं नाभ्यां भयं क्षुत्कृतं,
पुष्पे मूलफलक्षयोऽथ हृदये सस्यस्य नाशो ध्रुवम् ॥१॥
अथ शनिरपि वर्षस्याधिपं प्रागुपात्तं,
तदिह चरितमस्याभ्यस्य वाच्यो विमर्शः ।
अवहितविषय एव धीमता येन सर्वं,
शुभमशुभमपायं भावि बुद्ध्या विभाव्य ॥२॥

अथ शनिचारविचारः —

मेषस्थे भानुपुत्रे त्रिभुवनविदिते याति धान्यं विनाशं,
तृणं तैलञ्च वङ्गं हयखुरदलितं विग्रहस्तोम एव ।

रोहिणी और कृत्तिका नक्षत्र वर्षका शरीर है, पूर्वाषाढा और उत्तराषाढा वर्षकी नाभी है, आश्लेषा नक्षत्र वर्षका हृदय और मघानक्षत्र वर्षका कुसुम है । ये सब यदि शुभ हों तो शुभ फलदायक है । संवत्सर (वर्षनिर्णय) का शरीरनक्षत्र यदि पापग्रह से पीडित हो तो अग्नि और वायुका भय हो । नाभिनक्षत्र पीडित हो तो क्षुधाका भय हो । पुष्प (कुसुम) नक्षत्र पीडित हो तो मूल तथा फलका विनाश हो और हृदयनक्षत्र क्रूरग्रहसे पीडित हो तो निश्चय धान्यका विनाश हो ॥१॥ शनैश्चरवर्षका अधिपतिका प्रथम ग्रहण करना पीछे उसका चरित्रका अभ्यास और विचार करके बुद्धिमान मनका स्थिर करना चाहिए और भावि शुभाशुभ वर्षको बुद्धिसे विचारना चाहिए ॥ २ ॥

मेषराशिपर शनैश्चर हो तो धान्यका विनाश, तृण तैल और बंग सस्ता हो, घोडेके खुरसे पृथ्वी धूल हो ऐसा युद्ध (विग्रह) हो, पातालमें

पाताले नागलोके दिशि विदिशि गता भीतभीता नरेन्द्राः।
सर्वे लोका विलीनाः प्रथमगतधना याचमाना व्रजन्ति: ।३।
वैरात्तत्वाज्जनानां धनसुखहरणं सर्वदेशे महर्घं,
दुःखं वैराग्ययोगः सकलजनमनस्यन्ननाशः पशूनाम् ।
धान्यस्यैवार्द्धनाशो रसकसरहितं सर्वशून्यं जनाना-
मित्येते सर्वदेशाः परिजनविकलाः सूर्यपुत्रे वृषस्थे ॥४॥
आज्यं कार्पासलोहा लवणतिलगुडाः सर्वदेशे महर्घा,
मञ्जिष्ठा हेमनारे वृषभहयगजं सर्वधान्यं समर्घम् ।
सप्त द्वीपे समुद्रे सुखिजनसहिते सर्वसौख्यं नरेन्द्राः,
सर्वत्तौ यान्ति मेघाः सकलमुनिमतं मैथुने सूर्यपुत्रे ॥५॥
रोगा नित्यं ग्रसन्ति प्रचुरपरिभवो वित्तनाशस्तथैव,
कार्ये हानिर्विरुद्धैः सकलभयजनो देशचिन्ताविषादः ।
आरावोऽस्त्रूपपातष्टलटलपृथिवी सर्वलोकाद् विनाशः,

नागलोक में दिशा और विदिशामें राजाओं भयभीत हों और सब लोक दुःखी हों, तथा पहले इकट्ठा किया हुआ धनसे रहित होकर जहां तहां याचना करते फिरे ॥ ३ ॥ वृषराशिमें शनैश्चर हो तो मनुष्य परस्पर वैर से दुःखी, धन और सुखका विनाश, सब देशमें अन्नकी तेजी, सब मनुष्य के मनमें दुःख वैराग्य, पशुका नाश, धान्यका अर्द्ध विनाश, रस कस से हीन और सब शून्यता हो, इस तरह समस्त देशके लोग व्याकुल रहें ॥ ४ ॥ मिथुनराशिमें शनैश्चर हो तो घी कपास लोहा नमक तिल गुड ये वस्तु सब देशमे महँगे हों, मँजीठ सुवर्ण वृषभ घोडा हाथी और सब धान्य सस्ते हों, सातों ही द्वीप समुद्र तकके रहनेवाले लोग सुखी, राजाओं सब सुखी, सर्व ऋतुमें मेघ बरसे यह समस्त फल मुनियोंने कहा हैं ॥५ ॥ कर्कराशिमें शनैश्चर हो तो रोग अधिक, बहुत तिरस्कार, धनका अधिक नाश, कार्यमे हानि, मनुष्योंमें विरोध और भय, देशमें चिन्ता और विषाद,

सर्वस्मिन् राजयुद्धं पशुधनहरणं कर्कटे सूर्यपुत्रे ॥६॥
पृथ्व्यां मत्स्यमनुष्याश्वहयवृषभमै-र्युद्धदुर्भिक्षरोगैः,
पीडन्ते सर्वदेशा उदधिपुरपथे दुर्गदेशेषु म्लेच्छाः ।
म्लेच्छान्तो धान्यभावो धनसुखमवनीशोन्नयः प्रमतापः,
सर्वे ते यान्ति कालं भ्रमति युगमिदं सिंहगे सूर्यपुत्रे ॥७॥
काश्मीरं याति नाशं हयखुरदलितं विग्रहं तत्र कुर्यात्,
रसस्यं धातुरूप्यं गजहयवृषभं छागलं माहिषं च ।
मञ्जिष्ठा कुङ्कुमाद्यं रसकससहितं याति सर्वं समर्घं,
कन्यायां सूर्यपुत्रे सकलजनसुखं संग्रहः सर्वधान्यम् ॥८॥
धान्यं यात्युर्ध्वमार्गे गगरगरुभरा क्षुधपूर्णाश्च देशाः,
पृथिव्याकम्पमासा सकलमुनिवरे देहपीडापि नित्यम् ।
सर्वे ते यान्ति नाशा नरपुरनगरा-च्चयसुखाऽल्पकं च,
चक्रावर्तो जनानां सुखमपरहितः सूर्यपुत्रे तुलायाम् ॥९॥

कर्क पुत्र उसका गिरना पृथ्वी उससे दम दम हो, लोकका विनाश, राजाओंमें युद्ध पशु और धनका हरना हो ॥ ६ ॥ सिंहराशिमें शनि हो तो पृथ्वीमें पशुओंका नाश हो। सब देश हाथी घोड़ा वृषभ आदि पशुओं से युद्ध तथा दुर्भिक्ष और रोगोंसे दुःखी हों समुद्र तटके देशोंका म्लेच्छों से भय हो धान्य भाव मध्यम राजाओं पनसे सुखी तथा हंस चोर के जैसे प्रतापवाले हो व सब दुःखी होकर इस युगकालमें भ्रमण करें ॥७॥ कन्याराशिका शनि हो तो काश्मीर देशका नाश, घोड़ोंके खुरसे पृथ्वी चूर्ण हो ऐसा विग्रह हो रस धातु चांदी हाथी घोड़ा वृषभ बकरी भैंस मँजीठ कुङ्कुम आदि सब रस कसवाले हों और सस्ते हों, मनुष्योंका सुख और धान्यका संग्रह करना चाहिये ॥ ८ ॥ तुलाराशिका शनि हो तो धान्य भाव ऊंचाही बढे, पृथ्वी गगन व्याकुल, देश सब कुसम रहे, पृथ्वी कम्पायमान समस्त मुनि मार्गोंका भी सर्वदा देहपीडा हो, मनुष्य पुर नगर के

भूमीशाः क्रोधपूर्णा विषधरमुदिताः पक्षिणां सन्निपातः,
सप्त द्वीपप्रकम्पान्नरपतिमरणं यान्ति मेघा विनाशम्।
वैकल्पाद् याच्यमानाः सकलजनरिपुः सर्वकार्यं निहन्ति,
सर्वे ते यान्ति नाशं सकलगुणविवेवृश्चिके सूर्यपुत्रे ।१०।
सप्त द्वीपाः समुद्राः सकलमुनिवनं वायुपूर्णा धरित्री,
विप्रा वेदाङ्गलीना जगति जनसुखं सर्वतो याति सस्यम्।
धान्यं चारु प्रभूतं रसकसबहुल याति धान्यं प्रसारं,
सर्वेषां वा जनानां प्रहसति वदनं सूर्यपुत्रे धनस्थे॥११॥
रूप्यं ताम्रं सुवर्णं हयगजवृषभ सूत्रकर्पास मूल्यम्,
सर्वस्मिन् धान्यमात्रं भवति भुवि तले सर्वनाशश्च सस्ये।
पृथ्वीशाः क्रोधपूर्णा भवति पथिभयं सर्वरोगाद् विनाश-
श्चिन्तावस्था नृपाणां भवति सति चले सूर्यपुत्रे मृगस्थे।१२।
लक्ष्मी प्राकारसौख्यं धनकणसहितं देशसौख्य नृपाणां,

सब नाश हो, मेघ थोडा बरसे, मनुष्य सुख और धन रहित हो ॥ ९ ॥ वृश्चिकराशिका शनि हो तो राजाओं क्रोध करे, सर्प प्रसन्न हो, पक्षियोंका युद्ध, सप्त द्वीप पृथ्वीमें भूचलन हों, राजाका मरण, मेघोंका नाश, वचनों में विकल्पता, समस्त लोगमें शत्रुता, सब कार्यका विनाश, तथा समस्त गुणोंका नाश हो ॥ १० ॥ धनराशिका शनि हो तो सात द्वीप, समुद्र, और सब मुनिजनों का वन आदि समस्त पृथ्वी वायुसे पूर्ण हो, ब्राह्मण वेदाध्ययनमें लीन हों, जगत्में मनुष्योंको सुख हो, अनेक प्रकारके तृणकी उत्पत्ति तथा बहुत अच्छा धान्य हो, रसकस अधिक, श्रेष्ठ धान्य हो, सब मनुष्य प्रसन्न वदन हों॥११॥ मकरराशिका शनि होतो चांदी सोना तांबा हाथी घोडा वृषभ सूत कपास इन सबके भाव तेज हो. धान्य थोडा ही हो, पृथ्वी पर धान्य का सर्वस्व नाश, राजाओं क्रोधसे पूर्ण हों, मार्गमें भय, रोगमें प्रजाका नाश, और राजाओंको चिन्ता अधिक हो ॥ १२ ॥ कुम-

धामाधर्मौ विधत्ते सुखनिरतजनो मेघपूर्णा धरित्री ।
माङ्गल्यं सर्वलोके प्रभवति बहुशः सस्यनिष्पत्तिरूपा,
भूमीरम्या विवाहैं र्जनसुखसमयं कुम्भगे सूर्यपुत्रे ॥१३॥
पृथ्वी व्याकम्पमाना प्रचलति पवनः कम्पते नागलोकः,
सप्तद्वीपेषु सिन्धौ गिरिवरगहने सर्ववृक्षाविनाशे ।
नाशः पृथ्वीपतीनां जनपदविलयो यान्ति मेघाः प्रणाशं,
वाराधामेवमुक्तं चतुरजनमुखे मीनगे सूर्यपुत्रे ॥१४॥

गार्गीयसंहितायामपि—

व्याप्लवन्ते समुद्राः प्रचलितगगनं कम्पते नागलोकः
चन्द्रार्कौ रश्मिहीनौ ग्रहगणसहितौ वाति वातः प्रचण्डः ।
मृत्युं वा पार्थिवानां जनपदमरणं यान्ति मेघाः प्रणाशं,
चक्रावर्तं समस्तं भ्रमति जगदिदं मीनगे चार्कपुत्रे ॥१५॥

इति संक्षेपतः शनिचार

राशिमें शनि हो तो लक्ष्मीकी प्राप्ति, देशमें सुख धन धान्यसे पूर्ण राजाओं धर्माधर्मको जाननेवाले हों मनुष्यों सुखमें लीन हों पृथ्वी अन्नसे पूर्ण हो सब लोगोंमें मंगल धान्यकी प्राप्ति पृथ्वी रमणीक और विवाहादि मंगलों से पूर्ण हो ॥ १३ ॥ मीनराशिका शनि हो तो पृथ्वी कम्पायमान हो, वायु चले, नागलोक कम्पायमान हो सात द्वीप समुद्र और पर्वतोंमें वृक्षादिकों की हानि हो राजाओंका नाश देश का प्रलय और मेघ का विनाश हो, इस प्रकार चतुर मनुष्योंकी मुखमुखसे वाराहीसंहितामें कहा है ॥ १४ ॥ समुद्र क्षुब्ध हो जाय आकाश चलायमान हो नागलोक कंपायमान हो चंद्र सूर्य आदि सब ग्रह तेज हीन हों प्रचंड पवन चले राजाओंका नाश, मनुष्योंका मरण वर्षाका विनाश चक्र जैसी तरह यह जगत भ्रमण कर इस प्रकारसे मीनराशि गत शनिका फल गर्गसंहितामें भी कहा है ॥१५॥

सद्यो बोधाय गद्येन विस्तरेण निगद्यते ।
शनैः शनैः शनेश्चार–फलं शास्त्रविमर्शतः ॥ १ ॥

मेषराशौ यदा सौरिस्तदा पश्चिमायां राजविग्रहः, वस्तुमहर्घता, नृपतेर्भयः, गुर्जरगौडसौराष्ट्रेषु धान्यमहर्घता द्विगुणोऽन्नव्यापारे लाभः, छत्रभंगो राश्यर्द्धभोगात् परत उत्पातबहुला मही, तथा महीनदीपार्श्वे पीडा राज्ञामुपद्रवाः, मेघा बहवः, सप्त धान्यानि युगन्धर्यादीनि संगृह्यन्ते, मासचतुष्टयानन्तरं विक्रये द्विगुणलाभः, गुर्जरदेशेऽहिफेनगुडशर्कराखण्डगोधूमबाजरचवलाविक्रये लाभः, सुवर्णरूप्यलाभः, प्रथमं शनैश्चरः सप्तमासराशिभोगतः पश्चादुत्पातचालकः, भूकम्पगर्जितं क्वचित्, फाल्गुने उपद्रवस्तदा वस्तुमहर्घता, व्यापारे जयः, मालवदेशे घृतशर्करातैलटोपरारायण इत्येतानि महर्घाणि कटकचालकोऽष्टौ मासान् ।

इत्येतद् गौतमस्वामि–भाषितं राशिमण्डलम् ।

अनेक शास्त्रोंसे विचार कर शनैश्चर का फलको शीघ्र ही जाननेके लिए गद्यरीतिसे विस्तार पूर्वक कहा जाता है ॥ १ ॥ मेषराशि का शनि हो तो पश्चिममे राजविग्रह, वस्तु महँगी, राजाका भय, गुजरात गौड और सोरठ देश में धान्यभाव तेज, धान्य का व्यापारमे दूना लाभ, राशिके १५ अंश भोगने के पीछे छत्रभंग, पृथ्वीमे बहुत उत्पात, महीनदीके तटपर दुःखपीडा, राजाओंका उपद्रव, वर्षा अधिक, जुआर आदि सात धान्यका संग्रह करना उचित है चार मास पीछे वेचनेसे दूना लाभ हो, गुजरात देशमे अफीम गुड सक्कर खाड गेहूँ बाजरा चौला आदि वेचनेसे लाभ, सोना रूपासे लाभ, पहले शनैश्चर सातमास तक राशि भोगने बाद उत्पात चाले, कहीं भूकंप गर्जना हो, फाल्गुमें उपद्रव हो तो वस्तु तेज, व्यापारमे जय, मालवादेशमें घी सक्कर तेल टोपरा रायण (खीरी) ये तेज भाव, आठमास कटक (सैना) चाले ।

शनैश्चरप्रचारस्य ज्ञातव्य वर्षाहेतवे ॥ १॥

वृषे यदा शनिस्तदा विग्रहो दक्षिणदिशि परचक्रभयम्, वराडदेशोऽस्वस्थता , पश्चिमापतिर्दक्षिणस्यां याति, देशा उमसा अन्न महर्घ, गोधूमचणकलवणव्यापारे लाभ', सुवर्ण रूप्यपित्तलकांस्यलोहव्यापारे लाभो मासषट्क यावत्, आषा ढादिमासत्रये लाभ', आभीरदेशे युद्धं म्लेच्छहिन्दुकयो' क्षय', हिन्दुराजस्य जय ,भाद्रपदे महिषेनाल्लाभ', देव-गमदेशे विग्रह', दुर्गभङ्ग' , शनैश्चरस्य राशिभोगे पञ्चवर्षा मन्तरं वस्तुमहर्घता तन्मध्यऽऽामकस्तस्य माघमासे विक्रये लाभ । ' इत्येवु गौतमस्वामि, इत्यादि पूर्ववत् ॥ २ ॥

मिथुने शनिस्तदा पश्चिमायां दुर्भिक्षं, राजविग्रह , माल वदेशे विरोध', राशिभोगान्मासपञ्चकत' पश्चादुज्जयिन्या मुत्पात' , दुर्गभङ्ग' मासत्रयात् परं दुर्भिक्षं मासैकयावत् तता वत्सरं शुभ धान्यनिष्पत्ति पूर्वदेशे उत्पात', युद्ध

इस तरह राशिमण्डल गौतमस्वामी ने कहा, वह शनैश्चर चालनसे वर्षा के लिये जानना चाहिए ॥ १ ॥

जब वृषराशिका शनि हो तब विग्रह हो, दक्षिणदिशामें शत्रुका भय वराडदेशमें अशान्ति पश्चिमका पति दक्षिण चले जाय देशका उजाड , अमसमाव तेज गेहूँ चणा नमक के व्यापारमें लाभ सोना चांदी पित्तल कां सी लोहाके व्यापारमें छमास तक लाभ, आषाढादि तीनमास लाभ आभी रदेशमें युद्ध, म्लेच्छ और हिन्दूका विनाश, हिन्दूराजाका विजय, भादोंमें भफीमसे लाभ, देवगमदेशमें विग्रह दुर्गभंग, शनि का राशिभोगमें पाँचवर्ष बाद वस्तु महँगी उसमें भजनामन का मायमासमें बेचनेसे लाभ हो ॥२॥

जब मिथुनराशिका शनि हो तब पश्चिममें दुर्भिक्ष, राजाओंका विग्रह, मालवादेशमें विरोध राशिभोगसे पाँचमास जानेबाद उज्जयिनीमें उत्पात,

समता, लविंगकेसरएलाएरदहिंगुपानडीरेशमकथीरशुंठि एतानि महर्घाणि, क्षत्रियाणां मालवदेशे खण्डे जयः, दुर्गरोधः, उच्चवस्तुविक्रयः। 'इत्येतद् गौतमस्वामि' इत्यादिपूर्ववत्॥३॥

कर्कराशौ शनिस्तदा मेदपाटदेशे मालवसीमान्तं उद्ध्वंसता, छत्रभंगो महीपतेः, राजयुद्धं सबलं, मालपदे मुगलकटकं, तापीनदीतीरं यावद् विग्रहः परं कुशलं, दक्षिणदिशि लोकनाशः, ग्रामभंगः, श्रावणे धान्यं महर्घं, भाद्रपदे जलोपद्रवः, मेघा बहवः, आश्विने वर्षा, अहिफेन महर्घता, मासद्वये पुनः समर्घता, वस्तु महर्घं घोटकमहिषमहर्घता व्यापारे लाभः। 'इत्येद् गौतमस्वामि' इत्यादि पूर्ववत्॥ ४॥

सिंहराशौ शनिस्तदाऽन्नं सर्वत्र निष्पद्यते, जलवृष्टि बहुलता, मालवदेशे व्यापारे लाभः, राशिभोगानन्तरं मासदेशगमनं पातिसाहि चलाचलत्व परमन्नं समर्घं शाकयन्धतुल्याः

दुर्गभग, दो मासके पीछे एक मास तक दुर्भिक्ष, एक वर्षके पीछे धान्य प्राप्ति अच्छी हो, पूर्वदेशमें उत्पात, गुडभाव सम, लाग केसर ईलाईची पारा हिंगलु पानटी रेशम कथीर और सोंठ ये सब तेज, क्षत्रियोंका मालवादेशमें जय, दुर्गरोध, उच्च वस्तुका व्यापार॥ ३॥

जब कर्कराशिका शनि हो तब मेदपाटदेशमे मालवाके सीमा तक देश का विनाश, राजका छत्रभग, घोर राजयुद्ध, मालपददेशमे मोगलोंके सेनाका उपद्रव, तापीनदीके तट तक विग्रह और आगे कुशल हो, दक्षिणदिशामें लोकका नाश, गाँवका भग, श्रावणमें धान्यभाव तेज, भादोंमें जलका उपद्रव, वर्षा अधिक, आसोजमें वर्षा, अफीम तेज, दो मास पीछे सस्ता, घोडा भैंस महँगे, व्यापारमें लाभ हो॥ ४॥

जब सिंहराशि का शनि हो तब सब जगह अन्न पैदा हो, जलवर्षा विशेष, मालवादेशमें व्यापारमे लाभ, राशिभोगका एक मासके पीछे देशमें

संग्रामाः प्रतिग्रामं गुडगोधूमचणकतन्दुलशालिमसूरान्नघृतादिवस्तुव्यापार लाभः, पूर्वे सुभिक्षं परं मारिभयं सर्वदेशेषु पीडा व्याकुलता, अशुभं संवत्सरफलं मरिचशुण्ठिमुखकयाणकमहालाभं, ताम्रपित्तलमहर्घता घृततैलादिरसमहर्घता, कुंकणदेशे तृणमहिषासमर्घता मासत्रयमध्ये उपद्रवः परं राज्यसुखं कटकविग्रहः पूर्वदेशे वस्त्रलाभः सर्ववस्तु समर्घम्। 'इत्येतद् गौतमस्वामि' इत्यादि ॥५॥

कन्यायां यदा शनिस्तदा दुर्भिक्षं चतुर्दिशासु पिता पुत्रविक्रीणाति,अन्ननाशः,जलवर्षा नास्ति, मरुदेशे शिवपुर्यां द्राविडदेशे राजपीडा छत्रभंगः,शेषाः सर्वे देशाः शुभाः, अर्बुदे सुभिक्षं,शीराहीमध्येऽन्नलाभः,सर्वधान्यसंग्रहे त्रिगुणो लाभः, मासनवकं यावद् धान्यरक्षणीयं पश्चाद्विक्रयः,धातुवस्तुसमर्घं, उत्तमवस्तु महर्घं, अन्नभयं, महावृष्टिः,श्रीणि कल्याणकानि स-

गमन पाससालीनम चवविचल हो परंतु अनाज सस्ता हो शाकलेकके सदरा समझ हा प्रत्यक्ष गामर्मे गुड गेहूँ चणा चावल मसूर अनाज घी आदि वस्तु का व्यापारमें लाभ हो पहले सुभिक्ष पीछे महामारीका भय, सब देशमें पीडा व्याकुलता हो संवत्सर का फल अशुभ, मिरच सोंठ आदि क-याणकसे लाभ तांबा पित्तल तेज घी तेल आदि तेज कोंकणदेशमें तृण भेंस सस्ते मासत्रयमध्य उपद्रव परन्तु राजसुख, सैनामें विग्रह पूर्वदेश में वस्त्र लाभ सब वस्तु सस्ती ॥ ५ ॥

जब कन्याराशिपर शनि हो तब दुर्भिक्ष, चारों दिशामें पिता पुत्रको बेचे अन्न का नाश जल वर्षा न हो, मारवाड शिवपुरी और द्राविडदेशमें राजपीडा छत्रभंग हो बाकीके सब देश सुखी रहें, आबुमें सुभिक्ष, शीरोहि मध्य अन्नका लाभ सब धान्यका संग्रह से दूना लाभ। नव मास तक धान्य संग्रह करना पीछे बेचना, धातु वस्तु सस्ता, उत्तम वस्तु तेज, मालवाऽन्न

मर्घाणि । 'इत्येनद् गौतमस्वामि' इत्यादि ॥६॥

तुलाराशौ यदा सौरिः सुभिक्षं स्याच्चराचरे ।
प्रजानां सुखसौभाग्यं धनं धान्यं च सम्पदः ॥१॥

बंगालदेशे विग्रहस्तत्रैव प्रजापीडा, रोगबहुलता, कार्त्तिके महाजनत्रये कष्टं बहुलं, बंगाले उत्पातः, छत्रभङ्गः, अर्द्धराशिभोगात् परमुत्पातः, दक्षिणदिशि उपद्रवः, गोधूमचणकचोखा (चावल) मालगी कांगुणी उडिद एते महर्घाः, ज्येष्ठमासाद् विक्रये द्विगुणो लाभः,अन्ये सर्वे देशाः सुभिक्षवन्तः सुस्थाः । 'इत्येद् गौतमस्वामि'इत्यादि ॥७॥

वृश्चिके यदा शनिस्तदा हस्तिनागपुरे तद्देशे वैराटदेशे च विग्रहः, मालपदमेदपाटवागडगुर्जरसौराष्ट्रउत्तरार्द्धदेशेषु कटकचालकः, अन्नाल्लाभः, गोधूमकार्पासमसूरान्नतिलकापडादिव्यापारे लाभः, मासनवकात् परमुपद्रवः राजराणाम्ले-

---

में परस्पर विरोध, राजभय, पृथ्वीमें किञ्चिद् उत्पातादि अशुभ हो, गुड भाव सम, धान्यभाव तेज, अन्न का भय, महागपा,तीन वर्ष ,ागक वस्तु सरती ॥६॥

जब तुलाराशिका शनि हो तब जगत्मे सुभिक्ष, प्रजाको सुख सौभाग्य और धन धान्यादि सपदा हो, बंगालमे विग्रह प्रजापीडा, रोग अधिक, कार्त्तिक मे ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्यको कष्ट, उत्पात, छत्रभग, राश्यर्द्ध भोगसे पीछे उत्पात, दक्षिण दिशामें उपद्रव, गेहूँ चना, चावल मालगी कागुल और उर्द ये तेजभाव हों,ज्येष्ट मासमे बेचनेसे दूना लाभ, अन्य सब देश सुभिक्षवाले और शान्त हो ॥ ७ ॥

जब वृश्चिकराशिका शनि हो तब हस्तिनापुर और विराट देशमे विग्रह, मालवा मेदपाट वागड गुजरात सोरठ और उत्तरार्द्ध देशमे सेना का उपद्रव, अनाजमे लाभ, गेहूँ कपास मसूर अन्न तिल और कपडा आदिका व्यापारमे लाभ, नव मास पीछे उपद्रव, राजा राणा और म्लेच्छोंका परस्पर

च्छानां परस्परं युद्धं, पातिसाहिग्रह क्लेश., मालवदेशे पीडा आयान्ति, सर्ववस्तुमूल्यवृद्धिः, अहिफेनाल्लाभ., ज्येष्ठमासि वृद्धिः, अजमोदमेथी प्रमुखव्यविक्रय , रोगपात्क', वर्षा बहुला । 'इत्येतद् गौतमस्वामि'इत्यादि ॥८॥

घने शनिस्तदा सर्वत्र महघता लोकदुर्भक्ष' पिता पुत्रं विक्रीणाति, अन्ननाशः, पृथिव्यां निर्जलता, लोकः व्याकुलाः, राशिभोगात् मासपञ्चकानन्तरं फलं धान्यसंग्रहः, अहिफेना ल्लाभ', तैलतिलदाषा गोधूमचणकचोला खण्डगुडादा असालिआअजमोद मेथी घृतं एतानि वस्तूनि महघाणि । श्रावणादिमासचतुष्टये मारीपीडा राजसुखं उत्तरापथे कटकबालक । 'इत्येतद् गौतमस्वामि' इत्यादि ॥९॥

मकरे शनिस्तदाऽऽनन्द सर्वत्र सुभिक्षं राजा निर्भय आरोग्य समाधानं तथा कपूरपारदजातिफललुंगटोपराहिंगु जीरकलोभ्रमिरचसीपूतजयणमहर्घता मूल्यवृद्धिरायाद्यादि

युद्ध, पातशाही वर्गमें कलह मालवादेशमें टीडीका उपद्रव सब वस्तु के मूल्यकी वृद्धि, अफीमसे लाभ ज्यष्ठमें वृद्धि अजवाईन मेथी आदि का व्यापारसे लाभ रोग फैले वर्षा अधिक हो ॥ ८ ॥

जब धनराशिका शनि हो तब सब जगह तेज भाव, लोक दुर्भक्ष पिता पुत्रको बेचे अन्नका नाश पृथ्वी जलरहित लोक व्याकुल, राशि भोग से छमास पीछे धान्यका संग्रहमें लाभ अफीमसे लाभ, तेल तिल गहूँ चणा चावल खांड लौंग टाडा असालिआ अजवाइन मेथी घी ये सब वस्तु तेज हो श्रावणादि चार मास महामारीकी पीडा राजसुख उत्तरापथमें सैनाका उपद्रव ॥ ९ ॥

मकरराशिका शनि हो तब सब जगह आनंद और सुभिक्ष हो राजा भयरहित, रोगरहित कपूर पारा जायफल लोंग टोपरा हिंग जिरा लोभा

माससप्तकं यावद्, अहिफेन महर्घता, चोरभयं देशान्तरे महाजनपीडा, प्रथमं वर्षा भवति ततो मासमेकं न वृष्टिः महर्घता पश्चात् सुभिक्षं, लवणे मूल्यवृद्धिर्दिनानि पञ्चदश यावत्, चित्रकूटदुर्गे कटके युद्धं च मनुष्यपीडा धनहानिः शाखा प्रमाणेन, मालपददेशे रोगपीडा, प्रथमं वर्षं भयङ्करं पश्चात् शुभं देशभङ्गो राशिभोगान्ते। 'इत्येतद् गौतमस्वामि' इत्यादि।१०

कुंभे शनिस्तदा दक्षिणकुङ्कणदेशे महाविग्रहः, राजक्षय, प्रजाभयं धनप्रलयः, राशिभोगान्मासससप्तकं यावत् सर्वधान्यमहर्घता, आषाढादिमासपञ्चक यावद् 'गोधूमचंडईचिणामसूरयुगन्धरी चोखा उड़द वटलातुवरी कांगणी चउलाबाजरो' एतानि महर्घाणि, दुष्कालः, माघवृष्टिप्रबला ततो धान्यविनाशश्छत्रभंगः, फाल्गुनचैत्रतो वस्तुधान्यसंग्रहः, अनम्राजना नमन्ति, अमार्गगा मार्गयन्ति, धान्यद्विगुणलाभः। 'इत्येतद् गौतमस्वामि' इत्यादि ॥११॥

सोंप घी नमक ये महँगे हो इनकी मूल्यम वृद्धि आपाढादि सात मास तक, अफीम तेज, परदेशमे चोर भय, महाजनको पीडा, पहले वर्षा हो पीछे एक मास वर्षा न हो, पहले महँगा पीछे सुभिक्ष, नमकमे मूल्य वृद्धि पन्द्रह दिन तक चित्रगढदुर्ग मे युद्ध, मनुष्यको पीडा, धनकी हानि, मालवा में रोगपीडा, पहला वर्ष भयकर पीछे शुभ और राशिभोगके अन्तमें देशका नाश ॥ १० ॥

जब कुम्भराशिका शनि हो तब दक्षिण कुकणदेशमे बडा विग्रह, राजा का क्षय, प्रजाको भय, धनका नाश, राशिभोगमे सातमास तक सब धान्य तेज, आषाढादि पाच मास तक गेहूँ चणा मसूर जुवार चावल उर्द, वटाना, तुअरी, कागणी चौला बाजरा आदि तेजभाव दुष्काल, माघमें प्रबल वर्षा जिसमे धान्यका विनाश, छत्रभग, फाल्गुन चैत्रमे वस्तुका और धान्यका

मीने शनिस्तदा दुर्भिक्षं लोके दुर्बलता, माता पुत्रं विक्रीणाति, मालवे महर्घता, उत्पात 'कांगणी गेहूं चणा ज्वार माषगुडलवणकुसुमनालिकेरदाषरा सुंठिकपूरआतिफल' एषां मासपञ्चकात् परतो विक्रयो द्विगुणलाभ', धान्याल्लाभ', दक्षिणस्यां धान्य महर्घं मालवे राजविरोध', प्रजा वसति, धातुवस्तुमहर्घता धातुवस्तुसुवर्णरूप्यताम्रत्रपुलोह महर्घं सर्ववस्तुवाणिज्ये लाभ'। इत्येतद् गौतमस्वामि'भाषित राशिमण्डलम्। शनैश्चरमचारेण ज्ञातव्य वर्षेऽत्र वै ॥१०॥

शने' शनैश्चारफल विचिन्त्यं, राशीशमैत्रीगुणचिन्तनाद्यै'।
शुभस्य वेधोऽर्द्धफलं शने' स्यात्, क्रूरस्यवेधे कथितातिरिक्तम्॥१
देशाश्च वस्तूनि शनिस्वमित्र-राशीनि किञ्चित् परिपीडयेत।
राज्ञो रिपूणां बहुधा विनाश्य, ददाति दुःखानि रहस्यमेतत्॥२

अथ शनिफलभाषाफलम्——

संग्रह करना अभिमानी लोग नम्र हो धान्यसे दूना लाभ ॥ ११ ॥

अब मीनराशिका शनि हो तब दुर्भिक्ष, लोकमें दुर्बलता, माता पुत्रको बेच, मालवामें महँगाई उत्पात कांगणी गेहूँ चणा जुआर उर्द गुड नमक वस्त्र श्रीफल खापरा सोंठ कपूर जायफल इनका पांच मास पीछे बेचनसे दूना लाभ हो धान्यसे लाभ दक्षिणमें धान्य मांगा होय मालवामें विरोध प्रजा का वास, वस्तु तेज धातु वस्तु सोना रूपा तांबा रांगा लोहा तेज, सर्ववस्तुका व्यापारमें लाभ ॥ १२ ॥

राशिका स्वामी और ग्रह मैत्रि आदिका विचार कर शनैश्चरका चालन फल विचारना चाहिये शुभ ग्रहका वेध हो तो शनिका अर्द्ध फल और क्रूर ग्रहका वेध हो तो अनिष्ट फल है ॥ १ ॥ शनि अपनी या मित्र ग्रहकी राशिका हो तो देश और वस्तुका किञ्चित् पीडा करे यदि शत्रु राशिका हो तो बहुत विनाश और बहुत दुःख दे यह शनिका फल है ॥२॥

पूर्वाभाद्रपदा पौष्ण्यं मघा मूलं पुनर्वसु ।
पुष्यं शनिर्यदा भुंक्ते प्रयुक्तेऽकारणं रणम् ॥ १ ॥
छत्रभङ्गं देशभङ्ग-मुर्वी कुर्वीत चाकुलाम् ।
चतुष्पदां रोगयोगं शनिर्व्यसनिनो जनात् ॥ २ ॥
उत्तरात्रितय पैत्र्य रोहिणी रेवती तथा ।
शनिः श्रयति यद्यत्र भूमिकष्टं भवेत्तदा ॥ ३ ॥
मूल मघा ने रोहिणी रेवइ, हस्त पुनर्वसु जो शनि सेवइ ।
चउपद मरे दुपद संतावइ, सघली पृथवी चक्र चढावइ ॥ ४ ॥
लोके पुनः- माहमासि वक्रे शनि, तो भङ्गली सुणि वत्त ।
पश्चिम वरसे आघ हुइ, एगह मुसल तत्तः ॥ ५ ॥
श्रावणे कृष्णपक्षे च शनिर्वक्री यदा भवेत् ।
उत्पातस्तु तदा ज्ञेयो मासमध्ये न संशयः ॥ ६ ॥
श्रवणानिलहस्तार्द्राभरणीभाग्योपगः सुतोऽर्कस्य ।
प्रचुरसलिलोपगूढां करोति धात्रीं यदि स्निग्धः ॥७॥

पूर्वाभाद्रपदा रेवती मघा मूल पुनर्वसु और पुष्य इन नक्षत्र पर शनि हो तो विना कारण युद्ध हो ॥ १ ॥ छत्रभग और देशभग हो, पृथ्वी आकुल व्याकुल हो, पशुओंको और व्यसनी मनुष्योंको रोग हो ॥ २ ॥ तीनों उत्तरा मघा रोहिणी और रेवती इन नक्षत्र पर शनि हो तो भूमि पर कष्ट हो ॥ ३ ॥ मूल मघा रोहिणी रेवती हस्त और पुनर्वसु इन नक्षत्र पर शनि हो तो पशुमें अधिक मरण हो, मनुष्योंको कष्ट हो, और समस्त पृथ्वी उपद्रव वाली हो ॥ ४ ॥ यदि माघ मासमें शनि वक्री हो तो पश्चिम में मेघका उदय होकर मुसलधार वर्षा हो ॥ ५ ॥ श्रावण कृष्ण पक्षमें यदि शनि वक्री हो तो एक मास के भीतर उत्पात हो इस मे सशय नहीं ॥ ६ ॥ श्रवण स्वाति हस्त आर्द्रा और भरणी इन नक्षत्र पर शनि हो तो वहुत जलमे पूर्ण पृथ्वी होती है ॥ ७ ॥

अथ शनिभोगादिनफल या सप्तमजिह्वा—

शनिर्भं दिनभे यावत् तदङ्कं सप्तभिर्भजेत् ।
धनं वातं तथा युद्धं दुर्भिक्षं छत्रपातनम् ॥८॥
शून्यता रौरवं प्रोक्तं फलं शेषं विचक्षणैः ।
एता मत्साप्यग्निजिह्वा यमजिह्वा प्रकीर्तिता ॥९॥
पाठान्तर—सूर्यभादिनभं यावत् सप्त भागे जल कलि ।
रोगोऽग्निर्वायु पशु-पीडा दुर्भिक्षकृच्छनि ॥१०॥

अथ शनरूदयविचार ।

मेषे शनेरुदयने जलवृष्टिरुर्वी ,
सौख्यं जने वृषभगः तृणकाष्ठकष्टम् ।
अश्वेषु रोगकरणं च महर्घमिक्षु —
जन्यं गुडादि मिथुनेऽतिसुभिक्षमेव ॥ ११ ॥
वृष्टिनं कर्कगुहगे सरसा च दाप ,
सर्वत्र मारिभयमाशु जनऽतिपीडा ।
तिड्डागमः क्वचन सिंहगते शिशुर्मा ,

शनिनक्षत्रका दिननक्षत्रमें जोड़ कर सातसे भाग देना शेष बचे उसका क्रमसे फल कहना— धनप्राप्ति वायु अधिक युद्ध, दुष्काल छत्रभंग, शून्यता और दुःख ऐसा फल विद्वानोंने कहा है । इस सातोंको अग्निजिह्वा या यमजिह्वा कहते हैं ॥८-९॥ पाठान्तरसे सूर्यनक्षत्र से दिननक्षत्र तक गिनकर सातसे भाग देना शेष बचे उसका फल कहना— वर्षा कलह, रोग, अग्नि वायु पशुपीडा और दुर्भिक्ष कारक हो ॥ १ ॥

मेषराशिमें शनिका उदय हो तो जलवर्षा और मनुष्योंमें सुख हो । वृषराशिमें शनिका उदय हो तो तृण काष्ठका कष्ट, घोडाओं में रोग और इक्षु (गन्ना) से उत्पन्न होनेवाली गुड आदि वस्तु महँगी हो । मिथुनराशि में शनिका उदय हो तो अधिक सुभिक्ष हो ॥ ११ ॥ कर्कराशिमें शनि

नाशः प्रकाशनमधार्मिकशासनस्य ॥ १२ ॥
कन्याशनेरुदयनः किल धान्यनाशः,
पृथ्वीशसन्धिरतुलस्तुलया न वर्षा ।
गोधूमवर्जितमही तदसौ फलं स्या-
दस्वस्थता धनुपि मानुपजातिरोगम् ॥ १३ ॥
स्त्रीणां शिशोश्च विपदोऽखिल धान्यनाशः,
सौरेर्मृगेऽभ्युदयने नृपयुद्धबुद्धिः ।
नाशश्चतुष्पदकुले कलशेऽथ मीने,
दीने जने ननु शनेरुदयान्न धान्यम् ॥ १४ ॥

अथ शनेरस्तविचार —

मेपेऽस्तं गमने शनेर्भुवि जने धान्य सहर्घं वृषे,
सर्वत्रापि गवादिपीडनमहो पण्यांगना मैथुने ।
दुःखार्त्ता पथि कर्कटे रिपुभयं कार्पासधान्यादिपु,

का उदय हो तो वर्षाका अभाव, रसों में शुष्कता, सब जगह महामारी का भय, मनुष्योंमें अतिपीडा और कहीं टीड्डीका आगमन हो। सिंहराशिमें शनि का उदय हो तो बालकोंका नाश और राजाका अधर्मशासन प्रगट हो ॥ १२ ॥ कन्याराशिमें शनिका उदय हो तो धान्यका नाश और पृथ्वीमें संधि हो। तुला और वृश्चिकराशिमे शनिका उदय हो तो वर्षा न बरसे, गेहूँ आदिसे रहित पृथ्वी हो। धनराशि में शनि का उदय हो तो अस्वस्थता, मनुष्य जातिमें रोग ॥ १३ ॥ स्त्री और बालकको दुःख, समस्त धान्य का नाश हो। मकरराशिमे शनिका उदय हो तो राजाओं में युद्ध करने की बुद्धि हो और पशुओंका नाश हो। कुंभ और मीनराशिमे शनिका उदय हो तो मनुष्योंमे दीनता और धान्य न हो ॥ १४ ॥

मेपराशिमे शनिका अस्त हो तो पृथ्वीमें धान्यभाव तेज हो। वृषराशिमें शनिका अस्त हो तो सर्वत्र गौ आदि को पीडा। मिथुनराशिमें वेश्या

दौर्लभ्यं जलदेष्ववर्षणविधिः सिंहे तुरङ्गव्यथा ॥१५॥
धातूनां च महर्घतामविगमः कन्यास्थितावप्यतो,
लोकेऽन्येऽपि तुलाधरेन सततं निष्पत्तिरामन्दतः ।
भल्ये धान्यमलौ जने नृपभयं पीडापि तीडादिजा,
चापे लोकसुखं मृगेऽपि पवनेऽनावृष्टिनारीमृतिः ॥१६॥
कुंभे शीतभयं चतुष्पदपरिग्लानिश्च हानिर्गवां,
मीने हीनतया धनस्य न जलं क्वापीह वापीस्थले ।
सन्तापी नृपतिः स्वधर्मविमुखः पापी जनः पीडया,
मन्दमन्दसमन्दभूपतिरणो मन्देऽस्तमप्याश्रिते ॥१७॥
कन्यायां मिथुने मीने वृषे धनुषि वा स्थितः ।
शनिः करोति दुर्भिक्षं राज्ञां युद्धं परस्परम् ॥१८॥
आग्नेयेऽपि च वायव्ये वारुणे वा महेन्द्रके ।
चक्रे शनिमण्डले स्यात् फलं देशेषु तादृशम् ॥१९॥

को दुःख हो । कर्कराशिमें शनुका भय करास धान्यादि दुर्लभ, बादलोंसे जल न बरसे । सिंहराशिमें घोड़ोंको दुःख हो ॥१५॥ धातुभाव तेज और धनाजका अभाव । कन्याराशिमें शनिका अस्त हो तो दूसरे लोकमें भी विनाश हो । तुलाराशिमें सर्वत्र आनंद हो, धान्य थोड़ा हो । वृश्चिकराशिमें मनुष्योंमें राजाका भय टीड़ी आदिकी पीड़ा । धनराशिमें शनि अस्त हो तो लोकमें सुख हो । मकरराशिमें पवन अधिक, अनावृष्टि और स्त्रियोंकी मृत्यु अधिक हो ॥१६॥ कुंभराशिमें शीतका भय, पशुओंमें ग्लानि और गौओंकी हानि हो । मीनराशिमें शनिका अस्त हो तो वर्षाकी हानि होनेसे कोई बावड़ी में भी पानी न मिले राजा अपने धर्मसे विमुख तथा दुःख देनेवाले हों मनुष्य पीड़ा से पापी हो और राजाओंमें युद्ध हो ॥१७॥

कन्या मिथुन मीन वृष और धनु इन राशि पर शनि हो तब दुष्काल तथा राजाओंमें परस्पर युद्ध हो ॥१८॥ आग्नेय वायव्य वारुण और महेन्द्र

अथ शनिनक्षत्रफलज्ञानाय कूर्मापरनामक पद्मचक्र प्रागुक्त तस्य विवरणम्—

आकाशोपरि वायुर्घनोदधिस्तदुपरि प्रतिष्ठानः ।
तस्मिन्नुदधौ पृथिवी प्रतिष्ठिताधिष्ठिता जीवैः ॥१॥
कठिनतया वृत्ततयाऽष्टदिग् विभागेन पद्मिनी ।
पृथिवी उदधेर्मध्यभवत्वाद् भूचक्रं पद्मिनीचक्रम् ॥२॥
जलधिशयत्वात् कूर्मोऽप्यसौ निवेद्या परैर्द्विजन्माद्यैः ।
सर्वंसहापि वज्रादि-काण्डयोगेन कठिनतरा ॥३॥
इवादीनामप्रयोगा-दुपमापि च रूपकम् ।
भ्रममूलमलङ्कार-स्तेषां जज्ञे धियान्ध्यतः ॥४॥
ऐन्द्रीबुद्धिः पयोवाहे रामादौ भुवनेशधीः ।
दुष्टे जने दैत्यमति-रुपचारेऽपि तात्त्विकी ॥५॥

इन चार मण्डलोंमें शनि वक्री हो तो इनके नामसदृश देशमें फल होता है ॥७६॥

आकाशमें सर्वत्र तनवात और घनवात रहा हुआ है, उसके ऊपर घनोदधि नामका वायुमिश्रित जल है और उसके ऊपर पृथ्वी ठहरी हुई है यही जीवोंका आधार है ॥ १ ॥ वह पृथिवी कठीन और गोल है, उसका आकार आठ दिशाओंकी अपेक्षासे आठ पाखडीवाले कमलके सदृश होता है। कमल उदधि (समुद्र) में होता है और पृथिवी भी घनोदधि (वायु मिश्रित सघन जल)में है इसलिये भूचक्रको पद्मिनीचक्र कहा जाता है ॥२॥ किसीके मतसे पद्मिनीचक्रको कूर्मचक्र भी कहते है, क्योंकि कूर्म (कछुवा) भी वज्रदंडके जैसे कठिन, सब सहन करनेवाला और जलधिशायी (जलाशयमें रहनेवाला) है ॥ ३ ॥ 'इव' आदि शब्दोंका प्रयोग नहीं करने से उपमा और रूपक भी भ्रममूलक है और बुद्धिका विपर्ययसे अलंकाररूप हो जाते हैं ॥ ४ ॥ जैसे मेघमें इन्द्रकी कल्पना, राम आदिमें जगदीश्वरकी कल्पना, दुष्ट पुरुषोंमें दैत्यकी कल्पना और उपचारसे भी तात्त्विक कल्पना करना ॥ ५ ॥ तथा अर्हन्तोंकी प्रतिमामें कछुवा बनाना या उसके उपर

विम्बस्थानेऽर्हतां सम कूमनामापि लिख्यत ।
नागेन्द्र' शेषनामापि तस्यैवाधे' प्रतिष्ठित ॥६॥
महाशिरा महीपाल प्रागभूच्छूकरानन' ।
अन्यायात् पृथिवीखण्डं प्राप्यमान महाब्धिना ॥७॥
ररक्ष रक्षसां नाशात् कृत्वा वाराहविद्यया ।
तादृग्रूपं दंष्ट्रयैवो-द्धरणेन सुखस्तदा ॥८॥
ततो मिथ्यादृशामेषा निर्निमेषा व्यजृम्भता ।
मनीषा यन्महाहेण दंष्ट्राग्रेण धृता मही ॥९॥

गुर्जरदेशेषु सकलमेषमासाधाम्—

कूर्मचक्र प्रवक्ष्यामि यदुक्तं कौशलागम ।
येन विज्ञानमात्रेण ज्ञायते देशनिर्णय' ॥१०॥
त्रयस्त्रिंशत्कोटिदेवा' कूर्मकदेशवासिन' ।
सुमेरु पृथिवीमध्ये श्रूयते न च दृश्यते ॥११॥
तादृशा' पर्वताश्चाष्टौ सागरा द्वीपदिग्गजा' ।
सर्वेते बिधृता भूम्या सा धृता येन सोऽस्त्र क' ॥१२॥

शेषनाग का स्थापन करना ॥ ६ ॥ पहले शूकर के मुखवाला महाशिर नामक नृपति हुआ था उसने अन्यायसे समुद्रसे बहती हुई पृथिवी का रक्षण किया ॥ ७ ॥ तथा वाराही विद्यासे वाराह सदृशरूप करके तथा राक्षसोंका नाश करके दांतसे पृथिवीका उद्धार किया ॥८॥ इसलिए अन्य दर्शनीयोंका ज्ञान मिथ्या है कि वाराहने दांतके अग्रभाग पर पृथिवीको धारण किया ॥ ९ ॥

जैसा आगममें कहा है वैसा कूर्मचक्रको मैं कहता हूँ जिसके जानने से देशका शुभाशुभ फल मालुम पड़ता है ॥ १० ॥ तेतीस कोटि देवता कूर्मके एक देशमें रहे हुए है पृथिवीके मध्य भागमें मेरु पर्वत है, ऐसा सुना जाता है मगर देखनेमें नहीं आता ॥ ११ ॥ ऐसे मेरु पर्वत आठ

दंष्ट्रायां सा वराहेण विधृतास्ति वसुन्धरा ।
मुस्ताखननतो यस्यां शोभते मृत्तिका यथा ॥१३॥
ईदृशोऽपि महाकायो वाराहः शेषमस्तके ।
तस्य चूडामणेरूर्ध्वे संस्थितो मशकोपमः ॥१४॥
एवंविधः स शेषोऽपि कुण्डलीभूय संस्थितः ।
कूर्मपृष्ठैकभागेन सूत्रे तन्तुरिवाबभौ ॥१५॥
वपुः स्कन्धः शिरः पुच्छं मुखांघ्रिप्रभृतीनि च ।
माने मानेन कूर्मस्य कथयन्ति च तद्विदः ॥१६॥
क्रोशः शतसहस्राणि योजनानि वपुः स्थितम् ।
तदर्द्धेन भवेत् पुच्छं पुच्छार्द्धेन तु कुक्षिके ॥१७॥
ग्रीवा चायुतकोटिस्था मस्तकं सप्तकोटिभिः ।
नेत्रयोरन्तरं तस्य कोटिका प्रमाणतः ॥१८॥
मुख कोटिद्वयं तस्य द्विगुणेन तु पादयोः ।

हैं वैसे सागर (समुद्र) और द्वीप भी आठ आठ हैं वे सब पृथिवी पर हैं, ॥१२॥ ऐसी पृथिवी को वराहावतारने दांतके अग्रभाग पर ऐसे धारण किया है, जैसे वराह मुस्ता (नागरमोथा) खोदनसे दांत पर मिट्टी शोभती है ॥१३॥ इतना बड़ा शरीरवाला वराह शेषनागके मस्तक पर मशक (मच्छर) के सदृश रहा हुआ है ॥ १४ ॥ इस प्रकार वह शेष नाग भी वर्तुलाकार (गोल) होकर रहा है, जिनमें कि कूर्मके पीठके एक भागमें ऐसा शोभता है जैसे सूतमें रहा हुआ तनु शोभा पाता है ॥१५॥ उसका माप, कूर्म का शरीर स्कन्ध मस्तक पुच्छ मुख और चरण आदिके मानसे ज्योतिर्विदोंने इस प्रकार कहा है— ॥१६॥ उनका एक लाख योजनका शरीर है, शरीर से आधा पुच्छ है, पुच्छ से आधा पेट है ॥ १७ ॥ दश हजार करोड योजन लंबी ग्रीवा (गला) है, सात करोड योजनका मस्तक है, दोनों नेत्रों का अंतर एक करोड योजनका है ॥ १८ ॥ दो करोड योजनका मुख है,

अङ्गुलीनां भवाप्ते तु योजनाऽयुतसंख्यया ॥१९॥
एवं कूर्मप्रमाणं च कथितं चार्घ्यामले ।
तस्योपरि स्थिता चेयं सप्तद्वीपा वसुन्धरा ॥२०॥
कूर्माकारं लिखेच्चक्रं सर्वावयवसंयुतम् ।
पूर्वभागे मुखं तस्य पुच्छं पश्चिममण्डले ॥२१॥
पूर्वापरं लिखेच्चैव वेध वा दक्षिणोत्तरम् ।
ईशानरक्षसोर्वेधं वेधमाग्नेयमारुतम् ॥२२॥
नाभिशीर्षचतुष्पाद पुच्छकुक्षिषु संस्थिते ।
ताराश्रयाङ्के चैतस्मिन् सौरिं यत्नेन चिन्तयेत् ॥२३॥
कृत्तिका रोहिणी सौम्यं कूर्मनाभिगतं त्रयम् ।
पृथिव्यां मिथिला चम्पा कौशाम्बी कौशिकी तथा ॥२४॥
अहिच्छत्रं गया विन्ध्या अन्तर्वेदिश्च मेखला ।
काम्यकुब्ज प्रयागश्च मध्यदेशोऽयमुच्यते ॥२५॥

चार करोड योजनका पाद (पैर) है दश हजार योजनके अंगुलियोंके मध्य है ॥ १९ ॥ इस तरह कूर्मका प्रमाण चार्घ्यामल शास्त्र में कहा है, उस के ऊपर सप्त द्वीपवाली पृथिवी रही हुई है ॥ २ ॥ सब अवयवों वाले कूर्मके आकार सदृश चक्र बनाना चाहीए, उसका पूर्वमें मुख तथा पश्चिम में पुच्छकी कल्पना करनी चाहिये ॥२१॥ पूर्व और पश्चिम उत्तर और दक्षिण ईशान और नैऋत्य, अग्नेय और वायव्य इन दिशाओं में अन्योन्य वेध होता है ॥२२॥ नाभि, मस्तक, चार पैर, पुच्छ और दोनों कूखोंमें कृत्तिकादि तीन तीन नक्षत्र लिखकर शनैश्चरका विचार करना चाहिए ॥ २३ ॥

कूर्मकी नाभि (मध्य) भागमें कृत्तिका रोहिणी और मृगशिर ये तीन नक्षत्र लिखना चाहिए और पृथ्वीके मध्यभागमें मिथिला चंपा कौशांबी, कौशिकी प्रदेश ॥ २४ ॥ तथा अहिछत्र गया, विन्ध्याचल अंतर्वेदी (प्रयाग से हरिद्वार तक गंगा यमुना का मध्य प्रदेश), मेखला (नर्मदा प्रदेश), का-

रौद्रं पुनर्वसुः पुष्यं कूर्मशिरसि संस्थितम् ।
रामाद्रिर्हस्तिबन्धश्च पञ्चतालश्च कामरुः ॥२६॥
घरेलीसरयूर्गङ्गा पूर्वदेशोऽयमुच्यते ।
आश्लेषा च मघा पूर्वा आग्नेयपादगोचरे ॥२७॥
अङ्गवङ्गकलिङ्गाख्या पञ्चकूटं च कौशलाः ।
डाहलाश्च जलेन्द्रश्च हुगलीवल्लभेश्वरम् ॥२८॥
उड्डीशारयस्तिलङ्ग—श्चाग्निदेशोऽयमुच्यते ।
उत्तरा हस्तश्चित्रा च त्रयं दक्षिणकुक्षिगम् ॥२९॥
दर्दुरं च महीध्वं च वनं सिंहलमण्डलम् ।
तापी भीमरथी लंका त्रिकूटो मलयाचलः ॥३०॥
स्वातिर्विशाखा मैत्रं च पादैर्नैर्ऋतिगोचरे ।
नाशिक्यं वगलाणां च धृतमालवकस्तथा ॥३१॥
वुल्लीतला प्रकाशं च भृगुकच्छं च कुंकणम् ।

न्यकुब्ज (कन्नोज) और प्रयाग ये देश है, इन सबको मध्यदेश कहते है ॥२५॥ आर्द्रा पुनर्वसु और पुष्य ये तीन नक्षत्र कूर्मके मस्तक पर लिखना चाहिए । रामाद्रि, हस्तिबँध, पचताल, कामरु ॥ २६ ॥ बरेली, सरयू नदी और गगा ये पूर्वदेश हैं । आश्लेषा मघा पूर्वाफाल्गुनी ये तीन नक्षत्र कूर्मके आग्नेयपाद पर लिखना चाहिए ॥ २७ ॥ और अग, वग, कलिग, पंचकूट, कौशल, डाहल (त्रिपुर नामका देश), जलेन्द्र, हुगली, वल्लभेश्वर ॥२८॥ उडीसा, और तैलग ये अग्निदिशाके देश है । उत्तराफाल्गुनी हस्त और चित्रा ये तीन नक्षत्र कूर्मकी दक्षिण कुक्षि (बगल) में लिखना॥ २९ ॥ दर्दुर, महीध्वन, सिंहलदेश, तापी, भीमरथी, लंका, त्रिकूट, मलयाचल, ये दक्षिणदेश है ॥ ३० ॥ स्वाति विशाखा और अनुराधा ये तीन नक्षत्र नैर्ऋत्यपैर पर लिखना । नाशिक, वगलाण, धृतमालव ॥ ३१ ॥ वुल्ली, तला, प्रकाश भृगुकच्छ (भरूच), कुंकण, विद्यापुर और मोढेर ये देश

विघापुरस्थमोदरदेशा नश्यन्ति तादृशा ॥३२॥
ज्येष्ठा मूल पूर्वाषाढा पुच्छमण्डले च संस्थिता ।
पर्वता अर्बुदं कच्छ-मवन्तीपूर्वमालव ॥३३॥
पारसीपर्वतद्वीपौ सौराष्ट्र सैन्धवं तथा ।
जलस्थानानि नश्यन्ति आराज्य पुच्छपीडने ॥३४॥
उत्तरादित्रिनक्षत्र पादे वाम पदगोचरे ।
गुर्जरग्राममहीदेशा मरुदेशो विनश्यति ॥३५॥
जाल-धरस्तथाऽऽमीरा दिल्लीदेशादधिस्थलम् ।
मेरुशृङ्ग विनश्यन्ति ये चान्ये वायसस्थिता ॥३६॥
वारुणादित्रिनक्षत्र-मुत्तराकुक्षिसंस्थितम् ।
नेपालकीरकाश्मीर-गजनीखुरासाणकम् ॥३७॥
मथुरा म्लेच्छदेशश्च खरकेदारमण्डले ।
हिमालयश्च नश्यन्ति देशा ये चोत्तराश्रिता ॥३८॥
रेवती चाश्विनीयाम्य पादे इशानगोचर ।

नैऋत्य दिशाके देश है ॥ ३२ ॥ ज्येष्ठा मूल और पूर्वाषाढा ये तीन नक्षत्र कूर्मके पुच्छ पर लिखना अर्बुद कच्छ अवन्ती पूर्वमालवदेश ॥ ३३ ॥ पारसी (इरान देश) पर्वतद्वीप सौराष्ट्र सिंध जलस्थान और आराज्य ये पश्चिम देश है पुच्छ पीडनसे उनका नाश होता है ॥ ३४ ॥ उत्तराषाढा श्रवण और धनिष्ठा ये तीन नक्षत्र वामपैर पर लिखना । गुजरात महीदेश मरुदेश जालंधर भीर देहली उत्थिस्थल और मेरुशृंग ये वायव्य कोणके देश है उनका विनाश हो ॥३६॥ शतभिषा, पूर्वभाद्रपदा और उत्तराभाद्रपदा ये तीन नक्षत्र कूर्मकी उत्तर कुक्षि (बगल)में लिखना । नेपाल कीर काश्मीर गजनी खुरासाण ॥३७॥ मथुरा, म्लेच्छदेश खर, केदारमण्डल, हिमालय ये उत्तर प्रदेश है उनका नाश हो ॥३८॥ रेवती अश्विनी और भरणी ये तीन नक्षत्र कूर्मके ईशान पैर पर लिखना । गंगाद्वार कुरुक्षेत्र, श्रीकंठ,

गंगाद्वारं कुरुक्षेत्र श्रीकण्ठं हस्तिनापुरम् ॥३९॥
अश्वचक्रैकपादश्च गजकर्णस्तथैव च ।
एते देशा विनश्यन्ति परेऽपीशानसंस्थिता: ॥४०॥
यत्र देशे स्थितः सौरि-स्तत्र दुर्भिक्षविग्रहः ।
परदेशस्थितिः कुर्याद् विग्रहं पृथिवीभुजाम् ॥४१॥

नरपतिजयचर्याग्रन्थे पुनः—

पृथ्वीकूर्म. समाख्यातः कृत्तिकादियमान्तकः ।
देशादिस्वस्वऋक्षादि वीक्ष्य कूर्मचतुष्टयम् ॥४२॥
पूर्ववच्चक्रमालिख्य देशनामर्क्षपूर्वकम् ।
देशकूर्मे भवेत्तत्र यत्र सौरिः क्षयस्ततः ॥४३॥
नगरे नागरं धिष्ण्यं कृत्वादौ विलिखेत् ततः ।
क्षेत्रजे क्षेत्रभान्यादौ कुर्यात् कूर्मं यथास्थितम् ॥४४॥
कूर्माख्यया चक्रमवक्रबुद्ध्या,

हस्तिनापुर ॥३९॥ अश्वचक्र, एकपाद, गजकर्ण ये ईशान कोण के देश है उनका विनाश हों ॥४०॥ जिस नक्षत्र पर शनि हो उस नक्षत्र की दिशाके देश का विनाश हों, या उसमें दुर्भिक्ष पडे, विग्रह हो, परदेश स्थिति हो, और राजाओंमे परस्पर विग्रह हो ॥ ४१ ॥

कृत्तिकासे भरणी नक्षत्र तक के नक्षत्रो का पृथ्वीकूर्मचक्र कहा, उसमें अपने अपने देश आदिके नक्षत्रका विचार कर शुभाशुभ फल कहना। कूर्मचक्र विद्वानोंने चार प्रकारके माने हैं—देश नगर क्षेत्र और गृह ॥४२॥ ये चार प्रकारके कूर्मचक्रमें पूर्ववत् देशके नाम और नक्षत्र पूर्वक याने कूर्म के नक्षत्र और देश आदि मध्यके हो तो मध्यमे और दिशा विदिशाके हो तो दिशा और विदिशामें लिखना चाहिए। इसमें जिस पर शनिका वेध हो या स्थित हो उसका विनाश होता हैं ॥४३॥ कूर्मचक्रमे नगर सम्बधी नक्षत्र नगरमे और देश संबधी नक्षत्र देशमें यथास्थित लिखना चाहिये ॥४४॥ विद्वान जन कूर्मनामके चक्र

शनैश्चरैकार्दु विबुधोऽधिगम्य ।
शुभाशुभं देशगतं मनीषी,
जानाति पद्माकृतिनामतः स्यात् ॥४५॥
॥ इति कूर्मचक्रविवरणम् ॥

अथ राहुविचार ।

राहुमाहुरिह वार्षिकमीशं, पूर्वजा हि सुधयः विपश्चितः ।
तेन तस्य भुवि चारविचार, क्रमशः परिविमृश्य विचारम् ॥१॥
मीनमेषगते राहौ सुभिक्षं राजविग्रहम् ।
तुलाकुम्भे महावृष्टि-र्महर्घं मकरे वृषे ॥२॥
धनुर्वृश्चिकयो राहौ प्रजायेत प्रजाक्षयः ।
ईतयोऽनीतयो राज्ञां घोरचोरभयं पथि ॥३॥
दुर्भिक्षं सिंहगे राहौ कर्कटे नृपतिक्षयः ।
देशभङ्गच्छत्रपातो यत्र दृष्टिः शनेर्जमे ॥४॥

को सारबुद्धिसे समझ कर शनैश्चरसे देशमें होनेवाले शुभाशुभ फलादेश को जानते है। यह कूर्मचक्र पद्म (कमल) के सदृश आकारवाला है, इसलिये उसको पद्मिनीचक्र भी कहते है ॥४५॥

अच्छे भाववाले बुद्धिमान् लोग, इस राहुको वार्षिक (वर्षसंबन्धी) स्वामी कहते है इसलिये इसके विक्रमका विचार कर क्रमसे उसके चार (गति) के विचारका वर्णन करते हैं— ॥१॥ मीन या मेष राशि पर राहु हो तो सुकाल तथा राजाओंमें विग्रह हो। तुला या कुंभराशि पर हो तो वर्षा अधिक, मकर या वृषराशि पर हो तो धान्यादि महँगा हो ॥ २ ॥ धनु या वृश्चिकराशि पर राहु हो तो प्रजाका नाश करें, ईतिका उपद्रव हो, राजा कुटिल नीतिवाले हो और रास्तेमें चोरोंका बड़ा भय हो ॥३॥ सिंह राशि पर राहु हो तो दुष्काल, और कर्क पर राहु हो तो राजाका विनाश हो- जहा शनिकी दृष्टि हो वहा देशका भंग तथा छत्रभंग होता है ॥४॥ अंगल

भौमगृहे सति राहौ राजविरोधप्रजाभवनदाहौ ।
बालगणे कृतकालः शशिसुतभवनस्थिते तमसि ॥५॥
गुरुभवने द्विजपीडा रोगा बहुलाः परस्परं वैरम् ।
शुक्रगृहे विपुलं जलं समर्घतान्ने सुभिक्षं च ॥६॥
शनिभवने युद्धभयं सरोगता वस्तुनो महर्घत्वम् ।
शनिवच्छेषं वाच्यं प्रायस्तमसः प्रकृतिसाम्यात् ॥७॥

पुनर्विशेषः—

यस्मिन् संवत्सरे राहु-र्मीनराशौ प्रजायते ।
तस्मिन् मासे भयं विद्यात् प्राघूर्णिकसमागमः ॥८॥
एवं ज्ञात्वा कर्त्तव्यो यवान्नस्यातिसंग्रहः ।
संग्रहः सर्वधान्यानां लाभो द्वित्रिचतुर्गुणः ॥९॥
वर्षमेकं तु दुर्भिक्षं रौरवं परिकीर्त्तितम् ।
प्राप्ते त्रयोदशे मासे सुभिक्षमतुलं भवेत् ॥१०॥

के घरमें राहु जानेसे राजाओंमे विरोध, प्रजा तथा घरमें अग्निका उपद्रव, बुधके घरमें राहु हो तो बालकोंको कष्ट हो ॥ ५ ॥ गुरुके घरमें राहु हो तो ब्राह्मणोंको कष्ट, रोग अधिक और परस्पर द्वेष हो। शुक्रके घरमें राहु हो तो वर्षा अधिक, अन्नभाव सस्ता और सुकाल हो ॥ ६ ॥ शनिके घरमें राहु हो तो युद्धका भय रहे, रोग हो और वस्तुका भाव तेज हो। विशेष इसका फलादेश शनिकी तरह समझना, क्यों कि राहुकी और शनि की प्रकृति समान है ॥ ७ ॥

जिस वर्षमे राहु मीनराशि का हो उस महीनेमें भय हो, किसी अतिथिका आगमन हो ॥ ८ ॥ ऐसा जान कर यव आदि सब धान्योंका संग्रह करना चाहिये, इससे दूना तीगुना या चौगुना लाभ हो ॥ ९ ॥ एक वर्ष तक बड़ा दुष्काल तथा दुःख रहे, और तेरहवें मासमें खूब सुकाल हो ॥ १० ॥ जब कुंभराशि पर राहु हो और यदि उसके संग मंगल भी हो तो

कुम्भे राशौ यदा राहु-र्दैवाद् भौमोऽपि सङ्गतः ।
तदालोक्य विधातव्यः शणसूत्रादिसङ्ग्रहः ॥११॥
भाण्डानि च समस्तानि कांस्यादीनि विशेषतः ।
संगृह्यान्ते मासषट्कं विक्रेतव्यानि सप्तमे ॥१२॥
लाभश्चतुर्गुणो ज्ञेयो भौमराहुद्वयस्थितौ ।
नान्यथेति च वक्तव्यं यावद्दसुस्थितास्थितौ ॥१३॥
सैंहिकेयो यदा याति राशिं मकरनामकम् ।
तदा संवीक्ष्य कर्तव्यः पट्टसूत्रस्य सङ्ग्रहः ॥१४॥
धृत्वा मासत्रयं यावत् पट्टसूत्रं चिरं तथा ।
प्राप्ते चतुर्थके मासे लाभः स्यात् त्रिकपञ्चकः ॥१५॥
सैंहिकेयो यदा याति धनराशौ क्रमात् तत ।
महिष्यास्तदा कार्यः सङ्ग्रहो वसुधातले ॥१६॥
हयानां च गजानां च गन्धादीनां विशेषतः ।
लाभश्चतुर्गुणः प्रोक्तो मासे द्वितीयपञ्चमे ॥१७॥
वृश्चिकस्थो यदा राहु-र्दैवाद् भौमज्ञसङ्गमः ।
तदा प्राप्त्या च कर्तव्यः सङ्ग्रहो घृतवाससाम् ॥१८॥

शण और सूत्र आदि का संग्रह करना चाहिए ॥ ११ ॥ सम्पूर्ण कांसा आदि के बर्तन विशेष करके छः मासे तक संग्रह कर सातवें मासमें बेचें ॥ १२॥ इन राहु और मंगल की स्थितिमें चौगुना लाभ हो। इसमें कुछ अन्यथा नहीं है ॥ १३ ॥ जब मकरराशि पर राहु आवे तब रेशमी वस्त्र तथा सूत का संग्रह करना उचित है ॥ १४ ॥ यह वस्त्र सूत तथा चिर तीन मास संग्रह कर चौथे मासमें बचनेसे तीगुना पांचगुना लाभ होता है ॥ १५ ॥ जब धनराशि पर राहु आवे तब भैंस घोड़े हाथी और सुगंधी द्रव्य का संग्रह करनेसे दूसरे और पांचवें मासमें चौगुना लाभ हो ॥ १६ ॥ १७ ॥

जब वृश्चिकराशिका राहु हो और दैवयोगसे मंगल तथा बुध उसके

पञ्चमासान् व्यतिक्रम्य षष्ठे कार्योऽस्य विक्रयः ।
लाभश्च द्विगुणो ज्ञेयो निश्चितं शास्त्रभाषितम् ॥१९॥
तुलाराशिं यदा राहुः संस्थितः संक्रमे रवेः ।
तदा भवति दुर्भिक्षं पितुः पुत्रस्य विक्रयः ॥२०॥
वार्षिकं सङ्ग्रहं कुर्याद् व्रीहीणां च विशेषतः ।
नाणकानां तथा लोके लाभः कम्बलकांश्यतः ॥२१॥
कन्यागतो यदा राहुः सम्भवेन्मासपञ्चके ।
तदा विज्ञाय संग्राह्यं धातकीपिप्पलीद्वयम् ॥२२॥
मासमेकं च संग्राह्य धातकीपुष्पविक्रयः ।
मासद्वयान्ते पिप्पल्या लाभो भवति वाञ्छितः ॥२३॥
सिंहराशौ क्रमाद्वक्रो यदा राहुः प्रवर्त्तते ।
अवश्यं सङ्ग्रहः कार्यस्तदा चोष्येषु वस्तुषु ॥२४॥
आदौ धान्यकमादाय शुंठीमरिचपिप्पली ।

साथ हो तो कपडेका और घीका सग्रह करना चाहिये ॥ १८ ॥ पाच मास के बाद छठे मासमें बेचनेसे दूना लाभ निश्चयसे हो ऐसा शास्त्रमे कहा है ॥ १९ ॥ जब तुलाराशि का राहु सूर्यकी सक्रान्ति के दिन हो तो महा दुष्काल पडे, यहा तक कि पिता पुत्रको और पुत्र पिताको भी वेच डाले ॥२० ॥ ऐसे समय मे विशेष कर चावलों का सग्रह करना उचित है, उससे तथा कबल (ऊनीवस्त्र) और कासे से लोकमे द्रव्यका लाभ हो ॥२१॥ यदि कन्याराशि का राहु हो तो धातकी तथा पीपल ये दोनों पाच महीने तक सग्रह करना उचित है ॥२२॥ धातकी पुष्प को एक मास सग्रह कर पीछे वेचे और पीपल को दो मास पीछे वेचे तो इच्छित (मन चाहा) लाभ होता है ॥ २३ ॥ यदि सिंहराशि मे राहु वक्री हो तो चोष्य वस्तु (चूसने योग वस्तु) का सग्रह करना उचित है ॥ २४ ॥ प्रथम धनिया सोंठ मिरच पीपल जीरा लवण, कालानोन, सेंधानमक और खैर इनका इस

जीरकं लवणं सौवर्चलसैन्धवलादिकम् ॥२५॥
धृत्वा संवत्सरं यावत् षण्मासान्तेऽस्य विक्रयः ।
लाभश्चतुर्गुणस्तस्य यदि सौम्येन वेध्यते ॥२६॥
कर्कटे तु यदा राहुः स्थितस्येव महाबलः ।
अवश्यं तस्कराः सर्वे लोकपीडां प्रकुर्वते ॥२७॥
अल्पतैव भवेद् व्रीहेः समर्घं स्वर्णरूप्यकम् ।
कांस्यं ताम्रं च समर्घं षण्मासे लाभदायकम् ॥२८॥
मिथुने च यदा राहुः स्वोच्चस्थानवशात्तदा ।
घृतधान्यं समर्घं स्यान्माणिक्यानां समर्घता ॥२९॥
सैंहिकेयो यदा याति भौमग्रहनिरीक्षितः ।
वृषराशौ क्रमेणैव निधानं लभते जनः ॥३०॥
संग्रहः सर्वधान्यानां घृतं तैलं विशेषतः ।
कुंकुमं गन्धद्रव्यं च कार्पासश्च गुडस्तथा ॥३१॥
मासषट्कं च धृत्वैव विक्रेयं सप्तमे पुनः ।
ज्ञेयश्चतुर्गुणो लाभः सत्यमेव हि नान्यथा ॥३२॥

वर्षमें संग्रह करके पीछे छ महीने बाद बेचे यदि शुभग्रह (चंद्र, बुध, गुरु, और शुक्र) से राहु का वेध हो तो चौगुना लाभ हो ॥२५॥२६॥

जब कर्कराशिमें राहु सबल हो तो अवश्य चोर लोकों प्रजाको पीडा करें ॥२७॥ व्रीहि (चावल) थोडे हो सोना रूपा कांसी और तांबा ये सस्ते हों, इनका संग्रह करने से छ मासमें लाभ हो ॥२८॥ जब मिथुनराशिमें राहु उच्च स्थानमें होनेसे घी धान्य और माणिक मोती मूँगा आदि सस्ते हों ॥२९॥ यदि वृषराशिका राहु भौमकी दृष्टियुक्त हो तो लोग धन को प्राप्त करें ॥३०॥ सब धान्यका संग्रह करना विशेष करके घी तैल कुंकुम सुगंधिद्रव्य कपास और गुड इनका संग्रह छह महीनेतक करके सातवें महीनेमें बेचनेसे चौगुना लाभ निश्चयसे होता है इसमें संदेह नहीं ॥३२॥ और

कांस्यं च लाक्षा मञ्जिष्ठा शुंठीमरिचहिंगवः ।
एषां संग्रहणं कार्यं षण्मासावधिनिश्चितम् ॥३३॥
मेषराशौ यदा राहुः संस्थितश्चन्द्रसूर्ययोः ।
दैवाद् ग्रहणसंयोगे दुर्भिक्षं भवति ध्रुवम् ।३४। इतिराहुः ।

द्वादशराशिषु ग्रहणेन राहुफलम्—

उपरागो यदा मेषे पीड्यतेऽयं तदा जनः ।
काम्बोजांध्रि किराताश्च पाञ्चालाश्च तैलङ्गकाः ॥ ३५ ॥
वृषे च ग्रहणे गोपाः पशवः पथिका जनाः ।
महान्तो मनुजा ये च तेषां पीडा गरीयसी ॥ ३६ ॥
सूर्यचन्द्रमसोर्ग्रासो मिथुने च वराङ्गना ।
पीड्यन्ते वाल्हिका वत्सा (लोका) यमुनातटवासिनः ॥३७॥
कर्कटे ग्रहणे पीडा गर्दभानां च जायते ।
आभीरबर्बराणां च पीडा च महती मता ॥ ३८ ॥
सिंहे च ग्रहणे पीडा सर्वेषां वनवासिनाम् ।
नृपाणां नृपतुल्यानां मनुजानां धनक्षयः ॥ ३९ ॥

कासी लाख मँजीठ सोंठ मिर्च और हिंगु (हींग) इनका भी छः महीने तक अवश्य संग्रह करना चाहिए ॥ ३३ ॥ जब मेषराशिमें राहु हो, तब दैवयोगसे सूर्य या चन्द का ग्रहण भी हो तो निश्चयसे दुष्काल हो ॥ ३४ ॥

मेषराशिके ग्रहणमें मनुष्योंको पीडा, तथा कंबोज, अंध्र, किरात, पाञ्चाल और तैलगदेशमें पीड़ा हो ॥ ३५ ॥ वृषराशिके ग्रहणमे गोप (गौ पालक), पशु, मुसाफिर लोग और बडे लोगोंको पीडा हो ॥३६॥ मिथुनराशिमे सूर्य चन्द्रमाका ग्रहण हो तो वेश्या, वाल्हिक देशके और यमुना नदीके तट पर वसनेवाले लोगोंको पीड़ा हो ॥ ३७ ॥ कर्कराशिमें ग्रहण हो तो गर्दभों (गदहों) को तथा आभीर और बर्बरोंको बड़ी पीड़ा हो ॥ ३८ ॥ सिंहराशिके ग्रहणमें सब वनवासी दुःखी हों राजा और

कन्यायां ग्रहणे पीडा त्रिपुटाशालिजातिषु ।
कवीनां लेखकानां च गायकानां धनक्षयः ॥ ४० ॥
तुलायामुपरागे च दशार्णयकक्राह्वयः ।
मरवश्चापरान्तश्च पीड्यन्ते येऽतिसाधवः ॥ ४१ ॥
वृश्चिके ग्रहणे दुःखं सर्वजातेः प्रजायते ।
यदुम्बरस्य मन्द्रस्य चौलयौधेयकस्य वा ॥ ४२ ॥
धनोपरागश्चापि स्यात् तद्यामात्याश्च वाजिनः ।
विदेहमद्रपाञ्चाला पीड्यन्ते भिषजो विशः ॥ ४३ ॥
मकरे ग्रहणे पीडा नीचानां मन्त्रवादीनाम् ।
स्थविराणां नटानां च चित्रकृत्स्य सक्षयः ॥ ४४ ॥
कुम्भोपरागे पीड्यन्ते गिरिजा पश्चिमा जनाः ।
तस्करा शिरवाभीरा वेश्याश्च वैद्यिकाश्च ॥ ४५ ॥
मीनोपरागे पीड्यन्ते जलद्रव्याणि सागराः ।

धनवानोंका धन नाश हो ॥ ३८ ॥ कन्याराशि के ग्रहण में त्रिपुट और शालिधान्यके लागोंको पीडा हो तथा कवि लेखक और गानवालोंके धन का नाश हो ॥ ४० ॥ तुलाराशिके ग्रहणमें दशार्ण देश कामरु मरुभूमि और अपरान्त इन देशोंके लोगोंको तथा साधु जनोंका पीडा हो ॥ ४१ ॥ वृश्चिकराशिके ग्रहणमें सब जातिवालोंको पीडा हो यदुम्बर मंद्र चौल और यौधेय क्षत्रिय लोग दुःखी हों ॥ ४२ ॥ धनराशिके ग्रहणमें मंत्रिवर्ग को तथा घोडे का विदेह मद्र पांचाल देशवासी वैद्य और वैश्योंको पीडा हो ॥ ४३ ॥ मकरराशिके ग्रहणमें नीच मंत्रवादियोंका पीडा हो स्थविर (वृद्ध) और नट दुःखी हों चित्रकारका नाश हो ॥ ४४ ॥ कुंभराशिके ग्रहणमें पश्चिमदेशके पर्वतवासी लोग दुःखी हों और शिरद आभीर वेश्य और वैद्य आदि दुःखी हों ॥ ४५ ॥ मीनराशिके ग्रहणमें सागरके जलद्रव्य में पीडा हो तथा जलसे आजीविका करनेवाले मल्लाह आदि सीप और मोती तथा

जलोपजीविनो लोका भट्टाद्या ये च पण्डिताः ॥ ४६ ॥

इति राशिग्रहणेन राहुफलम्

अथनक्षत्रपीडाफलम्—

यन्नक्षत्रे स्थितश्चन्द्र-स्तत्र चेद् ग्रहणं भवेत् ।
पीडितं तद् बुधाः प्राहु-स्तत्फलं प्रोच्यतेऽधुना ॥४७॥
अश्विन्यां पीडितायां स्यान्-मुद्गादीनां महर्घता ।
भरण्यां श्वेतवस्त्रेभ्यो लाभं मासत्रये भवेत् ॥४८॥
कृत्तिकायां हेमरूप्य-प्रवालमणिमौक्तिकम् ।
सङ्गृहीतं लाभदायि मासे च नवमे स्मृतम् ॥४९॥
रोहिण्यां सूत्रकार्पास-सङ्ग्रहो लाभदायकः ।
दशमासान्तरे प्रोक्तः सोमवेधो न चेदिह ॥५०॥
मृगशीर्षेऽपि मञ्जिष्ठा लाक्षा क्षारः कुसुम्भकम् ।
महर्घं दशमासान्ते लाभदं च यथोचितम् ॥५१॥
घृतं महर्घमार्द्रायां लाभदं मासपञ्चके ।
तैलाल्लाभः पुनर्वस्वोर्मासः पञ्चकतः परम् ॥५२॥

पडित आदि पीडित हों ॥ ४६ ॥

जिस नक्षत्र पर चन्द्रमा स्थित हो उसमें यदि ग्रहण हो तो विद्वान् लोग उस नक्षत्र को पीडित मानते हैं उसका फलादेश को अब कहता हूँ ॥ ४७ ॥ अश्विनीमें ग्रहण हो तो मूंग आदि का भाव तेज हो । भरणीमें ग्रहण हो तो सफेद वस्त्रोंसे तीन मासमें लाभ हो ॥ ४८ ॥ कृत्तिकामें हो तो सोना चाँदी प्रवाल (मूंगा) मणि और मोती इनका सग्रह करनेसे नव वें महीने लाभ हो ॥ ४९ ॥ रोहिणी में हो तो सूत कपास का सग्रह करनेसे दश महीने पीछे लाभ हो, यदि चन्द्रमा वेधित न हो तो ही लाभ होता है। ॥ ५० ॥ मृगशीर्षमें हो तो मँजीठ लाख क्षार और कुसुंभ आदिका सग्रह करनेसे दश महीने पीछे उचित लाभ हो ॥ ५१ ॥ आर्द्रामें हो तो घी

पुष्ये मासैस्त्रिभिर्लाभो भवद् गोधूमसङ्ग्रहे ।
आश्लेषाया तु मुद्गेभ्यः प्राप्तिः स्यान्मासपञ्चके ॥५३॥
मघाचतुष्टये चाला चणकाः खलु तुष्टये ।
चित्रायां च युगन्धरा मासा लाभप्रदास्त्वये ॥५४॥
त्रिपञ्चनवभिर्मासैः स्वाती लाभस्तथा तथा ।
विशाखायां कुलित्थेभ्यः षण्मासे लाभसम्भवः ॥५५॥
राधायां काद्रवाल्लाभो मासैर्नवभिराप्यते ।
ज्येष्ठायां गुडखण्डाद् पञ्चमासे धनोदयः ॥५६॥
तन्दुलेभ्यस्तथा मूले पूर्वायां श्वेतकङ्गुन ।
षढायां श्रीफलात् पुण्या सर्वत्र मासपञ्चकम् ॥५७॥
श्रवणे तुवरीलाभो धनिष्ठायां तु माषतः ।
चणकेभ्योऽपि वारुण्यां तेभ्य धूमानि पीडने ॥५८॥
लाभस्त्रिमासे निर्दिष्ट मुभाभ्यां लपणादितः ।

मोंगा हो, पांचवें महीनेमें लाभ हो। पुनर्वसुमें पांच मास पीछे तेलसे लाभ हो ॥५२॥ पुष्यमें गेहूँ के संग्रहसे तीन महीने में लाभ हो। आश्लेषामें पांचवें महीनेमें मूंगसे लाभ ॥५३॥ मघा पूर्वाफाल्गुनी उत्तराफाल्गुनी और हस्त इन चार नक्षत्रोंमें संग्रह हो तो चावला और चणा आदिसे लाभ हो। चित्रामें ज्वार मुंगे आठ पीछे लाभ हो ॥५४॥ स्वातिनक्षत्रमें तीसरे पांचवें या नववें महीने में लाभ हो। विशाखामें कुलथीसे छठे महीनेमें लाभ हो ॥५५॥ अनुराधामें कोद्रव (कोदों) से नौ महीनेमें लाभ हो। ज्येष्ठामें गुड खांड आदिसे पांचवें महीने लाभ हो ॥५६॥ मूलमें चावलोंसे, पूर्वाषाढामें श्वेत (सफेद) कंगोंसे, उत्तराषाढामें श्रीफल और सुपारीसे पांचवें महीने लाभ हो ॥५७॥ श्रवणमें तुवर (अरहर) से धनिष्ठामें उड़दसे, शतभिषा और पूर्वाभाद्रपदमें चनोंसे लाभ हो ॥५८॥ उत्तराभाद्रपदमें लवणसे तीसरे महीनेमें लाभ हो। रेवती नक्षत्रमें संग्रह हो तो मूंग और उड़दसे छठे महीनेमें

मासषट्काद् भवेल्लाभो रेवत्यां मृदुमापनः ॥५९॥
प्रागुक्तोत्पातयोगेऽपि नक्षत्रफलमीदृशम् ।
ज्ञात्वैव संग्रहं यः स्याद् वश्यास्तस्याशु सम्पदः ॥६०॥

अथ केतुविचारः ।

रविमण्डलवदेवाग्नौ प्रविष्टाः केतवः सदा ।
वहन्ते तेजसा पूर्णा दृश्यन्ते ते कदाचन ॥६१॥
रविरस्ताचले प्राप्तो पश्चिमायां निरीक्ष्यते ।
यदा वह्निशिखाकार-स्तदा केतूदयो वदेत् ॥६२॥
प्रातस्तद्दर्शने लोके शिखालतारकोदयः ।
स पुच्छस्तारकः सोऽय-मित्येवोक्तिः प्रवर्त्तते ॥६३॥
जातिर्मासवशादेषा-मुत्पातान्तनिरूपिता ।
फलं यत् प्रतिनक्षत्र विचित्रं तदथोच्यते ॥६४॥
अश्विन्यामुदितः केतु-र्हन्यादश्मकपालकम् ।

लाभ हो ॥५९॥ इस तरह पहले उत्पात प्रकरणमें नक्षत्रोंके फल कहे हैं वे सब जानकर कोई संग्रह करे तो लक्ष्मी उसके वशीभूत (प्राप्त) होती है ॥ ६० ॥

केतु हमेशा रविमण्डलकी तरह अग्निमें रहते हैं, अर्थात् केतु अग्नि के समान चमकदार है और तेज करके पूर्ण है, व कभी कभी दिखाई पडते हैं ॥ ६१ ॥ सूर्य जब अस्ताचलको प्राप्त हो तब पश्चिम दिशामें देखना, यदि अग्निकी शिखाके सदृश आकार मालूम हो तो केतु का उदय कहना चाहिए ॥ ६२ ॥ उस शिखावाले तारके उदयका लोक में प्रात समय दर्शन हो तो उसे पुच्छटिया तारा कहते है ऐसी प्रथा चल रही है ॥ ६३॥ महीनेके कारणसे उसकी जाति उत्पातके अन्तसे निरूपण की गई, अब उसके प्रत्येक नक्षत्रके विचित्र विचित्र फलको कहते हैं ॥६४॥

भरण्यां च किरातेशं कृत्तिकायां कलिङ्गपम् ॥६५॥
रोहिण्यां शूरसेनेशं मृगे चौशीनराधिपम् ।
आर्द्रायां जालपाधीशं-मश्मकेशं पुनर्वसौ ॥६६॥
पुष्ये च मगधाधीशं सार्पे केरलका(कादिका)धिपम् ।
मघायामङ्गनाथं च पूर्वायां पाण्ड्यनायकम् ॥६७॥
उज्जयिन्यां नृपं हन्त्या-मुत्तराफाल्गुनीं गतः ।
दण्डकाधिपतिं हस्ते चित्रायां कुरुभूपतिम् ॥६८॥
स्वात्यां काश्मीरकम्बोज-भूपतीनां विनाशकः ।
इक्ष्वाकुकुरुलेशानां विशाखायां च घातकः ॥६९॥
मैत्रे पौण्ड्रमहीनाथं सार्वभौमं तथेन्द्रभे ।
आन्ध्रमद्रकनाथं च मूलस्थो हन्ति निश्चितम् ॥७०॥
पूर्वाषाढा काशिराज-मुत्तरा हन्ति कैकयम् ।

अश्विनीमें केतुका उदय हो तो अश्मक देशके राजाको कष्ट हो (या उसका विनाश हो) भरणीमें किरातदेशके और कृत्तिकामें कलिंग देशके राजाको कष्ट हो ॥ ६५ ॥ रोहिणीमें शूरसेन देशके राजाको मृगशिरमें उशीनर देशके राजाको, आर्द्रामें जालन्ध देशके राजाको पुनर्वसुमें अश्मक देशके राजाको कष्ट हो ॥ ६६ ॥ पुष्यमें मगधदेशके अधिपति को, आश्लेषामें केरलाधिपतिको मघामें अंगनाथको, पूर्वाफाल्गुनीमें पाण्ड्यदेश के राजाको कष्ट हो ॥ ६७ ॥ उत्तराफाल्गुनीमें उज्जयिनीके राजाको, हस्त में दण्डकदेशके पतिको चित्रामें कुरुदेशके राजाको कष्ट हो ॥६८॥ स्वातिमें उदय हो तो काश्मीर और काम्बोज देशके राजाओंको, विशाखामें इक्ष्वाकु और कुरुदेशके राजाओंको कष्ट हो ॥६९॥ अनुराधामें पौण्ड्रदेशके राजाको ज्येष्ठामें सार्वभौम (चक्रवर्ती) को कष्ट हो मूलमें आंध्र तथा मद्रदेशके राजाओंको कष्ट हो ॥ ७० ॥ पूर्वाषाढामें काशीदेश के राजाको उत्तराषाढामें कैकयदेशके राजाको, अभिजितमें शिविपर्वतदेशके राजाको, श्रवणमें कै-

धौघे शिविपत्वेदीशं श्रवणे कैकयेश्वरम् ॥७१॥
वासवे पञ्चजन्येश वारुणे सिंहलेश्वरम् ।
पूर्वभायामङ्गनाथं नैमिषेशमुभागतो ॥७२॥
रेवत्यामुदितः केतुः किराताधिपघातकः ।
धूम्राकारः सपुच्छश्च केतुर्विश्वस्य पीडकः ॥७३॥
करत्रयोवैष्णवरोहिणीषु, मृगे तथादित्ययुगाश्विनीषु ।
कुर्याच्छिशूनां नृपतेश्च चूडामन्द्योलितास्ते शिखिनो भवन्ति ॥

वाराहसहितायाम्—

शतमेकाधिकमेके सहस्रमपरे वदन्ति केतूनाम् ।
बहुरूपमेकमेव प्राह मुनिर्नारदः केतुम् ॥७५॥

केतुग्रहणविचार —

आदित्यग्रासकाले च दुर्भिक्षं प्रायसः पुनः ।

कयदेशके राजाको कष्ट हो ॥७१॥ धनिष्ठामें पाचालदेशके अधिपति को, शतभिषामें सिंहलदेशके राजाको, पूर्वाभाद्रपदमें अगदेशके राजाको, उत्तराभाद्रपदमें नैमिषदेशके अधिपतिको कष्ट हो ॥ ७२ ॥ रेवतीमें केतु का उदय हो तो किरातदेशके राजाको कष्ट हो । यदि केतु धूम्राकार और बड़ी पुच्छवाला हो तो वह जगत्को दुःख देता है ॥७३॥

हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, रोहिणी, मृगशीर्ष पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा और अश्विनी इन नक्षत्रोंमें बालकोंका तथा राजाओंका चूडा कर्म करना चाहिए, चूडाकर्मसे सस्कार किये हुए वे लोग शिखावाले होते है ॥ ७४ ॥

वाराहसहिता म कहा है कि— कोई पडित कहते है कि केतु की सख्या एकसौ एक ह, कोई कहते है कि एक हजार हैं, नारदमुनि कहते है कि केतु एकही है मगर यह एकही बहुरूपी है ॥ ७५ ॥

केतुका सूर्य के साथ ग्रहण हो तो दुष्काल हो और उस के तिथि

तद्विधिद्रव्यसाम्यानि महार्घाणि भवन्ति हि ॥७६॥
आषाढपौर्णिमामध्ये यदा पर्वत्रयं भवेत् ।
क्षितौ भवेन्महायुद्धं नृपमृत्युं समादिशेत् ॥७७॥
यत्र राशौ भवेत् पर्व, तस्य वाच्यं क्रयाणकम् ।
प्रस्फर्धं लभते मूल्यं पीड्यमानं च राहुणा ॥७८॥
लोकेऽपि—सीसे गुरुने पूछीओ ईह इस्या विचार ।
मागसिर ससिगहण हुई प्रजा करसी भार ॥७९॥
कत्तियमासे रविगहण जइ हुइ धरणिसुएण ।
जंगयगणमां विना मरे सुभटनी सेण ॥८०॥
एवं वर्षाधिपपरिणते-र्वत्सरः श्रीगुरोः स्याद्,
नक्षत्राख्यः सकलजगति वर्षबोधस्य बीजम् ।
नक्षत्रस्यापि प्रकटमहिमा वत्सरः स्वीयनाम्ना,
मत्वा तत्त्वाद् द्वयमिदमिना भाविवर्षं विचार्यम् ॥८१॥

नक्षत्र के नाम सदृश वस्तुओंका भाव तेज हो ॥ ७६ ॥ आषाढादि दो मासमें यदि तीन पर्व (ग्रहण) हों तो पृथ्वीमें बड़ा युद्ध हो और राजाओं का विनाश हो ॥ ७७ ॥ जिस राशि पर ग्रहण हो उस राशिवाली वे चीजें वस्तु बहुत महँगी हों किन्तु राहुसे पीड़ित हो तो उससे अल्प प्राप्ति हो ॥७८॥ शिष्यने गुरुको ग्रहणका विचार पूछा है— मार्गशीर्षमें चन्द्रमा का ग्रहण हो तो प्रजाके पर भार (कष्ट) रहे ॥७९॥ यदि कार्तिक मासमें सूर्य ग्रहण हो और मंगल साथ हो तो गजयुद्ध बिना सुभट (योद्धा) की सेनाका विनाश हो ॥ ८० ॥

इस प्रकार वर्षाधिपकी परिणतिसे नक्षत्रनामका बृहस्पतिका संवत्सर है वह समस्त जगत् में वर्षाबोध का बीजरूप है और अपने नाम सदृश प्रगट प्रभाववाला नाक्षत्र वर्ष है ये दोनों तत्त्वोंसे मानकर भाविवर्ष का विचार करना चाहिये ॥ ८१ ॥

इति श्रीमेघमहोदयसाधने वर्षप्रबोधग्रन्थे तपागच्छीयमहोपाध्याय श्रीमेघविजयगणिविरचिते शनैश्चरवत्सरनिरूपणनामा पञ्चमोऽधिकारः ।

अथ अयननमासपक्षादिनानिरूपणनामषष्ठोऽधिकारः ।

अयनम्—

यदि कर्कार्कसंक्रान्तौ कुजार्कशनिसौमजाः ।
अल्पनीरं रण घोरं स्यात् तदा नीचवृद्धिदः ॥१॥
मेघाधिकारे विज्ञेयं प्रथमं दक्षिणायनम् ।
ऋतवः प्रावृडाद्याश्च मासा हि श्रावणादयः ॥२॥
वारेष्वर्कार्किभौमानां संक्रान्तिर्मृगकर्कयोः ।
यदा तदा महर्घं स्या-दीतियुद्धादिकं तदा ॥३॥
कर्कार्के ससरव्यादि-वारेषु दश विंशतिः ।
अष्टार्काश्च धृतिर्द्वौ च शून्यं विश्वास्त्रयोऽथवा ॥४॥

सौराष्ट्रराष्ट्रान्तर्गत-पादलिप्तपुरनिवासिना पण्डितभगवानदासाख्यजैनेन विरचितया मेघमहोदये बालावबोधिन्याऽऽर्यभाषया टीकितः शनैश्चरवत्सरनिरूपणनामा पञ्चमोऽधिकारः ।

यदि कर्कसंक्राति के दिन मंगल रवि शनि या बुधवार हो तो थोड़ी वर्षा, घोरयुद्ध तथा नीचवृद्धि दायक हो ॥ १ ॥ मेघका अधिकारमें प्रथम दक्षिणायन वर्षादि ऋतु तथा श्रावण आदि मास जानना ॥ २ ॥ यदि मकर और कर्क संक्राति के दिन रवि शनि या मंगलवार हो तो धान्य तेज हो, ईति का उपद्रव तथा युद्ध हो ॥ ३ ॥ विश्वा साधन—कर्कसंक्रान्ति के दिन रविवार हो तो दश विश्वा, सोमवार हो तो वीस विश्वा, मंगल हो तो आठ विश्वा, बुध हो तो बारह विश्वा, गुरु और शुक्रवार हो तो अठारह, शनिवार हो तो शून्य विश्वा, किन्तु देश विशेषता से अथवा अन्य शुभग्रह का योगसे तीन विश्वा माना है ॥ ४ ॥ कहीं ऐसा भी कहा है—गुरुवार को सोलह और शुक्-

अथाऽपरमर्धं— कर्कसंक्रान्तौ रविवारे दश विंशोपका अर्घे, चन्द्रे विंशतिः, मङ्गलेऽष्टौ, बुधे द्वादश, बृं-गुरुशुक्रवारौ स-प्तदश, शनौ शून्यम, यतो देशविशेषेऽन्यस्मिन् शुभ योगे चाद्यपो विंशोपकाः।

कश्चित्—गुरौ बारस शुक्रे स्यु-रष्टादशविंशोपकाः ।
दीपालये वारवशात् केचिदाहुर्विंशोपकान् ॥५॥
दिशो नखाश्च विश्वाख्या सप्त रुद्रा नगाम्बरम् ।
सर्वविंशोपकानेवं जानीयात् कर्कसंक्रमे ॥६॥

अन्यत्र—कार्त्तिके शुक्लपक्षे च पञ्चम्यां वारयोगतः ।
अर्घं तथा च धान्यार्थं त्रीण्येतानि विचारयेत् ॥७॥
रवौ चन्द्रे कुजे सौम्ये गुरौ शुक्रे शनैश्चरे ।
दिग्विंशतीभास्वनृप-कलाष्टादश विश्वकाः ॥८॥

लौकिकास्तु— मङ्गल आठ बुधे बसि बारह,
सोम शुक्र गुरु कर अठारह।
कातकि सङ्क्रमि रवि शनि बैठा,

वार को अठारह विश्वा हैं। कोई दीवाली के दिन जो वार हो उससे विश्वा गिनते हैं ॥५॥ कर्कसंक्रान्ति के दिन रविवारादि को अनुक्रम से दश बीस तेरह सात ग्यारह सत्रह और शून्य विश्वा हैं ॥६॥ अन्यत्र कहा है कि-कार्त्तिक शुक्ल पंचमी के वार से भी विश्वा गिनना। अर्घ तथा और धान्य के लिये कर्कसंक्रान्ति दीवाली और कार्त्तिक शुक्ल पंचमी इन तीनों ही दिनों का विचार करना चाहिये ॥७॥ उन दिनों में रविवार हो तो दश सोमवार हो तो बीस, मंगलवार हो तो आठ, बुधवार हो तो सात गुरुवार हो तो सोलह, शुक्रवार हो तो सोलह और शनिवार हो तो अठारह विश्वा कहे हैं ॥८॥ लौकिक भाषामें—कर्कसंक्रांति के दिन मंगलवार हो तो आठ, बुध वार हो तो बारह, सोम शुक्र तथा गुरुवार को अठारह, शनि तथा रविवार

निश्चय सुंदरि! समो विणठो ॥९॥
शनि आइच्चइ मंगलइ जो कक्कडसंकंति ।
तीडा मूसा कातरा त्रिहुं मांहे एक हुवंति ॥१०॥
मेषकर्कमकरेऽर्कसंक्रमे, क्रूरवारसहिते जलं नहि ।
धान्यमल्पतरमेव वत्सरे, विग्रहो विपुलरोगतस्कराः ॥११॥

अथ मासा —

चैत्रे च श्रावणे मासे पञ्चजीवो यदा भवेत् ।
दुर्भिक्षं रौरवं घोरं छत्रभङ्गं विनिर्दिशेत् ॥१२॥
द्वादश्यां यदि वा कृष्णे शनिवारो यदा भवेत् ।
ततश्चतुर्दशे मासे पञ्चार्कवारसम्भवः ॥१३॥
पञ्चार्कवासरे रोगाः पञ्चभौमे भयं महत् ।
दुर्भिक्षं पञ्चमन्देषु शेषा वाराः शुभप्रदाः ॥१४॥
यदुक्तम्—एकमासे रवेर्वाराः पञ्च न स्युः शुभावहाः ।
अमावास्यार्कवारेण महर्घत्वविधायिनी ॥१५॥

हो तो निश्चयसे शून्यता हो ॥ ९ ॥ यदि कर्कसंक्रान्ति शनि रवि और मंगल वार को हो तो टीड़ी चूहा या कातरा इन तीनमें से एक का उपद्रव हो ॥ १० ॥ जो मेष कर्क तथा मकर संक्रान्ति क्रूरवारको हो तो जल न बरसे, धान्य थोड़ा, विग्रह रोग और चोरोंका बहुत उपद्रव हो ॥ ११ ॥

चैत्र और श्रावणमासमें जो पांच बृहस्पति हो तो दुर्भिक्ष महा घोर दुःख तथा छत्रभंग हो ॥ १२ ॥ यदि कृष्ण द्वादशी को शनिवार हो तो उससे चौदहवें महीने में पांच रविवार आते हैं ॥ १३ ॥ जिस मासमें पांच रविवार हों तो रोग, पांच मंगलवार हो तो भय अधिक, पांच शनिवार हो तो दुर्भिक्षता और इनसे अतिरिक्त दूसरा वार पांच हो तो शुभदायक होता है ॥१४॥ एकमासमें पांच रविवार शुभ फलदायक नहीं है । अमावास्या रविवारको हो तो अन्न महँगा हो ॥ १५ ॥ चैत्र और श्रावणमास में पांच रविवार हो तो

चैत्रे च श्रावणे मासे भवद् पञ्चकपञ्चकम् ।
दुर्भिक्षं तत्र जानीयात् छत्रनाशो न संशयः ॥१६॥
मङ्गले म्रियते राजा प्रजावृद्धिस्तु भार्गवे ।
बुधे रसक्षयो भूम्यां दुर्भिक्षं तु शनैश्चरे ॥१७॥
लोकेऽपि– पांच शनिश्चर पांच रवि, पांचे मङ्गल होय ।
चक्रि चहोड मेदिनी, जीवे विरलो कोय ॥१८॥
मासाद्यदिवसे सोम सुतवारो यदा भवेत् ।
धान्यं महर्घं त्रीन् मासान् भाविवर्षेऽपि दुःखकृत् ॥ १९ ॥
यतः–बुधश्चेत् प्रथमं वारः मघमासाद्यवासरे ।
ततः परं त्रिभिर्मासैर्महर्घं राजविड्वरः ॥२०॥
पञ्चार्कयोगे वैशाखे वृष्टिर्गर्भविनाशिनी ।
पञ्चभौमे भयं वह्नेर्वृष्टिरोधाय कुत्रचित् ॥२१॥
प्रतिपत्सर्वमासेषु बुधे दुर्भिक्षकारिणी ।

दुर्भिक्ष तथा छत्रभंग जानना इसमें संशय नहीं ॥ १६ ॥ पांच मंगल हो तो राजा का मरण हो पांच शुक्र हो तो प्रजाकी वृद्धि हो, पांच बुध हो तो पृथ्वीमें रस का क्षय हो पांच शनैश्चर हो तो दुष्काल हो ॥१७॥ लोकभाषा में भी कहा है कि—पांच शनैश्चर पांच रवि और पांच मंगल हो तो सर्व का युद्ध हो ॥१८॥ जिस महीनेका पहला दिन बुधवारसे प्रारंभ हो तो तीन महीना धान्य महँगा रहे और आगामी वर्ष भी दुःख कारक हो ॥ १९ ॥ महीनेका प्रारंभमें प्रथम बुधवार हो तो उस मास से तीन मास तक धान्य महँगा रहे और राजभय उत्पन्न हो ॥ ॥ वैशाख मास में पांच रविवार हो तो वर्षा और गर्भका विनाश हो, पांच मंगल हो तो अग्निका भय तथा कहीं वर्षा का भी रोध (रुकावट) हो ॥२१॥ बुधवार की पड़वा सब मासोंमें दुर्भिक्ष करनेवाली है, और विशेष कर यदि ज्येष्ठ मासमें हो तो

ज्येष्ठमासे विशेषेण वर्षभङ्गाय जायते ॥२२॥
चित्रास्वातिविशाखासु यस्मिन् मासे न वर्षणम् ।
तन्मासे निर्जला मेघा इति गर्गमुनेर्वचः ॥२३॥
ग्रहाणां यन्मासे ननु भवति षण्णां निवसति-
स्तदा गोलो योगः प्रलयपदमिन्द्रोऽपि लभते ।
नृपाणां नाशः स्याज्ज्वलति वसुधा शुष्यति नदी,
भवेल्लोको रंकः परिहरति पुत्रं च जननी ॥२४॥
मार्गादिपञ्चमासेषु शुक्लपक्षे तिथिक्षये ।
दौस्थ्यं वा छत्रभङ्गोऽपि जायते राजविड्वरः ॥२५॥
मार्गादिपञ्चमासेषु तिथिवृद्धिर्निरन्तरम् ।
कृष्णपक्षे तदाऽसौस्थ्यं प्रजामारिः प्रवर्त्तते ॥२६॥
मासे मासे ह्यमावास्याप्रमाणं प्रविलोक्यते ।
तिथिवृद्धौ कणवृद्धिः ऋक्षवृद्धौ कणक्षयः ॥२७॥

वर्षा का नाश करे ॥ २२ ॥

जिस महीनेमे चित्रा स्वाति और विशाखामे वर्षा न हो उस महीने में मेघ निर्जल रहे ऐसा गर्गमुनिका वचन है ॥ २३ ॥ जिस महीने मे छह ग्रह एक राशि पर हों तो वह गोल योग कहा जाता है, इसमें इन्द्र भी प्रलयपद को प्राप्त होता है, राजाओं का विनाश हो, पृथ्वी गरमी से प्रज्वलित हो, नदी सूख जाय और लोक ऐसे निर्धन हो जाय कि माता पुत्रको भी त्याग कर दे ॥ २४ ॥ मार्गशीर्षादि पाच महीनेके शुक्लपक्ष मे तिथि का क्षय हो तो अस्वस्थता छत्रभग और राजविग्रह हो ॥ २५ ॥ मार्गशीर्षादि पाच महीनेके कृष्णपक्षमे तिथिकी वृद्धि हो तो अस्वस्थता तथा प्रजामें महामारी हो ॥ २६ ॥ प्रत्येक मासका अमावास्याका प्रमाण देख, यदि उसमें तिथिकी वृद्धि हो तो धान्यकी वृद्धि और नक्षत्रकी वृद्धि हो तो धान्य का क्षय हो ॥ २७ ॥ महीनेके नक्षत्र से पूर्णिमा न्यून, समान या

मासस्तात् पूर्णिमा हीना समाना यदि वाधिका ।
समर्घं च समार्घं च महर्घं कुरुते क्रमात् ॥२८॥
पूर्णिमायाममावास्यां संलग्नस्तारकाक्षय ।
महर्घं तत्र पूर्वाषाढ् मासमध्येऽपि जायते ॥२९॥
अमावास्यां यदा चन्द्र उदयास्तं करोति चेत् ।
महर्घते तदा मासे भवेत्सर्वं समर्घता ॥३०॥
कर्कसंक्रमणे मन्दो मकरार्के बृहस्पति ।
तुलार्के मङ्गलो यर्थे तत्र दुर्भिक्षसम्भव ॥३१॥
आषाढे कार्तिके मासे फाल्गुनेऽपि च दैवत ।
जायन्ते पञ्चमीमासेतु पञ्चमासास्तदाऽशुभा ॥३२॥
अर्द्धं विदेशागमनऽप्यर्द्धं शान्तिवृष्टिम ।
मार्द्धं म्रियते दुर्भिक्षात सार्द्धमर्द्धं च तिष्ठति ॥३३॥
नक्षत्रान्तरगे सूर्य पञ्चम चन्द्रमास्थित ।
मासमध्ये महर्घस्य मदा धान्येऽस्ति निश्चयात् ॥३४॥

अधिक हो तो अनुक्रम से सस्ता समान तथा महर्घता हो ॥ २८॥ पूर्णिमा और अमावास्या में बराबर तारागण हो तो अन्त का भाग पहले से एक महिने तक महँगा हो ॥ २९ ॥ यदि चन्द्रमा अमावास्या के दिन उदय और अस्त दृष्टिगत होवे तो उस मास में निश्चय अन्न सस्ता हो ॥३० ॥ यदि कर्कसंक्रान्ति के दिन शनि मकरसंक्रान्ति दिन बृहस्पति और तुलासंक्रान्ति के दिन मंगल हो तो उस वर्ष में दुर्भिक्ष हो ॥ ३१ ॥ आषाढ कार्तिक और फाल्गुन मासमें यदि रेवती आदि पांच नक्षत्र भी जाय तो पांच मास अशुभ हो ॥ ३२ ॥ आधा भागमें अन्नभाग का नाश तो विदेश गमनमें अर्धे भागका नाश दृष्टि विनाश और अन्य भाग का नाश दुर्भिक्ष हो जाता है। इस प्रकार और भागका नाश हो पर सब भाग गल रह जाता है ॥ ३३ ॥ यदि सूर्यनक्षत्र के दिन चन्द्रमा पञ्चम हो तो एक पूर्णिमा मासपर्यन्त

रक्तमुत्पलवर्णाभं यद्याकाशं तु कार्त्तिके ।
तदा शुभं भाविवर्षं सन्ध्यायां तन्न शोभनम् ॥३५॥

यतः—कत्तियमासह गयणलो जइ रत्तुप्पलवन्न ।
तो जाणिजे भड्डुली जलहर वरसै पुन्न ॥३६॥

हीरमेघमालायां विशेषोऽपि—
कातीमासे देखिये, रविरत्तडो विथाल ।
तो जाणिजे पंडिया, वरसइ आलोमाल ॥३७॥

तुषारपतनं मार्गे पौषे हिमसमुद्भवः ।
माघमासेऽतिशीतं च फाल्गुने दुर्दिनं शुभम् ॥३८॥
फाल्गुने कालवातोऽपि चैत्रे किञ्चित्पयोदिनम् ।
वैशाखः पञ्चरूपः स्या-ज्ज्येष्ठो वर्मान्वितः शुभः ॥३९॥
मासाष्टकनिमित्तेना-मुना मासचतुष्टयम् ।
आषाढाद्यं शुभं ज्ञेयं यतो मेघमहोदयः ॥४०॥

तेज हो ॥३४॥ यदि कार्त्तिकमासमें आकाश कोपल (नवीन कोमल पत्ती) के सदृश रक्त वर्ण हो तो आगमिवर्ष शुभ होता है मगर वह सन्ध्या समय हो तो अच्छा नहीं ॥ ३५ ॥ कहा है कि - कार्त्तिक मासमें आकाश यदि कोंपल सदृश रक्तवर्ण वाला हो तो हे भडलि! वरसाद पूर्ण वरसे ॥३६॥ हीरमेघमालामें भी कहा है कि— कार्त्तिक मासमें सूर्य रक्त वर्णवाला दिखाई दे तो हे पंडित! वर्ष बहुत उत्तम जानना ॥ ३७ ॥ मार्गशीर्ष में तुषार (ओस) का गिरना, पौषमें हिम (बर्फ) का गिरना, माघमास में अत्यन्त शीत और फाल्गुनमें दुर्दिन होना शुभ है ॥३८॥ फाल्गुन में तीव्र पवन, चैत्रमें कुछ बादल, वैशाखमें पंचरूप (वायु, बादल, वर्षा, गाज और बीज) और ज्येष्ठमें गर्मी अधिक ये चिह्न हों तो शुभ जानना ॥ ३९ ॥ इन आठ मासमें कहे हुए शुभ निमित्त हों तो आषाढादि चार मास शुभ जानना, इनमें वर्षा अच्छी हो ॥ ४० ॥

चैत्रे मेघमहारम्भा वर्षस्तम्भविनाशकः ।
मूलाद् भरणीपर्यन्तं सर्वं निरभ्रं सुभिक्षकृत् ॥४१॥
चैत्रे वृष्टिकरा मेघाऽथवा मेघा सुनिर्मला ।
वैशाखे पञ्चवर्णा स्युस्तदा निष्पत्तिरुत्तमा ॥४२॥

अपरं विचार्यते–ननु चैत्रे निर्मलता शुभा साभ्रता वा तावाभ्रैत्र किञ्चित् पर्यालोचनमिति वचनम्। स्थानांगवृत्तौ 'पवनघनवृष्टियुक्ताश्चैत्र गर्भा' शुभा' सपरिवेषा' इत्यागमा च। उक्तं च लोके—

चैत्रमास जो बीज विलावे, भूरि वैशाखे केसू धावे।
जेठमास जो जाई तपनो, कुण राखे जलहर बरसंता ॥४३॥

न बादल बिना विद्युद् न भित्तीर्य निर्मलस्य बहुधा च चमात्। यत –

चैत्रमास जइ हुई निरमलो, बारमास बरसे गलगलओ।
जिहां २ बादल तिहां २ विद्याम, मानव धामनीमेलई च्यास ।४४।

चैत्रमासमें अधिक वर्षा हो तो गर्भका विनाश हो। मूलसे भरणी पर्यन्त आकाश बादल रहित निर्मल दीखे तो सुभिक्ष कारक होता है ॥४१॥ चैत्रमासमें वृष्टिकारक बादल हो या अच्छे निर्मल बादल हो और वैशाखमें पंच वर्णवाले बादल हों तो उत्तम मानना ॥ ४२ ॥ चैत्रमास निर्मल हो तथा बादल सहित हो वायु चले और कुछ वर्षा हो तो शुभ समय होता है। स्थानांगसूत्रकी वृत्तिमें पवन बादल और वर्षावाला तथा परिमंडलवाला गर्भ चैत्रमासमें शुभमाना है। लौकिक भाषामें कहा है कि–चैत्रमास में बिजली चमके वैशाखमें किंशुकपुष्पकी पुष्पिता जाय याने कमाने के इरा किंशुकपुष्पका ... जाय और ज्येष्ठमास बहुत तपे तो बहुत अच्छी वर्षा हो ॥४३॥ चैत्रमासमें बादल तथा बिजली न हो और आकाश निर्मल हो इत्यादि बहुत प्रकारके मत भेद हैं। जैसा कि– चैत्र

चैत्रे खडहडि नहुकरे, मलयपवन नहु होय ।
तो जाणे तुं भड्डली, गब्भविणास न कोय ॥४५॥

अत्रोच्यते-स्याद्वाद एव प्रमाणं, विद्युतोऽभ्राणि वा न दोषाय; जलप्रवाहे तु दोष एव महावृष्टिरूपात्। चैत्रे हि मीने सूर्ये सति विद्युदभ्रं वा उक्तमेव, यतस्त्रैलोक्यदीपके-

मीनसंक्रान्तिकाले च पौष्णभोग्यदिने भवेत् ।
यत्र विद्युच्छुभो वात-स्ततो गर्भो ध्रुवं भवेत् ॥४६॥

जलच्छटानां गर्भरूपादेव न दोषः । अथ यदि मेषे सूर्यः कदापि तत्राभ्रमप्युक्तं प्राक् । तदेवश्रीहीरसूरयोऽप्याहुः-

चित्तस्य बीय तइया चउत्थि तह पञ्चमीसु अब्भाई ।
पुव्वोत्तरवायाओ महासुभिक्खं वियाणाहि ॥४७॥

स्थानांगे घनवृष्टिरुक्ता सा तु विन्दुमात्रैव चैत्रे किञ्चित्

मास यदि निर्मल हो तो चार मास बहुत अच्छी वर्षा हो। जहा २ बादल हों वहा २ वर्षाकी हानि और मनुष्य धान्यकी आशा छोड दे ॥ ४४ ॥ चैत्रमें जलप्रवाह न चले और मलयाचल का पवन न चले, तो गर्भ का नाश न हो, ऐसा भडलीका वाक्य है ॥४५॥ यहा स्याद्वाद ही प्रमाण माना है- चैत्र में बिजली या बादल हों तो दोष नहीं, किंतु अधिक वर्षा हो कर जलप्रवाह चले तो दोष है। चैत्र मास मे मीन के सूर्य होने पर बिजली और बादलका होना श्रेय माना जाता है। जैसे त्रैलोक्यदीपकमे कहा है कि- मीन संक्रान्तिमें रेवतीनक्षत्र के भोग्य दिनों में जहा बिजली और वायु हो वहा निश्चयसे गर्भ होता है ॥ ४६ ॥ गर्भ के कारण यदि जलके छींटा गिरे तो दोष नहीं। मेषके सूर्य मे किसी समय बादल होना पहले कहा उसको श्री हीरविजयसूरि भी कहते हैं- चैत्र मास की दूज, तीज, चौथ और पचमी के दिन बादल हों और पूर्व या उत्तर दिशा का पवन चले तो बडा सुकाल जानना ॥ ४७ ॥ स्थानागसूत्र में जो वर्षा होना

यथाहितमित्युक्ते । यदुक्तम्—

घनावृष्टौ यदा माघ-चैत्रा निर्मलतां गताः ।
बहुधान्या तदा भूमि-र्वृष्टिश्चैव मनोरमा ॥४८॥

पुनरपि—

चित्तस्स कसिण पंचमी नहु वरसइ दुद्दिण पुणो ।
कुणइ गब्भिऊण उवमंमि ता पावइ सयल धन्नाणि ॥४९॥

'चैत्र च गौरिरेष्या-र्या' इत्यादिनापि वृष्टिर्लभ्यते । तथापि—

चैत्रमासे च स्वाति शुक्ले च पञ्चमी दिने ।
सप्तम्यां च त्रयोदश्यां यदा मेघः प्रवर्षति ॥५०॥
तारकापतनं चाब्द-गर्जनं विद्युता सह ।
यथाकालस्तदासक्ता नात्र कार्यविचारणा ॥५१॥
तत्र चैत्रे यथायोग्यं साभ्रता वा निरभ्रता ।
शुभाय भावमग्नाय विपरीत न सौख्यदम् ॥५२॥

तत्र एव वृष्टिनिरोधे दिननियम—

पंचमिरोहिणी सत्तमिअद्दा, नवमिपुष्फ मह पुनमचित्ता ।

मिलता है या निन्दुमात्र होना अच्छा कहा है । यदि माघ मासमें [illegible]
गता हो और [illegible] निर्मल हो तो भूमि पर बहुती वर्षा हो और धान्य
बहुत हो ॥ ४८ ॥ फिर भी कहा है कि— चैत्री कृष्ण पंचमीके दिन
वर्षा न हो [illegible] दुर्दिन हो [illegible] भूमि [illegible] सब धान्यके [illegible]
[illegible] ॥ ४९ ॥ [illegible] शुक्ल पंचमी सप्तमी और
[illegible] दिन वर्षा हो [illegible] ॥ [illegible] और बिजली [illegible]
[illegible] ॥५१॥
[illegible]
[illegible] ॥५२॥
[illegible] चैत्रमासे पंचमीके दिन

चैत्रमास वरसंता दिट्ठा, नौ सीयालु गब्भ विणट्ठा ॥५३॥
आषाढं रोहिणी हन्ति रौद्र च श्रावणं हरेत् ।
पुष्यो भाद्रपद हन्या-च्चित्राप्याश्विनमृच्छत् ॥५४॥

साभ्रता तूक्ता—

चैत्रस्य शुक्लपञ्चम्यां रोहिण्यां यदि दृश्यते ।
साभ्रं नभस्तदाऽऽदेश्या गर्भस्य परिपूर्णता ॥५५॥
वैशाखे गर्जितं भूमिः सजला पवनो घनः ।
उष्णो ज्येष्ठो विशिष्टः स्यात् किमन्यैर्गर्भचेष्टितैः ॥५६॥
खं पञ्चवर्णं वैशाखे विद्युत्पाते खटत्कृतिः ।
तदातिवर्षा नभसि धान्यनिष्पत्तिरुत्तमा ॥५७॥

अथाधिकमास.—

शाके बाणाकराङ्कके विरहिते नन्देन्दुभिर्भाजिते,
शेषाग्नौ च मधुश्च माधवःशिवे ज्येष्ठस्तु खे चाष्टके ।

रोहिणी,सप्तमी के दिनआर्द्रा,नवमीके दिन पुष्य और पुर्णिमाके दिन चित्रा वर्षता हुआ देख पडे याने उस दिन वर्षाद हो तो गर्भका विनाश हो ॥५३॥ रोहिणी युक्त पचमी के दिन वर्षा हो तो आषाढ मास में वर्षा न हो, इसी तरह आर्द्रा श्रावणमासमें, पुष्य भाद्रपदमासमें और चित्रा आश्विनमासमें वर्षाका नाश कारक है ॥५४॥ चैत्रशुक्र पचमीके दिन रोहिणी हो और उसी दिन आकाश बादल सहित देखनेमें आवे तो गर्भकी पूर्णता जाननी ॥ ५५ ॥ वैशाख में मेघ गर्जना हो, भूमि जलशाली हो, वर्षा हो, पवन चले और ज्येष्ठ मासमें अधिक गरमी पड़े तो श्रेष्ठ है ॥ ५६ ॥ वैशाख मास में आकाश पच वर्णवाला हो, बिजली गिरे, तो बहुत वर्षा हो और धान्यकी उत्पत्ति उत्तम हो ॥ ५७ ॥

वर्तमान शकसंवत्के अकोंमें से ९२५ घटा दो, जो शेष बचे उसमे १९ का भाग दो, जो तीन शेष रहे तो चैत्रमास अधिक जानना, ग्यारह शेष

आषाढो नृपतौ नभश्च शरके भाद्रश्च विश्वांशके,
नेत्रे चाश्विनकोऽधिमास उदितो शेषेऽन्यथा स्यान्नहि ॥५८॥
द्वात्रिंशत् सम्मितैर्मासैर्दिनैः षोडशभिस्तथा ।
चतुर्नाडीसमेतैश्च पतत्येकोऽधिमासकः ॥५९॥
यस्मिन् मासे सिते पक्षे पञ्चम्यामेव भास्कर ।
संक्रमत्यधिको मासः स स्यादागामि वत्सरे ॥६०॥
असंक्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटं स्याद्
द्विसंक्रान्तिमासः क्षयाख्यः कदाचित् ।
क्षयः कार्तिकादित्रये नान्यतः स्यात्,
तदा वर्षमध्येऽधिमासद्वयं च ॥६१॥

यथा संवत् १७६८ वर्षे पौषमासक्षयः, आश्विनचैत्रौ वृद्धौ । न चैवं द्वात्रिंशन् मासेभ्योऽर्वागपि मलमाससम्भव । यदा एकस्मिन् वर्षे अमावास्यान्तमासद्वये संक्रान्तिरहितत्वं स्यात्, तदा तत्रारेक एव मलमासो यो द्वात्रिंशन् मासेभ्य उप

रहे तो वैशाख, शून्य या आठ शेष रहे तो ज्येष्ठमास, सोलह बचे तो आषाढ पाच बचे तो श्रावण, तेरह बचे तो भाद्रपद और दो शेष रहे तो आश्विन अधिक मास जानना। किन्तु इन से अन्य शेष रहे तो कोई मास अधिक नहीं होता ॥ ५८ ॥ ३२ मास १६ दिन और ४ घड़ी बीतने पर अधिक मासका सम्भव होता है ॥ ५९ ॥ जिस महीनेकी शुक्ल पक्षकी पञ्चमीके दिवस सूर्यसंक्रान्ति हो वही महीना आगामी वर्षमें अधिक मास होगा ॥ ६० ॥ जिस महीनेमें सूर्यसंक्रान्ति न हो वह अधिक मास कहा जाता है । और जिसमें दो संक्रान्ति हों वह क्षय मास कहलाता है । प्रायः क्षयमास कार्तिकादि तीन महीनोंमें ही होता है और जब कभी क्षय मास होता है तो उस वर्षमें अधिक मास दो होते हैं । परन्तु यहां चान्द्र मासस गणना करना चाहिये । अर्थात् अमावास्यासे अमावास्या पर्यन्त॥६१॥

रि जायते । अपरः संक्रान्तिरहितोऽपि न मलमासः, अका-
लाधिक्यात् कालाधिकस्यैव मलमासत्वात्, पूर्वादधिमासा-
दारभ्य द्वात्रिंशन्मासादर्वाग् यः पूर्वोऽसंक्रान्तिमासः स शु-
द्धोऽन्यस्तु मलमासः ।

तस्य फलम्– दुर्भिक्षं श्रावणे युग्मे पृथ्वीनाशः प्रजाक्षयः ।
भाद्रपद्वितये धान्य-निष्पत्तिः स्याद् यथेप्सितम् ॥६२॥
आश्विनद्वितये भूम्यां सैन्यचौररुजां भयम् ।
सुभिक्षं केचनाप्याहु–र्दुर्भिक्षं दक्षिणादिशि ॥६३॥
सुभिक्षं कार्त्तिकयुग्मे क्वचिद् दुःखं रणान्नृणाम् ।
मार्गशीर्षयुगे देशे जायते परम सुखम् ॥६४॥
पौषयुग्मे सुभिक्षं च मङ्गल नृपतेर्जयः ।
राजदण्डपरो लोको लोके मतिविपर्ययः ॥६५॥
माघद्वये भुवि क्षेमं राज्यानां च भयं तथा ।
सुभिक्ष फाल्गुनयुगे क्षत्रियानां शिवं भवेत् ॥६६॥
चैत्रद्वये शुभं धान्ये वैश्यानामुदयो महान् ।

श्रावण दो हो तो दुष्काल, पृथ्वीका नाश और प्रजाका क्षय हों । दो भाद्रपद हो तो इच्छित धान्यकी प्राप्ति हों ॥ ६२ ॥ दो आश्विन हो तो सैन्य, चोर और रोगका भय हो । कोई कहते है कि सुभिक्ष हो परंतु दक्षिण दिशामें दुर्भिक्ष हो ॥ ६३ ॥ दो कार्त्तिक हो तो सुभिक्ष हो और युद्धसे मनुष्योंको दुःख हो । दो मार्गशीर्ष हो तो परम सुख हो ॥६४॥ पौष मास दो हो तो सुभिक्ष मंगल और राजाओंका जय हों । तथा लोकमें राजदंड हो और मति विपरीत हो ॥६५॥ माघ मास दो हो तो पृथ्वी पर मंगल हो और राजाओंका भय हो । दो फाल्गुन हो तो सुभिक्ष हो और क्षत्रियों को कुशल हो ॥६६॥ चैत्र मास दो हो तो शुभ है, धान्य प्राप्ति हो और वैश्योंका अच्छा उदय हों । दो वैशाख हो तो धान्य की

वैशाखयुग्मे धान्यानां निष्पत्तिरशुभं क्वचित् ॥६७॥
ज्येष्ठद्वये नृपध्वंसो धान्यनिष्पत्तिरुत्तमा ।
आषाढद्वये यथाकिञ्चित् खण्डवृष्टिः क्वचित् पुनः ॥६८॥
मासद्वयाधिके वृष्टेरेव फलमुदीरितम् ।
चैत्रादि सप्तके वृद्धि रित्येतत् प्रायिकं मतम् ॥६९॥
क्वचित्तु द्विकार्त्तिके दुःखं द्विमाघेऽप्यशुभं मतम् ।
द्विफाल्गुने वह्निभयमशुभं माधवद्वये ॥७०॥
उदये कृष्णतृतीया ततश्चतुर्थीह संक्रमो यत्र ।
तस्मादधिको मासश्चतुर्दशे मासि सम्भवति ॥७१॥

तिथिक्षयवृद्धिफलम्—

एकत्र पक्षे तिथिद्विपाते, महर्घमन्नं जनमध्यवैरम् ।
तत्पक्षनाशे मरणं नृपाणां, मासक्षये म्लेच्छवती वसुन्धरा ॥७२॥
त्रयोदशाद्भिः पक्षा भवेद् वर्षाष्टकान्तरे ।

निष्पत्ति हो और क्वचित् अशुभ हो ॥ ६७ ॥ ज्येष्ठ मास दो हो तो राजाका विनाश और धान्य की प्राप्ति उत्तम हो । दो आषाढ हो तो कुछ वर्षा और कहीं खंडवृष्टि हो ॥६८॥ इसी तरह अधिक मासका फल कहा परंतु चैत्रादि सात मास अधिक होते हैं ऐसा बहुत लोगोंका मत है ॥ ६९ ॥ क्वचित्— दो कार्तिक हो तो दुःख, दो माघ मास हो तो अशुभ, दो फाल्गुन हो तो अग्निका भय और दो वैशाख हो तो अशुभ ऐसा भी किसीका मत है ॥ ७० ॥ जिस दिन उदयमें कृष्ण तृतीया हो और पीछे चतुर्थी हो उस दिन यदि संक्रान्ति हो तो उस से चौदहवें मास अधिक मासकी संभावना होती है ॥७१॥ इति अधिक मासफल।

यदि एक ही पक्षमें दो तिथिका क्षय हो तो अन्नादि महँगे हो और लोकमें वैर भाव हो । पक्षका क्षय हो तो राजा का मरण हो और महिनाका क्षय हो तो पृथ्वी पर म्लेच्छोंका उपद्रव हो ॥ ७२ ॥ आठ वर्ष के

तदा नगरभङ्गः स्या-च्छत्रभङ्गो महर्घता ॥७३॥
मतान्तरे—अनेकयुगसाहस्र्याद् दैवयोगात् प्रजायते।
त्रयोदशदिनैः पक्ष-स्तदा संहरते जगत् ॥७४॥
यद्यन्धकारपक्षस्य त्रुटिर्मासचतुष्टये।
निरन्तरं तदा भूम्यां सुभिक्ष विपुलं जलम् ॥७५॥
सम्पत्ते वरिसकाले पढमे पक्खे वि जइ पडेइ।
तिहि तह देसभङ्ग-रोरव हवइ बहुलोगसंहारो ॥७६॥
पञ्चमी श्रावणे हीना सप्तमी भाद्रपादके।
आश्विने नवमी नेष्टा पौर्णिमासी च कार्त्तिके ॥७७॥
भाद्रपदे पौषयुगे सितपक्षे पतति या तिथिस्तस्याः।
द्विगुणादिनैर्नृपमरणं यदि वा दुर्भिक्षमतिरौद्रम् ॥७८॥
यस्मिन् मासे शुक्लपक्षे तृतीया वा चतुर्थिका।
पतेत्तदा मुद्गघृतमहर्घत्व भवेद् भुवि ॥७९॥

अन्तर में तेरह दिनका पक्ष होता है इसमें नगर का भंग, छत्रभंग और धान्यकी महर्घता हों ॥ ७३ ॥ मतान्तरसे— अनेक हजारों युग बीत जाने पर दैवयोगसे तेरह दिनका पक्ष होता है, इसमें जगत् का नाश होता है ॥ ७४ ॥ यदि चौमासेके चार मासमें कृष्णपक्षका क्षय हो तो भूमि पर सर्वदा बहुत वर्षा हो और सुभिक्ष हों ॥ ७५ ॥ यदि वर्षा कालमें प्रथम पक्ष याने शुक्लपक्षमें तिथिका क्षय हो तो देशका नाश, घोर उपद्रव और मनुष्योंका संहार हो ॥ ७६ ॥ श्रावणमें पंचमी, भादोंमें सप्तमी, आश्विनमें नवमी और कार्त्तिकमें पूर्णिमाका क्षय हो तो अनिष्ट है ॥ ७७ ॥ भाद्रपद, पौष और माघ मासमें शुक्लपक्षकी तिथिका क्षय हो तो उससे दुगुने दिनों में राजा का मरण अथवा महा घोर दुर्भिक्ष हो ॥ ७८ ॥ जिस महीने में शुक्लपक्षकी तृतीया या चतुर्थीका क्षय हो तो उस महीनेमें पृथ्वी पर मूंग और घी महँगे हों ॥७९॥ भाद्रपद पौष और माघ मासमें उपरोक्त तिथिका

माघे पौषे तथा माघे विज्ञेया महर्घता ।
यन्मासे दशमीच्छेद-स्तदा घृतमहर्घता ॥८०॥
श्वेतपक्षे प्रतिपदा पञ्चमी वा चतुर्दशी ।
वर्द्धिता चेत् सुभिक्षाय छिन्ना दुर्भिक्षकारिका ॥ ८१ ॥
चतुर्दशीन आषाढी हीना वर्षे यदा भवेत् ।
भावाभयेण महार्घ्य महर्घं च समे सम ॥८२॥
आषाढी त्वधिका तस्या समर्घं तु तदा मतम् ।
मवत्सरस्य वर्त्तिन्या शून्यमाने तु निष्कणम् ॥८३॥
चैत्राद् भाद्रपद यावच्छुक्लपक्षे यदा त्रुटि ।
तदा क्वचिदापपत्ति रल्पधान्योदय क्वचित् ॥८४॥
आर्द्रा ज्येष्ठे मष्टम्यां प्रथमायां पुनर्वसु ।
द्वितीया पुष्यसंयुक्ता जल धान्य तृण न च ॥८५॥
कृष्णपक्ष आवणस्यैकादश्यां रोहिणी च मम् ।
यावद् घटीप्रमाणं स्याद् धान्ये तावद् विशोपका ॥८६॥
आदित्याद वारगणनात प्रतिपत्प्रमुखा तिथि ।

क्षय हो तो विशेष करके महर्घता होती है । जिस मासमें दशमी का क्षय हो तो घी महँगा हो ॥८० ॥ शुक्लपक्षमें प्रतिपदा पंचमी या चतुर्दशी बढ़े तो सुभिक्ष और घटे तो दुर्भिक्ष करें ॥ ८१ ॥ जिस वर्षमें यदि चतुर्दशीसे आषाढ पूर्णिमा हीन हो तो मव महँगा हो और सम हो तो समान भाव रहे ॥ ८२ ॥ यदि अधिक हो तो मव सस्ते हो और क्षय हो तो धान्य प्रति न हो ॥८३॥ यदि चैत्रमासमे भाद्रपद तक शुक्लपक्षमें तिथि का क्षय हो तो कचित ही थोड़ी धान्य प्राप्ति हो ॥ ८४ ॥

ज्येष्ठ मासकी अष्टमी के दिन आर्द्रा, पड़वा के दिन पुनर्वसु और द्वितीयाके दिन पुष्य नक्षत्र हो तो तृण धान्य और जलका अभाव हो ॥ ८५ ॥ श्रावण मासकी कृष्ण पक्षकी एकादशीके दिन रोहिणी नक्षत्र जितनी घड़ी हो, उतने ही प्रमाण धान्य का विशोपका (विश्वा) जानना ॥८६॥

आश्विन्यादि च नक्षत्रं संमील्य द्विगुणीकृतम् ॥ ८७ ॥
त्रिभिर्भागैर्द्वयं शेषं तदा सुभिक्षमादिशेत् ।
शून्ये भवति दुर्भिक्ष-मेकशेषे शुभाशुभम् ॥ ८८ ॥
आषाढमासे प्रथमे च पक्षे, दृष्टे निरभ्रे रविमण्डले च ।
नैवाशनिर्नैव भवेच्च वर्षा, मासद्वयं वर्षति वासवस्तु ॥ ८९ ॥
षष्ठी यदर्कवारेण यन्मासे यत्र पक्षके ।
अन्नं घृतं महर्घं स्याद् न्यूने न्यून तिथौ ततः ॥ ९० ॥
आश्विने च सिते पक्षे दशम्यादिदिनत्रये ।
गर्जितं विद्युतं कुर्यात् तद्गोधूमविनाशकम् ॥ ९१ ॥
ज्येष्ठे मूलं पूर्णिमायां शुभं वर्षं हिताय तत् ।
मध्यमं प्रतिपद्योगे द्वितीयायां तु दुःखकृत् ॥ ९२ ॥
यदुक्तम्—ज्येष्ठे मूलं द्वितीयायां सर्वबीजविनाशकृत् ।
अवृष्ट्या चातिवृष्ट्या वा इत्येव मुनिरब्रवीत् ॥ ९३ ॥

रविवारसे वार प्रतिपदा आदि गत तिथि और अश्विनी आदि गत नक्षत्र, इनको जोड़कर दूना करे ॥ ८७ ॥ पीछे इसमें तीन का भाग दो, यदि दो शेष बचे तो सुभिक्ष, शून्य शेष बचे तो दुर्भिक्ष, और एक शेष बचे तो शुभाशुभ (समान) जानना ॥ ८८ ॥ आषाढ मासके शुक्लपक्ष में रवि मण्डल यदि बादल रहित हो तथा गाज बीज या वर्षा न हो तो आगे दो महीने तक वर्षा हो ॥८९॥ जिस महीनेमे जिस पक्षमें षष्ठी यदि रविवार युक्त हो तो घी और अन्न महँगे हों, तिथि थोड़ी हो तो थोड़ा और अधिक हो तो अधिक तेज हो ॥९०॥ आश्विन मासके शुक्लपक्ष में दशमी आदि तीन दिन गर्जना और बिजली हो तो गेहूँ का नाश हो ॥ ९१ ॥ ज्येष्ठ मासकी पूर्णिमाके दिन मूल नक्षत्र हो तो वर्ष भर शुभ करे, प्रतिपदा के दिन हो तो मध्यम और द्वितीया के दिन हो तो दुःखकारक होता है ॥ ९२ ॥ कहा है कि— ज्येष्ठ मासकी दूज के दिन मूलनक्षत्र हो तो

अत्रेद विचार्य मास शुक्लादि कृष्णादिर्वा यदि शुक्लादिस्तदा

यदि भवति कदाचित् कार्तिके नष्टचन्द्रे,
शनिकुजरविवारे ज्येष्ठमासेऽपि दर्शे ।
त्रिगुणगुणविनकात् रत्नतुल्यं च धान्यम्,
बुधगुरुभृगुचन्द्रे मृत्तिकातुल्यमन्नम् ॥९४॥

ग्रन्थान्तरे—

यदि भवति कदाचित् कार्तिके नष्टचन्द्रे,
शनिकुजरविवारे स्वातिनक्षत्रयोगः ।
इह भवति सपायुष्माख्य योगस्तृतीयः,
क्षयविलयविपत्तिः छत्रभङ्गस्त्रिपक्षे ॥९५॥

लोकेऽपि—काती यदि अमावसी, रवि शनि मङ्गल होय ।
स्वाति आयुष्मान् जो मिले, दुरभिक्ष छत्रभंग जाय ।९६

श्रावणे प्रथमे पक्षे यद्यश्विन्यां जलं भवेत् ।

सब प्रकारके धान्योंका भाव करा करके बढ़ता है या भविष्यमें ऐसा मुनियों ने कहा है ॥ ९३ ॥ यहाँ शुक्लादि या कृष्णादि मास का विचार करना, यदि शुक्लादि हो तो— कार्तिक मासकी अमावस के दिन शनि मंगल या रविवार हो ऐसे ज्येष्ठ मासकी अमावस के दिवस भी शन्यादि हों तो रत्नके तुल्य धान्य बिके अर्थात् बहुत महँगे हों । यदि बुध गुरु शुक्र और चन्द्र वार हो तो मृत्तिका तुल्य अर्थात् अत्यन्त सस्ता धान्य बिके ॥९४॥ अन्य ग्रन्थमें— यदि कार्तिककी अमावस शनि मंगल या रविवार को हो तथा स्वाति नक्षत्र और आयुष्मान् योग भी हो तो क्षय प्रलय, विपत्ति हो और तीन पक्षमें छत्रभंग हो ॥९५॥ लोक भाषामें भी कहा है कि— कार्तिक कृष्ण अमावास्या रवि, शनि या मंगलवार को हो तथा साथ में स्वातिनक्षत्र और आयुष्मान् योग भी हो तो दुर्भिक्ष तथा छत्रभंग हो ॥९६॥ श्रावणके प्रथम पक्षमें यदि अश्विनी नक्षत्रके दिन जल बरसे तो दुर्भिक्ष...

तदातीव सुभिक्षं स्यादपयोगेषु च सत्स्वपि ॥९७॥

शुक्लस्य प्रथमत्वेऽश्विन्या असम्भव एव । 'आषाढां धुरि अष्टमी' इत्यग्रे वक्ष्यमाणामपि न मिलति । कृष्णाष्टम्या लक्षणे 'धुरि' इति शब्दवाच्यस्यादरभावात्। अन्यदपि आषाढकृष्णपक्षस्य तिथिवाराभ्रादिसर्वं चतुर्मासमध्ये वीक्षणीयं स्यात् । ज्येष्ठामावासीचिह्न चाषाढपूर्णिमायाः प्राक् षोडशदिने च ।

एतेन ज्योतिःशास्त्रोक्तं मासश्चैत्रः सितादिति ।
कथितं तत्प्रमाणं स्यान्मेघमालाविदां पुनः ॥९८॥

यद्यपि लोके-

धुरि अजुआलो पक्खडो, पिछै अंधारो होइ ।
इणपरि जोइसगणि सदा, मकरिस सांसो कोइ ॥९९॥

तथा मेघमालायामपि—

पौषस्य कृष्णसप्तम्यां यद्यभ्रैर्वेष्टितं नभः ।

दुष्ट योगों के होने पर भी अत्यन्त सुभिक्ष होता है ॥ ९७ ॥ यहा पहला शुक्लपक्ष में अश्विनी नक्षत्र का असभव होता है । आषाढ कृष्ण अष्टमी का फल जो आगे कहेंगे वह भी नहीं मिलता । कृष्णाष्टमी लक्षण में धुरि शब्द है वह शब्द वाचक है । दूसरी जगह भी आषाढ कृष्णपक्ष से चतुर्मास माना जाता है । तिथि वार और बादल आदि सब चातुर्मास मे देखना चाहिये । ज्येष्ठ अमावस आषाढ पूर्णिमा के पहले सोलह दिन पर माना है । यही ज्योतिश्शास्त्रों में मास की गणना चैत्र शुक्लपक्ष से माना है और यही प्रमाण मेघमाला के जानकार भी कहते हैं ॥९८॥ लोकभाषा में भी कहा है कि पहला शुक्लपक्ष और पीछे कृष्णपक्ष होता है, इसमें ज्योतिषियोंको शका नहीं करना चाहिये ॥९९॥ मेघमालामें भी कहा है कि पौष मास की कृष्ण सप्तमी के दिन आकाश

अष्टमासवशाद् युक्तो दिव्यगर्भ' प्रजायते ॥१००॥
श्रावणे शुक्लपक्षे स्यात् स्वातीभृक्षेण सप्तमी ।
तत्र वर्षति पर्जन्य' सत्यमेतद् वरानने ! ॥१०१॥

अत्र शुक्लादिमासपक्ष एव गर्भपाकस्तत्फलं चोक्तम्, त था कृष्णपक्षादिमासमतेऽपि । अष्टमासवशादिति कथनादेव तन्मतं स्वीकृतं पौपकृष्णपक्षादित्वेन श्रावणशुक्लेऽष्टमासी भावात् । अत एव चैत्रस्यान्ते कृष्णपक्षमाश्रित्य चैत्रोऽर्ध च तुरूप इत्युक्तिर्ज्योतिर्मतेन, तदा कृष्णपक्षादिमतेन चैत्रा स्यात्, तत्र पञ्चरूपताया युक्तत्वात्, तेनैव कार्तिकामावास्यां वीरनिर्वाणात् । सिद्धान्ते कृष्णपक्षादिमास' । पूर्णो मासा यस्यां सा पौर्णमासीति सत्योक्तिः । अत्रापि सम्मतिर्यथा-
पौपे मूलाद् भरणपन्तं चन्द्रचारेण साभ्रके ।

कार्त्तों से घेरे हुए हों तो आठ मासका सुन्दर गर्भ होता है ॥ १ ॥
हे भद्र मुखवाली! श्रावण मासका शुक्ल पक्षमें सप्तमीके दिन स्वाति नक्षत्र हो तो अवश्य वर्षा होती है ॥ १ १ ॥

यहां जैसे शुक्लादि मास और पक्ष में गर्भ पाक का फल कहा वैसे कृष्णादि मासमें भी यही मत (अभिप्राय) समझना । आठ मास ऐसा कहा है जिससे पौष कृष्ण पक्षसे श्रावण शुक्ल पक्ष तक आठ मास हो जानेसे यही मत निश्चय किया । इसलिये चैत्रमास के अंत में कृष्ण पक्ष आश्री चैत्रोऽर्ध चतु रूप ऐसी युक्ति ज्योतिर्मतम है क्योंकि ज्योतिष सिद्धान्तों में शुक्लादि मास माना है और कृष्ण पक्षादिक मतसे वैशाख माससे वर्षा के गर्भ पंच रूप (वायु, गर्जना विद्युत) समझना । कार्तिक अमा वास्याके दिन श्रीमहावीरनिर्वाणका निर्णय होनेसे सिद्धान्तमें कृष्णादि मास की प्रवृति है जिस मास महीना पूर्ण हो उसको पूर्णमासी कहते हैं यह सत्य उक्ति है । पौष मास में मूलसे भरणी तक चन्द्रनक्षत्रों में आकाश

आर्द्रादौ च विशाखान्तं रविचारेण वर्षति ॥१०२॥
न चैवं शुक्लपक्षाद्यः पौषेऽपि मूलसङ्गतिः।
तथा गर्भोदयो ज्ञेय इति वाच्यं वचस्विना ॥१०३॥
मूलादि गर्भहेतुः स्याद् नक्षत्रं धन्वगे रवौ।
सम्बन्धाद् धनुषः पौषे कृष्णादौ चापगो रविः ॥१०४॥

उक्तं मेघमालायाम्—

धन्वराशौ स्थिते सूर्ये मूलाद्या गर्भधारणा।
गर्भोदयाद् ध्रुवं वृष्टिः पञ्चोनत्रिंशतिदिनैः ॥१०५॥
दिनसंख्यानुसाराच्च वर्षत्यत्र न संशयः।
मूलाद् वर्षति चार्द्राभं पूषायाश्च पुनर्वसुः ॥१०६॥
उषाया गर्भतः पुष्यं श्रवणात् सर्पदैवतम्।
धनिष्ठाया मघावृष्टि-र्वारुणात् पूर्वफाल्गुनी ॥१०७॥

बादलोंसे घेरा हुआ हो याने बादल सहित हो तो आर्द्रासे विशाखा तक सूर्यनक्षत्रों में वर्षा हो ॥१०२॥ यहां शुक्ल या कृष्ण पक्षका विचार नहीं करना, पौष मासमें जबसे मूल नक्षत्र पर सूर्य हो तबसे गर्भकी वृद्धि समझना ऐसे विद्वान् लोग कहते हैं ॥१०३॥ धनुराशि पर सूर्य आने से मूलादि नक्षत्र गर्भके हेतु होते हैं। पौष मासमें धनुराशि का सम्बन्ध से कृष्णादिमें धनु संक्रान्ति आती है ॥ १०४ ॥

धनुराशि पर सूर्य आनेसे मूल आदि नक्षत्र गर्भको धारण करनेवाले होते हैं। गर्भका उदय होनेसे १९५ दिनोंमें निश्चयसे वर्षा होती है ॥१०५॥ दिन संख्या तुषार (हीम) गिरने लगे वहां से गिनना, उपरोक्त दिन पर अवश्य वर्षा होती है इसमें संशय नहीं। मूल नक्षत्रका गर्भसे आर्द्रा नक्षत्र में वर्षा होती है, ऐसे पूर्वाषाढाका गर्भसे पुनर्वसुमें ॥१०६॥ उत्तराषाढा का गर्भसे पुष्यमें, श्रवणका गर्भमें आश्लेषा में, धनिष्ठाका गर्भ से मघामें, शतभिषाका गर्भमें पूर्वाफाल्गुनी में वर्षा होता है ॥१०७॥ पूर्वाभाद्रपदका

पूर्वभाद्रपदागर्भात् वृष्टिरार्द्रमवैक्षते ।
उत्तमायां हस्तवर्षा स्याद् रेवत्यां स्याच्चित्रवर्षणम् ॥१०८॥
आश्विन्यां स्वातिवर्षा स्याद् भरण्यां तु विशाखनम् ।
पूर्णगर्भे भवेद् वृष्टिः सर्वलोकाः सुखावहाः ॥१०९॥
एवं च गर्भपूर्णत्वं कृष्णपक्षक्रमाद् भवेत् ।
पौषादिज्येष्ठमासान्ता षण्मासार्द्धे शुचेः पुनः ॥११०॥

अत्रोदाहरणं-संवत् १७१७ वर्षे पौषकृष्णचतुर्थ्यां च मुष्यर्क्षः ५४, ततः संवत् १७१८ वर्षे कृष्णपक्षादिके आषाढे अमावास्यां रौद्रे रविः १४ । इति गर्भसम्पूर्णता ।

वृष्टौ चार्द्रायां एव मुख्यत्वं तथा चोक्तं प्राक् 'मेघसंभ्रान्तिकालात्' इत्यादि । लोकेऽप्याह—

मिगसर वाय न वाइया अद्द न वूठा मेह ।
तो जाणेवो भड्डली, वरसइ आयो बेह ॥१११॥

ग्रन्थान्तरेऽपि—

मेषराशिगते सूर्ये अश्विनीचन्द्रसंयुता ।
यदा प्रवर्षति देवि ! मूलगर्भो विनश्यति ॥११२॥
भरण्याः सर्वेषामन्तं क्रमेण वर्षणे प्रिये ! ।

गर्भसे उत्तराफाल्गुनीमें, उत्तराभाद्रपदका गर्भसे हस्तमें रेवतीका गर्भसे चित्रामें वर्षा होती है ॥ १ ८ ॥ अश्विनीका गर्भसे स्वातिमें और भरणी का गर्भसे विशाखामें गर्भकी पूर्णता से वर्षा होती है, और सब लोग सुखी होते हैं ॥१ ९॥ इसी तरह कृष्ण पक्षादिक क्रमसे पौषसे ज्येष्ठ तक छ महीने और आधा आषाढ मासमें गर्भकी पूर्णता होती है ॥ ११ ॥

मार्गशिरमासमें वायु न चले और आर्द्रा में वर्षा न हो तो वर्षा अच्छा न हो ॥१११॥ मेषराशि पर सूर्य हो तब चंद्रमा का अश्विनी नक्षत्र में यदि वर्षा हो तो मूलनक्षत्रके गर्भका विनाश होता है ॥ ११२ ॥ इसी तरह भरणी

पूर्वाषाढादि पौष्णान्तं गर्भश्चैवं विनश्यति ॥११३॥
पञ्चमे पञ्चमे स्थाने गर्भः पतति चाव्ययात् ।
आर्द्राप्रवर्षणं देवि ! गर्जने वा कथञ्चन ॥११४॥
सर्वे गर्भाश्च विज्ञेया तत्रैव वृष्टिकारकाः ।
आर्द्रादिपञ्चके दृष्टे छिद्रं वर्षति माधवः ॥११५॥

न चैवं गर्भनियमः स्यान्मासाष्टकनिमित्तेन चतुष्टयमभीष्टदमिति मेघमालावचनात्, निमित्तरूपगर्भसंख्यायां न्यूनाधिकत्वस्यापि दर्शनात्। यदाहुः श्रीहीरविजयसूरयः स्वमेघमालायाम्—

कत्तिय बारसि गब्भा छाया, आसाढां धुरि वरसे आया ।
मिगसिर पञ्चमि मेघाडंयर, तो वरसे सघलो संवच्छर ।११६।

इति कृतं प्रसङ्गेन प्रकृतमनुस्त्रियते—

पूर्वात्रयं रोहिणी च हस्तश्च प्रतिपद्दिने ।
पक्षादौ वारुणं नेष्टं सर्वधान्यमहर्घकृत् ॥११७॥
आग्नेयं पौष्णयुगलं मूलश्चेत् प्रतिपद्दिने ।

नक्षत्रसे आश्लेषा तक नक्षत्रोंमें किसी भी दिन वर्षा हो तो क्रमसे पूर्वाषाढा से रेवती नक्षत्र तक के गर्भका विनाश होता है ॥ ११३ ॥ पांचवें २ मास में स्थिरगर्भ का पात हो जाता है । कभी आर्द्रा में वर्षा हो या गर्जना हो तो गर्भपात होता है ॥ ११४ ॥ जहा गर्भ हो वहां सब वृष्टि करनेवाले जानना। आर्द्रादि पाच नक्षत्रोंमें वर्षा बरसती है ॥ ११५ ॥ कार्त्तिकमासकी द्वादशी के दिन गर्भ आच्छादित हो तो आषाढ में निश्चयसे वर्षा हो और मार्गशीर्ष पचमीके दिन भी वर्षाका आडबर हो तो सम्पूर्ण वर्ष में वर्षा हो ॥ ११६ ॥

पक्षकी आदिमें प्रतिपदा के दिन यदि तीनों पूर्वा, रोहिणी, हस्त और शतभिषा ये नक्षत्र हों तो सब प्रकारके धान्य तेज हों ॥ ११७ ॥ कृत्तिका, रेवती, अश्विनी और मूल ये नक्षत्र हों तो समान भाव रहे और बाकी के

तदा धान्ये समायाते शेषमासे समर्घता ॥११८॥

अथ दिनविचारः—

पावसे दुर्भिक्षं तेपले होइ मज्झिम काल ।
चउपले समभाव पञ्चावन य सुभिक्ख ॥११९॥

त्रिपञ्चाशद् युते वर्षे दिवसानां शतद्वय ।
सुभिक्षं केचिदप्याहु परं देशेषु विग्रह ॥१२०॥

पाणेपुत्रिदिनैः काला मध्यमाऽत्रिशरत्रिभिः ।
वर्षे स्यपटत्रिभिः श्रेष्ठ सुभिक्ष तत्र निश्चितम ॥१२१॥

अथ रोहिणीचारे दिनमानवर्षफलम्—

रविणा भुज्यमानायां रोहिण्यां मेघवर्षणे ।
सप्ततिदिनान्यब्द-वृष्टिर्नाद्यदिने सदा ॥१२२॥

द्वितीयदिवसे वृष्टा-वष्टपञ्चाशता दिनैः ।
वृष्टिरोऽस्तृतीयेऽह्नि चत्वारिंशत्वोत्तरा ॥१२३॥

नक्षत्र हो तो सस्ते हों ॥ ११८॥

यदि २५२ दिनका वर्ष हो तो दुर्भिक्ष २५३ दिनका वर्ष हो तो मध्यम २५४ दिनका समान और २५५ दिनका हो तो सुकाल जानना ॥ ११९ ॥ कोई ऐसा भी कहते हैं– २५२ दिनका वर्ष हो तो सुकाल हो, परन्तु देश में विग्रह हो ॥ १२० ॥ २५५ दिनका वर्ष हो तो काल, २५७ दिनका मध्यम और २५ दिनका वर्ष श्रेष्ठ तथा निश्चय सुभिक्ष कारक होता है ॥ १२१ ॥

जब सूर्य रोहिणी नक्षत्र का भाग कर रहा हो अर्थात् जितने समय रोहिणी नक्षत्र पर सूर्य रहे उतने समयमें कभी वर्षा हो तो उसका फल कहते हैं यदि प्रथम दिन वर्षा हो तो उसके पीछे ७२ दिन तक वर्षा न बरसे बरसे बरसे ॥ १२२ ॥ दूसरे दिन वर्षा हो तो ५८ दिन तक वर्षा न बरसे । तीसरे दिन वर्षा हो तो ४६ दिन तक वर्षा न बरसे ॥ १२३ ॥ चौथे दिन वर्षा होतो ४२ दिन वर्षा न हो । पांचवें दिन वर्षा

द्विचत्वारिंशत् सूर्येऽह्नि वृष्टौ वृष्टिर्न जायते ।
पञ्चमे त्रिंशदेवात्र नवाहसहिता मता ॥१२४॥
चतुस्त्रिंशद्दिनानां हि षष्ठेऽह्नि नहि वर्षणम् ।
एकत्रिंशत् सप्तमेऽह्नि नवमे चाष्टविंशतिः ॥१२५॥
दशमेऽह्नि चतुर्विंश-त्येकादशदिनेऽम्बुदे ।
दिनानामेकविंशत्या षोडशद्वादशेऽहनि ॥१२६॥
त्रयोदशदिने वृष्टौ दिनद्वादशके पुनः ।
वृष्टिरोधः पयोदस्य ततो मेघमहोदयः ॥१२७॥

मतान्तरे—

पहिले चरण बहोत्तर दीह, बीजे बासट्ठि न टले लीह ।
तीजे बावन्न चोथ बयाल, रोहिणी खंच करे णिणकाल ॥१२८॥

अथ वृष्टिवर्षदिनसंख्या—

पञ्चाशद्दिवसा वृष्टि-र्वर्षदीपोत्सवे रवौ ।

हो तो ३९ दिन वर्षा न हो ॥ १२४ ॥ छट्ठे दिन वर्षा हो तो ३४ दिन वर्षा न हो । सातवे दिन वर्षा हो तो ३१ दिन वर्षा न हो । नववें दिन वर्षा हो तो २८ दिन वर्षा न हो ॥ १२५ ॥ दशवें दिन वर्षा हो तो २४ दिन वर्षा न हो । ग्यारहवे दिन वर्षा हो तो २१ दिन बाद वर्षा हो । बारहवे दिन वर्षा हो तो १६ दिन बाद वर्षा हो ॥ १२६ ॥ तेरहवें दिन वर्षा हो तो १२ दिन तक वर्षा न हो, बादमें वर्षा हो ॥ १२७ ॥ प्रकारान्तरसे—रोहिणीके प्रथम चरण पर सूर्य रहने पर वर्षा हो तो ७२ दिन नहीं बरसे बाद वर्षा बरसे । दूसरे चरणमें वर्षा हो तो ६२ दिन बाद वर्षा हो । तीसरे चरणमें वर्षा हो तो ५२ दिन और चौथे चरणमे वर्षा हो तो ४२ दिन तक वर्षा न हो बाद वर्षा बरसे ॥ १२८ ॥

यदि दीपमालिका (दीवाली) के दिन रविवार हो तो उस वर्षमें ५० दिन वर्षा हो । सोमवार हो तो १०० दिन, मंगलवार हो तो ४० दिन

सोमे दिनषट्कं वृष्टिश्चत्वारिंशच्च मङ्गले ॥१०९॥
बुधे षष्टिर्दिनैर्वृष्टि-रशीति दिवसा गुरौ ।
शुक्रे दिनानां भवति षष्ठी विंशतिरेव च ॥११०॥

तिथिवारसम्बन्धे रोहिण्यादिफलम्—

पक्षान्ते प्रतिपद्दिने भवति चेद् ब्राह्मी तदा चिन्तितः,
कालस्तत्परतः सुभिक्षमशनं स्तोकं तृतीयादिने ।
धान्यं भूरितरं तुरीयदिवसे किञ्चिन्न किञ्चित् पुनः,
पञ्चम्यां गगनेऽतिवार्दलघन-च्छायाय षष्ठीदिने ॥१११॥
सप्तम्यां जलशोष उत्तरदिशि स्याद्धान्यनाशोऽष्टमी-
तिथ्यां कष्टमनीव वणिजकुले भूम्यां नवम्यां भवेत् ।
सौभिक्ष्यं दशमीदिने जनभयं धान्यं महर्घं तथै-
कादश्यां वणिजां भयं परिभवः स्याद् द्वादशीसङ्गमे ॥११२॥
वृष्टिः स्वल्परसा त्रयोदशदिने वर्षा पुनर्भूयसी,
भूते भूततिथौ जलं नभसि न स्यात् पूर्णिमादर्शयो ।

वर्षा हो ॥१०९॥ बुधवार हो तो ६ दिन गुरुवार हो तो ८ दिन, शुक्रवार हो तो ६ दिन और शनिवार हो तो २ दिन वर्षा बरसे ॥११०॥

पक्षके अन्तमें एकमके दिन रोहिणी नक्षत्र पर सूर्य आवे तो दुष्काल, दूजके दिन रोहिणी हो तो सुभिक्ष, तीजके दिन हो तो थोड़ी अन्न प्राप्ति, चौथके दिन हो तो अधिक अन्न प्राप्ति, पंचमीके दिन हो तो कुछ भी अन्न न हो या थोड़ासा हो छठके दिन हो तो आकाश मेघाडंबरसे आच्छादित रहे ॥१११॥ सप्तमीके दिन रोहिणी हो तो उत्तर दिशा में जल सूख जाय, अष्टमीके दिन हो तो अन्नका नाश हो, नवमीके दिन रोहिणी हो तो भूमि पर वणिक् कुलको अधिक कष्ट पड़े । दशमीके दिन हो तो सुकाल, एकादशीके दिन हो तो धान्य महँगे और मनुष्योंको भय हो, द्वादशीके दिन हो तो वैश्योंको भय और पराभव हो, तेरसके दिन हो तो थोड़ा रसवाली

दुर्भिक्षं च सुभिक्षमग्निदहनं रोगाः शिशूनां मृति-
र्वृष्टिः काल इति क्रमात् प्रथमतो वृष्टे घनेऽर्कादिषु ।१३३।
ज्येष्ठमासे तथाषाढे गाढे वृष्टे घनाघने ।
फलमेतदुपाख्यायि मेघोदयनिवेदिभिः ॥१३४॥

प्रथमवृष्टिदिनफलम् —

चैत्रस्य कृष्णपञ्चम्या आरभ्य दिवसा नव ।
खे नैर्मल्यं तदार्द्रादि-नवके विपुलं जलम् ॥१३५॥
अत्र पक्षे विनिर्णेयः स्वदेशव्यवहारतः ।
मरौ फाल्गुनपूर्णायाः परश्चैत्रः सितेतरः ॥१३६॥
गूर्जरत्रादिषु पुनः स्वपूर्णायाः परोऽसितः ।
सर्वमासफलं चैवं यथायोग्यं विचार्यते ॥१३७॥
सितपक्षादिके चैत्रे मीने सूर्यसमागमे ।

वर्षा हो, चौथे शुक्र दिन हो तो बहुत वर्षा, पूर्णिमा और अमावस के दिन रोहिणी हो तो आकाशमें जल प्राप्ति न हो। सूर्यादि वारोंमें रोहिणी पर सूर्य आवे तो क्रमसे दुष्काल, सुकाल अग्निदाह, रोग, बालकोंकी मृत्यु, वर्षा और दुष्काल ये फल हों ॥१३३॥ ज्येष्ठ तथा आषाढमे रोहिणी नक्षत्र पर जिस दिन सूर्य आवे उस दिन यदि घनघोर वृष्टि हो जाय तो पूर्वोक्त समग्र फल मेघमहोदयको जाननेवालेने कहा है ॥ १३४ ॥

चैत्रमासमें कृष्ण पञ्चमीसे नव दिन तक आकाश निर्मल हो तो आर्द्रा आदि नव नक्षत्रोंमें वर्षा अच्छी हो ॥१३५॥ यहां अपने अपने देशके व्यवहार से पक्षका निर्णय करना— मारवाड आदि देशोंमे फाल्गुन पूर्णिमाके पीछे चैत्र कृष्णपक्ष मानते हैं ॥ १३६ ॥ और गुजरात आदि देशों में अपने मास की पूर्णिमा के पीछे कृष्णपक्ष माना जाता है, इसी तरह यथायोग्य व्यवहारके अनुकूल समस्त मासका फल विचारना ॥१३७॥ चैत्र शुक्लपक्ष में मीनराशि पर सूर्य आने से मूल आदि नव नक्षत्र निर्मल हो तो वर्षा

मूलादिनवनक्षत्र-नैर्मल्ये वत्सरः शुभः ॥१३८॥
'मेषसंक्रान्तिवशात्' इत्यादि । लोके पुनर्विशेषः—
चैत्र प्रथमाली चउपथी, मेस थका नव दीह ।
जल आसुविज्जु लवे, तो कुर्वयी मम पीह ॥१३९॥
वैशाखमासे प्रतिपद्दिनाच्चे-न्मेघादयः सप्तदिनानि यावत् ।
अभ्रेषु गर्जो घनविद्युदादि, तदा सुभिक्षं मुनयो वदन्ति ।१४०।
माघमासस्य सप्तम्यां पञ्चम्यां फाल्गुनस्य च ।
चैत्रस्यापि तृतीयायां वैशाखे प्रथमेऽहनि ॥१४१॥
मेघस्य गर्जितं श्रुत्वा जलदस्य तु दर्शने ।
चतुरो वार्षिकान् मासान् जलवृष्टिं तदा वदेत् ॥१४२॥
हीरसूरयस्त्वाहुः—
कत्तियमासह बारसह, मगसिर दसमी भास ।
पोसहमासि पंचमी, सत्तमी माह निहाल ॥१४३॥
जइ वरसे बिज्जु लवे, वाइ उत्तमण करय ।
मासा च्यारे पावसह, धाराधरवरिसेय ॥१४४॥

अच्छा होता है ॥ १३८ ॥ चैत्र मासकी शुक्ल चतुर्थीके बाद मेष संक्रान्ति से नव दिन तपा हो या बिजली चमके तो हे कृषिकार ! तुम वर मही ॥ १३९ ॥ वैशाख मासमें प्रतिपदासे सात दिन तक मेघ का उदय हो, गर्जना हो, वर्षा और बिजली आदि हो तो सुभिक्ष होता है ऐसा मुनियों ने कहा है ॥ १४० ॥ माघमासकी सप्तमी फाल्गुनकी पंचमी, चैत्र की तृतीया और वैशाखका प्रथम दिन ॥१४१॥ इनमें मेघकी गर्जना हो और उनका दर्शन भी हो तो चौमासेके चार मासमें वर्षा अच्छी होती है ॥१४२॥ श्रीहीरविजयसूरिने भी कहा है कि— कार्तिक मासकी बारस मार्गशीर्षकी दशमी पौष मासकी पंचमी और माघ मासकी सप्तमी ॥१४३॥ इन दिनों [illegible] में धाराबंध वर्षा हो १४४॥

एवं शाकसमायनादिसमयं ज्योतिर्विदां वाङ्मयाद्,
नित्याभ्यासवशाद् विमृश्य सुदृढं प्राज्यप्रभाभासुरः ।
श्रीमन्मेघमहोदयं सविजयं जानाति नातिश्रमाद् ,
भूपानामनुरञ्जनात् स लभते सिद्धिं सदा सम्पदाम् ॥१४५॥

इति श्रीमेघमहोदयसाधने वर्षबोधे तपागच्छीय-महोपाध्याय-
श्रीमेघविजयगणिविरचितेऽयनमासपक्षनिरू-
पणनामा षष्ठोऽधिकारः ।

अथ वर्षराजादिकथने सप्तमोऽधिकारः ।

अथ अगस्तिद्वारम्—

अथ यदि समुदेति चेतिमानं दधानः,
सकलकलशजन्मा सिन्धुपानप्रधानः ।
भगवति भगदैवे भे स्थिते पद्मिनीशे,
निशि दिशि दिशि लक्ष्म्यै स्यादयं सप्तमेऽह्नि ॥१॥

इस प्रकार शकसंवत्सर अयन आदि समयको ज्योतिर्विदों के शास्त्रों से और हमेशाके अभ्यासवशसे प्रभावशाली ज्योतिषी अच्छी तरह विचार करके सफलीभूत ऐसा मेघमहोदय को थोडा परिश्रम से जानता है, और वह राजाओंको खुश करके हमेशा सिद्धि और संपदाको प्राप्त करता है ॥ १४५ ॥

सौराष्ट्रराष्ट्रान्तर्गत-पादलिप्तपुरनिवासिना पण्डितभगवानदासाख्यजैनेन
विरचितया मेघमहोदये बालावबोधिन्याऽऽर्यभाषया टीकितोऽयन-
मासपक्षनिरूपणनामा षष्ठोऽधिकार ।

जब सूर्य पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र पर आवे तब उससे सातवें दिन रात्रि में प्रकाशको धारण करनेवाला और समुद्रको पीजानेमें प्रधान ऐसा अगस्ति ऋषिका उदय हो तो चारोंही दिशामें लक्ष्मीके लिये शुभ होता है ॥१॥

पञ्चशति दिन मात' पीताब्धिमुनिपुङ्गव ।
दुर्भिक्षं रौरवं घोरं राष्ट्रभङ्ग तदादिशेत् ॥२॥
रवौ च पूर्वफाल्गुन्यां प्राप्ते चेदष्टमेऽहनि ।
अगस्तेरुदयो लाभ न शुभाय ऋषिर्मने ॥३॥
कृत्तिकायां रवौ जाते सप्तमे चाष्टमेऽहनि ।
अपेरस्तंगति श्रेष्ठा दिवसे यदि जायते ॥४॥
रात्रावुदयनं श्रेष्ठं नेष्टमस्तङ्गमो मुने ।
दिवसेऽस्तङ्गम श्रेष्ठो नेष्टमभ्युदयस्तदा ॥५॥

लोकेऽपि—

सिंहा सूंनी अगुली, दिन इकवीसे जोय ।
अगस्ति मध्याह्नि उगीयो, घन वहु बरसे लोय ॥६॥

हीरसूरयोऽप्याहुः—

दुरिभवल वीस दिणे इगवीसे होइ मज्झिमं समयं ।

यदि अगस्त्यका उदय प्रातःकालमें हो तो दुर्भिक्ष घोर उपद्रव और राज्य भङ्ग हो ॥२॥ सूर्य जब पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र पर आवे तब उससे आठवें दिन अगस्त्यका उदय हो तो लाभमें शुभ नहीं होता ऐसा किसीका मत है ॥३॥ सूर्य जब कृत्तिका नक्षत्र पर आवे तब उससे सातवें या आठवें दिन अगस्त्य [illegible] होता है ॥४॥ अगस्त्यका [illegible] श्रेष्ठ माना है और [illegible] अशुभ माना है। दिन में [illegible] ॥५॥ लोक भाषामें बोलते हैं कि [illegible] सूर्य आवे तब इक्कीस दिनोंमें अगस्त्यका उदय [illegible] ॥६॥ श्री हीरविजयसूरि ने भी कहा है कि— [illegible] सूर्य [illegible] बीस दिन पर अगस्त्य का उदय [illegible] इक्कीसवें दिन पर उदय हो तो मध्यम समय हो और [illegible] दिन पर [illegible] हो तो सुकाल हो ॥७॥ जिस नक्षत्रमें सु से

बावीसे य सुभिक्खं सिंहाओ महारिसी उदए ॥७॥
दसे दिहाडे बुध थकी, ऋषि उगे जिणभास ।
धार न खडे वरसनो, परजा पूगे आस ॥८॥
ग्रन्थान्तरे तु–जो वीसे तो वाणिओ, इक्वीसे तो विप्र ।
बावीसे जो उगसे, मालीघरे जनम ॥९॥
वणिग्मुनिः खण्डवृष्ट्यै दुर्भिक्षाय द्विजो मुनिः ।
मालाजीवी सुभिक्षाय सिंहे सूर्यात् पर फलम् ॥१०॥
यश्चैत्रशुक्लप्रतिपद्दिनस्य, सुरके कलां च प्रथमां स वारः ।
वर्षस्य राजा खलु मेषसङ्क्रे, दिनस्य वारः स हि तत्र मंत्री ॥११॥
मिथुनार्केऽह्नि यो वारः स स्यात् सर्वरसाधिपः ।
सस्याधिपः कर्करवौ दिनवारो हि धान्यकृत् ॥१२॥
मतान्तरे पुनः—
"ज्येष्ठार्के: प्रथमो मन्त्री तच्चतुर्थः कणाधिपः ।

दशवें दिन अगस्त्यका उदय हो तो धारावध वरसाद वरसे और प्रजा की आशा पूर्ण करे ॥८॥ ग्रन्थान्तरसे– सिंह संक्रान्तिसे यदि वीस दिन पर अगस्त्य उदय हो तो वैश्य, इक्कीस दिन पर उदय हो तो ब्राह्मण और बाईस दिन पर उदय हो तो माली, इनके घर क्रमसे अगस्त्य का जन्म समझना ॥९॥ यदि वैश्य मुनि हो तो खण्डवृष्टि करता है, ब्राह्मण मुनि हो तो दुर्भिक्ष करता है और मालिके घर जन्म हो तो सुभिक्षकारक होता है ऐसा अगस्त्यका फल सिंहराशिपर सूर्य आने से जानना चाहिये ॥१०॥

जो चैत्रमासके शुक्लपक्षमे प्रतिपदाकी प्रथम कला मे जो वार हो वह वर्षका राजा होता है और मेषसंक्रान्तिके दिन जो वार हो वह मंत्री होता है ॥११॥ मिथुनसंक्रान्तिके दिन जो वार हो वह सब रस का अधिपति होता है। कर्कसंक्रान्तिके दिन जो वार हो वह धान्यका अधिपति होता है ॥१२॥ मतान्तरसे– ज्येष्ठा के पर सूर्य आवे उस दिन जो वार हो वह

फाल्गुनान्ते च यो वारः सोऽन्नपः परिकीर्तितः ॥१३॥
आषाढे रोहिणी सूर्ये दिनवारो जलाधिपः ।
आर्द्रार्कदिनवारो यः स मेघानामधीश्वरः ॥१४॥
दिनवारो वृषे सूर्ये कोट्टपालः प्रकीर्तितः ।
एते वर्षस्य पूर्वार्द्धे मोक्ता पार्थिवधान्यदा ॥१५॥
कश्चित्तु–चैत्रमासादिवारो यः स धनाधिपतिर्मतः ।
चैत्रे मेषार्कवेलायां लग्ने वर्षे प्रजायते ॥१६॥
खरतरगच्छीय-मेघजीनामोपाध्यायास्तु—
चैत्र अमावसिवार नृप, मन्त्री मेषरविवार ।
मिथुनरवी सो रसपती, कर्क सस्याधिपवार ॥१७॥
आषाढे रोहिणअर्के, जलाधिपति जो वार ।

मंत्री और उस से चौथा जो वार हो वह धान्य का अधिपति होता है । फाल्गुन मासके अंतमें जो वार हो वह अन्नका राजा कहा जाता है ॥१३॥ आषाढ मासमें जब रोहिणी नक्षत्र पर सूर्य आवे उस दिन जो वार हो वह जलका अधिपति है और आर्द्रार्क के दिन जो वार हो वह मेघ (वर्षा) का अधिपति है ॥१४॥ वृषसंक्रान्ति के दिन जो वार हो वह कोटवाल होता है । ये सब वर्षके धान्यका वर्षके पूर्वार्द्धमें देनेवाले कहे ॥१५॥ किसीका ऐसा मत है कि– चैत्र मासकी आदिमें जो वार हो वह धनका अधिपति माना है और चैत्र मासमें मेष संक्रान्तिके समय लग्नेशको वर्षका अधिपति माना है ॥ १६ ॥ खरतरगच्छीय श्री मेघजी नामके उपाध्याय कहते हैं कि– चैत्र मास की अमावसके दिन जो वार हो वह राजा मेष संक्रान्ति के दिन जो वार हो वह मंत्री मिथुन संक्रान्तिके दिन जो वार हो वह रस का अधिपति कर्कसंक्रान्तिके दिन जो वार हो वह धान्यका अधिपति है ॥१७॥ आषाढमें रोहिणी नक्षत्र पर सूर्य आवे उस दिन जो वार हो वह जल का अधिपति है और कार्तिक मासमें मूल नक्षत्र पर सूर्य आवे उस दिन

कातिं माहि मूलदिन, कोटवाल जो चार ॥१८॥
एते वर्षराजादयः पूर्वधान्यनिष्पत्तये ।
विजयदशम्यां वारो यः स राजाग्रभागपः ।
मकरार्केऽस्य मन्त्री स चैत्रमासाद्यपो धनी ॥१९॥
तुलार्के दिनवारो यः स हि सर्वरसाधिपः ।
धनुष्यर्केऽह्नि वारस्तु स सस्याधिपतिर्मतः ॥२०॥
कार्त्तिके मूलनक्षत्रे वारः स कोट्टपालकः ।
एते राजादयश्चोग्र-कालिक धान्यमादधुः ॥२१॥
अत्रापि मतान्तरे-
धनमन्त्री कुम्भ सस्यपति, फागुण अंतिवार ।
निश्चयराजा परखीइ, एहि जोस विचार ॥२२॥
केवलकीर्त्ति-दिगम्बरकृतमेघमालायां पुनरेव-
आगच्छति यथा भूपे गेहे गेहे महोत्सवः ।

जो वार हो वह कोटवाल होता है ॥ १८ ॥ ये सब वर्ष के राजा आदि धान्य निष्पत्तिके लिये पहले कहें ॥

विजयदशमी के दिन जो वार हो वह राजा, मकरसंक्रान्तिके दिन जो वार हो वह मन्त्री और चैत्रकी प्रतिपदा के दिन जो वार हो वह धन का अधिपति है ॥ १९ ॥ तुलासंक्रान्तिके दिन जो वार हो वह सब रसका अधिपति और धनुसंक्रान्तिके दिन जो वार हो वह धान्यका अधिपति है ॥ २० ॥ कार्तिक में मूलनक्षत्र के दिन जो वार हो वह कोटवाल है । ये सब राजा आदि धान्य को देनेवाले है ॥ २१ ॥ मतान्तरसे—धनुसंक्रान्ति के दिन जो वार हो वह मन्त्री, कुंभसंक्रान्ति के दिन जो वार हो वह धान्याधिपति और फाल्गुनमास का अंतिम दिन जो वार हो वह निश्चय करके वर्षका राजा है, यही ज्योतिषियों का विचार है ॥ २२ ॥ केवलकीर्त्ति—दिगम्बराचार्यने अपनी मेघमालामें कहा है ... से नवीन राजा आते है तब घर ...

तथा यथाधिपे लोके दीप्तिपोत्सव स्मृत' ॥२३॥
श्रीहीरविजयसूरिकृतमेघमालायां तु—
कार्तिके शुक्लद्वितीया दिन यो वार ईरित' ।
ज्ञेय' स वर्षप' स्वामी तत्फल वक्ष्यते बुध ॥२४॥

'एतत्तु वृष्टिगर्भकालिकत्वात् वृष्टिमाधयाम्' अत्रैवं वितर्कमात्रवर्षस्य प्रतिपदादिक्षणे प्रवेशात् तत्रत्य एव वारो वर्षेशस्तेन प्रतिपत्तिथि, प्रतिपत्तिथ्ये प्रथमा कला संस्के स वारा वर्षपतिरिति । तथा फाल्गुनान्ते कुहू राजेति मतम् येन काऽपि मेव' । एतत्तु माधुर्येण गुर्जरदेशे प्रवर्तते । दाक्षिणात्या औदयिकप्रतिपत्सत्रमेव राजानमाहु' । पठन्ति च—
चैत्रस्य शुक्लप्रतिपत्तिथौ यो, वार स वक्तो नृपतिस्तवब्द।
मेषप्रवेश किल भास्करस्य, य मिन् दिने स्यात् स तु तस्य मंत्री॥२५
कर्कप्रवेशो दिनप' स उक्त', पाकमायनाया मुनिभि' पुराणै ।

उत्सव होता है वैसे वर्ष का राजा लोकमें कहा गया है—दीपोत्सव माना है ॥ २३ ॥ श्री हीरविजयसूरिकृत मेघमालामें कहा है कि—कार्तिक शुक्ल द्वितीयाके दिन जो वार हो वह वर्षका स्वामी जानना उसका फल आगे कहेंगे ॥ २४॥

मेघाधिपति वर्षा का गर्भकालिक होनेसे उसका विचार करना—चान्द्र वर्षका चैत्रशुक्ल प्रतिपदा का प्रथम क्षणमें जो वार हो वह वार वर्षका अधिपति होता है इसलिये प्रतिपदादि तिथि है । प्रतिपद् तिथिकी प्रथम कला में जो वार हो वह वर्षका स्वामी होता है । तथा फाल्गुनमासकी अमावस के दिन जो वार हो वह वर्ष का राजा है ऐसा भी किसी का मत होने से दो मत माने हैं । यह बहुत करके गुजरातदेशमें माना है । दक्षिणदेश के लोग तो उदयकालिक प्रतिपदा के वार को ही राजा मानते हैं । कहा है कि—चैत्रशुक्ल पडवाके दिन जो वार हो वह वर्षका राजा है । मेषसंक्रान्ति ॰ दिन जो वार हो वह मंत्री होता है ॥ २५ ॥ कर्कसंक्रान्ति के दिन जो

आर्द्राप्रवेशे दिननाथ उक्तो, मेघाधिपः प्राक्तनदिग्मुखैः।२६।
तुलाप्रवेशेऽहनि यस्य वारो, रसाधिपोऽयं नियतः प्रदिष्टः ।
चापप्रवेशे दिवसाधिनाथो, धान्याधिनाथः कथितो मुनीन्द्रैः।२७।
केचित्तु—चैत्रस्य शुक्लप्रतिपत्तिथ्यादौ स्युर्नृपादयः ।
चैत्रादिवत्सरमते फलन्तीत्येवमुचिरे ॥२८॥
विजयदशम्यां वार इत्यादिमतं स्वतन्त्रमतिफलदम् ।
स्यात् कार्त्तिकादिवत्सरमतेऽब्दगर्भोद्भवात् तत्र ॥२९॥

फाल्गुनान्तकथनात् फाल्गुनामावस्यां चैत्रशुक्लप्रतिपत् संयोगस्य प्रायसो बाहुल्याद् दर्शदिने यो वारः स अब्दपः। उत्तरार्द्धे तु "विजयदशम्यां यो वारः स राजा, तुलार्कवारो मन्त्री, वृश्चिकार्कवारो हि कोट्टपालः, धनुष्यर्के यो वारश्च रसाधिपः, मकरे सस्याधिपः, ज्येष्ठार्कवारो जलाधिपः, कार्त्तिके

वार हो वह प्राचीन मुनियोंने धान्याधिपति कहा है । आर्द्रा नक्षत्रमें जब सूर्य प्रवेश करे उस दिन जो वार हो वह मेघाधिपति प्राचीन विद्वानोंने कहा है ॥ २६ ॥ तुलासक्रान्तिके दिन जो वार हो वह रसका अधिपति माना है । धनुसक्रातिके दिन जो वार हो वह मुनियोंने धान्याधिपति कहा है ॥२७॥ कोई ऐसा कहते है कि-चैत्रशुक्ल पडवाके आदिमें जो वार हो वह राजा है यह चैत्रादि वर्षके मत से फलदायक होता है ॥ २८ ॥ विजयदशमीके वार का जो मत है वह स्वतत्र मति से फलदायक है यह कार्त्तिकादि वर्षके मत से जानना ॥ २९ ॥ फाल्गुनमासकी अमावस्या के दिन चैत्रशुक्ल प्रतिपदाका संयोग बहुत करके होता है, इसलिये 'फाल्गुनान्त' ऐसा कथन किया गया है। उत्तरार्द्धमें तो "विजयदशमी के दिन जो वार हो वह राजा, तुलार्कके दिन जो वार हो वह मन्त्री, वृश्चिकसक्रान्ति के दिन जो वार हो वह कोटवाल, धनुसक्रान्ति के दिन जो वार हो वह रसका अधिपति, मकरसंक्रान्तिके दिन जो वार हो वह धान्याधिपति, ज्येष्टार्क के दिन जो वार हो वह जलाधि-

मूलनक्षत्रदिनवारो मेघाधिप" इति मतं सम्यक् प्रतिभाति । परेषां मताभिप्रायः प्रायो ज्योतिर्विद्भिर्गम्यः । वस्तुतस्तु वर्षपमन्त्रिसस्याधिपानां प्राधान्यमेवोपयोगः । तत्फलं चैवं गिरधरानन्दे—

यत्र वर्षे नृपो मन्त्री धान्यपश्चैक एव हि ।
तद्वर्षे घोरदुर्भिक्षं प्रजामार्यादि जायते ॥१०॥

ग्रन्थान्तरे—स्वयं राजा स्वयं मन्त्री स्वयं सस्याधिपो यदा ।
तदा तोयं न पश्यामि वर्जयित्वा महोदधिम् ॥११॥

वर्षाधिपतिफलम्—

सूर्ये नृपे स्वल्पजलाः पयोदाः, धान्यं तथाल्पं फलमल्पवृक्षाः ।
अल्पप्रयोगेषु जनेषु पीडा, चौराग्निशङ्का च भयं नृपाणाम् ।१२।
सोमे नृपे शोभनमङ्गलानि, प्रभूतवारिप्रचुरं च धान्यम् ।

पति, कार्तिकमें मूल नक्षत्र के दिन जो वार हो वह मेघाधिपति' ऐसा कहा है वह मत यथार्थ प्रतिभास होता है और दूसरों के मतोंका अभिप्राय बहुत करके ज्योतिषियों को जानने योग्य है। वास्तवमें तो वर्ष का स्वामी, मंत्री और धान्याधिपति इन तीनोंका ही विशेष उपयोग पड़ता है। इसका फल गिरधरानन्दमें इस तरह कहा है—जिस वर्षमें राजा, मंत्री और धान्याधिपति ये तीनों एक ही हो तो उस वर्षमें दुष्काल पड़े और प्रजामें महामारी आदि हों ॥ १० ॥ ग्रन्थान्तरमें भी कहा है कि—जिस वर्षमें राजा, मंत्री और धान्याधिपति ये एक ही ग्रह हो तो समुद्र को छोड़कर कहीं भी जल देखनेमें नहीं आवे अर्थात् वर्षा न हो ॥ ११ ॥

जिस वर्षमें सूर्य राजा हो तो बादल थोड़ा जल बरसावे, धान्य थोड़े, वृक्षोंमें थोड़े फल हों मनुष्योंमें किंचित् पीड़ा, चोर और अग्नि की शंका रहे और राजाओं का भय हो ॥ १२ ॥ चन्द्रमा राजा हो तो अच्छे २ मांगलिक कार्य हों, वर्षा अधिक हो, धान्य बहुत हो, मनुष्यों की व्याधि

प्रशाम्यति व्याधितरो नराणां सुखं प्रजानामुदयो नृपाणां ।३३
भौमे नृपे वह्निभयं जने स्या-च्चौराकुलत्वं नृपविग्रहश्च ।
दुःस्थाः प्रजा व्याधिवियोगपीडा, क्षिप्रं जलं वर्षति भूमिखण्डे ॥
बुधस्य राज्ये सजलं महीतलं गृहे गृहे तूर्यविवाहमङ्गलम् ।
सौख्यं सुभिक्षं धनधान्यसङ्कुलं, वसुन्धरायां नृपनन्दगोकुलम् ॥
गुरौ नृपे वर्षति सर्वभूतले, पयोधराः कामदुघाश्च धेनवः ।
सर्वत्र लोका बहुदानतत्पराः, पराभवो नैव सदैव नन्दनम् ।३६।
शुक्रस्य राज्ये बहुधान्यसम्पदो, वृक्षाः फलाढ्या बहुगोप्रसूनयः ।
प्रभूततोयं मधुराम्रपाघनं, प्रसन्नदैन्य सजल भुवस्तलम् ।३७।
शनौ घनो वर्षति खण्डशः क्षितौ, जनास्तु रोगा उदिताःप्रभञ्जनाः
करा नृपाणां विषमाश्च तस्करा, भ्रमन्ति लोका बहुधा क्षुधातुराः ॥

वर्षमन्त्रिफलम्—

शान्त हों प्रजाको सुख और राजाका उदय हो ॥३३॥ मगल राजा हो तो अग्निका भय, मनुष्योंमें चोरोंकी आकुलता, राजाओंमें विग्रह, प्रजा व्याधि और वियोगकी पीडा से दु खी हो और पृथ्वी पर शीघ्र ही जलवर्षा हो ॥३४॥ बुध राजा हो तो भूमितल जलमय हो याने वर्षा अच्छी हो, घर घरमें विवाह मंगलके बाजे बजें, सुख सुभिक्ष और धन धान्यसे भूमि पूर्ण हो तथा राजा और गौ आनदित हो ॥३५॥ बृहस्पति राजा हो तो समस्त पृथ्वी पर वर्षा हो, गौ इच्छानुसार दूध दें, सब जगह लोग दान देने में तत्पर हों, पराभव न होकर सदा आनद रहे ॥ ३६ ॥ शुक्र राजा हो तो धान्य बहुत हों, वृक्ष फलोंसे पूर्ण हों, गौ बहुत दूध दे, वर्षा अधिक हो, अच्छे मीठे आम बहुत हों, प्रसन्नता रहे और भूमितल पर वर्षा अच्छी हो ॥ ३७ ॥ शनि राजा हो तो पृथ्वी पर खडवृष्टि हो, मनुष्य रोगोंसे पीडित हों, महान् वायु चले, राजाओंके कर (टेक्स) असह्य हो, चोरोंका उपद्रव और लोक क्षुधासे व्याकुल होकर भ्रमण करते फिरें ॥३८॥

रवावमात्ये भुवि रोगपीडा, देशेषु सर्वत्र परन्ति तीडा ।
रसेषु धान्येषु महर्घता स्या-च्छलानि लोके च सुरा विनाश्या ॥
सुधाकरे मं सचिवेऽसपूर्ण-फलैरमात्यासनरक्षगावः ।
पुत्रप्रसूतिर्दुलावधूनां, जनेषु वाणी जयिनी मधूनाम् ॥४०॥
निदाघसं स्याद् गुरुदेवनिन्दा, भूमावनीमारगदस्य भूमा ।
भूमाकुला मूर्जननेत्ररोगा , कुजे मयेन्मन्त्रिणि युद्धयोगः ॥४१॥
राज्ञां सुदर्शिर्मृदुलाप्तवृष्टिः सच्छाकसमृद्धिर्धनिनां महद्धिः ।
पत्यावतिलब्धरतिर्युवत्या,बुधे पुनर्मन्त्रिणि रागसिद्धिः ॥४२॥
मन्त्रित्वमासे सुरमन्त्रिणि स्यात्, प्रजासु सौख्यं धनधान्यवृद्धिः ।
विवाहमांगल्यकथा जनानां, नानाऽमरैर्मेजमहोदयः स्यात् ॥४३॥
जाते कवौ ः त्रिपिगोपु दुग्ध, वहुक्षितौ धान्यसमर्घता च ।
भृशं फलाढ्या जनतासु रोगो,भिषक्प्रयोगः कर्षीदतिर्भीतिः ॥

जिस वर्षमें मन्त्री सूर्य हो तो पृथ्वीमें रोगपीडा, सर्वत्र देशोंमें टिड्डियों उपद्रव, रस और धान्य महँगे हों मनुष्योंमें कपटता और देवोंका प्रभाव नाश हो ॥३९॥ चंद्रमा मन्त्री हो तो पृथ्वी धान्यसे और वृक्ष फलोंसे पूर्ण हों, गौ अधिक प्रसव करें और वधुओंकी वाणी मनुष्योंमें प्रिय हो ॥४०॥ मंगल मंत्री हो तो भूमि पर गुरु और देव की निन्दा, चतौनिमार रोग का उपद्रव, धूम से पृथ्वी आकुल मनुष्यों को नेत्ररोग की पीड़ा और युद्धका योग हो ॥४१॥ बुध मंत्री हो तो राजा प्रसन्न वृष्टिवाले हो धान्य और वर्षा अधिक, अच्छे २ शाक और धनी लोगोंकी समृद्धिकी वृद्धि हो, स्त्री पति से प्रेम करनेवाली हो ॥ ४२ ॥ बृहस्पति मंत्री हो तो प्रजामें सुख, धन धान्यकी वृद्धि मनुष्यों का विवाह आदि मंगल हो और अनेक प्रकार के रसोंसे मेघका उदय हो याने अच्छी वर्षा हो ॥४३॥ शुक्र मंत्री हो तो गौ अधिक दूध दें पृथ्वीमें धान्य सस्ता हो वृक्षोंमें फलोंकी अधिकता मनुष्यों में रोग, वैद्यका प्रयोग चले और कहीं ईतिका भय हो ॥४४॥ शनि मंत्री

मान्द्यं जनानां व्यवहारनाशः, क्रूरा नृपास्तस्करवह्निदुःखम्।
गवां विनाशोऽतिमहर्घधान्यं, शनैश्चरे मंत्रिणि राज्ययुद्धम्॥

सस्याधिपतिफलम्—

क्वचित् पचन्ति सस्यानि क्वचिन्नश्यन्ति भूतले।
व्याधिर्दुःखं महायुद्धं धान्यानामधिपे रवौ ॥४६॥
समर्घं जायते धान्यं सर्वत्र जलवर्षणम्।
सर्वधान्यानि जायन्ते यत्र सस्याधिपः शशी ॥४७॥
ईतिभूतं जगत्सर्वं व्याधिरोगप्रपीडितम्।
महर्घाणि च धान्यानि सस्यानामधिपे कुजे ॥४८॥
सजला वसुधा सर्वा भयनाशः सुखी जनः।
चणकादीनि धान्यानि धान्यानामधिपे बुधे ॥४९॥
आनन्दः सर्वलोकानां सुवृष्टिस्तु प्रजायते।
निष्पत्तिर्बहुधान्यानां यत्र सस्याधिपो गुरुः ॥५०॥

हो तो मनुष्योंके व्यवहारका नाश, राजाओं क्रूर स्वभाववाले हों, चोर और अग्निका दुःख, गौ जातिका विनाश, धान्य महँगे हो और राजाओं में युद्ध हो ॥ ४५ ॥

जिस वर्षमें धान्याधिपति रवि हो तो भूमिपर कहीं धान्य पके, कहीं विनाश हों, व्याधि दुःख और महायुद्ध हो ॥ ४६ ॥ चद्रमा सस्याधिपति हो तो धान्य सस्ते हो, सब जगह जलवर्षा हो और सब प्रकारके धान्य उत्पन्न हों ॥ ४७ ॥ मंगल सस्याधिपति हो तो सब जगत ईति का उपद्रव से और व्याधि रोगसे पीडित हो, तथा धान्य मँहगे हो ॥ ४८ ॥ बुध धान्याधिपति हो तो समस्त पृथ्वी जलवाली याने वर्षा अच्छी हो, भयका नाश और मनुष्य सुखी हों, चनें आदि धान्य अधिक हों ॥ ४९ ॥ बृहस्पति धान्याधिपति हो तो सब लोगोंमें आनद हो, वर्षा अच्छी हो और धान्य प्राप्ति अधिक हो ॥ ५० ॥ शुक्र धान्याधिपति हो तो समस्त जगत् रोग

रोगैर्मुक्तं जगत्सर्वं भयमुक्ता भवेन्मही ।
पच्यन्ते सर्वधान्यानि यत्र सस्याधिपः कविः ॥५१॥
अग्निचौराकुला पृथ्वी महाव्याधिप्रपीडिता ।
मृत्युरोगभयं युद्धं वर्षे सस्याधिपे शनौ ॥५२॥

त्रैलोक्यप्रकाशे पुनः सस्याधिपफलम्—

वर्षेश्वरश्च भूपो वा सस्येशो वा दिनेश्वरः ।
तस्मिन्नब्दे नृपाः क्रूरा स्वल्पसस्याल्पवृष्टयः ॥५३॥
अब्दपो वा नृपो वा सस्यपो वा निशाकरः ।
तस्मिन् वर्षे करोति क्ष्मां पूर्णां धान्यार्घवृष्टिभिः ॥५४॥
अब्देश्वरश्च भूपो वा सस्येशो वा धरासुतः ।
अवृष्टिवह्निचौरेभ्यो भयमुत्पादयत्यपम् ॥५५॥
अब्दाधिपश्च भूपो वा सस्येशो वा शशाङ्कजः ।
न करोति कलिं कष्ट-मवृष्टिमतिमारुतम् ॥५६॥
नृपो वाप सस्येशो वर्षे तो वा गिरांपतिः ।

रहित हो और पृथ्वी भय रहित हो तथा सब प्रकारके धान्य उत्पन्न हों ॥ ५१ ॥ शनि सस्याधिपति हो तो अग्नि और चोरोंसे पृथ्वी आकुल हो, महाव्याधि से पीडित हो मृत्यु और रोगका भय, तथा युद्ध हो ॥ ५२ ॥

जिस वर्ष में वर्षपति मंत्री और धान्यपति सूर्य हो, उस वर्ष में राजा क्रूर स्वभाववाले हों थोड़ा धान्य और थोड़ी वर्षा हो ॥ ५३ ॥ वर्षपति, मंत्री और धान्याधिपति चंद्रमा हो तो उस वर्ष में पृथ्वी धन धान्य और वर्षा से परिपूर्ण हो ॥ ५४ ॥ वर्षपति मंत्री और धान्याधिपति मंगल हो तो वर्षाका अभाव अग्नि और चोरोंसे भय उत्पन्न हो ॥ ५५ ॥ वर्षपति मंत्री और धान्याधिपति बुध हो तो कलह कष्ट न हो, वर्षाका अभाव और पवन अधिक चले ॥ ५६ ॥ वर्षपति मंत्री और धान्यपति बृहस्पति हो तो भूमि में अधिक यज्ञ और वर्षा हो ॥ ५७ ॥ वर्षपति मंत्री और धान्यपति शुक्र

करोत्यतुलितां भूमिं बहुयज्ञार्थवृष्टिभिः ॥५७॥
वर्षेशोऽप्यथ सस्येश-श्चभूपो वाथ भार्गवः ।
महीं करोति सम्पूर्णां बहुधान्यफलादिभिः ॥५८॥
अब्देश्वरश्चभूपो वा सस्येशो वार्कनन्दनः ।
तस्मिन् वर्षे तु चौराग्नि-धान्यभूपभयप्रदः ॥५९॥
यदाब्देशश्चभूनाथः सस्यपानां बलाबलम् ।
तत्कालग्रहचारश्च सम्यग् ज्ञात्वा फलं वदेत् ॥६०॥
इति वर्षेशमंत्रिधान्यपतीनां फलानि ।

अथ राजादिविचारो गार्गीयसंहितायाम्—

चैत्रशुक्लाद्यदिवसे यो वारः सोऽब्दपः स्मृतः ।
शुभं वाप्यशुभं सर्वं तस्मादेव फलं स्मृतम् ॥६१॥
उदये प्रतिपच्चैवं मुहूर्त्तद्वयमस्ति चेत् ।
तस्मिन् दिने तु यो वारः स तु संवत्सराधिपः ॥६२॥
चैत्रमेषादिचापार्द्रा-तुलाकर्कटकेषु च ।
नृपो मंत्री धान्यमेघ-रससस्याधिपाः क्रमात् ॥६३॥

हो तो सम्पूर्ण पृथ्वी बहुत धन धान्यसे पूर्ण हो ॥ ५८ ॥ वर्षपति मंत्री और धान्यपति शनि हो तो उस वर्षमें चोर अग्नि धान्य और राजा ये भयदायक हों ॥ ५९ ॥ इसी तरह वर्षपति मंत्री और धान्याधिप। इनके बलाबलका तथा तात्कालिक ग्रहचार का अच्छि तरह जानकर फल कहना ॥ ६० ॥ इति वर्षपतिमंत्रिधान्यपतीनां फलानि ॥

चैत्र शुक्ल के आद्य दिनमें जो वार हो वह वर्षपति है, उससे शुभाशुभ समस्त फल जानना ॥६१॥ सूर्योदयके समय दो मुहूर्त भी प्रतिपदा हो और उस समय जो जो वार हो वह वर्ष का अधिपति है ॥६२॥ चैत्र शुक्लाद्य दिन, मेषसंक्रान्ति, धनुसंक्रान्ति, आर्द्रार्क तुलासंक्रान्ति और कर्क संक्रान्ति इन दिनोंमें जो वार हो वे क्रमसे राजा, मंत्री, धान्येश, मेघाधि-

अगम्मोहने तु—

चैत्रादिमेषादिकुलीरतौली, मृगादिवाराधिपतिः क्रमेण ।
राजा च मंत्री च सस्यनाथो, रसाधिपो नीरसनायकश्च ॥६४॥
भाद्रादिभाया जसनायकश्च, धान्याधिपश्चापदिनादिवारः ।
गौर्जरमते— यो फाल्गुनान्त कुहुसुक् स वारो,
राजा भवेद् गौजरसम्मतोऽयम् ॥६५॥
कश्यप— चैत्रशुक्लादिदिवसे स किंस्तुघ्नेऽपि पालवे ।
अर्कोदये तु यो वारः सोऽब्दपः परिकीर्तितः ॥६६॥
अथैषां फलानि रामविनोदे, तत्र सूर्यराजफलम्—

मेघाः स्वल्पोदका धान्यं स्वल्पं स्वल्पफला द्रुमाः ।
चौराग्निभूपतिभयं भास्करे नृपती सति ॥६७॥
चान्द्रेऽब्दे मिलिला गावः प्रभूतपयसादुराः ।
भाति सस्यार्घपानीयं शुभरसर्द्धिमानवैः ॥६८॥

पति रसाधिपति और धान्याधिपति हैं ॥६३॥ अगम्मोहन ग्रन्थमें कहा है कि— चैत्र शुक्ल के प्रथम दिन, मेषसंक्रान्ति कर्कसंक्रान्ति, तुलासंक्रान्ति, और मकरसंक्रान्ति इन दिनोंमें जो बार हो व क्रमसे राजा मंत्री, धान्याधिपति, रसाधिपति और नीरसाधिपति हैं ॥६४॥ भाद्रार्क्षके दिन जो बार हो वह जलाधिपति है, धनुसंक्रान्तिके दिन जो वार हो वह धान्याधिपति है। गौर्जरमत से तो जो फाल्गुन के अन्त अमावस के दिन जो बार हो वह राजा होता है ॥६५॥ कश्यपऋषि कहते हैं कि— चैत्र शुक्लके आदि दिन किंस्तुघ्न या बालव करणमें सूर्योदय के समय जो बार हो वह वर्ष का राजा है ॥ ६६ ॥

जिस वर्ष में वर्षपति सूर्य हो उस वर्षमें वर्षा थोड़ी, धान्य थोड़े, वृक्षोंमें फल थोड़े, और चोर अग्नि तथा राजाका भय हो ॥६७॥ चंद्रमा हो तो समस्त गौ बहुत दूध देनेवाली हो, सब धान्य और जल वर्षा बहुत

अग्नितस्कररोगाः स्युर्नृपे विग्रहदायकाः ।
हतसस्यजला भौमे वर्षेशे भूः सुदुःखिता ॥६९॥
प्रभूतवायुः सौम्येऽब्दे मध्याः सस्यार्थवृष्टयः ।
नृपसंक्षोभसम्भूता भूरिक्लेशभुजः प्रजाः ॥७०॥
गुरौ संवत्सरे भूपाः शतधाध्वरशालिनः ।
सम्पूर्णवृष्टिसस्यार्था नीरोगाः सुखिनो जनाः ॥७१॥
यवगोधूमशालीक्षु-फलपुष्पार्थवृष्टिभिः ।
सम्पूर्णा निखिला धात्री भृगुपुत्रस्य वत्सरे ॥७२॥
सौराब्दे मध्यमा वृष्टि-रीतिभीतिर्भयं रुजः ।
सङ्ग्रामो घोरधात्रीशः बलक्षुण्णाखिला धरा ॥७३॥

मन्त्री फल तत्र वशिष्ठ·—

दिनकृति मन्त्रिणि सततं विचित्रवर्षाणि सर्वसस्यानि ।
क्षितिपतिकोपो विपुलो विपिनारामाश्च सीदन्ति ॥७४॥

अच्छी हो, मनुष्य देवों की स्पर्द्धा करे ॥६८॥ मंगल हो तो अग्नि चोर और रोग अधिक हों, राजाओंमें विग्रह, पृथ्वी धान्य और जल से रहित हो और दुःखी हो ॥६९॥ बुध वर्षपति हो तो वायु अधिक चले, धन धान्य और वृष्टि मध्यम हो, राजाओंका क्षोभसे उत्पन्न हुआ बहुत क्लेशको भोगनेवाली प्रजा हो ॥७०॥ गुरु वर्षपति हो तो राजा सैकड़ों यज्ञ करने वाले हों, सम्पूर्ण पृथ्वी धन धान्य और वृष्टिसे पूर्ण हो और मनुष्य रोग-रहित सुखी हों ॥७१॥ शुक्र हो तो सम्पूर्ण पृथ्वी जव, गेहूँ, चावल, फल, पुष्प और वर्षा आदिसे पूर्ण हो ॥७२॥ शनि वर्षपति हो तो मध्यम वर्षा, ईतिका भय, रोग का भय और राजाओं का घोर संग्राम हो, समस्त पृथ्वी सैन्यसे क्षुभित हो ॥७३॥

जिस वर्षमें सूर्य मंत्री हो उस वर्षमें निरंतर विचित्र वर्षा हो, सब प्रकारके धान्यका विनाश, राजाओं अधिक कोपवाले हों, बाग बगीचे और

तुहिनकर सचिवे भूमानाविधसस्यवृष्टिसम्पूर्णा ।
द्विजसज्जनपशुवृद्धिः काननफलपुष्पजन्तूनाम् ॥७५॥
बहुलमरुद्गणसञ्चरमरुद्गामयभीतिरीतिरतुला स्यात् ।
क्षितितनये सति मन्त्रिणि शोषं समुपैति निष्पन्नसस्यम् ॥७६॥
मन्त्रिणि शशांकतनये प्रभूतवायुर्निरन्तरं वाति ।
मध्यमफलदा धरणी विभाति सुरसदृशलोकैश्च ॥७७॥
सचिवे वाचस्पतौ वसुधननिचये च सस्यसम्पूर्णम् ।
जगदखिलं जलपूर्णं प्रभूतराज्यास्सर्वेषां सुगमम् ॥७८॥
उच्चरति ध्वनिरनिशं विप्राणामध्वरे जगत्यखिले ।
अनिमिषपद्मपानन्दं कुर्वन् सचिवे सुरारिगुरौ ॥७९॥
मन्दफला निखिलधरा न चापि मुञ्चन्ति वारि वारिधराः ।
दिनकरतनये सचिवे प्रभया रहितं जगत्सर्वम् ॥८०॥

धान्यपफलम्—

सूर्ये धान्यपतौ वैर-मनावृष्टिर्भयं तथा ।

जंगल मानिका नाश हो ॥७४॥ चंद्रमा हो तो अनेक प्रकार के धान्य हो वृष्टि पूर्ण हो ब्राह्मण, सज्जन पशु फल पुष्प और प्राणियोंकी वृद्धि हो ॥७५॥ मंगल हो तो अधिक आधार वायु का संचार अधिक, रोगका भय और ईतिका अधिक उपद्रव हो तथा उत्पन्न होनेवाले धान्य सूख जाय ॥७६॥ बुध हो तो निरंतर बहुत वायु चले, पृथ्वी मध्यम फलदायक हो, देवताके सदृश लोक शोभा पावें ॥७७॥ बृहस्पति हो तो धन प्राप्ति अधिक समस्त धान्य उत्पन्न हो समस्त पृथ्वी जलपूर्ण हो और राज्योंमें उत्सव हों ॥७८॥ शुक्र मंत्री हो तो समस्त पृथ्वीमें ब्राह्मणों की वाणी देवोंके हर्षका आनन्द करनेवाला यज्ञके विषे निरंतर हो ॥७९॥ शनि मंत्री हो तो समस्त पृथ्वी मंद फलदायक हो, मेघ वर्षा करे या न भी करे, समस्त जगत कान्ति हीन हो ॥८०॥

अधर्मनिरता लोका राजानः क्रूरशासनाः ॥८१॥
चन्द्रे धान्येश्वरे धान्यं सुलभं जायतेऽखिलम् ।
द्विजगोकुलवृद्धिश्च राजानो मुदितास्तथा ॥८२॥
भौमे धान्येश्वरे धान्यं प्रियं स्याच्चौरतो भयम ।
वैरिवह्नेश्च बाहुल्यं प्रजाहानिः प्रजायते ॥८३॥
धान्येश्वरे चन्द्रसुते राजानः प्रीतिमाश्रिताः ।
क्वचित् क्वचिदवृष्टिः स्यात् सस्यं निष्पद्यते क्वचित् ॥८४॥
धान्येशे देवपूज्ये स्यादाम्नायस्य प्रवर्त्तनम् ।
वृष्टिः स्यान्महती धान्य प्रचुरं सुलभ तथा ॥८५॥
शुक्रे धान्याधिपे लोका मुदिताः स्युः परस्परम् ।
पशुसस्याभिवृद्धिः स्याद् धर्मोत्सवबलिवर्द्धनम् ॥८६॥
मन्दे धान्येश्वरे धान्यं प्रियं स्यात् क्षितिपालकाः ।
परस्परं विरुध्यन्ते दस्युभीतिरवर्षणम् ॥८७॥

जिस वर्ष में सूर्य धान्याधिपति हो उस वर्ष में अनावृष्टि तथा भय उत्पन्न हो, लोक पापकार्य में तत्पर हों और राजा क्रूर शासनवाले हों ॥ ८१ ॥ चन्द्रमा धान्याधिपति हो तो सब प्रकारके धान्य उत्पन्न हों ब्राह्मण तथा गौकी वृद्धि हो और राजा आनन्दित हों ॥८२॥ मंगल धान्यपति हो तो धान्य प्रिय यानि महँगा हो, चोर शत्रु और अग्निसे भय, प्रजाकी हानि अधिक हो ॥८३॥ बुध धान्येश्वर हो तो राजाओं अन्योऽन्य प्रीति करे, कहीं कहीं वर्षा न हो और क्वचित् धान्य उत्पन्न हो ॥ ८४ ॥ बृहस्पति धान्येश हो तो प्राचिन रीतिके अनुसार कार्य हो, महान् वर्षा तथा धान्य बहुत सस्ते हों ॥८५॥ शुक्र धान्येश हो तो सब लोग अन्योऽन्य आनन्दित हों, पशु और धान्यकी वृद्धि और धर्मोत्सव अच्छे हों ॥ ८६ ॥ शनैश्चर धान्येश हो तो धान्य प्रिय अर्थात् महँगा; राजाओं अन्योऽन्य विरोध करें, चोरोंका भय हो और वर्षा न हो ॥८७॥

मेघाधिपति फलम्—

मेघाधिपतौ सूर्ये स्वल्पं मेघा जलं विमुञ्चन्ति ।
राजक्षोमस्तस्करभीति स्याद्धर्मबाहुल्यम् ॥८८॥
चन्द्रे मेघाधिपतौ सस्यद्विजसौख्यवृद्धिरतुला स्यात् ।
सम्पूर्णजला पृथिवी विप्रजनसमृद्धिश्च ॥८९॥
भौमे जलदस्वामिनि वह्निभयं दस्युभीर्भुजङ्गभयम् ।
दुर्भिक्षाऽवृष्टिकृतैरुपद्रवै पीड्यन्ते त्रिजगत ॥९०॥
सौम्ये मेघस्वामिनि वृष्टिर्बहुलाज्जनानन्द' ।
लिपिलेखककाव्यगणितज्ञातिसुखं सस्यसम्पदपि ॥९१॥
गुरुमेघाधिपतिर्भवेत् सुवृष्टिसस्याभिवृद्धय' ।
क्षेम याज्ञिक जनसम्पत्ति साम्राज्य धर्मसंसिद्धि ॥९२॥
शुक्रो मेघाधिपति' कामिजनानां सुखावहो भवति ।
गाव' प्रभूतदुग्धा वसुधा बहुसस्यसम्पूर्णा ॥९३॥
शनौ मेघाधिनाथे स्याद वात्यामण्डलसम्भ्रम ।

जिस वर्ष में सूर्य मेघाधिपति हो उस वर्ष में वर्षा न हो राजाओं क्षुभित हों चोरोंका भय और धर्म की बहुलता हो ॥८८॥ चन्द्रमा मेघाधिपति हो तो धान्य द्विज और सुखकी बहुत वृद्धि हो, सम्पूर्ण पृथ्वी जल से भरित हो और विप्रजन लोगोंकी वृद्धि हो ॥८९॥ मंगल हो तो अग्नि का भय चोरोंका भय सर्पोंका भय दुर्भिक्ष और अनावृष्टि आदि उपद्रवों से तीनों ही जगत पीड़ित हों ॥ ९० ॥ बुध हो तो अधिक वर्षा से लोग आनंदित हों लिपि लेखक काव्य, गणित आदि कार्य करनेवाली ज्ञाति को सुख हो और धान्य संपदा प्राप्त हो ॥ ९१ ॥ गुरु मेघाधिपति हो तो अच्छी वर्षा हो धान्यकी वृद्धि हो कुशल, याज्ञिक, जनसम्पत्ति, साम्राज्य और धर्म की सिद्धि इनकी वृद्धि हो ॥ ९२ ॥ शुक्र मेघपति हो तो कामि लोगोंको सुख हो गौ अधिक दूध दें पृथ्वी बहुत प्रकारके धान्यसे पूर्ण हो

क्वचिद् वृष्टिः क्वचित् क्षेमं सस्यनाशः प्रजायते ॥६४॥

रसेशफलम्—

चन्दनकुंकुमगुग्गुल-तिलतैलैरण्डतैलमुख्यानि ।
प्रचुराणि रसान्यतुलं रसनाथे भास्करे सततं ॥६५॥

रसानीत्यत्र लिङ्गव्यत्यय आर्षः—

इक्षुविकारं त्वखिलं क्षीरविकारं च सर्वतैलानि ।
गन्धयुतानि च सर्वा-ण्यतिसुलभानि च रसाधिपे चन्द्रे ॥९६॥
भुवि रसनिचयचन्दन-कुसुमविशेषाश्च चन्दनाद्यं च ।
दुर्लभमवनीसूनौ रसाधिपे मधुरवस्तूनि ॥६७॥
शशितनये रसनाथे विषाग्नी सूंठी च हिंगुलशूनानि ।
घृततैलाद्यं निखिलं दुर्लभमिक्षूद्भवं सर्वम् ॥९८॥
रसनाथे द्विविजगुरौ चन्दनकर्पूरकन्दमूलानि ।
सुलभानि रसान्यतुलान्यतुलं सीदन्ति कुंकुमाद्यानि ॥९९॥
सुगन्धवस्तूनि सिते रसेशे, निर्गन्धवस्तूनि रसादिकानि ।

॥६३॥ शनि मेघाधिपति हो तो अधिक वायु चले, क्वचित् वर्षा, क्वचित् कल्याण और धान्यका नाश हो ॥ ६४ ॥

जिस वर्षमें रसाधिपति सूर्य हो उस वर्षमें चदन, कुकुम, गूगल, तिल, तैल, रेंडी का तैल आदिकी बहुत वृद्धि हो ॥६५॥ चद्रमा रसाधिपति हो तो इक्षुरस और दूध इन से बनी हुई सब चीज, सब प्रकार के तैल और सुगधी वस्तु ये सब सस्ते हों ॥६६॥ मगल रसाधिपति हो तो सब प्रकार के रस, चदन कुसुम और मधुर वस्तु ये सब दुर्लभ हों ॥ ६७ ॥ बुध रसाधिपति हो तो विष चित्रक सोंठ हिंग,लशून घी तैल और इक्षुरस से बनी हुई सब वस्तु दुर्लभ हों ॥६८॥ बृहस्पति रसाधिपति हो तो चदन कपूर कदमूल और सब प्रकारके रस सस्ते हों, तथा कुकुम आदिका नाश हो ॥६९॥ शुक्र रसाधिपति हो तो सुगधित वस्तु, तथा गधरहित वस्तु, दूध आदि सब

क्षीराणि सर्वाणि च कन्दमूल-फलानि पुष्पाणि बहूनि तानि ॥
रसेश्वरे सूर्यसुते धरित्र्यां, दुःखेन लभ्यानि रसायनानि ।
सुगन्धवस्तूनि घृतेक्षुकन्द-मूलानि धान्यानि सुलभं भुवि स्यात् ।१

सस्याधिपतिफलम्—

सस्यं चाग्रजधान्ये तद्धीशेऽर्केऽल्पसर्वसस्यानि ।
अतिविपुलं स्वीतिमयं कुलत्थयवकादिसम्पूर्णम् ॥१०२॥
सस्यपतौ तुहिनकरे रमणीयजनाभया स्मृता धरणी ।
फलपुष्पसस्यधारिभिरमिता भुविराजसौख्ययुता ॥१०३॥
सीदन्ति मरुनिषण्णा भुवि भौमे सस्यपे किलाप्यभयात् ।
अपराखिलधान्यभयं क्वचित् क्वचिद् भवति सस्यभयम् ॥४॥
अनिलहतं सस्यमिदं क्वचिद् भवमध्यवृष्टिसम्पन्नम् ।
शशितनये सस्यपतौ त्वपरं धान्यं प्रभूतफलम् ॥१०५॥
मरुपतौ दिविजगुरौ बहुविधसस्यार्थवृष्टिसम्पूर्णा ।

प्रचुरके रस, कंदमूल फल और पुष्प ये सब बहुत उत्पन्न हों ॥१ ॥
शनैश्चर रसाधिपति हो तो पृथ्वी में रसायन सुगन्धित वस्तु घी गुड़,
कंदमूल आदि ये सब कष्ट प्राप्त हों और सब सुलभ हों ॥ १ १ ॥

जिस वर्षमें सस्याधिपति सूर्य हो उस वर्षमें सब प्रकार के धान्य थोड़े
हों, किन्तु मस्य अधिक हो और कुलथी यवा आदि पूर्ण उत्पन्न हों ॥१ २॥
चंद्रमा धान्याधिपति हो तो मनुष्यों का आश्रय काम लायक मनोहर पृथ्वी
हो, फल पुष्प धान्य और असंख्य पूर्ण ऐसी राजाओंको सुख देनेवाली पृथ्वी
हो ॥१ ३॥ मंगल धान्येश हो तो पृथ्वी पर धान्य का समूह नाश करें,
उन्मार्ग का भयसे समस्त प्रकार के धान्यका भय रहे और क्वचित् सस्य
भय हो ॥१ ४॥ बुध धान्यपति हो तो मध्यम वर्षामें उत्पन्न हुए धान्य
वायुसे कदाचित् विनाश हो और दूसरे धान्य तथा फल अधिक हों ॥१ ५॥
बृहस्पति धान्येश हो तो बहुत प्रकार के धान्य और वर्षा पूर्ण हो, देवता तथा

टङ्कणमागधदेशे मध्यमसस्यार्घवृष्टिः स्यात् ॥१०६॥
दैत्येज्ये सस्यपतौ बहुविधफलपुष्पसस्यसम्पूर्णम् ।
अमरविडम्बितजनतासम्पूर्णं भाति भूमितलम् ॥१०७॥
मध्यमसस्यं क्षितितल-मीनतनये सस्यपे न राजभयम् ।
कोद्रवकुलत्थचणकै-र्माषैर्मुद्गैश्च विपुलतरम् ॥१०८॥

नीरसाधिपतिफलम्—

नीरसाधिपतौ सूर्ये ताम्रचन्दनयोरपि ।
रत्नमाणिक्यमुक्तादे-रर्घवृद्धिः प्रजायते ॥१०९॥
शुक्लवर्णादिवस्तूनां मुक्तारजतवाससाम् ।
प्रजायते ह्यर्घवृद्धिः शशांके नीरसाधिपे ॥११०॥
नीरसेशो यदा भौमः प्रवालरक्तवाससाम् ।
रक्तचन्दनताम्राणा-मर्घवृद्धिर्दिने दिने ॥१११॥
चित्रवस्त्रादिकं चैव शङ्खचन्दनपूर्वकम् ।
अर्घवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशो बुधो यदि ॥११२॥
हरिद्रापीतवस्तूनि पीतवस्त्रादिकं च यत् ।

मगधदेश में धान्य और वर्षा मध्यम हो ॥ १०६ ॥ शुक्र धान्येश हो तो बहुत प्रकार के फल पुष्प तथा धान्य से पूर्ण शोभायमान भूमितल हो ॥ १०७ ॥ शनैश्चर धान्याधिपति हो तो भूमितलमें मध्यम धान्य हो, राजभय न हो, कोद्रव, कुलथी, चणा, उर्द और मूँग ये अधिक हों ॥१०८॥

जिस वर्षमे नीरसाधिपति सूर्य हो उस वर्षमें ताम्बा, चदन, रत्न, माणिक्य, मोती आदि की मूल्यवृद्धि हो ॥ १०९ ॥ चन्द्रमा नीरसाधिपति हो तो सफेदवर्ण की वस्तु, मोती चादी और वस्त्र इनकी मूल्यवृद्धि हो ॥ ११० ॥ मगल नीरसेश हो तो मूगा, लालवस्त्र, रक्तचदन और ताम्बा इन की दिन दिन वृद्धि हो ॥ १११ ॥ बुध नीरसपति हो तो चित्र विचित्र वस्त्र तथा शंख और चदन आदि की वृद्धि हो ॥११२॥ बृहस्पति नीरसाधिपति

नीरसेशो यदा जीव सर्वेषां प्रीतिरुत्तमा ॥११३॥
कर्पूरागरुगन्धानां हेममौक्तिकवाससाम् ।
महर्घवृद्धिः प्रजायेत मन्द नीरसनायके ॥११४॥

अथ मेषादिप्रवेशाद् आर्द्राप्रवेशो तिथ्यादिफलं वाक्यमोक्तम्—

प्रतिपद्यपि चार्द्रायां प्रवेशः शुभदो रवेः ।
द्वितीयायां सस्यवृद्धिस्तृतीयायामीतिकारणम् ॥११५॥
चतुर्थ्यामशुभं प्रोक्तः पञ्चम्यामुत्तमोत्तमः ।
षष्ठ्यां धनसमृद्धिः स्यात् सप्तम्यां क्षेममुत्तमम् ॥११६॥
अष्टम्यामल्पवृद्धिः स्यान्नवम्यामीतिवर्धनम् ।
दशम्यां शुभदं प्रोक्त एकादश्यां सुभिक्षकृत् ॥११७॥
द्वादश्यामन्नसम्पत्त्यै त्रयोदश्यां जलप्रदं ।
मूले स्वर्धविनाशाय पूर्णा पूर्णफलप्रदा ॥११८॥
अमायां राज्यनाशाय पक्षयोरुभयोरपि।

हो तो हल्दी आदि सब पीत वस्तु और पीतलका की वृद्धि हो, सबके उपर उत्तम प्रीति हो । शुक्रका फल भी इसी तरह समझना ॥११३॥ शनि रसाधिपति हो तो कपूर अगर व दि सुगंधित वस्तुओं की तथा सुवर्ण मोती और वस्त्र इनकी मूल्यवृद्धि हो ॥ ११४ ॥

सूर्य आर्द्रा नक्षत्र पर यदि प्रतिपदाको प्रवेश करे तो शुभ दायक है, द्वितीयाको धान्य वृद्धि तृतीयाको ईतिका भय ॥११५॥ चतुर्थीको अशुभ, पंचमी को उत्तम षष्ठी को धनसमृद्धि सप्तमी को कुशल ॥११६॥ अष्टमी को वर्षा थोड़ी नवमी को ईतिका उपद्रव, दशमी को शुभदायक, एकादशी को सुभिक्ष कारक ॥११७॥ द्वादशीको धान्यसंपत्ति त्रयोदशीको जलदायक, चतुर्दशीको धर्मनाशकारक पूर्णिमाको पूर्णफलदायक हो ॥११८॥ और अ मावस के दिन आर्द्रा नक्षत्र पर सूर्य आवे तो राज्यका नाश हो, स्वपक्षीय और पर (शत्रु) पक्षीय ये दोनों पक्षके राज्यका विनाश हो और अपनी पक्ष

राज्ञां स्वपक्षदेशीया रिपवः परपक्षगाः ॥११६॥

वारफलम्—

रौद्रे रवेर्भानुवारे प्रवेशः पशुनाशनः ।
सोमे सुभिक्षदः प्रोक्तो भौमे निधनमाप्नुयात् ॥१२०॥
बुधे क्षेमं सुभिक्षं च गुरौ चार्थसमृद्धये ।
शुक्रे शान्तिकरः प्रोक्तो मन्दे मन्दफलं भवेत् ॥१२१॥

नक्षत्रयोगफलम्—

प्रविष्टे रौद्रनक्षत्रे ह्यश्विन्यां तु शुभं भवेत् ।
भरण्यामशुभं प्रोक्तं कृत्तिकायामवर्षणम् ॥१२२॥
धातृद्वये सुभिक्षं च रौद्रर्क्षे रौद्रकृद् भवेत् ।
पुष्ये जलप्लुता लोका ह्यदितिश्चाभिवृद्धये ॥१२३॥
सार्पे भे दारुणं दुःखं सर्वसौख्यविनाशनम् ।
मघायां स्वल्पवृष्टिः स्याद् भाग्ये कीर्त्तिकरं भवेत् ॥१२४॥

के भी शत्रु के पक्षमें मिल जावें ॥ ११६ ॥

सूर्यका आर्द्रा नक्षत्रमें रविवारके दिन प्रवेश हो तो पशुओंका नाश करें, सोमवार के दिन सुभिक्ष और मगल के दिन मरण करे ॥ १२० ॥ बुधवार के दिन क्षेम और सुभिक्ष करे, गुरुवार के दिन अर्थसिद्धि हो, शुक्र के दिन शान्तिदायक और शनिवार के दिन प्रवेश हो तो मदफल दायक है ॥ १२१ ॥

सूर्य आर्द्रानक्षत्र में अश्विनीनक्षत्र के दिन प्रवेश हो तो शुभ, भरणी नक्षत्रके दिन अशुभ, कृत्तिकाके दिन वर्षा का नाश हो ॥१२२॥ रोहिणी और मृगशिरके दिन सुभिक्षकारक, आर्द्राके दिन भयानक, पुनर्वसुके दिन वृद्धिकारक, पुष्यके दिन प्रवेश हो तो देश जल से प्लवित हो याने अच्छी वर्षा हो ॥१२३॥ आश्लेषा के दिन भयकर दुःख और समस्त सुखों का विनाश, मघाके दिन थोडी वर्षाकारक और पूर्वाफाल्गुनीके दिन कीर्त्तिकारक

उत्तरात्रितये वृष्टिः करं सर्वसुखावहम् ।
चित्रायां चित्रधान्यानि सदा शुभफलं भवेत् ॥१२५॥
स्वातौ सस्याभिवृद्धिः स्याद् विशाखारोगनाशनम् ।
मैत्रे सर्वमहीपालाः सन्तुष्टाः सर्वजन्तवः ॥१२६॥
ज्येष्ठे सर्वभयं कुर्याद् मूले सर्वभयावहः ।
जलर्क्षे चातिवृष्टिः स्याद् विष्णुभे श्रवणे शुभम् ॥१२७॥
वासवर्क्षे तु धरणी सम्पूर्णफलदायिनी ।
शतभे जलसम्पूर्णा पूर्वाभाद्रे तु शोभनम् ॥१२८॥
भूपध्वंसः पौष्णनक्षत्रे विष्कम्भपञ्चकं शुभम् ।
सुकर्मा ध्रुववृद्धी च हर्षणाः सिद्धिसाधकौ ॥१२९॥
शिवसिद्धौ शुभः शुक्लः ऐन्द्र एते शुभावहाः ।
शेषास्तु मध्यमाः सर्वे स्वनामानुगताः फले ॥१३०॥

आर्द्राप्रवेशे वेलामानम्—

है ॥१२४॥ तीनों उत्तरा के दिन वृष्टिकारक और मनुष्योंको सुखकर हो, चित्रामें चित्रविचित्र धान्य हो तथा सर्वदा शुभफलदायक हो ॥१२५॥ स्वाति के दिन धान्यकी वृद्धि विशाखाके दिन रोग नाशक, अनुराधाके दिन प्रवेश हो तो समस्त राजाओं तथा समस्त प्राणी संतुष्ट हों ॥१२६। ज्येष्ठा के दिन सब प्रकारके भयदायक मूलके दिन सब भयदायक पूर्वाषाढ़ा के दिन बहुत वृष्टि हो श्रवणके दिन शुभ ॥१२७॥ धनिष्ठाके दिन पृथ्वी सम्पूर्ण फलदायक हो शतभिषाके दिन जलसे पूर्ण और पूर्वाभाद्रपदके दिन प्रवेश हो तो शुभ हो ॥ १२८ ॥ और सूर्यका आर्द्रा नक्षत्रमें रेवतीनक्षत्र के दिन प्रवेश हो तो राजाका विनाश हो ॥ योगफल— विष्कंभ आदि पांच योगके दिन प्रवेश हो तो शुभ है, सुकर्मा ध्रुव वृद्धि हर्षण, सिद्धि साधक, शिव, सिद्धि, शुभ शुक्ल और ऐन्द्र ये सब शुभकारक हैं और बाकीके योग अपने नाम सदृश मध्यम फल देनेवाले हैं ॥१२९॥ १३० ॥

पूर्वाह्णकाले जगतां विपत्ति-र्माध्याह्निके त्वल्पफला च पृथ्वी ।
अस्तंगतार्द्रा बहुसस्यसम्पत् ,क्षेमं सुभिक्षं स्थिरमर्द्धरात्रौ ॥१३१॥
आर्द्राप्रवेशे यदि भास्करस्य, चन्द्रस्त्रिकोणे यदि केन्द्रगो वा ।
जलाश्रये सौम्यनिरीक्षिते च, सम्पूर्णसस्या वसुधा तदा स्यात् ॥
दिवार्द्रा सस्यनाशाय रात्रौ सस्यविवृद्धये ।
अस्तगेऽर्केऽर्द्धरात्रे वा समर्घं बहुवृष्टयः ॥१३३॥

अथ वर्षेशमन्त्रिप्रसङ्गाद् वर्षजन्मलग्न विचार्यते —

चैत्रमासे पुनः प्राप्ते लोकानां हितहेतवे ।
मेषसंक्रान्तिवेलायां लग्नं शोध्यं शुभाशुभम् ॥१३४॥
यदा शुभग्रहैर्दृष्टं लग्नं स्यात् तु तदा शुभम् ।
धनधान्यादिसम्पूर्णं सर्वं वर्षं शुभावहम् ॥ १३५ ॥
भावा द्वादश ते मासाः सौम्याः क्रूराः ग्रहाः पुनः ।
तेषु मासेषु दिशि च फलं ज्ञेयं शुभाशुभम् ॥१३६॥

सूर्य आर्द्रा नक्षत्र पर पूर्वाह्णमे प्रवेश हो तो जगत् को दुःख कारक, मध्याह्नमें प्रवेश हो तो पृथ्वी थोड़ा फलदायक हो, दिनान्त के समय प्रवेश हो तो धान्य सपत्ति बहुत हो और अर्द्धरात्रिमें प्रवेश हो तो क्षेम और सुभिक्ष हो ॥ १३१ ॥ जब सूर्यका आर्द्रा नक्षत्र पर प्रवेश हो उस समय चन्द्रमा त्रिकोण या केन्द्रमें हो, तथा जलचर राशि में हो और शुभग्रह देखते हों तो सम्पूर्ण पृथ्वी धान्यसे पूर्ण हो ॥ १३२ ॥ दिनमें आर्द्रा का प्रवेश हो तो धान्यका विनाश, रात्रिमें प्रवेश हो तो धान्यकी वृद्धि, और अस्त समय अथवा आधीरातमे प्रवेश हो तो अन्न सस्ते हों और वर्षा अच्छी हो ॥ १३३ ॥

लोगोंके हित के लिये चैत्रमास में मेषसंक्रान्ति के समय लग्नका शुभाशुभ विचार करें ॥१३४॥ यदि लग्नमें शुभग्रह की दृष्टि हो तो शुभ और धनधान्य से पूर्ण समस्त वर्ष सुखकारी हो ॥१३५॥ बारह भाव हैं वे बारह मास हैं, जिसमे सौम्य या क्रूर ग्रह हों उस मासमे और उनकी दिशामें शुभा-

मेषप्रवेशलग्ने च यदि स्याद् वर्षजन्मनि ।
सप्तमस्थो यदा पापो धान्यजातं विनाशयेत् ॥१३७॥
धने व्यये च सौम्यश्चेत् केन्द्रे वा मेषसंक्रमे ।
सर्वे शुभग्रहदृष्टः सुभिक्षं व्यत्ययोऽन्यथा ॥१३८॥

मतान्तरे पुनरेवम्—

ज्योतिर्विदश्चैत्रमासस्य शुक्लपक्षस्य मूलतः ।
प्रतिपत्प्रवेशायां लग्नं शोध्यं शुभाशुभम् ॥१३९॥
मेषलग्ने तु पूर्वस्यां दुर्भिक्षं राजविग्रहः ।
दक्षिणस्यां सुभिक्षं स्याद् बहुधान्यरसा च भूः ॥१४०॥
धान्यानां विक्रये लाभः पूर्णमेघमहोदयः ।
घृततैलादिवस्तूनां पण्यानां च महर्घता ॥१४१॥
उत्तरस्यां सुभिक्षं स्याद् राज्ञामुद्वेगकारणम् ।
मध्यदेशे महावृष्टिर्निष्पत्तिर्धान्यसन्ततेः ॥१४२॥
पृष्ठेऽपि पश्चिमे कालः पूर्वस्यां राजविग्रहः ।

शुभ फल का विचार करना ॥१३६॥ मेषप्रवेशलग्नमें यदि वर्ष प्रवेश हो और सप्तम स्थानमें पाप ग्रह हो तो धान्यका नाश हो ॥ १३७॥ अथवा मेषसंक्रान्ति के प्रवेशमें धनस्थान व्यय स्थान और केन्द्र इनमें शुभग्रह हो, तथा उसमें सब पर शुभग्रह की या मित्रग्रह की दृष्टि हो तो सुभिक्ष होता है अन्यथा दुर्भिक्ष हो ॥ १३८ ॥

ज्योतिषियोंको चैत्र मासके शुक्लपक्षकी प्रतिपदाके दिन प्रारंभमें वर्ष सम्बन्ध शुभाशुभ विचार करना चाहिये ॥१३९॥ मेष लग्न में वर्ष प्रवेश हो तो पूर्व दिशामें दुर्भिक्ष और राज्य विग्रह । दक्षिण में सुभिक्ष, पृथ्वी धान्य और रससे पूर्ण हो ॥१४०॥ धान्यका बेचनमें लाभ, पूर्ण मेघ बरसे, घी, तेल आदि वस्तुओंकी महर्घता हो ॥१४१॥ उत्तरमें सुभिक्ष, राजाओं में उद्वेग, मध्यदेशमें महावर्षा और धान्यकी प्राप्ति हो ॥१४२॥ पश्चिममें

उदग्धान्यार्द्धनिष्पत्ति-र्दक्षिणस्यां विकालता ॥१४३॥
मिथुने बहुलं युद्धं पूर्वस्यां धान्यविक्रयः ।
उदग्दक्षिणयोर्मेघा बहवो धान्यसङ्ग्रहः ॥१४४॥
पश्चिमायां स्वल्पमेघा-श्छत्रभंगश्च विग्रहः ॥
मध्यदेशेऽर्द्धनिष्पत्ति-श्चतुष्पदसरोगता ॥१४५॥
कर्के सुखानि पूर्वस्या-मुत्तरस्यां तु विग्रहः ।
स्यान्मासनवकं यावद् दुर्भिक्षं पश्चिमे दिशि ॥१४६॥
धान्ये मासाष्टकं याव-च्चतुष्पदे च विक्रयः ।
दक्षिणस्यां मध्यदेशे सुखं पीडा चतुष्पदे ॥१४७॥
सिंहलग्ने दक्षिणस्यां दंष्ट्राभयमुदीर्यते ।
धान्ये समर्घता मास-षट्कं यावद् घनो महान् ॥१४८॥
पश्चिमायां धातुवस्तु-फलादीनां महर्घता ।
उत्तरस्यां महावृष्टिः सुखं राज्ये प्रजासु च ॥१४९॥
पूर्वस्यामर्द्धनिष्पत्तिः श्रेयोग्रे मासपञ्चकात् ।

वर्ष प्रवेश हो तो पश्चिममे दुष्काल । पूर्वमें राजविग्रह । उत्तरमे धान्यकी प्राप्ति मध्यम और दक्षिणमें विशेष काल हो ॥१४३॥ मिथुन लग्नमें वर्ष प्रवेश हो तो युद्ध विशेष हो, पूर्वमें धान्यका विक्रय करना, उत्तर और दक्षिणमें वर्षा बहुत हो धान्यका संग्रह करना उचित है ॥१४४॥ पश्चिममें वर्षा थोड़ी, छत्रभंग और विग्रह हो, मध्यदेशमें अर्द्ध प्राप्ति और पशुओं में रोग हो ॥ १४५ ॥ कर्क लग्नमे वर्ष प्रवेश हो तो पूर्व में सुख, उत्तर में विग्रह हो, पश्चिम में नव मास दुष्काल रहे ॥१४६॥ आठ मास पर्यन्त धान्य और पशुओंको वेचें, दक्षिणमें मध्यदेशमें सुख और पशुओंको पीडा हो ॥१४७॥ सिंह लग्नमे वर्ष प्रवेश हो तो दक्षिणमें दाढवाले जन्तुओंका भय, धान्य छः मास तक सस्ते रहे और वर्षा अधिक हो ॥१४८॥ पश्चिममें धातु वस्तु और फलादिक महँगे हों । उत्तरमे महावर्षा, राजा और प्रजाको सुख हो ॥१४९॥

मध्यदेशे राजयुद्धं मासपञ्चकसुत्थम ॥१५०॥
कन्यायां सुखिता प्राच्यां घृते महर्घता मता ।
मञ्जिष्ठादिसमर्घत्वं यावन्मासत्रयं मिथेन ॥१५१॥
मारिर्दक्षिणदेशे स्यात् तथा पशुरुपद्रव ।
लोकदुःखं पश्चिमायां विग्रहाऽन्नमहर्घता ॥१५२॥
चतुष्पदसुखं प्राच्यामुदीच्यां राजविग्रह ।
मध्यदेशे प्रजा भङ्ग समघत्वं घृते पुन ॥१५३॥
तुलामेषे मध्यदेशे छत्रभङ्गश्च विग्रह ।
धान्यस्य विक्रय प्राच्यां छत्रभङ्गमुपद्रव ॥१५४॥
दुर्भिक्ष बहुला वायु स्वल्पमेघप्रवर्षणम् ।
पश्चिमायां महायुद्धं पन्नगभय महर्घता ॥१५५॥
दक्षिणस्यां सुखं लोके दुर्भिक्ष चोत्तरापथे ।
मासत्रयं पश्चिमायां किञ्चिदुत्पातसम्भव ॥१५६॥
वृश्चिके पश्चिमे देशे दुर्भिक्षं मधमासिकम् ।

पूर्वमें सर्व धान्य मध्यम प्राप्ति आगे पाच महीनेमें धान्य भाव हो, मध्यदेश में पाच महीने राजाओंमें युद्ध और देश उजाड हो ॥१५० ॥ कन्या राशि में वर्ष प्रवेश हो तो पूर्वमें मनुष्य सुखी घी महँगा और तीन मास तक मँजीठ आदि सस्ते रहे ॥१५१॥ दक्षिण देशमें मारीका रोग तथा पशुका उपद्रव हो और लोक दुःखी हो । पश्चिम में विग्रह हो और धान्य महँगा हो ॥१५२॥ पूर्वमें पशुओंको सुख उत्तर में राजविग्रह मध्यदेशमें प्रजा का नाश और घी सस्ते हो ॥१५३॥ तुला राशिमें वर्ष प्रवेश हो तो मध्यदेश में छत्रभंग और विग्रह हो । पूर्व देशमें धान्य का विक्रय करना, छत्रभंग का उपद्रव हो ॥१५४॥ दुर्भिक्ष हो बहुत वायु चले और थोडी वर्षा हो । पश्चिममें बडा युद्ध सर्प आदि दाँतवाले जन्तुओंका भय और अन्नका भाव तेज हो ॥१५५॥ दक्षिणमें लोक सुखी हो, उत्तरमें दुर्भिक्ष हो और पश्चिम

उदीच्यामर्द्धनिष्पत्तिः समर्घा धातवस्तदा ॥१५७॥
पूर्वस्यां विग्रहो राज्ञां दुःखं मासत्रयं जने ।
पश्चात् सुखं धान्यनाशो मध्यदेशे प्रजायते ॥१५८॥
दक्षिणस्यां देशभङ्गो भाविवर्षे प्रजायते ।
धातूनां विक्रयः कार्यः परतो मासपञ्चकात् ॥१५९॥
धनुर्लग्ने तूत्तरस्यां पूर्वस्यां च सुखं नृणाम् ।
सुभिक्षं प्रबला वृष्टि-मध्यदेशे सरोगता ॥१६०॥
पश्चिमायां घृतं धान्यं समर्घं मासपञ्चकात् ।
दक्षिणस्यां सुखं लोके किञ्चित्पीडा चतुष्पदे ॥१६१॥
मकरे च महोत्पात उत्तरस्यां नृपक्षयः ।
वर्षमेकं सुनिष्पत्तिः पश्चिमायां महासुखम् ॥१६२॥
मध्यदेशेऽर्द्धनिष्पत्ति. किञ्चिद् धान्यमहर्घता ।
अकाले मेघवृष्टिः स्या-ल्लाभो धान्यस्य विक्रयात् ॥१६३॥

में दो महीने कुछ उत्पातका सभव रहे ॥१५६॥ वर्ष प्रवेशमें वृश्चिक लग्न हो तो पश्चिम देशमें नवमास तक दुर्भिक्ष रहे । उत्तरमे अन्नकी अर्द्धप्राप्ति, और धातु सस्ती हों ॥१५७॥ पूर्वदेश के राजाओं में विग्रह, तीन महीने मनुष्योंको दु.ख, पीछे सुख और मध्यदेश में धान्य नाश हो ॥ १५८ ॥ दक्षिणमें आगामी वर्षमें देशभग हो, पाच महीने बाद धातुओं का विक्रय करना ॥१५९॥ धनु लग्नमें वर्ष का प्रवेश हो तो उत्तर और पूर्व देश के मनुष्योंको सुख, सुकाल और प्रबल वर्षा हो। तथा मध्यदेश में रोग हों ॥१६०॥ पश्चिममे पाच महीने बाद घी धान्य सस्ते हों, दक्षीण में लोगों को सुख और पशुओंको कुछ पीडा हो ॥१६१॥ मकर लग्नमें वर्ष प्रवेश हो तो उत्तर में बडा उत्पात, नृपक्षय, पश्चिम मे एक वर्ष धान्य अच्छे उत्पन्न हो और बडा सुख हो ॥१६२॥ मध्यदेश में अर्द्ध प्राप्ति होने से धान्य कुछ महँगे हों, अकालमें मेघ वर्षा हो और धान्यको वेचनेसे लाभ

कुम्भे सुखानि पूर्वस्या-मुदग्दुर्भिक्षसम्भवः ।
हाहाकारः पश्चिमायां भवेद् धान्यमहर्घता ॥१९४॥
दक्षिणस्यां विग्रहः स्याद् मध्यदेशे महासुखम् ।
मीनलग्ने दक्षिणस्यां सुखी लोकोऽन्नसङ्ग्रहः ॥१९५॥
मध्यदेशे धान्यनाशः छत्रभङ्गः क्वचिद् भवेत् ।
एवं द्वादशधा लग्नं ज्ञेयं वत्सरजन्मनि ॥१९६॥

इतिजन्मलग्नफलम् ।

अथाम्बुद्वारम्—

प्रागुक्तमभिसन्धारं यथास्थानं विचार्यते ।
यावांश्च पवनस्तावान् घनस्तेन सुखी जनः ॥१९७॥

चैत्रमासफलम्—

चैत्रेकृष्णद्वितीयायां निरभ्रं चेन्नभो भवेत् ।
तदा भाद्रपदे मासे ज्ञेयो मेघमहोदयः ॥१९८॥
चैत्र कृष्णतृतीयायां वार्दलं यस्त्रं यदा ।
जलं पतति चेत्तत्र तदा वृष्टिस्तु कार्त्तिके॥१९९॥

हो ॥१९३॥ कुम्भमें वर्ष प्रवेश हो तो पूर्वमें सुख, उत्तरमें दुर्भिक्षका संभव पश्चिम में हाहाकार तथा धान्य महँगे हो ॥१९४॥ दक्षिण में विग्रह और मध्यदेश में महा सुख हो। मीन लग्नमें वर्ष प्रवेश हो तो दक्षिण में लोक सुखी हो धान्यका संग्रह करना उचित है ॥१९५॥ मध्यदेशमें धान्यका नाश और क्वचित् छत्रभंग हो। इसी तरह बारह प्रकारके लग्न वर्ष प्रवेश के समय जानना चाहिये ॥१९६॥ इति वर्षलग्नफलम् ॥

वायुका द्वार (प्रकरण) पहले कहा है वहा से उसको विचार लेना, जितना वायु हो उतनी वर्षा हो उससे लोग सुखी हो ॥१९७॥ चैत्र-मासका फल—चैत्रकृष्ण द्वितीया के दिन यदि आकाश बादल रहित हो तो भाद्रपदमें मेघका उदय जानना ॥ १९८॥ चैत्रकृष्ण तृतीयाके दिन बादल

चतुर्थ्यां चैत्रकृष्णस्य वर्षा दुर्भिक्षकारिणी ।
पञ्चम्यामसिते चैत्रे न दृष्टं दुर्दिनं शुभम् ॥१७०॥

मतान्तरे पुनः—
चैत्रकृष्णद्वितीयादि-पञ्चके जलवर्षणम् ।
अग्रे जलदरोधाय कथितं पूर्वसूरिभिः ॥१७१॥

यदुक्तं श्रीहीरसूरिपादैः—
चित्तस्स किसणि पक्खे बीया तीया चउत्थि पंचमीया ।
वरसेइ पुव्ववाओ दूरे मेहुब्भवो तासु ॥१७२॥

लौकिकमपि—
चैत्रह छट्टि भडूली, नवि बद्दल नवि वाय ।
तौ नीपजे अन्न सवि, किसी म करजे धाय ॥१७३॥

कृष्णापञ्चम्याः परं नैर्मल्यं नव दिनानि यावत् प्रागुक्तम् ।
चैत्रस्य कृष्णपञ्चम्यां हस्तनक्षत्रसङ्गमे ।
न विद्युद्गर्जिताभ्राणि तदा स्याद् वत्सरः शुभः ॥१७४॥

प्रबल हो और वर्षा भी हो तो कार्त्तिकमासमें वर्षा हो ॥ १६९ ॥ चैत्रकृष्ण चतुर्थीके दिन वर्षा हो तो दुर्भिक्ष कारक है और पचमीके दिन दुर्दिन अर्थात् बादलोंसे आकाश घिरा हुआ देखने में न आवे तो शुभ होता है ॥ १७०॥ चैत्रकृष्ण द्वितीया आदि पाच दिन में जलवर्षा हो तो आगे वर्षा का रोध (रूकावट) हो ऐसा प्राचीन आचार्योंने कहा है ॥ १७१ ॥ श्रीहीरविजयसूरिने कहा है कि—चैत्र कृष्ण पक्षकी दूज, तीज, चौथ और पचमी के दिन वर्षा हो तथा पूर्वका वायु चले तो मेघ का उदय विलंब से हो ॥१७२॥ लौकिकमें भी कहते है कि—चैत्रकृष्ण षष्ठी को बादल और वायु न हो तो समस्त धान्य उत्पन्न हों इसमें संशय नहीं ॥१७३॥ चैत्रकृष्ण पचमी से नव दिन निर्मलता हो ऐसा पहले कहा है । चैत्रकृष्ण पचमी के दिन हस्त नक्षत्र हो, तथा बिजली गर्जना या बादल न हो तो वर्ष शुभ होता है ॥

त्रयोदशी च नवमी पञ्चमी कृष्णचैत्रगा ।
एतासु विद्युद्गर्जाभ्रसम्भवो वृष्टिहानिकृत् ॥१७४॥
चैत्रस्य कृष्णसप्तम्यां मूलर्क्षे यदा नभः ।
रक्तं यस्तु समर्घं च भवत्येव न संशयः ॥१७५॥
यदुक्तं—अहवा पंचमी नवमी तेरस दिवसम्मि जइ हवइ गज्जो ।
ता चत्तारि मासा होइ न वुट्ठी न संदेहो ॥१७७॥
चैत्रस्य शुक्ला प्रतिपद् द्वितीया वा तृतीयका ।
चतुर्थी वृष्टियुक्ता च चातुर्मास्ये तदा घनः ॥१७८॥
मतान्तरे पुनः—
चैत्राद्यदशमि मेघ गर्जित पवन तथा ।
श्रावणे भाद्रमासे च तदा वृष्टिर्न जायते ॥१७९॥
भाषायामप्यत्र साक्षी—
गाज बीज छाया नवि होय, चउथ मासी चैत्रइ धुरि जोय ।
पूनिम चित्रा हुइ घणि घणु, दामइ आगम हुई घमर्णु ॥१८०॥

१७४ ॥ चैत्रकृष्ण पक्ष की पञ्चमी नवमी और त्रयोदशी के दिन बिजली गर्जना या बादल हो तो वर्षा की हानि होती है ॥१७५॥ चैत्रकृष्ण सप्तमी के दिन आकाश बादलों से आच्छादित हो तो सब वस्तु सस्ती हो इसमें सन्देह नहीं ॥१७६॥ कहा है कि—चैत्रकृष्ण पक्ष की पञ्चमी नवमी और त्रयोदशी के दिन मेघ गर्जना हो तो चार मास वर्षा न हो इसमें संदेह नहीं ॥१७७॥ चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा दूज तीज और चौथ के दिन वर्षा हो तो चौमासे में अच्छी वर्षा होवे ॥१७८॥ मतान्तर से कहा है कि—

पञ्चमी सप्तमी शुक्ला चैत्रे तथा त्रयोदशी ।
एतासु वार्दलं श्रेष्ठं तत्र वर्षा तु दुःखकृत् ॥१८१॥
चैत्रे शुक्ले यदार्द्रादिस्वात्यन्तेषु साभ्रता ।
जलप्रवाहवृष्टिर्नो तदा संवत्सरः-शुभः ॥१८२॥
एकादश्यां रवौ वारे चैत्रे शुक्लेऽपि दुर्दिनम् ।
तदा युगन्धरी ग्राह्या लाभो मासचतुष्टये ॥१८३॥
चैत्रमासे तिथिः कृष्णे चतुर्दशी तथाष्टमी ।
तत्राभ्रमुत्तरो वायुः शुभाय जगतो भवेत् ॥१८४॥
चैत्रस्य शुक्लपक्षे तु त्रयोदश्यां रजोऽनिलः ।
अथवा धूमरीपातो मेघस्तत्र न वर्षति ॥१८५॥
चैत्रे दशम्यां शनिना मघायोगे यदाम्बुदः ।
वर्षेत्तदा सर्ववर्षे धान्यस्यार्घो न जायते ॥१८६॥इति चैत्रः ॥

वैशाखमासफलम्——

वैशाखकृष्णप्रतिप-च्छुद्धच्छन्नैव भास्करः ।

शुक्ल पचमी सप्तमी और त्रयोदशी के दिन बादल हो तो अच्छा (श्रेष्ठ) है परन्तु वर्षा हो तो दुःखकारक हो ॥१८१॥ यदि चैत्र शुक्लपक्ष आर्द्रा आदि नक्षत्र से स्वाति नक्षत्र तक में बादल सहित हो किंतु जलप्रवाह रूप वर्षा न हो तो वर्ष शुभ होता है ॥१८२॥ चैत्र शुक्ल एकादशी रविवार को दुर्दिन रहे तो युगंधरी (जुवार) का संग्रह करना इससे चार मासमे लाभ होता है ॥१८३॥ चैत्र मासके कृष्णपक्षमें चतुर्दशी तथा अष्टमीके दिन बादल हों और उत्तरका वायु चले तो जगतको शुभके लिये होता है ॥१८४॥ चैत्र शुक्ल त्रयोदशीके दिन रज युक्त वायु चले या धूमरीपात हो तो मेघ न बरसे ॥१८५॥ चैत्र शुक्ल दशमी शनिवार मघानक्षत्र सहित हो और उस दिन वर्षा भी बरसे तो समस्त वर्षमें धान्यका मूल्य प्राप्ति न हो ॥ १८६ ॥

वैशाख कृष्ण प्रतिपदाके दिन आकाशमें प्रातःकाल सूर्य मेघ से आ-

मेघैराच्छादिते व्योम्नि संवत्सरहिताय सः ॥१८७॥
शुक्ले कृष्णे च वैशाखे चतुर्दश्यष्टमीदिने ।
गर्जाविद्युत्पयोवर्षा वर्षानन्दविधायिकाः ॥१८८॥
मतान्तरे श्रीहीरगुरवः—
अइ वैसाख चारह तिथि सारी, आठमि चउदसि सुकल अंधारी ।
गाज बिज आभ जवि दिसइ, चार मास बरसइ निसदिसइ ॥
वैशाखकृष्णैकादश्यां वार्दलं प्रबलं भवेत् ।
तदा धान्यानि विक्रीय कर्तव्यं कृषि कर्मणि ॥१९०॥
वैशाखशुक्लप्रतिपद्द्वितीया-दिनद्वये वार्दलकं शुभाय ।
यदा तृतीयादिवसेऽपि चाभ्रं वृष्टिर्विशिष्टा परमार्तरोगः ।१९१।
वैशाखशुक्लदशमी मघे न वार्दलं शुभम् ।
राधेऽश्विनी दिने वृष्ट्या रक्तवस्तुमहर्घता ॥१९२॥
वैशाखसितपञ्चम्यां मेघवार्दलसम्भवे ।

आच्छादित आकाश हो तो संवत्सर अच्छा होता है ॥१८७॥ वैशाख के शुक्ल या कृष्णपक्षकी चतुर्दशी या अष्टमीके दिन गर्जना हो बिजली चमके और जलवर्षा हो तो वर्ष आनंददायक होता है ॥१८८॥ श्री हीरसूरिने भी कहा है कि— यदि वैशाखके शुक्ल या कृष्णपक्षकी आठम और चौदश इन तिथियों में गर्जना हो, बिजली चमके और आकाश बादलोंसे आच्छादित रहे तो चार मास हमेशा वर्षा बरसे ॥ १८९ ॥ वैशाख कृष्ण एकादशी के दिन बादल प्रबल हो तो धान्य को बेचकर खेती करना चाहिये ॥ १९० ॥ वैशाख शुक्ल की प्रतिपदा और द्वितीया, ये दोनों दिन बादल हो तो शुभ होता है । यदि तृतीया के दिन बादल हो तो वर्षा अच्छी हो किन्तु पीछे रोग हो ॥१९१॥ वैशाख शुक्ल दशमी और एकादशी ये दो दिन बादल न हो तो अच्छा हो । वैशाख में अश्विनीनक्षत्र के दिन वर्षा हो तो लाल वस्तु महँगी हो ॥१९२॥ वैशाख शुक्ल पंचमी के दिन वर्षा या बादल हो

सङ्ग्रहः सर्वधान्यानां लाभो भाद्रपदे भवेत् ॥१९३॥
राधे शुक्ले प्रतिपदि सप्तम्यादिदिनत्रये ।
वार्दलानां समुदये शीघ्रं वृष्टिं विनिर्दिशेत् ॥१९४॥
एकादशीत्रये शुक्ले दुर्भिक्षं वृष्टिर्वादलात् ।
राधे च पूर्णिमावृष्टि-र्भाद्रे धान्यमहर्घकृत् ॥१९५॥
पञ्चम्यामथ सप्तम्यां नवम्येकादशीदिने ।
त्रयोदश्यां च वैशाखे वृष्टौ लोके शुभं भवेत् ॥१९६॥इति॥

ज्येष्ठमासफलम्—

अष्टम्यां च चतुर्दश्यां ज्येष्ठे शुक्ले तथाऽसिते ।
कृष्णे दशम्यां वृष्टिः स्याद् भाद्रमासेऽतिवृष्टये ॥१९७॥
ज्येष्ठस्य दशमीरात्रौ यदि चन्द्रो न दृश्यते ।
जलरोधाय तद्वर्षे निश्छत्रापि मही भवेत् ॥१९८॥
ज्येष्ठस्य कृष्णैकादश्यां द्वादश्यां वाऽभ्रगर्जितम् ।

तो सब धान्य का संग्रह करना भाद्रपद मासमें लाभदायक है ॥ १९३ ॥ वैशाख शुक्ल प्रतिपदा और सप्तमी आदि तीन दिनोंमें वादलों का उदय हो तो शीघ्र वर्षा होती है ॥१९४॥ शुक्लपक्ष की एकादशी आदि तीन दिनोंमें वृष्टि या वादल हो तो दुर्भिक्षकारक है और पूर्णिमा के दिन वर्षा हो तो भाद्रपद मासमें धान्य महँगे हों ॥१९५॥ वैशाख मासकी पंचमी, सप्तमी, नवमी, एकादशी और त्रयोदशी इन दिनोंमें वर्षा हो तो लोकमें शुभदायक है ॥१९६॥ इति वैशाखमासफलम् ।

ज्येष्ठ मासकी शुक्ल और कृष्ण दोनों पक्ष की अष्टमी और चतुर्दशी तथा कृष्णपक्षकी दशमी इन दिनोंमें वर्षा हो तो भाद्रमासमें वर्षा अधिक हो ॥१९७॥ ज्येष्ठ मासकी दशमीको रात्री में चद्रमा न दीखे तो उस वर्ष में वर्षाका रोध हो और छत्रहीन पृथ्वी हो ॥ १९८ ॥ ज्येष्ठ कृष्णपक्ष की एकादशी और द्वादशीके दिन मेघ गर्जना हो, बिजली चमके और वर्षा हो

विद्युत्पायादवृष्टिश्चेद् यत्सैरं स्यात् तदा शुभम् ॥१९९॥
ज्येष्ठाषाढसमुत्पन्ने रोहणीदिवसे नभ ।
मार्गे वृष्टिविनाशाय समेघं वृष्टिवर्द्धनम् ॥२००॥
ज्येष्ठ मूलदिने वृष्टि र्ज्येष्ठान्त दिवसद्वये ।
दुर्भिक्षं कुरुते श्रेष्ठा विद्युत्पातयुतानिल' ॥२०१॥
ज्येष्ठमासे तथाषाढे यत्र यत्राह्नवर्षणम् ।
श्रावणे भाद्रमासे वा तद्दिन वृष्टिनिगम' ॥२०२॥
ज्येष्ठ श्रुतिद्वये विद्यु द्गर्जितं वा सुभिक्षदम् ।
निरभ्रा रोहिणी चेन्दु-युक्ता वृष्टिविनाशिनी ॥२०३॥
ज्येष्ठ शुक्लद्वितीयायां गर्भपाताय गर्जितम् ।
युक्ते तृतीयायार्द्रायां वृष्टिर्दुर्भिक्षदर्शिनी ॥२०४॥
ज्येष्ठ शुक्ले द्वितीयादा-र्द्रादिके दिनोदये ।
स्वात्यन्ता दशनक्षत्री तद्दृष्टिर्गर्भपातिनी ॥२०५॥

तो वर्षा श्रेष्ठ होता है ॥१९९॥ ज्येष्ठ और आषाढमें रोहिणी नक्षत्रके दिन आकाश बादल सहित हो तो वृष्टिका नाशकारक है मगर वर्षा हो तो वृष्टि का वृद्धिकारक है ॥२०० ॥ ज्येष्ठमें मूलनक्षत्रके दिन और अन्तके दो दिन वर्षा हो तो दुर्भिक्ष होता है और केवल बिजली चमके वृष्टियुक्त वायु चले तो श्रेष्ठ है ॥२ १॥ ज्येष्ठ और आषाढ मासमें जिस दिन वर्षा हो उसी दिन श्रावण और भाद्रमासमें वर्षा हो ॥२ २॥ ज्येष्ठमें श्रवण और धनिष्ठा के दिन बिजली चमके, मेघ गर्जना हो तो सुभिक्षदायक है। और चंद्रमा युक्त रोहिणी नक्षत्र बादलरहित हो तो वर्षाका नाशकारक होता है ॥२ ३॥ ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया को गर्जना हो तो वर्षाका गर्भपात होता है। शुक्ल तृतीया आर्द्रा युक्त हो और उसी दिन वर्षा हो तो दुर्भिक्ष कारक है ॥ २ ४ ॥ ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया आर्द्रानक्षत्रसे स्वाति नक्षत्र तक दश नक्षत्रोंमें से किसी नक्षत्र युक्त हो और उस दिन वर्षा हो तो वर्षाका गर्भपात होता है ॥२ ५॥

यदि ज्येष्ठस्य पञ्चम्यां वृषार्के वृष्टिर्भवेत् ।
पूर्वाषाढादिने वा स्यान्मूले वृष्टिर्न दोषकृत् ॥२०६॥
ज्येष्ठस्य पूर्णिमायां तु मूल प्रस्रवते यदि ।
दिनषष्टि व्यतिक्रम्ये ज्ञेयो मेघमहोदयः ॥२०७॥
पादानां क्रमशो वृष्टि-वृष्टिरोध विनिर्दिशेत् ।
यदा श्रुति-धनिष्ठाहे न भवेज्जलवर्षणम् ॥२०८॥
ज्येष्ठाकृष्णपक्षे तु नक्षत्रे श्रवणादिके ।
अवर्षणे न वर्षा स्याद् वृष्टौ तु विपुल जलम् ॥२०९॥
चित्रास्वातिविशाखासु वार्दलानि तदा शुभम् ।
नाषाढवृष्टिर्निर्मल्ये श्रावणे तासु वर्षणम् ॥२१०॥ इति

आषाढ मास फल

ज्येष्ठे व्यतीते प्रथमा प्रतिपद् घनगर्जितैः ।
विद्युता वर्षणेनापि द्विमास्यां मेघबाधिका ॥२११॥

यदि ज्येष्ठ मासमें पचमीके दिन, वृषसक्रांति के दिन, पूर्वाषाढा और मूल नक्षत्रके दिन वर्षा हो तो दोषकारक नहीं होती ॥२०६॥ ज्येष्ठ मास की पूर्णिमाके दिन मूलनक्षत्रमें वर्षा हो तो साठ दिनके बाद वर्षा हो ॥२०७॥ यदि श्रवणके प्रथम चरणमें वर्षा हो तो आषाढमे, द्वितीय चरणमें श्रावणमे, तृतीय चरणमें भाद्रपदमें और चतुर्थ चरण में वृष्टि हो तो आश्विन मासमे वर्षा का अवरोध होता है । इसी प्रकार धनिष्ठा के चरणों में भी जानना चाहिये ॥२०८॥ ज्येष्ठ कृष्णपक्ष मे श्रवणादि नक्षत्रों में वर्षा न हो तो आगे वर्षा न बरसे और वर्षा हो तो आगे बहुत वर्षा हो ॥२०९॥ चित्रा स्वाति और विशाखा नक्षत्रके दिन बादल हो तो शुभ, आषाढ मे वर्षा न हो और निर्मल हो तो श्रावणमें वर्षा हो ॥२१०॥ इति ज्येष्ठमासफलम् ।

ज्येष्ठ मास की समाप्ति मे पहला प्रतिपदा के दिन मेघ गर्जना हो, बिजली चमके और वर्षा हो तो दो मास तक वर्षा न बरसे ॥ २११ ॥

कृष्णाषाढचतुर्थ्यां चेदुदयाच्छादितो रविः ।
सार्द्धत्रिमास्या प्रान्ते स्यात् तदा मेघमहोदयः ॥२१२॥
आषाढकृष्णतुर्यायां मस्ते भास्करमण्डले ।
न वर्षति यदा मेघस्तदा कष्टतरं जलम् ॥२१३॥
आषाढे कृष्णपक्षस्याष्टम्यां चन्द्रोदयक्षणे ।
मेघैराच्छादितं व्योम नीरपूर्णा तदा मही ॥२१४॥
यथा लोके—आसाढा अंधेरी आठमी, नवमीनी रत्ति जोय ।
चांदा बादल छाइयो, तो अन्न सुहँगो होय ॥२१५॥
अन्यत्रापि—आसाढा धुरि आठमी, चांदा बादल छाय ।
चार मास बरसालुआ, पाक मांडे राय ॥२१६॥
आषाढे नवमी कृष्णा विद्युदम्भोदगोस्वरे ।
तदा धान्यानि विक्रीय दर्शणे दुर्दिना भव ॥२१७॥
आषाढकृष्णपक्षे च धनिष्ठा श्रवणं तथा ।

यदि आषाढ कृष्ण चतुर्थी के दिन सूर्य उदयकाल में बादलों से आच्छादित हो तो साढे तीन मासके अंतमें मेघ का उदय हो ॥२१२॥ आषाढ कृष्ण चतुर्थी के दिन सूर्यास्त समयमें यदि वर्षा न हो तो मेघ कठिनता से बरसे ॥२१३॥ आषाढ कृष्ण अष्टमी के दिन चन्द्रोदय के समय आकाश बादलों से आच्छादित हो तो पृथ्वी जलसे पूर्ण हो ॥२१४॥ लौकिक-भाषामें भी कहा है कि—आषाढ कृष्ण अष्टमी और नवमी की रात्रिमें चन्द्रमा बादलोंसे ढका हुआ हो तो अनाज सस्ते हों ॥२१५॥ दूसरे जगह भी कहा है कि—आषाढ कृष्ण अष्टमी की रात्रिमें चन्द्रमा बादलोंसे ढका हुआ हो तो चार मास वर्षा अच्छी हो और धान्य बहुत उत्पन्न हो ॥२१६॥ आषाढ कृष्ण नवमी के दिन बिजली गर्जना बादल हो तो धान्य को बेचकर कृषिकर्म करनेमें हर्षित होना चाहिये ॥२१७॥ आषाढ कृष्ण पक्षमें धनिष्ठा और श्रवण नक्षत्र के दिन गर्जना या बिजली हो तो [illegible] हो

गर्जोविद्युद्धिहीनं स्याद् देशभंगस्तदादिशेत् ॥२१८॥
आषाढमासे रोहिण्यां विद्युद्वर्षा शुभाय सा ।
स्वातियोगेऽपि चाषाढे तथैव फलमिष्यते ॥२१९॥
आषाढशुक्लप्रतिपत्-त्रये वर्षा यदा भवेत् ।
एको द्वादश च द्रोणाः षोडशापि क्रमाज्जलम् ॥२२०॥
यदुक्तम्—आसाढी पडिवा दिने, जइ घन गरजत वीज ।
एक द्रोण पाणी पडे, बार द्रोण वली बीज ॥२२१॥
द्रोण सोल पाणी पडे, त्रीज तणे दिन जोय ।
चउथे कण मुहंगो करे, जो घन वरसा होय ॥२२२॥
आषाढे शुक्लपञ्चम्या-दिके तिथिचतुष्टये ।
यावन्त्यभ्राणि वर्षासु तावन्मेघमहोदयः ॥२२३॥
शुक्लाषाढनवम्यां च दशम्यां वर्षणं शुभम् ।
दुर्भिक्षं जायते नूनं वाते वृष्टिं विना कृते ॥२२४॥
आषाढस्याप्यमावस्यां नवम्यां शुक्लकृष्णयोः ।

॥२१८॥ आषाढमासमें रोहिणी नक्षत्रके दिन बिजली या वर्षा हो तो लोक के हितकारी है। यहि फल आषाढमें स्वाति योग होने पर होता है ॥२१९॥ आषाढ शुक्ल प्रतिपदा आदि तीन तिथियोंमे यदि वर्षा हो तो क्रमसे एक, बारह तथा सोलह द्रोण जल वरसे॥ २२० ॥ कहा है कि— शुक्ल पडिवा के दिन यदि मेघ, गर्जना, बिजली हो तो एक द्रोण, इसी तरह दूज के दिन हो तो बारह द्रोण, और तीज के दिन हो तो सोलह द्रोण पानी वरसे। यदि चोथके दिन वर्षा हो तो धान्य मँहगे हो॥२२१-२२२॥ आषाढ शुक्ल पंचमी आदि चार तिथियोंमें जितने बादल हों उतने ही वर्षा ऋतुमें मेघका उदय जानना ॥ २२३ ॥ आषाढ शुक्ल नवमी और दशमी को वर्षा होना शुभ है और केवल वायु ही चले और वर्षा न हो तो दुर्भिक्ष होता है ॥२२४॥ आषाढ की अमावास्या और शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष की नवमी के दिन सूर्य

उदये तु सहस्रांशु-र्निर्मलो यदि दृश्यते ॥२२५॥
मध्याह्ने वृष्टिरूपं स्यात् सूर्यस्यास्तक्षणे तथा ।
क्षणे तोयं न पश्येत वर्जयित्वा महानदीम् ॥२२६॥
लोके तु–आसाढी अमावसी, जइ नवि वरसे मेह ।
तो किम पूजे मारुआ, वरसत नावे छेह ॥२२७॥
चतुर्थ्यां तु सिताषाढे विद्युद्वर्षाश्च गर्जितम् ।
तदा जलं समुद्रे स्यात् पुस्तके वा प्रदृश्यते ॥२२८॥
आषाढ्यां प्रथमे यामे वार्दले न सुभिक्षता ।
मासमेकं जलं धान्यं स्तोकं लोके महाभयम् ॥२२९॥
धान्यस्वल्पं बहुजलं वार्दले प्रहरद्वये ।
तुल्यं धान्यतृणं याम-चतुष्टये सवार्दले ॥२३०॥
यामषट्कं ग्रीष्मधान्यं न किञ्चिदपि जायते ॥ इत्याषाढमासः ।
श्रावणमासफलम्—
श्रावणस्यादिमे पक्षेऽश्विन्या वार्दलवृष्टयः ।

निर्मल उदय हो याने सूर्योदयके समय आकाश स्वच्छ हो ॥ २२५ ॥ और मध्याह्नमें तथा सूर्यास्तमें वृष्टिरूप याने बादल होतो नदीको छोड़कर दूसरे स्थानमें जल देखनेमें नहीं आवे ॥ २२६ ॥ लोकमें भी कहा है कि–आषाढ की अमावास्या के दिन यदि वर्षा न हो तो अविच्छिन्न वर्षा हो ॥ २२७ ॥ आषाढ शुक्ल चतुर्थी के दिन बिजली, गर्जना और वर्षा हो तो जल समुद्रमें या पुस्तकमें ही दीख जाय ॥२२८॥ आषाढ पूर्णिमाके प्रथम प्रहरमें बादल हो तो सुभिक्ष नहीं होता केवल एक महीना जल बरसे, धान्य थोड़ा हो और लोकमें बड़ा भय हो ॥२२९॥ दो प्रहर बादल हो तो वर्षा अधिक हो और धान्य थोड़ा हो । चार प्रहर बादल हो तो धान्य तृण तुल्य हो याने सस्ते हो। छः प्रहर बादल हो तो ग्रीष्मऋतुके धान्य कुछ भी न हो ॥ २३० ॥ इति आषाढमासफल ॥

सर्वान् दोषान् निहन्त्येव सुभिक्षं भुवि जायते ॥२३१॥
श्रावणे चहुला विद्युद्गर्जितं च पुनर्घने ।
वृष्टिस्तदा मनोऽभीष्टा कुरुते वत्सरं शुभम् ॥२३२॥
श्रावणे कृष्णपक्षे च-चतुर्थ्यामरुणोदये ।
वार्दलं वृष्टिरनिशं सर्वत्र सुखवृष्टिकृत् ॥२३३॥
श्रावणे कृष्णपञ्चम्यां निर्मलं गगनं शुभम् ।
तदाष्टादशयामान्त-र्घनस्तोयं व्यपोहति ॥२३४॥
चतुर्दश्यां च कृष्णायां वार्दलानि भवन्ति न ।
तदा दानवदुःखानि न भवन्ति महीतले ॥२३५॥
अमावास्यां श्रावणस्य यदि वृष्टो घनाघनः ।
चराचरं तदा विश्वं सुखभाग् न चलाचलम् ॥२३६॥
चित्रास्वातिविशाखासु श्रावणे न जलं यदा ।
तदा कुल्यादिकं कृत्वा नदीतीरे गृहं कुरु ॥२३७॥
नभःप्रथमपञ्चम्यां यदि वृष्टः पयोधरः ।

श्रावण मास के प्रथम पक्ष (कृष्णपक्ष) मे अश्विनीनक्षत्र के दिन मेघ वरसे तो सब दोष दूर होकर सुभिक्ष होता है ॥२३१॥ श्रावण मे बहुत बिजली चमके, गर्जना हो और वर्षा हो तो मनोवाञ्छित वर्षा हो और सम्वत्सर शुभ हो ॥२३२॥ श्रावण कृष्ण चतुर्थीको सूर्योदयके समय बादल तथा वर्षा हो तो सर्वत्र निरन्तर सुखदायक वर्षा हो ॥२३३॥ श्रावणकृष्ण पञ्चमीके दिन, आकाश निर्मल हो तो श्रेष्ठ है, इसमे अठारह प्रहरके बाद मेघ वर्षा हो ॥ २३४ ॥ श्रावण कृष्ण चतुर्दशीके दिन बादल न हो तो दानवोंसे दुःख पृथ्वी पर न हों ॥२३५॥ श्रावणकी अमावसके दिन वर्षा हो तो चराचर विश्व सुखी नहीं होता ॥२३६॥ श्रावण में चित्रा स्वाति और विशाखा नक्षत्र के दिन वर्षा न हो तो कूप आदि खोदकर नदीके किनारे घर बनाना उचित है ॥२३७॥ श्रावणके प्रथम पक्षकी पञ्चमीको वर्षा हो

तदा भूमधुरो मासान् भवेज्जलसमाकुला ॥२३८॥
श्रावण पहिली पंचमी, जो बरसे सखि मेह ।
चार मास नीझर झरे, एम भणे सहदेव ॥२३९॥
मतान्तरे पुनः—
श्रावण अथवा भद्दवइ, पंचमी जइ बरसेय ।
ईति उपद्रव जाणवो, अणचिंत हासी तेय ॥२४०॥
(कृष्णपंचमी विषयं वा)
श्रावणे शुक्लसप्तम्या-मस्तं याते दिवाकरे ।
न वर्षति यदा मेघो जलाशा मुञ्च सर्वथा ॥२४१॥
अष्टम्यां श्रावणे शुक्ले प्रातर्बार्दलडम्बरम् ।
रविराच्छादितस्तेन पृथिव्येकार्णवा भवेत् ॥२४२॥
मेघैराच्छादितश्चन्द्रः पूर्णायां समुदीयते ।
तदा स्वस्थं जगत् सर्वं राज्यसौख्यं घनो महान् ॥२४३॥
श्रावणे कृष्णपक्षे च पूर्वाभाद्रपदासु च ।
चतुर्थ्यां मेघवृष्टिर्भवेत् तदा मेघमहोदयः ॥२४४॥

तो चार मास पृथ्वी जलसे पूर्ण रहे ॥२३८॥ सहदेव दैवज्ञने भी कहा है कि— श्रावणकी प्रथम पंचमीको वर्षा हो तो चार मास वर्षा हो ॥२३९॥ मतान्तरसे— श्रावण अथवा भाद्रपद की कृष्ण पंचमी के दिन वर्षा हो तो अकस्मात् ईतिका उपद्रव हो ॥२४०॥ श्रावण शुक्ल सप्तमीको सूर्यास्त के समय वर्षा न हो तो जलकी आशा सर्वथा छोड़ देना उचित है ॥२४१॥ श्रावण शुक्ल अष्टमीके दिन प्रातःकालमें बादलोंका आडंबर हो, सूर्य आच्छादित रहे तो पृथ्वी पर अधिक वर्षा हो ॥२४२॥ श्रावण पूर्णिमाके दिन बादलोंसे आच्छादित चन्द्र उदय हो तो समस्त जगत सुखी, राज्य संबंधी सुख और महावर्षा हो ॥२४३॥ श्रावण कृष्ण चतुर्थीके दिन पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रमें वर्षा हो तो मेघका उदय जानना ॥२४४॥ श्रावण शुक्ल चतुर्दशी,

शुक्ला चतुर्दशी पूर्णा चतुर्थी पञ्चमी तथा।
सप्तमी चेच्छ्रावणस्य वृष्टियुक्ता शुभं तदा ॥२४५॥
कर्कटो यदि भिद्येत सिंहो गच्छत्यभिन्नकः।
तदा धान्यस्य निष्पत्ति-र्जायते पृथिवीतले ॥२४६॥
यदुक्तम्—मुह भिन्नो पंचायणह, कक्कह भिन्नि पुट्ठि।
तो जाणिज्जइ भड्डुली, मासब्भन्तर वुट्ठि ॥२४७॥
श्रावणे शुक्ल सप्तम्यां स्वातियोगे जलं यदा।
प्रजानन्दः सुखं राज्ये बहु भोगान्विता मही ॥२४८॥
एकादश्यां नभः कृष्णे यदि वर्षा मनागपि।
तदा वर्षं शुभं भावि जायते नात्र संशयः ॥२४९॥
नभश्चतुर्दशी राका चतुर्थी पञ्चमी तथा।
सप्तमी वृष्टियुक्ता चेद् वर्षं शुभं न चान्यथा ॥२५०॥

भाद्रमासफलम् --

भाद्रमासे द्वितीयायां यदि चन्द्रो न दृश्यते।

पूर्णिमा, चतुर्थी, पचमी और सप्तमी इन दिनो में वर्षा हो तो वर्ष शुभदायक होता है ॥२४५॥ यदि कर्कसक्रान्तिके दिन वर्षा हो और सिंहसक्रान्ति के दिन वर्षा न हो तो पृथ्वी पर धान्य बहुत उत्पन्न हो ॥२४६॥ कहा है कि— सिंह सक्रान्तिकी आदिम और कर्कसक्रान्तिके अतमे वर्षा होतो हे भड्डुली! एक मासके भीतर वर्षा हो ॥२४७॥ श्रावण शुक्ल सप्तमीको स्वाति योग मे जल बरसे तो प्रजाको आनन्द, राज्यमे सुख और अनेक भोगों से युक्त पृथ्वी हो ॥२४८॥ श्रावण कृष्ण एकादशी को यदि थोड़ी भी वर्षा हो तो आगला वर्ष शुभ हो इसमे सशय नहीं ॥२४९॥ श्रावण मास की चौदश, पूर्णिमा, चतुर्थी, पचमी तथा सप्तमी के दिन वर्षा हो तो वर्ष अच्छा हो अन्यथा नहीं ॥२५०॥ इति श्रावणमासफलम् ॥

भाद्रमासमे द्वितीया के दिन यदि चन्द्रमा न दीखे तो सम्पूर्ण प्रकारसे वर्षा

तदा सम्पूर्णधया स्याद्धान्यनिष्पत्तिरुत्तमा ॥२५१॥
माघे च शुक्लपञ्चम्यां जलं दत्ते न चेद् घनः ।
दैवकोपात् तदा ज्ञेयो सज्जनोऽपि च दुर्जनः ॥२५२॥
यद्यगस्त्येरुदयने वर्षा स्याय जायते ।
सर्वधान्यस्य निष्पत्ति र्न चेद् भिक्षापि दुर्लभा ॥२५३॥
सप्तम्यां भाद्रमासस्य न वर्षा न च गर्जितम् ।
विद्युद्विद्योतने नैव दैवः कालस्य नाशकः ॥२५४॥
नवम्यां भाद्रमासस्य वृष्टिर्दुष्कालमादिशेत् ।
एकादश्यां तु तस्यैव धना धान्यसमर्घदा ॥२५५॥
भाद्रपदे दशम्यां चेन्निर्मलं गगनं यदा ।
मुद्गा माषाश्च चणका निष्पद्यन्ते घना जने ॥२५६॥
सिंहेऽर्कदिवसे वृष्टिर्न शुभाय नृणां स्मृता ।
दैवाज्जाते घने पश्चाद्-वृष्टिर्दिनत्रयान्तरे ॥२५७॥
तदा तद्दूषणं नास्ति मासमेकं प्रवर्षति ।

अच्छी हो और धान्यकी प्राप्ति उत्तम हो ॥ २५१ ॥ माघशुक्ल पंचमी को यदि बादल न बरसे तो दैवकोपसे जानिये कि सज्जन भी दुर्जन हो जाय ॥ २५२ ॥ यदि अगस्तिके उदय होने में वर्षा हो तो अच्छी है, सब प्रकार के धान्य की प्राप्ति हो यदि वर्षा नहीं हो तो भिक्षा भी न मिले ॥ २५३ ॥ भाद्रमासकी सप्तमी के दिन वर्षा न हो गर्जना न हो और बिजली भी न चमके तो दैव कालका विनाशक जानना ॥ २५४ ॥ भाद्रमासकी नवमी के दिन वर्षा बरसे तो दुष्काल हो और एकादशी के दिन वर्षा हो तो धान्य सस्ते हों ॥२५५॥ यदि भाद्रमासकी दशमी के दिन आकाश निर्मल हो तो मूंग, उड़द चौला अधिक उत्पन्न हों और वर्षा अच्छी हो ॥ २५६ ॥ सिंहसंक्रान्ति के दिन वर्षा हो तो मनुष्यों के लिए अशुभ होता है और उसके पीछे तीन दिन बाद वर्षा हो तो ॥२५७॥ उसका दोष नहीं रहता, जिससे एकमास वर्षा होती

भाद्रे चतुर्दशीवृष्टिर्जने रोगाय जायते ॥२५८॥ इति ।

आश्विनमासफलम्—

आश्विनस्य चतुर्थ्यां चेद् वार्दलान्यरुणोदये ।
तदा क्षेमाय लोकानां वृष्टिः सञ्जायते शुभा ॥२५९॥
आश्विनस्यासिते पक्षे दशम्यां यदि वार्दलम् ।
विद्युद्वर्षाथवा माष-तिलानामर्घवृद्धये ॥२६०॥
सप्तम्याऽऽश्वयुजिमासे सितेऽष्टमी जलान्विता ।
सुभिक्षं तत्र चादेश्यं राजानः शान्तविग्रहाः ॥२६१॥ इति ।

कार्त्तिकमासफलम्—

एकादश्यां कार्त्तिकस्य यदि मेघः समीक्ष्यते ।
आषाढे च तदा वृष्टि-र्जायते नात्र संशयः ॥२६२॥
द्वितीयायां तृतीयायां कार्त्तिके वृष्टिलक्षणम् ।
भाविवर्षे बहुजलं न चेत् तस्मिन्न वर्षणम् ॥२६३॥
द्वादश्यां कार्त्तिके रात्रौ मार्गस्य दशमीदिने ।

है। भाद्रमासकी चतुर्दशी को वर्षा हो तो मनुष्यों को रोग करती है ॥२५८॥ इति भाद्रमासफलम् ॥

आश्विनमासकी चतुर्थी के दिन यदि सूर्योदयके समय बादल हो तो मनुष्यों के कल्याण के लिये श्रेष्ठ वर्षा हो ॥ २५९ ॥ आश्विन कृष्ण दशमी के दिन यदि बादल बिजली या वर्षा हो तो उडद और तिल महँगे हो ॥ २६०॥ आश्विन शुक्ल सप्तमी और अष्टमी जल युक्त हो तो सुभिक्ष और राजाओं में संग्राम आदिकी शान्ति रहे ॥ २६१ ॥ इति आश्विनमासफलम् ॥

कार्त्तिकमासकी एकादशी के दिन बादल दीखे तो आषाढमासमें वर्षा हो इसमें संदेह नहीं ॥२६२॥ कार्त्तिक की द्वितीया और तृतीया के दिन वर्षाका लक्षण हो तो अगले वर्षमें अधिक वर्षा हो अन्यथा वर्षा न हो ॥ २६३॥ कार्त्तिक द्वादशी को रात्रिके समय, मार्गशिर दशमीको दिनमें, पौष-

पञ्चम्यां पौषमासस्य सप्तम्यां माघमासके ॥२६४॥
धाराधरो यदा वृष्टिं कुरुते वा सुगर्जितम् ।
तदा च श्रावणे मासे सलिलं नैव दृश्यते ॥२६५॥
कार्त्तिके च द्वितीयायां तृतीयानवमीदिने ।
एकादश्यां त्रयोदश्या-मभ्राद् वृष्टिर्घनो महान् ॥२६६॥
कार्त्तिके यदि संक्रान्तेः पर्यन्ते दिवसद्वये ।
महावृष्टिस्तदा वर्षे शुभा भाविनि वत्सरे ॥२६७॥ इति ।

मार्गशीर्षमासफलम्—

मार्गशीर्षप्रतिपदि न विद्युच्चैव गर्जितम् ।
न वृष्टिश्चेत् तदा गर्भे कुशलं कुशलोदितम् ॥२६८॥
चतुर्थ्यामथ पञ्चम्यां मार्गशीर्षस्य बार्दलम् ।
तदा भाविनि वर्षे स्याद् वर्षापूर्णं महीतलम् ॥२६९॥
मार्गशीर्षस्य सप्तम्यां नैर्मल्यं चेद्दिवानिशम् ।
धान्यं महर्घं वैशाखे सान्नतायां महर्घता ॥२७०॥

न सकी पंचमीको और माघमासकी सप्तमीको ॥ २६४ ॥ यदि वर्षा या गर्जना हो तो श्रावणमासमें जल कुछ भी नहीं बरसे ॥ २६५ ॥ कार्त्तिक मासकी द्वितीया तृतीया नवमी एकादशी और त्रयोदशी के दिन वर्षा हो तो अधिक वर्षा हो ॥ २६६ ॥ यदि कार्त्तिकमासमें संक्रान्तिके दो दिन पर्यन्त वर्षा हो तो उस वर्षमें वर्षा अधिक हो और आगला वर्ष शुभ हो ॥ २६७ ॥ इति कार्त्तिकमासफलम् ॥

मार्गशीर्ष की प्रतिपदा के दिन बिजली न चमके, गर्जना और वर्षा भी न हो तो मेघके गर्भ कुशल रहे और सब कुशल हो॥२६८॥मार्गशीर्ष की चतुर्थी और पंचमी के दिन बादल हो तो आगला वर्षमें पृथ्वी वर्षासे पूर्ण हो॥२६९॥मार्गशीर्ष सप्तमीको दिन और रात्रि निर्मल रहे तो वैशाखमें धान्य महँगे हों और धान्य सहित हो तो धान्य महँगे हों ॥ २७० ॥ मार्गशीर्ष

मार्गस्य शुक्लद्वादश्या-ममायामथ वर्षणम् ।
तदा वर्षं शुभं भावि भावनीयं सुभावनैः ॥२७१॥ इति ।

पौषमासफलम्—

कृष्णाष्टम्यां पौषमासे यदा वृष्टिर्न जायते ।
तदार्द्राऽर्कसमायोगे एकीकुर्याज्जलैः स्थलम् ॥२७२॥
पौषे कृष्णादशम्यां चेद् रात्रौ वर्षति वारिदः ।
तदा भाद्रपदे मासे वृष्टिर्भवति भूयसी ॥२७३॥
पौषे विद्युच्चमत्कारो गर्जिताभ्रादिसम्भवः ।
जानीयान्निश्चितं तेन जगत्यां मेघदोहृदः ॥२७४॥
विद्युच्चमत्कृतिर्वर्षा पौषे वार्दलसम्भवात् ।
मेघस्यवर्द्धते गर्भो जगदानन्ददायकः ॥२७५॥
वृष्टे मेघे पौषषष्ठ्यां भाद्रे कृष्णे घनोदयः ।
पौषशुक्ले मेघवृष्टौ श्रावणे स्यादवर्षणम् ॥२७६॥
सप्तम्यादित्रये पौषे शुक्ले विद्युच्च गर्जितम् ।

र्गी शुक्ल द्वादशी को या अमावसको वर्षा हो तो अगला वर्ष शुभ हो ॥ २७१ ॥ इति मार्गशीर्षमासफलम् ॥

पौष कृष्ण अष्टमीके दिन यदि वर्षा न हो तो सूर्यका आर्द्राके संयोग में जल स्थल एकही हो जाय याने आर्द्रार्कमें अच्छी वर्षा हो ॥ २७२ ॥ पौष कृष्णादशमीको रात्रिमे वर्षा हो तो भाद्रमासमें बहुत वर्षा हो ॥२७३॥ पौष मासमें बिजली चमके, गर्जना और बादल आदि हो तो पृथ्वीमें मेघ का गर्भ रहा जानना ॥ २७४॥ पौष मे बिजली चमके, वर्षा तथा बादल हो तो जगत् को आनद देनेवाला मेघ का गर्भ वृद्धि को प्राप्त होता है ॥ २७५॥ पौष मासकी षष्ठीके दिन वर्षा हो तो भाद्रमास के कृष्णपक्ष में वर्षा हो। पौष शुक्लमें वर्षा हो तो श्रावणमे वर्षा न हो ॥ २७६ ॥ पौष शुक्ल सप्तमी आदि तीन दिन बिजली और गर्जना हो तो सुख सपदा देने

तदा मेघस्य गर्भः स्यात् दृष्ट्या सुखसम्पदे ॥२७७॥
एकादश्यां तथा षष्ठ्यां पूर्णायां दर्शकेऽपि वा ।
न वृष्टिः स्यात् तदाषाढे घन प्राप्ता घनागमः ॥२७८॥
पौषशुक्लचतुर्दश्यां विद्युद्दर्शनमुत्तमम् ।
कृष्णपक्षे तथाषाढे भवेन्मेघमहोदयः ॥२७९॥
विद्युन्मेघो धनुर्मत्स्यो यद्येकमपि नो भवेत् ।
न ऋक्षे वर्षति तदा चिह्नकाले तु वर्षति ॥२८०॥
अनेन ज्ञायते सर्वं वर्षणं वाप्यवर्षणम् ।
एतद्धि परमं गुह्यं गर्भाधानस्य लक्षणम् ॥२८१॥
विद्युत्संयोगजं चिह्नं न देयं यस्य कस्यचित् ।
गुरुभक्तस्य बोधाय तथापि किञ्चिदुच्यते ॥ २८२ ॥
नभस्यर्कं प्रच्छाद्य गर्जैदैरावतान्वितः ।
विद्युत्कुमारीसंयोगाद् वेधेन्द्रो गर्भकारकः ॥ २८३ ॥
उत्तरस्यां यदा विद्युत्-स्वर्णवर्णा प्रदीप्यते ।

वाला मेघका गर्भ स्थिर हो ॥२७७॥ एकादशी षष्ठी, पूर्णिमा और अमावास्याके दिन वर्षा न हो तो आषाढ मासमें मेघ बरसे ॥२७८॥ पौष शुक्ल चतुर्दशीको बिजली चमके तो अच्छा है ऐसा हो तो आषाढ कृष्णपक्षमें मेघकी प्राप्ति हो ॥२७९॥ बिजली बादल धनुष् मत्स्य आदि एक भी चिह्न देखने में न आवे तो आर्द्रादि नक्षत्रों में वर्षा न हो और ये चिह्न हो तो वर्षा हो ॥२८०॥ इन चिह्नोंसे वर्षा होना या नहीं होना ये सब जाने जाते हैं। यही मेघका गर्भाधानके लक्षण जो बिजलीसे उत्पन्न हुए हैं वे अत्यन्त गुप्त हैं ये जैसे तैसेको देने योग्य नहीं तो भी गुरुकी भक्तिवाले शिष्योंके बोधके लिये कुछ कहते हैं ॥२८१॥२८२॥ आकाशमें बादल सूर्यको छिपाकर गर्जना करे बिजली चमके तो मेघका उदय (गर्भकारक) जानना ॥२८३॥ उत्तर दिशामें सुवर्ण रंग की बिजली चमके तो वह बिजली अच्छासूचक है,

सा विद्युज्जलदा ज्ञेया शीघ्रं मेघमहोदयः ॥ २८४ ॥
ऐन्द्री च जलदा विद्युदाग्नेयी जलनाशिनी ।
याम्या चाल्पजला प्रोक्ता वातं करोति वायवी ॥२८५॥
प्रभूतजलदा ज्ञेया वारुणी सस्यसम्पदे ।
नैर्ऋतिर्निर्जला प्रोक्ता कौबेरी क्षिप्रवर्षिणी ॥२८६॥
ऐशानी लोकशुभदा विद्युद्भेदा इति स्मृताः ।
यत्र देशे सुभिक्षं स्याद् विद्युत्तत्रैव गच्छति ॥२८७॥
दिक्षु भूता स्थितिर्गुप्ता मेघानां मार्गदर्शिनी ।
विद्युद्धीना न गर्जन्ति न वर्षन्ति जलं विना ॥२८८॥
अतिवातश्च निर्वातश्चात्युष्णमनुष्णता ।
अत्यभ्रं च निरभ्रं च षडेते वृष्टिलक्षणाः ॥२८९॥
चतुःकोटिसहस्राणि चतुर्लक्षोत्तराणि च ।
मेघमालामहाशास्त्रं तन्मध्यादेतदुद्धृतम् ॥२९०॥

शीघ्र ही मेघका उदय जानना ॥ २८४ ॥ पूर्व दिशामे विजली चमके तो जलदायक है । आग्नेय दिशामे चमके तो जलका नाशकारक है । दक्षिण में चमके तो थोडा जल बरसे । वायव्य दिशा में चमके तो वायु चले ॥ २८५ ॥ पश्चिम दिशामें बिजली चमके तो बहुत वर्षा हो और धान्य संपत्ति अच्छी हो । नैऋत्य दिशामे चमके तो जलवर्षा न हो । उत्तर दिशा में चमके तो शीघ्र ही जल बरसे ॥२८६॥ ईशान दिशामें बिजली चमके तो मनुष्य को सुखदायक है , ये बिजली के लक्षण कहे । जिस देश में सुभिक्ष हो वहा ही बिजली जाती है ॥२८७॥ यह दिशाओंमें स्थित रह कर मेघों को मार्ग दिखाती है । बिजली के बिना गर्जना नहीं होती और जलके विना वर्षा नहीं होगी ॥२८८॥ वायु का अधिक चलना या नहीं चलना, अधिक उष्णता या ठंडी, अधिक बादल या बादल रहित. ये छ वृष्टिके लक्षण है ॥२८९॥ चार क्रोड हजार और चार लाख अधिक जो

अश्वप्लुतं माधवगर्जितं च, स्त्रीणां चरित्रं भवितव्यता च ।
अवर्षणं चाप्यतिवर्षणं च, देवो न जानाति कुतो मनुष्यः ॥
पौषमासे श्वेतपक्षे ऋक्षं शतभिषग् यदा ।
वाताभ्रविद्युत्सम्भ्रं गर्भमत्रैव प्रजायते ॥२६२॥
स चाषाढे कृष्णपक्षे चतुर्थ्यां वर्षति ध्रुवम् ।
द्रोणसञ्ज्ञस्तत्र मेघः सप्ताहं प्रवर्षति ॥२६३॥
सप्तम्यादित्रये पौषे शुक्ले पौष्णादिभत्रयम् ।
विद्युत्तुषारवाताभ्र हिमैर्गर्भस्सुभ्रव ॥२६४॥
एकादशी पौषशुक्ले सहिमा विद्युता युता ।
सजला रोहिणीयोगाच्छुभाऽऽज्ञेया विचक्षणैः ॥२६५॥
मतान्तरं तु—एकादश्यामहोरात्रं कृत्तिकाभोगसम्भवे ।
पौषशुक्ले साभ्रतायां रसवस्तुमहर्घता ॥२६६॥
पौषे मूलार्कके दर्शे विद्युदभ्राभिगर्जितम् ।

मेघमाला नामका महा शास्त्र है उसमेंसे यह उद्धृत किया है ॥२६०॥ घोड़े का कूदना, मेघका गर्जना स्त्रियों के चरित्र भवितव्यता (होनहार) वर्षा का होना या न होना ये देव भी नहीं जान सकता तो मनुष्य क्या है ॥ २६१॥ पौष शुक्लपक्षमें शतभिषा नक्षत्र पञ्चमीके दिन हो और उस दिन वायु, बादल, बिजली हो तो वर्षाका गर्भ होता है ॥ २६२ ॥ यह गर्भ आषाढ कृष्णपक्षकी चतुर्थीके दिन अवश्य बरसता है । उस समय द्रोण नामका मेघ सात दिन तक बरसता है ॥२६३॥ पौष शुक्ल सप्तमी आदि तीन दिन और रेवती आदि तीन नक्षत्र इनमें बिजली तुषार वायु बादल और हिम हो तो उत्तम गर्भकी उत्पत्ति जानना ॥ २६४ ॥ पौष शुक्ल एकादशी हिम और बिजली सहित हो रोहिणीका योग हो और कुछ वर्षा भी हो तो विद्वानोंने शुभ कहा है ॥२६५॥ पौष शुक्ल एकादशी को दिन रात कृत्तिका नक्षत्र हो और बादल भी हो तो सरस वस्तु महँगी हो ॥

वर्षायां चतुरो मासान् दत्ते मेघमहोदयम् ॥२९७॥
पौर्णमासी द्वितीया च विद्युता वा हिमान्विता ।
वर्षा निष्पत्तिरादेश्या मेघैश्छन्नैस्तथाम्बरे ॥२९८॥
आषाढस्य त्वमावास्यां प्रबलं जलमादिशेत् ।
निष्पत्तिः सर्वसस्यानां प्रजानां च निरुपद्रवाः ॥२९९॥
गावः पयोष्णः सर्वत्र सर्वाप्यामोदिता प्रजा ।
प्रथमे श्रावणस्यापि पक्षे द्रोणं समादिशेत् ॥३००॥
नागदेवो द्वितीयायां किञ्चित् सर्पभयं भवेत् ।
अमावास्यामर्कवारे भौमे वा मेघवर्षणात् ॥३०१॥
पूर्णमास्यां यदा पौषे चन्द्रमा नैव दृश्यते ।
उत्तरस्यां दक्षिणस्यां यदा विद्युत्प्रदर्शनम् ॥३०२॥
अभ्रच्छन्नं नभो वापि महावृष्टिं तदादिशेत् ।
अमावास्यां श्रावणस्य नूनं भाविनि वत्सरे ॥३०३॥

२९६॥ पौषकी अमावसको मूल नक्षत्र हो और उस दिन विजली, वादल और अधिक गर्जना हो तो वर्षाके चारों मास मेघका उदय जानना ॥२९७॥ पौषकी पूर्णिमा और द्वितीयाके दिन विजली चमके, हिम पड़े, तथा आकाश वादलों से आच्छादित रहे तो वर्षा अच्छी होती है ॥२९८॥ यह चिह्न हो तो आषाढ अमावास्याको प्रबल जलवर्षा हो, सब प्रकारके धान्य की प्राप्ति और प्रजा उपद्रव रहित हो ॥२९९॥ सब जगह गौ दूध देनेवाली हों तथा समस्त प्रजा आनंदित हो । श्रावणके प्रथमपक्षमे द्रोणनामक मेघ वरसे ॥३००॥ द्वितीयाके दिन आश्लेषा हो तो कुछ सर्पका भय हो। अमावास्या को रविवार या मंगलवार हो और उस दिन मेघ वरसे तो ॥ ३०१॥ तथा पौषकी पूर्णिमा के दिन वादलों से चन्द्रमा न दीखे, उत्तर दक्षिणमें विजली चमके ॥३०२॥ और आकाश वादलोंसे आच्छादित रहे तो आगामी वर्षमें श्रावणकी अमावास्याको निश्चयसे महावर्षा हो ॥३०३॥

पौषस्य कृष्णसप्तम्यां* स्वातियोगे जलं यदा ।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं जायते नात्र संशयः ॥१०४॥
अभ्रच्छन्ने जलं स्वल्पं जलपाते महाजलम् ।
त्रयोदशीत्रये कृष्णे पौषे विद्युद् गर्भदा ॥१०५॥
ऐन्द्री विद्युदमावस्यां दर्शने वा हिमस्य चेत् ।
अभ्रच्छन्ने समा वापि सुभिक्षं जायते तदा ॥१०६॥

माघमासफलम्—

न माघे पतितं शीतं ज्येष्ठे मूलं न रक्षितम् ।
माद्रायां पतितं तोयं तदा दुर्भिक्षमादिशेत् ॥१०७॥
सप्तम्यादित्रये माघे शुक्ले वार्दलयोगतः ।
धनधान्यसमृद्धिः स्याद् विग्रहाद्युत्सवा जने ॥१०८॥

पौष कृष्णसप्तमीके दिन स्वाति नक्षत्रका योग हो और उस दिन जल बरसे तो सुभिक्ष, क्षेम और आरोग्य हो इसमें संदेह नहीं ॥१०४॥ उस दिन बादल आच्छादित रहे तो थोड़ा जल और जल बरसे तो महावर्षा हो । पौष कृष्ण त्रयोदशी आदि तीन दिन बिजली चमके तो गर्भसफल जानना ॥१०५॥ पौषकी अमावस्याको पूर्वदिशामें बिजली चमके, हिम गिरे और आकाश बादलोंसे आच्छादित रहे तो सुभिक्ष होता है ॥१०६॥ इति पौषमासफलम् ॥

माघमासमें शीत न पड़े ज्येष्ठमास में मूल नक्षत्रकी रक्षा न हो अर्थात् ज्येष्ठमासमें गरमी नहीं पड़े परन्तु वर्षा होकर ठंडक रहे और आर्द्रानक्षत्रके दिन वर्षा न हो तो दुर्भिक्ष होता है ॥१०७॥ माघ शुक्ल सप्तमी आदि तीन दिन बादल हो तो धन धान्यकी वृद्धि और प्रजा में विग्रह आदि उत्पन्न

*टी— अत्र मार्गो बाधा लिपिरियं न चेत् स्वातिनक्षत्रका पौषकृष्णसप्तम्यामिति पाठः, तत्र पौषकृष्णसप्तमीदिने जलाभावपूर्वं तथा यदि स्वातिनक्षत्रदिनेऽपि जलाभावमित्यर्थः । यत्र च नात्र तिथिनक्षत्रयोग किन्तु तिथिमात्र उदये नक्षत्रदिने च प्रसङ्गः स्यात् ।

अष्टम्यां चन्द्रनैर्मल्ये राज्ञां राज्यपरिक्षयः ।
अभ्राच्छादितसूर्यस्यो-दयस्त्रासाय देहिनाम् ॥३०९॥
यत:-अहवा सत्तमि निरमलो, अट्ठमि बादल होय ।
तो आषाढे कट्ठ करी, श्रावण पायस होय ॥३१०॥
माघनवम्यां शुक्ले परिवेषः शशिनि दृश्यतेऽवश्यम् ।
आषाढे वर्षायास्तदान्तरायो भवेदग्रे ॥३११॥
माघे दशम्यां हि शुभाय वर्षा, स्वन्नवम्यां यदि चेदवर्षा ।
हर्षाय वर्षातिशयो न कश्चिद्, वर्षागमे मेघमहोदयेन ॥१२॥
माघमासे चतुर्दश्यां प्रहरे यत्र वार्दलम् ।
वर्षाकाले तत्र मासे न वर्षति पयोधरः ॥३१३॥

श्रीहीरसूरिकृतमेघमालायाम्—

माहमासे जो हिमपडे, वरसे विज्जु लवेइ ।
तो जाणिजे डोहला, पुरे पुन्न करेइ ॥३१४॥

हो ॥३०८॥ अष्टमीके दिन चन्द्रमा निर्मल हो तो राजाओंमें विग्रह हो। और सूर्य बादलोंसे आच्छादित उदय हो तो मनुष्यों को भयके लिये हो ॥३०९॥ अथवा सप्तमी निर्मल हो और अष्टमीको बादल हो तो आषाढमें वर्षा न बरसे और श्रावणमें वर्षा हो ॥३१०॥ माघ शुक्ल नवमीको चंद्रमा का परिवेष मंडल अवश्य हो तो आगे आषाढ मासमें वर्षाका रोध (रूकावट) हो ॥ ३११ ॥ माघकी दशमीको वर्षा हो और नवमीको वर्षा न हो तो शुभ प्रसन्नताके लिये हो और वर्षाऋतुमें मेघका महा उदय हो इसमें कुछ अतिशयोक्ति नहीं है ॥३१२॥ माघमासकी चतुर्दशी के दिन जिस प्रहरमें जिस दिशामें बादल हो तो वर्षाकालके उस मासमें मेघ नहीं बरसे ॥३१३॥ श्रीहीरसूरिकृत मेघमाला में कहा है कि- माघमास में हिम पडे, वर्षा हो, बिजली चमके तो गर्भका पूर्ण [illegible] जानना ॥३१४॥ माघमासकी

माहे बहुली * सत्तमी फग्गुण पंचमी य चित्त बीयाए ।
वइसाह पढम पडिवय हवइ मेहाओ सुभिक्खं ॥२१५॥
नवमी दसमी इगारसी माहे किसणम्मि जइ हवइ विज्जू ।
भद्दव सुद्ध नवमी दसमी एगारसी य बहुजलं ॥२१६॥
महासुभिक्षमादर्शं राजानो निरुपद्रवाः ।
सप्तमी निर्मला नेष्टा श्रेष्ठा वृष्टिफलान्वितु ॥२१७॥

केवलकीर्त्तिदिगम्बरोऽप्याह—

माघस्य शुक्लसप्तम्यां यद्यभ्रं जायतेऽभितः ।
तदा वृष्टिर्घना लोके भविष्यति न संशयः ॥२१८॥

स्वातियोगः—

माघे च कृष्णसप्तम्यां स्वातियोगेऽभ्रगर्जितम् ।
हिमपाते चण्डवाते सर्वधान्यं प्रजासुखम् ॥२१९॥
तथैव फाल्गुने चैत्रे वैशाखे स्वाति योगजम् ।

सप्तमी फाल्गुन मासकी पंचमी, चैत्र मास की दूज और वैशाख मास की प्रथम प्रतिपदा इनमें वर्षा हो तो सुभिक्षकारक है ॥ २१५ ॥ माघ कृष्ण नवमी दशमी और एकादशीको बिजली चमके तो भाद्रमासकी शुक्लपक्षकी नवमी, दशमी और एकादशीको बहुत वर्षा हो ॥ २१६ ॥ तथा अत्यन्त सुकाल और राजाओं उपद्रव रहित हों । सप्तमी निर्मल हो तो अच्छा नहीं बरसे तो श्रेष्ठ है ॥२१७॥ केवलकीर्त्तिदिगम्बर कहते हैं कि— माघ शुक्ल सप्तमीको यदि आकाशमें चारों तरफ बादल हो तो पृथ्वी पर बहुत वर्षा हो इसमें संदेह नहीं ॥२१८॥ माघ कृष्ण सप्तमीको स्वाति योगमें बादल हो, गर्जना हो हिम गिरे प्रचंड पवन चले तो सब प्रकारके धान्य प्राप्त हो और प्रजा सुखी हो ॥ २१९ ॥ इसी प्रकार फाल्गुन, चैत्र और

---

* टी—अत्र वृष्टिका सप्तम्यां माघमासे इत्यादिना बहुलीशब्देनोक्तत्वात् तदेव स्वातिलग्नमपि ।

विद्युदभ्रादिकं श्रेष्ठ-माषाढेऽपि सुभिक्षकृत् ॥३२०॥

वराहः प्राह—

यद्रोहिणीयोगफलं तदेव, स्वातावषाढासहिते च चन्द्रे ।
आषाढशुक्ले निखिलं विचिन्त्यं,योऽस्मिन् विशेषस्तमहं प्रवक्ष्ये
स्वातौ निशांशे प्रथमेऽभिवृष्टे, सस्यानि सर्वाण्युपयान्ति वृद्धिम्
भागे द्वितीये तिलमुद्गमाषा, ग्रैष्मं तृतीयेऽस्ति न शारदानि ॥
वृष्टेऽह्निभागे प्रथमे सुवृष्टि-स्तद्वद्द्वितीये तु सकीटसर्पाः ।
वृष्टिस्तु मध्याऽपरभागवृष्टे-र्निश्छिद्रवृष्टिर्द्युनिशं प्रवृष्टे ।२३।
समुत्तरेण तारा चित्रायाः कीर्त्यते ह्यपांवत्सः ।
तस्यासन्ने चन्द्रे स्वातेर्योगः शुभो भवति ॥३२४॥ इति ।

वैशाखमें स्वातियोगमें बिजली और बादल आदि हो तो आषाढमें अधिक सुभिक्षकारक है ॥३२०॥ वराहमिहिराचार्य कहते हैं कि— जैसे चन्द्रमाके साथ रोहिणीयोग का फल है उसी तरह आषाढ नक्षत्र (पूर्वा-उत्तराषाढा) और स्वातिनक्षत्रके साथ चन्द्रमाके योगका फल भी वैसा ही है । आषाढके समस्त शुक्लपक्षमें इसका अच्छी तरह विचार करें, इसमें जो विशेष है उसको कहता हूं ॥३२१॥ स्वाति नक्षत्र के दिन रात्रि के प्रथम अंशमें वर्षा हो तो सब प्रकारके धान्य की वृद्धि हो । दूसरे अंश (भाग) में वर्षा हो तो तिल, मूंग और उड़द की वृद्धि हो । तीसरे अंशमें वर्षा हो तो ग्रीष्मऋतु के धान्य 'यव गेहूं आदि' हों, परन्तु शरदऋतु के धान्य जुआर, बाजरी आदि उत्पन्न न हो ॥ ३२२ ॥ दिनके प्रथम भागमें वर्षा हो तो आगे अच्छी वर्षा हो । दूसरे भागमें वर्षा हो तो आगे वर्षा अच्छी हो परन्तु कीडे और सर्प आदि अधिक हों । तीसरे भागमें वर्षा हो तो आगे मध्यम वर्षा हो और दिनरात वर्षा हो तो आगे उपद्रव रहित अच्छी वर्षा हो ॥३२३॥ चित्रा नक्षत्रके समसूत्र ठीक उत्तरमें तारा दीख पड़ता है उसको 'अपांवत्स' कहते है, उसके समीप चन्द्रमाके साथ स्वातिका योग हो तो शुभ होता हैं ॥३२४॥

माह ह काली अट्ठमी, चंदो मेहच्छन्न ।
तो मैं पाख्या मइली, बरसे काल संपन्न ॥३२५॥
माघे कृष्णनवम्यां च मूलर्क्षदिनेऽथवा ।
विद्युन्मेघो धनुर्योगे चाभ्रैर्नभसि संवृते ॥३२६॥
एतस्माद् गर्भतो वृष्टि-र्भाविवर्षेऽभिजायते ।
आषाढे वा भाद्रपदे नवमीदिवसे शुभा ॥३२७॥
माघमासे च सप्तम्यां कृष्णे त्रयोदशीद्वये ।
पूर्वस्यामुदिते मेघे वार्दलैः संकुलेऽपि खे ॥३२८॥
बहुफलकरा वृष्टि-राषाढे सप्तरात्रिकी ।
अमावस्यामयोगाद् भाद्रेऽब्दे पूर्णिमादिने ॥३२९॥
माघे शुक्लप्रतिपदि यदि वार्दलैस्तैलगन्धा-
ध्मानामर्षं परिदिनमथ धान्यवृन्दं महर्घम् ।
सामुद्रं श्रीफलमहिलता-पत्रमुख्यं महर्घं,

माघकृष्ण अष्टमी को चन्द्रमा बादलोंसे आच्छादित हो तो अच्छा समय हो ॥ ३२५॥ माघकृष्ण नवमी को तथा मूलनक्षत्र के दिन और धनुसंक्रांति के दिन आकाश बादलोंसे आच्छादित रहे तथा बिजली चमके और वर्षा होता ॥ ३२६ ॥ इस गर्भसे अगला वर्षमें आषाढ और भाद्रमासकी नवमी के दिन अच्छी वर्षा अवश्य हो ॥ ३२७ ॥ माघकृष्ण सप्तमी और त्रयोदशी आदि दो दिन पूर्वदिशामें मेघका उदय हो और बादलों से आकाश आच्छादित रहे तो ॥३२८॥ आषाढ मासमें सात दिन तक बहुत अच्छा फल वर्षा हो । अमावास्याको मेघका उदय हो तो भाद्रमासकी पूर्णिमाके दिन वर्षा हो ॥ ३२९ ॥ माघशुक्ल प्रतिपदा और पूर्व का बादल हो तो तेल सुगंधीवस्तु और धान्य तमाम हो । यदि तृतीया का वर्षा न हो परन्तु आकाश मेघके बादलों से घिरा रहे तो लवण, श्रीफल और नागरबेल के

वर्षाहीनाभ्रनिकरवृता दृश्यते चेत्तृतीया* ॥३३०॥
न वृष्टिर्न गर्जारवो वार्दलेषु,
×चतुर्थ्यां च गोधूमका दुर्लभाः स्युः।
यदा पंचमी वृष्टिहीनापि साभ्रा,
तदा भाद्रमासे मदा वृष्टियोगः ॥३३१॥
कार्पासस्य महर्घता भुवि भवेत् षष्ठी यदा निर्मला,
सप्तम्यामपि चन्द्रनिर्मलतया राज्ञां महान् विग्रहः।
अष्टम्यां यदि भास्करस्समुदितः प्रात:परं निर्मलो,
रौद्रे वृष्टिनिरोधकृन्नभसि च प्रायोऽल्पवर्षाकर.।३३२। इति।

फाल्गुनमासफलम्—

सप्तम्यादित्रये कृष्णे फाल्गुने घनगर्जितम्।
संग्रामाय प्रतिग्रामं धान्यानां च समर्घता ॥३३३॥
फाल्गुने मासि वर्षा चेज्जायतेऽष्टमिकादिने।

पान महँगे हों ॥३३०॥ चतुर्थीके दिन वर्षा या गर्जना न हो तो गेहूं दुर्लभ हो। यदि पचमीको वर्षा न हो और बादल हो तो भाद्रमासमें अधिक वर्षा हो ॥३३१॥ यदि षष्ठी निर्मल हो तो पृथ्वी पर कपास महँगे हो। सप्तमी को चन्द्रमा निर्मल हो तो राजाओंमें बडा विग्रह हो। अष्टमी को प्रात-कालमें सूर्योदय निर्मल हो तो आर्द्रामें वर्षाका निरोध कारक है अर्थात् थोडी वर्षा करें ॥३३२॥ इति माघमासफलम् ॥

फाल्गुनकृष्ण सप्तमी आदि तीन दिन मेघ गर्जना हो तो गांव गांवमें कलह हो और धान्य सस्ते हों ॥३३३॥ फाल्गुन मास की अष्टमीके दिन वर्षा

टि— क्वचित्तृतीयाचतुर्थ्यो फले विपर्यय, यत–
* माह ज तीज उजली, बादल गाज सुणेह।
गेहूं जव सचो करे, मुहघा होसी वेह ॥१॥
×माहे चोथ सुनिर्मली, बादल मेह न होय।
पान अने नालेरडा, मुहघा हुना जोय ॥२॥

तदा सुभिक्षमादेश्यं वर्षे क्षेमं सुखं बहु ॥३३४॥
सप्तम्यादित्रये माघे गर्भे कुशलनिश्चयः ।
अमावास्यां भाद्रपदे जलं सुलभमम्बुदः ॥३३५॥
फाल्गुने शुक्लसप्तम्यां पौर्णिमास्यां तथा दिने ।
निर्वाते गगने मेघा विजला विद्युदन्विता ॥३३६॥
भविष्यद्वत्सरे तत्र सुभिक्षं क्षेममादिशेत् ।
भाद्रेऽसौ कृष्णसप्तम्यां दर्शे गर्भफलं जलम् ॥३३७॥
दशम्यास्तु—समये चेद् हुताशान्या ज्वलनस्यास्ति वार्दलम् ।
गोधूमकुङ्कुमादीनां महर्घं धान्यमादिशेत् ॥३३८॥
दशम्येकादशीशुक्ले फाल्गुनेऽभ्रादिगर्भयुक् ।
तदा चतुर्थपञ्चम्यौ माश्विने वृष्टिदायिनी ॥३३९॥ इति ।
पौषाद्येष्वपास्तसकलफला-न्यारभ्य लग्नधिया,
मासद्वादशकस्य वार्दलफलं यावन्मया वाक्यपात् ।

हो तो सुभिक्ष, क्षेम कल्याण और सुख अधिक हो ॥ ३३४ ॥ सप्तमी आदि तीन दिन बादल रहे तो माघके गर्भमें कुशलता जानना ऐसा होनेसे भाद्रमासकी अमावास्याको वर्षा हो ॥ ३३५ ॥ फाल्गुन शुक्ल सप्तमी और पूर्णिमा के दिन वायु रहित आकाश हो बिजली चमके और वर्षा रहित बादल हो तो ॥ ३३६ ॥ आगामी वर्षमें सुभिक्ष और कल्याण हो। यही गर्भ भाद्रकृष्ण सप्तमी और अमावस्याको जल बरसावे ॥ ३३७ ॥ यदि होली जलन के समय बादल हो तो गेहूं कुंकुम और धान्य महंगा हो । ३३८ ॥ फाल्गुन शुक्ल दशमी एकादशी के दिन बादल हो तो गर्भ के निमित्त हैं यह आश्विनकी चतुर्थी पंचमी के दिन वर्षा को करनेवाला है ॥ ३३९ ॥ इति फाल्गुनमासगर्भम् ॥

मार्गशिरके उदय और अस्तके फलादेश प्रारम्भ कर बारह महीनोंके बादलोंके उदयतक का फल शास्त्र और बुद्धि मानकर वायु और वर्षा

मत्वासारसमागमोदयविदा-मभ्याससेवाकृता-
प्यादिष्टं ननु वर्षबोधनघनं हर्षाय वर्षार्थिनाम् ॥३४०॥
इति श्रीमेघमहोदयसाधने वर्षप्रबोधग्रन्थे तपागच्छीयमहोपा-
ध्याय श्रीमेघविजयगणिविरचितेऽगस्तिवर्षराजादिज-
न्मलग्नाभ्रविद्युदादिकथने सप्तमोऽधिकारः ।

अथ गर्भकथननामाष्टमोऽधिकारः ।

मेघगर्भलक्षणम्—

अथ वायुजलादीनां संघातः स्त्यानपुद्गलः ।
गूढस्स गर्भशब्देन वाच्योऽस्योत्पत्तिरुच्यते ॥१॥
कार्त्तिके प्रतिपन्मुख्या-स्तिथयः कृष्णजाः कलाः ।
अमावसी षोडशीयं ऋतोः षोडशरात्रयः ॥२॥
गर्भादिः कार्त्तिकस्तेन रक्तवर्णनभोधरः ।
कृत्तिकार्के गर्भपाकाद् वृष्टिः कल्याणकृत्तदा ॥३॥

का समागम के उदय को जाननेवालों से अभ्यास करके तथा उनकी सेवा करके-यथार्थ अर्थिजनोंके हर्षके लिये यह वर्षबोधरूप घनको मैंने कहा ॥३४०॥

सौराष्ट्रराष्ट्रान्तर्गत-पादलिप्तपुरनिवासिना पण्डितभगवानदासाख्यजैनेन
विरचितया मेघमहोदये बालावबोधिन्याऽऽर्यभाषया टीकितोऽग-
स्तिवर्षराजादिनिरूपणनामा सप्तमोऽधिकारः ।

वायु और बादल आदिके इकट्ठे हुए पुद्गलोंके समूहरूप जो गूढ मेघ है उसको गर्भ कहते हैं। उसकी उत्पत्ति कहते हैं ॥१॥ कार्त्तिक कृष्ण-पक्षकी प्रतिपदासे जो कला संज्ञक तिथि हैं वे ऋतु की सोलह रात्रियें हैं, जिनमें अमावस की रात्रि सोलहवीं है। अर्थात् पूर्णिमा से अमावस पर्यन्त सोलह रात्रि कला संज्ञक हैं वे पुष्पवती मानी हैं ॥२॥ कार्त्तिकमें गर्भादि के कारणसे आकाश लाल वर्णवाला होता है। वह गर्भ कृत्तिकाके सूर्यमें

माघादिगर्भं सिद्धान्ते मार्गादिकार्त्तिक मत ।
कार्त्तिकान्माघपर्यन्तं लौकिकैः कश्चिदुच्यते ॥४॥
यतः—गरभ कातिज माह लगि, फागुण परायो गरभ ।
जोर गरभ सौ जिमा, होइ सकरमण सरम ॥५॥
शुक्लपक्षे कार्त्तिके मासे द्वादश्यां प्राज्यसत्ता निशा ।
सकला निर्मला चेत् स्यात् तदा शुभ्यादयो दिश ॥६॥
यावत् स्यात् कार्त्तिकीपूर्णा दिनान्यधिशुनिर्मलम् ।
दिनानि त्रीणि चत्वारि ऋतुस्नात सदा नभः ॥७॥
कार्त्तिके पुष्पनिष्पत्ती मार्गे स्नानं तथा मतम् ।
पौषे तुषारवाताभ्यां निस्य माघो घनान्वितः ॥८॥
लोके तु—काती मासह बारसी, आभा गयण करेय ।
बीज खिवे बरसे मही, तो चार मास बरसेय ॥९॥
अन्यत्रापि—

परिपक्व होता है तब कल्याणकारक वर्षा होती है ॥ ३ ॥ सिद्धान्त में—माघ मासमें कार्त्तिक मासके मतसे मार्गशीर्षादि मासमें और लौकिक मतसे कार्त्तिकसे माघमास पर्यन्त गर्भकी उत्पत्ति मानी है ॥४॥ कार्त्तिक से माघ तक गर्भ पवित्र माना है और फाल्गुनमें जार गर्भ माना है यह मास सदृश फलदायक है ॥५॥ यदि कार्त्तिक शुक्ल बारसकी रात्रि समस्त बादल रहित निर्मल हो तो मेघ के गर्भ का शुभाशुभ जानना ॥ ६ ॥ कार्त्तिक शुक्ल द्वादशीसे पूर्णिमा तक तीन या चार दिन आकाश निर्मल रहे तो ऋतुमती कहना ॥७॥ कार्त्तिकमें रस की उत्पत्ति मार्गशीर्षमें स्नान, पौष में तुषार और वायु हो तथा माघमास बादल सहित हो तो वर्षाके गर्भकी पूर्ण प्राप्ति समझना ॥ ८ ॥ लोक भाषामें भी कहा है कि— कार्त्तिक शुक्ल बारस को आकाशमें बादल हों बिजली चमके और वर्षा हो तो चार मास पूर्ण वर्षा हो ॥९॥ कार्त्तिक शुक्ल बारसके दिन मेघ देखनेमें आवे तो मार्गशीर्षमें

काली धारसी मेहा दीसे, निश्चय वरसे मिगसिरसीसइ*।
पांचमी मेहा चमके दामणि, तो वरसे सघलोई श्रावणि।१०।

वराहस्तु प्राह—

केचिद्वदन्ति कार्त्तिक-शुक्लान्तमतीत्य गर्भदिवसाः स्युः।
न तु तन्मतं बहूनां गर्गादीनां मतं वक्ष्ये ॥११॥
मार्गशिरसितपक्षे प्रतिपत्प्रभृतिक्षपाकरे षाढाम्।
पूर्वां वा समुपगते गर्भाणां लक्षणं ज्ञेयम् ॥१२॥
यन्नक्षत्रमुपगते गर्भश्चन्द्रे भवेत् स चन्द्रवशात्।
पञ्चनवते दिनशते तत्रैव प्रसवमायाति ॥१३॥

मेघमालायां तु—

वारस्तुर्यस्तृतीयं भं तिथिः सा याऽस्तिगर्भिणी।
गर्भपातं विना मेघ-स्तत्तत्काले प्रजायते ॥१४॥
दशप्रकाराः प्रागुक्ता गर्भाः शीतर्त्तुसम्भवाः।

निश्चय से वर्षा हो और पंचमी के दिन मेघ हो या विजली चमके तो पूर्ण श्रावणमासमें वर्षा हो ॥१०॥ कोई कहते हैं कि कार्त्तिक शुक्लपक्षको लांघ कर गर्भके दिन होते हैं, परन्तु ऐसा वहुतोंका मत नहीं है इसलिये वहुतसे गर्गादि ऋषियोंका मत कहता हूँ ॥ ११ ॥ मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष में प्रतिपदा आदि जिस दिन चन्द्रमा पूर्वाषाढा नक्षत्र पर होता है, उसी दिन से गर्भ का लक्षण जानना चाहिये ॥१२॥ जिस नक्षत्र पर चन्द्रमा हो उस दिन जो मेघ का गर्भ उत्पन्न होता है वह चन्द्रमा के वश से माना जाता है। यह चन्द्रमाके वशसे उत्पन्न हुआ गर्भ १९५ दिनमें प्रसवता (वर्षा करता) है ॥१३॥

जिस तिथि को चौथा वार और तीसरा नक्षत्र हो उस तिथिको वर्षा के गर्भ उत्पन्न होते हैं, वह स्थिर हो कर उस २ कालमें वर्षा होती है ॥ १४ ॥ शीतऋतुमें उत्पन्न होनेवाले दश प्रकारके गर्भ पहले कहे हैं, वे

---

* टी—मृगशीर्षशब्देन मृगशीर्षमर्कभोगनक्षत्रं तत्समये वृष्टिरित्यर्थे।

गलन्ति ना चैत्रशुक्ल तदा वर्षा यथास्थिता ॥१५॥
यदुक्तम्—चैत्रस्यादौ दिवसदशकं कल्पयित्वा क्रमेण,
स्वात्यन्ताद्यप्रमुनिमुनिभिर्भूमिसेलाविलासम् ।
यावत्संख्ये भवति दिवसे दुर्दिनं वाऽथ वृष्टि-
स्तावत्संख्यं भवति नियतं वार्षिकं ऋक्षमुक्तम् ॥१६॥
करकाधूमिकापाता रजोवृष्टि सधूमिका ।
त्रिभिरेतैर्महोत्पातैः सद्या गर्भो विनश्यति ॥१७॥
कार्तिकाद् राधपर्यन्तं गर्भाः स्युः सप्तमासजाः ।
उत्पत्तेः सार्द्धषण्मासैर्विना पातं महातिदाः ॥१८॥
यदाहु—गर्भिते कार्तिके मासे मासाश्चत्वार ईरिताः
पुष्पाकुलाः सुभिक्षं च सस्यसम्पत्तिरुत्तमा ॥१९॥
कृष्णपीतादिरक्तश्वेत-वर्णा मेघास्तदा स्मृताः ।
सिन्दूराभ्रवर्णास्तु क्वचिद्वृष्टिविधायिनः ॥२०॥
अत एवोक्तमपि—कार्तामासाद घुरि करवि, चैसाखह पज्जत।

यदि चैत्र शुक्लपक्षमें गर्भ (करक) नहीं और यथास्थित रहे तो वर्षा होती है ॥ १५ ॥ चैत्र शुक्लपक्ष के दश दिन क्रमसे स्वाति नक्षत्र तक क्रमसे वृष्टिके लिए अवलोकन करना चाहिए इनमें यदि जिस दिन दुर्दिन या वर्षा हो उतनी संख्यावाला वर्षाका नक्षत्र कहा जाता है ॥ १६ ॥ ओलोंका तथा धूमिका का गिरना और धूमिका के साथ रज की वर्षा होना ये तीन महा उत्पात हैं, इनसे गर्भका शीघ्र ही नाश होता है ॥ १७ ॥ कार्तिकसे वैशाख तक ये सात मास गर्भ रहते हैं । ये उत्पत्ति से साढ़े छमाससे बाद प्रसूति दायक होते हैं ॥१८॥ कार्तिक मासमें उत्पन्न हुए गर्भ चार मास वर्षा से परिपूर्ण होता है और सुभिक्ष तथा धान्य की प्राप्ति उत्पन्न करता है ॥ १९॥ कृष्ण पीला हरा और श्वेत वर्णवाले मेघ उत्तम वर्षादायक हैं और सिंदूर तथा अभ्रवर्णवाले मेघ कदाचित ही वर्षादायक हैं ॥२० ॥ भाषामें भी—कार्तिक

रोहिणी पूरि नविगले, तो पूरओ गब्भंत ॥२१॥
रोहिण्याः शशिनो भोगः कार्तिके वा तदुत्तरे ।
मासे गर्भोदयायैतद् वर्षेगे कृत्तिकाद्वयम् ॥२२॥
सूत्रे ह्युत्कर्षतो गर्भः षाण्मासिको निवेदितः ।
अधिकस्याविवक्षातस्तत्र सूर्यायुरादिवत्* ॥२३॥
बाहुल्यनयतो यद्वा सूत्र प्रायिकमिष्यताम् ।
गजादिपाठवत् स्वप्ने नवमास्यादिवज्जिने ॥२४॥
मार्गशीर्षादिपक्षे तु कार्तिके पुष्पसम्भवात् ।
कृता भेदविवक्षान्यै-गर्भाष्टमे व्रतादिवत् ॥२५॥

आदिस वैशाख तक रोहिणी नक्षत्रमें वर्षा न हो तो गर्भ की पूर्ण प्राप्ति जानना ॥ २१ ॥ कार्त्तिक और मार्गशीर्षमें चन्द्रमा का रोहिणी नक्षत्रके साथ भोग गर्भका उदय के लिये होता है, वह कृत्तिका आदि दो नक्षत्रोंमें बरसता है ॥ २२ ॥ प्राय सूत्रोंमें षाण्मासिक गर्भ कहा है क्योंकि अधिककी विवक्षा न होनेसे, जैसे सूर्य आदि का आयुष्य ॥ २३ ॥ अथवा बाहुल्यताके नयसे सूत्रको प्रायिक सज्ञा माना है, जैसे उत्तम स्वप्नोंमें प्रथम गज (हाथी) और जिनेश्वरों की गर्भमें नवमासादि स्थिति ॥ २४ ॥ तथा मार्गशीर्षका आदि (कृष्ण) पक्षने गर्भके पुष्पकालका सभव है उसको कार्त्तिक मानकर पुष्प का सभव बतलाया, ऐसी अन्य आचार्योंने भेदविवक्षा की, जैसे गर्भ से आठ वर्षमें यज्ञोपवीत आदि व्रत इत्यादि ॥ २५ ॥

---

*टी— श्रीभगवत्या लोकपालाधिकारे चन्द्रसूर्ययोरायुः पल्योपममात्रमुक्तं च लक्ष सहस्र वायुरधिक तस्यापि विवक्षणात् । ऋषभे वार्षिकतपोऽधिकं तत्र विवक्षितम् । हासततिसमायुर्वीरस्याप्यधिकं । यथा लोके पक्षः पञ्चदशाहैर्मासस्तु त्रिंशता, मासैर्द्वादशभिर्वर्षमधिकं न विवक्ष्यते 'गयवसह' इति स्वप्नगाथा सर्वत्र परं सर्वार्हतां पूर्वगजदर्शनं नास्ति तथापि बाहुल्यात्पाठः । गर्भेऽपि 'नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाणराइंदियाणं" इति पाठ सर्वत्र परं सर्वार्हतां गर्भस्थितिस्तथा नास्ति ।

यदाह वराहः—

सितपक्षभवाः कृष्णे कृष्णाः शुक्ले द्युसम्भवा रात्रौ ।
नक्तं प्रभवाश्चाह्नि सन्ध्याजाताश्च सन्ध्यायाम् ॥२६॥
मार्गसिताद्या गर्भा ज्येष्ठाऽसितपक्षके प्रसुवतेऽम्भः ।
तत्कृष्णपक्षजाता आषाढसिते प्रवर्षन्ति ॥२७॥
पौषसितोत्था गर्भा आषाढस्यासिते च मेघकराः ।
पौषस्य कृष्णपक्षात् विनिर्दिशेच्छ्रावणस्य सिते ॥२८॥
मार्गसिताद्याः कतिचित् पतन्ति करकानिलादिविक्षेपात् ।
मार्गासितजा गर्भा मन्दफला पौषशुक्लजाताश्च ॥२९॥
माघसितोत्था गर्भाः श्रावणकृष्णे प्रसूतिमायान्ति ।
माघस्य कृष्णपक्षेण विनिर्दिशेद् भाद्रपदशुक्लम् ॥३०॥
फाल्गुनशुक्लसमुत्था भाद्रपदस्यासिते विनिर्देश्याः ।
तस्यैव कृष्णपक्षोद्भूता पुनराश्वयुजि शुक्ले ॥३१॥

शुक्लपक्षमें पैदा हुआ गर्भ कृष्णपक्षमें और कृष्णपक्षमें पैदा हुआ गर्भ शुक्लपक्षमें, दिनका गर्भ रात्रिमें और रात्रिका गर्भ दिनमें, तथा सन्ध्याकाल का गर्भ संध्यासमयमें प्रसवता है ॥ २६ ॥ मार्गशीर्ष शुक्लपक्षमें उत्पन्न हुआ गर्भ ज्येष्ठकृष्णपक्षमें प्रसवता है और मार्गशीर्ष कृष्णपक्षमें पैदा हुआ गर्भ आषाढ शुक्लपक्षमें प्रसवता है यानी बरसता है ॥ २७ ॥ पौषशुक्लमें पैदा हुआ गर्भ आषाढकृष्णपक्षमें और पौषकृष्णपक्षका गर्भ श्रावणशुक्लपक्षमें बरसता है ॥ २८ ॥ मार्गशिरशुक्लपक्षमें पैदा हुआ गर्भ कभी ओला और वायु आदि का उत्पातोंसे गिर जाता है। मार्गशीर्ष कृष्णपक्षमें और पौषशुक्लपक्षमें उत्पन्न हुआ गर्भ मन्दफलदायक है ॥ २९ ॥ माघशुक्लपक्षमें उत्पन्न हुआ गर्भ श्रावणकृष्णपक्षमें और माघकृष्णपक्षका गर्भ भाद्रपदका शुक्लपक्षमें प्रसवता है ॥ ३० ॥ फाल्गुन शुक्लपक्षमें उत्पन्न हुआ गर्भ भाद्रपदका कृष्णपक्षमें और फाल्गुन कृष्णपक्षका गर्भ आश्विनशुक्लपक्षमें बरसता है ॥ ३१ ॥ चैत्र-

चैत्रसितपक्षजाताः कृष्णेऽश्वयुजस्तु वारिदा गर्भाः ।
चैत्रासितसम्भूताः कार्त्तिकशुक्लेऽभिवर्षन्ति ॥३२॥
तस्मान्मतेऽपि वाराहे पुष्पं स्यात् कार्त्तिकासिते ।
अनुक्ते परिशेषेण निर्णयोऽत्र बहुश्रुतात् ॥३३॥

मार्गकृष्णादिगर्भा यथा—

मार्गशीर्षकृष्णपक्षे मघायां गर्भसम्भवे ।
यद्वा कृष्णाचतुर्दश्यां सविद्युन्मेघदर्शने ॥३४॥
आषाढे शुक्लपक्षे तच्चतुर्थ्यां वर्षति ध्रुवम् ।
मार्गकृष्णे चतुर्थ्यादि-त्रयेऽश्लेषात्रयीक्रमात् ॥३५॥
गर्भितेष्वेषु ऋक्षेषु मार्गकृष्णे फलं भवेत् ।
आषाढे पूर्वफाल्गुन्यां त्रिरात्रं वृष्टिसम्भवात् ॥३६॥
उत्तरा हस्तश्चित्रा च सप्तम्यादित्रये यदा ।
मार्गशीर्षे गर्भिता चेद् अभ्रैर्वातैश्च विद्युता ॥३७॥

क्लपक्षमे पैदा हुआ गर्भ आश्विनकृष्णपक्षमें और चैत्रकृष्णपक्षका गर्भ कार्त्तिकशुक्लपक्षमे वरसता है ॥ ३२ ॥ ऐसा वराहमिहराचार्यका मत है इसलिये कार्त्तिककृष्णपक्षमें मेघ के पुष्प (रज) की प्राप्ति समझना चाहिये और जो बाकी नहीं कहे हैं उनका निर्णय बहुत से आगमों द्वारा पता कर लेना चाहिये ॥ ३३ ॥

मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष में मघानक्षत्र के दिन गर्भ उत्पन्न हो या कृष्ण चतुर्दशी को बिजली सहित बादल हो तो ॥ ३४ ॥ आषाढ शुक्लपक्ष में चतुर्थीके दिन अवश्य वर्षा होती है । मार्गशिर कृष्णपक्षकी चतुर्थी आदि तीन तिथि और आश्लेषा आदि तीन नक्षत्र इन में गर्भकी उत्पत्ति हो तो आषाढमासमें पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रके दिन तीन रात्रि वर्षा हो॥ ३५-३६ ॥मार्गशीर कृष्णपक्षमें उत्तराफाल्गुनी हस्त और चित्रानक्षत्र तथा सप्तमी आदि तीन तिथि इनमें गर्भ उत्पन्न हो और बिजलीके साथ बादल तथा वायु हो तो॥ ३७॥ आषाढ

आषाढे श्वेतपक्षे तु अष्टम्यां स्वातिभे तथा ।
त्रिरात्रं मेघवृष्ट्या स्याद्धरिरेकार्णवा मही ॥३८॥
दशम्यादित्रये मार्गे कृष्णे चामावसीतिथौ ।
चित्रास्वातिविशाखासु सञ्जाते गर्भलक्षणे ॥३९॥
आषाढे शुक्लपक्षान्ते तिथौ तस्यां घनोदयः ।
तस्मिन्नेव च नक्षत्रे जायते नात्र संशयः ॥४०॥
पौषमासे कृष्णपक्षे भरणी शतभिषग् यदा ।
इत्यादिश्लोक दशकं प्रागुक्तमिह भाव्यते ॥४१॥
सप्तम्यादित्रये पौषे कृष्णे गर्भस्य लक्षणात् ।
श्रावणे शुक्लसप्तम्यां स्वाती स्याद् वृष्टये ध्रुवम् ॥४२॥
त्रयोदशीत्रये कृष्णे विद्युन्मेघैश्च गर्भिते ।
श्रावणे पूर्णिमायां स्याद् वृष्टिः सर्वत्र मण्डले ॥४३॥
माघे कृष्णनवम्यां चेद्विद्युक्त प्राक ।
फाल्गुने शुक्लसप्तम्यां कृत्तिकानक्षत्रसङ्गमे ।

शुक्लपक्षमें अष्टमीका तथा स्वातिनक्षत्रका तीन रात्रि मेघवृष्टि हो, पृथ्वी जलसे एकाकार हो ॥३८॥ मार्गशिर कृष्णपक्ष की दशमी आदि तीन तिथि और अमावास्या इन तिथियोंमें तथा चित्रा स्वाति और विशाखा इन नक्षत्रोंमें गर्भ उत्पन्न हो तो ॥३९॥ आषाढ शुक्लपक्षके अन्तकी उन्हीं तिथियोंमें और उन्हीं नक्षत्रोंमें वर्षा हो इसमें संदेह नहीं ॥४०॥

पौष मासका कृष्णपक्षमें यदि शतभिषानक्षत्रके दिन वायु बादल हो इत्यादि दश श्लोक पहले कहे हैं वहां से यहां विचार लेना ॥४१॥ पौष कृष्णपक्षकी सप्तमी आदि तीन तिथियों में गर्भका लक्षण होने से श्रावण शुक्ल सप्तमीको स्वातिनक्षत्रके दिन निश्चय से वर्षा होती है ॥४२॥ पौष कृष्ण त्रयोदशी आदि तीन तिथियों में बिजली और बादल सहित गर्भ हो तो श्रावण मासकी पूर्णिमाके दिन सर्वत्र देशमें वर्षा हो ॥४३॥

गर्भोद्‌भावमी भाद्रे द्रोणमेघप्रवर्त्तिनी ॥४४॥
अष्टम्यादिचतुष्के तु चतुर्थ्यादित्रये घनः ।
भवेद् भाद्रपदे मासे जगतः सुखसाधनम्‌ ॥४५॥
पञ्चमी सप्तमी चैत्रे नवम्येकादशी सिता ।
त्रयोदशी पूर्णिमा च दिनेष्वेतेषु वर्षणात्‌ ॥४६॥
करकापातनाद्विद्युद्दर्शनाद् गर्जितादपि ।
वर्षाकाले जलधरच्छिद्र देव प्रवर्षति ॥४७॥
यद्वा वायुरिव त्रेधा ज्ञापकः स्थापकः पुनः ।
उत्पादकश्च गर्भोऽत्र सार्द्धषाण्मासिकोऽन्तिमः ॥४८॥
कार्त्तिकद्वादशीगर्भो ज्ञापकः शुचिवर्षणे ।
मार्गशुक्लस्य पञ्चम्याः श्रावणादिचतुष्टये ॥४९॥
पौषकृष्णाष्टमीगर्भो सप्तम्यां नभसः सिते ।
पौषकृष्णदशम्यां हि गर्भो भाद्रासितस्य वा ॥५०॥

फाल्गुन शुक्ल सप्तमी कृत्तिका युक्त हो उस दिनका गर्भसे भाद्रपद की अमावसको एक द्रोण जलवर्षा हो ॥४४॥ फाल्गुन में अष्टमी आदि चार दिन गर्भ हो तो भाद्रपदमें चतुर्थी आदि तीन दिन जगत्‌को सुखकारक वर्षा हो ॥४५॥

चैत्र शुक्ल पंचमी सप्तमी नवमी एकादशी त्रयोदशी और पूर्णिमा इन दिनोंमें वर्षा हो, ओला गिरे, बिजली चमके और गर्जना हो तो वर्षाकाल में छिद्रसे ही वर्षा हो ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

जैसे वायु तीन प्रकार के हैं ऐसे गर्भ भी ज्ञापक, स्थापक और उत्पादक ये तीन प्रकार के हैं, इनमें अन्तिम साढे छमासका गर्भ उत्तम माना है, ॥ ४८ ॥ कार्त्तिक शुक्ल द्वादशीका गर्भ आषाढ में वर्षता है । मार्गशीर्षशुक्ल पंचमीका गर्भ श्रावण आदि चार मास बरसता है ॥ ४९ ॥ पौषकृष्ण अष्टमी का गर्भ श्रावणशुक्ल सप्तमी को बरसता है । पौषकृष्ण दशमी का

पौषस्य शुक्लषष्ठीजो गर्भो भाद्रपदाऽसिते ।
माघे धवलसप्तम्या आश्विनाऽशुक्लशुक्लयोः ॥५१॥
लोकेऽपि–आसाढे सिहरा करे, वाजे उत्तर वाय ।
तउ जाणे काती थकी, दसमे मास विहाय ॥५२॥
पोस अंधारि आठमि, विजुअल आभा छांइ ।
सावण सुदि सातमि, जलधर दीपी थाइ ॥५३॥
पोसइ छट्ठे हुइ घणसारो, तो वरसे भद्दव अंधारो ।
माही सत्तमी सत्ते जोइ, इण गुण निरता वरसे आसोइ ॥५४॥
पोसदशमी जो मेह संभारे, तो वरसे भद्दव अंधारे ।
माही सातमी गब्भी दीसे, आसू वरसे दीह बत्तीसे ॥५५॥
छट्ठि इगारसि पूनिम पूरी, पोसअमावसि होइ अनीरी ।
इम जंपे सवि पंडिया पंडिय, वरसे मेह असाढ अखंडिय ॥५६॥
पोसअंधारी सातमे, जइ घण नवि वरसेइ ।

गर्भ भाद्रकृष्ण में बरसता है ॥ ५० ॥ पौषशुक्ल षष्ठी का गर्भ भाद्रपदकृष्णअष्टमीमें बरसता है । माघशुक्ल सप्तमीका गर्भ आसोज कृष्ण और शुक्ल ये दोनों पक्षमें बरसता है ॥ ५१ ॥

आषाढमें गर्जना हो और उत्तरदिशाका वायु चले तो भाद्रपदमें वर्षा हो ॥५२॥ पौष कृष्णअष्टमीको आकाश बादलों से आच्छादित हो किन्तु वर्षा न हो तो श्रावण शुक्ल सप्तमीको वर्षा हो ॥५३॥ पौष मासकी षष्ठीके दिन वर्षाका गर्भ हो तो भाद्रपदका कृष्णपक्षमें वर्षा हो । माघ शुक्लसप्तमी को वर्षाका गर्भ हो तो आसोजमासमें निरंतर वर्षा हो ॥५४॥ पौष दशमी को मेघाडंबर हो तो भाद्रपदके कृष्णपक्षमें वर्षा हो । माघ मासकी सप्तमी को वर्षाका गर्भ हो तो आसोज महीनेके बत्तीस दिन वर्षा हो ॥५५॥ पौष मासकी षष्ठी एकादशी पूर्णिमा और अमावास्याके दिन गर्भकी परिपूर्णता हो तो वर्षाऋतुमें अविच्छिन्न मेघ बरसे ऐसे सब पंडित कहते हैं ॥५६॥ पौष

तो आद्रा मांहे आदरे, जलथल एक करेह ॥५७॥

ततः स्युर्ज्ञापके गर्भे मासा षट् सप्त चाष्ट* वा ।

स्थापको ज्येष्ठमूलादि-पूर्वाषाढाम्बुदोदयः ॥५८॥

यतः–गली रोहिणी गली पडिवा, गलिया जेट्ठा मूल ।

पूर्वाषाढ धडुकिओ, नीपना सातु नूर ॥५९॥

उत्पादकस्तु द्विविधस्तात्कालिकः स लक्षणः ।

सार्द्धषाण्मासिकस्त्वन्यः प्रथमः समयोद्भवः ॥६०॥

द्वित्रिपञ्चादिदिवसमासाद्यन्तजलप्रदाः ।

ते मध्यमाः परिज्ञेया स्तात्कालिकाः पुनस्त्वमी ॥६१॥

मेघचक्रे रौद्रीयमेघमालायाम्—

पूर्वास्यां यदि सन्ध्यायां मेघैराच्छादितं नभः ।

कृष्ण सप्तमीको यदि वर्षा न हो तो आर्द्रानक्षत्रमें वर्षाका प्रारंभ हो याने जल स्थल एकाकार हो ॥ ५७ ॥

ज्ञापकगर्भ छ सात या आठ मास के बाद बरसता है। स्थापक गर्भ ज्येष्ठ मूल और पूर्वाषाढानक्षत्रमें उदय होता है ॥५८॥ इसलिये कहा है कि– प्रतिपदा तिथि, रोहिणी, ज्येष्ठ और मूलनक्षत्र इनमें वर्षा हो और पूर्वाषाढामें गर्जना हो तो सातों नूर उत्पन्न हों ॥५९॥ उत्पादक गर्भ दो प्रकारके हैं - एक 'तात्कालिक' शीघ्र ही बरसनेवाला और दूसरा समय पर बरसनेवाला साढे छमासिक ॥ ६० ॥ गर्भ होने बाद जो दो तीन पांच आदि दिनोंमें या मासके भीतर ही बरसनेवाला हो यह मध्यम तात्कालिक गर्भ जानना ॥६१॥

पूर्व दिशामें यदि सन्ध्या समय आकाश बादलों से आच्छादित हो

---

* टी— अत्राष्टौ मासा पौषदशमीत्यादावपि तथैव, माघशुक्लसप्तम्यां गर्भोऽप्याश्विनेऽष्टमासज, आश्विनकृष्णे सार्द्धाष्टमासज । पौषपूर्णिमागर्भ आषाढशुक्ले षाण्मासिक कृष्णे तु सार्द्धषाण्मासिक कृष्णादिमते, शुक्लादिमते तु आषाढशुक्ले सार्द्धषाण्मासिक, कृष्णपक्षे साप्तमासिकः ।

पर्वताकृतिभिः कैश्चित् कैश्चित्कुञ्जरमूर्तिभिः ॥६२॥
आमाकृतिपरैरभ्र-मालाधूपवलीघने ।
पञ्चरात्रात् सप्तरात्रात् सद्या वृष्टिर्निगद्यते ॥६३॥
उत्तरस्यां च सन्ध्यायां गिरिमालेव विस्तृतः ।
मेघस्तूनीयदिवसे कुरुते तुष्टिकरा घृणाम् ॥६४॥
पश्चिमायां तु सन्ध्यायां घना स्युः पर्वता इव ।
श्यामाभ्रप्रस्तंगते भानौ सद्यो वर्षोमितक्षणम् ॥६५॥
दक्षिणस्यां यदा मेघ स कोटीनारसन्मम ।
त्रिपञ्चसप्तरात्रान्त किञ्चिद् वृष्टिविधायकः ॥६६॥
आग्नेय्यां यदुतापाय मेघा स्वल्पजलप्रदाः ।
नैर्ऋत्यामीतिसन्ताप रोगदर्पोत्करा स्मृता ॥६७॥
वायुवृष्टिकरा सद्या वातश्यामसुता घना ।
यथा न्यामसहानिष्पत्ता मेघा सुखकरा अक्षात् ॥६८॥

और कोई बादलोंकी आकृति पर्वत या हाथीके समान देखनेमें आवे ॥६२॥ और अनेक प्रकारके थे। हाथियोंके सदृश बादल होवे तो पांच या सात दिनके बाद अवश्य वर्षा हो ॥ ६३ ॥ उत्तर दिशामें संध्याके समय पर्वत-पंक्तिकी समान विस्तृत बादल हो तो तीसरे दिनमें मनुष्योंको संतुष्ट करनेवाली अच्छी वर्षा हो ॥ ६४ ॥ पश्चिम दिशामें सन्ध्याके समय पर्वतकी समान बादल हो और सूर्यास्तके समय काले रंगके बादल हों तो शीघ्र ही वर्षा होती है ॥६५। दक्षिण दिशामें संध्याके समय कच्छ या मुकुटकी समान बादल हो तो तीन पांच या सात दिनके बाद कुछ वर्षा हो ॥६६॥ आग्नेय कोनमें बादल हो तो गरमी अधिक हो और वर्षा थोड़ी हो। नैर्ऋत्य कोनमें बादल हो तो ईति उपद्रव हो और रोगकारक वर्षा हो ॥६७। वायव्य कोनमें उत्तम बादल हो तो शीघ्र ही वायु और वर्षा करते हैं। ईशान कोनमें बादल हो तो खेतीको पकाने या सुखकारक जल वर्षा हो ॥६८॥

अथ तात्कालिकगर्भलक्षणम्—

चतुर्थी पञ्चमी षष्ठी ह्यमावास्या च सप्तमी ।
आषाढकृष्णतिथयः सद्यो मेघाय लक्षणे ॥६९॥
अभ्रेषु पञ्चवर्णाः स्युः पश्चिमाभिमुखी गतिः ।
पूर्ववातः पुनर्मेघा वर्षालक्षणमीदृशम् ॥७०॥
आषाढपूर्णाविगमाद् यावदायाति पञ्चमी ।
तावद्दिनेषु मध्याह्ने सन्ध्यायां मेघलक्षणे ॥७१॥
सप्तमी दशमी चैका-दशी श्रावणकृष्णगा ।
मेघचिन्हेन सन्ध्यायां त्रिरात्राद् वृष्टिकारिणी ॥७२॥
अमावास्यां श्रावणस्य चित्रादिनेऽथवा सिते ।
सद्य उत्पद्यते गर्भ-स्तद्दिने दुर्दिनोदिता ॥७३॥
पूर्वस्यां बार्दलं धूम्रं सूर्योऽस्ते पीतकृष्णता ।
उत्तरस्यां मेघमाला प्रभाते विमला दिशः ॥७४॥

आषाढ कृष्णपक्ष की चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, अमावस और सप्तमी ये तिथि शीघ्र ही मेघ बरसाती है ॥६९॥ आकाशमें पच वर्णवाले बादल पश्चिमाभिमुख जा रहे हों और पूर्वदिशाका वायु चलता हो तो यह वर्षाका लक्षण समझना चाहिये ॥ ७० ॥ आषाढ पूर्णिमाके बाद पचमी तक इन दिनोंमें मध्याह्न समय और सध्या समय मेघके लक्षण हो तो शीघ्र ही वर्षा होती है ॥७१॥ श्रावण कृष्णपक्षकी सप्तमी दशमी और एकादशीको संध्या समय मेघके लक्षण हो तो तीन रातमें वर्षा हो ॥७२॥ श्रावणकी अमावस को या शुक्लपक्षमें चित्रानक्षत्रके दिन दुर्दिन हो तो शीघ्र ही गर्भ उत्पन्न होता है ॥७३॥ पूर्वदिशामें धूम्र वर्णवाले बादल सूर्यास्तके समय पीले या श्याम वर्णवाले हो जाय, उत्तरदिशा में मेघ हो, प्रात.काल में दिशा स्वच्छ रहे और मध्याह्न समय अधिक गरमी हो तो ये मेघ के लक्षण जानना; यदि ऐसे लक्षण हो तो उसी दिन आधीरात में प्रजा को संतुष्टकारक अच्छी

मध्यकाले अमेत्ताय ईदृशो मेघलक्षणे ।
चार्द्रराम्ने गते वृष्टिः प्रजातापाय जायते ॥७५॥
भाद्रशुक्ले चतुर्थेऽह्नि पञ्चमे सप्तमेऽष्टमे ।
पूर्णिमायां च गर्भेण सद्यो मेघमहोदये ॥७६॥
पञ्चभिः सप्तभिर्वा स्याद् दिनैरकार्णवा मही ।
चतुर्थ्यामपि पञ्चम्यामाश्विने शीघ्रगर्भदा ॥७७॥
दक्षिणा प्रबलो वातः सकृदेव प्रजापते ।
स्वातीभेन नक्षत्रे शीघ्रं वर्षति माधवः ॥७८॥
धूम्रिता स्युर्दिशः सर्वाः पूर्ववाते बहत्यपि ।
चतुर्यामान्तरे मेघः सरांसि परिपूरयेत् ॥७९॥
उदयशिखरिसंस्थो दुर्निरीक्षोऽतिदीप्त्या,
द्रुतकनकनिभाशः स्निग्धवैडूर्यकान्तिः ।
तदहनि कुरुतेऽम्भःस्तोयकाले विवस्वान्,
प्रतिपदि यदि चोच्चैः खं गतोऽतीव तीव्रः ॥८०॥

वर्षा होती है ॥७४-७५॥ भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी, पञ्चमी, सप्तमी, अष्टमी और पूर्णिमा इन दिनोंमें गर्भ हो तो शीघ्रही वर्षा होती है ॥७६॥ पांचवें या सातवें दिनमें ही पृथ्वी जलसे पूर्ण हो जाय। आश्विन मासकी चतुर्थी और पंचमीको भी शीघ्रही वर्षात्मक गर्भ होते हैं ॥७७॥ स्वातिनक्षत्र के दिन दक्षिण दिशाका प्रबल वायु एकबार भी चले तो शीघ्रही वर्षा होती है ॥७८॥ सब दिशाएँ धूम वर्णवाली हों और पूर्वदिशाका वायु चले तो चौथे प्रहर जलकी वर्षा सरोवरको परिपूर्ण करें ॥७९॥ वर्षाऋतु में जिस दिन उदयाचल पर रहा हुआ सूर्य अपनी कान्ति से प्रचण्ड तेजस्वी हो, पिघले हुए सुवर्णकी समान या स्निग्ध वैडूर्यमणिकी समान जिसकी कान्ति वाले हो तो उस दिन जलवर्षा हो। यदि आकाश में ऊंचे स्थान पर जा कर तीव्र किरणोंसे तपे तो उसी समय वर्षा हो ॥८०॥

गर्भविनाशलक्षणम्——

गर्भोपघातलिङ्गान्युल्काशनिपांशुपातदिग्दाहाः।
क्षितिकम्पखपुरकीलककेतुग्रहयुद्धनिर्घाताः ॥८१॥
रुधिरादिवृष्टिवैकृतपरिघेन्द्रधनूंषि दर्शनं राहोः।
इत्युत्पातैरेतैस्त्रिविधैश्चान्यैर्हतो गर्भः ॥८२॥
स्वर्तुः प्रभावजनितैः सामान्यैर्यैश्च लक्षणैर्वृद्धिः।
गर्भाणां विपरीतैस्तैरेव विपर्ययो भवति ॥८३॥
भाद्रपदाद्वयविश्वाम्बुदेवपैतामहेष्वथर्क्षेषु।
सर्वेष्वृतुषु विवृद्धो गर्भो बहुतोयदो भवति ॥८४॥
शतभिषगाश्लेषार्द्रास्वातिमघासंयुतः शुभो गर्भः।
पौष्णांस्तु बहून् दिवसान् हन्त्युत्पातैर्हतैस्त्रिविधैः ॥८५॥
मार्गशिरादिष्वष्टौ षट्षोडश विंशतिश्चतुर्युक्ताः।

अब गर्भ विनाश कारक लक्षण कहते है— गर्भके समय उल्कापात, वज्रापात, धूलिकी वर्षा, दिग्दाह, भूमिकम्प, गन्धर्व नगर, कीलक, केतु, ग्रहयुद्ध, निर्घातशब्द, रुधिर आदिकी वर्षा होनेसे विकारपन, परिघ, इन्द्र-धनुष और राहु का दर्शन इन सब उत्पातों से और दूसरे तीन प्रकार के उत्पातोंसे गर्भका विनाश हो जाता है ॥८१-८२॥ अपने ऋतुके स्वभाव में उत्पन्न हुए गर्भ साधारण लक्षण द्वारा बढते है और यही लक्षण विपरीत होनेसे गर्भकी हानि होती है ॥८३॥ पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा और रोहिणी इन नक्षत्रों में उत्पन्न हुए गर्भ सब ऋतु में वृद्धि पाते हैं और बहुत जलदायक होते हैं ॥८४॥ शतभिषा, आश्लेषा, आर्द्रा, स्वाति और मघा इन नक्षत्रों में उत्पन्न हुए गर्भ शुभ होते हैं और बहुत दिन तक पोषण करते हैं परंतु तीन उत्पातों से हने हुए हों तो नष्ट हो जाते हैं ॥८५॥ मार्गशिरमें शतभिषा आदि पांच नक्षत्रोंमें उत्पन्न हुए गर्भ साढे छ मास बाद आठ दिन तक बरसते है। इसी तरह पौष के उत्पन्न

सितादिरपरिदिवसैकमपरेकतमर्षोय पञ्चभ्य ॥८६॥
क्रूरग्रहसंयुक्ते करकाशनिवर्षदायिनो गर्भाः ।
शशिनि रवौ चापि शुभैर्युतवीक्षिते भूरि वृष्टिकरा ॥८७॥
गर्भसमयेऽतिवृष्टिर्गर्भाभावाय निर्निमित्तकृता ।
द्रोणाष्टांशाभ्यधिके वृष्टे गर्भः स्रुतो भवति ॥८८॥
गर्भः पुष्टः प्रसवे ग्रहोपघातादिभिर्यदि न वृष्टः ।
आत्मीयगर्भसमये करकामिश्रं ददात्यम्भः ॥८९॥
काठिन्यं याति यथा चिरकालधृतं पयः पयस्विन्याः ।
कालातीतं तद्वत्सलिलं काठिन्यमुपयाति ॥९०॥
पञ्चनिमित्तैः शतयोजनं तदर्धार्धमेकहान्या ।
वर्षति पञ्च समस्ताद्रूपेणैकेन यो गर्भः ॥९१॥

हुए गर्भ छः दिन माघके सोलह दिन, फाल्गुन के चौबीस, चैत्रके बीस दिन और वैशाखके तीन दिन बरसकर वर्षा होती है ॥८६॥ यदि गर्भ का समय क्रूर ग्रह युक्त हो तो समस्त गर्भ से ओले और बिजली गिरे–तथा मछलियों साथ मछली बरसे। यदि चन्द्रमा या सूर्य शुभग्रह से युक्त हो या शुभग्रह से देखे जाते हो तो बहुतसी वर्षा करते हैं ॥८७॥ यदि गर्भ के समय बिना कारण बहुतसी वर्षा हो तो गर्भका नाश होता है। द्रोणका अष्टमांशसे अधिक वर्षा हो तो गर्भस्राव होता है ॥८८॥ यदि पुष्टगर्भ प्रसव के समय ग्रहों के उपघात आदिसे न बरसे तो दूसरे गर्भ प्रसव के समय ओलेका मिला हुआ जल बरसाता है ॥८९॥ जिस प्रकार गायों का दूध बहुत काल तक रहनेसे कठिन हो जाता है इसी तरह जल भी बरसने के समय न बरसे तो कठिन ओले बन जाते हैं ॥९०॥ जो गर्भ पवन जल बिजली गर्जना और बादल इन पांच प्रकारके निमित्तसे युक्त होता है वह सौ योजन तक बरसता है। चार निमित्तसे पचास, तीन निमित्तसे पचीस दो निमित्तसे साढे बारह और एक निमित्तसे पांच योजन तक बरसता है।

द्रोणः पञ्चनिमित्ते गर्भे त्रीण्याढकानि पवनेन ।
षड्विद्युता नवाभ्रैः स्तनितेन द्वादश प्रसवे ॥९२॥
ससन्ध्यासंलग्नो वर्षति गर्भस्तु योजनं स्वेकम् ।
सगर्जितं त्रिगुणितं सार्द्धाष्टयोजनो भवेद् विद्युत ॥९३॥
प्रतिसूर्यकेण वर्षत्येकादश योजनानि गर्भस्तु ।
सपरिवेशो द्वादश समीरणेनापि पञ्चदश ॥९४॥
पवनाभ्रवृष्टिविद्युद्गर्जितशीतोष्णरश्मिपरिवेषाः ।
जलमत्स्येन सहोक्ता दशधा गर्भप्रसवहेतुः ॥९५॥
पवनसलिलविद्युद्गर्जिताभ्रान्वितो यः;
स भवति बहुतोयः पंचरूपाभ्युपेतः ।
विसृजति यदि तोयं गर्भकाले स भूरि,
प्रसवसमयमित्वा शीकराम्भः करोति ॥९६॥

अर्थात् एक २ निमित्तके अभावसे सौ योजनके अर्द्धार्द्धकी हानि होकर वर्षा होती है ॥ ९१ ॥ पाच निमित्तवाले गर्भ एक द्रोण (२०० पल) जल बरसाता है । प्रसवके समय पवन हो तो तीन आढक (१५० पल) जल बरसाता है । बिजलीके निमित्तवाले गर्भ छः आढक जल बरसता है। मेघ संयुक्त गर्भ हो तो नव आढक , और गर्जना युक्त गर्भ हो तो बारह आढक जल बरसाता है ॥ ९२ ॥ सन्ध्या युक्त गर्भ एक योजन तक बरसता है । गर्जना युक्त गर्भ तीन योजन तक, बिजली युक्त गर्भ साढे आठ योजन तक बरसता है ॥९३॥ उल्कापात युक्त गर्भ ग्यारह योजन तक, परिमंडल युक्त बारह योजन और वायु युक्त पदरह योजन तक बरसता है ॥९४॥ पवन, बादल, वर्षा, बिजली, गर्जना, शीत, उष्ण, किरण, परिवेष और जल-मत्स्य, ये दश प्रकार गर्भ प्रसवके कारण हैं ॥९५॥ जो गर्भ पवन, जल, बिजली, गर्जना और बादल इन पाच निमित्तरूपसे युक्त हो तो वह गर्भ बहुत जलदायक होता है । यदि गर्भकालमें बहुत जल बरसे तो प्रसव समय

अथ सद्यो वृष्टिलक्षणम्—

वार्दले रात्रिवासस्थेत् सपातेषु निशि द्युतिः ।
जलेषु चाष्णता सद्यो मेघवर्षाभिलक्षणम् ॥९७॥
रात्रौ तारा झलत्कारः प्रातश्चाल्पघना रविः ।
अवृष्टौ शक्रचापश्च सद्यो वृष्टिस्तदा भवेत् ॥९८॥
चटन्ति भुजगा वृक्षे सूर्येन्द्वोः परिधिस्तथा ।
कर्णो चेद् गडुरी होते लोहे कीटः पुनः पुनः ॥९९॥
मार्गे च तर्क तत्काले मत्स्येन्द्रधनुरुद्गमः ।
धूम्रिता मिलिता शैला-श्चर्मादिषु लवणाक्तता ॥१००॥
प्रभाते पश्चिमायां चे-दिन्द्रचापः प्रदृश्यते ।
वार्यीदृशैव मध्यभ्रे शीघ्रं वर्षति माधवः ॥१०१॥
गोमये बहवः कीटाः परितापोऽतिदारुणाः ।
चातकानां रवो वृष्टिं सद्यः स सूचयेज्जने ॥१०२॥

को सामान्य अल्प वर्षा करता है ॥९६॥

बादलोंमें कुंभकार हो, रात्रिमें खद्योत (उडनेवाले चमकदार कीड़े) की प्रभा अधिक हो और पानीमें उष्णता हो तो शीघ्र मेघवर्षाका आगमन जानना ॥९७॥ रात्रिमें तारा स्थिर, प्रातःकाल सूर्य लालवर्ण वाला हो और आकाशमें बिना वर्षा इन्द्रधनुष दीखे तो शीघ्र ही वर्षा होती है ॥९८॥ वृक्षपे सर्प चढे, सूर्य और चन्द्रमा का परिधि (परिमंडल) हो उचस्थान पर गडरी सोवे, लोहे पर बारंबार कीड़े लगजाय ॥९९॥ मार्गमें तत्काल शीघ्र मत्स्य, अल्पमत्स्य तथा इन्द्रधनुष का उदय हों पर्वत धूम्र वाले होकर घने (इकट्ठे) दीखें चमड़ा आदिमें नीलापन हो जाय ॥१००॥ प्रातःकाल पश्चिमदिशामें इन्द्रधनुष दीखे और शस्त्रमिश्र ... हो तो शीघ्र वर्षा होती है ॥१०१॥ गोबरमें अधिकतासे बहुत प्रकारके कीड़े हों तथा चातक पक्षी शब्द करे तो शीघ्र ही वर्षा होती है ॥

सूर्योदये श्रावणमासि गर्जेद्भ्रमन्ति नीरोपरि वापि मत्स्याः।
घनस्तदाष्टादश यामम‍ध्ये, करोति भूमिं सलिलेन पूर्णाम्।३।
वराहः–शुककपोतविलोचनसन्निभो,
मधुनिभश्च यदा हिमदीधितिः।
प्रतिशशी च यदा दिवि राजते,
पतति वारि तदा न चिराद्दिवः ॥१०४॥
स्तनितं निशि विद्युतो दिवा,
रुधिरनिभा यदि दण्डवत् स्थिता।
पवनः पुरतश्च शीतलो यदि,
सलिलस्य तदागमो भवेत ॥१०५॥
वल्लीप्रवाला गगनोन्मुखाःस्नानं च पक्षिणाम्।
जलान्तः पांशुराशौ वा गवामूर्ध्वं खवीक्षणम्॥१०६॥
मार्जारभूमिखननं गोनेत्रात् पयसः स्रवः।
नीलिका कज्जलाभं खं शिशुसेतुक्रियाध्वनि ॥१०७॥
पिपीलिकाण्डकोत्सर्प उन्मुखाः कुक्कुरा गृहे।

१०२ ॥ श्रावणमासमें सूर्योदय के समय मेघ गर्जना हो, और पानीके पर मछली घूमे तो अठारह पहरके भीतर वर्षा होकर जलसे पृथ्वीको पूर्ण करे ॥१०३॥ जिस समय चन्द्रमाका रंग तोते, तथा कबूतरकी आंख समान लालवर्णवाले या मधकी समान रंगवाले हो अथवा आकाशमें चन्द्रमाका दूसरा प्रतिविम्ब दिखलाई दे तब आकाशसे शीघ्रही वर्षा होती है॥१०४॥ रात्रिमें मेघ गर्जना हों, दिनमें लालवर्णवाली बिजली दडके समान सीधी दीखे और पवन आगेसे शीतल हो तो उस समय जलका आगमन होता है ॥१०५॥ लताओं के नवीन पत्ते आकाश की ओर ऊंचे उठ जाय, पक्षिगण जल या धूलिसे स्नान कर, गौ ऊँचे मुख करके आकाश को देखे ॥१०६॥ बिल्ली भूमिको खने, गौके आंखसे जल गिरे, नीलिका काजल के सदृश आ-

रटन्ति बहि दिशि वा शिवा शब्दोऽपि दृश्यते ॥१०८॥
यदा भाद्रपदे मासे प्रतिपद्दशमी तथा ।
सप्तमी पूर्णिमा चैव नवमी च यथाक्रमम् ॥१०९॥
मेघा यदा न दृश्यन्ते पश्चिमां दिशिमाश्रिता ।
तावद्वर्षन्ति सततं बहुनीरा पयोधरा ॥११०॥
सन्ध्याकाले च ये मेघा पर्वताकारसन्निभा ।
आदित्यास्तंगते तर्हि चाहोरात्रं प्रवर्षति ॥१११॥
सूर्यास्तगमने व्योम श्रावणे रक्तमाश्रितम् ।

पड़ा दीखे, रस्तेमें बालक धूल भरके पुल बांधे ॥१०७॥ पिपीलिका(चींटी)अण्डोंको ढोवे, घरमें कुत्ते* ऊंचा मुख कर देखे, शृगाल दिन या रात्रिमें शब्द करे, इत्यादि इन निमित्तों से शीघ्र वर्षा होना समझना चाहिये ॥१०८॥ यदि भाद्रपदमास में प्रतिपदा दशमी सप्तमी पूर्णिमा और नवमी इन तिथियों में अनुक्रमसे पश्चिम दिशामें रहे हुए बादल न दीखे तो नीरधर मेघ बहुत जल बरसावे ॥१०९।११०॥ सूर्यास्तमें सन्ध्याकाल के समय पर्वत के आकार सदृश बादल दीखे तो दिनरात वर्षा हो ॥१११॥ श्रावणमासमें सूर्यास्तके समय आकाश अरुणवर्ण वाला दीखे तब तक वर्षा न-

---

* ज्योतिषसारोद्धार शाकुनसारोद्धारमें भी कहा है कि—
नीरप्रीत्यै [illegible] कम्पते भुवि ।
[illegible] वर्षा मेघवृष्टि [illegible] ॥१॥
[illegible] मेघस्य वर्षासु [illegible] यदि ।
[illegible] वारिपूरं पतिष्यति [illegible] ॥२॥
प्रसार्य [illegible] कुर्वन् [illegible] ।
[illegible] ॥३॥

[illegible] ॥१॥ [illegible] ॥२॥ [illegible] ॥३॥

तावद्वर्षति मासमोद-स्तक्रपायी न वा जनः॥११२॥
वराहः—सन्ध्याकाले स्निग्धा दण्डतडिन्मत्स्यपरिधिपरिवेषाः।
सुरपतिचापैरावतरविकिरणाश्चाशुवृष्टिकराः॥११३॥
विच्छिन्नविषमविध्वस्तविकृताः कुटिलापसव्यपरिवृत्ताः।
तनुह्रस्वविकलकलुषाः सविग्रहा वृष्टिदाः किरणाः॥११४॥
उद्योतिनः प्रसन्ना ऋजवो दीर्घाः प्रदक्षिणावर्त्ताः।
किरणाः शिवाय जगतो वितमस्के नभसि भानुमतः॥११५॥
शुक्लाः करा दिनकृतो दिवादिमध्यान्तगामिनः।
स्निग्धा अव्युच्छिन्ना ऋजवो वृष्टिकरास्ते त्वमोघाख्या॥११६॥
गर्भज्ञानमिदं गुह्यं न वाच्यं यस्य कस्यचित्।
सम्यक् परीक्ष्य दातव्यं नोपहासो यथा भवेत्॥११७॥
यदुक्तं रुद्रदेवब्राह्मणेन—

रसे नहीं, जिससे मनुष्योंको छाश पीने को न मिले ॥ ११२ ॥ सन्ध्याकालमें सूर्यके किरण स्निग्ध हों, परिघ, बिजली, मत्स्य, परिधि तथा परिवेष वाले हों और इन्द्रधनुषसे घिरे हुए हों तो शीघ्रही वर्षा करनेवाले होते हैं ॥ ११३ ॥ खंड विषम, विध्वस्त, विकारयुक्त, कुटिल, अपसव्यमार्गसे घिरी हुई, तनु, ह्रस्व, विकल और शरीरधारियों की जैसी आकृति वाली सूर्यकी किरणें हो तो वृष्टिकारक होती हैं ॥ ११४ ॥ प्रकाशवाली, प्रसन्न, ऋजु, दीर्घाकार और प्रदक्षिणा के सदृश किरणें स्वच्छ आकाशमें दीप्ति मान् हो तो जगत् का कल्याण के लिये हो ॥ ११५ ॥ उदय, मध्याह्न और सायंकालके समय सफेद, स्निग्ध, अखंड और सरलाकार किरणें देखने में आवे वे अमोघ नामसे कही जाती है और वे वर्षा करनेवाली होती हैं ॥ ११६ ॥

यह गुप्त रखने लायक मेघके गर्भका ज्ञान जिस किसीके आगे नहीं कहना चाहिये, शिष्यकी अच्छी तरह परीक्षा करके देवे जिससे उपहास न हो ॥११७॥ रुद्रदेव ब्राह्मणने अपनी ग्रन्थमें कहा है कि यदि स्वयं

" अम्बुपात्रपूर्णेषु तथारिक्तापदासिके ।
शर्म न कथ्यतामेति यदि शम्भुः स्वयं वदेत्" ॥११८॥

कथमपि सविशेषं गर्भसत्त्वं मयैव,
प्रथितमिह जिनेन्द्राज्ञिप्रसादानुरोधात् ।
अभिजलधिजलात्+ स्यान्मेघमाला विशाला,
सकलमपि किमस्या सारमाप्तुं हि शक्यम् ॥११९॥

इति श्रीमेघमहोदये वर्षप्रबोधे तपागच्छीयमहोपाध्याय श्री
मेघविजयगणिविरचिते गर्भकथनाऽष्टमाऽधिकारः ॥

शंभुभी स्वयं कहे तो भी पूर्ण पात्र द्वारा तथा रिक्त उपहास करनेवाले मनुष्योंका पार ज्ञान नहीं करें ॥ ११८ ॥ श्रीजिनेन्द्रभगवानके परमप्रसादसे किसी भी प्रकार मैंने गर्भका विस्तारपूर्वक संग्रह किया । समुद्र के उससे भी अधिक विशाल ऐसी मेघमाला है यह समग्र तो क्या, इसके सारको भी कहने को समर्थ है ? ॥ ११९ ॥

सौराष्ट्रराष्ट्रान्तर्गत-पादलिप्तपुरनिवासिना पण्डितभगवानदासाख्यजैनेन
विरचिता मेघमहोदय बालावबोधिनी भाषाटीकायां
गर्भकथनाऽष्टमाऽधिकारः ।



+टी—समुद्रमारभ्याकाशपर्यन्तं बहुला मेघाः समुद्राज्जलपरणाभिः
... । ... ... ।

अथ तिथिफलकथननामा नवमोऽधिकारः।

अथ तिथिकथयं व्याख्यायते वत्सराणां,
शुभमशुभमशेष भावि भाव विभाव्यः।
कथितमपि कथञ्चिन्मासपक्षप्रसङ्गा-
दविकलफललाभायावशिष्टं विशिष्टम् ॥१॥

वर्षस्तम्भचतुष्टयम्—

चैत्रे सितप्रतिपदि रेवत्यां बहुलं जलम्।
वैशाखशुद्धप्रतिपद्भरण्यां तृणसम्भवः ॥२॥
ज्येष्ठशुक्लप्रतिपदि मृगे वातः शुभो भवेत।
आषाढशुद्धप्रतिपदादित्ये धान्यसम्भवः ॥३॥
चैत्रशुक्लप्रतिपदि रवौ वायुर्विशेषतः।
अल्पा वर्षा फलं तुच्छ मल्पं धान्यं प्रजायते ॥४॥
चन्द्रे बहुजलं धान्यं नृणानां च बहूदयः।

आगामी भावोंका विचार कर संवत्सरोंका समस्त शुभाशुभको तिथि कथनरूपसे व्याख्यान करते हैं। मास और पक्षके प्रसंग द्वारा कुछ कहा हैं किंतु बाकिके समस्त फलका लाभके लिये विशेष कहा जाता है ॥१॥

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन रेवतीनक्षत्र हो तो बहुत जलवर्षा हो। वैशाख शुक्ल प्रतिपदाको भरणीनक्षत्र हो तो तृण की उत्पत्ति हो ॥ २ ॥ ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरनक्षत्र हो तो अच्छा वायु चले। आषाढ शुक्ल प्रतिपदाको रविवार हो तो धान्यकी उत्पत्ति हो ॥३॥

चैत्र शुक्ल प्रतिपदाको रविवार हो तो वायु विशेष चले, वर्षा थोड़ी, फल थोड़े और धान्य थोड़े हों ॥ ४ ॥ सोमवार हो तो वर्षा तथा धान्य अधिक हो और मनुष्योंका बहुत उदय हो। मंगलवार हो तो सात प्रकार

ईतयः स्युस्तथा भौमे तीव्रान्तुरपरामयः ॥५॥
बुधे च मध्यमं वर्षं सुभिक्षं गुरौ भृगौ ।
शनौ धान्यरसतृण-अल्पतोयं प्रजार्तयः ॥६॥
चैत्रे शुक्लद्वितीयायां मार्जारः प्रतिपद्दिने ।
युगन्धरी तृतीयायां तिला यान्ति महर्घता ॥७॥
चतुर्थ्यां चपला एवं पञ्चम्यामतिरौरवम् ।
सम्यासायां च रोहिण्यां फलमेतद् बुधादितम् ॥८॥
दैवाद् रविः कुजो मन्दो वारस्तत्राधिकं फलम् ।
शुभवारे च शुभाद्यौ शुभयोगे फलाल्पता ॥९॥

श्रीहीरसूरयस्तु—

चित्तसियपडिवयाए सुक्कससीसुरगुरु य जइ वारो ।
तो धणधन्नसमग्गं होइ सयच्छरं जाव ॥१०॥
पोसपडिवए रविवारे रेवई वा नक्खत्तं होइ संजुत्तो ।
तो धणधन्नसमग्घं होइ चउमासियं जाव ॥११॥

को ईति-भीति चूहे आदिका उपद्रव हो ॥५॥ बुधवार हो तो मध्यम वर्ष हो । गुरुवार या शुक्रवार हो तो सुभिक्ष हो । शनिवार हो तो धान्य रस तृण और जलका अभाव हो तथा प्रजा दुःखी हो ॥६॥ यदि चैत्र शुक्ल द्वितीया का रोहिणीनक्षत्र हो तो बाजरी, प्रतिपदाको हो तो गूवार, तृतीयाको हो तो तिल और चतुर्थीको हो तो चवला ये महँगे हों तथा पंचमीके दिन हो तो बड़ा रौरव हो ऐसा फल विद्वानोंने कहा है । परंतु दैवयोगसे उस दिन रवि या मंगल या शनिवार भी आवे तो अधिक अशुभ फल कहा है । और गुरुवार आदि शुभवार या शुभ योग आजाय तो उक्त फल की अल्पता होती है ॥७से९॥ श्रीहीरसूरिजी ने कहा है कि— चैत्र शुक्ल पड़वाके दिन शुक्र सोम या बृहस्पति वार हो तो सम्पूर्ण संवत्सर में धान्य सस्ते हों ॥१०॥ चैत्र शुक्ल द्वितीयाके दिन रविवार रेवतीनक्षत्रके

अह तइया सणिवारो नक्खत्तं रोहणी य मिति य जोगे।
दुहदडुसयलघरिसं अप्पावुट्टी तया हवइ ॥१२॥
अत्र चैत्रशुक्लप्रतिपदि वर्षराजफलकथनादेव फलं सुलभम्।
चैत्रे च शुक्लसप्तम्या-मार्द्रायोगे यथोचितः।
त्रिमास्यां धान्यसंक्षेपः श्रावणाज्जलदोदयः ॥१३॥
चैत्रे दशम्यां शनिना युक्ता वारेण चेन्मघा।
तदा धान्यं समर्घं स्याज्जाते मेघमहोदये ॥१४॥
चैत्रे शुभे यथायोग्यं रूतकर्पासबाजराः।
युगन्धरी च संग्राह्या ज्येष्ठाषाढादिलाभदः ॥१५॥

विशोपकानयनविचार —

चैत्रादिप्रथमा यावत् तन्नक्षत्रैरलंकृता।
तत्पिण्डे रविभिर्भक्ते ये लब्धास्ते विंशोपकाः ॥१६॥
अत्र विशेषोऽपि- आषाढसितपक्षस्य द्वितीयापुष्यसंयुता।
यावन्मात्रं भवेत् पुष्यं तावन्मात्रा विंशोपकाः ॥१७॥

सहित हो तो चार मास तक धन धान्य सस्ते हों ॥११॥ चैत्र शुक्ल तृतीया के दिन शनिवार रोहिणीनक्षत्र के सहित हो तो समस्त वर्ष दुःखदायी हो और थोड़ी वर्षा हो ॥१२॥

चैत्र शुक्ल सप्तमी आर्द्रानक्षत्र से युक्त हो तो तीन मास धान्य थोड़े और श्रावण में मेघ वर्षा हो ॥ १३ ॥ चैत्र शुक्ल दशमी शनिवार के दिन मघानक्षत्र हो तो मेघका उदय होने पर धान्य सस्ते हों ॥१४॥ चैत्र शुक्ल पक्षमें यथायोग्य रूई, कपास, बाजरी और जुआर इनका संग्रह करने से ज्येष्ठ और आषाढ आदि मासमें लाभदायक है ॥१५॥

चैत्रशुक्ल प्रतिपदा जितनी घड़ी हो उसमें उस दिनके नक्षत्र जोड़कर बारहसे भाग दो जो लब्धि मिले वह विंशोपका समझना ॥१६॥ आषाढ शुक्ल द्वितीया के दिन पुष्य नक्षत्र जितनी घड़ी हो उतना विंशोपका जानना

पुनरपि श्रीहीरसूरिकृतमेघमालायाम्—

कृष्णपक्षे श्रावणस्यैकादश्यां रोहिणी च भम् ।
यावद्घटीप्रमाणं स्यात् धान्यं तावद्विंशोपकम् ॥१८॥ इत्युक्तं प्राक् ।
तत्र लोकेऽप्याहु:—श्रावणकिसन एकादशी, जेती रोहिणी होय । -
तेती महंगियो पायली, हासी निश्चय सोय ॥१९॥
ग्रन्थान्तरे तु—फग्गुण पहिली पडिवया, जेती सयभिस होय ।
तितिय पायला परठविया, हासी पयडिय लोय ॥२०॥
क्वचित्तु—दीवा वीती पंचमी, जेती घडियां होय ।
तीने भागे दीजइ, सेस भाव सो होय ॥२१॥

अस्यार्थः—कार्तिकशुक्लपञ्चमी घटिकाप्रमाणाः शेरपादाः पल्लिकाया पादा वा कदीयानाणकस्य पृष्ठस्यां प्रतिशकस्य भवन्ति । केचित् पुनर्वदन्ति— घटिकाप्रमाणात् तुर्योऽंशे रूपकस्य मणा देशान्तरे कदीयानाणकस्य घटिकाप्रमाणम्

॥१७॥ श्रावण कृष्ण एकादशीके दिन रोहिणी नक्षत्र जितनी घडी हो उतना धान्यका विशोपक भाव ॥ १८ ॥ श्रावण कृष्ण एकादशीको रोहिणी नक्षत्र जितनी घडी हो उससे भाव धान्यका विशोपक जानना ॥१९॥ फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदाके दिन जितनी घडी शतभिषानक्षत्र हो उतनी पायली (चार शेर धान्यका माप विशेष) धान्य बिके ॥ २० ॥ कार्तिक शुक्ल पंचमी जितनी घडी हो उसको तीनसे भाग देना जो शेष बचे वह भाव समझना ॥ २१ ॥ कार्तिक शुक्ल पंचमी जितनी घडी हो उतना शेरपाद (पाव) अन्न प्रति कदियाका बिके । अथवा पल्लिका (चार शेर धान्य मापनेका पात्र) का चतुर्थांश प्रमाण अन्न बिके । दूसरोंका मत है कि—पंचमीकी घडियोंमें ४ से भाग देनेसे जो लब्धि मिले उतने मण धान्य प्रतिरूपयाका बिके । देशान्तरोंमें उसी लब्धि तुल्य अन्न प्रति कदियाका शेर या पल्लिका बिके ऐसा कहते हैं । कितनेही आचार्योंका यह भी मत है कि—पंचमी की घडियों

र्यांशप्रमिताः शेराः पल्लिका वा भवन्ति । यद्वा पञ्चम्या घटि-
कास्त्रिभिर्भाज्या यल्लब्ध तदेकोनं तावत्यः पल्लिकाः स्फन्द-
कस्य लभ्या इति ।

क्वचित्तु-कार्तिके शुक्लपञ्चम्यां दश विंशाष्टभास्कराः ।
नृपाः कलाश्च रव्यादेर्वाराद् ज्ञेया हि पल्लिकाः ॥२२॥
दैवयोगाच्छनिवार-स्तदा दुर्भिक्षमादिशेत् ।
महामुद्रिकया लभ्या एकया + धान्यपल्लिका ॥२३॥
मतान्तरे-लभ्यानि धान्यमानानि महामुद्रिकयैकया ।
* रवौ सार्द्धद्वय सोमे पञ्चमानं द्वयं कुजे ॥२४॥
बुधे त्रीणि च चत्वारि गुरौ सार्द्धानि तान्यथ ।
शुक्रे शनौ च दुर्भिक्षं पञ्चम्यां कार्तिकोज्ज्वले ॥२५॥
विक्रमाद् वत्सरस्याङ्कं त्रिगुणे पच मीलिते ।

के तृतीयांशमें एक घटा देनसे जो शेष बचे उसके तुल्य पल्लिका अन्न प्रति-फदियाका विके । कार्त्तिक शुक्ल पचमी के दिन रविवार आदि जो वार हो उस वार के अनुसार दश, वीश, आठ, बारह, सोलह और सोलह पल्लिका धान्य जानना ॥ २२ ॥ यदि दैवयोगसे शनिवार हो तो दुर्भिक्ष जानना, एक महामुद्रिकासे एक पल्लिका तुल्य धान्य मिले ॥ २३ ॥ प्रकारान्तर से कार्त्तिकशुक्ल पचमी के दिन रविवार हो तो एक महामुद्रिकासे ढाई पल्लिका तुल्य धान्य मिले । सोमवार हो तो पाच, मगलवार हो तो दो ॥ २४ ॥ बुध हो तो तीन, गुरुवार हो तो साढे चार पल्लिका महामुद्रिकासे मिले । यदि शुक्र या शनिवार हो तो दुर्भिक्ष जानना ॥ २५ ॥

विक्रम सवत्सरके अकको तीन गुणा करके पाच मिलाना, पीछे सात

+ टी—क्वचित्तिस्रोऽपि च चतस्रो वा इति बहुवचनात प्राप्य ।

* लोकेऽपि—रवि मंगल चारि मण, सोम पच बुध तीन । जीव कवि दोइ मण, शनि दुर्भि[illegible] ॥ जपुरकी प्रतिमें विशेष है

षष्ठभागे शेषधान्य मणा' स्युरेकरूप्यके ॥२६॥
दशम्या रवियुक्तायां घटिका गणयेत् सुधी'।
षष्टिभक्ते भवेच्छेषं धान्यार्घमणधारया' ॥२७॥
पुन'— ज्येष्ठाषाढमासयुग्मे यावत्याऽष्टमिका रवौ।
तावन्मणा रूप्यकस्य केचिदेव वदन्त्यपि ॥२८॥
यथा— यावत्य' शनिना युक्ता दशम्या रविणाथवा।
भवन्ति तावन्मानानि स्कन्दकेन क्रयविक्रये ॥२९॥
अथवा— अमावस्य' सोमवत्यो यावत्यस्तिथिपत्रके।
पञ्चम्य' सोमवत्यो वा रूप्यात्तावन्मणागमम् ॥३०॥
अन्यान्तरे— चैत्र अमावसि जे घडी, वरते टीप्पण माय।
तेता सेर पीरोजीया, कातो धान्य विकाय ॥३१॥
मतान्तरेण मध्या' प्राहु' —
धान्यविंशोपकमध्ये क्षुधाविंशोपका मीलने विहिते।
वर्षाविंशोपकविना कृते धान्यमणाश्च रूप्यात् ॥३२॥

से भाग देना जो शेष बचे उतने मण धान्य एक रुपियाका समझना ॥२६॥ रविवार युक्त दशमी की जितनी घडी हो उसमें साठसे भाग देना जो शेष बचे वह मण धान्यका मूल्य समझना ॥ २७ ॥ ज्येष्ठ और आषाढ ये दोनों मासकी अष्टमी रविवार के दिन जितनी घडी हो उतना मण धान्य रुपियेका बिके एसे कोई मानते हैं ॥ २८ ॥ यदि शनि या रविवार के दिन दशमी जितनी घडी हो उतना मापा धान्य एक स्कंदसे मिले ॥ २९ ॥ पञ्चांगमें जितनी सोमवती अमावस हो या जितनी सोमवती पंचमी हो उतना मण धान्य बिके ॥ ३० ॥ चैत्रमासकी अमावस जितनी घडी पंचांगमें हो उतना पीरोजिया शेरोंसे कातीमें धान्य बिके ॥ ३१ ॥ धान्य के विंशोपका में क्षुधाके विंशोपका मिलाकर इसमेंसे वर्षा के विंशोपका घटा देना जो शेष बचे उतना मण धान्य बिके ॥ ३२ ॥

क्षुधाविशोपकानयन त्वेव रामविनोदे—

शाकस्त्रिगुण्यो नगभाजितश्च,
शेषं द्विनिघ्नं शरसंयुतं च ।
लब्धेन शाकं स पुनः प्रकल्प्य,
पूर्वोक्तवत् स्युः खलु विश्वकाख्यः ॥३३॥
वर्षाथ धान्यं तृणशीततेजो-
वायुश्च वृद्धिः क्षयविग्रहौ च ।
क्षुधादिकानां करणान्तरेण,
विश्वांशबोधेन फलप्रदास्ते ॥३४॥

तत्करणं त्वेवम्—

शाकं च वेदगुणितं सप्तभिर्भागमाहरेत् ।
शेषं द्विघ्न त्रिभिर्युक्तं प्रोक्तं विश्वांशसंज्ञकम्॥३५॥
क्षुधा तृषा तथा निद्रा आलस्यमुद्यमस्तथा ।
शान्तिः क्रोधस्तथा दम्भो लोभो मैथुनमेव च ॥३६॥

इष्ट शाक (शक सवत्सर) को ३ से गुणा करके ७ से भाग दो, जो शेष रहे उसको द्विगुणित करके ५ जोड़ दो तो वर्षा के विश्वा हो जाते हैं। पीछे सातका भाग देनेसे जो लब्धि आई है उसीको शाक कल्पना कर के पूर्ववत् विधि से धान्यके विश्वा साधन करें। इसी प्रकार पुन २ लब्धियोंको शाक कल्पना करके तृण, शीत, तेज, वायु, वृद्धि, क्षय और विग्रह के विश्वा साधन करें। तथा क्षुधा आदि के विश्वा प्रकारांतर से साधन करें। यह विश्वाओंका बोध फलदायक है ॥३३-३४॥

शकसंवत्सरको चारसे गुणा कर सात से भाग देना, जो शेष बचे उसको दोसे गुणा कर इसमें तीन जोड़ देना तो तेरह भावोंके विश्वा हो जाते हैं ॥३५॥ क्षुधा, तृषा, निद्रा, आलस्य, उद्यम, शान्ति, क्रोध, दम्भ, लोभ, मैथुन ॥३६॥ रसनिष्पत्ति, फलनिष्पत्ति, और उत्साह ये लोगों

ततस्तु रसनिष्पत्तिः फलनिष्पत्तिरेव च ।
उत्साहः सर्वलोकाना-मेवं भावाश्चपादशः ॥३७॥

अन्यदपि प्रासंगिकं यथा—

शाकमर्धं वसुभिर्निघ्नं नवभिर्भागमाहरेत् ।
शेषं तु त्रिगुणीकृत्य रूपमत्राभियोजयेत् ॥३८॥
उभयता पापपुण्ये च व्याधिश्च व्याधिनाशनम् ।
आधारश्चाप्यनाधारो मरणं जन्मदेहिनाम् ॥३९॥
देशोपद्रवसम्भूतो चौराकुलभयं तथा ।
चौरोपशमनं चाग्निभयं चाग्निशमः पुनः ॥४०॥
शाकः पञ्चभिः सप्तभिर्गोभिरीशै-
श्चतुर्दाहतः सप्तभक्तावशिष्टम् ।
त्रिनिघ्नं त्रिभिर्युक्तमुद्भिज्जराण्ड-
पजस्वेदजानां भवेयुर्विशोपाः ॥४१॥
शाकोऽङ्कघ्नोऽङ्कचन्द्रक्षेप विघ्नं स्यात्पयमपास्त ।

के तेरह भाव हैं ॥३७॥

शाक संवत्सर को आठ गुना कर नव से भाग देना, जो शेष बचे उसको तीन से गुणाकर इसमें एक मिला देना तो ॥ ३८ ॥ उभय पुण्य, पाप, व्याधि, व्याधिनाशक आधार, अनाधार, प्राणियोंका मरण ॥३९॥ तथा जन्म, देशमें उपद्रव तथा शान्ति चोरभय, चोरोंकी शान्ति, अग्नि भय और अग्नि की शान्ति इनके विशोपक हो जाते हैं ॥ ४० ॥ शाक संवत्सरको पाच, सात, नव और ग्यारह इनसे गुणाकर सातसे भाग देना, जो शेष बचे उस को तीन से गुणाकर इस में तीन जोड़ देना तो उद्भिज, अण्डज, जरज और स्वेदज इनके विशोपक हो जाते हैं ॥ ४१ ॥ शाकसंवत्सरको नव गुणाकर नवसे भाग देना, जो शेष बचे उसको तीन से गुणाकर इसमें तीन जोड़ देना इस अंकको मास आदि गिनना तो शलभा,

सस्यस्थाप्यस्तदङ्काश्च शलभा मूषकाः शुकाः ॥४२॥
हेमताम्रं स्वचक्रं च परचक्रमिमीतयः ।
अतिवृष्टिरनावृष्टिः क्वचिदाद्यमिदं त्रयम् ॥४३॥
मेघजीकृतग्रन्थे—
'तिथि नक्षत्र अरु जोगथी, घटिका करि एकत्र ।
वीसे भागे जे रहे, विश्वा ते गणि मित्र! ॥४४॥
अथ चैत्रमास'—;
प्रकृतम्— चैत्रे चेदष्टमीमध्ये बुधोऽथवा भवेत् कुजः ।
विरूपं वर्षं जानीहि नदीतीरे गृहं कुरु ॥४५॥
चैत्रस्य शुक्लपञ्चम्यां रोहिण्यां यदि दृश्यते ।
साभ्र नभस्तदादेश्या गर्भस्य परिपूर्णता ॥४६॥
द्वितीये दिवसे प्राप्ते चैत्रे वायुश्च सर्वतः ।
न च मेघाः प्रदृश्यन्ते अनावृष्टिर्न संशयः ॥४७॥
पौर्णमास्यां यदा स्वाति-विद्युन्मेघसमन्वितः ।
निर्दोषमपि पूर्वर्क्षे गर्भो गलितमादिशेत् ॥४८॥

मूषक, शुक ॥ ४२ ॥ सोना, तांबा, स्वचक्र, परचक्र, ईति, अतिवृष्टि और अनावृष्टि इन के विशोपका हो जाते हैं ॥४३॥ मेघजीकृत ग्रन्थ मे कहा है कि– तिथि नक्षत्र और योग इनकी घड़ी इकट्ठी कर वीससे भाग देना जो शेष बचे वे हे मित्र! विश्वा गिनना ॥४४॥

चैत्र शुक्ल अष्टमी के दिन बुधवार या मंगलवार हो तो वर्षा न हो इसलिये नदीके किनारे ही घर करना पडे ॥४५॥ चैत्र शुक्ल पंचमी को रोहिणीनक्षत्र हो और उसी दिन आकाश बादलों से आच्छादित हो तो गर्भकी पूर्णता जाननी ॥४६॥ चैत्र शुक्ल द्वितीयाको चारों दिशा के वायु चले और बादल न हो तो अनावृष्टि जानना ॥ ४७ ॥ चैत्र पूर्णमासीके दिन यदि स्वातिनक्षत्र हो और बादलों के साथ बिजली भी चमके तो

अथ वैशाखमासः—

वैशाखकृष्णप्रतिपत् तिथेर्हीने समेऽधिके ।
नक्षत्रेऽल्पजलं भूम्यां सुभं बहुजलं क्रमात् ॥४९॥

पश्चाल्लोके—

चैत्र गयो वैसाख ज आसइ, प्रथमतिथि गणीजइ विमासइ ।
तिथि वधें तो धान्य विणासइ, नक्षत्र वधे तो मेह अगासइ ॥५०॥

वैशाखकृष्णपक्षस्य पञ्चम्यां जायते रविः ।
आगामि वर्षसंक्रान्ती तद्दिने वृष्टिबाधकः ॥५१॥

वैशाखशुक्लपञ्चम्यां शनिनार्द्राप्रसङ्गतः ।
सर्वं वस्तु समर्घं स्याद् भाद्रे मेघमहोदयः ॥५२॥

वैशाखमासे सितपञ्चमी सा, सूर्यादिवारैर्मिलते फलानि ।
मन्दा च वृष्टिस्त्वतिवृष्टियुद्धं, धान्यं सुभिक्षं कलहासमानम् ॥

वैशाखे यदि सप्तम्यां धनिष्ठा वा श्रुतिर्भवेत् ।
श्यामवस्तुमहर्घं स्यात्, समर्घं धवलं तदा ॥५४॥

प्रथमके नक्षत्रमें निर्दोष हो तो भी गर्भस्राव हो जाता है ॥४८॥

वैशाख कृष्ण प्रतिपदा के दिन जो नक्षत्र हो वह प्रतिपदासे हीन हो तो भूमि पर थोड़ा जल बरसे समान हो तो सुख और अधिक हो तो बहुत वर्षा बरसे ॥ ४९ ॥ लोक में भी कहते हैं कि—चैत्र बीतने बाद वैशाख मासकी प्रथमतिथि प्रतिपदा बढ़े तो धान्य का विनाश और नक्षत्र बढ़े तो मेघ आकाशमें रहे ॥ ५० ॥ वैशाख कृष्ण पंचमी के दिन रविवार हो तो आगामी वर्ष संक्रान्तिके दिन वर्षा न हो ॥ ५१ ॥ वैशाख शुक्ल पंचमी शनिवार के दिन आर्द्रा नक्षत्र हो तब सब वस्तु सस्ती हो और भाद्रपदमें मेघका उदय हो ॥ ५२ ॥ वैशाख शुक्ल पंचमी रविवार आदि के दिन हो तो उसका क्रमसे मंदवृष्टि, अतिवृष्टि, युद्ध, धान्य, सुभिक्ष, कलह और समानता ये फल जानना ॥ ५३ ॥ यदि वैशाख सप्तमीको धनिष्ठा या श्रवण नक्षत्र हो

+ अक्षयाख्यतृतीयायां सुभिक्षायैव रोहिणी ।
कृत्तिका मध्यमं वर्षं दुर्भिक्षं मृगशीर्षके ॥५५॥
वैशाखे पञ्चभौमाश्चेद् भयं सर्वत्र जायते ।
क्वचिन्न मेघवर्षा स्याद् धान्यं महर्घमादिशेत् ॥५६॥
वैशाखे धवलाष्टम्यां शनिवारो भवेद् यदि ।
जलशोषं प्रजानाशं छत्रभङ्गस्तदादिशेत् ॥५७॥
रोहिणी चोत्तरास्तिस्रो मघा च रेवती भवेत् ।
नवम्यां मंगले राधे तदा कष्टं महद् भुवि ॥५८॥
वैशाखस्य चतुर्दश्यां वारौ चेद्गुरुभार्गवौ ।
तदा निष्पद्यते धान्यं विपुलं पृथिवीतले ॥५९॥
अमावास्यां च वैशाखे रेवत्यां च सुभिक्षता ।
रोहिणी लोकदुःखाय मध्यमा चाश्विनी स्मृता ॥६०॥
भरण्यां व्याधितो लोकः कृत्तिकायां जलाल्पता ।

तो काली वस्तु महँगी और सफेद वस्तु सस्ती हो ॥ ५४ ॥ अक्षयतृतीया के दिन रोहिणी नक्षत्र हो तो सुभिक्ष, कृत्तिकानक्षत्र हो तो मध्यम वर्ष, और मृगशीर्ष नक्षत्र हो तो दुष्काल जानना ॥ ५५ ॥ वैशाखमें यदि पांच मंगल हो तो सर्वत्र भय हो, मेघ वर्षा न हो और धान्य महँगे हो ॥ ५६ ॥ वैशाख शुक्ल अष्टमी को शनिवार हो तो जलका सूखना, प्रजाका नाश और छत्र-भंग कहना ॥ ५७ ॥ वैशाख मासकी नवमी मंगलवार को रोहिणी, तीनों उत्तरा, मघा या रेवती नक्षत्र हो तो भूमिपर बड़ा कष्ट हो ॥ ५८ ॥ वैशाख चतुर्दशीके दिन गुरुवार या शुक्रवार हो तो पृथ्वी पर बहुत धान्य उत्पन्न हो ॥ ५९ ॥ वैशाख की अमावस को रेवती नक्षत्र हो तो सुभिक्ष, रोहिणी हो तो लोगों को दुःख, अश्विनी हो तो मध्यम हो ॥ ६० ॥ भरणी हो तो

+ टी—जो आखा रोहिणी नहि, पोस अमावस नहि मूल।
जो आवण राखी नहि, तो मासास मलसी धूल ॥

चौरा लुण्ठन्ति मार्गेषु राज्ञां युद्धं परस्परम् ॥६१॥
तृतीयायामक्षयायां रोहिणी गुरुणा सह ।
सर्वधान्यस्य निष्पत्तिं भुवि मङ्गलकर्म च ॥६२॥

अथ ज्येष्ठमासः—

ज्येष्ठस्य प्रथमे पक्षे या तिथि प्रथमा भवेत् ।
आगता केन वारेण तामन्वेषय यत्नतः ॥६३॥
* भानुना पवनो वाति कुजो व्याधिकरो मतः ।
सोमपुत्रेण दुर्भिक्षं खण्डवृष्टिः प्रजापते ॥६४॥
गुरुभार्गवसोमानां सेकोऽपि यदि जायते ।
वर्षावधि तदा पृथ्वी धनधान्यसमाकुला ॥६५॥
अथवा दैवयोगेन शनिवारो भवेद् यदि ।
जलशोषं प्रजानाशं छत्रभङ्गं विनिर्दिशेत् ॥६६॥
ज्येष्ठशुक्लतृतीयायां द्वितीयायां प्रजापते ।
मद्यप्रमाणां तद्वृष्टी महादुर्भिक्षकारणम् ॥६७॥

रोगसे लोग दुःखि, दुर्भिक्ष हो तो जल वर्षा थाड़ी, मार्गमें चोर लूटे और राजाओं में परस्पर युद्ध हो ॥६१॥ अक्षय-तृतीया के दिन गुरुवार और रोहिणी नक्षत्र हों तो पृथ्वी पर सब प्रकार के धान्य की प्राप्ति हो और मंगल हो ॥६२॥

ज्येष्ठमासके प्रथम पक्षमें जो तिथि प्रथम हो वह कौनसे वार की है उसका विचार करना ॥६३॥ यदि रविवार की हो तो पवन अधिक चले मंगलवार की हो तो व्याधि-करे, बुधवार की हो तो दुर्भिक्ष और खंडवर्षा हो ॥६४॥ गुरु शुक्र या सोमवार की हो तो एक वर्ष तक पृथ्वी धन धान्यसे पूर्ण हो ॥६५॥ यदि दैवयोगसे शनिवार की हो तो जलका शोष प्रजाका नाश, और छत्रभंग हो ॥६६॥ ज्येष्ठशुक्ल द्वितीया और तृतीया आर्द्रा नक्षत्र से

* टी०— भानुना धूपिताशां स्वातिरित्यपि पाठः ।

* ज्येष्ठकृष्णप्रतिपदि शनिवारः प्रवर्त्तते ।
जलशोषः प्रजादुःखं, छत्रभङ्गोऽपि सम्भवेत् ॥६८॥
ज्येष्ठकृष्णे दशम्यां च रेवती सुखकारिणी ।
एकादश्यां खण्डवृष्टि-र्द्वादश्यां सानुकष्टदा ॥६९॥
शुक्ले ज्येष्ठदशम्यां चे-च्छनिवारः प्रजायते ।
वृष्टिरोधो गवां नाशो महाशोकाकुला प्रजा ॥७०॥
लोकेऽप्याह—जेठी पूनिम मूल रिख, जो थोडों ही दीसंति ।
साख दशो दिसि नीपजे, तदा नीर पलयंति ॥७१॥

अथाषाढमास—

यावती भुक्तिराषाढे शुक्लायां प्रतिपद्दिने ।
पुनर्वस्वोश्चतुर्मास्यां वृष्टिः स्यात् तावतीस्फुटम् ॥७२॥

कालीरोहिणीविचार—

आषाढे दशमी कृष्णा सुभिक्षाय च रोहिणी ।

युक्त हो तो बडा दुर्भिक्ष होता है ॥ ६७ ॥ ज्येष्ठकृष्णा प्रतिपदा को शनिवार हो तो जलका शोष, प्रजाको दुःख, और छत्रभंग का भी संभव हो ॥ ६८ ॥ ज्येष्ठकृष्णा दशमी को रेवती नक्षत्र हो तो सुख कारक, एकादशी को हो तो खंडवृष्टि और द्वादशी को हो तो कष्टदायक है ॥ ६९ ॥ ज्येष्ठ शुक्ल दशमीको शनिवार हो तो वर्षाका निरोध, गौओं का नाश और प्रजा बड़ा शोकसे व्याकुल हो ॥७०॥ लोकमें भी कहा है कि ज्येष्ठपूर्णिमाके दिन थोड़ासा भी मूल नक्षत्र हो तो दशों ही दिशामें धान्यप्राप्ति हो और जल वर्षा अच्छी हो ॥ ७१ ॥

आषाढ शुक्ल प्रतिपदाके दिन पुनर्वसु नक्षत्र जितना हो उतनी चातुर्मास में वर्षा हो ॥ ७२ ॥ आषाढ कृष्णा दशमी के दिन रोहिणीनक्षत्र हो तो

---

*टी — ज्येष्ठस्य प्रथमपक्षकथनात् शुक्लपक्षभ्रमनिवारणाय ज्येष्ठकृष्णप्रतिपदीत्युक्तम् । ज्येठ मास अमावसे, जो शनिवारी होय । देश न बरसे धण मरे, विरलो जीवे कोय ॥

एकादशी मध्यकालं दुर्भिक्षं द्वादशी भवेत् ॥७३॥
त्रयोदश्यां रोहिणी चेन्मुत्तमं धान्यसस्तता ।
चतुर्दश्यां राजयुद्धं प्रजा शोकाकुला तदा ॥७४॥

अत्र लौकिकमपि दूर्बोधं यथा—

+रोहिणी चंद दिवाकरह, एका वारी लहेइ ।
समय समारे भड्डली, जोइस वात करेइ ॥७५॥ इति ।

आषाढमासे सित पञ्चमी दिने, रव्यादिवारे क्रमशः फलानि ।
वृष्टिः सुवृष्टिर्धनवृष्टिरूर्मा, वात प्रपात प्रलय प्रणाशः ॥७६॥

आषाढशुक्ल नवमी सानुराधा शनौ यदा ।
क्वचिद्धान्यार्धनिष्पत्तिः क्वचिद्दुर्भिक्षकारिका ॥७७॥
आषाढे प्रथमे पक्षे प्रथमादितिथित्रये ।
श्रवणं वा धनिष्ठा स्यात् तदा सस्यं शुभं ॥७८॥

सुभिक्ष एकादशीको हो तो मध्यम समय, द्वादशीको हो तो दुर्भिक्ष हो ॥ ७३ ॥ त्रयोदशीके दिन रोहिणी हो तो उत्तम धान्य सस्ते, चतुर्दशीके दिन हो तो राजयुद्ध और प्रजा शोक से आकुल हो ॥ ७४ ॥ रोहिणी और चंद्रमाका योग एक ही वारी रविवार को हो या रोहिणी और सूर्य का योग भी एक ही वारी सोमवारको हो तो हे भड्डली ! समयको अच्छा करे ॥ ७५ ॥ आषाढ शुक्लपञ्चमी के दिन रविवार आदि वार हो तो उस का अनुक्रमसे वर्षा, अच्छी वर्षा, अतिवर्षा, [illegible] प्रवात, प्रलय और विनाश ये फल होते हैं ॥ ७६ ॥ आषाढ शुक्लनवमी शनिवारको अनुराधानक्षत्र होतो कहीं धान्यकी थोड़ी प्राप्ति और कहीं दुर्भिक्ष हो ॥ ७७ ॥ आषाढके प्रथमपक्षमें प्रतिपदा आदि तीन तिथियोंमें श्रवण या धनिष्ठानक्षत्र हो तो धान्य [illegible] शुभ है ॥ ७८ ॥ आषाढ कृष्ण पञ्चमीको शनिवार हो तो गेहूं महंग

+यदि रोहिणीनक्षत्रे [illegible] रोहिणी सूर्ये [illegible] इति दुर्भिक्षम् ।

आषाढषष्ठीदिवसे कृष्णपक्षे शनिर्यदा ।
तदा गोधूमका ग्राह्या द्विगुणा यस्तु कार्त्तिके ॥७९॥
आषाढे शनिरेवत्यामष्टम्यां सङ्गमो यदा ।
तदा वृष्टिनिरोधेन कष्टमुत्कृष्टमादिशेत् ॥८०॥
देवसूती इगारसइ, जे वारि हुइ भीड ।
सनि मूसो रवि कातरो, मंगल भणीइ तीड ॥८१॥
क्वचित्–"धान्यं महर्घं दुर्भिक्षं च"
सोमे शुक्रे सुरगुरुइ, जो पोढे सुरराय ।
अन्न बहुल तो नीपजे, पृथिवी नीर न माय ॥८२॥
सनि आइचइ मंगले, जो सूवइ सुरराय ।
तीडे मुंसे कत्तरे, संतापिजे भाय ॥८३॥
आषाढे कर्कसंक्रान्तौ शनिवारो यदा भवेत् ।
तदा दुर्भिक्षमादेश्यं धान्यस्यापि महर्घता ॥८४॥
चतुर्दश्यां तथाषाढे सोमवारप्रवर्त्तनात् ।
न धान्यं न तृणं लोके किं गवादेः प्रयोजनम् ॥८५॥

करनेसे कार्त्तिकमें दूने मूल्यसे विकें ॥७९॥ आषाढमें अष्टमी शनिवारको रेवतीनक्षत्र हो तो वर्षा न हो और बडा कष्ट हो ॥ ८० ॥ आषाढ शुक्ल एकादशीको शनिवार हो तो मूसेका, रविवार हो तो कातराका और मंगलवार हो तो टीड्डी का उपद्रव हो। कोई कहते है कि धान्य महँगे हों और दुर्भिक्ष हो ॥८१॥ सोम शुक्र या बृहस्पति वारके दिन देव पोढे याने इन वारों को शुक्ल एकादशी हो तो अन्न बहुत उत्पन्न हो और पृथ्वी जल से तृप्त हो ॥८२॥ यदि शनि रवि या मंगलवारको देव पोढे तो टीड्डी, मूसे और कातरा इनका उपद्रव हो ॥८३॥ आषाढ मासमें कर्कसंक्रान्तिके दिन शनिवार हो तो दुर्भिक्ष हो और धान्य महँगे हो ॥ ८४ ॥ आषाढ में चतुर्दशी के दिन सोमवार हो तो लोकमें धान्य और तृण उत्पन्न न हो,

आषाढे प्रथमे पक्षे द्वितीयानवमीतिथी ।
गुर्विन्दुशुक्रवारा स्युः श्रेष्ठा नेष्टा बुधः शनिः ॥८६॥

यतः—आषाढा धुरि बीजडी, नवमी निरखो जोय ।
सोमे शुक्र सुरगुरु ध, जल सुंवारस होय ॥८७॥
रवि तत्तो बुध सीयालो, मंगल वृष्टि न होय ।
दैवयोगे शनि हुइ ता, निश्चय रौरव होय ॥८८॥
आषाढशुक्लैकादश्यां शन्यादित्यकुजैः समम् ।
सम्पूर्णस्तिथिभागश्चेत् तदा दुर्भिक्षमादिशेत् ॥८९॥

आषाढपूर्णिमाविचारः—

'नमिऊण तिलोयरवि जगवच्छल जलहरं महावीरं' इत्यादि चतुर्मासकुलके—

आषाढपुण्णिमाए पुव्वासाढा हविज्ज दिनराइ ।
ता चत्तारि वि मासा खेमसुभिक्खं सुवासं च ॥९०॥
अह हेट्ठिमाय पुण्णिममूलेण जाइ पढम वे पुहरा ।

जिससे गौ आदिका क्या प्रयोजन है ॥ ८५ ॥ आषाढके प्रथम पक्षमें दूज और नवमी तिथिको गुरु, सोम या शुक्रवार हो तो श्रेष्ठ, बुध या शनिवार हो तो अशुभ है ॥ ८६ ॥ आषाढके प्रथमपक्षकी दूज और नवमी सोम शुक्र या गुरुवारको हो तो जलवर्षा अच्छी हो ॥८७॥ रविवारको हो तो ताप अधिक पड़े, बुधवार हो तो ठंडी अधिक, मंगलवार हो तो वर्षा न हो और दैवयोगसे शनिवार हो तो निश्चयसे दुष्काल हो ॥८८॥ आषाढ शुक्ल एकादशीको शनि रवि या मंगल हो तो वर्ष समान हो यदि इन वारों को पूर्ण तिथि भोग हो तो दुर्भिक्ष हो ॥८९॥

चतुर्मासकुलकमें कहा है कि— आषाढ पूर्णिमाको दिनरात पूर्वाषाढा नक्षत्र हो तो चारोंही मास क्षेम सुभिक्ष और मंगलिक हों ॥९०॥ पूनम को पहले दो प्रहर मूल नक्षत्र हो और बाद पूर्वाषाढा नक्षत्र हो तो पहले

ता दुन्न वि मासाओ दुभिक्खं उवरि सुभिक्खं ॥९१॥
अह उवरि बे पुहरा पुव्वासाढा हविज्ज नक्खत्तं ।
ता होइ दुण्णि मासा खेमसुभिक्खं वियाणाहि ॥९२॥
अहव पविसिऊण मूलं भुंजइ चत्तारि पुहर जइ कहवि ।
ता चत्तारि वि मासा दुभिक्खं होइ रसहाणि ॥९३॥
अहवा उत्तरसाढा भुंजइ चत्तारि पुहरमवियारं ।
ता जाणह दुक्कालं मासा उत्तरह चत्तारि ॥९४॥
अह भुंजइ बे पुहरा पुव्वाउड्डम्मि उत्तरासाढा ।
ता उवरि बे मासा होइ सुभिक्खाओ रसहाणि ॥९५॥
अह भुंजइ बे पुहरा मुलं पुव्वं हविज्ज नक्खत्तं ।
उवरिं पुव्वासाढा दुक्खं पच्छा सुहं होइ ॥९६॥

एवमर्घकाण्डेऽप्युक्तम्—

आषाढ्यां पूर्वाषाढाभं वर्षं यावच्छुभ करम् ।
आवर्षं धान्यनिष्पत्तिः प्रजासौख्यमविग्रहात् ॥९७॥
मूलोत्तरे चार्द्धधिष्ण्ये फलमध्यविधायिके ।

दो मास दुर्भिक्ष रहे बाद सुभिक्ष हो ॥९१॥ अथवा पूर्वाषाढा नक्षत्र उपर के दो प्रहर हो तो दो मास सुभिक्ष और मंगलिक हो ॥९२॥ यदि चारों ही प्रहर मूलनक्षत्र हो तो चारों ही मास दुर्भिक्ष हो और रसकी हानि हो ॥९३॥ अथवा पीछेके चारों ही प्रहर उत्तराषाढानक्षत्र हो तो पीछले चार मास दुष्काल जानना ॥ ९४ ॥ यदि दो प्रहर पूर्वाषाढा हो और बाद मे उत्तराषाढा नक्षत्र हो तो पहले दो मास सुभिक्ष हो और रसकी हानि हो ॥९५॥ यदि पहले दो प्रहर मूलनक्षत्र हो और बादमें पूर्वाषाढा नक्षत्र हो तो पहले दुःख और पीछे सुख हो ॥ ९६ ॥ आषाढ पूर्णिमा के दिन पूर्वाषाढा नक्षत्र पूर्ण हो तो एक वर्ष तक शुभ हो, धान्य की निष्पत्ति और प्रजा शान्ति पूर्वक सुखी हो ॥९७॥ आधा मूलनक्षत्र और आधा पूर्वा-

आर्द्रामध्यम धान्यं देशे सर्वत्र कथ्यते ॥९८॥
यत्र तिथौ यदा रम्यौ वायू पूर्वोत्तरौ यदा ।
यत्र यामार्द्धके तत्र मासे वृष्टिर्हठाद् भवेत् ॥९९॥
आषाढपूर्णिमा षष्टि घटीमाना यदा भवेत् ।
मासा द्वादश धान्यानां सुभिक्षं च सुखं जने ॥१००॥
त्रिंशद्घटीभिः षण्मासात् सुखं दुःखं ततः परम् ।
चातुर्मास्यां पञ्चदश घटीमाने सुभिक्षता ॥१०१॥
न्यूनत्वे तु पञ्चदश घटीभ्यो दुःखसम्भवः ।
वातवार्दल संयोगात् फले न्यूनाधिकाभवः ॥१०२॥
कुहूत षोडशाहे वा आषाढ्यां यदि वार्दलम् ।
पूर्वाषाढा च नक्षत्रं तदा काल करालकः ॥१०३॥
यन्नाम्नाख्यायते मास-स्तन्नक्षत्रस्य पूर्णिमा ।
यागे पूर्णो समर्घत्वं धान्ये न्यूने तथानता ॥१०४॥

नक्षत्र हो तो मध्यमसमय हो समस्त देशोंमें वर्षतक मध्यम धान्य हो ॥ ९८ ॥ यदि पूर्णिमाको जिस प्रहरमें बादल रहित पूर्व और उत्तर दिशाके अच्छे वायु चले तो उस मासमें निश्चयसे वर्षा हो ॥ ९९ ॥ यदि आषाढ पूर्णिमा साठ घड़ी हो तो बारह महीने धान्यकी सुभिक्षता रहे और लोकमें सुख हो ॥ १०० ॥ तीस घड़ी हो तो छह महीने सुख और पीछे दुःख हो। पंद्रह घड़ी हो तो चार महीने सुभिक्ष रहे ॥ १०१ ॥ यदि पंद्रह घड़ीसे भी न्यून हो तो दुःख हो। वायु और बादलके संयोगसे फल में न्यूनाधिकता होती है ॥ १०२ ॥ अमावास्यासे सोलहवें दिन आषाढ पूर्णिमाको बादल हो और पूर्वाषाढा नक्षत्र भी हो तो दुष्काल हो तथा धान्य की आकुलता हो ॥ १०३ ॥ जिस नक्षत्रसे मास कहा जाता है उस नक्षत्र पूर्णिमाके दिन पूर्णता हो तो धान्य सस्ते हो तथा न्यून हो तो महँगा जानना ॥ १०४ ॥

यदा त्रैलोक्यदीपके श्रीहेमप्रभसूरयः—

मासाभिधाननक्षत्रं राकायां क्षीयते यदि ।
महर्घत्वं तदा नूनं वृद्धौ ज्ञेया समर्घता ॥१०५॥
मासनामकनक्षत्रं राकायां न भवेद् यदा ।
महर्घं च तदावश्यं तत्तद्योगे विशेषतः ॥१०६॥
धिष्ण्यवृद्धिदिने चन्द्रः क्रूरैर्यदि न दृश्यते ।
समर्घं जायते धान्यं क्रूरदृष्टे महर्घता ॥१०७॥
धिष्ण्यवृद्धिदिने यत्र तिथिपार्श्वाद्गरीयसी ।
दिने तत्र समर्घं स्यात् तिथिवृद्धौ महर्घता ॥१०८॥
ऋक्षवृद्धौ रसाधिक्यं कणाधिक्यं च निश्चितम् ।
योगाधिक्ये रसोच्छेदो दिनार्घमत्यहं स्फुटम् ॥१०९॥
षड्भिश्च नाडिकाभिश्च धिष्ण्यवृद्धिः क्रमाद्यदि ।
प्रत्येकं च तिथेर्यत्र समर्घं तत्र जायते ॥११०॥
षड्भिश्च नाडिकाभिश्च तिथिवृद्धिः क्रमाद्यदा ।

यदि महीनेका नक्षत्र पूर्णिमाके दिन क्षय हो जाय तो निश्चयसे अन्न महँगे हो और बढे तो सस्ते हों ॥१०५॥ महीनेका नक्षत्र यदि पूर्णिमाके दिन न हो तो उन २ योगों में विशेष कर अन्न महँगे हो ॥ १०६ ॥ नक्षत्रकी वृद्धिके दिन चन्द्रमा यदि क्रूर ग्रहसे दृष्ट न हो तो धान्य सस्ते हों और क्रूर ग्रहसे दृष्ट हो तो महँगे हो ॥ १०७ ॥ नक्षत्रकी वृद्धि के दिनकी तिथि यदि समीपकी तिथिमें बडी हो तो उस दिन अन्न सस्ते हों । और समीपकी तिथि वृद्धि हो तो महँगे हो ॥१०८॥ नक्षत्रकी वृद्धि हो तो निश्चयसे रस और धान्यकी अधिकता हो । योगकी वृद्धि हो तो रस का नाश हो यह प्रतिदिन स्फुट है ॥ १०९ ॥ जहा प्रत्येक तिथि से नक्षत्रकी वृद्धि छह घडी अधिक हो तो वहा अन्न सस्ते हों ॥ ११० ॥ यदि प्रत्येक नक्षत्र से तिथि की वृद्धि छह घडी अधिक हो तो निश्चय से

प्रत्येकं तत्र धिष्ण्याच्च महर्घं विद्धि निश्चितम् ॥१११॥
तिथिनक्षत्रयोर्वृद्धिं विज्ञाय प्रत्यहं तयोः ।
सर्वं टिप्पनकं ज्ञात्वा लाभालाभौ विनिर्दिशेत् ॥११२॥
यावन्मात्रा उडुवृद्धिः समर्घं तद्विशोपकाः ।
यावन्मात्रस्तिथेर्वृद्धिर्महर्घं तत्प्रमाणकम् ॥११३॥
मासमध्ये यदा द्वौ तु योगौ च त्रुटतः क्रमात् ।
महर्घे घृततैले च योगवृद्धौ समर्घके ॥११४॥
वर्षाकालत्रिमासेषु नक्षत्रं वर्धते स्फुटम् ।
तिथिहानिस्तु संलग्ना शुभकालस्तदा बहु ॥११५॥
वर्षाकालत्रिमासेषु नक्षत्रं त्रुटति ध्रुवम् ।
तिथिश्च वर्धते तत्र ध्रुवं कालो विनश्यति ॥११६॥
तत्र मूलोत्तराषाढे सर्वराकासु वर्जिते ।
आषाढ्यां तु विशेषेण धान्यार्घस्य विनाशके ॥११७॥
यदुक्तं सारसङ्ग्रहे—

महँगे हों ॥१११॥ सब देशके पञ्चांगमें तिथि और नक्षत्रका विचार कर लाभालाभ कहना चाहिये ॥११२॥ जितनी घड़ी नक्षत्रकी वृद्धि हो उतने विशोपक (टका) धान्य सस्ते हों और जितनी घड़ी तिथिकी वृद्धि हो उतने वि वे अन्न महँगे हों ॥११३॥ यदि एकही मास में योग दो बार क्षय हो तो कपास घी और तेल महँगे हों। और वृद्धि हो तो सस्ते हों ॥११४॥ वर्षाकालके तीन महीनोंमें नक्षत्र बढ़े और तिथिका क्षय हो तो बहुत सुभिक्ष काल जानना ॥ ११५ ॥ यदि वर्षाकाल के तीन महीनोंमें नक्षत्र का क्षय हो और तिथि की वृद्धि हो तो निश्चय से दुष्काल जानना ॥११६॥ इसलिये हरएक मासकी पूर्णिमाको मूल और उत्तराषाढ़ा नक्षत्र नहीं होना चाहिये इसमें भी आषाढ़ पूर्णिमाको तो विशेषकर नहीं होना चाहिये, यदि हो तो धान्य का विनाश हो ॥ ११७ ॥ पूर्णिमा के दिन

मृगादिपञ्चके राका धान्ये महर्घतां वदेत् ।
मघाचतुष्टये पूर्णा कुर्याद्धान्यसमर्घताम् ॥११८॥
राका चित्राष्टके युक्ता दुर्भिक्षात् कष्टकारिणी ।
श्रवणाद्रोहिणी यावन्नक्षत्रैः पूर्णिमा शुभा ॥११९॥
क्वचित्तु–तुल्यार्थं पूर्णिमायां स्यान्मृगादिधिष्ण्यपञ्चके ।
मघाचतुष्के दुर्भिक्षं कष्टं चित्रादिकेऽष्टके ॥१२०॥
कर्णादिदशके पूर्णा सुभिक्षसुखकारिणी ।
सोमवारेण संयोगे कुर्याद्विग्रहवर्द्धनम् ॥१२१॥
तिथिकुलके विशेषः—
तिय उत्तरा य अद्दा पुणव्वसू रोहिणी य जइ कहवि ।
हुंति किर पुण्णिमाए तम्मासे जाण दुब्भिक्खं ॥१२२॥
ग्रन्थान्तरे–आर्द्राचतुष्टये सूर्य-वारे पूर्णार्थनाशिनी ।

मृगशिर आदि पाच नक्षत्रोंमेंसे कोई नक्षत्र हो तो धान्य महँगे हों। और मघा आदि चार नक्षत्रोंमेंसे कोई एक नक्षत्र हो तो सस्ते हों ॥ ११८ ॥ पूर्णिमाके दिन चित्रा आदि आठ नक्षत्रोंमेंसे कोई नक्षत्र हो तो दुर्भिक्ष तथा कष्टदायक हो। यदि श्रवणसे रोहिणी तकके नक्षत्र हो तो पूर्णिमा शुभदायक हो ॥११९॥ कोई कहते है कि– पूर्णिमा को मृगशिर आदि पाच नक्षत्रोंमें से कोई नक्षत्र हो तो समान भाव रहे। मघादि चार नक्षत्र हो तो दुर्भिक्ष, चित्रादि आठ नक्षत्र हो तो कष्ट हो ॥ १२० ॥ श्रवणादि दश नक्षत्रोंमेंसे कोई नक्षत्र हो तो सुभिक्ष तथा सुखकारक हो, परन्तु सोमवार का योग हो तो विग्रहकारक हो ॥१२१॥ तिथिकुलक में इतना विशेष है कि– पूर्णिमाके दिन तीनों उत्तरा, आर्द्रा, पुनर्वसु या रोहिणीनक्षत्र हो तो उस मासमें धान्य महँगे हों ॥१२२॥ अन्य ग्रन्थमें– पूर्णिमाके दिन रविवार हो और आर्द्रा आदि चार नक्षत्रोंमसे कोई नक्षत्र हो तो अर्थका (लक्ष्मीका) नाश हो। यदि सोमवार हो और मघादि चार नक्षत्रोंमेंसे कोई नक्षत्र हो तो

मघाचतुष्टये सोमेऽप्येवं धान्यमहर्घकृत् ॥१२३॥
चित्राष्टके भौमवारे पूर्णिमा व्याधिवर्द्धिनी ।
दुर्भिक्षाय शनौ शेषवारर्क्षेषु शुभावहा ॥१२४॥
तिथिनक्षत्रयोः साम्ये मृगादिभिश्च पञ्चके ।
पूर्णिमायां विधायोगे तुल्यार्घमशनं भवेत् ॥१२५॥
मेषादित्रितये सूर्ये शुभयुक्ते तिथिक्षये ।
कर्णादौ पूर्णिमायोगे समर्घं तु दशर्क्षके ॥१२६॥
आषाढस्याप्यमावस्या यदि सोमवती भवेत् ।
सुभिक्षं कुरुतेऽवश्यं नक्षत्रे मृगसप्तके ॥१२७॥

अथ श्रावणमासः —

श्रावणे कृष्णपक्षे च प्रतिपद् गुरुयोगतः * ।
मुद्गा माषास्तिलास्तैला महर्घा शीघ्रमादिशेत् ॥१२८॥
श्रावणे नवमीयुक्तः शनिः सन्तापकारकः ।

धान्य महँगे हों ॥ १२३ ॥ यदि मंगलवार हो और चित्रा आदि आठ नक्षत्रोंमें से कोई नक्षत्र हो तो व्याधि की वृद्धि हो और शनिवार हो तो दुर्भिक्ष हो । बाकीके वार और नक्षत्र सब शुभकारक हैं ॥१२४॥ तिथि और नक्षत्रकी बराबरीमें पूर्णिमाके दिन मृगशिरादि पांच नक्षत्र और सोमवार हो तो धान्यका समान भाव रहे ॥ १२५ ॥ मेषादि तीन राशि पर सूर्य हो और वह शुभग्रहसे युक्त हो, तिथि का क्षय हो और पूर्णिमा को कर्णादि दस नक्षत्रोंमेंसे कोई नक्षत्र हो तो निश्चय से धान्य सस्ते हों ॥ १२६ ॥ आषाढ की अमावस सोमवती हो और मृगशिरादि सात नक्षत्रोंमें से कोई नक्षत्र हो तो अवश्य सुभिक्ष होता है ॥१२७॥ इति आषाढमास ॥

श्रावण कृष्ण प्रतिपदाके दिन गुरुवार हो तो मूंग उड़द तिल और तेल महँगे हों ॥१२८॥ श्रावणकी नवमी शनिवारके दिन हो तो संताप

* पडवा शनिचर बीज रवि त्रीजो मंगल होय । तोई श्रावण माहि पीय पावे विरला कोय ॥

छत्रभङ्गं विजानीया-दाश्विनान्ते न संशयः ॥१२९॥
दशम्यां श्रावणे सिंहे रविः संक्रमते शनौ ।
मही न दीना जलदै-रनन्ता धान्यसम्पदः ॥१३०॥
कृत्तिका श्रावणे कृष्णै-कादश्यां + मध्यमा समा ।
सुभिक्षं रोहिणी कुर्याद् दुर्भिक्षं मृगशीर्षतः ॥१३१॥
यदुक्तं लोके—सावण वहुल इगारसी, जो रोहिणीया होय ।
घणुं वरससे वद्दली, आसासइ जिय लोय ॥१३२॥
जइ पुण आवे बारसे, तो मज्झट्टो काल ।
अहवा आवे तेरसी, तो रोरवदुकाल ॥१३३॥
इति कृष्णादिमासमते कालीरोहिणी ।
श्रावणे शुक्लपक्षे चेद् यदा कश्चित् तिथिक्षयः × ।
तदा कार्त्तिकमासे स्याच्छत्रभङ्गोऽपि निश्चयात् ॥१३४॥

करे, आश्विनमासके अंतमें छत्रभंग हो ॥ १२९ ॥ श्रावणमास में दशमी शनिवारके दिन सिंहसंक्रांति हो तो पृथ्वी मेघों से दुःखी न हो यानें पूर्ण वर्षा हो और धान्य संपत्ति बहुत अच्छी हो ॥ १३० ॥ श्रावण कृष्ण एकादशी के दिन कृत्तिका नक्षत्र हो तो मध्यम वर्ष हो, रोहिणी हो तो सुभिक्ष करे और मृगशिर हो तो दुर्भिक्ष करे ॥१३१॥ लोक में भी कहा है कि— श्रावण कृष्ण एकादशी को रोहिणी हो तो वर्षा अच्छी हो और लोक सुखी हो ॥१३२॥ यदि बारसके दिन रोहिणी आ जाय तो मध्यम काल और तेरसके दिन आ जाय तो दुष्काल हो ॥१३३॥ यदि श्रावण शुक्ल पक्षमें कोई तिथिका क्षय हो तो कार्त्तिकमासमें निश्चयसे छत्रभंग हो ॥१३४॥

+ टी—श्रावण किसन एकादशी तीन नक्खत तन, कृतिका तो कर-वरो, रोहिणी घणु सुखदत ॥१॥ इगियारसि मिगसिर हुइ तो अणचिं-त्यो काल । काली रोहिणी टीप्पणो, जोसी फल भाल ॥२॥

× संवत् १७४३ वर्षे राखडीपूर्णक्षयदिने कार्तिके विद्यापुरदुर्गभङ्गः । इद कदाचिदेव संभवति शुक्लपक्षे कदाचिन्न संभवत्यपि ।

श्रावणे कृष्णपक्षस्य प्रतिपद्दिवसे धृतौ ।
योगे धृतिः स्याद्धान्यस्य शेषयोगेषु विक्रयः ॥१३५॥
श्रावणे वा भाद्रपदे प्रथमायां श्रुतिद्वयम् ।
कृष्णपक्षे तदा ज्ञेयं सुभिक्षं निश्चयात्मने ॥१३६॥
द्वादश्यां श्रावणे कृष्णे मघा पूर्वोत्तरात्रयम् ।
तन्मध्ये जलवृष्टौ वा जलयोगस्तदा महान् ॥१३७॥
श्रावणस्य त्रयोदश्यां रेवत्यां रवियोगतः ।
बहुधान्यानि वस्तूनि आयन्ते बहुधान्यकम् ॥१३८॥
शनौ श्रावणसप्तम्यां जलपूर्णा वसुन्धरा ।
श्रावणस्य चतुर्दश्या-मार्द्रायामन्नसंग्रहः ॥१३९॥

अमावस्या विचारः—

श्रावणस्य त्वमावस्यां पुष्याश्लेषा मघा यदि ।
मध्यमं वर्षमादेश्यं वृष्टिर्न महती यदा ॥१४०॥
यतः सारसंग्रहे-विशाखापञ्चके वर्षे दुर्भिक्षं बहुधा स्मृतम्।

श्रावणकृष्ण प्रतिपदा के दिन धृतियोग हो तो धान्यका संग्रह करना उचित है और बाकीके योगमें विक्रय करना उचित है ॥१३५॥ श्रावण या भाद्रपद के कृष्णपक्षकी प्रतिपदा के दिन श्रवण या धनिष्ठानक्षत्र हो तो लोगोंमें निश्चयसे सुभिक्ष हो ॥१३६॥ श्रावणकृष्ण द्वादशीके दिन मघा या तीनों उत्तरा इनमें से कोई नक्षत्र हो और बादल हो या वर्षा हो तो बड़ा जल योग जानना ॥१३७॥ श्रावणकी त्रयोदशीके दिन रविवार और रेवती नक्षत्र हो तो बहुत धान्य और मणिया आदि वस्तु उत्पन्न हों ॥१३८॥ श्रावण सप्तमी के दिन शनिवार हो तो पृथ्वी जलसे पूर्ण हो। यदि श्रावण चतुर्दशी आर्द्रा युक्त हो तो धान्यका संग्रह करना उचित है ॥ १३९ ॥
श्रावण अमावस को पुष्य आश्लेषा या मघा नक्षत्र हो तो वर्ष मध्यम हो और वर्षा अधिक न हो ॥ १४ ॥ सारसंग्रह में–अमावास्याके दिन

सुभिक्षमेकादशके वारुणाद्ये पुरोहितम् ॥१४१॥
अमावस्यां मध्यवर्षं भवेत् पुष्यचतुष्टये ।
शनिः सूर्यः कुजो दर्शे-ष्वनन्तरमरिष्टकृत् ॥१४२॥
तिन्नि य पूरब कत्तिका, चित्ता अरु असलेस ।
मिलि अमावसि धानरो, अरघ करे सविसेस ॥१४३॥
अमावस्यातिथिर्धिष्ण्यं यदा भवति कृत्तिका ।
ईतिर्घना क्षितौ नूनं वर्षे तत्र भविष्यति ॥१४४॥
पार्वणी यदि रौद्रे स्या-दादित्यं प्रतिपत्तिथौ ।
द्वितीया पुष्यसंयुक्ता जलं धान्यं तृणं न च ॥१४५॥
अमावस्यादिने योगे पुनर्वस्वादिपञ्चके ।
समर्घमथ दुर्भिक्ष-मुत्तरादिचतुष्टये ॥१४६॥
विशाखाद्यष्टके कष्टं वारुणादौ जने सुखम् ।
ऊचिरे केचनाचार्या दर्शनक्षत्रजं फलम् ॥१४७॥

विशाखा आदि आठ नक्षत्रोंमे मे कोई नक्षत्र हो तो बहुत करके दुर्भिक्ष हो और शतभिषा आदि ग्यारह नक्षत्रोंमे से कोई नक्षत्र हो तो शुभ हो ॥१४१॥ यदि अमावसके दिन पुष्य आदि चार नक्षत्र हो तो मध्यम वर्ष हो । और शनि रवि या मगलवार के दिन अमावस हो तो निरतर दु खदायक हो ॥ १४२ ॥ यदि अमावसको तीनों पूर्वा, कृत्तिका, चित्रा या आश्लेषा नक्षत्र होतो धान्य महँगे हो ॥१४३॥ यदि आमावसके दिन कृत्तिका नक्षत्र हो तो पृथ्वी पर निश्चयसे उस वर्षमें ईति का उपद्रव हो ॥ १४४ ॥ यदि अमावसको आर्द्रा, प्रतिपदा को पुनर्वसु और द्वितीया को पुष्य नक्षत्र हो तो वर्षा, तृण और धान्य न हो ॥ १४५ ॥ अमावस को पुनर्वसु आदि पाच नक्षत्र हो तो धान्य सस्ते हों, उत्तराफाल्गुनी आदि चार नक्षत्र हो तो दुर्भिक्ष हो ॥ १४६ ॥ विशाखा आदि आठ नक्षत्र हो तो कष्टदायक हो और शतभिषा आदि नक्षत्र हो तो मनुष्यो मे सुख हो ऐसा अमावस

यतः—अमावसीइ ति दिया होइ जयारिक्खह उत्तरातिनि ।
रेवइधणिट्ठ पुणव्वसु दुभिक्खं करइ मासम्मि ॥१४८॥
मन्यान्तरे—
भरह बाम्भइ चित्तह साई, कत्तिय मरगि अमावसि आई।
इण नक्खत्ते जो तिथि ऊणी, निश्चय धान्य वधावे दूणी ॥
विरुद्धवारनक्षत्रेऽमावस्या यद्यशोभना ।
वार्षिकं फलमादद्यां शेषा मासफलप्रदा ॥१५०॥ इति ।
श्रावणे शुक्लसप्तम्यां स्वातियोगसुभिक्षकृत् ।
श्रवणं पूर्णिमायां स्या द्धान्यैरानन्दिता प्रजा ॥१५१॥
यतः—आसा रोहिणि नवि मिले, पोसी मूल न होय ।
श्रावणि श्रवण न पामीइ, मही बालंती जाय ॥१५२॥
ज्येष्ठस्य प्रतिपद्वार-फलं प्राककथितं यथा ।

को नक्षत्र का फल कोई आचार्य कहते हैं ॥ १४७ ॥ मेघमालामें कहा है कि— अमावस के दिन तीनों उत्तरा रेवती धनिष्ठा या पुनर्वसु नक्षत्र हो तो एक मास दुर्भिक्ष करे ॥ १४८ ॥ ग्रंथान्तरमें— भरणी, हस्तमिरा चित्रा, स्वाति, कृत्तिका और मघा इन नक्षत्रों में यदि अमावस आजाय और इन नक्षत्रोंसे तिथि जितनी न्यून हो उनसे दूना मूल्यसे धान्य बिके ॥१४९॥ विरुद्ध वार नक्षत्रों में अमावस हो तो बहुत अशुभ होती है। यह भावणकी अमावस वार्षिक फलदायक है और बाकी की मासफलदायक हैं ॥ १५० ॥ श्रावण शुक्ल सप्तमी को स्वाति नक्षत्र हो तो सुभिक्षकारक है। श्रावणपूर्णिमा को श्रवणनक्षत्र हो तो धान्य प्राप्ति बहुत हो जिससे प्रजा आनन्दित हो ॥ १५१ ॥ कहा है कि आषाढ पूर्णिमाको रोहिणी, पौष पूर्णिमा को मूल और श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र न हो तो पृथ्वी जलाती हुई जाय यानि दुःखी हो ॥ १५२ ॥ जैसा ज्येष्ठमास की प्रतिपदा का फल पहले कहा है वैसा आषाढमासकी प्रतिपदाका फल यहां भी समझ लेना

श्रावणेऽपि तथा वाच्यं प्राच्याः केचिदिहोचिरे ॥१५३॥

अथ भाद्रपदमास —

प्रथमायां तिथौ भाद्रे गुरौ श्रवणसंयुते ।
अभङ्गं जायते वर्षं धनधान्यादि सम्पदा ॥१५४॥
भाद्रपदाऽसिताष्टम्यां रोहिणी शुभदायिनी ।
नवमी भाद्रशुक्लस्य रवौ मूले भयङ्करी ॥१५५॥
दुर्भिक्षाय रवौ मूले भाद्रे शुक्ले दशम्यपि ।
योगयोऽयं स्यात् सुभिक्षाय प्रोचुरेत्र च केचन ॥१५६॥
एकादशी भाद्रशुक्ले मूले दिनकृता युता ।
मेघेन वत्सरे सौख्य लोके व्याधिर्विबाधते ॥१५७॥
भाद्रे कृष्णद्वितीयायां द्वितीयवारयोगतः ।
धान्यनिष्पत्तिरतुला सम्पदः स्युश्चतुष्पदैः ॥१५८॥
शनौ भाद्रपदे कृष्णा चतुर्थी यदि जायते ।
देशभङ्गश्च दुर्भिक्ष मुस्तयोदरपूरणम् ॥१५९॥

चाहिए ॥ १५३ ॥ इति श्रावणमास।

भाद्रपद की प्रथम तिथि के दिन गुरुवार और श्रवण नक्षत्र हो तो वर्ष अच्छा हो और धन धान्य की प्राप्ति विशेष हो ॥ १५४ ॥ भाद्रकृष्ण अष्टमी को रोहिणी नक्षत्र हो तो शुभदायक है। भाद्रशुक्ल नवमी को रविवार और मूलनक्षत्र हो तो भयदायक है ॥ १५५ ॥ भाद्रशुक्ल दशमी को रविवार और मूलनक्षत्र हो तो दुर्भिक्ष होता है। परन्तु यही योग को कोई सुभिक्ष कारक कहते हैं ॥ १५६ ॥ भाद्रशुक्ल एकादशी को रविवार और मूलनक्षत्र हो तो वर्षमें वर्षासे तो सुख हो परन्तु रोग का उपद्रव हो ॥ १५७॥ भाद्रकृष्ण दूजको सोमवार हो तो धान्यकी प्राप्ति बहुत हो तथा पशुओंकी वृद्धि हो ॥ १५८ ॥ भाद्रकृष्ण चतुर्थी को यदि शनिवार हो तो देशभंग और दुर्भिक्ष होने से लोक मुस्ता (मोथा) से उदरपूर्त्ति करें ॥ १५९ ॥

अत्र लोकेप्याह–

+आठमा काली पयसनी, सनि असलेसा जुत ।
मेह न जोइस महीयले, परमे एहज वत्त ॥१६०॥

ग्रन्थान्तरेऽपि–+नवम्यां स्वाति संयोगे भाद्रमासे सिते यदा ।
तदा सुखमयी भूमिर्घृतधान्यसमन्विता ॥१६१॥
भाद्रशुक्लचतुर्थ्यां चे वारा जीवेन्दुभार्गवा ।
उत्तराहस्तचित्राभि सुभिक्षं निश्चयात् तदा ॥१६२॥
भाद्र धवलपञ्चम्यां स्वातियोगो यदा भवेत् ।
मासिक्षसुभि कर्पास-स्वातेसामसम्भव ॥१६३॥
भाद्रमासे तृतीयायां भौमे चोत्तरफाल्गुनी ।
तदा वृष्टिकरो मेघ मोसतोऽपि घनाघन ॥१६४॥

भाद्रपदमासाम्भकथनम्—

लोक भी कहते है कि भाद्रपद कृष्ण अष्टमी या आश्लेषा नक्षत्र के दिन शनिवार हो तो पृथ्वी पर मेह न बरसे बार्ता बरसे पाने मेह का स्मरण ही सुना जाय ॥ १६ ॥ ग्रन्थान्तरमें भी– भाद्रशुक्ल नवमी या स्वाति नक्षत्र के दिन शुक्रवार हो तो घी और धान्यसे पूर्ण सुखमयी पृथ्वी हो ॥ १६१ ॥ भाद्रशुक्ल चतुर्थी को बृहस्पति सोम या शुक्रवार हो और उत्तराफाल्गुनी हस्त या चित्रा नक्षत्र हो तो निश्चय से सुभिक्ष होता है ॥ १६२ ॥ भाद्रशुक्ल पंचमी को स्वाति नक्षत्र हो तो धान्य मास कपास रूई आदि से भाव हो ॥ १६३ भाद्रमास की तृतीया के दिन मंगलवार और उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र हो तो उत्पन्न मेघ उदय होकर भी न बरसे ॥ १६४ ॥

+ टी— कृष्णादिमासमते इदं वदते न शुक्लादिमते । अस्यायमर्थः—भाद्रकृष्णे अष्टमी तथा आश्लेषानक्षत्रदिने च यत्नोर्दिनस्याः शनिवारो न शुभः । भाद्रे शुक्ले स्वातिदिने यदा नवम्यां सिते शुक्रवारेः शुभः। यथा सूक्ष्माख्यायां योगो भवसमानो ।

भाद्रमासे ह्यमावस्यां रवौ* घृतमहर्घता ।
धान्यं महर्घं भौमे ज्ञे शनौ तैलं विनिर्दिशेत् ॥१६५॥
यतः—मुद्गर जोग ए भादवे, अमावसि रविवार ।
उजेणी हुंती पश्चिमे होसी हाहाकार ॥१६६॥
अन्यस्मिन्नपि मासे चेदेकैवामावसी रवौ ।
तदा वर्षस्य विश्वांशा मानं पञ्चदश स्मृताः ॥१६७॥
अमावसीद्वयं सूर्य-वारे टिप्पनके यदा ।
दश विंशोपका वर्षे खण्डवृष्ट्यादिनोदिताः ॥१६८॥
रविवारादमावस्या त्रये पञ्च विंशोपकाः ।
छत्रभङ्गोऽथ दुष्कालो रवौ दर्शचतुष्टये ॥१६९॥
इत्यमावास्यारविवारफलम् ।

रुद्रदेव सप्तवारफलान्याहः—
"अमावास्याः फलं वक्ष्ये वारभुक्त्या शृणु प्रिये! ।
येन विज्ञायते कालो वत्सरे मासनिर्णयः ॥१७०॥

भाद्रपदकी अमावसको रविवार हो तो घी महँगे हों, मगल या बुधवार हो तो धान्य महँगे हो और शनिवार हों तो तेल महँगे हों ॥१६५॥ अमावसको रविवार हो तथा मुद्गरयोग भी हो तो उज्जयणी से पश्चिमदिशा में हाहाकार अनिष्ठ हो ॥ १६६ ॥ इससे दूसर कोई मासकी अमावस को रविवार हो तो वर्षके विश्वा पन्द्रह माना गया है ॥१६७॥ पचागमें यदि दो अमावस रविवार को हो तो वर्षके दश विश्वा माने हैं और खण्डवृष्टि होती है ॥१६८॥ तीन अमावस रविवार को हो तो पाच विश्वा माने है। यदि चार अमावस रविवार को हो तो छत्रभग तथा दुष्काल हो ॥१६९॥ रुद्रदेवके मतसे—हे प्रिये! वारानुक्रमसे अमावसका फल कहता हूँ, जिससे

---

* टी—मगल करे पलेवडु, बाला बुधे मरति।
रवि शनि होय अमावसे, घास रत्न मुहघा हुति ॥

जनाना बहुला क्लेशा राजा दुःखै प्रपीड्यते ।
अमावस्यादिने सूर्ये सन्तापापार्थनाशनात् ॥१७१॥
सुभिक्ष क्षेममारोग्यं बपाया प्रबलादय ।
सस्यास्पत्ति प्रजासौख्य सामवार प्रवर्त्तते ॥१७२॥
राज्यभ्रंशा राज्ययुद्ध क्लेशानां च प्रवर्द्धनम् ।
उपघातोऽल्पवृष्टिश्च क्षयश्चार्थस्य भूमिजे ॥१७३॥
दुर्भिक्ष राज्यनाशश्च प्रजानां दुःखभाजनम् ।
स्थानत्यागो धान्यमल्पं बुधवारे प्रवर्त्तते ॥१७४॥
सदा वृष्टिः सुभिक्ष च कल्याणं दुःखनाशनम् ।
आरोग्य च प्रजा स्वस्था गुरुवार समादिशेत् ॥१७५॥
भृशं जलाश्च मेघा कृषीणां बहुरूक्ष ॥
तस्कराश्च निस्य शुक्रेणामावसीदिने ॥१७६॥
दुर्भिक्षं रौरव घोरं महादुःख महद्भयम् ।
पराङ्मुखा पितु पुत्रा अमावस्यां शनिवासर'' ॥१७७॥

वर्षमें मासका फल माना जाता है ॥१७० ॥ अमावस्याको रविवार हो तो मनुष्योंको बहुत क्लेश तथा राजा दुःखोंसे पीड़ित हो और अर्थका विनाश हो ॥ १७१ ॥ सोमवार हो तो सुभिक्ष कुशलता आरोग्य, वर्षाका प्रबल उदय धान्यकी उत्पत्ति और प्रजा सुखी हो ॥ १७२ ॥ मंगलवार हो तो राज्यका विनाश राजाओंमें युद्ध क्लेशोंकी वृद्धि, उत्पात थोड़ी वर्षा और धन का नाश हो ॥१७३॥ बुधवार हो तो दुर्भिक्ष राज्यका विनाश, प्रजा को दुःख, स्थान भय और धान्य थोड़ा हो ॥१७४॥ गुरुवार हो तो अच्छी वर्षा सुभिक्ष, कल्याण दुःखका नाश प्रजा सुखी और आरोग्यता हो ॥ १७५॥ शुक्रवार हो तो जलसे उत्पन्न मेघ हो कृषियों का बहुत उदय हो और चोरका हमेशा उपद्रव हो ॥१७६॥ शनिवार हो तो घोर दुर्भिक्ष हो, महादुःख बड़ाभय और पुत्र पिता से पराङ्मुख हो ॥१७७॥ अमावास्या

अमावस्याधिके ऋक्षे यदा चरति चन्द्रमा ।
अर्थे चा' ऽधिको ज्ञेया हीने हीनत्वमाप्नुयात् ॥१७८॥
प्रकृतम्—भाद्रपदे शुक्लषष्ठ्या-मनुराधा * यदा भवेत् ।
नक्षत्रान्तरदोषेऽपि सुभिक्षं निर्णयाद् वदेत् ॥१७६॥

अथाश्विनमास —

आश्विने प्रथमायां चे-च्छुक्लायां शनिरागते ।
तदा धान्यं न विक्रेयं पुरस्तस्य महर्घता ॥१८०॥
+ शुक्लायां च द्वितीयाया-माश्विने चन्द्रवारतः ।
मूलस्पर्शे पुनो मृ नात् तदा धान्यस्य संग्रहः ॥१८१॥
आश्विने हि तृतीयायां यदि भौमः शनैश्चरः ।
तदाग्निः प्रबलो भूम्या-मन्यवारे समर्घता ॥१८२॥
चतुर्थ्यामाश्विने सूर्ये विक्रेतव्यं घृतं जनैः ।

का अधिक नक्षत्र पर चन्द्रमा गमन करे तो धानका भाव सस्ता हो और हीन नक्षत्र पर गमन करे तो धानका भाव तेज हो ॥१७८॥ भाद्रशुक्ल षष्ठी को यदि अनुराधानक्षत्र हो तो दूसरे नक्षत्रोंका दोष रहने पर भी निश्चयसे सुभिक्ष कहना ॥ १७६ ॥ इति भाद्रपदमास ॥

आश्विन शुक्लप्रतिपदाको शनिवार हो तो धान्यका संग्रह करना चाहिये, आगे वह महँगे भाव होंगे ॥१८०॥ आश्विन शुक्लमें धनुराशिका चन्द्रमा के समय द्वितीया और मूल नक्षत्र में सोमवार को धान्य का संग्रह करना चाहिये ॥ १८१ ॥ यदि तृतीयाके दिन मंगल या शनिवार हो तो पृथ्वी पर गरमी प्रबल हो और दूसरे वार हो तो सस्ते हो ॥ १८२ ॥ शुक्ल

---

*टी— आरखडा सब बोलीया, काई मन्त्रितो नाह। भाद्रवडो जग रेलसी, जो छठे अनुराह॥ इति लोक भाषाया॥

+टी— इदमपि न सम्भवति-आश्विने शुक्लद्वितीयाया धनुषि चन्द्रमा प्राप्ते तेन द्वितीयादिने मूलदिने च चन्द्रवारे धान्यसंग्रह ।

संगृह्णन्ते च धान्यानि पुरा लाभाय तान्यपि ॥१८३॥
* आश्विने शुक्लपञ्चम्यां सोमे हस्तसमागमे ।
गन्तव्य मालवस्थान निर्जला जलदायिनी ॥१८४॥
सप्तम्यां शनियुक्तायां सित पक्षे यदाश्विन ।
श्रवणो वा धनिष्ठा चेत्प्रगतो नाशकारयाम् ॥१८५॥
आश्विने च बुधेऽष्टम्यां विधेया घृतसंग्रह ।
कार्तिके विक्रयात् तस्य सम्पद स्यु पदे पद ॥१८६॥
नवम्यामाश्विन शुक्ले कुजवारेण संगतौ ।
मुद्ग कपास चपला-माषाद संग्रह मत ॥१८७॥
त्रिगुणास्तु भवल्लाभा चैत्रमासेऽप विक्रये ।
आश्विन दशमी भौमे भूम्यां व्याधिरयाधित ॥१८८॥
×एकादश्यां शनी तस्मिन्श्छत्रभङ्गोऽथवा भुवि ।

चतुर्थी को रविवार हो तो घी बेचना चाहिये और धान्य का संग्रह करना चाहिये जिससे आगे लाभ होगा ॥ १८३ ॥ आश्विन शुक्ल पंचमी सोमवारके दिन और हस्त नक्षत्र पर सूर्य हो तब वर्षा होना सम्भव नहीं, यदि वर्षा हो तो मालव देशमें जाना चाहिये वहां निर्जलामें जल देनेवाली है ॥ १८४ ॥ आश्विन शुक्ल सप्तमी शनिवार को श्रवण या धनिष्ठा नक्षत्र हो तो जगत् का नाशकारक होता है ॥ १८५ ॥ शुक्लाष्टमीको बुधवार हो तो घी का संग्रह करना चाहिये । उसको कार्तिक में बेचने से विशेष लाभ हो ॥१८६॥ शुक्ल नवमीको मंगलवार हो तो मूंग, कपास चौला उड़द आदिका संग्रह करके ॥ १८७ ॥ उसको चैत्र मासमें बेचनेसे दूना लाभ हो । आश्विन शुक्ल दशमी को मंगलवार हो तो पृथ्वी पर व्याधि (रोग) की पीड़ा हो ॥ १८८ ॥ आश्विन शुक्ल एकादशी को शनिवार हो

---

* टी— प्रमादि आश्विने शुक्लपञ्चम्यां सोमवारे सति सूर्ये च हस्ते समागते दुर्दिनं शुभा निर्जला पञ्चमी जलदायिनीत्यर्थः ।

×टी-संवत् १७७२ आश्विनसित ११ तिथौ शनिर्विधापुर्दुर्गभङ्गः ।

नगरग्रामभङ्गः स्याद्वैरिचौराद्युपद्रवः ॥१८९॥
+तृतीयारोहिणीयोगे वारयोः शनिभौमयोः ।
तदा कार्पासिकं ग्राह्यं फाल्गुने लाभमादिशेत् ॥१९०॥
आश्विने कार्त्तिके वापि द्वितीया मङ्गलेऽसिता ।
लोके दहनजो दाहः प्रतिग्रामं प्रवर्त्तते ॥१९१॥
आश्विने कृष्णपञ्चम्यां रविवारः प्रवर्त्तते ।
माघे मासे ह्यमावस्यां महर्घं निश्चयाद् घृतम् ॥१९२॥
*षष्ठ्यामथाश्विने ज्येष्ठादित्यमूलादिसङ्गमे ।
सङ्ग्रहः सर्वधान्यानां पञ्चमास्यां फलं भवेत् ॥१९३॥
आश्विनैकादशी कृष्णा वारयोर्बुधसोमयोः ।
महिषीणां गवां मूल्यं महत् सञ्जायते जने ॥१९४॥
द्वादशी शनिना युक्ता हस्तचित्रा समन्विता ।
तदा युगन्धरी ग्राह्या चैत्रे च त्रिगुणं फलम् ॥१९५॥

तो पृथ्वी पर छत्रभग हो, नगर-गावका भग हो और चोरोका उपद्रव हो ॥ १८९ ॥ आश्विन कृष्णा तृतीया और रोहिणी नक्षत्र के दिन शनि या मगलवार हो तो कपास का सग्रह करना, उस से फाल्गुन में लाभ होगा ॥ १९० ॥ आश्विन या कार्त्तिक कृष्णपक्ष में दूज मगलवार की हो तो लोक में प्रत्येक गाव में अग्नि का उपद्रव हो ॥१९१ ॥ आश्विन कृष्णा पञ्चमी को रविवार हो ता माघ मासकी अमावसको निश्चयसे घी महँगा हो ॥ १९२ ॥ आश्विन षष्ठीके दिन ज्येष्ठा या मूल नक्षत्र और रविवार हो तो सब धान्य का सग्रह करे तो पाचवें मास लाभदायक हो ॥ १९३ ॥ आश्विन कृष्ण एकादशीको बुध या सोमवार हो तो भैंस और गौका मूल्य अधिक हो ॥१९४॥ द्वादशीको शनिवार हो और हस्त या चित्रा नक्षत्र हो तो युगधरी (जूआर)का सग्रह करें तो चैत्रमे त्रिगुना लाभ हो ॥१९५॥

+टी-तृतीयायां वा रोहिणीदिने इत्यर्थः ।
*टी-आदित्यवारे ज्येष्ठायां मूले च नक्षत्रे इत्यर्थः ।

+आश्विनस्याप्यमावस्यां शनिवारो यदा भवेत् ।
मध्यमं वर्षमथवा दुष्कालः खण्डमण्डले ॥१९६॥
कवित्तु–सनि आइचें मंगले, ग्रास अमावसि होय ।
तिमणा तिगुणा चउगुणा, फण मवड्ढा होय ॥१९७॥
ग्रन्थान्तरे—
उत्तरतिसि धणिट्ठ सवर्त्थी, ग्रन पुनर्वसु रोहिणी छट्ठी ।
हुइ अमावसि एह संमुती, मास दुभिक्ख करे निरुत्ती ।१९८।
इति सामान्यतयाऽपि आश्विनविषयमुक्तम् ।
अथ कार्तिकमासः—
कार्तिके प्रथमे पक्षे प्रथमा बुधसंयुता ।
तस्यां मध्यमं वृष्ट्या नावृष्ट्या च कचिद्भवेत् ॥१९९॥
यत–काती सुदि पडिवा दिने, जो बुधवारि होय ।

आश्विन अमावस को शनिवार हो तो खण्डमण्डल में वर्ष मध्यम, या दुष्काल हो ॥ १९६ ॥ कोई कहते हैं कि– आश्विन अमावस को शनि वि या मंगलवार हो तो धान्यका दुना तीगुना और चौगुना लाभ हो ॥ ॥१९७॥ ग्रन्थान्तरमें– आश्विन अमावसको तीनों उत्तरा धनिष्ठा, पुनर्वसु या रोहिणी नक्षत्र हो तो एक मास दुर्भिक्ष हो ॥१९८॥ इति आश्विनमास॥
कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को बुधवार हो तो कहीं वर्षा और कहीं अना-वृष्टि के कारण वर्ष मध्यम फलदायक हो ॥ १९९ ॥ जैसे– कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को बुधवार हो तो धान्यका दूना तीगुना और चौगुना भाव हो

+टी–शुक्लादिपक्ष सम्मतमिति ।
टी– संवत् १७७७ वर्षे कार्तिककृष्ण १ तिथौ बुधा कृष्णादिमत ।
टी–संवत् १८०७ वर्षे ज्येष्ठकृष्ण १ तिथौ शनौ कार्तिककृष्ण १ दि-ने मंगल समदिवस येम्ह ग्यारे दुर्भिक्ष ह१ ।
टी–कार्तिमास कृष्णपक्ष पडिवाय शनिवार ।
प निंदुं दुष्काल होय आयो घोरप्रकार ॥

विमणा तिगुणा चउगुणा, कणे कवड्डा होय ॥२००॥
कार्त्तिके सप्तमी शुक्ला शनौ धान्यार्घनाशिनी ।
श्वेतवस्तुमहर्घं स्यात् त्रिमासि द्विगुणं फलम् ॥२०१॥
कार्त्तिके रविणा रौद्र-योगे राज्ञां महारणः ।
रोहिण्यां कार्त्तिके सूर्यः पुरो वारिद्वारणः ॥२०२॥
कार्त्तिके पञ्चमी रौद्र-योगे स्यात् तृणसङ्ग्रहः ।
चतुष्पदेऽन्यथा दुःख जायतेऽग्रेऽल्पवृष्टिजम् ॥२०३॥
कार्त्तिके मङ्गले मूलं मङ्गलेऽननुकूलकम् ।
सप्तमी शनिना कृष्णा करोत्यन्नमहर्घताम् ॥२०४॥
कार्त्तिके दशमी कृष्णा शनौ रोगकरी जने ।
रविः कृष्णत्रयोदश्यां यवगोधूममूल्यकृत् ॥२०५॥
कार्त्तिके कृष्णादशमी शनौ मघासमन्विता ।
महर्घं घृतपूगादि चातुर्मासान्तविक्रयः ॥२०६॥
कार्त्तिके चेदमावस्यां शनिश्चाशननाशनः ।

॥२००॥ कार्तिक शुक्ल सप्तमीको शनिवार हो तो धान्य का विनाश और श्वेत वस्तु महँगी हो इससे तीन मासमें द्विगुना लाभ हो ॥२०१॥ कार्तिक में रविवार और आर्द्रा का योग हो तो राजाओंका युद्ध हो । तथा रविवार और रोहिणी का योग तो हो आगे वर्षाका रोध हो ॥२०२॥ कार्तिक पंचमी को आर्द्रा हो तो तृणका सग्रह करना उचित है, नहीं तो पशुओं को दुःख होगा क्योंकि आगे बहुत थोड़ी वर्षा होगी ॥२०३॥ कार्तिकमें मगलवार को मूलनक्षत्र हो तो मागलिक कार्यमें अनुकूल नहीं होता । कृष्ण सप्तमी शनिवारका हो तो अन्न महँगे हो ॥२०४॥ कार्तिक कृष्ण दशमी शनिवार को हो तो रोग करें । और कृष्ण त्रयोदशी रविवार को हो तो यव और गेहूँ तेज हो ॥ २०५ ॥ कार्तिक कृष्ण दशमी शनिवार और मघा नक्षत्र युक्त हो, तो घी और सोपारी महँगे हो चौथे महीने बेचे ॥२०६॥ कार्तिक

भौमे भूम्यां महावह्नी रविर्युद्धाय भूभुजाम् ॥२०७॥

अपरं—होली पोली दीवालीइ, रवि शनि मंगल होय ।
खप्पर लीधे जग भमे, जीवे विरलो कोय ॥२०८॥

चतुर्मासकुलके—

नमिऊण तिलोयरविं जगवच्छह जसहरं महावीरं ।
वुच्छामि अग्घकण्डं जं कहियं जिणवरिंदेण ॥२०९॥
कत्तियपुण्णमदिवसे कत्तियरिक्खं च होइ संपुन्नं ।
ता चत्तारि वि मासा होइ सुभिक्खं सुहं लोए ॥२१०॥
अह भरणी तद्दिवसे चत्तारि वि पुहर होइ संपुण्णा ।
ता जाणह दुब्भिक्खं मासा चउरो वि सस्सार्ध ॥२११॥
अह रोहिणी तद्दिवसे हविज्ज चत्तारि पहरसंपुण्णं ।
ता जाणह अग्घहाणी मुसरसाणं च दव्वाणं ॥२१२॥

को अमावसको यदि शनिवार हो तो बालकोंका विनाश हो, मंगलवार हो तो पृथ्वी पर अग्नि का उपद्रव हो और रविवार हो तो राजाओं का युद्ध हो ॥ २ ० ७ ॥ होली पोली (विजया दशमी) और दीवालीको रवि शनि या मंगल हो तो लोक खप्पर लेकर जगत् में घूमें याने बड़ा दुष्काल हो कोई विरला बचे ॥ २ ० ८ ॥ चतुर्मास कुलकमें कहा है कि— त्रिलोक के रवि जगत्प्रभु यशधर श्री महावीरजिनको नमस्कार करके जिनेंद्र भगवान ने कहा हुआ अर्घकाण्ड को कहता हूँ ॥२ ० ९॥ कार्तिक पूनमको कृत्तिका नक्षत्र पूर्णतया हो तो चारों ही महीने सुभिक्ष रहे और लोक सुखी हो ॥२१० ॥ यदि उस दिन भरणी नक्षत्र चार प्रहर पूर्ण हो तो चार महीने धान्य मंहगे (दुर्भिक्ष) हो ॥ २११ ॥ यदि उस दिन रोहिणी नक्षत्र चार प्रहर पूर्ण हो तो मूल रस और द्रव्यके अर्घकी हानि हो ॥२१२॥ पूर्णिमा

अथो– दशमि दीवा मन थके विशाखा न जोसे गाय ।
के साख गर्भेरा एय रहे के निश्चय अकाल जाय ॥१॥
दीवालकदिने वारा सौमा भौमसमायुः ।
सर्वकोतीनां च निकर्षं शुभ मर्यादिके मही ॥२॥

अह पुन्निमा य दिवसे नक्खत्तं रोहिणी अहोरत्तं ।
ता सव्व धण्णहाणी रसाण लोहाइधाउणं ॥२१३॥
अह भरणी दु पुहरा दुन्निय पुहरा य कत्तिया होइ ।
ता कुणइ अग्घहाणी दो मासा लवणकप्पासे ॥२१४॥
अह कत्तिय दो पुहरा तउपर रोहिणी उ छ पुहरा ।
दो मासाय सुगालो दो मासा होइ दुक्कालो ॥२१५॥

अथ मार्गशीर्षमासः—

+मार्गशीर्षचतुर्थ्यां चेन्मङ्गलो रेवतीदिने ।
प्रतिग्रामं वह्निभयं जगत्क्लेशव्यथामयम् ॥२१६॥
मार्गशीर्षेऽथवा पौषे फाल्गुने धवलांशके ।
नक्षत्रात् तिथिभोगेऽल्पे गोधूमा लाभदायिनः ॥२१७॥
द्वादश्यां मार्गशीर्षस्य भौमवारेऽर्कसंक्रमे ।
भावि वर्षविनाशाय ग्रहणं शीतगोस्तथा ॥२१८॥

को दिनरात रोहिणी नक्षत्र हो तो समस्त धान्य, रस तथा लोहा आदि धातुओं का विनाश हो ॥२१३॥ यदि दो प्रहर भरणी और दो प्रहर कृत्तिका हो तो दो महीने लवण और कपास तेज हो ॥२१४॥ यदि दो प्रहर कृत्तिका और पीछे छह प्रहर रोहिणी हो तो दो महीना सुकाल याने सस्ता, और दो मास दुष्काल याने महँगा हो॥२१५॥ इति कार्त्तिकमास ॥

मार्गशीर्ष चतुर्थीको या रेवती नक्षत्रके दिन मंगलवार हो तो प्रत्येक गाँवमें अग्नि का भय और जगत् क्लेश-दुखमय हो ॥२१६॥ मार्गशिर, पौष या फाल्गुन के शुक्लपक्षमें नक्षत्र के भोगसे तिथि भोग थोड़े हो तो गेहूँसे लाभ हो ॥२१७॥ मार्गशीर्ष द्वादशीको या सूर्य संक्रांतिको मंगलवार हो तथा चन्द्रग्रहण हो तो अगला वर्ष विनाश हो ॥ २१८ ॥ मार्गशीर को रविवार हो तो कपास रूई का संग्रह करना। वैशाख में लाभदायक है

+टी— रेवतीदिने यद्वा चतुर्थीदिने मङ्गलः ।

मार्गे नवम्यां रेवत्यां शुक्रे दुर्भिक्षकारकः ।
पञ्चमी गुरुणा योगात् पञ्चमासान सुभिक्षदा ॥२१९॥
मार्गशीर्षप्रतिपदि पुष्ये शुक्येऽशुभगव' ।
जलवृष्ट्या परं सर्पं गर्भस्रावाद् विनश्यति ॥२२०॥
पुनर्वसौस्तथार्द्राया-स्तृतीयाया च सङ्गमे ।
धान्यं समर्घमादेश्यं राजा सुस्थ' प्रजासुखम् ॥२२१॥
मार्गशीर्षस्य पञ्चम्यां मघाद्य पञ्चकं यदा ।
पुरो वर्षविनाशाय जायते जलरोधनं ॥२२२॥
मार्गे नवम्यां चित्रायां धान्यं महर्घमादिशेत् ।
कृष्णा चतुर्दशी स्वाती श्रावणे जलरोधिनी ॥२२३॥
मार्गशीर्षस्य दशमी मूले वा रविणा युता ।
सङ्ग्रहश्च तिलास्तैलं ज्येष्ठान्ते लाभदायकम् ॥२२४॥
मार्गे यदि स्यादादित्य एकादश्यां तिथौ तदा ।

नवमी को रेवती नक्षत्र और शुक्रवार हो तो दुर्भिक्षकारक है । पंचमी को गुरुवार हो तो पांच मास सुभिक्ष हो ॥ २१९ ॥ मार्गशीर्ष प्रतिपदा को पुष्य नक्षत्र हो तो पशुओं को कष्ट हो और अगला वर्ष का गर्भ जल वृष्टि से विनाश हो ॥ २२[illegible] ॥ तृतीया को पुनर्वसु तथा आर्द्रा नक्षत्र हो तो धान्य सस्ते राजा प्रसन्न रहे और प्रजा सुखी हो ॥ २२१ ॥ मार्गशीर्ष पंचमी को मघा आदि पांच नक्षत्र हो तो वर्षा न होनेसे आगामी वर्ष विनाश हो ॥ २२२ ॥ मार्गशीर्ष नवमीको चित्रा नक्षत्र हो तो धान्य मंहगे हो और कृष्ण चतुर्दशी स्वाति युक्त हो तो श्रावण में वर्षा न हो ॥ २२३ ॥ मार्गशीर्ष दशमीको मूलनक्षत्र और रविवार हो तो तिल तैल का संग्रह करना ज्येष्ठ के अन्तमें लाभदायक है ॥२२४॥ मार्गशीर्ष एकादशी

१ टी– मागसिरि चउर्भागि संभार्ग स्वाति योग हुई जांड विचारी । श्रावण ना जा जानिकम करइ जाया विद्रस कर गहुंचे मगर ॥१॥ संवत् १७५१ वर्षे चतुर्दश्यां स्वातिभाग्यतः ।

कार्पासवस्त्रधान्यादि ग्राह्यं वैशाखलाभकृत् ॥२२५॥
अथवा दैवयोगेन शनिवारस्य सङ्गमः ।
जलशोषः प्रजानाशश्छत्रभङ्गस्तदा भवेत् ॥२२६॥

अथ पौषमासे —

पौषमासे शुक्लपक्षे चतुर्थीदिनवासरे ।
यदा शनिस्तदादुःस्थं त्रिमासं नैव संशयः ॥२२७॥
सप्तमी सोमवारेण पौषमासे यदा भवेत् ।
तदा च महिषीवृन्दं म्रियते रोगपीडितम् ॥२२८॥
यावन्नार्द्रां व्रजेत् सूर्यः स्तावद् धान्यस्य संग्रहः ।
शनिः पौषे नवम्यां चेत् पुरस्ताल्लाभकारणम् ॥२२९॥
एकादश्यां पौषशुक्ले कृत्तिकाभोगतः स्मृतः ।
रक्तवस्तुमहालाभः सधान्यात् प्रथमा वुधे (ऽम्बुदे)॥२३०॥
पूर्वाषाढा तथा ज्येष्ठा-ऽमावस्यां + पौषमासके ।

॥ २२५ ॥ यदि दैवयोग से शनिवार हो तो जल का सूखना, प्रजा का नाश और छत्रभंग हो ॥ २२६ ॥ इति मार्गशीर्ष मास ॥

पौष शुक्ल चतुर्थी का शनिवार हो तो तीन मास दुःख रहे इस में संदेह नहीं ॥२२७॥ पौष सप्तमी सोमवारको हो तो भैंस रोग से पीडित होकर मरे ॥२२८॥ पौष नवमीको शनिवार हो तो जब तक सूर्य आर्द्रामें न आवे तब तक धान्य संग्रह करना उचित है आगे लाभदायक है ॥ २२९॥ पौष शुक्ल एकादशीको कृत्तिका हो तो लाल वस्तु से वडा लाभ हो और प्रथम वर्षा तक धान्य से लाभ हो ॥ २३० ॥ पौष अमावसको

+ टी— अत्र-पोसह मास अमावसि, पुष्य कृतिग पूर्वा होय । वार मंगल गुरु थावरह, तो वरस माठो होय ॥१॥ इति पुरातनवचनात् पुष्य उक्त न चास्य सम्भव । वृश्चिकादित्रयसूर्ययोगात् एव कृत्तिकायामपि भाव्यम । 'पुस्सा जेट्ठग होइ इति पाठ शुद्ध' । अमावास्या शनि पौषे लोक शोककरः परं । दीपालशेषान् नशोष्य सुभिक्ष कुरुते गुरु ॥

वारा शनिकुजादित्या भाविवर्षविनाशकाः ॥२११॥
पौषे मूलममावस्यां सूद्यये लाभतुष्टये।
शन्यादित्यकुजास्तस्यां बहुलाभाय धान्यतः ॥२१२॥
पौषकृष्णदशम्यां स्याद् विशाखा निशि वा दिवा।
भावि वर्षेऽम्बुदः प्रौढोऽपरं पार्श्वजिनेश्वरः ॥२१३॥
कुलके-पोससस पुन्निमाए पुस्सस्स पूसयं सयल दिवसे।
ता रस अन्न समग्गं होइ संवच्छरं जाव ॥२१४॥
पौषकृष्णप्रतिपदि रोहिण्या भागसम्भवे।
सप्तमासाद् धान्यलाभच्छत्रभंगोऽपवाऽम्बुदः ॥२१५॥
अथ माघमासः—
माघाद्यदिवसे वारो बुधो भवति चेत्तदा।
मासत्रयं महर्घं स्याद्भावि वर्षं विनश्यति ॥२१६॥
माघाऽसितस्य प्रतिप-द्वितीया वा तृतीयका।
त्रुटिता धान्यसङ्ग्रहे लाभाय वणिजां मता ॥२१७॥

पूर्वाषाढा तथा ज्येष्ठा नक्षत्र हो और शनि रवि या मंगलवार हो तो आगामी वर्षका विनाश हो ॥२११॥ पौष अमावस को मूल नक्षत्र हो और शनि रवि या मंगलवार हो तो वर्षा हो लाभ संतुष्ट हो और धान्य से बहुत लाभ हो ॥२१२॥ पौष कृष्ण दशमीको विशाखा नक्षत्र रात दिन हो तो आगामी वर्षका मेघ पुष्ट होता है, ऐसे दूसरा श्री पार्श्वजिनेश्वर हो॥२१३॥ कुलक में कहा है कि– पौष पूर्णिमा को पुष्य नक्षत्र समस्त दिन हो तो वर्षभर रस और धान्य सस्ते हों ॥ २१४ ॥ पौष कृष्ण प्रतिपदा को रोहिणी नक्षत्र हो तो सात महीने धान्य से लाभ हो या छत्रभंग हो ॥ २१५॥ इति पौषमास ॥

यदि माघ मासकी प्रतिपदा को बुधवार हो तो तीन महीने तेजी रहे और आगामी वर्ष विनाश हो ॥ २१६ ॥ माघ कृष्ण प्रतिपद् द्वितीया या

सप्तम्यां सोमवारः स्यान्माघे पक्षे सिते यदि ।
दुर्भिक्षं जायते रौद्रं विग्रहोऽपि च भूभुजाम् ॥२३८॥
माघस्यशुक्लसप्तम्यां+रविवारो भवेद्यदि ।
दुर्भिक्षं हि महाघोरं विद्रवरं च महाभयम् ॥२३९॥
माघमासप्रतिपदि शनिर्भोगः प्रशस्यते ।
सर्वत्र धान्यनिष्पत्ति-रारोग्यं देशस्वस्थता ॥२४०॥
चतुर्थी माघमासस्य शनिवारेण संयुता ।
दुर्भिक्षं मृत्युचौराग्नि-भय धान्यविनाशनम् ॥२४१॥
माघे शुक्ले प्रतिपदि वारा जीवेन्दुभार्गवाः ।
सुभिक्षाय रणायार्कः कुजे स्युर्बहुधेतयः ॥२४२॥
माघे शुक्ले यदाष्टम्यां कृत्तिका यदि नो भवेत् ।
फाल्गुने रोलिकापातः श्रावणे वा न वर्षणम् ॥२४३॥
माघे च शुक्लसप्तम्यां सोमवारे च रोहिणी ।

तृतीयाका क्षय हो तो धान्यका संग्रह करनेंसे वैश्योंको लाभ हो ॥२३७॥ माघ शुक्ल सप्तमी सोमवार को हो तो बड़ा दुर्भिक्ष और राजाओंमे विग्रह हो ॥२३८॥ माघ शुक्ल सप्तमीको रविवार हो तो बड़ा घोर दुर्भिक्ष, विग्रह और बड़ा भय हो ॥२३९॥ माघ मासकी प्रतिपदाको शनिवार हो तो अच्छा हो सब प्रकारकी धान्य प्राप्ति, आरोग्यता और देश सुखी हो ॥२४०॥ माघ की चतुर्थी को शनिवार हो तो दुर्भिक्ष, मृत्यु, चोर और अग्नि का भय, और धान्य का विनाश हो ॥ २४१ ॥ माघ शुक्ल प्रतिपदा को बृहस्पति सोम या शुक्रवार हो तो सुभिक्ष होता है। रविवार हो तो युद्ध और मंगलवार हो तो बहुत ईति (चूहा टिड्डि आदि) का उपद्रव हो ॥ २४२ ॥ माघ शुक्ल अष्टमीको कृत्तिका नक्षत्र न हो तो फाल्गुनमें रोलिका पात या श्रावण में वर्षा न हो ॥२४३॥ माघ शुक्ल सप्तमीको रोहिणी नक्षत्र हो तो

+टी-संवत् १७४३ वर्षे माघसितसप्तम्यां शनि ।

राज्ञा युद्धं प्रजारोगाऽथवा वर्षं तु मध्यमम् ॥२४४॥
एवं निमित्तादेकस्मान्नानाफलविमर्शनम् ।
सिद्धान्तज्ज्योतिषान् न्यायात् सिद्धं वा वैद्यकादपि ।२४५।
माघमासे च सप्तम्यां भरणी यदि जायते ।
रोगनाशस्तदा लोके वसुधा बहुधान्यभृत् ॥२४६॥
माघेन नवम्यां*कृष्णायां मूलभाद्धे सगर्भमा ।
भाद्रपदेऽपि नवमी दिने जलदवेनव ॥२४७॥

अथ फाल्गुनमासः—

फाल्गुने कृष्णपष्ठी च विशाखाभसंयुता ।
त्रिभिर्मासैः सुभिक्षाय स्यात्या दुर्भिक्षसाधनम् ॥२४८॥
फाल्गुने च त्रयोदश्यां शुक्लायां यदि भार्गव ।
ज्येष्ठे रोगाय नूनं स्यात्रागा मासत्रयेऽथवा ॥२४९॥
एकादश्यां फाल्गुनेऽर्को-दारार्कवेविडम्बिनी ।

राजाओंमें युद्ध प्रजामें रोग या उत्तम वर्षा हो ॥२४४॥ इसी तरह एक ही निमित्त से अनेक प्रकार के फल विचार पूर्वक करें ये सिद्धान्त से ज्योतिष न्याय और वैद्यक से सिद्ध है ॥२४५॥ माघ मास की सप्तमी को यदि भरणी नक्षत्र हो तो लोगोंमें रोगका नाश तथा पृथ्वी धान्य से बहुत पूर्ण हो ॥२४६॥ माघ कृष्ण नवमीको मूल नक्षत्र हो तो मेघ गर्भ हो इसस भाद्रपद नवमीको जलवर्षा हो ॥२४७॥ इति माघमास ॥

फाल्गुन कृष्ण षष्ठी को विशाखा नक्षत्र हो तो तीन महीने सुभिक्ष हो और स्वातिनक्षत्र हो तो दुर्भिक्ष हो ॥ २४८॥ फाल्गुन शुक्ल त्रयोदशी को शुक्रवार हो तो ज्येष्ठ में रोग हो । तीसरे महीने भाग हो ॥ २४९ ॥ फाल्गुन एकादशीको रविवार युक्त भाद्रानक्षत्र हो तो तीन महीने वर्षा कम

* टीका—नवमीदिने नवम्यां मूलनक्षत्रे ते च गर्भसम्भवो भवति । शुद्धान्यित्व सम्भवः ।

त्रिभिर्मासैः सुभिक्षाय सोमवारादसौ जने ॥२५०॥
फाल्गुने प्रथमे पक्षे वारुणं प्रतिपद्दिने ।
भोगानुसाराद्वर्षस्य स्वरूपं च प्ररूपयेत ॥२५१॥
फाल्गुने कृत्तिकायुक्तं सप्तम्यादिकपञ्चकम् ।
श्वेतपक्षे सुभिक्षाय भाद्रे जलदवृष्टये ॥२५२॥

तिथिकुलके—

फग्गुण पुण्णिमदिवसे पुव्वाफग्गुणि हविज्ज णक्खत्तं ।
चत्तारि वि पुहराओ ता चउरो माससुभिक्खं ॥२५३॥
बे पुहरा अहव महाणक्खत्तं होइ कहवि देवगला ।
ता जाणह दुवे मासा होइ महग्घं ण संदेहो ॥२५४॥
अह पुण्णा तद्दिवसे होइ महारिक्खयं जया कहवि ।
चत्तारि वि मासा खलु ता जाणह विड्डुरं कालं ॥२५५॥
अह पुण्णिम दो पुहरा पुव्वाफग्गुणी हविज्ज णक्खत्तं ।
उवरि उत्तरफग्गुणी दो पुहरा होइ जइ कहवि ॥२५६॥

दायक हो और सोमवार युक्त हो तो सुभिक्ष हो ॥ २५० ॥ फाल्गुन के प्रथम पक्षमे प्रतिपदाको शतभिषा नक्षत्र हो तो उसके भोगानुसार वर्ष का स्वरूप जानना ॥ २५१ ॥ फाल्गुन शुक्लमे सप्तमी आदि पाच तिथिको कृत्तिका नक्षत्र हो तो सुभिक्ष होता है और भाद्रपद में वर्षा होती है ॥ २५२ ॥ तिथिकुलक मे फाल्गुन पूर्णिमा का विचार इस तरह कहा है— फाल्गुन पूर्णिमाके दिन चारोंही प्रहर पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र हो तो चार महीने सुभिक्ष रहे ॥२५३॥ यदि देवयोगसे दो प्रहर मघा नक्षत्र हो तो दो महीने महँगे हो इसमे सन्देह नहीं ॥२५४॥ यदि उस दिन मघा-नक्षत्र पूर्ण हो तो चारोंही महीने बड़ा काल हो ॥२५५॥ दो प्रहर प्रथम पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र हो और आगे दो प्रहर उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र हो तो पहले दो महीने सुभिक्ष और सुख हो इसमे संदेह नहीं और पीछे के दो

ता पढमा दो मासा होइ सुभिक्खं सुहं न संदेहो ।
दो उवरि पुणो मासा सस्सविणासेण दुक्कालो ॥२५७॥
अह पंहरा अट्ठरा अद्दा जइ होइ उत्तरा जोगो ।
सस्साणं ता हाणी रसाण तह मिहुदव्वाणं ॥२५८॥

अथ द्वादशपूर्णिमाविचार —

चैत्रस्य पूर्णिमास्यां हि निर्मलं गगनं शुभम् ।
तद्दिने ग्रहणं तारा पातभूकम्पवृष्टय ॥२५९॥
रजोवृष्टिः परिवेषो विद्युत्केतूदयादिना ।
उत्पातेन च सङ्ग्राह्यं धान्यं धातुप्रपादित ॥२६०॥
विक्रये सप्तमे मासे भाद्र द्विगुणलाभदम् ।
वैशाख्यामीदृशे चिह्ने कार्पासस्य महर्घता ॥२६१॥
गोधूममुद्गमाषादेः सङ्ग्रहो लाभकारणम् ।
विक्रयाद्द्विगुणस्तेन मासे भाद्रपदे भवेत् ॥२६२॥
ज्येष्ठस्य पूर्णिमाऽनभ्रा शुभाय कथिता बुधैः ।

महीनेमें धान्यका विनाश होनेसे दुष्काल हो ॥२५६ ५७॥ आठ या चार पहर तक उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र हो तो धान्य रस घिव आदि द्रव्य इन का विनाश हो ॥२५८॥ इति फाल्गुनमास ॥

चैत्र मास की पूर्णिमा को आकाश निर्मल हो तो शुभ है यदि उस दिन ग्रहण हो, तारा का पात, भूकंप वृष्टि ॥२५९॥ रज (धूली) की वर्षा चंद्रमाका परिवेष (घेरा) बिजली चमक, और केतु का उदय, ऐसे उत्पात हो तो धातु आदि बेचकर धान्य का संग्रह करना उचित है ॥ २६० ॥ इस को भाद्रपद में या सातवें महीने बेचने से दुगना लाभ हो। वैशाख पूर्णिमा को भी ऐसे चिह्न हो तो कपास महँगा हो ॥२६१॥ गेहूँ मूंग उड़द आदि का संग्रह करनेसे लाभदायक है भाद्रपद में इन सबको बेचे ॥२६२॥ ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा स्वच्छ हो तो अच्छी है और वर्षा

वृष्टया वा परिवेषेण तस्यां धान्यस्य संग्रहः ॥२६३॥
तुर्ये मासेऽथवा पौषे लाभस्तस्याश्वविक्रयात् ।
आषाढी निर्मला नेष्टा वार्दलाच्छादिता शुभा ॥२६४॥
नैर्मल्याद्धान्यसङ्ग्राह्यं पञ्चमे मासि लाभदम् ।
श्रावणी निर्मला श्रेष्ठा साभ्रत्वे घृतसङ्ग्रहः ॥२६५॥
विक्रयाद् घृततैलादे-र्लाभो मासे तृतीयके ।
पूर्णा भाद्रपदे साभ्रा शुभा धान्यस्य विक्रयात् ॥२६६॥
आश्विनी निर्मला पूर्णा शुभाथ वार्दलोदये ।
संगृह्यधान्यं विक्रेयं द्वितीये मासि लाभदम् ॥२६७॥
कार्त्तिक्यां वार्दलबलाद् घृतधान्यादिसंग्रहः ।
विक्रयः पञ्चमे मासे चैत्रे या लाभदायकः ॥२६८॥
पूर्णिमा मार्गशीर्षस्य कार्त्तिकीव विभाव्यताम् ।
पौषी सवार्दला श्रेष्ठा धातुसंग्रहलाभदा ॥२६९॥

या परिवेष (घेरा) हो तो धान्यका सग्रह करना ॥२६३॥ चौथे या पौष मासमें उसको वेचनेसे लाभ होगा । आषाढ पूर्णिमा निर्मल हो तो अशुभ और बादलसे आच्छादित हो तो शुभ है ॥२६४॥ यदि निर्मल हो तो धान्य का सग्रह करने से पाचवें महीने लाभदायक हो । श्रावण पूर्णिमा निर्मल हो तो श्रेष्ठ है, और बादल सहित हो तो घी का सग्रह करना ॥२६५॥ घी और तेल तीसरे महीने वेचने से लाभ हो । भाद्रपद पूर्णिमा को बादल हो तो शुभ है, धान्यको वेच देना चाहिये ॥२६६॥ आश्विन पूर्णिमा निर्मल हो तो अच्छा है, यदि बादल सहित हो तो धान्य का संग्रह करे दूसरे महीने वेचे तो लाभ हो ॥२६७॥ कार्त्तिक पूर्णिमा बादल सहित हो तो घी और धान्य का सग्रह करना, पाचवें महीने या चैत्रमासमें वेचे तो लाभदायक हो ॥ २६८ ॥ मार्गशीर पूर्णिमा कार्त्तिक पूर्णिमाकी तरह विचार लेना । पौष पूर्णिमाको बादल हो तो श्रेष्ठ है धातुका संग्रहसे लाभ,

माघ्राया माघपूर्णायां धान्यसङ्ग्रहं इष्यते ।
विक्रयं सप्तमे मासे तस्य लाभाय सम्भवेत् ॥२७०॥
फाल्गुनी पूर्णिमा साभ्रा सवृष्टिका सगर्जिता ।
धान्यसङ्ग्रहणान्मासे सप्तमे लाभदायिनी ॥२७१॥

वर्षाविज्ञानम् —

चित्त अमावसि दिवहि सुरगुरुवारण चित्तसाइँहि ।
तह होइ चित्तवरिसा विसाहि अणुराह वइसाहा ॥२७२॥
जिट्ठा मूल जेट्ठे पूसा उसा य गुरु य आसाढे ।
सवण धणिट्ठा सयभिसि होइ तहा सावणे वरिसा ॥२७३॥
पूसा उसा य रवइ भद्दवमासे सुहाइ तह वरिसा ।
अस्सणि अस्सणि भरणीइ कत्तिय रोहिणी य कत्तिए ॥२७४॥

हो ॥ २६९ ॥ माघ मासकी पूर्णिमाको बादल हो तो धान्यका संग्रह करना, सातवें महीने बेचनेसे लाभ हो ॥ २७० ॥ फाल्गुन पूर्णिमा बादल वर्षा और गर्जना सहित हो तो धान्य का संग्रह करनेसे सातवें महीने लाभ हो ॥२७१॥ इति अष्टपूर्णिमा विचार ॥

चैत्र मास में अमावस के दिन या चित्रा या स्वाति नक्षत्र के दिन गुरुवार हो तो चित्र (अच्छी) वर्षा हो। इस तरह वैशाख में विशाखा या अनुराधा। ज्येष्ठ में ज्येष्ठा या मूल। आषाढ में पूर्वाषाढ़ा या उत्तराषाढ़ा। श्रावण में श्रवण धनिष्ठा या शतभिषा। भाद्रपद में पूर्वाभाद्रपद उत्तराभाद्रपद या रेवती। आश्विनमें अश्विनी या भरणी। कार्तिकमें कृत्तिका या रोहिणी। मार्गशीर्ष में मृगशीर्ष, आर्द्रा या पुनर्वसु। पौष में पुष्य या

टी—चौहाणमेघमालाद्युक्तम्—माही पुनिम निरमली जो सुरंगत कोरिद।
धन वैरी धान्य धर सामान्य लाभ स पतड ॥२॥
अन्यत्रापि—पूनिम माही निरमली अष्ट सुरंगा सद्भाव।
मिरा पुटर पावस दूवे अम ॥२॥ ॥३॥

मिग अद्दा य पुणव्वसु वट्टइ वरिसाओ मिगसिरमासे ।
पुस्स असलेस सुरगुरु वरिसा संभवइ तह पोसे ॥२७५॥
माहे महासु वरिसा पुप्फा उप्फाय हत्थिफग्गुणए ।
वरिसाए इय नाणं भणिय गणहारिहीरेण ॥२७६॥

गिरधरानन्देऽकालवर्षाफलम्--

पौषादिचतुरो मासान् वृष्टिः प्रोक्ता त्वकालजा ।
गर्भयोगं विना नेष्टा नूनं पशुपदाङ्किता ॥२७७॥
यावन्नाकालसम्भूतै-र्विद्युद्गर्जितवर्षणैः ।
त्रिविधैरपि चोत्पातै-र्वृष्टेरासप्तरात्रतः ॥२७८॥
पौषे दिनत्रयं वर्ज्यं माघे त्वात्ययिके द्वयम् ।
फाल्गुने दिनमेकं तु चैत्रे तु घटिकाद्वयम् ॥२७९॥

श्रीहीरसूरिकृतमेघमालायाम्--

माहाइ तिन्नि वासर फग्गुणादिणजुयलं चित्तदिणमेगं ।

श्लेषा । माघ में मघा । फाल्गुनमें पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी या हस्त इन प्रत्येक मास के नक्षत्र के दिन अथवा अमावस के दिन इत्यार हो तो वर्षा अच्छी हो । ऐसा ज्ञान जगद्गुरु गच्छाधिपति श्री हीरविजय सूरिने कहा है ॥२७२से२७६॥

पौष आदि चार महीनोंमें गर्भकारक योगोंके दिन को छोड़कर दूसरे समय पशुओं के चरण अंकित हो जाय ऐसी वर्षा हो तो अकाल वर्षा कही जाती है वह अनिष्टकारक है ॥२७७॥ बिजली गर्जना और वर्षा ये तीन प्रकार की वृष्टि के उत्पातोंसे सात रात्रि तक कुछ भी (शुभकार्य) न करे ॥२७८॥ पौषमें तीन दिन माघमें दो दिन, फाल्गुनमें एक दिन और चैत्रमें दो घड़ी वर्षा आदि उत्पात होनेके बाद त्याग है ॥२७९॥

माघमें तीन दिन, फाल्गुनमें दो दिन, चैत्रमें एक दिन, वैशाखमें दो

पहरदुग बइसाह जिट्ठेग पहर आसाढे ॥२८०॥
इत्थं तिथीनां कथिता यथार्हा,
कथा यथार्था वितथा न किञ्चित् ।
सम्यग्वरं वर्त्तनकं विमृश्य,
वर्षस्य वाच्यं सुधिया स्वरूपम् ॥२८१॥
इति श्रीमेघमहोदयसाधने वर्षप्रबोधे महोपाध्याय
श्रीमेघविजयगणिविरचिते तिथिफलकथनो
नाम नवमोऽधिकार ॥

अथ सूर्यचारकथनो नाम दशमोऽधिकार ।

सङ्क्रान्तिविचारफलम्—

अथादित्यगत्याधिगत्यास्वरूपं,
यथाप्राक्तनैर्व्यक्तपि स्वमत्या ।
तथा ब्रूमहे भूमहेशानतुष्ट्यै,
क्रमात् संक्रमात्रान्यधान्यादिवार्त्ताम् ॥१॥

प्रहर, ज्येष्ठमें एक प्रहर और आषाढमें अर्द्ध प्रहर इतने मासों में इतने स-मय ही वर्षा होकर रह जावे तो वह अकाल वर्षा कहीजाती है ॥२८० ॥

इसी प्रकार यथायोग कुछ भी असत्य नहीं ऐसी सत्य तिथियों की कथा कही। इसको अच्छी तरह विचार करके विद्वानों को वर्षका स्वरूप कहना चाहिये ॥ २८१ ॥

सौराष्ट्रराष्ट्रान्तर्गत पादलिप्तपुरनिवासिना पण्डितभगवानदासाख्यजैनेन विरचितया मेघमहोदये बालावबोधिन्याऽऽर्यभाषया टीकितो तिथिफलकथननाम नवमोऽधिकार ।

अब सूर्यकी गतिका क्रमसे वर्षका स्वरूप जैसा प्राचीन आचार्यों ने अपनी बुद्धिके अनुसार बनाया है वैसा सूर्य मेषादि राशि पर संक्रमसे उ-त्पन्न होनेवाले धान्य आदि का फलकथन राजाओं की प्रसन्नता के लिए

सङ्क्रान्तिसंज्ञावारफलम्—

घोरार्कवारे क्रूरर्क्षे ध्वांक्षीन्दौ क्षिप्रसंज्ञकैः ।
महोदरी चरैर्भौमे मैत्रे मन्दाकिनी बुधे ॥२॥
धिष्ण्यैर्ध्रुवैर्गुरौ मन्दा भृगौ मिश्रा तु मिश्रभैः ।
राक्षसी दारुणैर्मन्दे सङ्क्रान्तिः क्रमतो रवेः ॥३॥
...पान् छिजान् पशूनपि ।
...राद्या रविसंक्रमाः ॥४॥
...ाडा सोमे सुभिक्षता ।
...दु बुधे रसमहर्घता ॥५॥
...शुक्रे गजादिवाहनक्षयः ।
...ाल्पत्वं संक्रान्तौ वारजं फलम् ॥६॥

...क्रान्तिफलम्—

॥ १ ॥

क्रूरसंज्ञक नक्षत्र और रविवार को सूर्य सक्रांति हो तो घोरा नामकी सक्रांति कही जाती है । वैसे क्षिप्रसंज्ञक नक्षत्र और सोमवारको सक्रांति हो तो ध्वांक्षी । चरसंज्ञक नक्षत्र और मंगलवार को महोदरी नामकी सक्रांति। मैत्रसंज्ञक नक्षत्र और बुधवारको मन्दाकिनी नामकी सक्रांति होती है ॥२॥ ध्रुवसंज्ञकनक्षत्र और गुरुवारको मन्दा नामकी, मिश्रसंज्ञकनक्षत्र और शुक्रवार को मिश्रा, दारुणसंज्ञक नक्षत्र और शनिवार को राक्षसी नामक सक्रांति होती है ॥३॥ उपरोक्त घोरा आदि सूर्य सक्रांति अनुक्रमसे— शूद्र, वैश्य, चोर, राजा, ब्राह्मण, पशु और म्लेच्छ इनको सुखदायक होती है ॥४॥ सूर्यसक्रांति रविवारको हो तो रस और धान्य का कष्ट, सोमवारको हो तो सुभिक्ष, मंगलवारको हो तो गौ आदिको कष्ट, बुधवारको हो तो रस महँगे हो ॥ ५ ॥ गुरुवार को हो तो समस्त शुभ, शुक्रवार को हो तो हाथी आदि वाहनो का नाश और शनिवार को हो तो समस्त रसकी अल्पता हो ॥६॥

संक्रान्तिदिवसे चन्द्रा दुर्भिक्षायाग्निमण्डले ।
वायौ चन्द्रे चौरभय मथवा धान्यसंक्षय ॥७॥
माहेन्द्रमण्डले चन्द्रे महावर्षा प्रजारुज ।
वारुणे मण्डले चन्द्रे वृष्टिः क्षेम प्रजासुखम् ॥८॥

दिनरात्रिविभागेन संक्रान्तिफलम्—

पूर्वाह्ने नृपपीडायै मध्याह्ने द्विजजातिषु ।
वणिजामपराह्ने च सङ्क्रान्तिर्दुःखदायिनी ॥९॥
अस्तमार्गी च शूद्राणां गोपानामुदये रवे ।
लिङ्गिवर्गस्य सन्ध्यायां पिशाचाना प्रदोषके ॥१०॥
नक्तंचरेष्वर्द्धरात्रेऽपररात्रे नटादिषु ।
रोगमृत्युविनाशाय जायते रविसंक्रम ॥११॥

करणवशात् संक्रमफलम्—

सुखसंक्रमणं नागे तैतिले वा चतुष्पदे ।

सूर्य संक्रान्तिके दिन चन्द्रमा अग्निमण्डलमें हो तो दुर्भिक्ष, वायुमण्डल में हो तो चोरका भय या धान्यका विनाश हो ॥७॥ माहेन्द्र मंडल में चन्द्र हो तो बड़ी वर्षा हो और प्रजामें रोग हो। वारुणमंडलमें चंद्रमा हो तो अच्छी वर्षा, मंगल और प्रजा सुखी हो ॥८॥

दिनके पहले भागमें संक्रान्ति हो तो राजाओंको पीड़ा, मध्याह्नमें हो तो ब्राह्मणोंको और दिनके पिछला भाग में हो तो वैश्यों को दुःखदायक होती है ॥९॥ सूर्यास्त समय हो तो शूद्रोंको, सूर्योदयमें हो तो पशुपालक (गोपाल) को, संध्या समय हो तो लिङ्गीजन (पाखंडी) को और प्रदोष समय हो तो पिशाचोंको कष्ट करे ॥१०॥ अर्द्धरात्रिमें हो तो राक्षसों को और पीछली रात्रिमें हो तो नट आदिको रोग-मृत्यु विनाश करती है ॥११॥

नाग तैतिल और चतुष्पद करण में सुख संक्रान्ति है। वणिज, वृषि, बालव गर और वव करणमें बैठी संक्रान्ति होती है। शकुनि किंस्तुघ्न

निविष्टो वाणिजे विष्ट्यां बालवे वा गरे बवे ॥१२॥
ऊर्ध्वस्थितः स्याच्छकुनौ किंस्तुघ्ने कौलवे रविः ।
जघन्यमध्योत्कृष्टत्वं धान्यार्थवृष्टिषु क्रमात् ॥१३॥

संक्रान्तिमुहूर्त्तविचार —

भेषु क्षणान् पञ्चदशैन्द्ररौद्र-
वायव्यसार्पान्तकवारुणेषु ।
त्रिघ्नान् विशाखादितिभध्रुवेषु,
शेषेषु तु त्रिंशतमामनन्ति ॥१४॥
हीने मुहूर्त्तभे हीनं समं साम्येऽधिकेऽधिकम् ।
संक्रान्तिदिनभं ज्ञात्वा बुधो वक्ति शुभाशुभम् ॥१५॥
मृगकर्काजगोमीन-संक्रान्तिर्निशि सौख्यदा ।
शेषाः सप्तदिने श्रेष्ठा अशुभाय विपर्ययः ॥१६॥

करण में रवि हो तो ऊर्ध्व (खडी) संक्राति होती हैं ये तीन प्रकार की संक्राति अनुक्रम से जघन्य मध्यम और उत्तम है, ये धान्य मूल्य वर्षा के लिये फलदायक है ॥१२-१३॥

ज्येष्ठा, आर्द्रा, स्वाति, आश्लेषा, भरणी और शतभिषा ये छह नक्षत्र पंद्रह मुहूर्तवाले है । विशाखा, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा और रोहिणी ये छह नक्षत्र ४५ पैंतालीस मुहूर्त्तवाले हैं, और बाकी के- अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिर, पुष्य, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूल, पूर्वाषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपदा और रेवती ये पंद्रह नक्षत्र तीस ३० मुहूर्त्तवाले हैं ॥ १४ ॥ हीन याने पंद्रह मुहूर्त्तवाले नक्षत्रों में हीन, समान मुहूर्तवाले नक्षत्रोंमे समान और अधिक मुहूर्तवाले नक्षत्रोंमें अधिक ऐसा संक्राति दिनके नक्षत्रको जानकर पंडित शुभाशुभको कहें ॥ १५ ॥ मकर, कर्क, मेष, वृष और मीन ये पांच संक्राति रात्रि मे हो तो सुखदायक हैं और बाकी सात संक्राति दिनमें हो तो श्रेष्ठ

संक्रान्तिर्जायते यत्र भास्करारशनैश्चरे ।
तस्मिन्मासे भयं घोरं दुर्भिक्षं वृष्टिचौरजम् ॥१७॥
ऊर्ध्वस्थिता सुभिक्षं करोति मध्यं फलं निविष्टस्तु ।
शायिना भानुरवृष्टिं दुर्भिक्षं तस्करभयं च ॥१८॥

संक्रान्तीनां वाहनादीनि—

सिंहव्याघ्रौ शूकरखरगजमहिषा ह्याश्वमेषवृषा ।
कुक्कुट एवं वाहनमर्कस्य बवादिकरणवशात् ॥१९॥
मतान्तर—गजा वाजी वृषो मेषो खरोष्ट्रसिंहवाहना ।
भानोर्बवादिकरणे ज्ञेयं शाकटवाहनं ॥२०॥
सितपीतनीलपाण्डुर-रक्ताभितधवलचित्रकम्बलधर ।
कम्पस्तवान् नमाऽकः कृष्णांशुकमृदुवादी स्यात् ॥२१॥

है परन्तु इससे विपरीत हो तो अशुभ जानना ॥१६॥ रवि, मंगल और शनिवार को संक्रान्ति हो तो उस महीनेमें चोरोंसे भय और वर्षासे दुर्भिक्ष हो ॥१७॥ ऊर्ध्व स्थित (खड़ी) संक्रान्ति सुभिक्ष करती है। बैठी संक्रान्ति मध्यम फलदायक है और सुप्त संक्रान्ति अनावृष्टि दुर्भिक्ष और चोरों का भयदायक है ॥१८॥

बवादि सात चरकरण और शकुनि आदि चार स्थिरकरण ये ग्यारह करणके क्रमसे संक्रान्तिके वाहन वस्त्र आयुध भिक्षपात्र आयुध, जाति पुष्प आदि अनुक्रमसे जानना चाहिए।

संक्रान्ति वाहन — सिंह व्याघ्र वराह गर्दभ हाथी, भैंसा घोड़ा, कुत्ता बकरा वृष (बैल) मुरगा ये ग्यारह वाहन हैं ॥ १९ ॥ मतान्तर से हाथी घोड़ा बैल बकरा गर्दभ ऊंट सिंह और बाकी के करणों में शकट (गाड़ी) का वाहन है ॥२० ॥

संक्रान्ति वस्त्र— श्वेत पीला हरा पाण्डुर लाल श्याम काला रंगबिरंगे, कम्बल नग्न और घनवर्ण ये ग्यारह वस्त्र हैं ॥२१॥

ओदनपायसभैक्षक-पक्कानं दुग्धदधिविचित्रान्नम् ।
गुडमधुरसखण्डानां भक्ष्याणि रवेर्बवादौ स्युः ॥२२॥
कस्तूरीकाश्मीरजचन्दनमृद्रोचनाख्यालक्तरसः ।
जवादि (रस) निशाकज्जलकृष्णागुरुचन्द्रलेपोऽर्के ॥२३॥
भृकुण्डीगदाखड्गदण्डं धनुश्च, रवेस्तोमरः कुन्तपाशांकुशास्त्रम्।
असिर्बाण एवं बवाद्यायुधानि, क्रमात्संक्रमस्याहि बोध्यानि धीरैः
देवनागभूतपक्षिपशवो मृगसूकराः (भूसुराः) ।
राजन्यवैश्यशूद्राख्या जातयो वर्णसङ्करः ॥२५॥
पुन्नागजातीफलकेसराख्यः,
श्रीकेतकं दौर्विकमर्कबिल्वे ।
स्यान्मालतीपाटलिका जपा च,
जातिः क्रमात् संक्रमणेऽर्कः पुष्पम् ॥२६॥
ग्रन्थान्तरे तु-विष्ट्यां चतुष्पदे व्याघ्रे महिषे नागतैतिले ।

सक्रांति भोजन- भात, पायस (दूध की मीठाई), भिक्षा (घर २ भिक्षा मागना), पक्वान्न (मालपूआ आदि), दूध, दही, विचित्र अन्न, गुड, मधु, घी और सक्कर ये ग्यारह भोजन है ॥२२॥

सक्रांति विलेपन- कस्तूरी, कुंकुम, चदन, मट्टी, गोरोचन, अलक्त रस, मार्जारमद, हलदर, कज्जल, कालागुरु और कर्पूर ये ग्यारह विलेपन हैं॥ २३ ॥

सक्रांतिके आयुध- भृशुंडी, गदा, खड्ग, दंड, धनुष, तोमर, कुंत, पाश, अकुश, तलवार, और बाण ये ग्यारह शस्त्र है ॥२४॥

सक्रांति जाति- देव, नाग, भूत, पक्षी, मृग, शूकर क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, और वर्णसकर ये ग्यारह जाति हैं ॥२५॥

सक्रांति पुष्प- नागकेसर, जायफल, केसर, कमल, केतकी, दूर्वा, अर्क, बिला, मालती पाटलि, और जपा ये ग्यारह पुष्प हैं ॥ २६ ॥

पत्रे गरे गजास्त्वा वालवे वणिजे वृषे ॥२७॥
किंस्तुघ्ने शकुनी जाता कौलवे करणे तथा।
'भास्वानश्वाधिरूढ' स्यात् तमसामुपशामने ॥२८॥

संक्रान्तिफलम्—

गजे स्वस्था मही मेघै-र्महिषे मृत्युमादिशेत् ।
अश्वारोहे महायुद्ध वृषभे बहुधान्यता ॥२९॥
सिंहे महर्घमन्नं स्याद्देशे चौरभयं महत् ।
एवं वस्त्राद्या भावा भावनीया दिशाऽनया ॥३०॥

त्रैलोक्यदीपके–वार चतुर्थे यदि पञ्चमे वा,
धिष्ण्ये तृतीये यदि पञ्चमे वा ।
पूर्वक्रमात् संक्रमते घटार्क-
स्तदा च दौस्थ्यं नृपविड्वरं च ॥३१॥

संक्रान्तिधिष्ण्याधादि षष्ठसंख्ये,जायेत धिष्ण्ये रविसंक्रमश्चेत् ।
तदापि दौस्थ्यं नृपविड्वरश्च, त्रिभागतुच्छा भवतीह भूमिः ॥

भावार्थ– विष्टि और चतुष्पद करणमें व्याघ्र नाग और तैतिल करणमें महिष पत्र और गर करण में हाथी बालव और वणिज करण में वृष ये वाहन हैं ॥ २७ ॥ किंस्तुघ्न शकुनि तथा कौलव करणमें अंधकार को नाश करने वाले सूर्यका अश्व वाहन है ॥२८॥

संक्रांति का हाथी वाहन हो तो पृथ्वी वर्षा से सुखमय हो। महिष वाहन हो तो मरण, घोड़े का वाहन हो तो बड़ा युद्ध वृषभ वाहन हो तो धान्य बहुत ॥२९॥ सिंह वाहनसे अनाज महँगे हो और देशमें चोर का बड़ा भय हो। इसी तरह वस्त्र आदिका भी विचार कर लेना ॥३ ॥

प्रथम सूर्य संक्रान्तिसे दूसरी सूर्य संक्रान्ति यदि चौथा या पांचवां वार में तथा तीसरा या पांचवा नक्षत्र में प्रवेश हो तो दुःख और राजाओं का विग्रह हो ॥३१॥ छट्ठे नक्षत्रमें संक्रमण हो तो भी दुःख और राजाओं का

तुर्ये धिष्ण्ये च पूर्वस्माद् यदि वारे तृतीयके।
संक्रमो निशि सूर्यस्य सुभिक्षं स्यात् तदोत्तमम् ॥३३॥
लोके तु–जिणवारे रविसंक्रमे, तिणथी चउथे वार।
अशुभ फेडी शुभ करे, जोसी खरुं विचार ॥३४॥
पांचा होइ करवरो, तिहु रस सुहघो होय।
जो आवे दो छठडे, पृथिवी परलय जोय ॥३५॥
बीजे त्रीजे पांचमे, रवि संचारो होय।
खप्पर हत्थी जग भमे, जीवे विरलो कोय ॥३६॥
सूर्यस्यान्यग्रहाणां वा गुरुभेऽभ्युदयास्तकौ।
शशिदृष्टौ सुभिक्षं स्याद् दुर्भिक्षं लघुभे पुनः ॥३७॥
तिथिदिनोडुलग्नाना-माद्यकशाटे रविस्थितौ।
सुभिक्षं जायतेऽवश्यं दुर्भिक्षं तु त्रिकण्टके ॥३८॥

विप्लव हो और पृथ्वीपर मनुष्य तृतीयांश रह जाय ॥३२॥ यदि चौथा नक्षत्र और तीसरा वारमें रात्रिके समय सूर्यसक्रान्ति हो तो अच्छा सुभिक्ष हो ॥३३॥ लोक भाषामें बोलते है कि—जिस वारमें पूर्वकी सक्रांति हो उससे चौथे वारमें यदि दूसरी सक्रांति हो तो अशुभ को दूर करके शुभ फल करें ॥ ३४ ॥ यदि पाचवा वारमें प्रवेश हो तो करवरा हो। तीसरे वारमें प्रवेश हो तो रस महँगा हो। छट्ठे वारमें प्रवेश हो तो पृथ्वी प्रलय हो याने बहुत से प्राणी मृत्यु प्राप्त हो ॥ ३५ ॥ दूसरे तीसरे या पाचवे वार में सूर्यसक्राति हो तो मनुष्य भीक्षा के लिये खप्पड लेकर भ्रमे याने बड़ा दुष्काल हो जिससे बहुतसे प्राणियोका विनाश हो ॥३६॥ सूर्य या दूसरे ग्रह गुरु (बृहत्) नक्षत्र पर उदय हो या अस्त हो और उस पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो सुभिक्ष होता है और लघुसज्ञक नक्षत्र पर हो तो दुर्भिक्ष होता है ॥ ३७ ॥ तिथि वार नक्षत्र और लग्न इनके आद्य भागमे सूर्य स्थित हो तो सुभिक्ष होता है और अन्त्यभागमें हो तो दुर्भिक्ष हो ॥

मित्रस्वोच्चस्वस्य शुभदृष्टयुतो रविः ।
पूर्वचन्द्रे महाधिष्ण्ये पूर्वसंक्रान्तितुर्यके ॥३९॥
तृतीयवारसम्पद्द् सुभिक्ष क्षेमदं स्मृतम् ।
सूर्येऽरिमे युतो दृष्टो विद्धः क्रूरैस्तु नीचगः ॥४०॥

अघकाण्डे—

संक्रान्तिनक्षत्रमथमेव वेदे, सौख्यं सुभिक्षं भवतीह भावात् ।
मध्यं हि साम्यं रसउजेषु कुर्याद्, दुर्भिक्षपीडा बाणुबाणभे च ॥४१॥
तुच्छ मुहूर्तसंक्रान्ते पूर्वस्मात् त्रिकपञ्चके* ।

३८ ॥ मित्रराशि का, अपनी राशि का, या उच्च राशि का सूर्य शुभग्रह से दृष्ट हो या युक्त हो और पूर्व संक्रान्ति के चन्द्र नक्षत्र से चौथे नक्षत्रमें और तीसरे वारमें संक्रमण हो तो सुभिक्ष और कल्याण करनेवाला होता है । यदि सूर्य उस समय युक्त हो शत्रुकी राशिका हो क्रूर ग्रहों से दृष्ट युक्त या वेधित हो या नीचका हो तो अशुभ होता है ॥३९ ४ ॥

पूर्व संक्रान्तिके नक्षत्रसे दूसरी संक्रान्ति दूसरे या चौथे नक्षत्रमें हो तो सुख और सुभिक्ष होता है । तीसरे नक्षत्रमें मध्यम सुख पांचवें या छठे नक्षत्रमें हो तो दुर्भिक्ष और दुःख हो ॥४१॥ पन्द्रह मुहूर्तकी संक्रान्ति हो परंतु पूर्वकी संक्रान्तिसे तीन या पांच नक्षत्र को तो धान्य कि सस्ते हो ।

*—[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] साम्ययोगे शुभा । [illegible] ऽशुभा [illegible] ।

* देखो मेरा अनुवादित श्री हेमप्रभसूरिकृत त्रैलोक्यप्रकाश—

[illegible] ।
[illegible] ॥१॥
[illegible] ।
[illegible] ॥२॥

[illegible] अश्विनी आदि तीन नक्षत्र के [illegible] नक्षत्रकी [illegible] कही है । [illegible] आदि [illegible] नक्षत्र और

समर्घमथ दुर्भिक्षं चित्राद्यष्टसु दुःखदम् ॥४२॥
कर्णादौ धिष्ण्यदशके सुभिक्षं सततं भवेत् ।
अमावास्या हि नक्षत्रं विमृश्य फलमादिशेत् ॥४३॥
संक्रान्तेः सप्तमे चन्द्रे कर्त्तव्यो धान्यसङ्ग्रहः ।
द्विमास्यां द्विगुणो लाभ-स्तदूर्ध्वं च विनश्यति ॥४४॥
बृहदृक्षेषु जायन्ते द्वादशाप्यत्र संक्रमाः ।
तत्र वर्षे समग्रेऽपि शुभकालो भवेद् ध्रुवम् ॥४५॥
ऊर्ध्वे संक्रमणे मित्रे शुभयुक्ते च पूर्वकात् ।
त्रिवारे सूर्यके धिष्ण्ये बृहदृक्षेऽर्कसंक्रमः ॥४६॥
यदा भवेत् तदा वाच्यं सुभिक्षं सततं क्षितौ ।
रात्रौ सुप्ते च सक्रूरे पापविद्धेक्षितेऽपि वा ॥४७॥
पूर्वात् तृतीयपञ्चर्क्षे लघुभे यदि संक्रमः ।
तदा भवेन्महल्लोके दुर्भिक्षं कष्टकारकम् ॥४८॥

चित्रादि आठ नक्षत्रोंमे संक्रमण हो तो दुर्भिक्ष हो ॥४२॥ और श्रवणादि दश नक्षत्रों में संक्रमण हो तो हमेशा सुभिक्ष होता है ॥४३॥ संक्राति से चन्द्रमा सातवा हो तो धान्यका संग्रह करना चाहिये, दो महीने दूगुना लाभ हो और सातवेंसे अधिक हो तो धान्यका विनाश हो ॥४४॥ यदि बारोंही सूर्यसंक्रान्तियें जिस वर्ष में बृहत्संज्ञक नक्षत्रो में संक्रमण हो तो उस वर्ष में निश्चयसे सुभिक्ष होता है ॥४५॥ ऊर्ध्वसंज्ञक संक्रातिमे सूर्य शुभ ग्रहसे युक्त हो तथा पूर्वकी संक्रातिसे तीसरा या पाचवा बृहत्संज्ञक नक्षत्रमें संक्रमण हो ॥४६॥ तो पृथ्वी पर निरंतर सुभिक्ष होता है। रात्रि मे सुप्त संक्राति क्रूर ग्रहसे युक्त हो, वेधित हो या दृष्ट हो ॥४७॥ तथा प्रथम संक्रातिसे तीसरा पाचवा लघुसंज्ञक नक्षत्र में संक्रमण हो तो जगत में दुःख देनेवाला ऐसा दुर्भिक्ष

धनिष्ठा आदि पाच नक्षत्र ये पंद्रह नक्षत्रोंकी पंचकसंज्ञा कही है। यह वस्तुओंका अर्घ (मूल्य) का निर्णय के लिये बहुत उपयोगी है।

मत्स्ये मिथुनं तुम्बुरुनिरते संस्थम ।
अर्पमाणं सदा सान्न गुणसंज्ञाभिलषभृतः ॥४०॥
सदा धनुषि मानवः संज्ञामपि सदा विभु ।
निम्नावयव पृष्ठदिग्गत किं मत्स किं जपम्राव ॥४०॥
उत्तमर्थे तुमिथे स्यामत्यय समता मता ।
जपापु महर्गि स्यादप संज्ञमगात पत्नम् ॥४१॥
मद्यां गामि मजाद्या विधा समसतानिग ।
त्रिमचक्रस्यातागमालिमालास्ता मपाद्गत् ॥४२॥
मत्र दर्शा तुलायाद् पयामत भाग्यामद ।
तृतीय तृभिर पादमुगमास तत्मामद् ॥४३॥
मिथुनर्क धनुभक्तिभिर्वगाणमद्राग ।
मार्गशर्तुभिशाभाग मद्राहास पिण्डयम ॥ ४४॥

[illegible] ॥ ४२ ॥ [illegible] (४२ ६१) [illegible] तृ मेष का [illegible] [illegible] मकर भाग [illegible] ॥४३॥ [illegible] का [illegible] करना चाहिये कि पुर [illegible] ॥४ [illegible] ॥ यदि पूर्वोक्त [illegible] (अगस्त) और [illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible] मीन [illegible] तीन [illegible] और [illegible] ॥४४॥

मकरी [illegible] तुलाका [illegible] लाभ [illegible] लाभ हो । [illegible] वृश्चिक [illegible] लाभ हो ॥४४॥ मिथुन [illegible] लाभ हो, [illegible] लाभ न हो ॥४४॥ [illegible] का [illegible] हो तो

कर्केऽर्के मकरे चन्द्रो दुर्भिक्षं कुरुते जने।
घोरं यावच्चतुर्मासी दासीकृतधनेश्वरः ॥५५॥
षण्मासाद्द्विगुणो लाभः सिंहेऽर्के कुम्भचन्द्रतः।
मीनेन्दुर्वक्ति कन्यार्के छत्रभङ्गं च विग्रहम् ॥५६॥
तुलार्के चन्द्रमा मेषे पञ्चमे मासि लाभदः।
वृश्चिकेऽर्के वृषे चन्द्रे तिलतैलान्नसङ्ग्रहः ॥५७॥
प्रदत्ते द्विगुणं लाभं धान्यं मासद्वयान्तरे।
मिथुनेन्दुर्धनुष्यर्के पञ्चमासान्नलाभदः ॥५८॥
कर्पासघृतसूत्रादेः पञ्चमे मासि लाभदः।
मृगेऽर्के कर्कशीतांशुः पांसुलानां विनाशकः ॥५९॥
सिंहेन्दुः कुम्भभानौ चेत् तुर्ये मासेऽन्नलाभदः।
*कन्याचन्द्रोऽपि मीनेऽर्के तादृशो धान्यसङ्ग्रहात् ॥६०॥
यद्दिने यार्कसङ्क्रान्तिस्तद्राशौ तद्दिने शशी।

चार महीने तक लोकमे दुर्भिक्ष करे धनवान् भी दासीभाव धारण करे ॥ ५५ ॥ सिंहसंक्रांतिको कुंभका चन्द्रमा हो तो छह महीने दूना लाभ हो। कन्यासंक्रांतिको मीनका चन्द्रमा हो तो छत्रभंग और विग्रह हो ॥ ५६ ॥ तुलासंक्रांतिको मेषका चन्द्रमा हो तो पांचवें महीने लाभ हो। वृश्चिकसंक्रांतिको वृषका चन्द्रमा हो तो तिल तेल तथा अन्नका संग्रह करना उचित है ॥ ५७ ॥ इससे दो महीने बाद दूना लाभ हो। धनसंक्रांतिको मिथुनका चन्द्रमा हो तो पांचवे महीनेमें अन्नसे लाभ हो ॥ ५८ ॥ और कपास, घी, सूत आदि से पांचवें महीने लाभ हो। मकरसंक्रांतिको कर्कका चन्द्रमा हो तो कुलटाओंका विनाश हो ॥ ५९ ॥ कुंभसंक्रांतिको सिंहका चन्द्रमा हो तो चौथे महीने अन्नमें लाभ हो। मीनकी संक्रांतिको कन्याका चन्द्रमा हो तो धान्यका संग्रह करना चाहिये ॥ ६० ॥

*टी-कन्या मीनेस्याद्यदिचन्द्रमा। सर्वधान्यसंग्रहेण लाभः पञ्चगुणः क्रमात् ॥१॥

जन्मर्क्षभावर्यं नेष्टः श्रेष्ठः स्वसुहृदा गृहे ॥६१॥
यस्मिन् वारेऽस्ति संक्रान्तिस्तस्मिन्नेवामावसी तिथिः ।
साके खर्परयोगोऽयं जीवधान्यादिनाशकः ॥६२॥
शनिः स्यादाद्यसंक्रान्तौ द्वितीयायां प्रभाकरः ।
तृतीयायां कुजे योग खर्पराख्योऽतिकष्टकृत् ॥६३॥
स्यात् कार्तिके वृश्चिकसंक्रमाहे,
सूर्ये महर्घं भुवि शुक्लवस्तु ।
म्लेच्छेषु रोगात् मरणाय मन्दः,
कुजः परं धान्यरससंग्रहाय ॥६४॥
लाभस्तु तस्य त्रिगुणस्त्रिमास्यां,
बुधे च पूगादिफलं महर्घम् ।
गुरौ च शुक्रे तिलतैलसूत्र-
कर्पासरुन्नादिमहर्घता स्यात् ॥६५॥

जिस दिन सूर्यसंक्रांति हो उस दिन उसी राशि पर चन्द्रमा हो यानि कोई भी संक्रांतिके दिन सूर्य और चन्द्रमा एक ही राशि पर हो तो जन्म वेध होता है यह अनिष्ट है और मित्रगृहमें हो तो श्रेष्ठ होता है ॥ ६१ ॥ जिस वार की संक्रांति हो उसी वार को अमावस भी हो तो साक में खर्पर योग होता है यह प्राणी और धान्य आदिका नाश करता है ॥६२॥ यदि प्रथम संक्रांति को शनिवार दूसरी को रविवार और तीसरी को मंगलवार हो तो खर्पर योग होता है यह बहुत कष्टदायक होता है ॥६३॥ यदि कार्तिक मासमें वृश्चिकसंक्रांति रविवार को हो तो श्वेत वस्तु महँगी हो। शनिवार को हो तो म्लेच्छोंमें रोगसे मरण हो, मंगलवार को हो तो धान्य और रसका संग्रह करना ॥६४॥ इससे तीन महीने त्रिगुना लाभ हो। बुधवार को हो तो पूगीफल (सुपारी) आदि महँगे होंगे। गुरुवार और शुक्रवार को हो तो तिल तेल सूत कपास रुई आदि महँगे

सोमे सर्वजने सौख्यं सन्धिः सर्वत्र भूभुजाम् ।
तद्वारग्रहवेधेऽल्प-मध्योत्कृष्टफलोदयः ॥६६॥
धनुषि तरणिभोगे मार्गशीर्षेऽर्कभौमौ,
शनिरपि यदि वारश्चौडकर्णाटगौडाः ।
सुरगिरिमलयान्ता मालवास्तेषु राज्ञां,
रणमरणविशेषाद् विग्रहाय त्रयोऽमी ॥६७॥
कर्पाससूत्रादितिलाज्यतैल-
महर्घता लाभदशासुवर्णात् ।
शैत्यप्रवृद्धिर्भुवि सोमवारे,
किञ्चिद्विनाशोऽप्यत एव धान्ये ॥६८॥
बुधे गुरौ वान्नसमर्घता स्या-
च्छुक्रे पुनर्म्लेच्छजनप्रमोदः ।
पौषे मृगेऽर्कः शनिना भयाय,
प्रभाकृता क्षत्रकुलक्षयाय ॥६९॥
बुधान् मुधा युद्धमुशन्ति बुधा-

हो ॥६५॥ सोमवारकी हो तो समस्त मनुष्योंमें सुख हो और राजाओं में सब जगह संधि हो । इस संक्रान्तिके वारको ग्रहवेध होनेसे जघन्य मध्यम और उत्कृष्ट फल होता है ॥६६॥ यदि मार्गशीर्ष मास में धनसंक्रान्ति को रवि मंगल या शनिवार हो तो चौड, कर्णाट, गौड, देवगिरि, मलय, मालवा आदि देशोंके राजाओंमें युद्ध मरण और विग्रह ये तीनों हों ॥६७॥ कपास, सूत, तिल, तेल, घी आदि तेज हो तथा सोना से लाभ हो । सोमवार हो तो पृथ्वीपर शीतकी वृद्धि हो इससे धान्यमें कुछ विनाश हो ॥६८॥ बुध या गुरुवार हो तो अनाज सस्ते हों शुक्रवार हो तो म्लेच्छलोगोंको आनन्द हो यदि पौष मासमें मकरसंक्रांति को शनिवार हो तो भय हो । रविवार हो तो क्षत्रिय कुलका नाश हो ॥६९॥ बुधवार हो तो विना कारण युद्ध हो ऐसे पण्डि-

गुरौ विरामं मकरे हिमास्याम् ।
युगन्धरीचणकमसूरधान्ये,
हिमाद्विनाशश्चणकेऽपि सामे ॥७०॥
देवे गुरौ भार्गव एव शुक्र,
माघेऽपि कुम्भे दिनकृत्प्रसङ्गे ।
पृथ्वीभयं विग्रह एव घोर-
मनुष्यदानामतिशायि कष्टम् ॥७१॥
तथा वृषभसङ्ग्रहो महिषविक्रयो वा शनौ,
रणे स्वपरमारया क्षितिपतिमहान्मङ्गले ।
रवावपि तथा कथा गुरुबुधेन्दुशुक्रागमात्,
समानविषमा क्वचित् सकललोकनिश्चिन्तता ॥७२॥
कुलत्थमाषमुद्गानां विक्रयस्तुवरीस्तथा ।
युगन्धरीमसूराद्याः समर्घा देशसुस्थता ॥७३॥
घृतकर्पासतैलादि गुडखण्डेक्षुशर्करा ।
सङ्ग्रहाद्द्विगुणो लाभस्तेषां मासत्रये गते ॥७४॥

संग्रह करते हैं । गुरुवार हो तो मकर कुम्भ में विरोध हो । सोमवार हो तो दो महीनेमें युगंधरी (जुवार) चावल मसूर धान्य और चने इनका हिम से विनाश हो ॥ ७० ॥ माघ मासमें कुंभसंक्रांति का गुरु या शुक्रवार हो तो पृथ्वीमें भय घोर विग्रह और पशुओंका कष्ट हो ॥ ७१ ॥ शनिवार हो तो वृषभ का संग्रह करना और महिषका बेचना, मंगलवार तथा रविवार हो तो राजाओंमें अन्योऽन्य घोर युद्ध हो । गुरु बुध चंद्रमा या शुक्रवार हो तो कहिंक् समान या विषम रहें, समस्त लोक शोक (चिन्ता) रहित हो ॥ ७२ ॥ कुलथी उडद मूंगका बेच देना चाहिये, तूवरी युगंधरी (जुवार) मसूर आदि सस्ते हो देश सुखी हो ॥ ७३ ॥ घी कपास तेल गुड खांड ईख सक्कर आदिका संग्रह करनेसे दो महीने बाद

मीनेऽर्के सति फाल्गुने शनिवशात् सामुद्रिकार्थक्षयो,
भौमे हेम्नि सलाभता रणनटाः सूर्ये भटा निष्ठिताः।
तैलाज्यादिरसा महर्घविवसाश्चन्द्रे जनानां सुखं,
शुक्रे चन्द्रसुते सुभिक्षमतुलं रोगप्रयोगो गुरौ ॥७५॥
चैत्रे मेषरवौ तथा क्षितिसुते मन्दे महर्घस्थिति-
र्गोधूमे चणके तथैव शशिना कार्पासतैलादिषु ।
जीवः क्षत्रियजीवनाशनकरः शुक्रोऽथवा चन्द्रजः,
सर्वं वस्तुमहर्घमेव कुरुते वैवाहसोत्साहताम् ॥७६॥
लोके तु–चैत किसन जोड़न भङ्गुली, चार दिसा वारु निरमली।
मीन अर्क सनिवारे होइ, तेरसि दिन तो जीवे कोई ॥७७॥
वैशाखे वृषसंक्रमे शनिकुजादित्यादिदुर्भिक्षदा,
देशे क्लेशरुचिर्महर्घविधया प्राप्या न गोधूमकाः।

दूना लाभ हो ॥ ७४ ॥

फाल्गुन मासमें मीनकी संक्रांति शनिवारको हो तो समुद्र से उत्पन्न होनेवाली या समुद्र में आने जानेवाली वस्तुओं में लाभ न हो । मंगलवार को हो तो सुवर्ण से लाभ हो । रविवार को हो तो योद्धाओं में वीरता हो और तेल घी आदि रस महँगे हो। सोमवारको हो तो मनुष्योंको सुख हो। शुक्र या बुधवार को हो तो बहुत सुभिक्ष हो और गुरुवारको हो तो रोग हो ॥७५॥ चैत्र मासमें मेषसंक्रान्तिको मंगल या शनिवार हो तो गेहूँ चने का भाव तेज हो । सोमवारको हो तो कपास तेल आदि तेज हो । बृहस्पति हो तो क्षत्रिय और प्राणियों का नाशकारक है । शुक्र या बुधवार हो तो समस्त वस्तु महँगी हो और विवाह महोत्सव अधिक हो ॥ ७६ ॥ चैत्र कृष्णपक्षमें चारोंही दिशा निर्मल न हो और मीनसंक्रांति शनिवारको तेरस के दिन हो तो महामारी या दुष्काल हो ॥ ७७ ॥ वैशाखमें वृषसंक्रांतिको शनि मंगल या रविवार हो तो दुर्भिक्ष हो, देश में क्लेश हो, महँगाई के

कपासे फलवस्तुनीक्षुरसजे माञ्जिष्ठकेऽस्यार्घ्यर्,
सोमे धान्यसमर्घता कविगुरुज्ञेषु प्रिया स्यू रसा ॥७८॥
ज्येष्ठे चौमिथुनार्कगे ऽनिकुजादित्येषु पापाशया,
रोगाऽग्निस्खलनादिज भयमपि धान्या महर्घा कृषा ।
सन्तुष्टा वसुधा सुधाकरसुत वस्तु प्रिय स्निग्धजं,
दुर्भिक्ष शशिजार्यभार्गवफलात् मासत्रिक सूचनम् ।७९।
आषाढे कर्कसङ्क्रान्तौ भूरवारऽनिवष्याम् ।
क्षत्रियाणां क्षयाऽन्योऽन्यं गुरौ तु प्रबलोऽनिल ॥८०॥
सोमे सौम्ये तथा शुक्रे जलस्नातं सुखसत्तलम् ।
धान्य समर्घमायाति परदेशाज्जने सुखम् ॥८१॥
सिंहेऽर्के भाद्रपदे भौमे शनौ वा बहुवृष्टये ।
तुच्छधान्यविनाशाय वायुपीडाकरा रवौ ॥८२॥
समर्घमाज्य वर्षेऽस्मे गुडतैलमहर्घता ।

कारण गेहूँ दुर्लभ हो। कपास फल वस्तु इक्षुरस के पदार्थ, मंजीठ ये तेज हो। सोमवार हो तो धान्य सस्ते हो। शुक्र गुरु या बुधवार हो तो अच्छे मधुर रस उत्पन्न हों ॥७८॥ ज्येष्ठमासमें मिथुनसंक्रांति शनि मंगल या रविवारको हो तो पापकारक रोग हो अग्निका भय और प्राय: धान्य भाव तेज हो। बुधवारको हो तो पृथ्वी संतुष्ट हो तथा स्निग्ध उत्पन्न होनेवाली वस्तुका भाव ए हो। चंद्रमा बृहस्पति या शुक्रवार को हो तो मध्यम दुर्भिक्षका सूचन है ॥७९॥ आषाढ मास में कर्कसंक्रांति मू वारकी हो तो अनिष्ट वर्षा हो क्षत्रियों का परस्पर क्षय हो। गुरुवारको हो तो प्रबल पवन चलें ॥८० ॥ सोम बुध या शुक्रवार हो तो वर्षा अच्छी हो धान्य सस्ते हो और परदेश से लोगों को सुख हो ॥८१॥ भाद्रपदमास मे सिंहसंक्रांति मंगल या शनिवार की हो तो बहुत वर्षा हो और तुच्छ धान्यका नाश हो। रविवारकी हो तो वायुका उपद्रव हो ॥८२॥ गुरुवारकी हो तो घी सस्ते हो और गुड तेल

सोमे शुक्रे बुधे छत्र-भङ्गकृल्लोकतोषदः ॥८३॥
कन्यार्कनो भाद्रपदेऽल्पवृष्टिः,
शनेर्जने स्याद् बहुधान्यनाशः ।
कुजाद्रुजाद्या बहुधेतयो वा,
वृष्टिस्तदाल्पातिमहर्घताम्ने ॥८४॥
जीवेन्दुशुक्रज्ञपराक्रमेण,
क्रमेण सौख्यं न बहुश्रमेण ।
असमुद्रसामुद्रकभूपयुद्ध,
किञ्चिद्विनाशोऽपि च पश्चिमायाम् ॥८५॥
आश्विने रवितुलाधिरोहिणे भास्करो द्विजगवादिदुःखदः ।
राज्यविग्रहकरः शनैश्चरः सर्पिषः खलु महर्घतां वदेत् ॥८६॥
बहुधा बहुधान्यसम्भवाद् , वसुधा पूर्णसुधा बुधाश्रयात् ।
गुरुणातिसमर्घमन्नकं, शशिना वा भृगुसूनुना तथैव ॥८७॥
कङ्गुरपङ्गुः शालिजूर्णाप्रमुखैर्वसुन्धरा पूर्णा ।

महँगे हो । सोम शुक्र या बुधवार की हो तो लोक को आनन्ददायक छत्रभंग हो ॥८३॥ भाद्रपदमासमें कर्कसंक्रांति रविवार को हो तो वर्षा थोडी हो शनिवार को हो तो बहुत धान्यका नाश हो, मंगलवार को हो तो रोग आदि बहुत प्रकार की ईतिका उपद्रव, वर्षा थोडी और अनाज महँगे हो ॥८४॥ गुरु चंद्रमा शुक्र और बुध इनके पराक्रमसे थोडी महेनतसे क्रमसे सुख हो, समुद्रपर्यन्त राजाओंका युद्ध और पश्चिममें कुछ विनाश हो ॥८५॥ आश्विनमासमें सूर्यकी तुलासंक्रांति रविवारको हो तो ब्राह्मण गो आदिको दुःखदायक है, शनिवारको हो तो राज्यविग्रह हो और घी महँगे हो ॥८६॥ बुधवारको हो तो बहुत प्रकार के धान्यकी प्राप्ति, तथा पृथ्वी पूर्ण अमृतरसवाली हो । गुरुवारको हो तो अनाज सस्ते हो, इसी तरह चंद्रमा और शुक्रवार होनेमे भी अनाज सस्ता हो ॥८७॥ मंगलवार हो तो कंगु अपंगु

विपुलाश्चपला नाम्ना फलस्य हानिः पुनर्भौमे ॥८८॥
संक्रान्तयो द्वादश मासपक्षाः,
स्वमासमोक्षेण शुभाशुभानि ।
वारे परं सप्तभिराविशन्ति,
विशन्ति मासं यदि चान्यमेवम् ॥८९॥
चापपौषे पुनः–संक्रान्तिः स्याद्यदा पौषे रविवारेण संयुता ।
द्विगुणं प्राक्तनाद्धान्ये मूल्यमाहुर्महाधियः ॥९०॥
शनौ त्रिगुणता मूल्ये मङ्गले च चतुर्गुणम् ।
समानं बुधशुक्राभ्यां मूल्यार्धं गुरुसोमयोः ॥९१॥
पाठान्तरे–त्रिगुणं मङ्गले सौम्ये शनिवारे चतुर्गुणम् ।
सोमे शुक्रे तुल्यमूल्यमर्द्धमूल्यं बृहस्पतौ ॥९२॥
ग्रन्थान्तरे—
"मीने रविसंक्रमणे ससिगुरुसुक्केहि होइ सुभिक्खं ।
पसु पवनो रविवारे पसुगयपरिपीडयं सोमे ॥९३॥

शालि नहीं मानि धान्यसे पृथ्वी पूर्ण हो, चौथा मङ्गल और बुधकी की हानि हो ॥ ८८ ॥ जो मासपक्ष बारह संक्रान्तियें हैं वे अपने २ मासको छोड़ने बाद सात वार द्वारा शुभाशुभ फलको करती हैं, इसी तरह दूसरे मासमें प्रवेश करती हैं ॥ ८९ ॥

यदि पौषमासकी संक्रान्ति रविवारको हो तो पहलेसे धान्य दूने मूल्य से बिकें ॥ ९० ॥ शनिवार हो तो तीन गुने मंगल हो तो चौगुने बुध या शुक्र हो तो समान और गुरु या सोमवार हो तो अर्द्धमूल्य से बिकें ॥ ९१ ॥ प्रकारान्तर से–मंगल या बुध हो तो तिगुना, शनिवार हो तो चौगुना, सोम या शुक्र हो तो समान और गुरुवार हो तो अर्द्धमूल्य से बिकें ॥ ९२ ॥ ग्रन्थान्तरमें–मीन संक्रान्तिको सोम गुरु या शुक्रवार हो तो सुभिक्ष हो। रवि वार हो तो पवन अधिक चले मंगलवार हो तो पशुओंको पीड़ा हो ॥

दुब्भिक्खं सनिवारे हवइ वुधवार देवजोएण।
दुब्भिक्खं छत्तभंगा आगमसंवच्छरपरिखा" ॥९४॥
शनिभानुकुजैर्वारैर्बहवः संक्रमा यदा।
महर्घमनिलं रोगं कुर्वते राजविड्वरम् ॥९५॥
सूर्योदये विषुवती जगतो विपत्त्यै,
मध्यदिने सकलधान्यविनाशहेतुः।
संक्रान्तिरस्तसमये धनधान्यवृद्ध्यै,
क्षेम सुभिक्षमवनौ कुरुते निशीथे ॥९६॥
अत्र लोकः-सीयाले सूती भली, वैठी वर्षाकाल।
उन्हाले ऊभी भली, जोसी जोस संभाल ॥९७॥
सूती सूत्र कपासह पूणे, वायु करे रस सयल विधूणे।
आधकरे जग लोक संतावे, सूती संक्रांति इणि परिभावे॥
वैठीसंक्रांति ते पग बेसारे, वायुकरे चउपायु मारे।
मंदवाड करि लोग खपावे, वैठी संक्रांति इसडी आवे।९९।

---

९३ ॥ शनिवार हो तो दुर्भिक्ष हो, यदि दैवयोगसे बुधवार हो तो दुर्भिक्ष तथा छत्रभग आगामि संवत्सर तक रहैं ॥ ९४ ॥ यदि शनि रवि और मगलवारको वहुतसी सक्राति हो तो अनाज महँगे हो, पवन की अधिकता, रोग और राज विग्रह हो ॥ ९५ ॥ यदि सूर्योदयके समय सक्राति हो तो जगत्को विपत्तिके निमित्त हो, मध्य दिनमें हो तो सब धान्यका विनाश हो, अस्त समय हो तो धन धान्यकी वृद्धिके लिये हो, और अर्द्धरात्रिमें हो तो पृथ्वी पर क्षेम (कल्याण) और सुभिक्ष हो ॥ ९६ ॥ लोकिकमें भी कहते है कि—शीतऋतुमें सूतीसक्राति, वर्षाऋतुमें वैठीसक्राति और ग्रीष्मऋतुमें खड़ीसक्राति ये शुभदायक होती हैं ॥ ९७ ॥ सूतीसक्राति सूत कपासका नाश करे, अधिक वायु करे, समस्त रसका विनाश करे, और समस्त लोकको सताप करे ॥ ९८ ॥ वैठीसकाति अधिक वायु करे, पशुओंका विनाश करे, रोगसे म-

छमीसंक्रांति ते उमी भावइ, पाछइ प्रजाने राजसुख पावइ ।
घरि घरि मंगलतूर वजावइ, गौब्राह्मण सहु लोकसुखपावइ ॥
पनरमुहूर्त्ती जो जगि खेलइ, तीडा मूसा चारह ठेलइ ।
तीस मुहूर्त्ती रण उपजावे, माणस घोड़ा हाथी खपावइ ।१०१।
कण सुंहगो व्यापार वधारे, करे सुभिक्षने परस सुधारे ।
पचतालीस मुहूर्त्ती थाई, घणा सुगाल मइ घणी वधाई ।१०२।
मृगकर्कटघटजगोमीनेष्वर्को यामावृधिया निशि ।
व्याहि सुसस्तु शेषेषु प्रत्यलेद् दक्षिणाऽऽयिगमा ॥१०३॥
स्वे स्वे राशी स्थिम सौम्ये मवेत्सौस्थ्य व्यतिक्रमे ।
चिन्तनीयस्तता यत्नाग्राम्याइ प्रास्तसंभ्रम ॥१०४॥
तुलाघ्ररफस्य सक्रान्ति स्यादिकनिधिजा शुभा ।
मास्या विमध्यमा ज्ञेया पशुभिर्दौस्थ्यकारिणि ॥१०५॥

दुर्भोंका विनाश करे ॥९९॥ उमीसंक्रान्ति प्रजाको वनि राजाका सुख घर घर मंगलिक और गौ ब्राह्मण आदि समस्त लोक सुख पावें ॥१ ॥ संक्रांति पन्द्रह मुहूर्त्तकी होता जगत्में टिड्डी मूसे और चार के उपद्रव हो तीस मुहूर्त्तकी होता युद्धका संभव मनुष्य घोड़ा हाथी इनका विनाश हो ॥१ १॥ पचतालीस मुहूर्त्तकी होता धान्य सस्ता व्यापारकी वृद्धि व हुत सुभिक्ष बहुत मांगलिक और वर्षा अच्छा करे ॥१ २॥ मकर कर्क मेष वृष और मीनराशिका सूर्य रात्रिमें संक्रान्त होता दक्षिणी चरणसे चलता है। दिनमें संक्रान्त होता सूर्य सम माना गया है और रात्रीके समय संक्रान्त होता दक्षिण चरणसे चलता है ॥१ ३॥ अपनी २ राशि पर ग्रह निरमानुसार रहे तो शुभ और विपरीत होता दुःख होता है। इसलिये त्रिरात्रिमें घर हुए संक्रान्तिका ... न स विचार करना चाहिये ॥१ ४॥ तुला आदि छ संक्रान्ति यदि ... न रहे होता शुभ। निशिमें होता मध्यम और बहुत निशिमें होता दुर्भिक्ष करता है ॥१ ५॥

रिक्तायां रविसंक्रान्त्यां दैन्यसैन्याज्जनक्षयः ।
देशक्लेशो नरेशानां मृत्युर्दुःखाकुलाऽचला ॥१०६॥
यतः—तुलासंक्रान्तिषट्कं चेत स्वस्या स्वस्या तिथेश्चलेत् ।
तदा दुःस्थं जगत्सर्वं दुर्भिक्षं डमरादिभिः ॥१०७॥
यद्वारे रविसंक्रान्तिः पौषे तस्मिन्नमावस्या ।
द्वित्रिश्चतुर्गुणो लाभस्तदा धान्ये क्रमान्मतः ॥१०८॥
शनिभौमद्वये मार्गे यावच्चरति भास्करः ।
अवर्षणं तदा ज्ञेयं गर्भयोगशतैरपि ॥१०९॥
यदाह लोकः—पाछइ मंगल रविघरह, जइ आसाढइ जोय ।
वरसे तिहां घण मोकलो, उपराठइ दुःख होय ॥११०॥
अगगइ मगल रविरहह, जइ रिक्खह सुजेइ ।
ता नवि वरसइ अंबुहर, जा नवि पछइ एइ ॥१११॥
माघे कृष्णदशम्यां चेन्मकरेऽर्कः प्रवर्त्तते ।
धान्यसङ्ग्रहणाल्लाभं तदाषाढे करोत्ययम् ॥११२॥

सूर्यसंक्रांति रिक्तातिथिमें हो तो सैन्यसे मनुष्योंका क्षय हो । देशमें कलह हो, राजाका मरण और पृथ्वी दुःखमें आकुल हो ॥१०६॥ तुला आदि छ संक्रांति अपनी २ तिथिसे चलित हो तो सब जगत् दुःखी और दुर्भिक्ष हो ॥१०७॥ पौषमासमें सूर्यसंक्रांति जिस वारको हो और उसी वार को अमावस भी हो तो क्रमसे धान्यमें दूना त्रिगुना तथा चौगुना लाभ हो ॥ १०८ ॥ शनि और मंगल का मार्गमें जितने समय सूर्य चले उतने समय सैंकड़ों गर्भके योग रहने पर भी वर्षा नहीं होती हैं ॥ १०९ ॥ लोकिकमें भी कहा है कि—यदि आषाढमासमें सूर्यके स्थानसे मंगल पीछे हो तो वर्षा बहुत हो और आगे हो तो दुःख हो ॥ ११० ॥ एकही नक्षत्र पर रविसे मंगल आगे हो तो वर्षा न बरसे जबतक वह पीछे न हो ॥१११॥ यदि मकरसंक्रांति माघकृष्ण दशमी के दिन हो तो धान्यका संग्रह करने से आषा-

वैशाखस्य तृतीयायां संक्रान्तिर्यदि जायते ।
रोगपीडैकमासे स्याद् यद्वा मेघमहोदयः ॥११३॥
श्रावणे कर्कसंक्रान्त्यां जाते मेघमहोदये ।
सप्तमासान् सुभिक्षं स्याद् नान्यथा जिनभाषितम् ॥११४॥

पक्षपोषे तु—

नन्दायां मेघसंक्रान्तिरल्पवृष्टिकरी मता ।
भद्रायां राजयुद्धाय जयायां व्याधये नृणाम् ॥११५॥
रिक्तायां पशुघाताय पूर्णायां धान्यवर्द्धिनी ।
इत्येतद्वाक्यपाथायत्तं बहुशास्त्रेषु सम्मतम् ॥११६॥
नावी नवमीने चउदसी, जो रवि संक्रम होय ।
देशभंग दुःख घणा, जण जण दुह दिस जोय ॥११७॥

मयगलानुसारिपत्रकारसोगार्थः—

"अग्निमण्डलनक्षत्रे यदा संक्रमते रविः ।
सहितो भौमवारेण सस्यहा धातुनाशयः ॥११८॥

हमें लाभ हो ॥ ११२ ॥ वैशाख तृतीया का यदि संक्रान्ति हो तो एकमास रोगसे पीडा हो या मेघका उदय हो ॥ ११३ ॥ श्रावणमें कर्कसंक्रान्ति के दिन मेघका उदय हो तो सात मास सुभिक्ष हो यह जिन वचन अन्यथा न हो ॥ ११४ ॥ यदि मघसंक्रान्ति नंदा-१-६ ११ तिथि को हो तो वर्षा थोडी हो । भद्रा-२ ७-१२ तिथि को हो तो राजयुद्ध हो । जया-३-८-१३ तिथि को हो तो मनुष्यों को रोग हो ॥ ११५ ॥ रिक्ता-४ ९ १४ तिथिको हो तो पशुओंका घात हो पूर्णा ५ १ १५ तिथिको हो तो धान्यकी वृद्धि हो । ये वाक्योंमें कहा हुआ बहुतसे शास्त्रोंसे सम्मत है ॥ ११६ ॥ पांच नवमी और चौदशके दिन सूर्यसंक्रान्ति हो तो देशका भंग और हरएक जगह मनुष्योंको बहुत दुःख हो ॥ ११७ ॥

यदि सूर्यसंक्रान्ति अग्निमण्डलमें हो और साथ मंगलवार भी हो तो समस्त

रूप्यं सुवर्णं ताम्रादि त्रपुकांश्यानि पित्तलम् ।
धातुधिष्ण्ये तु संक्रान्तौ महर्घमादिशेच्छनौ ॥११९॥
लोहभेदा रसाः सर्वे शीघ्रं भवन्ति सस्पृहाः ।
नक्षत्रैर्वारुणैर्वापि बुधवारेण संक्रमे ॥१२०॥
पीड्यन्ते धान्यभेदाश्च रत्नान्यम्भोधिजानि च ।
नक्षत्रैः पार्थिवैर्वापि सूर्यवारसमन्वितैः ॥१२१॥
सस्पृहाये सुगन्धाढ्या वारणाद्याश्चतुष्पदाः ।
अथवा सर्वमासेषु पूर्णिमायां दिवानिशम् ॥१२२॥
अन्वेषयेत् तदुत्पातान परिवेषादिकान् तथा ।
यस्मिन् मण्डलनक्षत्रे दुर्निमित्तं विलोक्यते ॥१२३॥
तत्तन्मण्डलवाच्यार्थाः क्षणाद्भवन्ति सस्पृहाः ।
एवं चारेण संक्रान्तेरर्घकाण्डं प्रदर्शितम् ॥१२४॥

योगचक्रम्—

"दिनयोगं च नक्षत्र संक्रान्तेर्गृह्यते घटी ।

धातु महँगी हो ॥ ११८ ॥ धातुसंज्ञक नक्षत्रों में सूर्यसंक्रांति हो और शनि-वार हो तो चांदी सोना तांबा रांगा कांसी पित्तल आदि धातु महँगी हों ॥ ११९ ॥ तथा सब प्रकारके लोहके भेद और रस महँगे हों । वारुणमण्ड-लनक्षत्र और बुधवारको सूर्यसंक्रांति हो ॥१२०॥ तो धान्यके भेद यानें सब प्रकारके धान्य और समुद्रमें उत्पन्न होनेवाले रत्न आदि महँगे हों । पार्थि-वमण्डलनक्षत्र और रविवार को हो ॥१२१॥ तो सुगंधित वस्तु और घोडा आदि पशु ये महँगे हों । अथवा समस्त मासकी पूर्णिमाको दिनरातमें कोई उत्पात तथा सूर्य चंद्रमा को परिमंडल हो तो उसका विचार करें, जिस मण्डलके नक्षत्रोंमें दुर्निमित्त हो ॥१२२॥१२३॥ तो उन २ मंडलोंमें कही हुई वस्तु शीघ्रही महँगी हो । इसी तरह संक्रांतिके वारसे अर्घकाण्ड कहा ।१२४।

दिनके योग और संक्रांतिका नक्षत्र इनकी घड़ियों को इकट्ठा कर चार से

वसुर्गुणं सप्तभागं पण्डितस्तद्विचारयेत् ॥१२५॥
शून्ये भयं भय रोगमेकेऽर्थं द्विसये रस ।
त्रये रोगश्चतुष्पु स्यात् पर्क महर्घमुज्ज्वलम् ॥१२६॥
पट्पञ्चसु द्विजमुनीन् रागेण परिपीडयेत् ।
सक्रान्तिसमये चेत्तद् विचार्यं योगचक्रकम् " ॥१२७॥

द्वादशमाससंक्रान्तिवृष्टिविचार —

चैत्रे शनौ त्रयोदश्यां यदि मीनेऽर्कसंक्रम ।
वत्सर स्यात्तदा निन्द्य मघो धान्यार्घनाशनः ॥१२८॥
चैत्रमासस्य संक्रान्तौ यदि वर्षति माधव ।
तदा धान्यस्य निष्पत्तिर्लोके बहुतरं सुखम् ॥१२९॥
वैशाखज्येष्ठसंक्रान्तिर्वृष्टिर्मिश्रफला भवेत् ।
मध्यमं कुरुते वर्षं खण्डमण्डलवर्षणात् ॥१३०॥
यदाह रुद्रदेव–"चैत्रे च गौरिसंक्रान्तौ यदा वर्षति माधव ।

गुण दना और रस गुणनफल को सात से भाग देकर शेष द्वारा विद्वान् उसका विचार करें ॥ १२५ ॥ शून्य शेष हो तो भय तथा क्षयरोग हो एक बचे तो भय प्राप्ति हो बचे तो रस प्राप्ति तीन बचे तो रोग, चार बचे तो सफेद वस्तु महँगी हो ॥१२६॥ छ पांच और सात बचे तो रोग से पीड़ा हो संक्रान्ति के समय यह योगचक्रका विचार करना चाहिये ॥ १२७॥ इति योगचक्रका विचार ।

चैत्रमासमें त्रयोदशी और मीन संक्रान्ति शनिवारको हो तो वर्ष निन्द्य (अशुभ) जानना यह शीघ्रही धान्य का नाशकारक होता है ॥ १२८ ॥ चैत्रमासकी संक्रान्तिमें यदि मेघ वर्षा हो तो धान्यकी प्राप्ति तथा लोक में बहुत सुख हो ॥१२९॥ वैशाख तथा ज्येष्ठ मासकी संक्रान्तिमें वर्षा हो तो मिश्र (मिला हुआ) फलदायक होती है तथा खंडवर्षा होने से मध्यम वर्ष करती है ॥ १३० ॥ रुद्रदेव कहते है कि– चैत्रमें मेषसंक्रान्तिमें तथा

विचित्रं जायते वर्षं वैशाखज्येष्ठयोस्तथा" ॥१३१॥
वैशाखकृष्णपक्षान्त-र्वृषसंक्रमणे रविः।
वृषे चन्द्रस्तदा ज्ञेयं सर्वक्लेशक्षयात् सुखम् ॥१३२॥
यदि स्याज्ज्येष्ठपञ्चम्यां वृषसंक्रमणादनु।
दिनद्वयान्तर्जलदस्तदा सुभिक्षनिर्णयः ॥१३३॥
आषाढे चैव संक्रान्तौ यदि वर्षति माधवः।
व्याधिरुत्पद्यते घोरः श्रावणे शोभनं तदा ॥१३४॥
आषाढे कर्कसंक्रान्तौ शनिवारो भवेद्यति।
तदा दुर्भिक्षमादेश्यं धान्यस्यापि महर्घता ॥१३५॥
*श्रावणे कर्कसंक्रान्तिर्दिने जलधरागमात्।
न तीडा मूषका नैव जायन्ते तत्र वत्सरे ॥१३६॥
दशम्यां शनिना युक्तः श्रावणे सिंहसंक्रमः।
अनन्तधान्यनिष्पत्तिर्भवेन्मेघमहोदयः ॥१३७॥

वैशाख और ज्येष्ठ की संक्रातिको वर्षा हो तो विचित्र वर्ष होता है ॥१३१॥ वैशाख कृष्णपक्ष में वृषसंक्राति हो उस दिन वृष का चंद्रमा भी हो तो समस्त क्लेशोंका क्षय होकर सुख होता है ॥ १३२ ॥ यदि ज्येष्ठ मासकी पंचमी को वृषसंक्राति हो उससे दो दिन के भीतर वर्षा हो तो सुभिक्ष होता है ॥१३३॥ आषाढ मास की संक्राति को यदि वर्षा हो तो भयंकर व्याधि हो और श्रावणमे शुभ हो ॥ १३४ ॥ आषाढ में कर्कसंक्राति को शनिवार हो तो दुर्भिक्ष तथा धान्य महँगे हों ॥१३५॥ श्रावण की कर्क-संक्रातिके दिन वर्षा हो तो टिड्डी आदिका उपद्रव न हो ॥१३६॥ श्रावण में दशमी और सिंहसंक्राति शनिवारको हो तो धान्य बहुत उत्पन्न हो और मेघवर्षा हो ॥१३७॥ भाद्रपदमासमें सिंहसंक्रातिको वर्षा हो तो आगे वर्षा

---

*टी-श्रावणे कर्कसंक्रान्तौ यदि वर्षति माधवः।
व्याधिं स कुरुते घोरां बहुधान्या [illegible] ॥

भाद्रपदसिंहसंक्रमदिने यथा जलदपन्थनो पुरतः ।
संक्रान्तेर्दिनयुग्मान्तरे न वृष्टिर्यदा दृष्टा ॥१३८॥
आश्विनस्यापि संक्रान्तौ दृष्टे मेघमहोदये ।
राजयुद्धं प्रजाः स्वस्था धान्यैरापूर्यते जगत् ॥१३९॥
मासे भाद्रपदे प्राप्ते संक्रान्तौ यदि वर्षति ।
बहुरोगाकुला लोका आश्विने गमनं पुनः ॥१४०॥
+कार्तिके मार्गशीर्षे वा संक्रान्तौ यदि वर्षति ।
मध्यमं कुरुते वर्षं पौषमासे सुभिक्षकृत् ॥१४१॥
यदाह लोकः–कातीमासि महाबठा, जइ संकतिय अंति ।
बरसे मेह समाकला, अवर म आण चिंत ॥१४२॥
×कातीमासि अमावसि, संकति सनिवार ।
गोरी खपड मालरू, किंहा न लब्भइ पार ॥१४३॥
● अदह मदह सयभिसि, जाइ संकमणा भाण ।

को सिंह और संक्रांतिके दो दिनके अन्दर वर्षा न हो तो आगे वर्षा हो ॥१३८॥ आश्विन मासकी संक्रांतिके दिन वर्षा हो तो राजाओंमें युद्ध प्रजा सुखी और पृथ्वी धान्यसे पूर्ण हो ॥१३९॥ भाद्रपदमासमें संक्रांतिके दिन वर्षा हो तो लोक बहुत रोगसे व्याकुल हों। आश्विनमें गमन हो ॥१४०॥ कार्तिक या मार्गशीर्ष की संक्रांतिके दिन वर्षा हो तो मध्यम वर्ष हो और पौष में सुभिक्षकारक हो ॥१४१॥ लौकिक में भी कहा है कि कार्तिक में संक्रांति के अंत में महाबठा (वर्षा) हो तो आगे बहुत बरसे चिंता नहीं करो ॥१४२॥ कार्तिक अमावस्या या संक्रांतिके दिन शनिवार हो तो कहीं भी वर्षा न हो ॥१४३॥ आर्द्रा पूर्वा तथा उत्तराभाद्रपद और शतभिषा इन नक्षत्रों के दिन सूर्यसंक्रमण हो तो युगान्तक उत्पात ऐसा

+टी–कार्तिकमार्गे संक्रान्तिदिनवृष्टौ वर्षमध्यमम् ।
×टी–संक्रान्तौ शनिवारः ।
●टी–आर्द्रा १ पूर्वोत्तराभाद्रपदे २ शतभिषक् ३ आसु संक्रान्तौ निषिद्धा ।

तो जाणे जे जुगप्रलय, जोइस एह प्रमाण ॥१४४॥
*मार्गशीर्षे धनूराशौ यदा याति दिवाकरः ।
तदा वर्षे च निर्दिग्धं वृश्चिकेऽर्के सुखावहः ॥१४५॥
द्वादश्यां पश्चिमे पक्षे मार्गशीर्षे च संक्रमे ।
यदि मङ्गलवारः स्याद् दुःखाय जगतो मतः ॥१४६॥
पौषमासस्य संक्रान्तौ यदा मेघमहोदयः ।
बहुक्षीरास्तदा गावो वसुधा बहुधान्यदा ॥१४७॥
पौषमासे यदा भानो रविवारेण संक्रमः ।
हाहाभूतं जगत्सर्वं दुर्भिक्षं नात्र संशयः ॥१४८॥
माघमासे त्रयोदश्यां कुम्भे संक्रमणे रवेः ।
रोहिणी सूर्यवारेण कार्त्तिकान्ते महर्घताम् ॥१४९॥
फाल्गुने चैत्रसंक्रान्तौ यदि वर्षति माधवः ।
विचित्रं जायते सस्य माधवज्येष्ठयोरपि ॥१५०॥

ज्योतिषका प्रमाण है ॥ १४४ ॥ मार्गशीर्ष में धनसंक्रान्तिको वर्षा हो तो वर्ष पुष्ट हो और वृश्चिकसंक्रान्ति में हो तो सुख हो ॥ १४५ ॥ मार्गशीर्ष कृष्ण द्वादशी और संक्रांति मंगलवार को हो तो जगत् का दुःखके लिये जानना चाहिये ॥१४६॥ पौष मासकी संक्राति को वर्षा हो तो गौ बहुत दूध दें और पृथ्वी बहुत धान्यशाली हो ॥ १४७ ॥ पौषकी सूर्यसंक्राति रविवार को हो तो समस्त जगत्में हाहाकार और दुर्भिक्ष हो इसमें संदेह नहीं ॥ १४८ ॥ माघ मासमें त्रयोदशी को कुम्भसंक्रान्ति और रविवार युक्त रोहिणी नक्षत्र भी हो तो कार्तिक के अंत में अन्न महँगे हों ॥ १४९ ॥ फाल्गुन और चैत्रमें संक्रांति के दिन वर्षा हो तो अनेक प्रकार के अनाज पैदा हों, इसी तरह वैशाख और ज्येष्ठका फल जानना ॥ १५० ॥ यदि मेषके सूर्य होने पर अश्विनी आदि दश नक्षत्र याने दश दिनों में वर्षा हो

---

*टी-मार्गशीर्षे धन्वराशौ यत्रा याति दिवाकरः। तदा दाहो लोके ।

+जइ अस्सिणाइ दहदिण भाणो संकमणि वरिसए मेहो ।
तइ आइ विसयगब्भं अहाइदरिक्खं ना वरिसे ॥१५१॥

एव च–संक्रान्तौ घनवर्षणाद्वहुसुखं पौषे समाश्विने,
चैत्रादित्रितये च खण्डजलदाद्‌दुःखं सुखं मिश्रितम् ।
भाद्राषाढकयोजने बहुरुजः स्युः श्रावणे सम्पदो,
धान्ये फाल्गुनिकेषु मध्यमसमा मार्गे तथा कार्तिके ॥१५२॥

* सक्रान्तिनाम्नो नवभिर्विमिश्रा,
सप्ताहता पावकभाजिताश्च ।
समर्घमेकेन समं द्विकेन,
शून्ये महर्घं मुनयो वदन्ति ॥१५३॥

मीनमेषान्तरेऽष्टम्यां मङ्गले धान्यसङ्ग्रहात् ।

तो गर्भ का विनाश हो और आर्द्रादि दश नक्षत्रों में वर्षा न हो ॥ १५१ ॥ पौष माघ और आश्विन में संक्रांति के दिन मेघ वर्षा हो तो बहुत सुख हो। चैत्र वैशाख और ज्येष्ठमें संक्रांतिके दिन वर्षा हो तो थोडे खंडवर्षा होने से दुःख और सुख मिश्रित फल हो। भाद्रपद और आषाढकी संक्रांति को वर्षा हो तो रोग बहुत हो। श्रावणमें सुख संपदा हो। फाल्गुन में धान्य प्राप्ति, और कार्तिक तथा मार्गशीर्ष की संक्रांति में वर्षा हो तो मध्यम वर्ष जानना ॥ १५२ ॥ संक्रांतिके नाममें नव मिलाना, उसको सात से गुणाकर तीनसे भाग देना, यदि एक शेष बचे तो सस्ते, दो बचे तो समान और शून्य शेष हो तो महँगे हो ऐसा मुनियोंने कहा है ॥ १५३ ॥ मीन और मेषकी संक्रांति के अंतर याने बीचमें अष्टमीका मंगलवार हो तो

+टी–मेषे सूर्ये सति अश्विन्यादिदशनक्षत्रेषु यद्यम्रे दशदिनानि यावद् घनवर्षणं स्यात् तर्हि वर्षाले तु आर्द्रादिसूर्यविधियुक्ता गर्भनाश इत्यर्थो भीतिरमेष्मसमाक्रम् ।

* टी–'संक्रान्तिनाम्नो नवभिर्विमिश्रा' 'संक्रान्तिनाम्नि लिपिविचार सहसाम्य सप्त वहिहृत तु भागम्' इत्यपि पाठः ।

द्विस्त्रिश्चतुर्गुणो लाभ इत्युक्त पूर्वसूरिभिः ॥१५४॥
+ कुम्भमीनान्तरेऽष्टम्यां नवम्यां दशमीदिने ।
रोहिणी चेत्तदा वृष्टिरल्पा मध्याधिका क्रमात् ॥१५५॥
गार्गीयसंहितायां पुनः—
कार्तिके फाल्गुने मार्गे चैत्रे श्रावणभाद्रयोः ।
संक्रमेष्वशुभः षट्सु यदि वर्षति वारिदः ॥१५६॥
पौषे माघे सवैशाखे ज्येष्ठाषाढाश्विनेषु च ।
संक्रान्तौ वर्षति घनः सर्वदैव सुशोभनः ॥१५७॥
× इत्येवमादित्यसुराशिगत्या,
विभाव्य भाव्य फलमत्र मत्या ।
कार्यस्तदार्यैरिह वर्षबोधः,
परोपकाराय स निर्विरोधः ॥१५८॥

धान्यका सग्रह करनेसे द्विगुना, त्रिगुना या चौगुना लाभ हो ऐसा प्राचीन आचार्योंने कहा है ॥ १५४ ॥ कुभ और मीनकी सक्राति के अतर याने बीच मे अष्टमी, नवमी या दशमी के दिन रोहिणी नक्षत्र हो तो क्रमसे स्वल्प मध्यम और अधिक वर्षा हो ॥१५५॥ गार्गीयसहितामें कहा है कि— कार्तिक फाल्गुन मार्गशीर्ष चैत्र श्रावण और भाद्रपद इन छः महीने की सक्राति में यदि वर्षा हो तो अशुभ है ॥ १५६ ॥ पौष, माघ, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ और आश्विन इन छः महीने की सक्राति के दिन वर्षा हो तो सर्वदा शुभ हो ॥१५७॥ इसी तरह सूर्य की राशि पर अच्छी गतिसे यहां बुद्धिसे विचार करके फल कहना । यह वर्षाका ज्ञान सज्जनोंने परोपकार के लिये किया है यह बात निर्विरोध है ॥ १५८ ॥ सूर्य द्वारा वर्षा

+ टी— अत्र कुम्भमीनसक्रान्त्योर्मध्ये इत्यर्थः ।
× टी— अत एव प्रमाणमवत्सरे तुर्यो भेद', आदित्यसंवत्सर प्रागुक्त सिद्धान्ते ।

ज्ञादित्याज्ञायते वृष्टिः स्मार्त्तवृष्टिरसौ स्मृता ।
तेन केवलबोधाय ध्येयाऽर्को भगवान् इह ॥१५६॥

इति श्रीमेघमहोदयसाधने वर्षप्रबोधे श्रीमत्तपागच्छीय
महोपाध्याय श्रीमेघविजयगणिविरचिते
सूर्यचारकथनो नाम दशमोऽधिकारः ॥

अथ ग्रहगणविमर्शनो नाम एकादशोऽधिकारः ।

चन्द्रचारः—

अथ शशी स्ववशीकृततारक-श्चरति यत्र यथा फलकारकः ।
समय विक्रमतः क्रमतस्तथा, तिथिकथां कथितुं समुपक्रमे ॥१॥
तिथिफलात्क्रमशस्तु चतुर्गुणं, भवति वारफलेऽष्टगुणा क्रिया ।
द्विगुणिता करणस्य ततो+युजि, तदनुयद्विगुणा खलु तारका ॥
शीतगुः शतगुणस्ततो मतस्तत्सहस्रगुणसंक्रमीर्यता ।

होती है इसलिये यह स्मार्तवृष्टि कही जाती है इसलिये केवल ज्ञानके लिये सूर्य भगवान् यहां ध्यान करने योग्य है ॥१५६॥

सौराष्ट्रराष्ट्रान्तर्गत-पादलिप्तपुरनिवासिना पण्डितभगवानदासाख्यजैनेन
विरचितया मेघमहोदये बालावबोधिन्याऽऽर्यभाषया टीकितो
सूर्यचारकथनो नाम दशमोऽधिकारः ।

अपने वशीभूत करलिये है तारा जिस ने ऐसा चन्द्रमा जिस नक्षत्र पर चले वैसा फल कारक है वैसे क्रमसे विक्रमका समयसे तिथिकथा कहने को आरंभ करता हूं ॥१॥ तिथिफलसे नक्षत्रफल चौगुना है, इससे वारफल आठगुना, इससे करणफल द्विगुना इससे योगफल द्विगुना इससे ताराफल साठ गुना ॥२॥ ताराफलसे चन्द्रफल शतगुना और चन्द्रमासे

+टी—अस्य वारफलस्य द्विगुणिता वाऽष्टगुणत्वं ततोऽपि करणम्, द्विगुणिता युजि योगे ग्राभिशतगुणम् ।

लग्नशीतकरयोर्बलाबलादोहितं विदधतां सदा हितम् ॥३॥
बालबोधे तु–तिथिरेकगुणा प्रोक्ता वारस्तस्याश्चतुर्गुणः ।
नक्षषोडशगुणं धिष्ण्यं योगः शतगुणास्तथा ॥४॥
सहस्राधिगुणाः सूर्यो लक्षाधिकगुणः शशी ।
दक्षजातिप्रियासाध्यो दक्षजातिप्रियस्ततः ॥५॥
बृहत्सु धान्यं कुरुते समर्घं, जघन्यधिष्ण्येऽभ्युदितो महर्घम् ।
समेषु धिष्ण्येषु समं हिमांशु-र्वदन्त्यसन्दिग्धमिदं महान्तः ।६।
फाल्गुनेऽर्के यदोदेति द्वितीया चन्द्रमास्तदा ।
राजा सुखी बहुर्वायुर्वह्रेरुपद्रवो महान ॥७॥
तीडागमो बालरोगः करकापतनं भुवि ।
धान्यपीडा वनचरदुःखं धातुमहर्घता ॥८॥
सोमवारे घना मेघाश्छत्रभङ्गान् महारणः ।

-लग्नबल हजारगुना है। इसलिये लग्न और चन्द्रमा का बलाबल का विचार कर सर्वदा हितको धारण करना चाहिये ॥ ३ ॥ बालबोध में भी कहा है कि-तिथि एकगुना, इससे वार चारगुना, इससे नक्षत्र सोलहगुना, इससे योग शतगुना ॥ ४ ॥ इससे सूर्य दशगुना और सूर्यसे चन्द्रमा लाखगुना अधिक फल देनेवाला है, वह चन्द्रमा दक्ष जातिकी प्रियाओंसे साध्य है इस-लिए दक्षजाति का प्रिय है ॥ ५ ॥ बृहत्संज्ञक नक्षत्र पर चन्द्रमा उदय हो तो धान्य सस्ता, जघन्यसंज्ञक नक्षत्र पर उदय हो तो महँगा और समसं-ज्ञक नक्षत्रपर उदय हो तो समान हो, यह विद्वानों ने संदेह रहित कहा है ॥ ६ ॥ फाल्गुन में रविवारको द्वितीया के दिन चन्द्रमा उदय हो तो राजा सुखी, वायु अधिक, अग्नि का उपद्रव अधिक रहे ॥ ७ ॥ टीड्डी का आग-मन, बालकोंको रोग, पृथ्वीपर ओला गिरे, धान्य का विनाश, वनचर जीवोंको दुःख और धातु महँगी हो ॥ ८ ॥ सोमवारको उदय हो तो वर्षा अधिक, छत्रभंग, महायुद्ध लोक सुखी, गौओं का दूध अधिक और धान्य

लोकः सुखी गवां पुष्टं बहुधान्यसमुद्भवः ॥९॥
मङ्गले सर्वलोकस्य कष्टं धान्यमहर्घता ।
नृपस्य महद्यं पुत्रविग्रहोऽग्नेर्भयम् ॥१०॥
बुधे सर्वजनोद्वेगः पशुपीडाल्पनीरदः ।
राज्ञां विरोधोऽल्पफलं सर्वधान्यमहर्घता ॥११॥
गुरौ कर्षणनिष्पत्तिश्चतुष्पदमहासुखम् ।
व्यापारा निर्भया मार्गाः पालिता हि वरिश्रमः ॥१२॥
शुक्रे चन्द्रोदये खण्डवर्षा धान्यमहर्घता ।
रोगो भयं जने दुःखं स्वल्पं चतुष्पदक्षयः ॥१३॥
शनौ धान्यमहर्घत्वं दक्षिणस्यां महारणं ।
स्वल्पमेघेन दुर्भिक्षं फाल्गुनस्य विधूदयात् ॥१४॥
शुक्लपक्षे द्वितीयायां भानोर्वामोदये शशी ।
तस्मिन् मासे शुभं सर्वं दुर्भिक्षं दक्षिणोदये ॥१५॥

अधिक उत्पन्न हो ॥ ९ ॥ मंगलवारको उदय हो तो सब लोकको कष्ट, धान्य महँगे, सूर्यका भङ्ग, पुत्रका विग्रह और अग्निका उपद्रव हो ॥१०॥ बुधवार हो तो सब लोगों में व्याकुलता, पशुओं को पीडा, वर्षा थोडी, राजाओंमें विरोध फल थोडे और सब प्रकारके धान्य महँगे हों ॥११॥ गुरुवार का उदय हो तो खेती अच्छी, पशुओं को बड़ा सुख, व्यापार अधिक, मार्ग निर्भय पाखण्ड का पर्यटन हो ॥१२॥ शुक्रवार को उदय हो तो खंडवर्षा, धान्य महँगे रोग भय, मनुष्योंमें थोडा दुःख और चतुष्पद पशुओंका नाश हो ॥१३॥ शनिवारको उदय हो तो धान्य महँगे दक्षिण में बड़ा युद्ध, वर्षा थोड़ी और दुर्भिक्ष हो ऐसा फाल्गुन मासमें चन्द्रोदयका फल कहा ॥१४॥ शुक्लपक्षमें द्वितीयाके दिन चंद्रमा सूर्यसे वामोदय (बाँई तरफ उदय) हो तो उस महीने में सब शुभ हो और दक्षिणोदय हो तो दुर्भिक्ष हो ॥१५॥ आषाढ कृष्णपक्षमें चन्द्रमाके साथ रोहिणी को देखकर

ाहः—"प्राजेशमाषाढतमिस्रपक्षे, क्षपाकरेणोपगतं समीक्ष्य।
ाक्तव्यमिष्टं जगतोऽशुभं वा, शास्त्रोपदेशाद् ग्रहचिन्तकेन"॥

रोहिणीशकटयोगः—

यथा रथात् पुरोऽश्वाः स्युः शीतगो रोहिणी तथा।
उदेति चेत्सुभिक्षाय भवेन्मेघमहोदयः॥१७॥
पल्लिपतिविनाशाय भूपाला रणकारिणः।
विरोधान्मार्गसंरोधश्चौर्यचर्या महाभयम्॥१८॥
रोहिणी रोहिणीनाथो रथे साम्यपथे व्रजेत्।
निष्पन्नायपि धान्यस्य नाशस्तीडादिदंष्ट्रया॥१९॥
हिमांशो रोहिणीपश्चादुदेत्यशुभवर्षकृत्।
शुक्लतृतीयादिवसे वैशाखे तद्विचार्यते॥२०॥
आर्द्रान्त्यार्द्धं तमोभुक्ते स्वातिमारभ्य यावता।
विलोमगत्या कालेन तावता दैवयोगतः॥२१॥
भिनत्ति रोहिणीं चन्द्रस्तदा दुर्भिक्षमादिशेत्।

शास्त्रों में कथनानुसार ग्रहों के विचार द्वारा जगत् का शुभाशुभ कहना चाहिये॥१६॥

जैसे रथके आगे घोड़े होते हैं, वैसे चंद्रमा के आगे यदि रोहिणी उदय हो तो मेघका उदय और सुभिक्ष हो॥ १७॥ पल्लीपतीका विनाश, राजा युद्ध करनेवाले, विरोधसे मार्गमें अटकाव, चोरी और बड़ा भय हो॥ १८॥ रोहिणी तथा चद्रमा रथमें साम्यपथमें हो तो उत्पन्न हुए धान्य का टीड़ी आदिसे विनाश हो॥ १९॥ चद्रमासे रोहिणी पीछे उदय हो तो अशुभवर्षकारक है, इसका वैशाखशुक्ल तृतीया के दिन विचार करें॥२०॥ राहु विलोम (उलटी) गतिसे स्वातिसे आर्द्रा का अन्त्य अर्द्ध तक जितने समयमें भोगे उतने समयमें यदि दैवयोगसे चद्रमा रोहिणी को भेदे तो दुर्भिक्ष, राजाओंका विग्रहसे मरण और प्रजाको अधिक दुःख हो॥ २१॥ २२॥

विग्रहान्मरणं राज्ञां प्रजानां दुःखमुल्बणम् ॥२२॥
उदेतीन्दुः स्फोटमपि रोहिणीशकटं स्पृशन् ।
सैन्यादिभ्यश्छलाद्धान्यनाशाद्विकटसङ्कटम् ॥२३॥
प्राच्या दक्षिणदिग्भागे चरन् चन्द्रोऽतिदुःखदः ।
पादयेद्रोहिणीमध्ये निर्दोषः क्लेशकृज्जने ॥२४॥
सूर्यचन्द्रमसौ प्राच्यां द्वितीयायां यदा स्थितौ ।
दुष्कालेन प्रजाहानिर्यदि वा विग्रहो महान् ॥२५॥
म्रखवे विधुः सौम्ये-रश्मा प्राच्या उदग्दिशि ।
चरंस्तदापरं विश्वं सुखभाक् कुरु तेजसा ॥२६॥
चन्द्रात् पृष्ठगता प्राची शुभा पुरोगतापि च ।
रोहिण्यामिन्दुराग्नेय्यामुपसर्गाय जायते ॥२७॥
नैर्ऋत्यामीतिकृद्वायौ मध्या वृष्टिस्तु वायुनः ।
उत्तरैशानगश्चन्द्रः सर्वलोकशुभावहः ॥२८॥
इत्यर्घने संहितायां रोहिणीशकटयोगः ।

यदि चन्द्रमा भी रोहिणी शकट का स्पर्श करता हुआ उदय हो तो सैन्यसे सैन्यभङ्गका और धान्यका विनाशसे बड़ा संकट हो ॥ २३ ॥ यदि चन्द्रमा रोहिणी के दक्षिण दिशामें रहकर उदय हो तो बहुत दुःखदायक है और रोहिणीके मध्यमें उदय हो तो जगत्में क्लेशकारक हो ॥२४॥ द्वितीया के दिन सूर्य और चन्द्रमा दोनों रोहिणी नक्षत्र पर स्थित हों तो दुष्कालसे प्रजाका विनाश अथवा विग्रह हो ॥ २५ ॥ रोहिणी की उत्तर दिशामें रहा हुआ चन्द्रमा उत्तम वर्णका हो और शुभरूप से देखे जाते हों तो चराचर जगत् सुखी हो ॥ २६ ॥ चंद्रमा से रोहिणी पीछे या आगे हो तो शुभकारक है । रोहिणी की अग्नि कोण में चंद्रमा हो तो उपद्रव हो ॥२७॥ नैर्ऋत्य कोण में हो तो ईति कारक, वायव्य कोण में हो तो वायुसे मध्यम वर्षा उत्तर और ईशान की तरफ चंद्रमा हो तो सब लोग सुखी हों ॥ २८ ॥

चन्द्राकृतिः—

वक्रोऽलिचित्रये सिंहे शूलाभः कन्यकाद्वये ।
मीने त्रये दक्षिणोच्च चन्द्रः शेषे समाकृतिः ॥२९॥
विड्वरं हि समे चन्द्रे दुर्भिक्षं दक्षिणोन्नते ।
व्याधिचौरभयं शूले सुभिक्षं चोत्तरोन्नते ॥३०॥

चन्द्रवस्त्रम्—

+सिंहे मेषद्वये रक्तः श्यामो मकरकुम्भयोः ।
तुलाकर्कालिषु श्वेतः पीतः शेषेषु शीतगोः ॥३१॥
अरुणः शीतलकिरणः करोति रसहानिमुग्ररणमरणम् ।

वृश्चिक धन और सिंहका चन्द्रमा टेढा, कन्या और तुला का चद्रमा शूल की समान, मीन मेष और वृषका चन्द्रमा दक्षिणमें ऊंचा और शेषराशिका चद्रमा समान आकृतिवाला होता है ॥२९॥ सम चद्रमा हो तो विग्रह, दक्षिण में ऊंचा हो तो दुर्भिक्ष, शूल समान हो तो रोग और चोरका भय, और उत्तर तरफ ऊंचा हो तो सुभिक्ष हो ॥ ३० ॥

सिंह मेष और वृषमें चद्रमाका रक्त वस्त्र, मकर और कुंभ में श्याम (काला), तुला कर्क और वृश्चिक में श्वेत (सफेद) और शेषराशि में पीत वस्त्र होता है ॥ ३१ ॥ रक्त चद्रमा रस की हानि, बड़ा युद्ध और मरण करता है । पीला चन्द्रमा रोग, मरकादि का भय और दुष्काल करता है

+टी—चन्द्रवस्त्रवाहनम्—अजवृषरिपुसिंहो रक्तवस्त्रश्च नागे—
रलिझषमिथुने स्यात् पीतवस्त्रश्च धारी ।
तुलधनजलराशि श्वेतवस्त्रैर्वृषाणे—
मकरघटककन्या श्यामवस्त्रयमस्य ॥१॥
पुनः—मेषे च सिंहे वृषपीतवस्त्रे, कन्यां च मीने धनुपीतवस्त्रम् ।
तुलालिकर्केषु च श्वेतवस्त्रं युग्मे च कुम्भे मकरेऽहि श्यामम् ॥१॥
रक्तवस्त्रे पीतवस्त्रे शुभाशुभम् ।
श्वेतवस्त्रे भवेल्लाभो रुग्णो च मरणं ध्रुवम् ॥२॥

पीतरोगमियोगे मकरादिमयं पुनः कालः ॥१२॥
धवलाम्बुजलधवलैर्गीम सानन्दने भुवनम् ।
व्यवसायेऽप्यवसायक्रियायमपि धर्मकर्मजने ॥१३॥
गुरीन्दुजाङ्गारकसौरिभास्करा:,
प्रदक्षिणं यान्ति यदा हिमद्युते: ।
तदा सुभिक्षं धनवृद्धिरुत्तमा,
विपर्यये धान्यधनक्षयादि ॥१४॥
दृश्यते यदि न रोहिणीयुतश्चन्द्रमा नभसि तोयदावृते ।
अभयं महदुपस्थितं तदा भूश्च भूरि जलसस्यसंयुता ॥१५॥
मन्दायां ज्वलितो वह्निः पूर्णायां पांशुपातनम् ।
भद्रायां गोकुली क्रीडा देशनाशाय जायते ॥१६॥
यद्दिने गोकुली क्रीडा तद्दिनेऽभ्युदिते विधौ ।
तदा शीघ्रं विनश्यन्ति प्रजा गावो महीपतिः ॥१७॥
अथ चन्द्रदर्शनम्—

॥ १२ ॥ सफेद चंद्रमा अनेक प्रकार के धवल मंगलादि गीतों से पृथ्वी आमोदित करता है, व्यापार में उत्साह और मनुष्यों में धर्मकर्म अधिक कराता है ॥१३॥

बृहस्पति बुध मंगल शनि और सूर्य ये चंद्रमा के दक्षिण चलें तो सुभिक्ष तथा धन वृद्धि उत्तम हो और विपरीत हो तो धन धान्य आदि का विनाश हो ॥१४॥ यदि मेघ युक्त आकाश में चंद्रमा रोहिणी सहित न दीखे तो महा उपद्रव हो और पृथ्वी जल और धान्य से पूर्ण हो ॥ १५ ॥ नंदातिथि में प्रकाशमान अग्नि, पूर्णातिथि में धूलि की वर्षा और भद्रातिथिमें गोकुल क्रीडा हो तो देश का विनाश हो ॥१६॥ जिस दिन गोकुलक्रीडा हो उस दिन चंद्रमा का उदय हो तो प्रजा गौ और राजाका विनाश हो ॥१७॥

"यावन्द्रनाड्यो मनुसंयुताश्च, गुण्या नगैः पावकभागभक्त
एकावशेषे कथितं सुभिक्षं, शून्येन शून्यं द्वितयेऽर्घहानि

केवलकीर्तिराह:—

ज्येष्ठोत्तारे ह्यमावस्यां भानोरस्तं विलोकयेत् ।
तथा चन्द्रमसश्चापि द्वितीयायां महोदयम् ॥३९॥
यद्युत्तरां शशी याति मध्यं वा दक्षिणां रवेः ।
उत्तमो मध्यमो नीचकालः सम्पद्यते तदा ॥४०॥

रुद्रदेवस्तु—ज्येष्ठस्यान्ते प्रतिपदि सूर्यस्यास्तं विलोकयेत् ।
द्वितीयायां वीक्ष्यतेऽब्जं गतमुत्तरदक्षिणम् ॥४१॥
सुभिक्षमुत्तरदिशि विपरीतं तु दक्षिणे ।
तस्मान्ध्ये मध्यमं वर्षं ज्येष्ठान्ते तद्रदेवहि ॥४२॥

अथ सप्तनाडीचक्रविमर्श —

सप्तनाडीमये चक्रे शनिसूर्यारसूरयः ।
शुक्रज्ञचन्द्रा नाथाः स्युरष्टाविंशतिर्भानि च ॥४३॥

चंद्रनाकी घड़ीमें चौदह जोड़कर सातसे गुणा करें पीछे इसमें
का भाग दें, एक शेष बचे तो सुभिक्ष, शून्य बचे तो शून्यता औ
बचे तो अर्धका विनाश हो ॥ ३८ ॥

ज्येष्ठ अमावसके दिन सूर्यास्त के समय देखे, वैसे द्वितीया के
चन्द्रमाका उदयको देखे ॥३९॥ यदि सूर्यसे चंद्रमा उत्तर मध्य या द
तरफ उदय हो तो क्रमसे उत्तम मध्यम और नीच काल होता है ॥४
ज्येष्ठ मास के अंत में प्रतिपदा को सूर्यास्त समय या द्वितिया को
या दक्षिण तरफ चद्रमाको देखना चाहिये ॥४१॥ यदि उत्तर दिशामें
हो तो सुभिक्ष, दक्षिणमें उदय हो तो दुष्काल और मध्यमें उदय
मध्यम-वर्ष हो ॥४२॥

सप्तनाडीचक्रमें शनि सूर्य मंगल बृहस्पति शुक्र बुध और चंद्र

प्रचण्डा प्रथमा नाडी पवना दहनी तत ।
सौम्यिर्नीरजलाख्याता ह्यमृतोकाख्या सप्तमी ॥४४॥
नक्षत्रे ये ग्रहा यत्र रथ्यायांस्तत्र भान् न्यसेत् ।
तिस्र पातालसंज्ञा स्युर्नाड्यस्तिस्रस्तथोर्ध्वगा ॥४५-४६॥
एका मध्यगता नाडी फलमासां परिस्फुटम् ।
मामानुसाराद्विज्ञेयं कृत्तिकादिभसप्तके ॥४६॥
स्वदेवस्तु—
"मध्यमार्गस्थिता सौम्या नाडी तदग्रतस्तत ।
सौम्ययाम्याभि र ज्ञेयं नाडिकानां त्रिकं त्रिकम् " ॥४७॥
याम्यनाडीगता क्रूरा सौम्या सौम्यदिशि स्थिता ।
सौम्यनाडी तु मध्यस्था महानुगफला इमा ॥४८॥
प्रावृट्काले समायाते रवेरार्द्रासमागमे ।
नाडीवेधसमायोगाज्जलवृष्टिर्निवेद्यते ॥४९॥
यत्र नाडीस्थितश्च प्रस्तस्थे क्रूरसौम्यकैः ।
तदा भवेद् महावृष्टिर्यो स्त्र्यंशके शशी ॥५०॥

महा(स म भौ हा स्वा । द ॥४३॥ प्रथम प्रचण्ड नाडी, पवना दहनी, सौम्य और, जल और अमृता ये क्रमसे नाडी के सात नाम हैं ॥ ४४ ॥ रवि आदि ग्रह जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्रसे रखें । तीन नाडी पाताल संज्ञक, तीन नाडी उर्ध्व ग मिनी और एक मध्य नाडी है उनका मासानु- सार वृष्टि यदि सात २ नक्षत्र पर से फल कहा है ॥४५॥४६ ॥ मध्यमें रही हुई सौम्य नाडी है उसके आगे पीछे की सौम्य और याम्यनाडी ये तीन २ जानना ॥ ४७ ॥ याम्यनाडीमें क्रूर ग्रह और सौम्यनाडीमें शुभग्रह, मध्यकी सौम्यनाडी ये सब महोदय गमनसे फलदायक हैं ॥४८॥ वर्षाकाल के समय रविका आर्द्रा में प्रवेश हो उस समय नाडीवेध द्वारा मेघवृष्टि कही जाती है ॥ ४९ ॥ जिस नाडी पर चंद्रमा स्थित हो उस नाडी पर क्रूर

केवलैः सौम्यैः पापैर्वा ग्रहैर्युक्तो यदा शशी ।
दत्ते सुस्थितपानीयं दुर्दिनं भवति ध्रुवम् ॥५१॥
नाडीस्वामियुतश्चन्द्रस्तद् दृष्टो वा जलप्रदः ।
शुक्रदृष्टो विशेषेण यदि क्षीणो न जायते ॥५२॥
पीयूषनाडीगश्चन्द्रो युक्तः खेटैः शुभाशुभैः ।
मुञ्चते तत्र पानीयं दिनान्येकत्र सप्तकम् ॥५३॥
दिनत्रय पूर्णयोगे सार्द्धं दिनं तदर्द्धके ।
पादोनयोगे दिवसो दिनार्द्धं पादतोऽम्बुदः ॥५४॥
निर्जला जलदा नाडी भवेद्योगे शुभाधिके ।
क्रूराधिकसमायोगे जलदाप्यम्बुधाधिका ॥५५॥
सौम्यनाडीगताः सर्वे वृष्टिदाः स्युर्दिनत्रये ।
शेषनाडीगताः सर्वे दुष्टवृष्टिप्रदा ग्रहाः ॥५६॥

और सौम्य ग्रह स्थित हो तो जितना अंश चद्रमा रहे उतना समय महान् वर्षा हो ॥५०॥ यदि चद्रमा केवल सौम्य या पाप ग्रहों से युक्त हो तो वर्षा अच्छी हो तथा दुर्दिन निश्चय करके हो ॥ ५१ ॥ चद्रमा नाडीके स्वामीके साथ हो या दृष्ट हो तो जलदायक होता है, यदि शुक्रसे दृष्ट हो तो विशेष करके जलदायक होता है किंतु चद्रमा क्षीण न हो तो ॥५२॥ अमृतनाडी पर चद्रमा शुभाशुभ ग्रहों से युक्त हो तो एक साथ सात दिन तक वर्षा हो ॥५३॥ पूर्णयोग हो तो तीन दिन, आधा योग हो तो डेढ दिन, पावयोग हो तो एक दिन और पावसे का योग हो तो आधा दिन वर्षा होती है ॥५४॥ शुभग्रहों का योग अधिक हो तो निर्जला नाडी भी जलदायक हो जाती है और क्रूरग्रहोंका योग अधिक हो तो जलदायकनाडी भी वर्षाकी बाधक होती है ॥५५॥ सौम्यनाडी पर सब ग्रह हो तो तीन दिन में वृष्टिदायक होते हैं और बाकी की नाडी पर सब ग्रह हों तो दुष्ट वर्षादायक होते हैं ॥५६॥ याम्यनाडी पर क्रूरग्रह स्थित हो तो विलंब से

याम्यनाडीस्थिता क्रूरा क्रूरा वृष्टिप्रदा मता ।
शुभयुक्ता जलनाड्यां सर्वे वृष्टिविधायिनः ॥५७॥
यामर्क्षे सौम्यनाडीस्थे तत्र चन्द्रसितस्थितौ ।
क्रूरयोगे महावृष्टिरल्पा क्रूरस्य दर्शने ॥५८॥
उदयास्तंगते मार्गे वक्रतायां च खेचरा ।
सचन्द्रजलनाडीस्था मेघोदयकरा मता ॥५९॥

यदाहु श्रीमद्भद्रबाहुगुरुपादाः—

"रेहाहिं कित्तियाइ अट्ठावीसं पि ठवह पंतीए ।
मिच्छाइरूव ताहिं सत्तहिं नाडीहिं मइमोई ॥६०॥
नाडीइ जस्स चंदो पावा सोमा य तस्स जइ हुंति ।
दुन्नो तहिं जाण वुट्ठी इय भासइ भद्दबाहुगुरू ॥६१॥
एसावि य पुणचंदा संजुत्ता केवलाव जइ होइ ।
केवलचन्दा नाडीइ ता नियमा दुद्दिणं कुणइ ॥६२॥

वृष्टिकारक होते हैं । और शुभ ग्रहोंके साथ जलनाडीमें हो तो सब वृष्टिकारक होते हैं ॥ ५७ ॥ जो नक्षत्र सौम्यनाडीमें हो उस पर चंद्र और शुक्र भी स्थित हो और क्रूरग्रह का योग हो तो महान् वर्षा हो तथा क्रूरग्रह की दृष्टि हो तो थोड़ी वर्षा हो ॥ ५८ ॥ ग्रह उदयास्त और वक्री तथा मार्गी होनेके समय में चंद्रमा के साथ जलनाडीमें स्थित हो तो मेघके उदयकारक माना गया है ॥ ५९ ॥

भद्रबाहुस्वामी सप्तनाडी चक्र बनाकर इसमें सीधी रेखामें कृत्तिकादि नक्षत्र स्थापन करके रखें ॥ ६० ॥ जिस नाडी पर चंद्रमा हो उस नाडी पर यदि केवल पाप और शुभ ग्रह हो या दोनों साथ हो तो वर्षा होती है ऐसा भद्रबाहु गुरु कहते हैं ॥ ६१ ॥ ऐसे पूर्ण चंद्रमा अन्यग्रहोंसे युक्त हो या केवल हो तो भी वर्षा होती है । अकेला चन्द्रमा ही नाडीमें स्थित हो तो दुर्दिन निश्चय से होता है ॥ ६२ ॥ इन नाडियों में अमृता दि

एयाणं पि य मज्झे अमियाइ तिए जलासओ अहिओ ।
तुरियाए वाउमिस्सो सेसासु समीरणो अहिओ ॥६३॥
जइ सव्वाणवि जोगो गहाण अमियाइ तिगे अनावुट्टी ।
अट्ठार १८ बार १२ छ ६ दिण सेसासु फल जहापत्तं ॥६४॥
विजला वि वाउनाडी देइ जलं सोमखयरबहुजोगा ।
जलनाडी तुच्छजलं पावाहियजोगओ देइ ॥६५॥
जइ वाउनाडीपत्ता सणिभोमा किमवि नहु जलं दिंति ।
सोमजुआ तेउ जल अइसयजोएण वरिसंति ॥६६॥
+ विसमयरकुंभमीणा सीहो कक्कडयविच्छियतुलाओ ।
सजलाओ रासीओ सेसा सुक्का वियाणाहि ॥६७॥
रविसणिभोमसुक्का चंदविहप्पो य बुहगुरू सुक्को ।
एए सजला णिच्चं णायव्वा आणुपुव्वीए ॥६८॥"

इति भद्रबाहुसंहितायाम् ।

तीन नाडी अधिक जलदायक होती है, चौथी नाडी वायु मिश्र जलदायक है और बाकी की नाडी अधिक वायुकारक हैं ॥ ६३ ॥ यदि समस्त ग्रहों का योग अमृतादि तीन नाडी पर हो तो क्रमसे अठारह बारह और छ दिन अनावृष्टि रहे और बाकी के नाडी का फल यथायोग्य जानना ॥ ६४ ॥ यदि शुभग्रहों का अधिक योग हो तो निर्जला वायुनाडी भी जलदायक हो जाती है और पापग्रहों का अधिक योग हो तो जलनाडी भी तुच्छ जल देती है ॥ ६५ ॥ यदि शनि तथा मंगल वायुनाडी में हो तो कुछ भी जल नहीं देती किंतु शुभग्रहों के साथ अतिशय जोग हो तो जल बरसते हैं ॥ ६६ ॥ वृष मकर कुंभ मीन सिंह कर्कट वृश्चिक और तुला ये राशि जलदायक है और बाकी की शुष्क (निर्जल) हैं ॥ ६७ ॥ रवि शनि मंगल ये शुष्क (निर्जल)

+ टी— कुंभमीनमृगकर्कटवृषवृश्चिकतौलसंज्ञका ।
सप्त स्युर्जलराशय एते शेषा जलवर्जिता पञ्च ॥१॥

विशेषश्चात्र ग्रन्थान्तरात्—

कृत्तिकादिभरणयन्तं सप्तनाडीसमन्वितम् ।
भुजङ्गमीमसंस्थानं चक्रमेव क्रमाल्लिखेत् ॥६९॥
शुभनक्षत्रमाले' शुभवारगतैर्ग्रहै' ।
चन्द्रं सम्पत्ते वृष्टिर्नाडीचक्रे व्यवस्थितम् ॥७०॥
क्रूरा' क्रूरेण सम्मिश्रा' सौम्या' सौम्येन संयुता ।
दुर्दिनं तत्र विज्ञेयं मिश्रेवृष्टिमिहादिशेत् ॥७१॥
शनैश्चरार्कचन्द्राणां यदा याग × शशुभत्या ।
एकनाड्यां तदा दीप्तसन्निपातश्च दुर्दिनम् ॥७२॥
यदा शुक्रेन्दुजीवानामेकनाड्यां समागम' ।
तदा भवेन्महावृष्ट्या सपत्रैकार्णवा मही ॥७३॥
एकनाडी समारूढौ चन्द्रमाधरणीसुतौ ।
यदि तत्र भवेज्जीवो योग एकार्णवस्तदा ॥७४॥

है, पूर्वाषाढा बुध गुरु और शुक्र ये क्रमसे निश्चय से अश्वनामक जानना ॥६८॥

कृत्तिकादिसे भरणी तक के नक्षत्र और सप्तनाडी वाला ऐसा बड़ा भयङ्कर सर्प के आकार का चक्र बनाना ॥६९॥ इसमें शुभनक्षत्र और शुभ ग्रहोंसे चन्द्रमा युक्त हो तो वृष्टिकारक होता है ॥७०॥ क्रूरग्रह क्रूरों के और सौम्यग्रह सौम्यग्रहों के साथ हो तो दुर्दिन जानना और मिश्र हो तो वृष्टिकारक होते हैं ॥७१॥ शनि और सूर्य के साथ या बुध और शुक्र के साथ चन्द्रमा एक नाडी पर हो तो विद्युत्पात और दुर्दिन होता है ॥७२॥ यदि शुक्र चन्द्रमा और बृहस्पति एक नाडी पर हो तो महान् वृष्टिसे पृथ्वी एकार्णव (जलमय) हो जाय ॥७३॥ चन्द्रमा और मंगल एक नाडी पर हो और साथ बृहस्पति भी हो तो पृथ्वी जलमय हो जाय ॥७४॥ शुभ और क्रूर

× ही— आकेऽपि-मसुरगुरु जो बुध मिल नीजा भागिहर जाय। ॥
ल यहां में तुम चन्द्र ... सुर जाय ॥'

ऊर्ध्वनाडीस्थितैर्वायुः खण्डवृष्टिस्तु मध्यगैः ।
ग्रहैः पातालनाडीस्थैः सोम्यैः क्रूरैर्जलं बहु ॥७५॥
ऊर्ध्वनाडीगते शुक्रे चन्द्रेऽधो नाडिकास्थिते ।
महावायुरधो नाड्यां द्वयोर्योगे महाजलम् ॥७६॥
सौम्यग्रहयुते चन्द्रे सौम्यनाडी प्रचारिणी ।
जलराशिप्रसङ्गेन वृष्टियोगः प्रकीर्त्तितः ॥७७॥
एकत्र बुधशुक्राभ्यां जलनाड्यां शशी भवेत ।
महावृष्टिस्तदा वाच्याऽहिचक्रे सप्तनाडिके॥७८॥
अमृतांशुग्रग्य साक्षात् करोत्यमृतवर्षणम ।
स्थितोऽप्यमृतनाड्यां चेत् सौम्यासौम्यसमन्वितः ॥७९॥
इति सप्तनाडीचक्रे चन्द्राद् वृष्टिज्ञानम ।

उत्तरेण ग्रहाणां तु चन्द्रचारो भवेद्यदि ।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं विग्रहो नात्र वत्सरे ॥८०॥
पञ्चतारा ग्रहा यत्र सोमं कुर्वन्ति दक्षिणे ।

ग्रह ऊर्ध्वनाडी पर हो तो वायु चले, मध्यनाडी पर हो तो खण्डवर्षा हो और पातालनाडी पर हो तो वर्षा अधिक हो ॥ ७५ ॥ ऊर्ध्वनाडी पर शुक्र और अध नाडी पर चद्रमा हो तो अध नाडी मे महावायु और दोनों के योगमे महावृष्टि हो ॥ ७६ ॥ चन्द्रमा सौम्यग्रहों के साथ सोम्यनाडी पर हो तो जलराशि के द्वारा वर्षाका योग कहा है ॥ ७७ ॥ सप्तनाडीचक्रमे एकही साथ बुध शुक्र और चद्रमा जलनाडी पर हो तो महान् वर्षा हो ॥ ७८ ॥ यदि चन्द्रमा शुभग्रहों के साथ अमृतनाडी पर हो तो अमृत-जल की वर्षा करता है ॥ ७९ ॥ इति सप्तनाडीचक्र ॥

ग्रहोंके उत्तर भागमे चन्द्रमा हो तो उस वर्षमें सुभिक्ष, क्षेम, और आरोग्यता हो, विग्रह न हो ॥८०॥ यदि पाचग्रह क्रमसे चन्द्रमा के दक्षिण दिशामें हों तो उसका फल—मंगल हो तो राजाको कष्टकारक, शुक्र हो तो

भौमे च राजमारी स्यादन्नमारी च भार्गवे ॥८१॥
बुधे रसक्षयं विद्याद् गुरौ कुर्यान्निरौद्रकम् ।
शनावर्घक्षयं कुर्याद् मासे मासे विलोकयेत् ॥८२॥
विशाखानुराधा ज्येष्ठा च कृत्तिका रोहिणी तथा ।
मघा मृगशिरा मूल तथाषाढा विशाखयो: ॥८३॥
एतेषामुत्तरामार्गे यदा चरति चन्द्रमा: ।
सुभिक्षं क्षेमवृद्धिश्च सुवृष्टिर्जायते तदा ॥८४॥
एतेषां दक्षिणे मार्गे यदा चरति चन्द्रमा: ।
क्षयं गच्छन्ति भूनाथा दुर्भिक्षं च भयं पथि ॥८५॥इति

*अथ चन्द्रोदयफलम्—

चन्द्रोदये मेषराशौ ग्रीष्मे धान्यमहर्घता ।
वृषे माषतिलमुद्गतुच्छधान्यमहर्घता ॥८६॥
कर्पासमुद्रस्तादिमहर्घं मिथुने स्मृतम् ।

मनुष्यों को कष्ट बुध हो तो रसक्षय गुरु हो तो निर्जल और शनि हो तो धनक्षय जानना । यह प्रतिमास देखकर फल कहें ॥८१॥८२॥ विशा, अनुराधा ज्येष्ठा कृत्तिका रोहिणी मघा मृगशिर, मूल पूर्वाषाढा और विशाखा, इन नक्षत्रों के उत्तर भाग में चन्द्रमा चलें तो सुभिक्ष कल्याण की वृद्धि और वर्षा अच्छी हो ॥८३॥८४॥ और इनके दक्षिण मार्ग में चन्द्रमा चले तो राजाओं का विनाश दुर्भिक्ष और मार्ग में भय हो ॥८५॥

चन्द्रमा का उदय मेषराशि में हो तो ग्रीष्म ऋतु में धान्य महँगे हों । वृषराशि में हो तो उड़द तिल मूंग और तुच्छ धान्य महँगे हों ॥८६॥ मिथुनराशि

---

*टी—आ शशि उग साम शनि च चन्द्रमा दिन आय ।
धन पड़े दिन तीसमें कण महँगा हाय ॥१॥
चद मघमि चमकन्त वि जिन्हा भाग पुनर्वसु मघमिच छहा ।
यह दिनके जद उगम मयंका तो महीमंडल कठिकाकंच ॥२॥

अनावृष्टिः कर्कराशौ सिंहे धान्यमहर्घता ॥८७॥
चतुष्पदविनाशोऽपि राज्ञामन्योऽन्यविग्रहः ।
द्विजादिपीडा कन्यायां तुलाक्रयाणकं प्रियम् ॥८८॥
वृश्चिके धान्यनिष्पत्तिर्धनुर्मकरयोः शुभम् ।
कुम्भे चणकमाषादि-तिलानां नाश इष्यते ॥८९॥
मीने सुभिक्षमारोग्यं फल द्वादशराशिजम् ।
एव ज्ञेय द्वितीयायां नियमेऽप्यत्र भावनात् ॥९०॥ इति ।

चन्द्रास्तफलम —

चन्द्रास्ते मेषराशिस्थे सर्वधान्यमहर्घता ।
वृषे च गणिकापीडा मृत्युश्चौरभयं जने ॥९१॥
मिथुनेऽप्यतिवृष्टिः स्याद् बीजवापेन पुष्टये ।
कर्कटेऽप्यतिवृष्टिः स्यात् सिंहे धान्यमहर्घता ॥९२॥

में हो तो कपास, सूत, रूई आदि महँगे हों । कर्कराशि में हो तो अनावृष्टि । सिंहराशि में हो तो धान्य महँगे हों ॥८७॥ तथा पशुओंका विनाश और राजाओं में परस्पर विग्रह हो । कन्याराशि में हो तो ब्राह्मण आदिको पीडा । तुलाराशि में हो तो क्रयाणक (व्यापार) प्रिय हो ॥ ८८॥ वृश्चिकराशि में हो तो धान्यकी उत्पत्ति हो । धनु और मकरराशि में हो तो शुभ होता है । कुंभराशि मे हो तो चणा, उडद, तिल इनका विनाश हो ॥ ८९ ॥ मीनराशि में हो तो सुभिक्ष और आरोग्यता हो । यह बारह राशियोंके फल शुक्ल द्वितीया के दिन याने शुक्ल पक्षमें नवीन चन्द्रोदयके दिन विचार करें ऐसा नियम है ॥ ९० ॥ इति चन्द्रोदय ॥

चद्रमाका अस्त मेषराशि पर हो तो सब प्रकारके धान्य महँगे हों । वृषराशिमें हो तो वेश्याको पीडा, मनुष्यों का अधिक मरण और चोर का भय हो ॥९१॥ मिथुनराशिमें हो तो वर्षा बहुत हो, बीज बोनेसे अधिक पुष्ट हो । कर्कराशि में हो तो वर्षा बहुत हो । सिंहराशि में हो तो धान्य

कन्यायां स्वल्पवृष्टिश्च दुर्भिक्षं धान्यमहर्घता ।
तुलायामल्पवृष्ट्या स्याद् देशभङ्गो भयं पथि ॥६३॥
वृश्चिके मध्यमं वर्षं ग्रामनाशाऽप्युपद्रवात् ।
सुभिक्षं धनुषि धान्यैर्मकरे धान्यपीडनम् ॥६४॥
कुम्भेऽल्पवृष्टिर्धान्यानि महर्घाणि प्रजाभयम् ।
सुखसम्पत्तया मीने मास यावदिदं फलम् ॥६५॥
अमावसी यदा लग्ना तद्राशिरिह चिन्त्यते ।
शुक्लस्यादावुदयवत् चन्द्रास्तकथान्यथा ॥६६॥
वारनक्षत्रफलवत्तद्दिने राशिजं फलम् ।
अमावस्या विचारेण शेषं फलमिहोह्यताम् ॥६७॥ इति ॥
वैशाखे यदि वा ज्येष्ठे उत्तरस्यां विधूदये ।
बहुधा धान्यनिष्पत्त्यै भवेन्मेघमहोदय ॥६८॥

महँगे हो ॥ ६२ ॥ कन्याराशि में हो तो स्वल्पवर्षा और सब प्रकार के धान्य महँगे हो । तुलाराशिमें हो तो वर्षा थोडी देशका भंग और रास्ता में भय हो ॥ ६३ ॥ वृश्चिकमें हो तो वर्षा मध्यम और उपद्रवोंसे गांवका विनाश हो । धनुराशिमें हो तो धान्यसे सुभिक्ष हो । मकरराशि में हो तो धान्यका विनाश हो ॥६४॥ कुंभराशि में हो तो वर्षा थोडी धान्य महँगे और प्रजाको भय हो । मीनराशिमें हो तो सुख संपत्ति हो । यह एकमास तक का फल जानना ॥ ६५ ॥ किन्तु अमावस्या का विचार अमावस जिस समय लगे उस समय राशिका विचार करना जैसे शुक्लपक्षके आदिमें उदय का विचार करते है वैसे चंद्रास्त का विचार है यह अन्यथा नहीं है ॥ ६६ ॥ राशिओं के फल वार नक्षत्र की तरह उस दिन विचार करें और शेष फल अमावसके विचारसे पता करें ॥६७॥

वैशाख और ज्येष्ठ मास में चंद्रमा का उदय उत्तर दिशा में हो तो धान्यकी प्राप्ति अधिक हो तथा मेघका उदय हो ॥६८॥ तिथिका प्रमाण

तिथिः षष्टिघटीमाना त्र्यंशोऽस्या विंशनाडिकाः ।
बृहद् धिष्ण्यस्य चाद्यांशो नाड्यः पञ्चदश स्मृताः ॥९९॥
त्रिंशन्नाड्यो द्वितीयांशो तृतीयेंऽशो युगेषवः ।
राशिभोगात् तथैवेन्दोस्त्र्यंशाः कल्प्याः स्वयं धिया ॥१००॥
बृहद् धिष्ण्यस्य चाद्योंऽशश्चन्द्रतिथ्योरथांशकः ।
आद्ये भवेत् त्रिधा तौल्ये सूर्यो धनुषि याति चेत् ॥१०१॥
उत्तमार्घस्तदा वर्षे रवौ शुभेऽन्विते ऽधिकः ।
यदा तु गुरुधिष्ण्यस्य कण्टकः स्याद् द्वितीयकः ॥१०२॥
चन्द्रराशेस्तिथेश्चापि कण्टकोऽथ द्वितीयकः ।
तदाप्युत्तम एवार्घो विज्ञातव्यो महर्द्धिकैः ॥१०३॥
यदा तु गुरुधिष्ण्यस्य तृतीयकण्टको भवेत् ।
चन्द्रधिष्ण्यतिथेश्चापि तृतीयश्चोत्तमोत्तमः ॥१०४॥
बृहदृक्षाद्यभागश्चेच्चन्द्रतिथ्योर्द्वितीयकः ।
तदापि चोत्तमार्घः स्यान्नक्षत्रस्य स्वभावतः ॥१०५॥

साठ घड़ी और उसका तृतीयांश वीस घड़ी हैं । बृहत्सञ्ज्ञक नक्षत्रका आद्य अंश पंद्रह घड़ी का होता है ॥ ९९ ॥ द्वितीयांश तीस घड़ी का और तृतीयांश पैंतालीस घड़ीका होता है । इसी तरह राशिके भोगसे चंद्रमाका तीन अंश स्वयं बुद्धिसे विचार लेना ॥१००॥ यदि सूर्य धनुराशि पर हो और बृहत्सञ्ज्ञकनक्षत्र चंद्रमा और तिथि ये तीनों आद्य अंश में हो तो ॥ १०१ ॥ उस वर्ष में उत्तम धान्य प्राप्ति हो, यदि सूर्य शुभग्रहों से देखा जाता हो तो विशेष अधिक धान्य प्राप्ति हो । यदि बृहद्नक्षत्र का दूसरा अंश और चंद्रराशि तथा तिथि का भी दूसरा अंश हो तो उत्तम प्राप्ति धनवानोंको जाननी ॥१०२॥१०३॥ यदि बृहद्नक्षत्रका तीसरा अंश हो और चंद्रमा तथा तिथि का भी तीसरा अंश हो तो उत्तमोत्तम प्राप्ति हो ॥१०४॥ बृहद्नक्षत्रका प्रथम अंश और चंद्रमा तथा तिथिका दूसरा अंश

बृहद्भस्याद्यभागश्च प्रान्तश्चन्द्रतिथेरपि ।
तदोत्तमस्त्वर्घ्यार्घपादः स्याच्छास्त्रसम्मतः ॥१०६॥
गुरुर्भमध्यमो भागश्चन्द्रतिथ्योरथान्तिमः ।
तदा मध्यो भवेदर्घो गुरुभप्रभवेभवात् ॥१०७॥
एवं चन्द्रतिथिभ्यां च महद्भे विचारितम् ।
त्रिंशन्मुहूर्तकेऽप्येवमादिमध्यान्तकल्पना ॥१०८॥
मध्यर्क्षस्याद्यभागश्चेच्चन्द्रतिथ्योरथादिमः ।
तदा मध्योत्तमार्घः स्यादाद्यन्त्यस्य विदुषो मतः ॥१०९॥
मध्यर्क्षमध्यभागश्चेच्चन्द्रतिथ्योश्च मध्यमः ।
तदा मध्योत्तमार्घः स्यादन्तिमेऽपि च मध्यमः ॥११०॥
मध्यर्क्षस्यापि मध्यश्चेच्चन्द्रतिथ्योरथादिमः ।
तदापि मध्य एवार्घो द्वयामध्येऽपि मध्यमः ॥१११॥
पञ्चदशमुहूर्ते भ चन्द्रेण तिथिना स्मृतम् ।

हो तो भी नक्षत्रका स्वभावसे उत्तम धान्य प्राप्ति हो ॥१०५॥ बृहत्नक्षत्र का प्रथम भाग और चंद्रमा तथा तिथिका अन्त्यभाग हो तो उत्तम प्राप्ति हो यह शास्त्र में माननीय है ॥१०६॥ बृहत्नक्षत्रका मध्य भाग और चंद्रमा तथा तिथिका अंत्य भाग हो तो नक्षत्रका प्रभावसे मध्यम प्राप्ति हो ॥१०७॥ इसी तरह चंद्रमा तिथि और बृहत्नक्षत्रका विचार किया । उसी तरह तीस मुहूर्तवाला मध्यनक्षत्रका भी आदि मध्य और अन्त्य ऐसे तीन भाग कल्पना करना ॥१०८॥ मध्यनक्षत्रका आदि भाग और चंद्रमा तथा तिथिका भी आदि अंश हो तो मध्यम उत्तम धान्य प्राप्ति हो ऐसा विद्वानों का मत है ॥१०९॥ मध्यनक्षत्रका मध्य भाग और चंद्रमा तथा तिथिका भी मध्य भाग हो तो मध्यम उत्तम हो और अंतिम भाग में हो तो मध्यम प्राप्ति हो ॥११०॥ मध्यनक्षत्र का मध्य भाग और चंद्रमा तथा तिथिका आदि भाग हो तो मध्यम और दोनों मध्य भागमें हो तो भी मध्यम प्राप्ति

आद्यमध्यान्तभागेन जघन्यार्घप्रसाधनम् ॥११२॥
लघ्वर्क्षस्याद्यभागश्चेच्चन्द्रतिथ्योरथादिमः ।
स्याज्जघन्योत्तमार्घोऽपि लघ्वर्क्षमध्यमो यदि ॥११३॥
चन्द्रतिथ्योश्च मध्योऽस्ति तदा जघन्यमध्यमः ।
लघ्वर्क्षस्यान्त्यभागश्चेच्चन्द्रतिथ्योस्तथान्त्यगः ॥११४॥
तदा दुर्भिक्षमादेश्यं नक्षत्रदुष्टभावतः ।
विकल्पैः सकलैरेवं सुभिक्षं पृच्छतां वदेत् ॥११५॥
शुक्रः कुजो बुधः शौरिर्गुरुधिष्ण्येऽस्ति राशिगः ।
तदा जने समर्घं स्यान्मध्यं मध्येऽधमेऽधमम् ॥११६॥

इति धनुःसंक्रमे चन्द्रतिथिनक्षत्रविभागैर्वार्षिकमर्घज्ञानं तदनुसारेण सर्वसंक्रान्तिदिनापेक्षया मासिकमर्घज्ञानं च बोध्यम् । रामविनोदग्रन्थकर्त्ता तु वर्षराजापेक्षया तत्तद्राशिवन्मनुष्याणामायव्ययवद्वान्येऽपि विशेषार्थज्ञानाय यंत्रकं प्राह—

हो ॥१११॥ इसी तरह पन्द्रह मुहूर्त वाला जघन्य नक्षत्र चद्रमा और तिथि इनका आदि मध्य और अन्त्य ऐसे तीन २ भाग जघन्य अर्घ साधन के लिये कल्पना करें ॥११२॥ लघुनक्षत्र का आद्य भाग और चद्रमा तथा तिथि का भी आदि भाग हो तो जघन्य उत्तमार्घ प्राप्ति । लघुनक्षत्रका मध्य भाग और चंद्रमा तथा तिथिका भी मध्यभाग हो तो जघन्य मध्यम । लघुनक्षत्र का अन्त्यभाग और चद्रमा तथा तिथिका भी अन्त्यभाग हो तो नक्षत्र का दुष्टभाव से दुर्भिक्ष कहना । इसी तरह समस्त विकल्पों का विचार कर पूछनेवालेको सुभिक्ष आदि कहें ॥ ११३से११५॥ शुक्र, मंगल, बुध और शनि ये बृहद्नक्षत्र पर हो तो लोक में धान्यादि सस्ते, मध्यनक्षत्र पर हो तो मध्यम और अधमनक्षत्र पर हो तो अधम कहना ॥११६॥ यह धनुसंक्राति में चद्रमा तिथि और नक्षत्र के विभाग द्वारा वार्षिक अर्घज्ञान कहा । इसी तरह सब संक्रातिके दिनकी अपेक्षासे मासिक अर्घज्ञान जानना चाहिये ।

सप्तोपरीदशाधै: संशोधितमिदमायव्ययचक्रम्—

	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
र	२ १४	११ ५	१४ २	८ २	११ ११	१४ २	११ ५	२ १४	५ ५	८ १४	८ १४	५ ५
सो	१४ २	८ ११	११ ८	५ ८	८ २	११ ८	८ ११	१४ २	२ ११	१४ १४	१४ १४	२ ११
मं	८ १४	२ ८	५ ५	१४ २	२ ११	५ ५	२ ८	८ १४	११ ५	१४ १४	१४ १४	११ २
बु	५ ५	१४ ११	२ ११	११ ८	१४ २	२ ११	१४ ११	५ ५	८ ११	११ ५	११ ५	८ ११
गु	११ ५	५ १४	८ ११	२ ११	५ ५	८ ११	५ १४	११ ५	१४ ११	२ ८	२ ८	१४ ११
शु	२ ८	११ १४	१४ ११	८ ११	११ ५	१४ ११	११ १४	२ ८	५ १४	८ ८	८ ८	५ १४
श	१४ १४	८ ८	११ ५	२ ५	८ १४	११ ५	८ ८	१४ १४	२ ८	५ २	५ २	२ ८

इति वर्षराजस्योपरि सर्वराशिषु आयव्ययपत्रस्थापना।
आयेऽधिके समर्घत्वं महर्घत्वं व्ययेऽधिके।
द्वयोः साम्ये च समता त्रिधा धान्यार्घता मता ॥११७॥

रामविनोद ग्रन्थकारक तो वर्षराजकी अपेक्षासे इन १२ राशियों की तरह मनुष्योंका आय व्ययकी तरह साम्यमें भी विचार जानने के लिये यंत्र कहते हैं—

आय अधिक हो तो सस्ते, व्यय अधिक हो तो महँगे और दोनों

धातुमूलजीववस्तुष्वेवमर्घं समादिशेत् ।
ग्रहवेधो न चेत्तत्र सर्वतोभद्रसम्भवः ॥११८॥
सकलापि कलाभृतः कला यदियं नास्त्यचला चलाचला।
जलदैर्जलदैन्यवारकै-र्बहुधान्योदयलब्धवारकैः ॥११९॥



अथ मङ्गलचारः ।

नक्षत्रोपरिचारफलम्—

शीतपीडाश्विनीभौमे तुषधान्यमहर्घता ।
द्विजपीडा भरण्यारे नाशः स्यादतसीद्रुमे ॥१२०॥
सर्वदेशे ग्रामपीडा धान्यानां च महर्घता ।
कृत्तिकायां मङ्गलः स्याद् भङ्गोऽपि तापसाश्रमे ॥१२१॥
वृक्षपीडा श्वापदानां रोगः स्याद् रोहिणीकुजे ।
महर्घतापि कर्पासे वस्त्रे सूत्रे विशेषतः ॥१२२॥

बराबर हो तो समान भाव रहैं, यह तीन प्रकारसे धान्यकी अर्घता व ११७॥ इसी तरह धातु मूल और जीव वस्तुओंका भाव कहैं, यदि सर्वतोभद्रसे उत्पन्न ग्रहवेध न हो तो ॥ ११८ ॥ कलाको धारण वाले चन्द्र की कला जल की दीनता को निवारण करनेवाले तथा धान्य के उदयकी प्राप्ति को निवारण करनेवाले ऐसे मेघोंसे नहीं हैं किन्तु चलाचल है ॥११९॥

मगल अश्विनीनक्षत्र पर हो तो शीतकी पीडा, तुष और धान्य हो । भरणीनक्षत्र पर मगल हो तो ब्राह्मणोंको पीडा, और वृक्षमें का नाश हो ॥१२०॥ तथा सब देशोंमें गॉवको पीडा और धान्य हो । कृत्तिकामें मगल हो तो तापसोंके आश्रम का विनाश हो ॥१ रोहिणी में मगल हो तो वृक्षों का नाश तथा पशुओं को रोग हो ।

कार्पासनाशं भयदं सुभिक्षं,
मृगे कुजे भूजलपूरितेव।
वृष्टिर्न रौद्रेऽदितिजे चिराणां,
भिक्षाविनाशो महिषीसुतानाम् ॥१२३॥
पुष्ये कुजे चौरभयं विनाशश्च शुभं न किञ्चिन्नृपनिर्धनत्वम्।
सार्पेऽल्पवृष्टिर्बहुधान्यनाशाद्, दुर्भिक्षमेवोरगतश्च भीतिः॥
पैत्र्ये न वृष्टिस्तिलमाषमुद्ग- विनाशनं दुर्भिक्षमन्नधान्ये ।
भाग्यानिलये भूमिजेऽल्पवृष्टिः प्रजासु पीडा गुडतैलमूल्यम्॥
तथोत्तरायां जलवृष्टिरापागतुन्दर पाटनमश्वमूल्यम्।
हस्ते कुजेऽल्पाम्बु च तुच्छधान्यं, ३ -
घृतं गुडं वा लवणं महर्घम् ॥१२६॥
चित्राकुजे तामसजा निपीडा,
शालीष्टगापूमर्मल्पनापि ।

कपास, पाट, गुड़ व विनाश करके महँगे हों ॥१२२॥ मृगशिर में मंगल हो तो कपास का विनाश तथा बहुत सुभिक्ष हो और पृथ्वी जलमग्न पूर्ण हो। आर्द्रा में मंगल हो तो वर्षा न हो। पुनर्वसु में मंगल हो तो चिर और भिक्षुकों का विनाश हो ॥१२३॥ पुष्यमें मंगल हो तो चोरों का भय हो विनाश हो जान व पुष्य भी शुभ न हो और राजा निर्धन हो। आश्लेषा में मंगल हो तो वर्षा थोड़ी, बहुत धान्यका विनाश होनेसे दुर्भिक्ष और सर्पोंका भय हो ॥ १२४ ॥ मघामें मंगल हो तो वर्षा न हो, तिल उड़द और मूँगका विनाश तथा धान्य दुर्भिक्ष हो। पूर्वाफाल्गुनीमें मंगल हो तो वर्षा थोड़ी प्रजा में पीड़ा गुड़ और तेल तेज हो ॥ १२५ ॥ उत्तराफाल्गुनीमें मंगल हो तो अन्न। दक्षिण देशके पशुओं में पीड़ा तथा घोड़ों का मूल्य अधिक हो। हस्त में मंगल हो तो जल थोड़ा, तुच्छ धान्य घी गुड़ और लवण (नमक) ये महँगे हों ॥१२६॥ चित्रामें मंगल

स्वातावनावृष्टिरथ द्विदेवे,
　कर्पासगोधूमहर्घभावः ॥१२७॥
मैत्रे सुभिक्षं पशुपक्षिपीडा,
　ज्येष्ठाकुजे स्वल्पजलं च रोगाः ।
मूले द्विजक्षत्रियवर्गपीडा,
　महर्घता वा तुषधान्यराशेः ॥१२८॥
पूषा कुजे भूरि जलाः पयोदा,
　गावोऽल्पदुग्धा वसुधान्नपूर्णा ।
महर्घता शालितिलाज्यमाषे
　ष्वग्रेऽपि तत्पूर्ववदेव भाव्यम् ॥१२९॥
श्रुतौ च रोगा बहुधान्ययोगो, भूम्यां न पश्चाज्जलदागमश्च ।
स्याद्वासवे वासववत्समृद्धि-र्धान्यैः समर्घं गुडशर्करादि ॥१३०॥
स्युर्वारुणे कीटकमूषकाद्यास्तथापि धान्यानि बहूनि भूम्याम् ।

हो तो तीव्ररोग की बहुत पीडा, चावल और गेहूँ महँगे हो । स्वाति में मंगल हो तो अनावृष्टि हो । विशाखा में मंगल हो तो कपास और गेहूँ महँगे हो ॥१२७॥ अनुराधा में मंगल हो तो सुभिक्ष और पशु पक्षियों को पीड़ा हो । ज्येष्ठामें मंगल हो तो जल थोडा तथा रोग हो । मूल में मंगल हो तो ब्राह्मण और क्षत्रिय वर्ग को पीडा, या तुष और धान्य महँगे हों ॥१२८॥ पूर्वाषाढामें मंगल हो तो बहुत जल देनेवाले मेघ हों, गौ दूध थोडा दें तथा पृथ्वी धान्यसे पूर्ण हो । चावल, तिल, घी, उडद ये महँगे हो । उत्तराषाढामें भी पूर्वाषाढाकी तरह जानना ॥१२९॥ श्रवण में मंगल हो तो रोग हो, धान्य की अधिक प्राप्ति और पीछे भूमि पर वर्षा न हो । धनिष्ठामें मंगल हो तो इन्द्रकी तरह समृद्धि हो, धान्य और गुड चीनी सस्ते हों ॥ १३० ॥ शतभिषा में मंगल हो तो कीट चूहा आदिका उपद्रव हो तो भी पृथ्वीमें बहुत धान्य हो । पूर्वाभाद्रपदामें मंगल

पूर्वाभद्रिजे तिलयवमसूरकर्पासपूगादिमहर्घता वा ॥१११॥
दुर्भिक्षमेवोत्तरभाद्रिकायां,
यथा न मेघो मघनेऽपि किञ्चित्।
सौख्यं सुभिक्षं क्षितिजे सपौष्ण्ये
नरेषु रोगा पशुधान्यपक्षक्षया ॥११२॥ इति ॥

मङ्गलवक्रित्वम्—

यत्र राशौ कुजो याति वक्रं तत्र सुनिश्चितम्।
तद्धान्यानि क्रयाणानि महर्घाणि भवन्ति हि ॥११३॥
मकरे मङ्गले सौख्यं ततः कुम्भादिपञ्चके।
यदा गच्छेत्तदा दौस्थ्यं तुलायामपि मङ्गले ॥११४॥
कर्पासरसमञ्जिष्ठा पट्टसूत्रास्त्वादिता।
सक्रूरे मङ्गले विद्धे क्रूरान्तरगतेऽपि च ॥११५॥
मीने मेषे च सिंहे धनुषि वृषमृगे वक्रिणौ मन्दभौमौ,

हो तो तिल, जव, रुई, कपास, सोपारी आदि महँगे हों ॥ १११ ॥ उत्तराभाद्रपदामें मंगल हो तो दुर्भिक्ष हो तथा बिन्दुमात्र भी वर्षा न बरसे। रेवतीनक्षत्रमें मंगल हो तो पृथ्वी पर सुख और सुभिक्ष हो, मनुष्योंमें रोग और धान्य पशुओंकी अधिकता हो ॥११२॥

जिस राशिमें मंगल हो उस राशि में निश्चय करके वक्री होता है। यदि वक्री हो तो क्रयाणक महँगे हो ॥ ११३ ॥ मकरमें मंगल वक्री हो तो सुख और कुंभादि पांच राशि तथा तुलाराशि में मंगल वक्री हो तो दुःख हो ॥११४॥ कपास रस और मँजीठ ये महँगे हो। मंगल क्रूरग्रहों के साथ हो या अलग होकर क्रूरग्रहोंसे वेधित हो तो भी कपास आदि महँगे हों ॥११५॥ मीन, मेष, सिंह, धनु वृष और मकर इन राशियों में मंगल तथा शनि वक्री हो तो पृथ्वी संक्लिष्ट देहवासी हो घोड़े और हाथियों का मरण, राजाओं का विग्रह, दुर्भिक्ष, धान्य का विनाश, भय,

पृथ्वी संक्षिप्तदेहा हयभटमरणं विग्रहः पार्थिवानाम्।
दुर्भिक्षं धान्यनाशो भयरुधिररुजः पित्तरोगः प्रजानां,
पीड्यन्ते गौगजाश्वा वृषमहिषनरा मार्गगौ तौ न यावत्॥१३६॥

ग्रन्थान्तरे—

सिंहे मीनेऽथ कन्यामिथुनधनुषि वा वक्रितौ मन्दभौमौ,
पृथ्वीमुद्वासरूपां रिपुदलदलितां विग्रहान्तां च घोराम्।
दुर्भिक्षं सस्यनाशं भयमपि कुरुतः पापरोगं प्रजानां,
पीड्यन्ते गोमहिष्यो भुवि नरपतयः पापचिन्ता भवन्ति॥१३७॥

कन्यामीनधनुःसिंहेष्वार्किभौमौ च वक्रितौ।
कुर्वन्ति विभ्रमं लोके नृपाणां क्षयकारकौ॥१३८॥

कृत्तिकारोहिणीसौम्यमघाचित्राविशाखिकाः।
ज्येष्ठानुराधामूलानि पूर्वाषाढा तथा पुनः॥१३९॥

एतेषां चैव ऋक्षाणां भौमः शुक्रस्तथा शनिः।
उत्तरस्यां यदा यान्ति मास्याषाढे विशेषतः॥१४०॥

रुधिरव्याधि, प्रजाओं को पितका रोग, गौ, हाथी, घोडा, बैल, भैंस और मनुष्य ये सब जब तक शनि और मंगल मार्गगामी न हो तब तक दुःखी हो॥१३६॥ ग्रन्थान्तर में— सिंह मीन कन्या मिथुन और धनु इन राशि पर शनि तथा मंगल वक्री हो तो पृथ्वी द्वेप रूपवाली, शत्रु दलसे दलित और घोर विग्रहवाली हो, दुर्भिक्ष, धान्यका विनाश और भय, प्रजा पाप रोगसे दुःखी, गौ भैंस आदि पशुओंको दुःख और राजाओं पाप चिन्ता वाले हो॥ १३७॥ कन्या मीन धनु और सिंह इन राशिमें शनि तथा मंगल वक्री हो तो लोकमें विभ्रम और राजाओंका क्षयकारक होते हैं॥१३८॥ कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर, मघा, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, अनुराधा, मूल और पूर्वाषाढा इन नक्षत्रों के उत्तर भागमें मंगल, शुक्र और शनि ये आषाढमासमें विशेष कर आवे तो दुर्भिक्ष, सस्यनाश और आरोग्य हो, मध्य में

सुभिक्षं क्षेममारोग्य मध्ये च मध्यमं फलम् ।
दक्षिणेन यदा यान्ति ईतिरोगभयं भवेत् ॥१४१॥
कुलके-"सुरगुरु रविसुय धरणिसुय, जइ एकस्य मिलंति।
भू मिकपाले मडिया, भाटे मीख ममन्ति ॥१४२॥
जइ चवइ धरणिसुओ विसाहमहमूलकत्तियारुढो।
धर्म कुणइ महग्यं इक्कं निवइं विणासेइ" ॥१४३।
चक्रस्याङ्गारके वृष्टिरुदये च बृहस्पते ।
शुक्रस्यास्तंगमे वृष्टिस्त्रिधा वृष्टि शनैश्चरे ॥१४४॥
लोकेऽपि-"सुक्कर केरे अस्थमण, मंगल केरे चाल ।
राउ तीया मूर्मी मरे, कइ बरसे मेह अकाल ॥१४५॥
भौमशुक्रार्किजीवाना-मेकाऽपीन्दुं भिनत्ति चेत् ।
पतत्सुभटकोटीभि' प्रीतमेता तदा क्षिमृ' ॥१४६॥
मेषवृश्चिकयोर्मध्ये यदा तिष्ठति भूसुत' ।
तदा धान्यं महर्घं स्यान्मासत्रयमुदाहृतम् ॥१४७॥

भागे तो मध्यम और दक्षिण भागमें भाव तो ईति और रोग भय हो ॥ ११६ ॥ १४ ॥ १४१ ॥

यदि बृहस्पति शनि और मंगल ये एक साथ हो तो महा युद्ध और बड़ा दुष्काल हो ॥ १४२ ॥ यदि विशाखा मघा मूल और कृत्तिका इन नक्षत्रों पर मंगल वक्री हो तो धनाज महँगे हो और कोई एक राजा का विनाश हो ॥ १४३ ॥ मंगलके वक्रने पर वर्षा बृहस्पति के उदय में वर्षा शुक्र का अस्त में वर्षा और शनैश्चर की तीनों अवस्थाओं में वर्षा होती है ॥१४४॥ शुक्रके अस्तमें मंगलका उदय हो तो राजाओं युद्ध में मरें, कहीं वर्षा और कहीं दुष्काल हो ॥१४५॥ मंगल शुक्र और बृहस्पति इनमें से एक भी चंद्रमाको भेदता हो तो गिरे हुए सुभट समूह से पृथ्वी प्रेतमय हो ॥१४६॥ मेष और वृश्चिकके बीच में मंगल स्थित हो

लोकेऽपि—"रविराहुशनिश्चरभूमिसुता,
उदयन्ति च मध्यमराशिगताः ।
धनधान्यहिरण्यविनाशकरा,
विलयन्ति महीपतिछत्रधराः" ॥१४८॥
*शनिर्मीने गुरुः कर्के तुलायामपि मङ्गलः ।
यावच्चरति लोकस्य तावत्कष्टतरस्तरा ॥१४९॥
भौमस्याधो गुरुस्तिष्ठेद् गुर्वधोऽपि शनैश्चरे ।
ग्रहाणां मुशलं ज्ञेयमिदं जगदरिष्टकृत् ॥१५०॥
रविराशेः पुरो भौमो वृष्टिसृष्टिनिरोधकः ।
भौमाद्या याम्यगाश्चन्द्राच्चत्वारो वृष्टिनाशकाः ॥१५१॥
ग्रहवक्रफलम्—
भौमवक्रे अनावृष्टिर्बुधवक्रे धनक्षयः ।
गुरुवक्रे स्थिरो रोगो शुक्रवक्रे सुखी प्रजा ॥१५२॥

तब दो मास धान्य तेज रहे ॥ १४७ ॥ रवि राहु शनि और मगल ये मध्यम राशिमें उदय हो तो धन धान्य सुवर्ण का विनाश करें तथा छत्रधारी राजाका नाश हो ॥१४८॥ मीनराशि पर शनि, कर्क पर गुरु और तुला पर मगल जब तक रहे तब तक कष्ट रहें ॥१४९॥ मगल के नीचे बृहस्पति, और बृहस्पति के नीचे शनि हो तो यह ग्रहों का मुशल योग जानना यह जगत्को अरिष्ट करनेवाले हैं ॥ १५० ॥ सूर्य राशिसे आगे मगल हो तो वर्षाकी उत्पत्ति को रोके और चद्रमा से मगल आदि चार ग्रह दक्षिण ओर हो तो वृष्टि का नाशकारक होते हैं ॥ १५१ ॥ मगल के वक्री होनेमें अनावृष्टि, बुधके वक्री होनेमें धन का क्षय, गुरुके वक्रीमें रोगकी स्थिति, शुक्रके वक्री में प्रजा सुखी ॥ १५२ ॥ शनि के वक्री में

---

*टा—मीनशनैश्चर कर्कगुरु, जो तुलमगल होइ ।
गेहूं गोरस सालि धीय, विरलो चाखे कोइ ॥१॥

सुभिक्षं क्षेममारोग्यं मध्ये च मध्यमं फलम् ।
दक्षिणेन यदा यान्ति ईतिरोगभयं भवेत् ॥१४१॥
कुलके-"सुरगुरु रविसुय धरणिसुय, जइ एकत्थ मिलंति।
भूमिकुचाले मंडिया, भाते भीख भमन्ति ॥१४२॥
जइ वक्कइ धरणिसुत्रो विसाहमहमूलकत्तियारुढो ।
घमं कुणइ महग्वं इक्कं निवइं विणासेइ" ॥१४३.।
चलत्यङ्गारके वृष्टिरुदये च बृहस्पतेः ।
शुक्रस्यास्तंगमे वृष्टिस्त्रिधा वृष्टिः शनैश्चरे ॥१५४॥
लोकेऽपि-"सुक्कइ केरे अत्थमण, मंगल केरे चाल ।
राउ तीया भूमी मरे, कइ वरसे मेह अकाल ॥१४५॥
भौमशुक्रार्किजीवाना-मेकोऽपीन्दुं भिनत्ति चेत् ।
पतत्सुभटकोटीभिः प्रीतप्रेता तदा भूः ॥१४६॥
मेषवृश्चिकयोर्मध्ये यदा तिष्ठति भूसुनः ।
तदा धान्यं महर्घं स्यान्मासद्वयमुदाहृतम् ॥१४७॥

आवे तो मध्यम और दक्षिण भागमें आवे तो ईति और रोग भय हो ॥ १३९ ॥ १४० ॥ १४१ ॥

यदि बृहस्पति शनि और मंगल ये एक साथ हो तो महा युद्ध और बड़ा दुष्काल हो ॥ १४२ ॥ यदि विशाखा, मघा, मूल और कृत्तिका इन नक्षत्रों पर मंगल वक्री हो तो अनाज महँगे हों और कोई एक राजा का विनाश हो ॥ १४३ ॥ मंगलके बदलने पर वर्षा, बृहस्पति के उदय में वर्षा, शुक्र का अस्त में वर्षा और शनैश्चर की तीनों अवस्थाओं में वर्षा होती है ॥१४४॥ शुक्रके अस्तमें मंगलका उदय हो तो राजाओं युद्ध में मरें, कहीं वर्षा और कहीं दुष्काल हो ॥१४५॥ मंगल शुक्र और बृहस्पति इनमें से एक भी चंद्रमाको वेधता हो तो गिरे हुए सुभट समुह से पृथ्वी प्रेतमय हो ॥१४६॥ मेष और वृश्चिकके बीच में मंगल स्थित हो

लोकेऽपि-"रविराहुशनिश्चरभूमिसुता,
उदयन्ति च मध्यमराशिगताः।
धनधान्यहिरण्यविनाशकरा,
विलयन्ति महीपतिछत्रधराः" ॥१४८॥
*शनिर्मीने गुरुः कर्के तुलायामपि मङ्गलः।
यावच्चरति लोकस्य तावत्कष्टकरकरा ॥१४९॥
भौमस्याधो गुरुस्तिष्ठेद् गुर्वधोऽपि शनैश्चरे।
ग्रहाणां मुशलं ज्ञेयमिदं जगदरिष्टकृत् ॥१५०॥
रविराशेः पुरो भौमो वृष्टिसृष्टिनिरोधकः।
भौमाद्या याम्यगाश्चन्द्राच्चत्वारो वृष्टिनाशकाः ॥१५१॥
ग्रहवक्रिफलम्—
भौमवक्रे अनावृष्टिर्बुधवक्रे धनक्षयः।
गुरुवक्रे स्थिरो रोगो शुक्रवक्रे सुखी प्रजा ॥१५२॥

तब दो मास धान्य तेज रहें ॥ १४७ ॥ रवि राहु शनि और मंगल ये मध्यम राशिमें उदय हो तो धन धान्य सुवर्ण का विनाश करें तथा छत्रधारी राजाका नाश हो ॥१४८॥ मीनराशि पर शनि, कर्क पर गुरु और तुला पर मंगल जब तक रहे तब तक कष्ट रहें ॥१४९॥ मंगल के नीचे बृहस्पति, और बृहस्पति के नीचे शनि हो तो यह ग्रहों का मुशल योग जानना यह जगतको अरिष्ट करनेवाले हैं ॥ १५० ॥ सूर्य राशिसे आगे मंगल हो तो वर्षाकी उत्पत्ति को रोके और चंद्रमा से मंगल आदि चार ग्रह दक्षिण ओर हो तो वृष्टि का नाशकारक होते हैं ॥ १५१ ॥ मंगल के वक्री होनेमें अनावृष्टि, बुधके वक्री होनेमें धन का क्षय, गुरुके वक्रीमें रोगकी स्थिति, शुक्रके वक्री में प्रजा सुखी ॥ १५२ ॥ शनि के वक्री में

---

*टी-मीनशनैश्चर कर्कगुरु, जो तुलमंगल होइ।
गेहूं गोरस सालि धीय, विरलो चाखे कोइ ॥१

शनिवक्रे जने पीडा राहुः स्यादग्निकारकः ।
चतुर्ग्रहा न वक्राः स्युर्युगपचेति मन्यते ॥१५३॥
पाठान्तरे–भौमवक्रे भूपयुद्धं बुधवक्रे धनक्षयः ।
गुरुवक्रे सुभिक्षं च वक्रे शुक्रे प्रजासुखम् ॥१५४॥
शनिवक्रे महामारी रौरवं च भयं पथि ।
धनधान्यं च वस्त्रं च रुण्डमुण्डा च मेदिनी ॥१५५॥
यत्र मासे ग्रहाः सर्वे वक्रत्वं यान्ति दैवतः ।
तन्मासेऽतिमहर्घं स्याद् धान्यं वा राजविग्रहः ॥१५६॥
श्रावणे शनिवक्रत्वे भौमस्यास्तोदयो यदा ।
तदा युध्यन्ति भूमीशा द्विमासान्तर्न संशयः ॥१५७॥

अतिचारफलम्—

सौम्यैकवक्रोऽप्यशुभातिचारः,
करोति सर्वं विपुलं समर्घम् ।
क्रूरैकवक्रश्च शुभातिचारो,
धान्यं विधत्ते भुवने महर्घम् ॥१५८॥

मनुष्योंमें पीडा और राहु के वक्रीमें अग्निका उपद्रव हो । एक साथ चार ग्रह वक्री नहीं होते हैं ऐसी मान्यता है ॥१५३॥ पाठान्तर– मंगल वक्री हो तो राजाओंका युद्ध, बुध वक्री हो तो धन का क्षय, गुरु वक्री हो तो सुभिक्ष, शुक्र वक्री हो तो प्रजाको सुख ॥ १५४ ॥ शनि वक्री हो तो महामारी, मार्गमें महाभय, धन धान्य और वस्त्र महँगे तथा पृथ्वी रूंडमुंड हो ॥ १५५॥ जिस महीनेमें दैवयोगसे सब ग्रह वक्री हो तो उस महीनेमें धान्य महँगे हो या राजाओंमें विग्रह हो॥१५६॥ श्रावणमें शनि वक्री हो और मंगलका अस्त या उदय हो तो राजाओं दो महीनेके भीतर युद्ध करें इसमें संशय नहीं ॥१५७॥

सौम्य एक ग्रह वक्री हो और एक अशुभ ग्रह शीघ्रगामी हो तो सन-

सुभिक्षं च तदेव स्याद् वक्रत्वे सितसौम्ययोः ।
वक्रत्वे तु गुरोर्नूनं राशिप्रान्ते महर्घकम् ॥१५९॥
कन्यायां बुधवक्रत्वे सुभिक्षं निश्चितं मतम् ।
वर्षाकालेऽप्यतिचारे महर्घं भुवि जायते ॥१६०॥
भौमार्क्योरप्यतिचारे सुभिक्षं भवति स्फुटम् ।
सौम्यानामप्यतिचारे धिष्ण्यहानौ तु निष्कणम् ॥१६१॥

राशिपरत्वे मंगलोदयफलम्—

मेषे भूमिसुतोदये च चपला मापास्तिलाः स्युः प्रिया,
नाशः स्याच्च वृषे चतुष्पदकुले युग्मेऽन्नदुष्प्रापता ।
वैश्यानां बहुपीडनं शशिगृहे वृष्ट्यातिधान्योदयः,
सिंहे शालिमहर्घता द्विजरुजः कन्योदये भूसुवः ॥१६२॥
धान्यानि भूयांसि तुलोदये स्युः,
कन्याद्वये तेन सुभिक्षमेव ।

स्त धान्य वहुत सस्ते करें । एक क्रूर ग्रह वक्री हो और एक शुभ ग्रह शीघ्रगामी हो तो पृथ्वीमें धान्य महँगे करें ॥१५८॥ शुक्र और बुध के वक्री होनेमें सुभिक्ष होता है और बृहस्पतिके वक्रीमें राशिके अंत्यभागमें निश्चय करके महँगे हो ॥१५९॥ कन्याराशिमें बुध वक्री हो तो निश्चयसे सुभिक्ष हो किंतु वर्षा ऋतु में अतिचारी हो तो पृथ्वी पर महँगे हो ॥ १६० ॥ मंगल और शनि अतिचारी हो तो उत्तम सुभिक्ष होता है । बुधका शीघ्र गमनमें नक्षत्रकी हानि हो तो धान्य प्राप्ति न हो ॥१६१॥

मंगलका उदय मेषराशिमें हो तो चवला, उडद, तिल इनका आदर हो । वृषराशिमें हो तो पशुओं का नाश हो, मिथुनराशि में हो तो अन्न कठिनतासे मिले, कर्कराशिमें हो तो वैश्योंको पीडा तथा वर्षादसे धान्य बहुत प्राप्त हो । सिंहराशिमें चावल महँगे हो । कन्याराशिमें हो तो ब्राह्मण और क्षत्रियोंको रोग प्राप्ति ॥१६२॥ तुलाराशिमें हो तो धान्य बहुत हो,

चौराग्निभीतिर्नृपदुष्टनीति-
निष्पत्तिरत्नस्य तु वृश्चिकस्थे ॥१६३॥
धनुषि रसातलवृष्टिः शालिगुडादेर्महर्घता मकरे।
पश्चिमधान्यविनाशो वर्षाप्यतिशायिनी देशे ॥१६४॥
कुम्भे तीडागमात् पीडा यदि वा मूषिकादिना।
मीने कुजोदयान्नैव वर्षा दुर्भिक्षसाधनम् ॥१६५॥ इति ॥

मंगलास्तंगमफलम्—

मङ्गलास्तंगमान्मेषे पाषाणानां महर्घता।
तृणादेः खलु वस्तूनां सुभिक्षं सुस्थता वृषे ॥१६६॥
युग्मेऽतिवृष्टिः कर्कस्थे तस्मिन् भूधान्यशून्यता।
सिंहेऽश्वखरयोः पीडा चतुष्पदमहर्घता ॥१६७॥
कन्याद्वये महर्घाः स्युर्गोधूमाश्चणका यवाः।
अलौ सुभिक्षं नृपभी-र्धनुर्महर्घशालिकृत् ॥१६८॥

इसलिये कन्या और तुला में सुभिक्ष कहा है। वृश्चिक में हो तो चोर तथा अग्निका भय हो, राजनीति में अन्याय और अन्नकी प्राप्ति हो ॥ १६३ ॥ धनुराशिमें हो तो वृष्टि रसातल में हो, चावल गुड आदि महँगे हो। मकर में हो तो पश्चिम देशके धान्यका विनाश तथा देशमें वर्षा बहुत हो ॥ १६४॥ कुंभराशिमें टीड़ीका आगमनसे दुःख या चूहे आदि का उपद्रव से दुःख हो। मीनराशिमें मंगल का उदय हो तो वर्षा न हो और दुर्भिक्ष हो ॥ १६५॥

मंगलका अस्त मेषराशिमें हो तो पत्थर महँगे हो। वृषराशिमें हो तो तृण आदि वस्तुओंकी सुभिक्षता और नीरोग्यता हो ॥ १६६ ॥ मिथुनराशिमें हो तो वर्षा अधिक हो। कर्कराशिमें हो तो भूमिके धान्य शून्य हो। सिंहराशिमें हो तो घोडे तथा खचरोंको पीडा और पशु महँगे हों ॥ १६७॥ कन्या और तुलाराशिमें हो तो गेहूँ चणा और यव ये महँगे हों। वृश्चिकराशिमें हो तो सुभिक्ष तथा राजाओंका भय हो। धनराशिमें हो तो चा-

तुच्छधान्यं गुडस्तद्वन्मकरे विपुलं जलम् ।
चौरवह्निभयं देशे कुम्भे राजसु विग्रहः ॥१६९॥
मीने कुजास्तंगमनादन्नमनागाकुला प्रजा ।
बहुप्रजा सुभिक्षेण सोत्सवः शुभलक्षणः ॥१७०॥
इति मङ्गलचारविचारः ।

अथ बुधचारः ।

नक्षत्रोपरिगमनफलम्—

बुधेऽश्विन्यां तु पीड्यन्ते गोधूमाश्च यवादयः ।
इक्षुदुग्धरसादीनां समर्घं च घृतादिषु ॥१७१॥
बुधे भरण्यां मातङ्गपीडा चाण्डालनाशनम् ।
तीव्ररोगा धान्यवस्तुमहर्घं लोकवैरतः ॥१७२॥
कृत्तिकायां बुधे विप्रपीडा मेघाल्पता जने ।
अन्नमल्पं ज्वरबाधा क्वचिद्विग्रहकारणम् ॥१७३॥

दल आदि ॥ १६८ ॥ तुच्छ धान्य और गुड महँगे हो । मकरराशिमें हो सो इसी तरह तुच्छ धान्य और गुड महँगे हो और वर्षा अधिक हो । कुंभराशिमें हो तो देशमें चोर अग्निका भय हो तथा राजाओंमें विग्रह हो ॥ १६९ ॥ मीनराशिमें मंगलका अस्त हो तो अन्न थोडे हो और प्रजा व्याकुल हो । पीछे सुभिक्ष हो तथा प्रजामें अच्छे महोत्सव हो ॥ १७० ॥ इति मंगलचारः ॥

अश्विनीमें बुध हो तो गेहूँ और यव आदिका नाश हो, ईख दूध घी आदि रस सस्ते हों ॥ १७१ ॥ भरणीमें बुध हो तो हाथियों को पीडा, चाण्डालका नाश, तीव्र रोग, धान्य वस्तु तेज और लोकमें वैर हो ॥ १७२ ॥ कृत्तिकामें बुध हो तो ब्राह्मणको पीडा, वर्षा थोडी, अन्न थोडे, मनुष्योंमें ज्वर पीडा तथा कहीं विग्रह हो ॥ १७३ ॥ रोहिणीमें बुध हो तो कपास,

भ्राह्मयां बुधे च कर्पासतिलरूतमहर्घता ।
मृगशीर्षे सुभिक्षं स्याद् वातवृष्टिर्महोयसी ॥१७४॥
गोधूमतिलमाषादिसमर्घं सुखिनो जनाः ।
आर्द्रायां वृष्टिरतुला गृहपातः प्रवाहतः ॥१७५॥
पुनर्वसौ बालपीडा कर्पासरूतमन्दता ।
जनेषु सर्वसंयोगः पुष्ये राज्ञां भयं जयः ॥१७६॥
आश्लेषायां महावृष्टिस्तुषधान्यसमुद्भवः ।
मघासुबुधेऽल्पवृष्टिश्च धान्यनाशः प्रजाभयम् ॥१७७॥
पूर्फायां नृपसङ्ग्रामः क्षेत्रबाधान्नमन्दता ।
उफायां तु माषमुद्गाद्यल्पनिष्पत्तिमादिशेत् ॥१७८॥
हस्ते बुधे सुभिक्षं स्याद्धान्यमारोग्यमम्बुदाः ।
चित्रायां गणिकाशिल्पि-द्विजपीडाल्पवर्षणम् ॥१७९॥
स्वातौ बुधे मन्दवृष्टि-विशाखायां सुभिक्षता ।
व्याधिर्भयं च दुर्भिक्षं किञ्चित्कुत्रापि जायते ॥१८०॥

तिल, रूई ये महँगे हो । मृगशिरमें हो तो सुभिक्ष हो तथा वायु वर्षा अधिक हो ॥ १७४ ॥ आर्द्रा में हो तो गेहूँ, तिल, उड़द आदि सस्ते हों, मनुष्य सुखी हों, वर्षा अधिक, जल प्रवाह से घरों का पात हो ॥ १७५ ॥ पुनर्वसुमें बालकों को पीडा, कपास, सूत मंदा हो । पुष्यमें मनुष्योंमें संयोग तथा राजाओं का भय तथा उनका जय हो ॥ १७६ ॥ आश्लेषामें महावर्षा और तुषधान्यकी उत्पत्ति हो । मघा में बुध हो तो वर्षा थोडी, धान्य का नाश तथा प्रजा को भय हो ॥ १७७ ॥ पूर्वाफाल्गुनी में हो तो राजाओं में संग्राम, क्षेत्रपीडा, अन्न मंदा हो । उत्तराफाल्गुनी में हो तो उड़द, मूंग आदिकी प्राप्ति थोडी हो ॥१७८॥ हस्तमें बुध हो तो सुभिक्ष, धान्य, आरोग्यता, और वर्षा हो । चित्रामें हो तो वेश्या, शिल्पी और ब्राह्मण इन को पीडा हो तथा वर्षा थोडी हो ॥ १७९ ॥ स्वातिमें बुध हो तो मंद वर्षा हो ।

सुभिक्षमनुराधायां पक्षिपीडा प्रजासुखम् ।
ज्येष्ठायामिक्षुशाल्याज्य-महर्घताऽश्वरोगिता ॥१८१॥
मूले पक्षिद्विजपशु-बालपीडा विजायते ।
धान्यं मन्दं च पूषायां व्याधिर्ग्रीष्मेऽपि वर्षणम् ॥१८२॥
उषायां सस्यनिष्पत्तिरष्टवर्षशिशुक्षयम् ।
श्रुतौ गुडातसीधान्यचणकेषु हिमाद् भयम् ॥१८३॥
वासवे तु गवां पीडा वारुणे शूद्ररोगता ।
दुर्भिक्षमथ पूभायां क्षेममारोग्ययोग्यता ॥१८४॥
उभायां नृपतिक्लेश आरोग्यं पशुपक्षिणाम् ।
रेवत्यां नन्दनं चन्द्रो महर्घं कुंकुमाद्यपि ॥१८५॥

बुधोदयराशिफलम्—

मेषे बुधस्योदयतो गवादिश्चतुष्पदानां महतीह पीडा ।

विशाखामें हो तो सुभिक्ष हो कहीं किंचित् व्याधि भय और दुर्भिक्ष हो ॥ १८० ॥ अनुराधामें हो तो सुभिक्ष, पक्षियों को पीडा और प्रजा सुखी हो । ज्येष्ठामें हो तो ईख चावल घी महँगे हो और घोडे को रोग हो ॥ १८१॥ मूलमें हो तो पशु पक्षी ब्राह्मण तथा बालक इनको पीडा हो । पूर्वाषाढा में हो तो धान्य मंदा, व्याधि और ग्रीष्मकाल में भी वर्षा हो ॥ ॥१८२॥ उत्तराषाढामें हो तो धान्यकी प्राप्ति तथा आठ वर्षके बालकोंका नाश हो । श्रवणमें हो तो गुड, अलसी धान्य और चणा इनको हिमसे भय हो ॥ १८३ ॥ धनिष्ठामें हो तो गौओंको पीडा । शतभिषामें हो तो शूद्रोंको पीडा । पूर्वाभाद्रपदा में हो तो दुर्भिक्ष, क्षेम तथा आरोग्यता हो ॥ १८४ ॥ उत्तराभाद्रपदा में हो तो राजाको क्लेश तथा पशु पक्षीयों को आरोग्यता हो । रेवतीमें बुध हो तो कुंकुम आदि महँगे हो ॥ १८५ ॥

बुधका उदय मेषराशि में हो तो गौ आदि पशुओं को बहुत पीडा और टिड्डी आदिसे धान्य महँगे हो। वृषराशिमें हो तो अतिवृष्टि। मिथुनमें हो

तीडादिना धान्यमहर्घता च, वृषेऽतिवृष्टिर्मिथुने न वर्षा ।१८६।
कर्के सुखं सिंहपदे चतुष्पान् म्रियेत कन्या बहुधान्यसौख्यम् ।
भूकम्पयुद्धादितुलोदिते ज्ञे,तथाष्टमे राजभयं सुभिक्षम् ।१८७।
धनुर्बुधस्याभ्युदयात् सुखानि, मृगे मही धान्यरसादिपूर्णा ।
कुम्भेऽतिवायुः पथिभीश्च मीने,दुर्भिक्षपक्षो यदि वातिवृष्टिः ॥
पौषाषाढश्रावणवैशाखेष्विन्दुजः समाघेषु ।
दृष्टो भयाय जगतः शुभफलकृत्त्वोपिनस्तेषु ॥१८९॥
अन्यत्रापि—
आषाढमासे यदि शुक्लपक्षे, चन्द्रस्य पुत्रोभ्युदयं करोति ।
शुक्रस्य चेच्छ्रावणमासि चास्तं, धान्यं सुवर्णेन समं तदाप्यम् ॥
भाद्रे शुक्लचतुर्थ्यां पञ्चम्यां वोदितौ यदा ज्ञसितौ ।
धान्यं पुष्टिकावद्धं तदा जने लभ्यमतिकष्टकृत् ॥१९१॥
लोके पुनः—"सुरगुरुबुध मेलावडो, जइ इकइए होय।

तो वर्षा न हो ॥१८६॥ कर्कमें सुख, सिंहमें पशुओंका विनाश, कन्यामें धान्य अधिक और सुख, तुलामें भूमिकंप युद्ध आदि, वृश्चिक में राजभय और सुभिक्ष हो ॥ १८७ ॥ धनुराशिमें बुध का उदय होनेसे सुख हो। मकरराशि में धान्य, रस आदि से पृथ्वी पूर्ण हो। कुंभ में वायु अधिक चले और मार्ग में भय हो। मीनराशि में बुध का उदय हो तो दुर्भिक्ष हो अथवा अतिवृष्टि हो ॥१८८॥ पौष, आषाढ, श्रावण, वैशाख और माघ इन महीनोंमें बुधका उदय हो तो जगत् को भय हो, तथा इन महीनों में अस्त हो तो शुभ फलदायक होता है ॥१८६॥ आषाढ महीने को शुक्ल पक्षमें बुधका उदय हो और श्रावण मासमें शुक्र का अस्त हो तो सुवर्णके बराबर धान्य हो ॥ १९० ॥ भाद्र शुक्ल चतुर्थी या पंचमीको बुध और शुक्र का उदय हो तो धान्य पुष्ट हो वह मनुष्यों में बहुत कष्टकारक प्राप्त हो ॥ १९१ ॥ बृहस्पति और बुध यदि एक साथ हो तो लोक में

मइ तुज कहिउं भड्डली, मेह न वरसे लोय ॥१६२॥
जइ बुध ऊगगइ भद्दवे, तौ बहु भद्दवा करेइ।
अहवा आसू उगमइ, तौ काकर कमल करेइ" ॥१६३॥
शुक्रस्यास्तंगते सौम्यः प्रोदेति श्रावणे यदा।
तदा भाद्रपदे वापि मेघो नैव प्रवर्षति ॥
पाठान्तरमर्द्धे—'चतुष्पदविनाशेन तर्कं न क्वापि लभ्यते'।१६४।
श्रीहीरसूरिकृतमेघमालायाम्—
"सिंह तणा दस दिवस वलि, बोल्या उगै बुध।
इंद महोच्छव मांडस्यइ, महीयल वरसे युध ॥१९५॥
चैत्रमासि भड्डली सुणे, बारसि बुद्धि निहाण।
जइ शुभग्रह उगमण हुइ, घृत मत वेचि सुजाण॥१९६॥
आसोइ बुधउगमे, तो कप्पास विणास।
अहवा तेहु आथमे, राती वस्तु विणास ॥१९७॥
कांइ तुं पूछइ भड्डली, काती तणो विचार।
बुध ऊगे अंधारीइं, अन्न हुइ निचार ॥१९८॥

वर्षा न बरसे ॥१६२॥ यदि भाद्रपदमें बुध उदय हो तो वर्षा अधिक हो, यदि आसोज में उदय हो तो कमलकर (सूर्य) वर्षा न करे ॥ १६३ ॥ शुक्रका अस्त होने पर श्रावण में बुधका उदय हो तो भाद्रपदमें वर्षा न बरसे या पशुओंका विनाश हो जानेसे छास कहीं भी न मिले ॥१६४॥ सिंह-संक्रांति से दशवें दिन बुध का उदय हो तो इन्द्रमहोत्सव याने पृथ्वी पर वर्षा अच्छी हो ॥१६५॥ चैत्र मासमें द्वादशी को बुध को देखें यदि इस की पूर्व तरफ शुभग्रह हो तो घी नहीं वेचना चाहिये ॥१६६॥ आसोज में बुध का उदय हो तो कपासका विनाश हो, अथवा अस्त हो तो लाल वस्तुका विनाश हो ॥१६७॥ कार्त्तिक कृष्णपक्ष में बुधका उदय हो तो निकार अन्न हो ॥ १६८॥ कार्त्तिक शुक्लपक्षमें बुधका उदय हो तो रिल

तिलव्रीहिविनाशाय कार्तिकेन्दुबुधोदयः ।
मार्गशीर्षोदितः सौम्यः कर्पासस्य कियत्फलम् ॥१६९॥
मागसिरे बुह उगमे, अह अत्थमे जू सुक्क ।
तौ तूं मत पूछसि घणुं, चउपग चहुटइं विक्क॥२००॥
मीगसिर मास एकादशी, बुध अत्थमया हवंति ।
कपडा कारा वेचि करि, कण ते अग्घ लहंति ॥२०१॥
डमरं कुरुते पौषे माघमासोदये बुधः ।
फाल्गुने शशिपुत्रस्योदयो दुर्भिक्षकारणम् ॥२०२॥
पोसमासे बुध उगमइ, जइ अत्थमइ तिण मास ।
महाराउ तजीया चवइ, भड्डली घणुं विमास''॥२०३॥ इति

बुधास्तफलम्—

मेषे बुधास्ते भुवने सुभिक्षं, चतुष्पदां नाशकरं वृषेऽस्तम् ।
राज्ञां तु पीडा मिथुनेऽथ कर्केऽनावृष्टये मृत्युभयं च चौराः।२०४
तथैव सिंहेऽल्पजलं युवत्यां, बुधास्तनश्चौरभयोऽतिवृष्टिः ।

व्रीहिका नाश हो । मार्गशिरमें बुधका उदय हो तो कपासकी थोड़ी प्राप्ति हो ॥१६६॥ मार्गशिर में बुधका उदय हो अथवा शुक्र का अस्त हो तो पशुओंको वेचना चाहिये ॥२००॥ मृगशिर महीनेकी एकादशी को बुध का अस्त हो तो कपडा आदि वेचकर धान्य खरीदना चाहिये ॥२०१॥ पौष तथा माघ महीने में बुधका उदय हो तो कलह करें । फाल्गुनमें बुध का उदय हो तो दुर्भिक्षकारक होता है ॥ २०२ ॥ पौष महीनेमें बुधका उदय तथा अस्त हो तो महान् राजाओं का विनाश हो ऐसा हे भड्डली! बहुत विचार कर ॥२०३॥

बुधका अस्त मेषराशि में हो तो पृथ्वी में सुभिक्ष हो । वृषराशि में हो तो पशुओंका विनाश । मिथुनमें हो तो राजाओंको पीड़ा । कर्कमें हो, तो अनावृष्टि मृत्युभय तथा चोरका भय हो ॥ २०४ ॥ इसी तरह सिंह-

क्रयाणकानां च महर्घतायै तुलाप्यलिर्धातुमहर्घतायै ॥२०५॥
राज्ञां भयं धन्विनि रोगचारो, मृगेऽल्पलाभो व्यवसायिलोके।
कुम्भेऽतिवायुर्हिमदग्धवृक्षा,मीनेऽनधीना नृपवर्गपीडा॥२०६॥

अथ शुक्रचारः ।

गुरुमन्दतमःकेतुफलं प्रागेव निश्चितम् ।
क्रमाक्रान्तस्य शुक्रस्य फलं चारगतं ब्रुवे ॥२०७॥

शुक्रचतुष्कचक्रम्—

चतुष्कं चतुष्कं ततः पञ्चकं च,
त्रिकं पञ्चकं षट्कमायाति भानाम् ।
यदा भार्गवो मार्गवोऽथ वक्रो,
निविद्धः प्रसिद्धैः परैः क्रूरखेटैः ॥२०८॥
प्रथमचतुष्के गोधनपीडा, मेघमहोदयदोऽग्रचतुष्के ।

राशि में भी फल जानना, तथा जल थोडा। कन्याराशिमें बुध अस्त हो तो चोरों का भय, अतिवर्षा और क्रयाणक महँगे हों । तुला और वृश्चिक में भी धातु महँगी हो ॥२०५॥ धनूराशि में बुधका अस्त हो तो राजाओं का भय हो । मकर में व्यापारी लोगों में लाभ थोड़ा हो । कुंभ में वायु अधिक चलें तथा हिम से वृक्ष नष्ट हो । मीनराशिमें बुधका अस्त हो तो पराधीन ऐसी राजवर्गको पीडा हो ॥ २०६ ॥ इति बुधचार ।

गुरु, शनि, राहु और केतु इन का फल पहले कहा गया है, अब क्रमसे शुक्रचार का फल कहता हूँ ॥२०७॥ शुक्र क्रमसे चार, चार, पांच तीन, पांच और छ इन नक्षत्रों पर आता है। यदि इन नक्षत्रों पर शुक्र मार्गी हो या वक्री हो या अन्य प्रसिद्ध क्रूरग्रहों से वेधा जाता हो इस का फल कहता हूँ ॥ २०८ ॥ प्रथम चतुष्क (चार नक्षत्रों) में शुक्र हो तो गौओं को पीडा, दूसरा चार नक्षत्रों में हो तो मेघ का उदय हो, दोनों

पञ्चकयुग्मे धान्यविनाशी, षट्त्रिकचारी सुखदः शुक्रः ॥२०९॥
षट्त्रिकमध्ये धान्यं ग्राह्यं, पञ्चकमध्ये धान्यं देयम् ।
एवं लक्ष्मी धान्यवतां स्याद् भार्गवचारस्यैष विचारः ॥२१०॥
भरणीतः समारभ्य लभ्यमेतत्फलं जने ।
शुक्रचारे युद्धमन्ये नृपाणां प्राहुरादिमा ॥२११॥
यदाह लोकः–"बुधग्रह केरे ग्रत्थमण, शुक्रह केरे चाल ।
खांडो जागै क्षत्रियां, कै हुइ मेह अकाल" ॥२१२॥
नंदायामनुरानन्दी समुदीतो महासुरे ।
घनाघना घना धान्यं समर्घं सुखिता जनाः ॥२१३॥
सिंहशुक्रस्तुलाभौमः कर्कजीवो यदा भवेत् ।
धूलिवर्षा महान् वायुर्भवेद्धान्यमहर्घता ॥२१४॥
पाठान्तरे—
'कर्कशुक्र सर भरिया सूकै, सिंह शुक्र जल किमे न मुकै ।

पंचक नक्षत्रोंमें शुक्र हो तो धान्य का विनाश, छः और त्रिक नक्षत्रों में शुक्र हो तो सुखदायक होता है ॥२०९॥ छः और त्रिक नक्षत्रों में शुक्र हो तो धान्यका संग्रह करना और पंचकनक्षत्रोंमें धान्य बेचना उचित है। इसी तरह धनवानोंको लक्ष्मी होती है, यह शुक्रचारका विचार है ॥२१०॥ भरणीनक्षत्रसे आरंभ कर मनुष्यों में इस का फल प्राप्त है। प्राचीन लोग शुक्रका चारमें राजाओंका युद्ध मानते है ॥२११॥ बुधग्रहका अस्तमें शुक्र का उदय हो तो युद्ध हो या अकाल वर्षा हो ॥२१२॥ नंदातिथिमें शुक्र का उदय हो तो बड़ा हर्ष, बहुत वर्षा, बहुत धान्य, सुभिक्ष और मनुष्य सुखी हो ॥ २१३ ॥ सिंहराशिके शुक्र, तुलाके मंगल और कर्कराशि के बृहस्पति यदि हो तो धूलि की वर्षा, महावायु और धान्य महँगे हो ॥ २१४॥ पाठान्तरसे– 'कर्कराशि के शुक्र हो तो भरा हुआ सरोवर सूक जाय, सिंहराशिके शुक्र हो तो जलवर्षा न हो, कन्याराशिमें मंगल हो तो धूलि

कन्या मंगल ए अहिनाणी, वरसै धूलि न वरसइ पाणी ॥२१५॥

मेघमालायां तु—

'सिंहशुक्र श्रावणि ते आई, तो जलहरमूलहथओ जाई ।
वरसै मेह तो अतिवरसेइ, आसू काती रोग करेइ' ॥२१६॥

अथ शुक्रद्वाराणि—

भरण्याद्यष्टके भानां मेघद्वारं कवेः स्मृतम् ।
मेघवृष्टिः प्रजानन्दः समर्घं धान्यमेव च ॥२१७॥
मघादिपञ्चके शुक्रो धूलिद्वारेऽभ्युदीयते ।
प्रजादुःखाज्जलनाशात् तदोपद्रवमादिशेत् ॥२१८॥
स्वात्यादिसप्तके राजद्वारं शुक्रोदयो भवेत् ।
लोके भयं छत्रपतिक्षयं तत्र निवेदयेत् ॥२१९॥
श्रुत्यादिसप्तके शुक्रोदये लोकसुखं बहु ।
कनकद्वारमादिष्टं सुभिक्षं तत्र निश्चितम् ॥२२०॥

मतान्तरे–स्वात्यादित्रितये धर्मद्वारं शुक्रोदये शुभम् ।

की वर्षा हो किंतु जलवर्षा न हो' ॥२१५॥ सिंहराशि पर शुक्र श्रावण मासमें आवे तो वरसातका मूलसे नाश हो, यदि वरसात वरसे तो बहुत अधिक वरसे और आसोज या कार्त्तिक महीने में रोग करें ॥२१६॥

भरणी आदि आठ नक्षत्र पर शुक्र का उदय हो तो मेघद्वार होता है, इस में मेघवृष्टि, प्रजा को आनंद और धान्य सस्ते हों ॥ २१७ ॥ मघादि पांच नक्षत्र पर शुक्र का उदय हो तो धूलिद्वार होता है, इस में प्रजा को दुःख, जल का नाश और उपद्रव होते हैं ॥ २१८ ॥ स्वाति आदि सात नक्षत्र पर शुक्रका उदय हो तो राजद्वार होता है, इसमें लोकमें भय और छत्रपति का नाश होता है ॥२१९॥ श्रवण आदि सात नक्षत्रों पर शुक्रका उदय हो तो कनकद्वार होता है, इसमें लोक बहुत सुखी हो तथा निश्चयसे सुभिक्ष हो ॥ २२० ॥ पाठान्तर से– स्वाति आदि तीन

ज्येष्ठाचतुष्टये हेमद्वारं मिश्रफलं स्मृतम् ॥२२१॥
श्रुत्यादिसप्तके वाच्यं ऋजुद्वारं भृगूदये ।
दुर्भिक्षं लोकमारककारणं सुखवारणम् ॥२२२॥
इति सुभिक्षदुर्भिक्षविग्रहदेशभंगज्ञानाय शुक्रद्वारविचारः।

शुक्रोदयमासफलम् —

शुक्रोदयात् फाल्गुनमासि वृद्धि-रर्थस्य धान्यादिषु भैक्षवृत्तिः ।
चैत्रे विभूतिर्भुविमाधवे च, रणो महान् वृष्टिरतीव शुक्रे ।२२३।
आषाढमासे जलदुर्लभत्वं, चतुष्पदार्त्तिर्नभसि प्रदिष्टा ।
समृद्धिरन्नस्य तु भाद्रमासे, तथाश्विने सम्पद एव सर्वाः ॥
शुभं परं कार्त्तिकमार्गमासोः, पौषे महच्छत्रविभङ्ग एव ।
माघेऽपि तद्वत्सकलं फलं स्यान्न चेत्पराब्दे जलदस्य रोधः॥
भाद्रवड़े जो ऊगमण, सुकह सुकह वार ।
तो तूं हरखज आणजे अन्न घणा संसार ॥२२६॥

नक्षत्रों पर शुक्र का उदय हो तो धर्मद्वार, यह शुभ है। ज्येष्ठा आदि चार नक्षत्रों पर शुक्रका उदय हो तो हेमद्वार, यह मिश्रफलदायक है॥ २२१ ॥ श्रवण आदि सात नक्षत्र पर शुक्र का उदय हो तो ऋजुद्वार कहना, यह दुर्भिक्ष, लोकमें रोग और दुःखका कारक है ॥२२२॥

शुक्रका उदय फाल्गुन मासमें हो तो धनकी वृद्धि और धान्यमें भिक्षावृत्ति रहे अर्थात् धान्य महँगे हो। चैत्र और वैशाख महीनेमें हो तो पृथ्वी में संपत्ति हो बड़ा युद्ध और बहुत वर्षा हो ॥२२३॥ आषाढ मासमें हो तो जलकी दुर्लभता, श्रावणमें हो तो पशुओं को पीडा, भाद्रपदमें हो तो अन्न की समृद्धि (वृद्धि), आश्विन में सब प्रकार की संपत्ति हो ॥२२४॥ कार्त्तिक और मार्गशीर्ष में हो तो शुभ, पौषमें महान् छत्रभंग, माघमें शुक्र का उदय हो तो पौषके सदृश फल जानना, यदि पीछला वर्षमें वर्षाका रोध न हो तो ॥२२५॥ भाद्रपद महीनेमें शुक्रवारके दिन शुक्रका उदय हो तो

शुक्रोदयराशिफलम्—

मेषे शुक्रोदये धान्यं महर्घं रोगसम्भवः ।
वृषे धान्यं समर्घं स्यान्नृपास्तुष्टाः प्रजास्सुखम् ॥२२७॥
मिथुने लोकमरणं गोधूमा बहवो भुवि ।
कर्केऽतिवृष्टिर्धान्यस्य विनाशं चौरजं भयम् ॥२२८॥
सिंहेऽपि कर्कवच्चान्यं कन्यायां नृपपीडनम् ।
स्वल्पा वृष्टिस्तुलायोगे समर्घं धान्यमाहितम् ॥२२९॥
वृश्चिके बहुला वृष्टिर्दुर्भिक्षं धान्यमल्पकम् ।
धनुष्यवर्षणं धान्यं महर्घं मकरे तथा ॥२३०॥
कुम्भेऽतिविरलो मेघश्चतुष्पदविनाशनम् ।
मीने सुभिक्षं लोकानां सुखं मेघमहोदयः ॥२३१॥

शुक्रनक्षत्रभोगफलम्—

शुक्रेऽश्विन्यां ब्राह्मणजातिविरोधो यवास्तिला माषाः ।

संसारमें अनाज बहुत हो और आनंद हो ॥२२६॥

शुक्र का उदय मेषराशिमें हो तो धान्य महँगे और रोगकी प्राप्ति हो। वृषराशिमें हो तो धान्य सस्ते, राजा संतुष्ट और प्रजा सुखी हो ॥२२७॥ मिथुनमें हो तो लोकमें मरण हो तथा गेहूँकी प्राप्ति पृथ्वी पर बहुत हो। कर्कमें हो तो अतिवृष्टि, धान्यका विनाश और चोरोंका भय हो ॥२२८॥ सिंहराशिमें कर्कराशिकी जैसा फल समझना। कन्यामें राजाओंको पीडा हो। तुलाराशिमें हो तो वर्षा थोड़ी और धान्य सस्ते हो ॥२२९॥ वृश्चिकमें हो तो वर्षा बहुत, दुर्भिक्ष और धान्यकी अल्पता हो। धनु तथा मकरराशिमें हो तो वर्षा न हो और धान्य महँगे हो ॥२३०॥ कुंभमें हो तो बहुत थोड़ी वर्षा हो और पशुओं का विनाश हो। मीनराशिमें शुक्र का उदय हो तो सुभिक्ष, लोकोंको सुख और मेघका उदय हो ॥२३१॥

शुक्रोदय अश्विनी नक्षत्रमें हो तो ब्राह्मण जातिमें विरोध, यव तिल

स्वल्पा भरण्यां संस्ये तुषधान्यमहर्घता च तिलनाशः ।२३२।
सर्षपमापाल्पत्वमाग्नेये सर्वधान्यनिष्पत्तिः ।
रोहिण्यामारोग्यं मृगे महर्घाणि धान्यानि ॥२३३॥
रौद्रेऽल्पवृष्टिरन्नमधोमुखं तदपि नश्यति विशेषात् ।
पुष्ये दुर्भिक्षभयं चौराः सार्पे न वर्षा स्यात् ॥२३४॥
मघादित्रितये कष्टं हस्ते मेघमहोदयः ।
रोगा अवृष्टिश्चित्रायां स्वातौ क्षेमं सुभिक्षता ॥२३५॥
तद्वदेव विशाखायां तुषधान्यमहर्घता ।
अल्पवृष्टिश्च मैत्रर्क्षे चतुष्पदप्रपीडनम् ॥२३६॥
द्वारानुसाराच्छेषेषु फलमार्यैर्निगद्यते ।
धारानुसाराद् दुर्भिक्षं सुभिक्षं स्वल्पमादिशेत् ॥२३७॥

शुक्रोदयतिथिफलम्—

पृथ्वीसुखं १शात्प्रतिपच्चतुष्के, चौरोदयः पञ्चमिकाचतुष्के ।

उड़द ये थोड़े हों । भरणी में हो तो तुष धान्य महँगे हों और तिल का विनाश हो ॥ २३२ ॥ कृत्तिका में हो तो सरसव, उड़द थोड़े हों और सर्व प्रकारके धान्य की प्राप्ति हो । रोहिणीमें हो तो आरोग्य रहें । मृगशिरमें हो तो धान्य महँगे हों ॥२३३॥ आर्द्रा में हो तो वर्षा थोड़ी, अन्न अधोमुख हो यह भी विशेष करके नाश हो । पुष्य में दुर्भिक्ष और चोरोंका भय हो । आश्लेषामें, वर्षा न हो ॥ २३४ ॥ मघा, पुर्वाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी ये तीन नक्षत्रोंमें हो तो दुःख हो । हस्तमें, वर्षा का उदय हो । चित्रामें हो तो रोग हो तथा वर्षा न हो । स्वातिमें क्षेम और सुभिक्ष हो ॥२३५॥ विशाखामें हो तो तुष धान्य महँगे हो । अनुराधामें हो तो वर्षा थोड़ी तथा पशुओंको दुःख हो ॥२३६॥ बाकी के नक्षत्रोंका फल पहले जो द्वारोंके अनुसार कहा है इसके अनुसार सुभिक्ष या दुर्भिक्ष इनका विचार करना ॥२३७॥

भूपालयुद्धं नवमीचतुष्के, दुर्भिक्षवाताद्यसुखं तु शेषे ।२३८।
लोके तु–पडिवा छट्ठि एकादशी, जो असुरां गुरु उगंति ।
जल बहुला अन्न मोकला, प्रजा लील करंति ॥२३९॥

शुक्रास्तमासफलम्—

शुक्रस्यास्तंगमाज्ज्येष्ठे महावृष्टेः प्रजाक्षयः ।
आषाढे जलशोषः स्याच्छ्रावणे रौरवं महत् ॥२४०॥
धनधान्यादिसम्पत्तिर्भवेद्भाद्रपदास्ततः ।
आश्विनेऽपि सुभिक्षाय कार्त्तिके वृष्टिहेतवे ॥२४१॥
मार्गशीर्षे भूपयुद्धं प्रजानां सुखसम्भवः ।
पौषे माघे छत्रभङ्गः फाल्गुनेऽग्निभयं महत् ॥२४२॥
षण्मासानपि दुर्भिक्षं चैत्रे वनविनाशनम् ।
फलं तथैव वैशाखे पीडा काचिच्चतुष्पदे ॥२४३॥

प्रतिपदा आदि चार तिथियों में शुक्रका उदय हो तो पृथ्वीमें सुख, पंचमी आदि चार तिथियोंमें हो तो चोरों का उपद्रव, नवमी आदि चार तिथियोंमें हो तो राजाओंमें युद्ध, और बाकीके तिथियोंमें दुर्भिक्ष, वायु और कष्ट आदि हों ॥ २३८ ॥ लोक भाषामें भी कहा है कि– पडिवा छठ और एकादशी इन तिथियोंमें शुक्रका उदय हो तो जल अधिक वर्षे और अनाज भी बहुत हो, प्रजामें आनंद रहें ॥२३९॥

ज्येष्ठमासमें शुक्रका अस्त हो तो महावर्षा हो और प्रजाका नाश हो। आषाढमें हो तो जल सूक जाय, श्रावणमें हो तो बड़ा रौरव (कष्ट) हो ॥ २४० ॥ भाद्रपदमें हो तो धन धान्यकी प्राप्ति हो। आश्विनमें हो तो सुभिक्ष, कार्त्तिकमें हो तो वृष्टि के लिये हो ॥२४१॥ मार्गशिर में हो तो राजाओं में युद्ध तथा प्रजा को सुख हो। पौष और माघ मास में हो तो छत्रभंग हो, फाल्गुनमें बड़ा अग्निका भय हो ॥ २४२ ॥ चैत्रमें हो तो [illegible] । वैशाखमें हो तो दुर्भिक्ष

त्रैलोक्यदीपके—

'श्रावणे दधिदुग्धैस्तु भूमिं सिञ्चति मेघनः ।
भाद्रपदे धनैर्धान्यैर्मेघो हर्षात् प्रमोदयेत्' ॥२४४॥

लोके तु–'बुध ऊगमणो सुक्रत्थमणो, जइ हुवे श्रावणमास।
इम जाणे वो भड्डुली, मणुआ न पीइ छास' ॥२४५॥

हीरसूरयः–'आसोइ बुध ऊगमण, पुहवी हुइ सुगाल।
आसोइ शुक्र आथमें, तौ रौरवौ दुकाल ॥२४६॥
मागसिरे सुक्रत्थमण, अहवा उगे मज्झ।
जो जाणे तु जुग प्रलय, गुरु आवे ए गुज्झ' ॥२४७॥

अर्घकाण्डेऽपि–'स्वात्यादिनवके ग्राह्यं भरण्यादष्टके धृतिः।
विक्रयः शेपऋक्षेपु शुक्रास्ते फलमुत्तमम्' ॥२४८॥

पाठान्तरे–'श्रावणे कृष्णपक्षे च प्रतिपद्दिवसे धृतिः।
विक्रयः-शेपऋक्षेपु शुक्रास्ते फलमुत्तमम् ॥२४९॥

और कुछ पशुओंमें पीडा हो ॥२४३॥ श्रावणमें हो तो दही दूध अधिक हो तथा वर्षा से भूमि तृप्त हो। भाद्रपद में हो तो घने धान्य की प्राप्ति पूर्वक वरसाद हर्षसे आनंदित करता है ॥२४४॥ यदि श्रावणमासमें बुध का उदय हो और शुक्र का अस्त हो तो मनुष्य छास न पीवें अर्थात समय अच्छा हो ॥२४५॥ आश्विन महीनेमें बुध का उदय हो तो पृथ्वी मे सुकाल हो, किंतु आश्विनमें शुक्रका अस्त हो तो बड़ा भयंकर दुष्काल हो ॥ २४६ ॥ मार्गशिर में शुक्र का अस्त या उदय हो तो युगप्रलय जानना ॥ २४७ ॥ शुक्र का अस्त स्वाति आदि नव नक्षत्रों में हो तो धान्य आदि खरीद करना, भरणी आदि आठ नक्षत्रों में हो तो संग्रह करना और बाकीके नक्षत्रोंमें हो तो बेचना, इत्यादि शुक्रास्तका उत्तम फल कहा ॥ २४८ ॥ पाठान्तरसे- शुक्रास्तमें श्रावण कृष्ण पडवाके दिन संग्रह करना और बाकीके नक्षत्रोंमें बेचना अच्छा फल कहा

मिगसिर जइ सुक्कह गुरु, उदयत्थमणा करंति ।
तो तुं जो एं भड्डली, पुथवी चक्क भमंति ॥२५०॥
शुक्लपक्षे यदा शुक्रस्समुदेत्यस्तमेति वा ।
राजपुत्रसहस्राणां मही पिबति शोणितम् ॥२५१॥
अत्र हीरसूरयःपौषाधिकारे इमं श्लोकमाहुस्तेन पौषस्यैवेदं फलम्

शुक्रास्तराशिफलम्—

शुक्रस्यास्तंगमान् मेषे सर्वधान्यमहर्घता ।
वृषे चतुष्पदे पीडा धान्यनिष्पत्तिरल्पिका ॥२५२॥
मैथुने वैश्यपीडा स्यादल्पवर्षा प्रजाभयम् ।
कर्कटे बहुला वृष्टिर्लघुबालव्यथा तथा ॥२५३॥
सिंहे पीडा भूपवर्गे तथानावृष्टिजं भयम् ।
कन्यायां वैद्यलोकस्य सूत्रधारस्य पीडनम् ॥२५४॥
तुलायां सिंहवत् सर्वं दुर्भिक्षं वृश्चिके मतम् ।
स्त्रीधान्यनाशो धनुपि मकरे धान्यसम्पदः ॥२५५॥

है ॥२४९॥ मार्गशिरमें यदि गुरु तथा शुक्र का उदय और अस्त हो तो पृथ्वीमें कइएक उपद्रव हो ॥२५०॥ यदि शुक्रका शुक्लपक्षमें उदय या अस्त हो तो महा युद्ध हो, हजारों वीर पुरुषोंका रुधिर पृथ्वी पीवें ॥२५१॥

शुक्रका अस्त मेषराशिमें हो तो सब प्रकारके धान्य महँगे हो । वृष में हो तो पशुओं को पीडा तथा धान्य की प्राप्ति थोडी हो ॥ २५२ ॥ मिथुनमें हो तो वैश्यको पीडा, वर्षा थोडी तथा प्रजामें भय हो । कर्क में हो तो वर्षा बहुत हो तथा बालकोंको दुःख हो ॥ २५३ ॥ सिंहराशि में हो तो राजवर्गमें पीडा तथा अनावृष्टि का भय हो । कन्या में हो तो वैद्य-लोग और सूत्रधार को पीडा हो ॥ २५४ ॥ तुलामें हो तो सब फल सिंह-राशिकी तरह जानना । वृश्चिकमें हो तो दुर्भिक्ष हो । धनुराशिमें हो तो स्त्री और धान्यका नाश हो । मकर में हो तो धान्य प्राप्ति हो ॥ २५५ ॥

द्विजपीडा कुम्भराशौ मीने मेघमहोदयः ।
रोगनाशः प्रजासौख्यं पृथिव्यां बहुमङ्गलम् ॥२५६॥

इतिशुक्रचारप्रकरणम् ।

अथ ग्रहयोगफलम्—

यदि तिष्ठति भौमस्य क्षेत्रे कोऽपि ग्रहस्तदा ।
षण्मासं तुषधान्यानां जायते च महर्घता ॥२५७॥
शुक्रक्षेत्रे कुजे मासद्वये नूनं महर्घता ।
चन्द्रे च दिननाथे च सर्वरोगोऽशुभं सदा ॥२५८॥
शनौ राहौ सर्वधान्यं महर्घं राजविग्रहः ।
बुधक्षेत्रे रवौ चन्द्रे विरोधः सर्वभूभुजाम् ॥२५६॥
उत्पत्तिस्तुषधान्यानां पञ्चमासान् प्रजायते ।
शुक्रक्षेत्रे बुधे भद्रं चन्द्रक्षेत्रे भृगोः सुते ॥२६०॥
पाखण्डानां भवेद्वृद्धिः धान्यानां च महर्घता ।
रविक्षेत्रे भृगोः पुत्रे पशूनां च महर्घता ॥२६१॥

कुंभराशिमें हो तो ब्राह्मणों को पीडा हो । मीनराशिमें शुक्रका अस्त हो तो मेघ का उदय, रोग का विनाश, प्रजाको सुख और पृथ्वीमें बहुत मंगल हों ॥ २५६ ॥ इति शुक्रचार ॥

यदि मंगल के क्षेत्रमें कोई भी ग्रह हो तो छः महीने तुष और धान्य महँगे हो ॥ २५७ ॥ शुक्र के क्षेत्रमें मंगल हो तो दो महीने महँगे । चंद्रमा या सूर्य हो तो सब प्रकार के रोग तथा अशुभ करें ॥ २५८ ॥ शनि या राहु हो तो सब धान्य महँगे तथा राजविग्रह हो । बुधके क्षेत्रमें रवि या चंद्रमा हो तो सब राजाओंमें विरोध हो ॥ २५६ ॥ तथा तुष धान्य की उत्पत्ति पांच महीने हो । शुक्रके क्षेत्रमें बुध हो तो कल्याण हो । चंद्रमा के क्षेत्रमें शुक्र हो तो ॥ २६० ॥ पाखंडियों की वृद्धि तथा धान्य महँगे हों । रवि क्षेत्रमें शुक्र हो तो पशुओं का भाव तेज हो ॥२६१॥ बुध के क्षेत्रमें

बुधक्षेत्रे शनौ चन्द्रे सप्तधान्यमहर्घता ।
शुक्रक्षेत्रे गुरौ भौमे कर्पासादिमहर्घता ॥२६२॥
शनिक्षेत्रे शनौ राहौ घृतधान्यमहर्घता ।
चन्द्रभास्करयोः क्षेत्रे सुभिक्षं चन्द्रसूर्ययोः ॥२६३॥
पशुनाशो धान्यवृद्धिर्गुडादीनां महर्घता ।
गुरुक्षेत्रे शनौ राहौ पशुनाशस्तृणक्षयः ॥२६४॥
भौमे राज्ञां विरोधश्च बुधे वृष्टिस्तु भूयसी ।
भौमक्षेत्रे यदा सन्ति राहुभौमार्कभार्गवाः ॥२६५॥
षण्मासान् गुडकर्पासघृतक्षीरमहर्घता ।
मन्दक्षेत्रे यदा सन्ति मन्दराहुबुधास्तदा ॥२६६॥
चतुष्पदानां नाशश्च द्विपदे मारिविग्रहौ ।
भौमक्षेत्रे यदाऽपीयुः शुक्रभौमनिशाकराः ॥२६७॥
तदा मुक्तापशूनां च शंखस्य च महर्घता ।
भौमक्षेत्रे भार्गवे च धान्यानां च महर्घता ॥२६८॥

शनि या चंद्रमा हो तो सात प्रकारके धान्य महँगे हों । शुक्र के क्षेत्रमें गुरु या मंगल हो तो कपास आदि महँगे हों ॥२६२॥ शनि के क्षेत्रमें शनि या राहु हो तो घी और धान्य महँगे हों । चन्द्र और सूर्य के क्षेत्रमें चंद्र और सूर्य हो तो सुभिक्ष होता है ॥ २६३ ॥ तथा पशुओं का विनाश, धान्यकी वृद्धि और गुड आदि महँगे हो । गुरु के क्षेत्रमें शनि या राहु हो तो पशुओंका विनाश तथा तृण (घास) का क्षय हो ॥२६४॥ मंगल हो तो राजाओं का विरोध, बुध हो तो बहुत वर्षा हो । मंगल के क्षेत्रमें यदि राहु मंगल सूर्य और शुक्र हो तो ॥२६५॥ छः महीने गुड, कपास, घी, दूध आदि महँगे हो । शनि क्षेत्रमें यदि शनि राहु तथा बुध हो तो ॥२६६॥ पशुओंका नाश और मनुष्योंमें महामारी तथा विग्रह हो । मंगलके क्षेत्रमें शुक्र, मंगल और चंद्रमा होतो ॥ २६७ ॥ मोति, पशु और शंख की तेजी हो ।

शनिक्षेत्रे चन्द्रभान्वो-र्वस्त्राणां च महर्घता ।
शुक्रे भौमे गुरुक्षेत्रे प्रजापीडा प्रजायते ॥२६९॥
चन्द्रोदये कुजक्षेत्रे तुषधान्यस्य वृद्धये ।
चन्द्रोदये भृगुक्षेत्रे शुक्लवस्तूदयो भवेत् ॥२७०॥
रविक्षेत्रेऽतुलावृद्धिः शनिसोमभृगूदये ।
चन्द्रक्षेत्रे शुक्रचन्द्रबुधानामुदयो यदि ॥२७१॥
षण्मास्यां स्याच दुर्भिक्षमतिवृष्टिः प्रजायते ।
उदितौ च बुध क्षेत्रे यदि राहुशनैश्चरौ ॥
पशुक्षयः प्रजापीडा धान्यानां च महर्घता ॥२७२॥
शुक्रक्षेत्रे सोमसूर्यौ सूर्यपुत्रोदयो यदा ।
राजयुद्धं च धान्यानां जायतेऽतिमहर्घता ॥२७३॥
यदोदयः शनिक्षेत्रे भौमभास्करयोर्भवेत् ।
घृतादीनां तदा वृद्धिर्गुडानां रक्तवाससाम् ॥२७४॥
यदा समुदयं याति शनिक्षेत्रे शनैश्चरः ।

मंगलके क्षेत्रमें शुक्र हो तो धान्य महँगे हो ॥२६८॥ शनिके क्षेत्रमें चंद्रमा और सूर्य हो तो वस्त्र महँगे हों । गुरु क्षेत्रमें शुक्र और मंगल हो तो प्रजा को पीडा हो ॥ २६९ ॥ मंगलके क्षेत्रमें चंद्रमा का उदय हो तो तुष धान्य की वृद्धि हो । शुक्रके क्षेत्रमें चन्द्रमा का उदय हो तो शुक्ल वस्तुका उदय हो ॥२७०॥ रवि क्षेत्रमें शनि सोम और शुक्र का उदय हो तो बहुत वृद्धि हो । चंद्र क्षेत्रमें शुक्र चन्द्रमा और बुधका उदय हो तो॥२७१॥ छः महीने दुर्भिक्ष हो तथा बहुत वर्षा हो । बुधक्षेत्रमें राहु और शनिका उदय हो तो पशुओंका क्षय, प्रजाको पीडा और धान्य महँगे हों ॥२७२॥ शुक्रके क्षेत्र में चंद्रमा सूर्य तथा शनि का उदय हो तो राजाओंका युद्ध हो तथा धान्य बहुत महँगे हों ॥२७३॥ शनि क्षेत्रमें मंगल और सूर्यका उदय हो तो घी गुड़ तथा लाल वस्त्र की वृद्धि हो ॥२७४॥ यदि शनिक्षेत्रमें शनि का उ:

तदा स्यात्तृणकाष्ठानां लोहानां च महर्घता ॥२७५॥
यदा ग्रहेण सौम्येन क्रूरेणापि च संमुखः ।
विद्धः क्रूरः शुभो वापि दुर्भिक्षं तत्र निश्चितम् ॥२७६॥
ग्रहयुद्धे भूपयुद्धं ग्रहवक्रे देशविभ्रमो भवति ।
ग्रहवेधे सति पीडा निर्दिष्टा सर्वलोकानाम् ॥२७७॥
ज्येष्ठमासे रवियुता ग्रहाः पञ्चैकराशिगाः ।
श्रावणे मेघरोधाय छत्रभङ्गाय कुत्रचित् ॥२७८॥
सप्तम्यां च शनिभौमौ भवेतां वक्रगामिनौ ।
हाहाकारस्तदा लोके विशेषाद्दक्षिणापथे ॥२७९॥
शनिः कुजो देवगुरुर्यदि शुक्रगृहे त्रयम् ।
एकत्र गुरुशुक्रौ वा तदा वृष्टी रणोऽथवा ॥२८०॥
कार्त्तिकस्य नवम्यां चेद् ग्रहाः पञ्चैकराशिगाः ।
अकालेऽपि महावृष्ट्या नद्यः पूर्णाः पयोभरैः ॥२८१॥
शनिः पञ्चग्रहैर्युक्तो मार्गशीर्षेऽतिरोगकृत् ।

दय हो तो तृण काष्ठ और लोहा ये महँगे हो ॥ २७५ ॥

यदि शुभ और क्रूरग्रह परस्पर संमुख हो याने दोनोंका परस्पर वेधहो तो निश्चयसे दुर्भिक्ष होता है ॥२७६॥ ग्रहोंका युद्ध हो तो राजाओंमें युद्ध, ग्रहोंकी वक्रतामें देशमें विभ्रम, और ग्रहोका वेध हो तो सब लोगोंको पीडा हो ॥२७७॥ ज्येष्ठ महीनेमें सूर्यके साथ पांच ग्रह एक राशि पर हो तो श्रावणमें वर्षाका रोध हो तथा कहीं छत्रभंग हो ॥ २७८ ॥ शनि और मंगल सप्तमी के दिन वक्री हो तो लोकमें हाहाकार हो तथा विशेष करके दक्षिण देशमें हो ॥ २७९ ॥ यदि शुक्रके गृह (घर) में शनि, मंगल और गुरु ये तीन ग्रह हो अथवा गुरु और शुक्र इकट्ठे हो तो वर्षा अथवा युद्ध हो ॥२८०॥ कार्त्तिक महीनेकी नवमीके दिन पांच ग्रह एक राशि पर हो तो अकालमें बहुत वर्षासे नदी जलसे पूर्ण हो ॥२८१॥ मार्गशीर्षमें शनिके साथ पांचग्रह हो तो बहुत रोगकारक होते

मार्गस्य योगः पूर्णायां पञ्चानां रणकारणम् ॥२८२॥
मार्गशीर्षे ग्रहाः पञ्च यदि स्युरेकराशिगाः।
तदा जनेऽतिमारी स्यान्नृपस्य मरणं क्वचित् ॥२८३॥
अन्यत्रापि–असुह सुहा पंचगहा, इक्कह राशि मिलंति ।
तहवि नराहिव कोइ मरइ, अह जलहर वरसंति ॥२८४॥
भानुवक्रतमःक्रोडास्तृतीयस्था गुरोर्यदि ।
सुभिक्षं जायते तस्मामीदृशे योगसम्भवे ॥२८५॥
तमोवक्रसवित्राद्याश्चत्वारः क्रूरखेचराः ।
तृतीयस्था शनेरेते सौख्यः सद्भिक्षकारकाः ॥२८६॥
भानुवक्रतमःक्रोडाः पञ्चमस्था गुरोर्यदि ।
दुर्भिक्षं जायते घोरं घोरयोगे समागते ॥२८७॥
तमोवक्रःसवित्राद्याश्चत्वारः क्रूरखेचराः ।
पञ्चमस्थाः शनेरेते दौस्थ्यदुर्भिक्षकारकाः ॥२८८॥
मन्दराहोरपि क्रूरास्तृतीयाः सौख्यकारकाः ।

हैं। मार्गशीर्षकी पूर्णिमाके दिन पांच ग्रहोंका योग हो तो युद्ध कारक होता है ॥२८२॥ मार्गशीर्षमें यदि पाच ग्रह एकराशि पर हो तो लोकमें महा मारी और क्वचित् राजाका मरण हो ॥२८३॥ यदि शुभ या अशुभ पांच ग्रह एकराशि पर हो तो कोई राजाका मरण हो और वर्षा बहुत बरसे ॥२८४॥ यदि बृहस्पति से तीसरे स्थान में रवि,मंगल, राहु और शनि, ऐसा योग हो तो सुभिक्ष होता है ॥२८५॥ राहु, मंगल,सूर्य आदि चारक्रूर ग्रहों हैं, ये शनिसे तीसरे स्थान में हो तो सुख और सुभिक्षकारक होते हैं ॥२८६॥ यदि बृहस्पति से पांचवें स्थान में सूर्य मंगल राहु और शनि का घोर योग हो तो दुर्भिक्ष होता है ॥ २८७ ॥ राहु केतु मंगल और सूर्य आदि चार क्रूर ग्रह शनिसे पांचवें स्थानमें हो तो दुःख और दुर्भिक्ष कारक होते हैं ॥२८८॥ शनि और राहुसे भी तीसरे स्थानमें क्रूर ग्रह हो

एतयो पञ्चमाः क्रूरा दुःखदुर्भिक्षहेतवे ॥२८९॥
बृहस्पतितमःसौरिमङ्गलानां यदैककः ।
त्रिके च पञ्चके कार्यौ धान्यस्य क्रयविक्रयौ ॥२९०॥
गुरोः ससान्त्यपञ्चद्विः स्थानगा वीक्षता अपि ।
शनिराहुकुजादित्याः प्रत्येकं देशभञ्जकाः ॥२९१॥
इत्येवं ग्रहवक्रमार्गगमनांस्तत्प्रासिरूपोदया-
नाचार्याङ्घ्रिनिषेवणेन सुधिया सम्यग् विचार्यादरात् ।
वर्षे भावि शुभाशुभं फलमलं वाच्यं विविच्य स्वयं,
येन स्यात्कमला स्वपाणिकमलग्राहाय बद्धाग्रहा ॥२९२॥
इतिश्रीमेघमहोदयसाधने वर्षबोधे तपागच्छीयमहोपाध्याय-
श्रीमेघविजयगणिविरचिते ग्रहगणविमर्शनो नाम
एकादशोऽधिकारः ॥

तो सुखकारक होते हैं, और पंचम स्थान में क्रूर ग्रह हो तो दुःख और दुर्भिक्षकारक होते हैं ॥२८९॥ बृहस्पति, राहु, शनि और मंगल, इनमेंसे कोई ग्रह तृतीय और पंचममें हो तो क्रमसे धान्यका क्रय विक्रय करना याने खरीदना तथा बेचना ॥२९०॥ यदि बृहस्पति से सातवां, बारहवां, पांचवां और दूसरा इन स्थानों में शनि, राहु, मंगल और सूर्य इनमेंसे कोई ग्रह हो या उनकी दृष्टि हो तो देशका नाशकारक होते हैं ॥२९१॥

इसी तरह ग्रहों का वक्र और मार्ग गमन को तथा उसकी प्रतिरूप उदय को आचार्योंका चरण कमलकी भक्तिपूर्वक सेवा करके और बुद्धि से विचार करके भावि वर्षका शुभाशुभ फलको स्वयं विचारके ही कहना चाहिये, जिससे लक्ष्मी उसका कर कमल ग्रहण करने के लिये आग्रहवाली होती है ॥२९२॥

सौराष्ट्रराष्ट्रान्तर्गत पादलिप्तपुरनिवासिना पण्डितभगवानदासाख्यजैनेन
विरचितया मेघमहोदये बालावबोधिन्याऽऽर्यभाषया टीकितो
ग्रहगणविमर्शननाम एकादशोऽधिकारः ।

अथ द्वारचतुष्टयकथनो नाम द्वादशोऽधिकारः।

वारद्वारं पुराप्रोक्तं तिथिमासनिरूपणे ।
नक्षत्रमत्र वक्ष्यामि वर्षबोधविधित्सया ॥१॥
कृत्तिकादिकनक्षत्रं त्रयोदशकमब्दतः ।
सूर्यभोग्यं भवेद् योग्य-मब्दस्येह शुभप्रदम् ॥२॥
अश्विनी धान्यनाशाय जलनाशाय रेवती ।
भरणी सर्वनाशाय यदि वर्षेन्न कृत्तिका ॥३॥
कृत्तिकायां निपतिना पञ्चषा अपि बिन्दवः ।
पूर्वपश्चाद्भवान् दोषान् हत्वा कल्याणकारिणः ॥४॥
रोहिण्यां भास्वतो भोगे निषिद्धमपि वर्षणम् ।
नद्याः प्रवाहे नो दुष्टं स्याद्वादी विजयी ततः ॥५॥
रोहिण्यां भास्वतस्तापाद्वर्षायां स्याद्धनो घनः ।
गोखुरोत्खातरजसा वृष्टिर्दुष्टा प्रकीर्त्तिता ॥६॥

तिथि मास का निर्णय करने के लिये वार द्वार पहले कह दिया, अब वर्षमें शुभाशुभ फल जानने के लिये नक्षत्र द्वार को कहता हूँ ॥१॥ वर्षमें सूर्य भोग्य के कृत्तिका आदि तेरह नक्षत्र वर्षके योग्य हो तो शुभफल दायक होते हैं ॥२॥ यदि कृत्तिका में वर्षा न हो तो अश्विनी धान्यका, रेवती जलका और भरणी सब का नाशकारक होते हैं ॥३॥ यदि कृत्तिका में जल के पांच छः भी बूंद गिरे तो पहले और पीछे होनेवाले दोषोंका नाश करके कल्याण करने वाले होते हैं ॥४॥ सूर्य रोहिणी नक्षत्र पर हो तब वर्षाद होना अच्छा नहीं और विशेष वर्षा होकर नदियोंमें पूर आवे तो दोष नहीं ऐसा स्याद्वाद मत है ॥५॥ रोहिणी में सूर्यसे बहुत ताप (गरमी) पड़े तो आगे वर्षा बहुत अच्छी हो । गौओंके खुर से रज(शुष्क धूलि)निकल आवे ऐसी अल्प वृष्टि अच्छी नहीं ॥ ६ ॥

अत्र रोहिणीचक्रम्—

मेषेऽर्कसंक्रमदिने यन्नक्षत्रं प्रजायते ।
संक्रान्तिसमये देयं पूर्वाब्धौ तच्च भद्वयम् ॥७॥
ततः सृष्ट्याः तटे चैकमेकसन्धौ च पर्वते ।
अष्टाविंशति ऋक्षाणामेवं न्यासो विधीयते ॥८॥
सन्धयोऽष्टौ तटान्यष्ट चतुर्दिक्षु पयोधरः ।
विदिक्षु शैलाश्चत्वारस्तदन्तःस्थास्तु सन्धयः ॥९॥
रोहिणी यत्र सम्प्राप्ता स्थानं तच्च विचार्यते ।
शैले सन्धौ खण्डवृष्टिरतिवृष्टिः पयोनिधौ ॥
तटे सुभिक्षमादेश्यं रोहिण्या सति सङ्गमे ॥१०॥
सन्धौ वणिग्गृहे वासः पर्वते कुम्भकृद्गृहे ।
मालाकारगृहे सन्धौ रजकस्य गृहे तटे ॥११॥
इति वर्षावासफलम् ।

दिनार्घो मासार्घश्च—

अर्घकाण्डे त्रैलोक्यदीपककारः प्राह—

मेष संक्रान्तिके दिन जो नक्षत्र हो वह संक्रांतिके समय पूर्वदक्षिणादि क्रमसे चक्रमें लिखें, समुद्रमें दो २ नक्षत्र ॥७॥ तट संधि तथा पर्वत इन प्रत्येक में एक एक ऐसे अट्ठाइस नक्षत्र लिखें ॥८॥ संधि आठ, तट आठ, चार दिशामें चार समुद्र और विदिशामें चार पर्वत इनके अंत्यमें संधि हों ऐसा चक्र बनाना ॥ ९ ॥ इस चक्र में रोहिणी जिस स्थान पर हो उसका विचार करें । पर्वत तथा संधि पर हो तो खंडवर्षा हो, समुद्र पर हो तो अति वृष्टि हो और तट पर हो तो सुभिक्ष हो ॥ १० ॥ संधि में रोहिणी हो तो वणिक् के घर, पर्वत में हो तो कुम्हार के घर, संधि में हो तो माली के घर और तटमें हो तो धोबीके घर वर्षाका वास समझना ॥११॥

स्वात्याद्यष्टकसंयुक्तमाश्विन्यादित्रिकं पुनः ।
त्रिकसंज्ञं बुधैर्वाच्यमर्घकाण्डविशारदैः ॥१२॥
मृगादिदशकं चापि धनिष्ठापञ्चकं तथा ।
संज्ञायां पञ्चकं ज्ञेयमर्घनिर्णयहेतुकम् ॥१३॥
त्रिकयोगे त्रिकयोगः पञ्चके पञ्चकं पुनः ।
गृह्यते त्रिकयोगेन दीयते पञ्चके धनम् ॥१४॥
त्रिके च जीवराशेश्च क्रूरा यदि त्रिके गता ।
अन्योऽन्यं च त्रिके वा स्युर्गृह्यते तत्कयाणकम् ॥१५॥
पञ्चके जीवराशेस्तु यदि गच्छन्ति पञ्चके ।
अन्योऽन्यं पञ्चके वा स्युर्दीयते तत्तदेव हि ॥१६॥
यदा धिष्ण्यत्रिके चन्द्रः क्रेतव्यं तत्कयाणकम् ।
यदा च पञ्चके चन्द्रो विक्रेतव्यं तदाखिलम् ॥१७॥
जीवऋक्षे तमःशौरिर्भौमपर्ग्वोर्गुरुस्त्रिके ।

स्वाति आदि आठ और अश्विनी आदि तीन, इन नक्षत्रोंकी अर्घकाड के विशारद पंडितोंने त्रिक संज्ञा मानी है ॥ १२ ॥ मृगशीर्ष आदि दश और धनिष्ठा आदि पाच, इन नक्षत्रों की अर्घ का निर्णय करने के लिये पंचक संज्ञा की हैं ॥ १३ ॥ ग्रह त्रिक नक्षत्रों में हो तो त्रिकयोग और पंचक नक्षत्रों में हो तो पंचकयोग माना है । त्रिकयोगमें धन ग्रहण करना और पंचकयोगमें देना चाहिये ॥ १४ ॥ त्रिक नक्षत्रोंमें यदि जीवराशि (बृहस्पतिकी राशि)में क्रूर ग्रह त्रिक में हों या क्रूरग्रहोंसे जीवराशि त्रिकमें हो तो कयाणक ग्रहण करना याने खरीदना चाहिये ॥१५॥ इसी तरह पंचक नक्षत्र में जीवराशि तथा क्रूरग्रह ये परस्पर पंचक में हो तो खरीदी हुई वस्तुको बेचना चाहिये ॥१६॥ यदि त्रिकनक्षत्रमें चंद्रमा हो तो कयाणक को खरीदना, तथा पंचकनक्षत्रमें हो तो बेचना चाहिये ॥१७॥ बृहस्पतिके नक्षत्रोंमें राहु और शनि हो या राहु और मगल के त्रिक में गुरु-

अन्योऽन्यं पञ्चकेऽप्येते देहिलाहि त्रिके कणान् ॥१८॥
त्रिके यदि ग्रहाः सर्वे जीवान्मन्दतमःकुजाः ।
तदा भुवि समर्घं स्यात् तिथिवृद्धौ विशेषतः ॥१९॥
यदि स्याद्दैवयोगेन भत्रिके धिष्ण्यपञ्चकम् ।
तदा किञ्चिन्महर्घं स्यात् सौम्यवेधेऽधिकं पुनः ॥२०॥
पञ्चके चेद् ग्रहाः सर्वे संमिलन्ति यदैव हि ।
तदा भुवि महर्घं स्याद् धिष्ण्यहीनौ विशेषतः ॥२१॥
राशिपञ्चकयोगे तु धिष्ण्यत्रिकं यदा भवेत् ।
तदा किञ्चित्समर्घं स्यात् सौम्यवक्रे शुभं वहुः ॥२२॥
मंशरास्तु यदा जीवाद् राशिनक्षत्रपञ्चके ।
घोरदौस्थ्यं तदा ज्ञेयमृक्षे न्यूनेऽतिरौरवम् ॥२३॥
राशिधिष्ण्यत्रिके पूर्वे ग्रहाः सर्वे भवन्ति चेत् ।
महा सौस्थ्यं तदा भूम्यां सौम्यवक्रे महोत्सवः ॥२४॥

स्पति हो, अथवा ये ग्रह अन्योन्य पंचकमें या त्रिकमें आ जावें तो अन्न वेचदेने से लाहि (लाभ) होता है ॥१८॥ यदि सब ग्रह या वृहस्पतिसे शनि, राहु और मंगल ये त्रिकमें हो तो पृथ्वी पर धान्यादि सस्ते हो और तिथि की वृद्धि हो तो विशेप कर सस्ते हों । ॥१९ ॥ यदि दैव-योग से त्रिकनक्षत्रमें पंचकनक्षत्र हो तो कुछ महँगे हो और शुभग्रह का वेध हो तो अधिक हो ॥ २० ॥ यदि सब ग्रह एक साथ पंचकमें हो तो पृथ्वी पर महँगे हो और नक्षत्रकी हानि हो तो विशेप करके महँगे हो ॥ २१॥ पंचक राशिके योग में त्रिकनक्षत्र हो तो कुछ सस्ते हो और बुधग्रह वक्री हो तो वहुत शुभ हो ॥२२॥ मंगल, शनि, राहु ये ग्रह वृहस्पतिसे एक राशि पर हो और पंचक में हो तो बड़ा दुःख जानना और नक्षत्रकी हानि हो तो बड़ा रौरव हो ॥ २३ ॥ सब ग्रह त्रिक नक्षत्र पर हो तो बड़ा सुख हो और बुध ग्रह वक्री हो तो महा उत्सव हो ॥२४॥

प्रकृतम्—सर्वनक्षत्रमध्ये तु रोहिणी पतिता त्रिके ।
सौम्ययोगे शुभैव स्यादशुभाः क्रूरयोगतः ॥२५॥
अतिवृष्टिरनावृष्टिर्मूषकाः शलभाः शुकाः ।
स्वचक्रं परचक्रं च मृगशीर्षे छिकैरिदम् ॥२६॥

आर्द्राप्रवेशः—

सूर्योदये रोगकरी स्मृतार्द्रा, घटोदये विग्रहरोगयोगः ।
मध्याह्नकाले कृषिनाशनाय, धान्यं महर्घं च तृणस्य नाशः ।२७।
सन्ध्यास्थितार्द्रा कुरुते सुभिक्षं,रात्रौ स्थिता सर्वसुखाय लोके।
भोगं प्रदत्ते खलु मध्यरात्रे, पूर्वं सुखं दुःखमनोऽपरात्रे ।२८।
"मिगसिर वाय न वाइया, अद्द न वूठा मेह ।
इम जाणे वो भड्डली, वरसइ दीधौ छेह" ॥२९॥

नक्षत्रद्वारः—

मघार्कदिवसं त्यक्त्वा सर्वनक्षत्रवर्षणम् ।

सब नक्षत्रोंके मध्यमें रोहिणी त्रिकमें हो और शुभग्रहों का योग हो तो शुभ और अशुभ ग्रहोंका योग हो तो अशुभ होता है ॥२५॥ मृगशीर्ष नक्षत्र पर शुभ और अशुभ ग्रह हो तो कभी अतिवृष्टि, अनावृष्टि, चूहा, कीडा, स्वचक्र, और कभी परचक्र इत्यादिके उपद्रव हो ॥२६॥

सूर्यका आर्द्रा में प्रवेश सूर्योदयमें हो तो रोग करनेवाला होता है। सूर्योदय से दो घड़ी दिन चढ़ने बाद हो तो विग्रह और रोगकारक होता है। मध्याह्न दिनमें हो तो खेतीका नाश, धान्य महँगे और तृणका नाश हो ॥२७॥ सन्ध्या समय आर्द्रा हो तो सुभिक्ष करें, रात्रिमें हो तो लोक में सब प्रकारके सुखकारक होता है। मध्यरातमें हो तो भोग प्रदान करें और पीछली शेष रात्रिमें हो तो पहला सुख और पीछे दुःख करें ॥२८॥ मृगशिर नक्षत्रमें वायु अधिक न चले तथा आर्द्रामें मेघवृष्टि न हो तो वर्षा न बरसे ॥२९॥

हर्षणं सर्वलोकानां कर्षणं फलदायकम् ॥३०॥
हस्तार्कसंगमे वर्षा सर्वामीतिं निवारयेत् ।
स्वातिवृष्टिर्मौक्तिकानि निष्पादयति नीरधौ ॥३१॥
सौम्यवारेऽर्कनक्षत्रे चारः शुभकरः स्मृतः ।
अर्कारमन्दवारेषु नक्षत्रभ्रमणेऽशुभम् ॥३२॥ इति ॥

अथ सर्वतोभद्रचक्रम्—

कर्पूरचक्रं प्रागुक्तं सर्वतोभद्रमुच्यते ।
तत्र नक्षत्रानुसाराद् ज्ञेयं देशशुभाशुभम् ॥३३॥
*सौम्यवेधे समर्घत्वं क्रूरवेधे महर्घता ।
देशः कालश्च वस्तूनि ग्रहवेधस्त्रिषु स्मृतः ॥३४॥

मघानक्षत्रमें सूर्य आवे उस दिनको छोड़ कर बाकीके सब नक्षत्रोंमें वर्षा हो तो सब लोगोंको हर्षदायक और किसानों को लाभदायक होता है ॥ ३० ॥ हस्त नक्षत्रमें सूर्य आवे तब वर्षा हो तो सब प्रकारकी ईतिका निवारण हो । स्वातिनक्षत्रमें सूर्य आनेसे वर्षा हो तो समुद्रमें सीपियों-में मोती उत्पन्न करें ॥३१॥ शुभवारके दिन सूर्यका एक ~~नक्षत्रसे दूसरे नक्षत्र~~ पर गमन हो तो शुभ फलदायक होता है । रवि, मंगल और शनि इन वारोंमें सूर्यका नक्षत्र पर गमन हो तो अशुभ होता है ॥३२॥

कर्पूरचक्र पहले कहा है, अब सर्वतोभद्रचक्र कहता हूं, इसमें नक्षत्रके वेध के अनुसार देशमें शुभाशुभ जाना जाता है ॥३३॥ सौम्यग्रहका वेध हो तो सस्ते और क्रूरग्रहका वेध हो तो महँगे हों। ये देश, काल और वस्तु इन

*वेध जानने का प्रकार—

यस्मिन् ऋक्षे स्थितः खेटस्ततो वेधत्रयं भवेत् ।
ग्रहदृष्टिवशेनात्र वामदक्षिणसम्मुखम् ॥१॥
वेधो ग्रहेण पुनरत्र गजेन्द्रदंष्ट्रा, संस्थानदिग्द्वयगतस्य कलादिकस्य ।
एकोऽपरस्त्वभिमुखस्थितमध्यनासा, पर्यन्तभागयुतकेवलधिष्ण्य एव ॥२॥
वक्रगे दक्षिणा दृष्टिर्वामदृष्टिश्च शीघ्रगे ।

अ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	आ	आ
भ	उ	अ	व	क	ह	ड	ऊ	म
अ	ल	लृ	वृष	मिथुन	कर्क	ॡ	म	पू
रे	द	मेष	ओ	नंदा	औ	सिंह	ट	उ
उ	च	मीन	रिक्ता	पूर्णा	भद्रा	कन्या	प	ह
पू	ल	कुंभ	अः	जया	अं	तुला	र	चि
श	ग	ए	मकर	धनु	वृश्चिक	ऐ	त	स्वा
ध	ख	ज	भ	य	न	[illegible]	[illegible]	वि
[illegible]	श्र	अ	उ	पू	मू	ज्ये	अ	[illegible]

सांमुखी मध्यचारे च ज्ञेया भौमादिपञ्चके ॥३॥
राहुकेतू सदा वक्रौ शीघ्रगौ चन्द्रभास्करौ।
गतेरेकस्वभावत्वा-देषां दृष्टित्रयं सदा ॥४॥

सर्वतोभद्रचक्रमें जिस नक्षत्र पर ग्रह स्थित हो, उस नक्षत्र के स्थानसे ग्रह दृष्टि के अनुसार वाम (बायीं) दक्षिण तथा सम्मुख, ऐसे तीन प्रकार के वेध होते हैं अर्थात् ग्रह की दृष्टि जिस तरफ हो उस तरफ वेध होता है ॥१॥ ग्रहों का वेध गजेन्द्र के दांत का संस्थान की जैसे दो तरफ याने बायीं और दक्षिणके वेधसे राशि, अक्षर स्वर तिथि और नक्षत्र ये पांचों ही वेधे जाते हैं। किंतु सम्मुख रही हुई नासिका का अग्रभाग ही जैसे केवल सामने का एक नक्षत्र ही वेधा जाता है, ऐसा कईएक आचार्यों का मत

अथ नक्षत्रक्रमेण वस्तूनां नामानि देशांश्च—

व्रीहिर्यवाश्च मणयो हीरका धातवस्तिलाः ।
कृत्तिकावेधतो मासा-नष्टयाम्यदिशोऽसुखम् ॥३५॥
रोहिण्यां सर्वधान्यानि सर्वे रसाश्च धातवः ।
जीर्णाः कम्बलकाः प्राच्या-मसुखं दिनसप्तकम् ॥३६॥
मृगशीर्षेऽश्वमहिषी गावो लाक्षादिकोद्रवः ।
खरा रत्नानि तूरी वोदक्पीडा षष्टिवासरान् ॥३७॥
आर्द्रायां तैललवणसर्वक्षाररसादयः ।
श्रीखण्डादिसुगन्धीनि मासं स्यात् पश्चिमाऽसुखम् ॥३८॥

तीनोंमें ग्रहवेध द्वारा जानना ॥३४॥ कृत्तिकाके वेधसे चावल, यव, मणि, हीरा, धातु और तिल इन में वेध होता है, तथा आठ महीने दक्षिण दिशा में दुःख होता है ॥ ३५ ॥ रोहिणी में वेध हो तो सब प्रकार के धान्य रस धातु और जीर्ण कंबल इन में वेध हो, तथा पुर्व दिशा में सात दिन दुःख होता है ॥ ३६ ॥ मृगशीर्ष में वेध हो तो घोड़ा, भैंस, गौ, लाख, कोद्रव, गदहा, रत्न और तुवरी इन का वेध तथा उत्तरदिशामें साठ दिन पीडा हो ॥३७॥ आर्द्राके वेधसे तेल,लवण आदि सब प्रकार के क्षार, रस और चंदन आदि सुगंधित वस्तु का वेध तथा

है, इसके लिए नरपतिजयचर्या में सर्वतोभद्र की संस्कृत टीकामें भी कहा है कि—"ग्रहः सव्यापसव्येन चक्षुषा वेधयेत् पुनः । ऋक्षाक्षरस्वरादिस्तु सम्मुखेनान्त्यभं तथा" ॥ याने वायीं या दक्षिण ओर दृष्टि होतो राशि, नक्षत्र स्वर, व्यञ्जन और तिथि इन पांचों का वेध होता है। किंतु सम्मुख दृष्टि हो तो अन्त्यका एक नक्षत्रका ही वेध होता है ॥२॥ भौमादि पांच (मंगल बुध गुरु शुक्र और शनि) ग्रहों में से जो ग्रह वक्री हो उसकी दृष्टि दक्षिण ओर, शीघ्रगामी (अतिचारी) हो उसकी दृष्टि वायीं ओर और मध्यचारी हो-उसकी दृष्टि सम्मुख होती है ॥३॥ राहु और केतु की सर्वदा वक्रगति तथा चंद्रमा और सूर्य की सदा शीघ्रगति है, इसलिए इन चारों ग्रह की गति सर्वदा एक ही प्रकार होने से उनकी दृष्टि भी सर्वदा तीनों ओर होती है ॥४॥

पुनर्वसौ स्वर्णरूत कर्पासश्च युगन्धरी।
कुसुम्भः श्यामकौशेयं मासयुग्मोत्तराऽसुखम् ॥३९॥
पुष्ये स्वर्णघृतं रूप्यं शालिसौचलसर्षपाः।
सर्जिकातैलहिंग्वादि याम्यपीडाष्टमासिकी ॥४०॥
आश्लेषायां च मञ्जिष्ठाऽऽद्रकगोधूमशुंठिकाः।
मरिचकोद्रवाः शालि-र्मासिकं पश्चिमासुखम् ॥४१॥
मघायां तिलतैलाज्य-प्रवालचणकातसी।
मुद्गाःकङ्गुर्दक्षिणस्यां विग्रहश्चाष्टमासिकः ॥४२॥
पूर्फायां कम्बलोर्णादि-युगन्धरी तिलास्तथा।
रजतं वस्तुपल्याणं याम्यपीडाष्टमासिकी ॥४३॥
उफायां मोषमुद्गाद्यं तन्दुलाः कोद्रवाः पुनः।
सैन्धवं लशुनं सर्जिजर्मासयुग्मोत्तरा व्यथा ॥४४॥
हस्ते श्रीखण्डकर्पूरदेवकाष्ठागरुस्तथा।
रक्तचन्दनकन्दाद्यं मासयुग्मोत्तराऽसुखम् ॥४५॥

पश्चिमदिशामें एक महीना दुःख हो ॥३८॥ पुनर्वसु के वेधसे सोना, रूई, कपास, जुआर, कुसुंभ और कृष्ण रेशमी वस्त्र का वेध तथा दो महीने उत्तर दिशा में अशुभ रहे ॥ ३९ ॥ पुष्यमें सोना, घी, चांदी, चावल, शोचर लोन, सरसों, सज्जीखार, तेल, हिंग, तथा आठ महीने दक्षिण दिशा में पीडा रहे ॥ ४० ॥ अश्लेषामें मँजीठ आदा गेहूँ सोंठ मिर्च कोद्रवा और चावल तथा पश्चिममें एक मास दुःख रहे ॥४१॥ मघामें तिल, तेल, घी, प्रवाल(मूंगा), चने, अलसी, मूंग, और कंगु तथा दक्षिण दिशामें आठ महीने विग्रह हो ॥४२॥ पूर्वाफाल्गुनीमें कंबल, रेशमी वस्त्र, ज्वार, तिल, चांदी और दक्षिणदिशामें आठ महीने पीडा ॥ ४३ ॥ उत्तराफाल्गुनी में उडद मूंग चावल कोद्रव, सैंधव, लसून, सज्जी, और उत्तर में दो महीने पीडा ॥ ४४ ॥ हस्तमें चंदन, कपूर, देवदार, अगर, रक्तचंदन कंद आदि और

स्वर्णं रत्नं तु चित्रायां मुद्गमाषप्रवालकम् ।
अश्वादिवाहनं मास-द्वयं पीडोत्तरा दिशि ॥४६॥
स्वातौ पूगीमरिचं सर्षपंतैलादिराजिकाहिङ्गुः ।
खर्जूरादिकपीडा सप्तदिनान्युत्तरे देशे ॥४७॥
विशाखायां यवाः शालिगोधूमा मुद्गराजिका ।
मसूराक्षमकुष्ठाश्च याम्या पीडाष्टमासिकी ॥४८॥
राधायां तुवरीसर्वविदलान्नं च तन्दुलाः ।
मकुष्टकङ्गुचणकाः प्राक्पीडा दिनसप्तकम् ॥४९॥
ज्येष्ठायां गुग्गुलं गुडं लाक्षाकर्पूरपारदाः ।
हिङ्गुहिङ्गुलुकांस्यानि प्राक्पीडा दिनसप्तकम् ॥५०॥
मूले श्वेतानि वस्तूनि रसा धान्यानि सैन्धवम् ।
कर्पासलवणाद्यं च मासिकं पश्चिमासुखम् ॥५१॥
पूषायामञ्जनतुषधान्यघृतमूलजूर्णादिः ।
वेध्यं सशालिपश्चिमदिशि मासिकमशुभमन्यद्वा ॥५२॥

उत्तरमें दो महीने पीडा ॥४५॥ चित्रा में सोना, रत्न, मूंग, उडद, मूंगा, घोडा, आदि वाहन और दो महीने उत्तर दिशा में पीडा ॥४६॥ स्वाति में सोपारी, मिर्च, सरसव, तैल, राई, हिंग खजूर आदि तथा उत्तर देश में सात दिन पीडा ॥ ४७ ॥ विशाखामें यव, चावल, गेहूँ, मूंग, राई, मसूर, वनमूंग तथा दक्षिण दिशामें आठ महीने पीडा ॥४८॥ अनुराधामें तुअरी आदि सब विदल अन्न, चावल, वनमूंग, कंगु, चने तथा पूर्वदिशाके देश में सात दिन पीडा रहे ॥४९॥ ज्येष्ठामें गुगल, गुड, लाख, कपुर, पारा, हिंग, हिंगलु और कांसी इन में वेध तथा पूर्व दिशा में सात दिन पीडा रहे ॥५०॥ मूलमें सफेद वस्तु, रस, धान्य, सेंधव, कपास, लवणादि में वेध और पश्चिममें एक मास दुःख ॥५१॥ पूर्वाषाढा में अंजन तुष धान्य घी कंदमूल, जर्ण (चावल) आदिको वेधते है तथा पश्चिम दिशामें एक

उपायामश्ववृषभा गजलोहादिधातवः ।
सर्वं च सारवस्त्वाज्यं प्राग्व्यथादिनसप्तकम् ॥५३॥
द्राक्षाखर्जूरपूगैला मुद्गा जातिफलं हयाः ।
अभिजिद्वेधतः पूर्वा व्यथा वा दिनसप्तकम् ॥५४॥
श्रवणेऽक्षोडचारोलि पिप्पली पूगवायवम् ।
तुषधान्यानि वेध्यानि प्राक्शुभं सप्तवासरान् ॥५५॥
धनिष्ठायां स्वर्णरूप्य-धातवः सर्वनाणकम् ।
मणिमौक्तिकरत्नादि सप्ताहं पूर्वतः शुभम् ॥५६॥
तैलं कोद्रवमद्यादि धातकीपत्रमूलकम् ।
छल्लिः शतभिषग्वेध्यं वारुण्यां मासिकं शुभम् ॥५७॥
प्रियङ्गुमूलजात्यादि सर्वधान्यानि धातवः ।
सर्वौषधं देवदारुर्याम्यां पीडाऽष्टमासिकी ॥५८॥
पूर्वाभाद्रपदे वेध्यमथोभावेध्यमुच्यते ।

मास अशुभ रहे ॥ ५२ ॥ उत्तराषाढा में घोडा, बैल, हाथी, लोह आदि धातु सब सार वस्तु और घीको वेधते है, तथा पूर्व में सात दिन व्यथा हो ॥ ५३ ॥ अभिजित् का वेध से द्राक्ष खजूर सोपारी इलायची मूंग जायफल और घोडा को वेधते है तथा पूर्व देश के देश में सात दिन पीडा हो ॥ ५४ ॥ श्रवण में अखरोट चीरोंजी पीपल सोपारी यव तुष धान्य इनको भी वेधते है और पूर्वमें सात दिन शुभ रहें ॥५५॥ धनिष्ठामें सोना चांदी आदि धातु, सब प्रकार के द्रव्य, मणि मोती और रत्न आदिको वेधते है तथा पूर्वमें सात दिन शुभ रहें ॥ ५६ ॥ शतभिषा में तेल कोद्रव मद्य आदि आमला के पत्र मूल और छिलका को वेधते है, तथा पश्चिम दिशा में एक मास शुभ रहे ॥ ५७ ॥ पूर्वाभाद्रपदा में वेध हो तो प्रियंगु, मूल, जायफल सब प्रकारके धान्य तथा औषध, देवदारु इनको वेधते है, तथा दक्षिणमें आठ महीने पीडा रहे ॥ ५८ ॥ उत्तरा-

गुडखण्डाः शर्करा च खलं तिलाश्च शालयः ॥५९॥
घृतं मणिमौक्तिकानि वारुण्यां मासिकं शुभम् ।
पौष्णे श्रीफलपूगादि मौक्तिकं मणयोऽपि च ॥
वेडा ऋयाणकं सर्वं वारुण्यां मासिकं शुभम् ॥६०॥
अश्विन्यां व्रीहयो जूर्णा वेसरोष्ट्रघृतादिकम् ।
सर्वाणि धान्यवस्त्राणि मासद्वयोत्तरा व्यथा ॥६१॥
भरण्यां तुषधान्यानि युगन्धरी च वेध्यते ।
मरिचाद्यौषधं सर्वं याम्यां पीडाष्टमासिकी ॥६२॥
इति नक्षत्रवेधे शुभाशुभफलम् ।
अथार्घं सम्प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ब्रह्मयामले ।
एकाशीतिपदे चक्रे ग्रहवेधे शुभाशुभम् ॥६३॥
देशः कालस्तथापण्यमिति त्रेधार्घनिर्णये ।
चिन्तनीयानि विद्धानि सर्वदैव विचक्षणैः ॥६४॥

भाद्रपदमें वेध हो तो गुड, खांड, सक्कर, खली, तिल, चावल, घी, मणि, मोती इनका वेध होता है तथा पश्चिम दिशा में एक महीने शुभ रहें ॥ ५९ ॥ रेवती नक्षत्र में वेध हो तो श्रीफल, सोपारी, मोती, मणि, वेडा, ऋयाणक, वस्तुको वेध होता है तथा पश्चिममें एक महीने शुभ रहे ॥६०॥ अश्विनी में चावल, जूर्णा, वेसर, ऊंट, घी सब प्रकार के धान्य तथा वस्त्र को वेध होता है और दो महीने उत्तर में पीडा हो ॥ ६१ ॥ भरणी में तुष धान्य, ज्वार, मिर्च आदि औषध इन सब को वेधते है तथा दक्षिण में आठ महीने पीडा रहें ॥६२॥

ऋय विक्रय पदार्थों के अर्घ (मूल्य) का निर्णय जैसा ब्रह्मयामल नामक ग्रंथ में ग्रह वेधद्वारा शुभाशुभ कहा है, वैसा इस इक्यासी पद वाला सर्वतोभद्रचक्र में कहता हूँ ॥ ६३ ॥ सर्वदा विचक्षण पुरुषों को अर्घ का निर्णय करने योग्य देश, काल और पराय ये तीनों के वेध का

देशकालपण्यनिर्णयः—

देशोऽथ मण्डलं स्थानमिति देशस्त्रिधोच्यते ।
वर्षं मासो दिनं चेति त्रिधा कालोऽपि कथ्यते ॥६५॥
धातुर्मूलं तथा जीव इति पण्यं त्रिधामतम् ।
अस्य त्रिकं त्रयस्यापि वक्ष्यामि स्वामिखेचरान् ॥६६॥

देशादीनां स्वामिज्ञानम्—

देशेशा राहुमन्देज्या मण्डलस्वामिनः पुनः ।
केतुसूर्यसिताः स्थाननाथाश्चन्द्रारचन्द्रजाः ॥६७॥
वर्षेशा राहुकेत्वार्किजीवा मासाधिपाः पुनः ।
भौमार्कज्ञसिता ज्ञेयाश्चन्द्रः स्याद्दिवसाधिपः ॥६८॥
धात्वीशाः सौरिराह्वारा जीवेशा ज्ञेन्दुसूरयः ।
मूलेशाः केतुशुक्रार्का इति पण्याधिपाः ग्रहाः ॥६९॥
पुंग्रहा राहुकेत्वार्कजीवभूमिसुता मताः ।

विचार करना चाहिये ॥६४॥ देश, मंडल और स्थान, इन भेदोंसे देश तीन प्रकारका है । तथा वर्ष, मास और दिन, इन भेदोंसे काल भी तीन प्रकारका कहा है ॥ ६५ ॥ धातु, मूल और जीव इन भेदों से पण्य भी तीन प्रकार का माना है । तीन प्रकारके देश, तीन प्रकारके काल और तीन प्रकारके पण्य इन तीन त्रिकोंके स्वामी ग्रहको कहता हूँ ॥६६॥

देश का स्वामी— राहु, शनि और बृहस्पति है । मंडल का स्वामी—केतु सूर्य और शुक्र है । तथा स्थान का स्वामी—चंद्रमा, मंगल और बुध है ॥ ६७ ॥ वर्षके स्वामी—राहु, केतु, शनि और बृहस्पति हैं । महीने के स्वामी— मंगल सूर्य बुध और शुक्र हैं । तथा दिनका स्वामी चन्द्रमा है ॥ ६८ ॥ धातु के स्वामी— शनि, राहु, और मंगल हैं । जीवके स्वामी बुध चन्द्रमा और बृहस्पति है । तथा मूल के स्वामी— केतु शुक्र और सूर्य हैं । ये पण्यके स्वामी ग्रह हैं ॥ ६९ ॥

स्त्रीग्रहौ सितशीतांशू सौरिसौम्यौ नपुंसकौ ॥७०॥
सितेन्दू सितवर्णेशौ रक्तेशौ भौमभास्करौ ।
पीतेशौ ज्ञगुरू कृष्णनाथाः केतुतमोऽर्कजाः॥७१॥

बलवशात् स्वामिनिर्णयः—

ग्रहो वक्रोदयोच्चर्क्षे यो यदा स्याद् बलाधिकः ।
देशादीनां स एवैकः स्वामी खेटस्तदा मतः ॥७२॥

क्षेत्रबलम्—

स्वक्षेत्रस्थे बलं पूर्णं पादोनं मित्रभे गृहे ।
अर्द्धं समगृहे ज्ञेयं पादं शत्रुग्रहे स्थिते ॥७३॥

वक्रोदयबलम्—

वक्रोदयाहमानार्द्धे पूर्णवीर्यो ग्रहो भवेत् ।

राहु केतु सूर्य वृहस्पति और मंगल ये पुरुष संज्ञा वाले ग्रह हैं । शुक्र और चंद्रमा ये दोनों स्त्री संज्ञावाले ग्रह है । तथा शनि और बुध ये दोनों नपुंसक संज्ञावाले ग्रह हैं ॥७०॥ श्वेत वर्णके स्वामी– शुक्र और चंद्रमा, रक्त वर्ण के स्वामी मंगल और सूर्य, पीत वर्ण के स्वामी बुध और गुरु; तथा कृष्ण वर्णके स्वामी केतु राहु और शनि हैं ॥७१॥

उपर जो देश आदि के स्वामी ग्रह कहे हैं, इनमेंसे जो ग्रह, वक्र, उदय, उच्च और क्षेत्र इन चार प्रकारके बलोंमें से जो अधिक बलवाला हो, वही एक ग्रह उन देशादिक का स्वामी होता है अर्थात् जिस के दो तीन आदि ग्रह स्वामी होते हैं इनमें जो बलवान् हो वह स्वामी माना जाता है ॥७२॥

ग्रह अपनी राशि पर हो तो पूर्ण (चार पाद), मित्रकी राशि पर हो तो तीन पाद, सम ग्रहकी राशि पर हो तो आधा (दो पाद), और शत्रु ग्रहकी राशि पर हो तो एक पाद बल होता है ॥७३॥

जितने दिन ग्रह वक्री या उदय रहें, इसका आधा समय बीत जाने

मदग्रपृष्ठगे खेटे पलं त्रैराशिकान् मतम् ॥७४॥

उच्चबलम्—

उच्चांशस्थे पलं पूर्णं नीचांशस्थे पलं खिलम् ।
त्रैराशिकवशाद् ज्ञेयमन्तरे तु पलं बुधैः ॥७५॥

स्वामिवशाद् वेधफलनिर्णयः—

एवं देशाधिनाथा ये ते वेधकग्रहं प्रति ।
सुहृदः शत्रवो मध्याश्चिन्तनीयाः प्रयत्नतः ॥७६॥
स्वमित्रसमशत्रूणां विघ्नन् देशादिकं क्रमात् ।
दुष्टं दुष्टग्रहः कुर्यादेकद्वित्रिचतुष्पदे ॥७७॥
स्वमित्रसमशत्रूणां विघ्नन् देशादिकं क्रमात् ।
शुभग्रहः शुभं दत्ते चतुस्त्रिद्व्येकपादजम् ॥७८॥

पर वक्री का या उदयका मध्य फल जानना, इस समय ग्रह पूर्ण बलवान् होता है । उस मध्य कालसे जितना आगे या पीछे रहे उतना न्यून बल त्रैराशिक गणितसे जानना ॥७४॥

ग्रह उच्च राशि में परम उच्च अंश पर हो तो पूर्ण बल, तथा नीच राशि में परम नीच अंश पर हो तो बलहीन जानना, और इन दोनोंके बीच में कहीं हो तो उसका बल विद्वानोंको त्रैराशिक गणितसे जानना चाहिये ॥७५॥

इसी तरह जो देश आदिके स्वामी ग्रह कहे हैं, वे ग्रह अपने २ देश आदि को वेधने वाले ग्रह के प्रति मित्र शत्रु या सम इनमेंसे क्या है ? इसका यत्न से विचार करें ॥ ७६ ॥ देश आदि का वेध करनेवाला ग्रह अशुभ हो तो क्रमसे अशुभ फल देता है । स्वामी स्वयं वेधकर्त्ता हो तो एक पाद, वेधकर्त्ता मित्रग्रह हो तो दो पाद, समान ग्रह हो तो तीन पाद, और शत्रु ग्रह हो तो पूर्ण फल करता है ॥ ७७ ॥ देश आदि का वेध करनेवाला ग्रह शुभ हो तो क्रमसे शुभ फल देता है । स्वामी स्वयं वेध-

वेध्यं पूर्णदृशा पश्यनेतत्पादफलं ग्रहः ।
विद्धात्यन्यथा ज्ञेयं फलं दृष्टयनुमानतः ॥७९॥

वर्णाद्युपरि दृष्टिज्ञानम्--

वर्णादिस्वरराशीनां मेषाद्ये राशिमण्डले ।
ग्रहदृष्टिवशाद् दृष्टिवेधे वर्णादयो मताः ॥८०॥
स्वरवर्णान् स्वचक्रोक्तान् तिथिविद्धानि पीडयेत् ।
तिथिवर्णेषु यो राशिस्तद्दृष्टौ स्यान्निरीक्षणम् ॥८१॥
अशुभो वा शुभो वात्र शुक्ले विध्यन् तिथिग्रहः ।
सर्वं निजफलं दत्ते कृष्णपक्षे तदर्धता ॥८२॥
खेटस्य स्वांशके ज्ञेया पूर्णदृष्टिः सदा बुधैः ।
दृष्टिहीने पुनर्वेधे न स्यात् किञ्चिच्छुभाशुभम् ॥८३॥

कर्ता हो तो पूर्ण फल, वेध कर्ता मित्रग्रह हो तो तीन पाद, समान ग्रह हो तो दो पाद और शत्रुग्रह हो तो एक पाद फल करता है ॥ ७८ ॥ वेधकर्ता ग्रह यदि पूर्ण दृष्टिसे देखे तो उपरोक्त पाद क्रमसे जितना वेध फल कहा है उतना पूर्ण देता है, और पूर्ण दृष्टिसे न देखे तो दृष्टि के अनुसार फल देता है ॥७९॥

मेषादि द्वादश राशिचक्रमें वेधकर्ताकी दृष्टि जिस वर्ण स्वर आदिकी राशि पर हो तो वह दृष्टि उसके वर्ण स्वर आदिके पर भी मानी है ॥८०॥ सर्वतोभद्रचक्रमें स्वर और वर्णकी तिथिको वेध होनेसे वे स्वर और वर्ण भी वेधे जाते है, और उन तिथि वर्णों की राशि पर वेध हो तो उन तिथि स्वर और वर्णके पर भी दृष्टि होती है ॥८१॥ वेधकर्ता ग्रह चाहे अशुभ हो या शुभ हो परंतु तिथिको शुक्लपक्षमें वेधे तो पूर्वोक्त वेधफल जितना हो उतना पूर्ण फल देता है, और कृष्णपक्ष में वेधे तो आधा फल देता हैं ॥८२॥ अपने अंशोंमें ग्रहकी पूर्ण दृष्टि विद्वानों को जानना चाहिये । वेधकर्ता ग्रहकी दृष्टि न हो और केवल वेध ही हो तो कुछ भी शुभाशुभ

वेधद्वाराविश्वानिर्णयः—

सौम्यः पूर्णदृशा पश्यन् विध्यन् वर्णादिपञ्चकम्।
फलं विंशोपकान् पञ्च क्रूरस्तु चतुरो दिशेत् ॥८४॥
वर्णादिपञ्चके यावत् स्थानत्वे चैव यावता।
दृष्टिस्तदनुमानेन वाच्यास्तत्र विंशोपकाः ॥८५॥
एवं विंशोपका यत्र संभवन्ति शुभाशुभाः।
अन्योऽन्यशोधने तेषां फलं ज्ञेयं शुभाशुभम् ॥८६॥
वर्त्तमानार्घविंशांशाः कल्पा इह विंशोपकाः।

नहीं होता ॥८३॥

यदि वेधकर्ता ग्रह वर्ण आदि पाचों को पूर्ण दृष्टि से देखें और वेधे तो शुभग्रह पांच विश्वा, और क्रूरग्रह चार विश्वा फल देते हैं ॥ ८४ ॥ वर्ण, स्वर, तिथि, नक्षत्र और राशि इन पांचोंमें वेधकर्ता ग्रह की जितने पाद दृष्टि हो उसके अनुसार ग्रहोंके विश्वे कहना चाहिये ॥ ८५ ॥ इस प्रकार जहा शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के ग्रहोंके विश्वे प्राप्त हों, वहां उन दोनोंका परस्पर अंतर करें, इसमें बाकी शुभ ग्रहों के विश्वे रहें तो शुभ और क्रूर ग्रहोंके रहें तो अशुभ जानना ॥८६॥ जिस वस्तुका वेध द्वारा निर्णय करना हो उस वस्तु का वर्तमान में (अर्थात् वर्ष मास तथा दिनमेंसे जिस समय निर्णय करना हो उसके * वर्ष प्रवेशमें) जो भाव हो उसके वीश विश्वे याने वीस भाग कल्पना करें, उनमेंसे एक भाग तुल्य विश्वे मान कर पूर्वोक्त क्रमसे प्राप्त शेष विश्वे जो शुभग्रहोंके हो-तो उस में मिला दें और क्रूरग्रहों के हो तो घटा दें। ऐसा करनेसे यदि वीस से जितने अधिक हो उतने विश्वे वस्तु मन्दी और जितने न्यून हों उतने

* त्रैलोक्य प्रकाशमें भी चैत्रमें याने वर्ष प्रवेशमें जो मुख्य भाव हो उसका यहां ग्रहण करना इत्यादि कहा है। जैसे—

" चैत्रे यो हक प्रधानोऽर्घः स परायार्घोऽत्र गृह्यते।
प्रत्यहं प्रतिभं चापि प्रतिराशं च नूतनः " ॥१॥

ते क्रमाद् वर्त्तमानार्घे देयाः पात्याः शुभाशुभे ॥८७॥
भूमिकम्परजोरक्तैर्वृष्टिर्निघातवर्जिते ।
देशे सर्वसुखोपेते वेधादर्घं वदेद् बुधः ॥८८॥

इति सर्वतोभद्रचक्रम् ।

अथ सर्वविचारचक्रे बलाबलं पूर्वाचार्यकथितं यथा—

शुक्रास्ते भाद्रमासे शुभभगणगते वाक्पतौ सौख्यहेतौ,
ज्येष्ठाद्याह्ने सुवारे शशिसितधिषणेपूदिते निश्यगस्त्ये ।
क्रूरे भूपादिवर्गे विघटिनि समये मङ्गले वक्रितेऽपि,
आषाढ्यां पूर्णधिष्ण्ये प्रहरवसुगते जायते दिव्यकालः ॥८९॥
भूपेऽमात्येऽन्ननाथे कुशलकृति रवेः संक्रमे वृद्धभे स्या-
दाषाढ्यां सौख्यपूर्वे प्रसरति पवने दुर्दिनं सर्वयाम्याम् ।
रात्रावार्द्राप्रवेशे वृषभतनुगते सौम्ययुक्ते च सूर्ये,

विश्वा तेजी जानना । याने वस्तुके विश्वे बढ़े तो वस्तुकी वृद्धि और मूल्य की हानि, तथा वस्तुके विश्वे घटे तो वस्तु की हानि और मूल्यकी वृद्धि होती है ॥ ८७ ॥ भूमि-कंप, रज तथा लोही की वृष्टि, और उल्का-पात इनसे रहित सब सुखवाले देशोंमें वेध द्वारा विद्वानोंको अर्घ (मूल्य-भाव) कहने चाहिये ॥८८॥

भाद्रमासमें शुक्र का अस्त हो, सुखके हेतुभूत बृहस्पति शुभ राशि पर हो, ज्येष्ठ शुक्लकी आदिमें अच्छे वारको चंद्रमा और शुक्र के नक्षत्रों में रात्रि के समय अगस्ति का उदय हो, क्रूर ग्रह राजवर्ग में हो, सुन्दर समय हो और मंगल वक्री हो, तथा आषाढ पूर्णिमा को आषाढी नक्षत्र आठ प्रहर पूर्ण हो तो दिव्य काल (शुभ वर्ष) होता है ॥ ८९ ॥ वर्षके राजा मंत्री और धान्याधिपति ये शुभ हो, रवि की संक्रांति बृहत् नक्षत्रमें हो, आषाढ पूर्णिमाको उत्तर तथा पूर्व दिशाका वायु चलें, आठों ही प्रहर दुर्दिन रहें, रात्रिमें आर्द्रा प्रवेश हो, वृष लग्न में स्थित सूर्य सौम्य ग्रह से

चिह्नैरेभिः सुकालो जगति शुभकरो वर्षणे कृत्तिकायाम् ।९०।
रात्रौ संक्रान्तिरार्द्रायामप्यगस्त्योदयो यदा ।
तदा वर्षे सुभिक्षं स्याद् विपरीते विपर्ययः ॥९१॥ इति ।

अथ पतयोगः—

अदृष्टौ न युतौ क्रूरैर्ज्ञशुक्रावेकराशिगौ ।
जीवदृष्टौ विशेषेण महावृष्टिस्तदा भवेत् ॥९२॥
ज्ञजीवावेकराशिस्थौ क्रूरदृष्टिविवर्जितौ ।
शुक्रदृष्टौ विशेषेण कुरुते वृष्टिमुत्तमाम् ॥९३॥
जीवशुक्रौ यदा युक्तौ क्रूरेणापि विलोकितौ ।
बुधदृष्टौ महावृष्टिं कुरुते जलयोगतः ॥९४॥
गुरुर्बुधो दानवेन्द्रा एकराशिगतं त्रयम् ।
अदृष्टं क्रूरखेचरैर्महावर्षाविधायिकम् ॥९५॥
यदा शुक्रश्च भौमश्च मन्दश्चैकश्च राशिगः ।

युक्त हो तथा कृत्तिकामें वर्षा हो, इत्यादि शुभ चिह्न हो तो जगत्में सुकाल होता है ॥ ९० ॥ यदि रात्रि के समय सूर्यका आर्द्रा में संक्रमण हो और अगस्ति का उदय हो तो वर्ष में सुभिक्ष होता है और इससे विपरीत हो तो विपरीत याने दुष्काल होता है ॥९१॥

बुध और शुक्र ये दोनों एक राशि पर हो किंतु क्रूर ग्रह साथ न हो तथा उनकी दृष्टि भी न हो और बृहस्पति की दृष्टि हो तो विशेष करके महा वर्षा होती है ॥९२॥ बुध और शुक्र एक राशि पर हो और क्रूर ग्रह की दृष्टि से रहित हो किंतु शुक्र की दृष्टि हो तो विशेष कर के उत्तम वर्षा होती है ॥९३॥ बृहस्पति और शुक्र एक साथ हो और क्रूर ग्रह से देखे जाते हो तथा बुध की भी दृष्टि हो ऐसा जलयोग महा वर्षा करता है ॥ ९४ ॥ गुरु बुध और शुक्र ये तीनों एक राशि पर हो और उन पर क्रूर ग्रहोंकी दृष्टि न हो तो महा वर्षा कारक होते हैं ॥ ९५ ॥

तदा वर्षति पर्जन्यो जीवदृष्टौ न संशयः ॥९६॥
शुक्रे चन्द्रसमायुक्ते भौमे वा चन्द्रसंयुते ।
उद्बन्धना दिशः सर्वाः जलयोगस्तदा महान् ॥९७॥
अग्रतो वा स्थिताः सौम्याः क्रूराणां तु परस्परम् ।
ददते सलिलं भूरि न तोयं स्याद्विपर्यये ॥९८॥
एकराशिगतो जीवः सूर्येण सह वर्षति ।
यावन्नास्तमनं याति योगे नाम्भो ज्ञजीवयोः ॥९९॥
उन्मार्गगमनं कृत्वा यदा शुक्रं त्यजेद् बुधः ।
तदा वर्षति पर्जन्यो दिनानि पञ्च सप्त वा ॥१००॥
कर्कटे तु प्रविशन्तं सूर्यं पश्येद् यदा गुरुः ।
पादोनं पूर्णदृष्ट्या वा तत्र काले महाजलम् ॥१०१॥
उदयेऽस्तंगमे चेत् स्याज्जीवदृष्टो यदा ग्रहः ।
पादोनं पूर्णदृष्ट्या वा तदा वर्षति नान्यथा ॥१०२॥

यदि शुक्र मंगल और शनि ये तीनों एक राशि पर हो और उन पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो मेघ बरसता है इसमें संशय नहीं ॥९६॥ शुक्र के साथ चंद्रमा हो या मंगलके साथ चंद्रमा हो और समस्त दिशा बादल समेत हो तो महान् जलयोग होता है ॥ ९७ ॥ क्रूर ग्रहोंके आगे शुभ ग्रह स्थित हों तो जल बहुत बरसे और इससे विपरीत हो तो वर्षा न हो ॥ ९८ ॥ सूर्यके साथ एक राशि पर बृहस्पति हो तो वर्षा हो जब तक बुध और बृहस्पति अस्त न हो और यह योग रहें ॥ ९९ ॥ तथा बुध वक्री होकर शुक्रको त्यागे तब पांच या सात दिन वर्षा हो ॥ १०० ॥ यदि कर्कराशि में प्रवेश करता हुआ सूर्य को बृहस्पति पौन या पूर्ण दृष्टि से देखे तो महावर्षा हो ॥१०१॥ उदय और अस्त होते समय कोई भी ग्रह बृहस्पतिसे पौन या पूर्ण दृष्टिसे देखे जाय तो वर्षा हो अन्यथा न हो ॥१०२ ॥ सब मंडलोंमे स्थित ग्रह पौन या पूर्ण दृष्टिसे बृहस्पति देखे

मन्दरेषु च शैलेषु सैकतानि यथा यतः ।
नाशं [illegible] वा गुरुकर्मे [illegible] ॥१०३॥
सर्वो गुरुं [illegible] यथा [illegible] च ।
[illegible] गुरवः [illegible] गुरुः ॥१०४॥
अतिथ्यागताः [illegible] ।
[illegible] गुरुर्विराजितः ॥१०५॥
सिद्धे कल्पानां [illegible] च यत्र गुरुः ।
[illegible] समाजम् ॥१०६॥
गुरवस्य यदि [illegible] यदि [illegible] ।
[illegible] ॥१०७॥
[illegible] यदि [illegible] ।
[illegible] ॥१०८॥ इति ॥
अथ गुरु [illegible]
वैष्णवादिगणेशं च शैवं शाक्तमेव च ।

पूषाचतुष्कं चन्द्रस्य भानीमानि तथोत्तरा ॥१०९॥
शेषाणि सूर्यऋक्षाणि फलमेषामिहोदितम् ।
सूर्ये सूर्ये महान् वायुश्चन्द्रे चन्द्रे न वर्षणम् ॥११०॥
*सूर्यचन्द्रमसोर्योगो यदि स्याद् रात्रिसम्भवः ।
तदा महावृष्टियोगः कीर्त्तितोऽयं पुरातनैः ॥१११॥

पुंस्त्रीनपुंसकनक्षत्रयोगः—

भानि नार्यो दशाद्रातः क्लीबं त्रयं द्विदैवतः ।
मूलाश्चतुर्दशर्क्षाणि पुरुषाख्यानि कीर्त्तयेत् ॥११२॥
नरे नरे भवेत्तापो महातापो नपुंसके ।
स्त्रिया स्त्रिया महावातो वृष्टिः स्त्रीनरसङ्गमे ॥११३॥
एवं द्वारचतुष्टयी समुदिता प्रोक्ता पुनर्द्वादशे,

उत्तरा ये चन्द्रमाके नक्षत्र हैं ॥१०९॥ और बाकीके सूर्य नक्षत्र हैं । इनका फल सूर्यका नक्षत्रमें प्रवेशके समय विचारना— चंद्र और सूर्यके दोनों नक्षत्र सूर्यके हो तो महावायु चले और दोनों नक्षत्र चंद्रमाके हो तो वर्षा न हो॥११०॥ परंतु सूर्य चंद्रमा दोनोंके नक्षत्र हो तो प्राचीन लोगोंने बडा वृष्टियोग कहा है ॥१११॥

आर्द्रा आदि दश नक्षत्र स्त्रीसंज्ञक है, विशाखा आदि तीन नक्षत्र नपुंसक संज्ञक हैं और मूल आदि चौदह नक्षत्र पुरुष संज्ञक हैं ॥११२॥ सूर्यका नक्षत्रमें प्रवेश समय सूर्य और चंद्रमा दोनों पुरुषसंज्ञक नक्षत्रमें हो तो गरमी पड़े, नपुंसक संज्ञक नक्षत्र में हो तो महान् ताप (गरमी) पड़े, स्त्रीसंज्ञक नक्षत्र में हो तो महावायु चले तथा स्त्रीसंज्ञक और पुरुष संज्ञक नक्षत्र में हो तो वर्षा हो ॥११३॥

*विशेषः— बुधः शुक्रसमीपस्थः करोत्येकार्णवां महीम् ।
तयोरन्तर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत् ॥१॥

बुध और शुक्र पास २ हो तो बहुत वर्षा हो यदि इन दोनोंके मध्यमें सूर्य हो तो समुद्र भी शुष्क होजाय अर्थात् वर्षा न हो ।

वर्षे मेघमहोदयावगमने स्फारेऽधिकारे मया ।
सर्वस्मिन् रमति ध्रुवं वरमतिर्यस्य प्रभाशालिनः,
शास्त्रेऽस्मिन्नु तस्य वश्यमखिलं जायेत भूमण्डलम् ।११
इति श्रीमेघमहोदयसाधने वर्षप्रबोधे तपागच्छीयमहोपाध्या
श्रीमेघविजयगणिविरचिते द्वारचतुष्टयकथनो नाम
द्वादशोऽधिकारः ॥

अथ शकुननिरूपणो नाम त्रयोदशोऽधिकारः ।

तत्र प्रथमं पृच्छालग्नम्—

पृच्छालग्ने चतुर्थस्थौ शनिराहू यदा पुनः ।
दुर्भिक्षं च महाघोरं तत्र वर्षे ध्रुवं भवेत् ॥१॥
चतुर्णामपि केन्द्राणां मध्ये यत्र शुभा ग्रहाः ।
तस्यां दिशि च निष्पत्तिः सुभिक्षं च प्रजायते ॥२॥
यस्यां दिशि शनिर्दृष्टः क्रूरैः शत्रुग्रहस्थितः ।

इसी प्रकार मेघमहोदय का ज्ञान करानेवाला वर्ष प्रबोध-ग्रंथमें चतुष्टय नाम का बारहवां अधिकार मैंने कहा, जिस प्रभावशाली व बुद्धि इस सम्पूर्ण शास्त्रमें रमति है उसको संपूर्ण भूमंडल निश्चय से भूत होता है ॥११४॥

सौराष्ट्रराष्ट्रान्तर्गत-पादलिप्तपुरनिवासिना पण्डितभगवानदासाख्यजै विरचितया मेघमहोदये बालावबोधिन्याऽऽर्यभाषया टीकितो द्वारचतुष्टयनामो द्वादशोऽधिकारः ।

वर्षाके प्रश्नलग्नमें चौथे स्थान में शनि और राहु हो तो उस महा घोर दुर्भिक्ष हो ॥१॥ प्रथम चतुर्थ सप्तम और दशम इन चारों के मध्यमें जहां शुभ ग्रह हो उसी दिशा में धान्य प्राप्ति और सुभि ॥ २ ॥ क्रूर ग्रहके साथ या शत्रु ग्रहमें स्थित शनिकी दृष्टि जिस दि

दिशि तस्यां बुधैर्वाच्यं दुर्भिक्षत्वं न संशयः ॥३॥

*अथ वृष्टिपृच्छा—

सूर्यचन्द्रमसौ शुक्रशनी सप्तमगौ यदा ।
चतुरस्रेऽथवा लग्नाद्द्वितीयौ वा तृतीयगौ ॥४॥
वृष्टियोगोऽयमेवं स्यात् सौम्या वा जलराशिगाः ।
शुक्लपक्षे द्वित्रिकेन्द्रगताश्चन्द्रोम्बुराशिगः ॥५॥
चतुर्थेश्चन्द्रशुक्रार्यश्चन्द्रे वा लग्नवर्त्तिनि ।
महावृष्टिरनावृष्टिः क्रूरैस्तुर्ये विलग्नगैः ॥६॥
वृष्टिप्रश्नार्थशकुने श्यामगोघटदर्शने ।
स्त्रियां वा श्यामवस्त्रायां दृष्टायां वृष्टिमादिशेत् ॥७॥
पश्चाङ्गुलिस्पर्शनेऽपि यद्यङ्गुष्ठं जनः स्पृशेत् ।

हो उस दिशामें विद्वानोंको दुर्भिक्ष कहना चाहिये, इसमें संशय नहीं ॥३॥

सूर्य और चंद्रमा अथवा शुक्र और शनि ये लग्नसे सप्तम, चतुर्थ, द्वितीय या तृतीय स्थानमें हो तो ॥ ४ ॥ यह वृष्टि योग होता है। शुभग्रह जलराशि में हो तथा शुक्लपक्ष में दूसरे तीसरे और केन्द्र स्थान में हो, चंद्रमा जलराशिमें हो ॥५॥ चतुर्थमें चंद्र शुक्र हो, चंद्रमा लग्नमें हो, ये सब महा वर्षा करनेवाले योग हैं। यदि क्रूर ग्रह चतुर्थ और विलग्नमें हो तो अनावृष्टि हो ॥६॥

वृष्टिका प्रश्नके शकुनमें कृष्ण गौ या भरे हुए कृष्ण घडा का दर्शन, अथवा कृष्ण वस्त्रवाली स्त्रीका दर्शन हो तो वर्षाका होना कहना ॥ ७ ॥

---

* टी— वर्षे प्रश्ने सलिलनिलयं राशिमाश्रित्य चन्द्रो,लग्नं यातो भवति यदि वा केन्द्रगः शुक्लपक्षे । सौम्यैर्दृष्टो प्रचुरसमुदकं पापदृष्टोऽल्पमम्भः, प्रावृट्काले सृजति न चिराच्चन्द्रवद्भार्गवोऽपि ॥ १ ॥ आर्द्रं द्रव्यं स्पृशति यदि वा वारि तत्संज्ञकं वा, तोयासन्नो भवति तृषया तोयकार्योन्मुखो वा,प्रष्टा वाच्यः सलिलमचिरादस्ति न संशयेन, पृच्छाकाले सलिलमिति वा श्रूयते यत्र शब्दः ॥ २ ॥ इति वाराहसंहितायाम् ॥

तदा वृष्टिस्तु महती सावित्री स्पर्शनेऽल्पिका ॥८॥
अन्यच्च–दिणयाहिवस्स तइए पंचमनवमे जलग्गहो जासि।
लहुवरिसस्सइ मेहो दिननवसगपंचमज्झम्मि ॥९॥

मंत्र–ॐ नट्ठट्ठमयठाणे पणट्ठकम्मट्ठनट्ठसंसारे। परमट्ठनिट्ठि अट्ठे अट्ठगुणाधीसरं वंदे (स्वाहा)॥ अथवा–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऑं लक्ष्मीं स्वाहा। अनेन मंत्रेणाभिमंत्र्य वस्तुधान्यादिकं तोलयित्वा ग्रन्थौ बद्ध्यते, रात्रौ शीर्षे मुच्यते, घटते चेद्वस्तु तदा महर्घं; वर्द्धते चेत्समर्घम्।

अक्षयतृतीयाविचारः–

अक्षयायां तृतीयायां सन्ध्यायां सप्तधान्यम्।
पुंजीकृत्य स्थापनीयं पृथक् पृथक् तरोरधः ॥१०॥
यद्विस्तृतं स्यात्तद्धान्यं तद्वर्षे बहु जायते।
यत्पुंजरूपं वा तिष्ठेनैव निष्पद्यते पुनः ॥११॥

यदि प्रश्नकारक पांच अंगुली के स्पर्श में अंगूठेको स्पर्श करे तो महावर्षा हो, * सावित्री (अनामिका) को स्पर्श करे तो थोड़ी वर्षा हो ॥ ८ ॥ सूर्य से तीसरा पांचवा और सातवां स्थान में जलराशिके ग्रह हो तो नव सात या पांच दिनके भीतर वर्षा बरसे ॥९॥

वस्तु या धान्य आदि उपरोक्त मंत्र से मंत्रितकर तथा तोलकर गांठ बांधकर रात्रिमें मस्तक नीचे धरे, पीछे दिन में फिर तोले जो वस्तु या धान्य घट जाय वह महंगे हों और जो बढ़ जाय वह सस्ते हों ॥

अक्षय तृतीया (वैशाख शुक्ल तीज) को संध्याके समय सात प्रकारके धान्य इकट्ठे करके वृक्षके नीचे अलग अलग रखें ॥१०॥ यदि वे धान्य बिखर जाय तो उस वर्ष में बहुत धान्य हो और इकट्ठे ही पड़े रहे तो

* "अनामिका च सावित्री गौरी भगवती शिवा" ऐसा महोपाध्याय श्री मेघविजयगणि कृत 'हस्तसंजीवन' नामक सामुद्रिक ग्रंथमें कहा है।

अक्षयायां तृतीयायां प्रपूर्य स्थालमम्बुना ।
रविं विलोकयेन्मध्ये तत्स्वरूपं विमृश्यते ॥१२॥
रक्ते सूर्ये विग्रहः स्यान्नीले पीते महारुजः ।
श्वेते सुभिक्षं रजसा धूसरे तीडमूषकाः ॥१३॥
भिक्षुकानां च भिक्षाप्तिर्बहुला सा सुभिक्षकृत् ।
जलेऽधिके महावर्षा धान्ये वृद्धेऽतिसुस्थता ॥१४॥
पूर्णकुम्भोऽथवा स्थाप्यो मृत्पिण्डानां चतुष्टये ।
आषाढादिचतुर्मास्या पृथक् नाम्ना प्रतिष्ठिते ॥१५॥
कुम्भाद्गलजलेनार्द्रा यावन्तः पिण्डकामृदः ।
वृष्टिस्तावत्सु मासेषु शुष्के पिण्डे न वर्षणम् ॥१६॥

अथ राखडी (रक्षाबंधपर्व) विचारः—

श्रावण्यामथ राकायां रक्षापर्वणि वीक्षते ।
आगच्छद्गोधनं सायं तस्माद् या गौ पुरस्सरा ॥१७॥
तस्याश्चिह्नैर्वर्षबोधः शुभाशुभविनिश्चयात् ।

उत्पत्ति न्यून हो ॥ ११ ॥ अक्षय तृतीयाको एक थालीमें जल भर कर इसमें सूर्य को देखे और उसका स्वरूप विचारें ॥१२॥ सूर्य लाल दीखे तो विग्रह, नीला तथा पीला दीखे तो महा रोग, सफेद दीखे तो सुभिक्ष, मट्टी युक्त धूसर वर्ण दीखे तो टिड्डी चूहे आदि का उपद्रव हो ॥ १३ ॥ भिक्षुकों को भिक्षा की प्राप्ति अधिक हो तो वह सुभिक्षकारक जानना । जलकी अधिकता प्राप्त हो तो महावर्षा और धान्य की अधिकता हो तो बहुत सुख हो ॥१४॥ आषाढ आदि चार महीने का नामवाले माटी के चार पिंड (गोले) बनाकर उनके उपर जलसे पूर्ण घड़ेको रखें ॥१५॥ जितने पिंडकी माटी कुंभसे झरता हुआ जल से भींज जाय, उतने महीने में वर्षा हो और शुष्क पड़ी रहे उस महीने में वर्षा न हो ॥१६॥ रक्षा बंधनको पर्व याने श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के संध्या समय गोधन (गौ समुह) को आता

सा गौ सुरूपा सुशृङ्गा श्रेष्ठा द्रोणादुघामता ॥१८॥
तस्या पुच्छे च चमरे पट्टसूत्रस्य लाभकृत् ।
वणिजां व्यवसायः स्यान्न पुच्छे कर्त्तितं शुभम् ॥१६॥
गोर्दम्भने प्रजादुःखं तद्युद्धे राजविग्रहः ।
गोपेन ताड्यमानायां तस्यां रोगाद् भयं भुवि ॥२०॥
निःशृङ्गायां गवि छत्रभङ्गः पुच्छे च वक्रिते ।
समादेश्यं वर्षवक्रं खण्डवृष्टिः पयोमुचा ॥२१॥
गोप्रवेशसमये सितो वृषो याति कृष्णपशुरेव वा पुरः ।
भूरि वारि सितकेन मध्यमं नासितेऽम्बुपरिकल्पना परैः ॥२२॥
नामाङ्कितैस्तिसृमृदादिकुम्भैः, प्रदक्षिणां श्रावणपूर्वमासैः ।

हुआ देखे, उसमें जो गौ आगे हो ॥ १७ ॥ उस के चिह्न के अनुसार शुभाशुभ वर्ष का बोध करें– वह गौ सुंदर, अच्छे सींगवाली, अच्छा द्रोण भर दूध देनेवाली ॥१८॥ और पूँछ पर केशवाली हो तो व्यापारियों को व्यापारमें रेशम, सन आदिके वस्त्रों से लाभ हो । और पूँछ के बाल काटा हुआ हो तो अशुभ होता है ॥१६॥ गौ दग (आगसे जलने का चिह्न) वाली हो तो प्रजा को दुःख, उनका युद्ध से राजविग्रह, ग्वाला मारता हुआ हो तो पृथिवी पर रोग का भय हो ॥२०॥ सींग विनाकी हो तो छत्रभंग, वक्र (टेढ़ा) पूँछवाली हो तो वर्ष भी वक्र कहना तथा मेघ खंड वर्षा करें ॥ २१ ॥

गौ प्रवेशके समय सफेद बैल या काला वर्णके बैल इन दोनोंमें से सफेद बैल (गौ) आगे हो तो बहुत वर्षा और कृष्ण बैल आगे हो तो मध्यम वर्षा हो ॥२२॥

जलसे पूर्ण ऐसे मृत्तिका (मिट्टी)के कलशों (घड़े) पर श्रावण आदि तीन महीनोंका नाम लिखकर प्रदक्षिणा करें, याने उक्त कलशोंको मस्तक पर लेकर जलाशय या देवमंदिरकी प्रदक्षिणा करें । इसमें जो कलश पूर्ण

पूर्णैः समासः सलिलेन पूर्णो, भग्नैः श्रुतैस्तैः परिकल्प्यमूनैः ॥

अथ वाराहीसंहितायामाषाढपूर्णिमाविचारः—

आषाढ्यां समतुलिताधिवासितानाम्-
मन्ये द्युर्यदधिकतामुपैति बीजम् ।
तद्वृद्धिर्भवति न जायते यदूनं,
मंत्रोऽस्मिन् भवति तुलाभिमंत्रणार्थम् ॥२४॥
स्तोतव्या मंत्रयोगेन सत्या देवी सरस्वती ।
दर्शयिष्यसि यत्सत्यं सत्ये सत्यव्रता ह्यसि ॥२५॥
येन सत्येन चन्द्रार्कौ ग्रहा ज्योतिर्गणास्तथा ।
उत्तिष्ठन्तीह पूर्वेण पश्चादस्तं व्रजन्ति च ॥२६॥
यत्सत्यं सर्वदेवेषु यत्सत्यं ब्रह्मवादिषु ।
यत्सत्यं त्रिषु लोकेषु तत्सत्यमिह दृश्यताम् ॥२७॥
ब्रह्मणो दुहितासि त्वं मदनेति प्रकीर्तिता ।

रहे उस मास में वर्षा पूर्ण जानना और जो कलश टूट जाय, जल झरने लगे या जलसे न्यून हो जाय तो अल्प वर्षा जाननी ॥२३॥

उत्तराषाढा युक्त आषाढ पूर्णिमा के दिन सब प्रकार के धान्यों को बराबर तोलकर और पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर रख दें; पीछे दूसरे दिन तोले जिस धान्य का बीज बढ़ जाय तो उस वर्ष में उसकी वृद्धि, और घट जाय उसकी हानि कहना। इस विधिमें नीचे तुलाभिमंत्रके लिये नीचे लिखा हुआ मंत्र पढ़ना ॥२४॥ सत्य कहनेवाली देवी सरस्वती की मंत्रपूर्वक स्तुति करनी चाहिये; हे देवी सरस्वति ! आप सत्य मतवाली हैं, इसलिये जो सत्य है उसको दिखा दें ॥ २५ ॥ जिस सत्य के प्रभाव से चन्द्रमा, सूर्य ग्रह और ज्योतिर्गण ये सब पूर्वमें उदय होते हैं और पश्चिम में अस्त हो जाते हैं ॥ २६ ॥ सर्व देवोंमें ब्रह्मवादियों में और त्रिलोकमें जो सत्य है वह यहां दीखे ॥२७॥ तूँ ब्रह्माकी पुत्री है और 'मदना' नाम

काश्यपीगोत्रतश्चैवं नामतो विश्रुता तुला ॥२८
क्षौमं चतुःसूत्रकसन्निबद्धं,
षडङ्गुलं शिक्यकवस्त्रमस्याः ।
सूत्रप्रमाणं च दशाङ्गुलानि,
षडेव कक्षोभयशिक्यमध्ये ॥२९॥
याम्ये शिक्ये काञ्चनं सन्निवेश्यं,
शेषद्रव्याण्युत्तरेऽम्बूनि चैवम् ।
तोयैः कौप्यैः स्यन्दिभिः सारसैश्च,
वृष्टिर्हीना मध्यमा चोत्तमा च ॥३०॥
दन्तैर्नागा गोहयाद्याश्च लोम्ना,
भूपश्चाज्यैः सिक्थकेन द्विजाद्याः ।
तद्वद्देशा वर्षमासा दिनाश्च,
शेषद्रव्याण्यात्मरूपस्थितानि ॥३१॥

से प्रसिद्ध है, तूँ गोत्रमें काश्यपी और 'तुला' नामसे प्रख्यात है ॥२८॥
सन की बनी हुई चार डोरियोंसे बंधे हुई छह अंगुलका विस्तार-वाली तखड़ी (पलड़ा) होनी चाहिये, और उसकी चारों डोरियोंका प्रमाण दश दश अंगुल होना चाहिये । इन दोनों तखड़ी के बीचमें छह अंगुल की * कक्षा रखनी चाहिये ॥ २९ ॥ दक्षीण ओर के पलड़ें सोना और बांयी ओरके पलड़े में धान्य आदि द्रव्य तथा जल रखकर तोलना चाहिये । कुंआ सरोवर और नदी के जल से क्रम से हीन मध्यम और उत्तम वर्षा जानना अर्थात् कूप का जल बढ़े तो तो हीन वर्षा, सरोवर का जल बढ़े तो मध्यम वर्षा और नदी का जल बढ़े तो उत्तम वर्षा कहना ॥ ३० ॥ दांतो से हाथी, लोम से गौ घोड़ा आदि पशु, घीसे राजा, सिक्थ से ब्राह्मण आदि की वृद्धि या हानि जानी जाती है। उसी तरह

* जिस सूत्र को पकड़कर तराजू को उठाते हैं उसको कक्षा कहते हैं ।

हैमी प्रधाना रजतेन मध्या,
तयोरलाभे खदिरेण कार्या ।
विद्धः पुमान् येन शरेण सा वा,
तुला प्रमाणेन भवेद्वितस्तिः ॥३२॥
हीनस्य नाशोऽभ्यधिकस्य वृद्धि-
स्तुल्येन तुल्यं तुलितं तुलायाम् ।
एतत्तुलाकोशरहस्यमुक्तं,
प्राजेशयोगेऽपि नरो विदध्यात् ॥३३॥
स्वातावषाढास्वपि रोहिणीषु,
पापग्रहा योगगता न शस्ताः ।
आद्यं तु योगद्वयमप्युपोष्य,
यदाधिमासो द्विगुणीकरोति ॥३४॥
त्रयोऽपि योगाः सदृशाः फलेन,
यदा तदा वाच्यमसंशयेन ।

देश, वर्ष, मास और दिन तथा शेष द्रव्य (धान्यादि) की वृद्धि हानि जाननी ॥ ३१ ॥ तराजूकी डांडी सुवर्णकी हो तो श्रेष्ठ, चांदीकी मध्यम है. इन दोनोंमें से न हो तो खदिरकी लकड़ी की दण्डी बनानी चाहिये । जो शर (बाण)से पुरुष विंधे जाते हैं, उसी आकारकी और एक बित्ता याने बारह अंगुलके प्रमाण की दांडी बनानी चाहिये ॥ ३२ ॥ तराजूमें बराबर तोलने में जिसकी हानि उसका नाश और जिस की वृद्धि उसकी अधिकता जाननी । यह तुलाकोशका रहस्यको कहा। मनुष्य इसको रोहिणी के योगमें भी धारण करते हैं ॥३३॥ स्वाति आषाढी और रोहिणी, इन नक्षत्रोंमें पाप ग्रहका योग हो तो अच्छा नहीं । यदि आषाढ मास अधिक हो तो उस वर्षमें स्वाति और रोहिणीके योग में करना चाहिये ॥३४॥ ये तीनों योग समान फलदायक हो तो संदेह रहित शुभाशुभ फल कहना ।

विपर्यये यस्त्विह रोहिणीज-
फलात्तदेवाभ्यधिकं निगद्यम् ॥३५॥
इत्याषाढपूर्णायां तुलातुलितबीजशकुनम् ।

अथ कुसुमलताफलम्—

फलकुसुमसम्प्रवृद्धिं वनस्पतीनां विलोक्य विज्ञेयम् ।
सुलभत्वं द्रव्याणां निष्पत्तिः सर्वसस्यानाम् ॥३६॥
शालेन कलमशाली रक्ताशोकेन रक्तशालिश्च ।
पाण्डूकः क्षीरिकया नीलाशोकेन शूकरिकः ॥३७॥
न्यग्रोधेन तु यवकस्तिन्दुकवृद्ध्या च षष्ठिको भवति ।
अश्वत्थेन ज्ञेया निष्पत्तिः सर्वसस्यानाम् ॥३८॥
जम्बूभिस्तिलमाषाः शिरीषवृद्ध्या च कङ्गुनिष्पत्तिः ।
गोधूमाश्च मधूकैर्यववृद्धिः सप्तपर्णेन ॥३९॥
अतिमुक्तककुन्दाभ्यां कर्पासः सर्षपान् वदेदशनैः ।
बदरीभिश्च कुलत्थांश्चिरबिल्वेनादिशेन् मुद्गान् ॥४०॥

और वीपरीत हो तो रोहिणीमें उत्पन्न हुआ फल से अधिक कहा गया है ॥३५॥

वनस्पतियों के फल और फूलों की वृद्धि (अधिकता) देखकर सब वस्तुओं की सुलभता और सब प्रकार के धान्यकी उत्पति जानना चाहिए ॥ ३६ ॥ शालवृक्ष के फलफूलों की वृद्धिसे कलमशाली, रक्त अशोक की वृद्धिसे रक्तशाली, दूधकी वृद्धिसे पाडुक, और नील अशोक की वृद्धि से शूकर धान्यकी प्राप्ति होती है ॥ ३७ ॥ वड़की वृद्धि से यव, तिन्दुककी वृद्धिसे सट्ठी और पीपल की वृद्धिसे सब प्रकार के धान्यकी उत्पत्ति हो ॥ ३८ ॥ जामनफल की वृद्धिसे तिल उड़द, शिरीषकी वृद्धिसे कंगनी, महुएकी वृद्धिसे गेहूँ और सप्तपर्ण की वृद्धिसे यव की वृद्धि होती है ॥३९॥ अतिमुक्तक और कुन्द के पुष्पवृक्ष की वृद्धि हो तो कपास, अशन की वृद्धि से सरसव, वेर से कुलथी और चिरविल्वसे मूंग की वृद्धि होती है ॥४०॥

अतसीवेतसपुष्पैः पलाशकुसुमैश्च कोद्रवा ज्ञेयाः ।
तिलकेन शंखमौक्तिकरजतान्यथा चेङ्गुदेन शणाः ॥४१॥
करिणश्च हस्तिकर्णैरादेश्या वाजिनोऽश्वकर्णेन ।
गावश्च पाटलाभिः कदलीभिरजाविकं भवति ॥४२॥
चम्पककुसुमैः कनकं विद्रुमसम्पच्च बन्धुजीवेन ।
कुरुवकवृद्ध्या वज्रं वैडूर्यं नन्दिकावर्त्तैः ॥४३॥
विन्द्याच्च सिन्दुवारेण मौक्तिकं कुंकुमं कुसुम्भेन ।
रक्तोत्पलेन राजा मंत्री नीलोत्पलेनोक्तः ॥४४॥
श्रेष्ठी सुवर्णपुष्पैः पद्मैर्विप्राः पुरोहिताः कुमुदैः ।
सौगन्धिकेन बलपतिरर्केण हिरण्यपरिवृद्धिः ॥४५॥
आम्रैः क्षेमं भल्लातकैर्भयं पीलुभिस्तथारोग्यम् ।
खदिरशमीभ्यां दुर्भिक्षमर्जुनैः शोभना वृष्टिः ॥ ४६ ॥
पिचुमन्दनागकुसुमैः सुभिक्षमथ मारुतः कपित्थेन ।

वेतस के पुष्पसे अलसी, पलास के पुष्पसे कोद्रव, तिलसे शंख मोती तथा चांदी और इंगुदी की वृद्धिसे कुशा की वृद्धि हो ॥ ४१ ॥ हस्तिकर्ण वनस्पति की वृद्धिसे हाथियों की, अश्वकर्णसे घोडे की, पाटलसे गौ की और कदली की वृद्धिसे बकरी तथा मेढ़ की वृद्धि होती है ॥ ४२ ॥ चंपाके फूलों से सुवर्ण, दुपहरिया की वृद्धिसे मूंगा, कुरुवक की वृद्धिसे वज्र, नंदिकावर्त्त की वृद्धिसे वैडूर्य की वृद्धि होती है ॥ ४३ ॥ सिंदुवारकी वृद्धिसे मोती, कुसुंभ से कुंकुम, लालकमलसे राजा और नीलकमलसे मंत्री का उदय होता है ॥४४॥ सुवर्णपुष्पसे सेठ (वणिक), कमलोंसे ब्राह्मण, कुमुदोंसे राजपुरोहित, सौगंधिक द्रव्यसे सेनापति, और आक की वृद्धि से सुवर्ण की वृद्धि होती है ॥ ४५ ॥ आमकी वृद्धि से कल्याण, भिलावें से भय, पीलुसे आरोग्य, खैर और शमी से दुर्भिक्ष, और अर्जुन से अच्छी वर्षा, इनकी वृद्धि हो ॥ ४६ ॥ पिचुमंद और नागकेसर से सुभिक्ष, कैथ से वायु, निचुल से

निचुलेनावृष्टिभयं व्याधिभयं भवति कुटजेन ॥ ४७ ॥
दूर्वाकुशकुसुमाभ्यामिक्षुर्वह्निश्च कोविदारेण ।
श्यामालतामिवृद्ध्या बन्धक्यो वृद्धिमायान्ति ॥ ४८ ॥
यस्मिन् देशे स्निग्धनिश्छिद्रपत्राः,
सन्दृश्यन्ते वृक्षगुल्मा लताश्च ।
तस्मिन् वृष्टिः शोभना सम्प्रदिष्टा,
रूक्षैरल्पैरल्पमम्भःप्रदिष्टम् ॥ ४९ ॥
इतिकुसुमैर्धान्यादिनिष्पत्तिलक्षणं वाराहसंहितायाम् ॥

लोके पुनरेवम्—

आके गेहूँ नींब तिल, ब्रीहि कहै पलास ।
कंयेरी फूली नहीं, मुंगा वेही आस ॥ ५० ॥

पाठन्तरे– आके गेहूँ कयरतिल, कंटालीये कपास ।
सर्ववसुधर नीपजै, जो चिहुं दिसि फलै पलास ॥ ५१ ॥

अथ वृक्षरूपम् —

राष्ट्रविभेदस्त्वनृतौ बालवधूरीव कुसुमिते बाले ।

अवृष्टिका भय और कुटजसे व्याधिका भय, इनकी वृद्धि होती है ॥ ४७ ॥ दूब और कुशकी वृद्धि से ईखकी वृद्धि, कचनारसे अग्निका भय, श्यामलता की वृद्धिसे व्यभिचारिणी स्त्रियोंकी वृद्धि होती है ॥ ४८ ॥ जिस देशमें जिस समय वृक्ष गुल्म और लता ये चिकने और छिद्र रहित पत्तों से युक्त दिखाई दें उस देशमें उस समय अच्छी वर्षा होगी, तथा रूखे और छिद्र युक्त हो तो थोड़ी वर्षा होती है ॥ ४९ ॥ आककी वृद्धि से गेहूँ, नींब से तिल, पलास से ब्रीहि (चावल) की वृद्धि होती है और कंयेरी फूले नहीं तो मूंग की आशा ही रखना ॥ ५० ॥ आकसे गेहूँ, कयर से तिल और कंटाली से कपास ये सब जगत् में उत्पन्न होते हैं, यदि चारों ही दिशामें पलास फलें तो ॥ ५१ ॥

वृक्षात् क्षीरस्रावे सर्वद्रव्यक्षयो भवति ॥ ५२ ॥ इति ॥

अथ काकाण्डानि ।

द्वित्रिचतुःशावत्वं सुभिक्षं पञ्चभिर्नृपान्यत्वम् ।
अण्डावकिरणमेकानुजा प्रसूतिश्च न शिवाय ॥५३॥
क्षारकवर्णैश्चौराश्चित्रैर्मृत्युः सितैश्च वह्निभयम् ।
विकलैर्दुर्भिक्षभयं काकानां निर्दिशेच्छिशुभिः ॥५४॥

अथ टिट्टिभाण्डानि ।

"चत्वारि टिट्टिभाण्डानि मासाश्चत्वार आहिता ।
अधोमुखाण्डमासे स्याद् वृष्टिर्नोर्ध्वमुखाण्डके ॥५५॥
जलप्रवाहेऽप्यण्डानां मुक्तिर्वृष्टिनिरोधिनी ।
उच्चभागे टिट्टिभाण्डमुक्त्या मेघमहोदयः" ॥५६॥

रुद्रदेवस्तु– काकस्याण्डानि चत्वारि वारुणं प्रथमं स्मृतम् ।

यदि नालवृक्ष (नालियर) में बालवधूटी की जैसे विना ऋतुके फूल आजाय तो देशमें विभेद हो तथा वृक्षसे दूध स्रवे तो सव द्रव्यों का क्षय हो ॥ ५२ ॥

कौवेंके दो तीन या चार बच्चे हों तो सुभिक्ष, पांच हों तो दूसरा राजा हो, एक अंडा ही प्रसवे तो अशुभ होता है ॥ ५३ ॥ क्षारवर्ण के अंडेसे चोर भय, चित्रवर्णसे मृत्यु, सफेदसे अग्नि भय, और विकलवर्णसे दुर्भिक्ष इत्यादि कौएँ के बच्चोंके वर्ण परसे शुभाशुभ जानना ॥ ५४ ॥

टिटहरी के चार अंडे परसे आषाढादि चार महीने कल्पना करें, जितने अण्डे अधोमुख हों उतने महीने वर्षा और ऊर्ध्वमुख वाले अण्डे हो तो वर्षा न हो ॥ ५५ ॥ टिटहरी जल प्रवाह (नदी तालाव आदि जलाशय) में अण्डे रक्खे तो वृष्टिका रोध हो और ऊंची भूमि पर रक्खे तो वर्षा अच्छी हो ॥ ५६ ॥

कौवे के चार प्रकार के अण्डे माने हैं–प्रथम वारुण, दूसरा आग्नेय,

तथा द्वितीयमाग्नेयं वायवीयं तृतीयकम् ।
*चतुर्थं भूमिजं प्रोक्तमेषां फलमथोदितम् ॥५७॥

षट्पदी—क्षेमं सुभिक्षं सुखिता च धात्री,
स्याद्भूमिजेऽण्डेऽस्मिमता च वृष्टिः ।
पृथ्वी तथा नन्दति सस्यमाद्यं,
वर्षाविशेषेण जलाण्डतः स्यात् ॥५८॥
जातानि धान्यानि समीरजाण्डे,
खादन्ति कीटाः शलभाः शुकाश्च ।
दुर्भिक्षमण्डेऽग्निभवे निवेद्यं,
जानीहि मासान् चतुरोऽपि चाण्डे ॥५९॥
॥ इति काकाण्डफलम् ॥

काकालयः प्राग्दिशि भूरुहस्य,
सुभिक्षकृत् स्वल्पघनस्तथाग्नौ ।

तीसरा वायवीय और चौथा भूमिज । इनका फल कहा है ॥५७॥ भूमिज अंडे हो तो कल्याण, सुभिक्ष, जगत् को सुख और अनुकूल वर्षा हो । वारुण [जल] अंडे हो तो पृथ्वी आनंदित हो तथा विशेष वर्षासे धान्य आदि बहुत हो ॥५८॥ समीर (वायु) अण्डे हो तो धान्य उत्पन्न हो किंतु कीड़े शलभ और शुक ये खा जावें । अग्नि अण्डे हो तो दुर्भिक्ष जानना । इस प्रकार अण्डे परसे चार महीने जानना ॥५९॥

कौआ अपना घोसला (अण्डा रखने का स्थान) वृक्ष पर पूर्व दिशा में बनावे तो सुभिक्षकारक है, अग्नि कोण में बनावे तो वर्षा थोड़ी हो,

* नदी तीरे नद्यासन्नवृक्षेऽण्डमोचे वारुणम् १ । गेहप्राकारे भूमिजम् २ । वृक्षे वायवीयम् ३ । शेषस्थाने आग्नेयम् ४ । यद्वा वृक्षकोणभागे चतुर्दाण्डानि—ईशान्यां वारुणम् १ । अग्नाय आग्नेयम् २ । नैर्ऋते वायवीयम् ३ । वायुकोणे भूमिजम् ४ ।

मासद्वयं वृष्टिकरो ह्यपाच्यां
ततो न वृष्टिर्हिमपात एव ॥ ६० ॥
मासद्वयेऽतीव घनः प्रतीच्यां,
निष्पत्तिरन्नस्य तदोच्चभूम्याम् ।
ततोऽप्यवृष्टिर्यदि वाल्पवर्षा,
स वातवृष्टिः पवनस्य कोणे ॥ ६१ ॥
पूर्वं न वृष्टिर्निर्ऋतौ पयोदाः,
पश्चाद् घना लोकसरोगता च ।
स्यादुत्तरस्यां भवने सुभिक्ष-
मीशानभागेऽपि सुखं सुभिक्षम् ॥६२॥
गार्गीयसंहितायां तु—
वृक्षाग्रे तु महावर्षा वृक्षमध्ये तु मध्यमा ।
अधःस्थाने नैव वर्षा वृक्षे काकालयाद् वदेत् ॥६३॥
वृक्षकोटरके गेहे प्राकारे काकमालके ।
दुर्भिक्षं विग्रहो राज्ञां याम्यां छत्रस्य पातनम् ॥६४॥

दक्षिणमें बनावे तो दो महीना वर्षा हो और पीछे वर्षा न हो किंतु हिमपात हो ॥६०॥ पश्चिम दिशा में बनावे तो दो महीने बहुत वर्षा हो तब ऊंची भूमिमें धान्यकी उत्पत्ति अच्छी हो, और पीछे दो महीने वर्षा न हो या थोड़ी वर्षा हो । वायु कोण में बनावे तो वायु के साथ वर्षा हो ॥ ६१ ॥ नैर्ऋत्य कोणमें बनावे तो पहले वर्षा न हो पीछे बहुत वर्षा हो और लोकमें रोग हो । कौआ अपना घोंसला उत्तर दिशा में बनावे तो सुभिक्ष होता है । ईशान कोणमें बनावे तो भी सुभिक्ष और सुख हो ॥६२॥

कौवा अपना घोंसला वृक्ष उपरके अग्र भागमें बनावे तो महा वर्षा, मध्य भागमें बनावे तो मध्यम वर्षा और नीचेके भाग में बनावे तो वर्षा न हो ॥६३॥ कौओंका घोंसला वृक्षके कोटर (खोखला) पर और किला में

नदीनीरे काकगृहे मेघप्रश्ने न वर्षणम् ।
पक्षौ विधुनयन् काको वृक्षाग्रे शीघ्रमेघकृत् ॥६५॥
विना भक्ष्यं काकदृष्टौ दुर्भिक्षं दक्षिणादिशि ।
पीत्वा जलं शिरःपक्षौ धुन्वन् काको जलं वदेत् ॥६६॥
वर्षा काले महावृष्टिः शीतकाले च दुर्दिनम् ।
उष्णकाले महाविघ्नं काकस्थानाद् विनिर्दिशेत् ॥६७॥
वह्निस्थाने च पाषाणे पर्वते शिखरे तरोः ।
भूमौ ग्रामे च नगरे काकस्थानात् फलं स्मृतम् ॥६८॥
वृक्षस्य पूर्वशाखायां वायसः कुरुते गृहम् ।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं मेघश्चैव प्रवर्षति ॥६९॥
आग्नेयां वृक्षशाखायां निलयं कुरुते यदि ।
अल्पोदकास्तथा मेघा ध्रुवं तत्र न वर्षति ॥७०॥
दक्षिणस्यां दिशो भागे वायसः कुरुते गृहम् ।

हो तो दुर्भिक्ष, राजाओंमें विग्रह और दक्षिणमें छत्रपात हो ॥६४॥ नदी के तट पर कौओं का घोंसला हो तो वर्षा न बरसे । मेघ के प्रश्न समय यदि कौआ पंख कंपाता हुआ वृक्ष के अग्र भाग में बैठा हो तो शीघ्र ही वर्षा हो ॥६५॥ भक्षण विना कौवे देख पड़े तो दक्षिण दिशा में दुर्भिक्ष होता है । कौआ जल पीकर माथा और पंख कंपावे तो जलागमन को कहता है ॥६६॥ उस समय वर्षाकाल हो तो महावर्षा, शीतकाल हो तो दुर्दिन और उष्णकाल हो महा विघ्न इन की सूचना करता है ॥ ६७ ॥ अग्नि का स्थान, पाषाण, पर्वत, वृक्ष के शिखर, भूमि, गांव और नगर, इन स्थानोंमें कौएँ के घोंसले परसे फल का विचार करना ॥६८॥ कौवे वृक्षकी पूर्व शाखामें घोंसला करें तो सुभिक्ष, कल्याण और आरोग्य हो तथा मेघवर्षा हो ॥६९॥ वृक्षकी आग्नेय शाखा में घोंसला करें तो बादल थोड़े जलवाले हों तथा वर्षा न बरसे ॥ ७० ॥ दक्षिण दिशामें घोंसला

द्वौ मासौ वर्षते मेघस्तुषारेण ततः परम् ॥७१॥
नैर्ऋत्या च दिशो भागे निलयं कुरुते खगः।
आद्या नास्ति तदा वृष्टिः पश्चादेषा प्रवर्षति ॥७२॥
पश्चिमे च दिशो भागे वायसः कुरुते गृहम्।
वातवृष्टिः सदा तत्र अल्पवृष्टिश्च जायते ॥७३॥
उत्तरस्या दिशो भागे वायसः कुरुते गृहम्।
अल्पोदकं विजानीयाद् राजा कश्चिद्विरुध्यते ॥७४॥
ईशाने तु दिशो भागे वायसः कुरुते गृहम्।
बहुसस्यानि जायन्ते सुभिक्षं क्षेममेव च ॥ ७५ ॥
अर्द्धभागे तु वृक्षस्य वायसः कुरुते गृहम्।
अर्द्धा तु सस्यनिष्पत्तिरधमो वर्षते तदा ॥७६॥
प्राकारे कोटरे वापि वायसानां समागमः।
विग्रहं तु विजानियाद् राजस्थानं विनश्यति ॥७७॥
गृहेषु गृहशालायां करोति निलयं यदा।
दुर्भिक्षं तु विजानीयान्महा द्वादशवार्षिकम् ॥७८॥

करें तो दो महीना वर्षा हो और पीछे हिमपात हो ॥७१॥ नैर्ऋत्य दिशा में घोंसला बनावे तो प्रथम वर्षा न हो और पीछे वर्षा हो ॥ ७२ ॥ पश्चिम दिशा में कौवे घोंसले करें तो हमेशा वायु युक्त थोड़ी वर्षा हो ॥ ७३॥ उत्तर दिशामें घोंसला बनावे तो जल थोडा बरसे और कोई राजा विरोध करे ॥७४॥ ईशान दिशामें घोंसला करे तो धान्य बहुत हो, तथा सुभिक्ष और कल्याण हो ॥७५॥ कौवा वृक्षका आधा भागमें घोंसला करे तो धान्य प्राप्ति मध्यम हो तथा वर्षा अच्छी न हो ॥७६॥ प्राकार (कोट) या वृक्ष की कोटरमें कौवेका समागम हो तो विग्रह जानना, तथा राजस्थान का विनाश हो ॥७७॥ घरमें या घरशालामें कौवे का स्थान हो तो बड़ा बारह वर्षका दुर्भिक्ष जानना ॥७८॥ भूमि पर घोंसला करे तो गाँव और

ग्राममण्डलनाशं च भूम्यां च कुरुते गृहम् ।
विग्रहं तु विजानीयाच्छून्यं तु मण्डलं भवेत् ॥७६॥
कपिलानां शतं हत्वा ब्राह्मणानां शतद्वयम् ।
तत्पापं परिगृह्णासि यदि मिथ्या बलिं हरेत् ॥८०॥
शाल्योदनेन साज्येन कृत्वा पिण्डत्रयं बुधः ।
संमार्जिते शुभे स्थाने स्थापयेन्मन्त्रपूर्वकम् ॥८१॥
आह्वानकरमन्त्रेण आह्वयाद्बलिभोजनम् ।
स्थाप्यं स्थापनमन्त्रेण पिण्डत्रयमिदं क्रमात् ॥८२॥

आह्वानमन्त्रो यथा—ॐतुण्डब्रह्मणे सुराय असुरेन्द्राय एहि एहि हिरण्यपुण्डरीकाय स्वाहा: । पिण्डाभिमन्त्रणं यथा— ॐ तिरिटि मिरिटि काकपिण्डालये स्वाहा: ॥

देशकालपरीक्षार्थं वृषभं चाद्यपिण्डके ।
द्वितीये तुरगं न्यस्य तृतीये हस्तिनं क्रमात् ॥८३॥
वृषभे चोत्तमकालो मध्यमश्च तुरङ्गमे ।
हस्तिपिण्डेन जानीयान्महान्तं राजविड्वरम् ॥८४॥

मंडलका नाश हो, विग्रह हो तथा मंडल शून्य हो ॥७६॥

हे काक! यदि तूँ मिथ्या बलिको ग्रहण करें तो एक सौ गौ और दो सौ ब्राह्मणोंकी हत्याका पाप लगे ॥८०॥ घी मिश्रित अच्छे चावल का तीन पिंड बनाकर अच्छा स्वच्छ स्थानमें मंत्रपूर्वक स्थापन करें ॥८१॥ पीछे 'ॐ तुण्ड' इस मंत्र से कौआ को बोलावे, बोलानेसे आया हुआ काक 'ॐ तिरिटि' इस मंत्र पूर्वक स्थापन किये हुए तीन पिंडोंमेंसे जिस को ग्रहण करे उसका क्रमसे फल कहना ॥८२॥ देशके काल की परीक्षा के लिये प्रथम पिंडकी वृषभ, दूसरेकी तुरंग और तीसरेकी हाथी, ऐसी क्रमसे संज्ञा करें ॥८३॥ वृषभपिंड को ग्रहण करे तो उत्तम समय, तुरंग पिंडको ग्रहण करे तो मध्यम समय और हस्तिपिंडको ग्रहण करे तो बड़ा

वर्षाज्ञानाय संस्थाप्यं प्रथमे पिण्डके जलम् ।
द्वितीये मृत्तिका स्थाप्या तृतीयेऽङ्गारकः पुनः ॥८५॥
शीघ्रं वर्षति पानीये (पर्जन्यो) मृत्तिकायास्तु पिण्डके ।
पक्षान्तेन तु वृष्टिः स्यादङ्गारे नास्ति वर्षणम् ॥८६॥

अथ गौतमीयज्ञानम्—

ॐ नमो भगवओ गोयमसामिस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अक्खीणमहाणस्स भगवन्! भास्करीयं श्रियं आनय २ पूरय २ स्वाहा ।

आश्विनस्य चतुर्दश्यां मंत्रोऽयं जप्यते निशि ।
सहस्रमेकं तपसा धूपोत्क्षेपपुरस्सरम् ॥८७॥
प्रातः पूर्णादिने सुखे लेख्ये गौतमपादुके ।
यजना सुरभिद्रव्यैरर्चनीये सुभाविना ॥८८॥
यत्पात्रे पादुके लेख्ये वस्त्रेणाच्छाद्यते च तत् ।
मार्जारदर्शनं वर्ज्यं यावच्च क्रियते विधिः ॥८९॥
समये पात्रकं लात्वा भिक्षार्थं गम्यते गृहे ।

राजविड्वर हो ॥८४॥ वर्षाको जानने के लिये प्रथमपिंडमें जल, दूसरे पर मृत्तिका (मिट्टी) और तीसरे पर कोयला रक्खे ॥ ८५ ॥ जलवाला पिंड ग्रहण करे तो शीघ्रही वर्षा हो, मृत्तिकापिंड ग्रहण करे तो पक्ष (पंद्रहदिन) के पीछे वर्षा हो और अंगारपिंड को ग्रहण करे तो वर्षा न हो ॥८६॥

इस मंत्रका आश्विन चतुर्दशी की रात्रिमें उपवास करके धूप पूर्वक एक हजार वार जाप करें ॥ ८७ ॥ पूर्णिमा के दिन प्रातःकाल एक पात्र में श्रीगौतमस्वामी की चरण पादुका आलेखना, पीछे उसकी भक्ति पूर्वक सुगंधित द्रव्योंसे पूजा करें ॥८८॥ जिस पात्रमें पादुका आलेखी है उसको वस्त्रसे ढँके हुए रक्खे और जबतक यह विधि करे तब तक बिल्ली को न देखें ॥८९॥ फिर भिक्षा के समय उस पात्रको लेकर भिक्षाके लिये

दातुर्महेभ्यश्राद्धस्य यत्प्राप्तं तद्विचार्यते ॥९०॥
सधवा सतनूजा स्त्री भिक्षादात्री शुभाय या ।
यद्वस्तु प्राप्यते धान्यं तन्निष्पत्तिः पुरो भवेत् ॥९१॥
नास्ति वेलेत्युत्तरेणा दुर्भिक्षं भाविवत्सरे ।
विलम्बदाने मेघोऽपि विलम्बेनैव वर्षति ॥९२॥
मत्र क्लेशदर्शनेन राजविग्रहमादिशेत् ।
भङ्गे पात्रस्य भाण्डस्य छत्रभङ्गो विचार्यते ॥९३॥
व्यंगा वा रुदती दत्ते तदा रोगाद्युपद्रवाः ।
गौतमीयमिदं ज्ञानं न वाच्यं यत्र कुत्रचित् ॥९४॥
उपश्रुतिस्तद्दिने वा वर्षबोधे विचार्यते ।
लोको वदति यद्वाक्यं ज्ञेयं तस्माच्छुभाशुभम् ॥९५॥
इति गौतमीयज्ञानम् ।

इत्येवं शकुनं विचार्य सुधिया वाच्यं फलं वार्षिकं,
यत्प्रोद्बोधनतो धनं भुवि घनं सर्वार्थसंसाधनम् ।

दातार महान् श्रावक के घर जावें और वहां से जो प्राप्त हो उसका विचार करें ॥९०॥ भिक्षा देनेवाली सौभाग्यवती पुत्रवती स्त्री हो तो अगला वर्ष अच्छा हो तथा धान्यकी प्राप्ति बहुत हो ॥९१॥ यदि वहां मे ऐसा उत्तर मिले कि इस समय नहीं है तो अगला वर्षमें दुर्भिक्ष जानना । विलंब (देर) मे दान दे तो वर्षा भी विलंबसे बरसे ॥९२॥ यदि वहां क्लेश होता देखे तो राजामें विग्रह हो । पात्र का भंग हो तो छत्रभंग जानना ॥९३॥ यदि अंगहीन या रुदन करती हुई दान दे तो रोग आदि उपद्रव हो । यह गौतमीय ज्ञान जहां तहां उच्चारण न करें ॥९४॥ अथवा उस दिन लोग जो वचन बोले उसके अनुसार शुभाशुभ फल वर्ष बोध में विचार करें ॥९५॥

इसी प्रकार शकुनों का बुद्धि से विचार कर के वार्षिक फल कहना

राजन्यैरपि मान्यते स निपुणः प्रोल्लासि भास्वद्गुणः,
शास्त्रं यन्मनसि स्फुरत्यनिशयाच्छ्रीवर्षबोधाह्वयम् ।९६।
त्रयोदशोऽधिकारोऽभूच्छास्त्रेऽस्मिन् शकुनाश्रयः ।
तदेकविंशतिद्वारैर्ग्रन्थोऽलभत पूर्णताम् ॥९७॥
स्थानाङ्गसूत्रविषयीकृतवर्षबोध-
ज्ञानाय यत्प्रकरणं विहितं वितत्य ।
भक्त्या व्यदीपि जिनदर्शनमेव तेन,
लोकः सुखी भवतु शाश्वतबोधलक्ष्म्या ॥९८॥

ग्रन्थकार-प्रशस्तिः——

श्रीमत्तपागणविभुः प्रसरत्प्रभावः,
पद्मोन्नते विजयतः प्रभनामसूरिः ।
तत्पट्टपद्मतरणिर्विजयादिरत्नः,
स्वामी गणस्य महसा विजितद्युरत्नः॥९९॥

चाहिये । जिसका उद्बोधन (विकाश) से पृथ्वी पर सर्व अर्थोंका साधन रूप बहुत धन प्राप्त होता है और जिसके मनमें श्रीवर्षप्रबोध (मेघमहोदय) नामका शास्त्र स्फुरायमान है ऐसा प्रकाशवाले गुणोंसे निपुण पुरुष राजाओं को भी माननीय होता है ॥९६॥ इस ग्रंथमें यह शकुननिरूपण नाम का तेरहवा अधिकार है और इक्कीश द्वारोंमें यह ग्रंथ पूर्णताको प्राप्त होता है ॥ ९७ ॥ स्थानांगसूत्र का विषयीभूत ऐसा वर्षबोध का ज्ञानके लिये जो प्रकरण मैंने रचा है उसको भक्तिसे फैला करके जो जैन दर्शनको दीपावे वह शाश्वतज्ञानरूप लक्ष्मीसे सुखी हो ॥९८॥

जिनका प्रभाव फैल रहा है ऐसे श्रीमान तपागच्छ के नायक 'श्री-विजयप्रभसूरि' नामके आचार्य दीप रहे थे, उनके पट्टरूप कमलको विकाश करने में सूर्य समान और अपने तेज से जीत लिया है सूर्य को जिन्होंने ऐसे 'श्री विजयरत्नसूरि' नामके आचार्य हुए ॥ ९९ ॥ विश्वको प्रकाशित

तच्छासने जयति विश्वविभासनेऽभूद्,
विद्वान् कृपादिविजयो दिवि जन्मसेव्यः ।
शिष्योऽस्य मेघविजयाह्वयवाचकोऽसौ,
ग्रन्थः कृतः सुकृतलाभकृतेऽत्र तेन ॥१००॥
क्वचित्प्राच्यैर्वाच्यैरतिशयरसात् श्लोककथनैः,
क्वचिन्नव्यैः श्रव्यैः प्रकरणमभूदेतदखिलम् ।
सतां प्रामाण्याय क्वचिदुचितलोकोक्तिरुचितं,
जिनश्रद्धाभाजामपि चतुरराजां समुचितम् ॥१०१॥
अनुष्टुभां सहस्राणि त्रीणि सार्द्धानि मानितः ।
ग्रंथोऽयं वर्षबोधाख्यो यावन्मेरुः प्रवर्त्तताम् ॥१०२॥
यत्पुनरुक्तमयुक्तं दुरुक्तमिह तद्विशोधितुं युक्तम् ।
बद्धाञ्जलिनेति मयाऽभ्यर्थन्ते सकलगीतार्थाः ॥१०३॥
मेरोर्विजयकृद्धैर्याद्लंघ्यो मेरुवद्धिया ।

करनेवाले उनके शासनमें देवताओं से भी सेवनीय ऐसे 'श्री कृपाविजय' नामके विद्वान हुए । उनके शिष्य 'श्री मेघविजय' उपाध्याय हुए, जिन्होंने यह ग्रंथ सुकृतलाभके लिये किया ॥१००॥ इस ग्रंथमें कोई जगह अतिशय रस पूर्वक कहने लायक प्राचीन श्लोकों से और कोई जगह श्रवण करने योग्य नवीन श्लोकों से तथा सत्पुरुषों को प्रमाण होने लिये कोई जगह मनोहर ऐसी उचित लोकोक्तियों से यह प्रकरण संपूर्ण हुआ । जिनधर्मके ऊपर श्रद्धा रखनेवाले चतुर जनों को उचित है कि इसका आदर करें ॥ १०१ ॥ यह वर्षप्रबोध नाम का ग्रंथ अनुष्टुप श्लोकोंके मानसे साढे तीन हजार श्लोकके प्रमाण है । जब तक मेरु पर्वत प्रकाशमान है तब तक यह ग्रंथ भी प्रकाशमान रहो ॥ १०२ ॥ इस ग्रंथमें मैंने पुनरुक्त अयुक्त या दुरुक्त कहा हो उनको सज्जन ज्ञानी पुरुष शुद्ध कर लें ऐसी हाथ जोड़के प्रार्थना है ॥ १०३ ॥ जो मेरुको विजय करने

त्या मे रोचितः शिष्यः श्रीमेरुविजयः कविः ॥१०४॥
भाविवत्सरबोधाय तस्य बालस्य शालिनः।
तां गुरुतां ग्रन्थो हिताद् बालस्य पालनात् ॥१०५॥
श्रीतपागच्छीयमहोपाध्यायश्रीमेघविजयगणिविरचिते
वर्षप्रबोधे मेघमहोदयसाधने शकुननिरूपणो
नाम त्रयोदशोऽधिकारः ॥

धैर्यसे भी अलंघनीय है तथा जिन की बुद्धि मेरु की तरह अचल है शिष्य 'श्रीमेरुविजय' नामके कवि भक्तिमें मेरेको रूचे हुए हैं ॥१०४॥ पाले बालकको भावि वर्षका बोधके लिये बालक का पालन करके गुरुता को करो ॥१०५॥

मेघमहोदयाभिधो ग्रन्थोऽयमनुवादितः।
चन्द्रेभ्यब्धिद्वये वर्षे वीरजिननिर्वाणतः ॥१॥

श्रीसौराष्ट्रराष्ट्रान्तर्गत-पादलिप्तपुरनिवासिना पण्डितभगवानदासाख्य जैनेन विरचितया मेघमहोदये बालावबोधिन्याऽऽर्यभाषया टिकितः
शकुननिरूपणो नाम त्रयोदशोऽधिकारः।

अवशिष्ट टीप्पणियें।

श्लोक-१०६—
दक्षिणवायुरपि ज्ञापकः स्यात् स्थापकत्वे विकल्पः।
श्लोक-२३ की नीचे का गद्य—
त्रि ३ षट् ६ द्वि २ बाण ५ भू १ सिन्धु ४ शून्यानि स्युः पुनः पुनः
क्रमात् सप्तवर्षेपु तेनेदं व्यभिचारभाक्।
६ अत्रोच्यते—
'चैत्रे मेघमहारम्भ' इत्युक्तेर्महावृष्टिर्निषेधपरत्वात्। एव चैत्रो-
र्थं बहुरूप इत्यादि वाताधिकारोक्तं सत्यायित्तम्,
० का गद्य—
सूत्रे 'उक्कोसेणं जाव छ मासस्स' न रूपगर्भपरं तस्यैव पञ्चोन-

तच्छासने जयति विश्वविभासनेऽभूद्,
विद्वान् कृपादिविजयो दिवि जन्मसेव्यः ।
शिष्योऽस्य मेघविजयाह्वयवाचकोऽसौ,
ग्रन्थः कृतः सुकृतलाभकृतेऽत्र तेन ॥१००॥
क्वचित्प्राच्यैर्वाच्यैरतिशयरसात् श्लोककथनैः,
क्वचिन्नव्यैः श्रव्यैः प्रकरणमभूदेतदखिलम् ।
सतां प्रामाण्याय क्वचिदुचितलोकोक्तिरुचितं,
जिनश्रद्धाभाजामपि चतुरराजां समुचितम् ॥१०१॥
अनुष्टुभां सहस्राणि त्रीणि सार्द्धानि मानितः ।
ग्रंथोऽयं वर्षबोधाख्यो यावन्मेरुः प्रवर्त्तताम् ॥१०२॥
यत्पुनरुक्तमयुक्तं दुरुक्तमिह तद्विशोधितुं युक्तम् ।
बद्धाञ्जलिनेति मयाऽभ्यर्थन्ते सकलगीतार्थाः ॥१०३॥
मेरोर्विजयकृद्वर्यादलंघ्यो मेरुवद्धिया ।

करनेवाले उनके शासनमें देवताओं से भी सेवनीय ऐसे 'श्री कृपाविजय' नामके विद्वान हुए । उनके शिष्य 'श्री मेघविजय' उपाध्याय हुए, जिन्होंने यह ग्रंथ सुकृतका लाभके लिये किया ॥१००॥ इस ग्रंथमें कोई जगह तो अतिशय रस पूर्वक कहने लायक प्राचीन श्लोकों से और कोई जगह तो श्रवण करने योग्य नवीन श्लोकों से तथा सत्पुरुषों को प्रमाण होने के लिये कोई जगह मनोहर ऐसी उचित लोकोक्तियों से यह प्रकरण संपूर्ण हुआ । जिनेश्वरके उपर श्रद्धा रखनेवाले चतुर जनों को उचित है कि इसका आदर करें ॥ १०१ ॥ यह वर्षप्रबोध नाम का ग्रंथ अनुष्टुभ श्लोकोंके मानसे साढे तीन हजार श्लोकके प्रमाण है । जब तक मेरु पर्वत प्रवर्त्तमान रहे तब तक यह ग्रंथ भी प्रवर्त्तमान रहो ॥ १०२ ॥ इस ग्रंथमें मैं ने पुनरुक्त अयुक्त या दुरुक्त कहा हो उसको समस्त ज्ञानी पुरुष शुद्ध कर लें ऐसी हाथ जोडके प्रार्थना है ॥ १०३ ॥ जो मेरुको विजय करने

त्या मे रोचिनः शिष्यः श्रीमेरुविजयः कविः ॥१०४॥
भाविवत्सरबोधाय तस्य बालस्य शालिनः ।
स्नां गुरूनां ग्रन्थो हिताद् बालस्य पालनात् ॥१०५॥
श्रीतपागच्छीयमहोपाध्यायश्रीमेघविजयगणिविरचिते
वर्षप्रबोधे मेघमहोदयसाधने शकुननिरूपणो
नाम त्रयोदशोऽधिकारः ॥

धैर्यसे भी अलंघनीय है तथा जिन की बुद्धि मेरु की तरह अचल है
शिष्य 'श्रीमेरुविजय' नामके कवि भक्तिमें मेरेको रुचते हुए हैं ॥१०४॥
पाले बालकको भावि वर्षका बोधके लिये बालक का पालन करके
गुरुता को करो ॥१०५॥

मेघमहोदयाभिधो ग्रन्थोऽयमनुवादितः ।
चन्द्रेऽत्रत्रिद्वये वर्षे वीरजिननिर्वाणतः ॥१॥

श्रीसौराष्ट्राष्ट्रान्तर्गत-पादलिप्तपुरनिवासिनः पण्डितभगवानदासाख्य
जैनेन विरचितया मेघमहोदये बालावबोधिन्याऽऽर्यभाषया टिकितः
शकुननिरूपणो नाम त्रयोदशोऽधिकारः ।

अवशिष्ट टीप्पणियें।

श्लोक-२०६—
दक्षिणवायुरपि क्षापकः स्यात् स्थापकत्वे विकल्पः ।
श्लोक-२३ की नीचे का गद्य—
त्रि ३ पट् ६ द्वि २ बाण ५ भू १ सिन्धु ४ शून्यानि स्युः पुनः पुनः
क्रमात् सप्तवर्षेषु तेनेदं व्यभिचारभाक ।
अत्रोच्यते—
'चैत्रे मेघमहारम्भ' इत्युक्तेर्महावृष्टिनिषेधपरत्वात् । एव चैत्रो-
बहुरूप इत्यादि वाताधिकारोक्तं सत्यापित्तम्,
का गद्य—
सूत्रे 'उक्कोसेण जाव छ मासस्स' न रूपगर्भपरं तस्यैव पश्चोन-

(left margin fragments:) ०४॥ । १। ३॥ गाविजय' जिन्होंने जगह तो जगह तो होने के प्रकरण उचित है य अनुष्टुभ मेरु पर्वत इस ग्रंथमें पुनः शुद्ध अनुग्रह करते

छिन्नेतिदिनमानत्वात् भावि वृष्टिसूचको हि निमित्त
तस्य दिनमानं सार्द्धपलमात्र्या न्यूनमधिकं वा भवेत्, अ
१२ मेघमालायां निमित्तमितिस्पष्टाभिप्रायं श्रीहीरसूरिभि

आसाढ अट्ठह जंगे भड्डली दुदिग मूल।
मौ दिवस पंचगलत मेहा मगा निहाल ॥ १ ॥

पृष्ठ-२८१ 'कृष्णपञ्चम्याः'— ननु चैत्रकृष्णपञ्चम्या आरभ्य नवदि
मलता उक्ता तन्मध्य एव प्रायः कृष्णाष्टम्यां दिनदिनसम
मूलादिभरण्यन्तनक्षत्रनिर्मलता कथिता पुनस्तन्मध
चैत्रशुक्लसम्भवाद् आर्द्रादिस्वात्यन्तनक्षत्रेषु दुर्दिनमपि
'जइ अस्सिणं' इत्यादि मेषसंक्रमादपि परं दशदिनेषु वृ
त्युक्तः, तर्हि, 'मेषसंक्रांतिकालात्तु' इत्यादिस्तथा मीन
न्तिकाले चैत्रादेर्वचनस्य कथमवकाशः तथा च 'पवनघ
युक्ता' इत्यादिः, पुनः 'चैत्रसितपक्षजाता' इत्यादेर्वराहव
न कदाचिदतिरयोच्यते चैत्रे महावृष्टेरेव निषेधः, वा
सम्भवेऽपि न दोष इत्युक्तं प्राक् तथैव च न वृष्टं, दुर्दिनं
ति सूत्राशय.।

पृ. २११ श्लो. १८२— 'आर्द्रा थकां नक्षत्र नव जे वरसे मेह अनं
वचनात् इति चैत्रेऽपि आर्द्रादिषु वृष्टिः शुभा' इति न
'चैत्रस्यादौ दिवसदशक मित्यादिना मेघमालाविरोधात्।

पृ. २११ श्लो. १८७— अत्र शुक्लेति पाठोऽपि यतः— वैसाही
एकमें, बादल बीज करेइ। द्रामे द्रोण वसाहि ग वि
साखी-धरेइ ॥१॥

पृ. २६८ श्लो. २३१— अत्र कृष्णादिर्मासः अश्विन्यास्तथैव सम्भ

पृ. ३८४ श्लो. २७२— चैत्रेऽमावस्योदिवसे गुरुवारोऽथवा चित्रा
दिने गुरुवारस्तदा वर्षा वृष्टिः शुभा, एवं वैशाखे विशाखा
पि वाच्यम्।

पृ. ४८५ श्लो. ८६—राशि मंत्रिणि धान्याधिपे च क्रूरेऽपि सति
विरुद्धेऽपि मङ्गले वनेऽपि वर्षं शुभं स्यादित्यर्थः।

* इति शमम *